CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१

रामायणसटीक

अर्थात्

जिस में सविवेचना नेकार्य बोधककोश और शङ्का समाधान व काव्याङ्ग ज्ञान के अर्थ बहुधा प्रति पत्र मानस दीपिका और शङ्कावली टीका सहित

कविशिरोमणि तुलसीदासकृत

जिसमें

भक्त हित कारी श्रीरामचन्द्र लक्ष्मणादि चारों भ्राताओं की बाललीला तें रावणादि अनेक राक्षस वध पर्य्यन्त सम्पूर्ण चरित सप्तकाण्ड विभाग और उचित स्थानों पर प्रतिमा निर्म्माण पूर्व्वक सुललित मन्त्र रूप दोहा चौपाई आदि सरल छन्दों में भक्तजनों के मनोभिलषित प्राप्त होने के अर्थ वर्णित हैं

स्थान लखनऊ

श्रीयुत मुन्शी नवल किशोर नामक शिलायन्त्र में सम्वत् १९३६ में चतुर्थ बार अति शुद्धता पूर्व्वक छपा ॥

मार्च सन् १८८० ई०

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

657-4

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् मार्च सन् १८८० ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस सूची पत्र में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफायत से घटाकर नियत हुवा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्यौपार की इच्छा हो वह छापे के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
व्याकरण और ज्योतिष	अमृतसागर बड़ी	शिवार्च्चन
	अमर बिनोद	गङ्गालहरी
सिद्धान्त चन्द्रिका	जगद बिनोद	भगवद्गीता
लघु कौमुदी	औषधि सङ्ग्रह कल्पवल्ली	भगवती गीता
मुहूर्त चिन्ता मणि सारिणी	निघण्टभाषा	श्री मद्भागवत सटीक
शीघ्रबोध	वैद्य दर्पण	जलझूलन
पाराशरी सटीक	राम बिनोद	हनुमान बाहुक
मुहूर्त गणपति	कोष और इतिहास	सुख सागर
सङ्ग्रह शिरोमणि		ब्रह्मसार
जातक चन्द्रिका	शिव सिंह सरोज	परमार्थ सार
लघुजातक भाषाटीका सहित	सामुद्रिक	प्रेमसागर
भाषा जातका लङ्कार	गणित कामधेनु	सूरसागर
संस्कृत जातका लङ्कार	कमीशन बड़ोदा	रागप्रकाश
जातका भरण	शब्दार्थ कोष	भक्तमाल
मुहूर्त दीपक	अमर कोष प्रथम काण्ड	अवधयात्रा
होरा मकरन्द	अमर कोष तीनों काण्ड भाषा	कथा गङ्गा जी
मुहूर्त चिन्ता मणि	टीका सहित	रामाण टेपकी
मुहूर्त मार्त्तण्ड	अनेकार्थ कोष	रामायण जिल्दबन्धी
वैद्यक	ब्रज बिलास	रामायण तुलसीकृत प० छा०
	दुर्गापाठ सटीक	रामायण तुलसीकृ० स०
शार्ङ्गधर	दुर्गा पाठ मूल	सतसई रामायण
वैद्यजीवन	अपराध भञ्जन स्तोत्र	कविता वली रामायण
वैद्य मनोत्सव	महिम्न स्तोत्र	गीतावली रामायण
अमृतसागर	श्री गोपाल सहस्र नाम	रामायण दोहा वली

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

6514.
Price R: 1-0-0-0-
No 2952
2952

टीका मानसदीपिका रामायण के साथ
सम्पूर्णता ग्रंथ की गौरी सुत के हाथ १

रामायण सटीक ।

मुन्शी नवलकिशोर के छापखाने में छपी
फ़रवरी सन् १८८० ई०

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ श्री गणेशाय नमः अथ श्री सीताराम परम भक्त गोस्वामी तुलसीदास कृतस्य श्री मत भाषा रामायणस्य मानस दीपिका समाख्यायां टीकायां भूमिका लिख्यते॥ तत्रादौ मंगलाचरणं दोहा परशु धरन संपति भरन अवढर करन गनेश॥ बिघन हरन मंगल करन राखहु शरन हमेश १ एक रदन करि वर बदन सिद्धि सदन मुद दानि॥ मदन कदन नंदन जपहु जग बंदन जिय जानि २ सिंदुर सह सिंधुर बदन रदन बिरद दुति भाति॥ ईश्वर कवि फविवो निरखि रवि पवि छवि दवि जाति ३ अथ संक्षेप तो राज बंश वर्णनम्॥ हरिपद छंद॥ परम तपस्वी तेजस्वी वर खिडू मिश्र उजागरहु ते वेद विद बंदनीय शुभ सत्य सुयश के सागर ४ गौतम गोत्र सुपात्र पेखि पद पंकज पैशिर धरकै दये ग्राम वसु बिंशति जिन को नृप बनार छल करिकै ५ क्यों छल कियो कौन थल कैसे कौन लह्यो फल भारी। बहुरि मिश्र जू को प्रभाव अरु बंशावली सुखारी ६ यह सब कथा कहां लगि कहिये सुनहु सुजन सुख दानी। काशि राज चंद्रिका ग्रंथ में सह बिस्तार बखानी ७ यह प्रसंग बस कहां कहौं ते बंशावली अदूषित॥ जाहिर ह्वै जग में विशेष जेहि कियो बंश निज भूषित ८ खिडू मिश्र मुनीश्वर जू के बंश मांहि प्रगटे हैं। महाराज बरबंड सिंह जिन्ह प्रबल प्रतीप उठे हैं ९ बने ठने पर गने छानवे गने धने मन भाये। तिन्हैं राखि निज शरन शत्रु हति काशी राज कहाये १० कहौं सत्य सुनवे कों सतजन सन्निधान मन हू जो। नृप बरबंड समान जगत में नृप बरि बंडन दूजो ११ तासु धर्म अरु राज दुहूं को अधिकारी सुत सुंदर। नृप महीप नारायण प्रगटे प्रोद्धत पुहुमि पुरंदर १२ तिन के सुत भे तीन तीन हूं सब प्रकार सब लायक। जिन्ह को यश जहान में जाहिर गान करत गुन गायक १३ तिन्ह में ज्येष्ठ श्रेष्ठ काशी पति नृपति उदित नारायन। तदनु दीप नारायन बाबू परम पुन्य पारायन। तदनु प्रसिद्ध जगत में बाबू श्री प्रसिद्ध नारायण दान देत हरि ध्यान धरति गुन गान करत रामायण १५ अथाति संक्षेप॥ क्रमेण राज श्री राजधानी राज सभा बर्णनं॥ दोहा॥ श्री काशी पति नृपति की अति राज श्री भाति रचित राज धानी रुचिर सुख दानी सरसाति १६ सभा भूरि शोभा भरी भूषित प्रभा बिभाति। निज कर रची विरंचि जनु रंचन बरनी जाति १७ अथ मुख्य प्रसंग बर्णन। हरिगीति का छंद। तिहि सभा बरबिच राज गादी सत्य बादी भ्राज

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ते नृप उदित नारायण रहे मन मुदित नित्य विराजते अति सुमति प्रबल प्रतापसु
यश कलाप गुन गन धाम से। जग में उजागर शील सागर रूप आगर काम से
१८ सह बंधु शोभा सिंधु बैठे एक दिन दिन में रहे जनु धर्मराज स भीम अर्जुन
पेखि छवि सब ही कहे तहां दास तुलसी रचित रामायन कथा के अर्थ को
चलिभो प्रसंग सुढंग भाषें सर्व अंग समर्थ को १९ इहि हेतु अंग समेत टीको
निपट नीकोई बनै। जिहि जगत सन मानै सुधीश कवीश वृंद भलो भनै सुनि
सभा सद भे कंठ गद गद गिरा सुख प्रद मुद मई। कहि जयति काशी राज आज
अनूप यह आज्ञा भई २० चौपाई। बाबू श्री प्रसिद्ध नारायन भूसुर भक्त पुन्य
पारायन। कवि को विदहि महद मुद दायक। भूप बंधु सब बिधि सब लायक २१
भूपति की आज्ञा पति भारी। अद भुत अमित जगत हित कारी। सुनत श्र-
वन निज शिर पर धारी। समुझि सुखद सुरत तकी डारी २२ क्योंकि तिलक द्वै नृ-
प विरचाये। जे अति अद्भुत जगत कहाये। पहलो तिलक राम लीला कर। जिहि ल-
खि परत न तिमिर कूप नर २३ सोरठादि दोहा समुदाई छंद अमंद चारु चौपाई
जाको जहां अर्थ है जैसो। लीला ललित सखा बति तैसो २४ दूजो तिलक सक-
ल मन भायो रामायन सह चित्र लिखायो। मूर्त्ति मंत जनु अर्थ बिराजै जिहिं
लखि अर्थ कथन लजि भाजै २५ यद्यपि तिलक दिव्य ये दोऊ अति प्रसन्न द्व-
नतें सब कोऊ। तदपि सकल पुर नगर निवासी। जैहैं रामायन अभ्यासी २६ ति-
न्हैं न सुलभ सुलभ हूं जिन को सो उन सदा न सब थल तिन को। तातें सुल-
भ सदा अरु सब थल। तीजो तिलक वरन मय अति भल २७ बनै भूप यह
आज्ञा कीन्हीं। बांछित अति संपति जनु दीन्हीं। इहि ते समुझि काम तरु डा-
री। नृपति अनुज निज शिर पर धारी २८ तब निज भक्ति समेत अनुज कहं
पेखि भये नृप प्रमुदित मन महं। षट् पदी प्रमुदित ह्वै नृप नीति रीति सत्
प्रीति अमित हित। दान सबुधि सन मान ज्ञान भवा वान ध्यान नित। राग संग
सत संग अंग युत अति अभंग तहं। परम धर्म लगि यज्ञ करत सर्वज्ञ नृप
ति कहं। बहु वर्ष अमल उत्कर्ष अति हर्ष सहित बीतत भये। लखि नेम क्षे-
म प्रद प्रेम निज पूर्न तूर्न रघुपति दये। २९ दो॰ काशिराज नृप राज तब मन में किये
विचार। सब प्रकार सामर्थ्य युत अब यह भयो कुमार। ३० वय लघु अलघु प्रताप अति

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुयश बंत गंभीर सील सिंधु शोभा उदधि धर्म धुरंधर धीर ३१ दयावंत दानी बड़ो
सत गुन वंत सुजान। अस्त्र शस्त्र मेषिज्ञ तर वर कृतज्ञ बलवान ३२ बहु विधि वि-
द्या निधि विविधि बुद्धि समृद्धि निधान। सत संगति रति समुझि अति नरपति मुदित
महान ३३ नेह हि करि हरि चरन तें देहहि परिखि अनित्य सुतहि तुरत युवराज कै भू-
प भये कृत कृत्य ३४ षटपदी तदनंतर शुभ करन सुमिरि गुरु चरन चारु तर सु-
नत दीह दुख दरन ग्रंथ गीतादि मुक्ति कर। सकल सुबुध सनमान साधु गुन गा-
न ज्ञान रत करत दान हरि ध्यान धरत नहिं आन आचरत कीते सुवर्ष बीते-
जबहिं तब प्रहर्ष हर्षहि लह्यौ ह्वै प्राप्त काम निज नाम करि परम धाम जैबो
चह्यौ ३५ चौपाई। अष्टादश शत ही नवति १८९२ संवत् अति पुनीत रवि
सौम्य गोल गत चैत्र शुक्ल षष्ठी शनि वासर मध्य दिवस लहि समय शुद्ध
तर ३६ कवित्त। लक्षन मगाय करि परम सुलक्षन की गाय वर बच्छन-
की पूरन पनन सौं कै सकैं बखानि अलकेश कीसी संपत हू काशि केश उ-
दित दै वेद की भननि सों काशी माहि बैठ कमला सन कुशासन पैश्वासन
समेटि कै समाधि की वननि सों सत्य संध जस के प्रबंध सुनि ह्वै कै मग ब्र-
ह्म रंध्र तन छोड़ि छूटे बंधननि सों ३७ चौपाई। तब जुवराज समय लखि
शुभ तर राज तिलक लहि सुख सुख माकर साज सकाय सत्य वादी वर बैठे
राजराज गादी पर ३८ कवित्त। बैठे राज ईश्वरी प्रसाद नारायन सिंह दी-
पति दराज शुभ साज सजे तन हैं बैरीगन ओजन सों ही न बिन फौजन ह्वै
भोजन बिहाय बेगि भाजे बन बन हैं। राजे कवि कोविद समूह जस साजे
तिन बाजे बजे छाजे प्रजा वृंद छन छन हैं। आये जे पगन शीश जिन के
मगन पाय मांगे धन गन ह्वैगे मंगन मगन हैं। दोहा। तब मंगन गन मगन
ह्वै मौजे पाय विशेषा कियौ गौन जिन भौन प्रति दै आशिषा अशेष।
४० आशिषा यथा कवित्त राजू भूप ईश्वरी प्रसाद नारायन सिंह
रावरे प्रतापन की पंगति भगी रहै। तंत करि दश हू दिगंतर परिजंत सं-
ची कंत सी सुकीरति अनंत उमगी रहै ईश्वर विराजि राज काज में परम
क्षेम नेम सों निवाहें नीति प्रेम सों पगी रहै। काशि राज संयुत। समाज
जीयौ युग युग जासों जग जीवन की जीवि की जगीर है ४१ दोहा विद्यमान

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मनुजेंद्र कहं जब समेत नृप नीति राज करत अति हर्ष सों किते वर्षगे वीति ४२ हरिगीति का छंद। तब परम धाम निवास कारी काशिराज नरेश की जु विशेषि आज्ञा शीश धारी ध्याय मूर्त्ति महेश की गुनि भूपबंध सुजान शोभा सिंधु सोई कहत भे वर विद्यमान नरेश काशी राज सुनि सुख लहत भे ४३ अवधेश भक्त सुव्यक्त विद्या युक्त सत गुन संचयी॥ रघुनाथ दास बुधेंद्र पै मनुजेंद्र की आज्ञा भई तिन दास तुलसी रचित रामायन सुटीका निर्मई धरि नाम मानस दीपिका सब दीप जो दीपित भई ४४ दोहा मुद्रित मुद्रा अक्षरनि लच्छन स्वच्छ समेत दक्षन हेत समक्ष जनु अक्षय गिरिश निकेत। सोरठा ईश्वर कवि कविराय भूरि भव्य हय भूमिका विरची आज्ञा पाय विद्यमान मनुजेंद्र की ४६ स्वस्ति श्री काशि राज महाराजाधि राज श्री ईश्वरी प्रसाद नारायण सिंह स्याज्ञानुगामिना काशी वासि मिश्रोप नाम केन ईश्वराख्येन कविना विरचिता गोस्वामी तुलसि दास कृत श्री मद्भाषा रामायणस्य मानस दीपिका समाख्यायां टीकाया भूमिका सम्पूर्णम्॥ शुभमस्तु॥

मानस दीपिका

॥श्री गणेशाय नमः दोहा गणपति सियपति गौरिपति गौरि प्रभापति पाय बंदौं वंदन जगत के चंदन सौं सुखदाय १ दुरित दोष दूषन दलन जासु नाम भव सेतु ताहि सुमिरि टीका रचित काशिराज मुद हेतु २ या सभा में विचार भयो पंडित अरु कविन सों श्री गोसांईजी दास कृत रामायण ग्रंथ बहुत विख्यात है अरु याको तिलक बहुत महात्मों ने कियो है बाबा रामचरण दास जी अयोध्या संत सिंह जी लहौर राजा गोपाल सरण सिंह बकार अरु स्वामी जी महाराज वर्त्तमान काशी जे निज गुरु श्री विद्या रण्य तीर्थ स्वामी जी के नाम तें रामायण परिचर्या बनायो सो अति संक्षेप ने सब को ज्ञान नहीं होत ताकी आशय ख्यात कियो जाय अरु प्रथम उपोद्घात

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

में रामायण को द्वै प्रकार को संदेह वर्णन कियो चाहिये एक सत्यत्व में दूस-
रो प्रसंग के भेद सों एक वाक्यता पूर्वक बूझे मों आवै अरु स्मृति श्रुति ग्रंथांत-
र को प्रमान न लिख्यो जाय हेतु किया ग्रंथ को राव कोऊ देखेगो यातें श्रीगो-
सांई जू के ग्रंथन को प्रमान दियो जाय और श्री गोसांई जी अरु औरहू म-
हात्मों को सम्मत एही हो कि ज्ञान भक्ति संपुट में नाम रत्न या रामायन में
सिद्धांत है औरहू रामायण विविध भांति प्रसिद्ध हैं रामायण सत कोटि अ-
पार अरु अर्थ विषै जो सरल रीति अक्षर पढ़न ते प्राप्त सोई मुख्य सो छह आ-
ग्रही जो अर्थ नहीं है सो करि आपन अर्थ निकारत हैं ताही ते मतन मों अ-
ब ऐसो बिरोध है कि जैसे एक वाक्यता सब देवतन के परत्व में होत है सोऊ व्या-
त्ति अव्याप्ति करकै भी मतन में ख्यात है कष्टते अरु यहि ग्रंथ में अति आग्र-
ह नाहीं राखत ताहेतु ते याको सद ग्रंथ मानत हैं अरु मत ग्रंथ के आचार्य
बड़े बड़े भये हैं वामें जो विचार कियो जाय तौ जा स्थान पर सिद्धान्त क-
रत हैं कि यही अर्थ सत्य है आग्रह सें जो सिद्धान्त है सो रहि जात है सो पु-
राणादिक सों विरुद्ध भासत है परत्व सब पुराण भिन्न हैं परंतु एक वाक्यता
होइ सकै है यथा मत वारन सो अरज यही कि अपने अपने इष्टन को तु-
म व्यापक मानत हो कि नहीं उत्तर व्यापक मानौ तो इष्टन में कतहूं न वैर
विरोध यही नहि व्यापक वह तो वाहू में जीव दसा आय रही १ का निर्गु-
ण का सगुण मत में रहि है एकै बात सही सार माना सब ही को लीजै रस से त-
जिये छाछ मही ३ बूसी बाद सार निज करनी बोल गये अस सार गही वेद
मंत्र दमड़ी के कारण जिन वेचो करि दही ४ रे चित चेत न करै विचार मत पर
विचार सार नहिं सोचो पर उपकार सों नव नीति विद्या दधि मथि तजि वारि वि-
कार मति मदिरा अतिपान किये ते होत सुमत मत वार ५ सत विद्या सागर सम
सीतल करनी करै से हार ३ सुहृद निकट हृदय स्थ त्याग कत बाहर करत
पुकार ४ ऐसो ई जो बात न कही जाय वाको कहत हैं अरु न देखो जाय ता
को देखत हैं तातें प्रथम पुरातन शास्त्रन के लक्षण सिद्धान्त कछु दृष्टान्त
अरु द्वितीय वर्तमान काल में राम गुलाम जू पंडित रहे सर्व शास्त्र अरु पुराण याही
रामायन दृष्टांत हेतु श्रम कियो रह्यो सो सर्व अर्थ विस्तार भयतें न लिखो जाय है

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परंतु अर्थ जो शब्द ते अरु जावत का व्यंग लक्षणा विंजना पूर्वक सहज निकरै सोई सदअर्थ है या हेतुतें कुछ काव्य व्यंग हू अरु तृतीय सर्वश्रेय भक्ति जोना म मूल है श्री रमायन के तिलक को सरनी प्रसंग रीति करके अरु याही में श्लोक-न के अर्थ अरु नाम निरूपन मानस इत्यादि जहाँ जहाँ कनिष्ट होय तहाँ तहाँ स्पष्ट अर्थ प्रसंग के अंतरगत अरु चतुर्थ बकृते जन यामें कहूं कहूं शंका करत हैं तातें कछु मुख्य मुख्य शंका को समाधान हूं अरु पंचम जायत यामें विषमवि-षम शब्द हैं ताको अर्थ मुख्य एक कोश करिके ए पांचों अंग युक्त श्री रमायण को तिलक लिख्यो ॥ इति श्री मानस दीपिकायां उपोद्घात वर्णने प्रथमः प्रकाशः १ ॥ श्री गोसांई जी कह्यो है नाना पुराण निगमा गम इत्यादि तातें कछु पुराणादि अंग लिखत हैं अथ प्रथम अंग दश लक्षण पुरानन के भागवत में कह्यो है सर्ग १ विसर्ग २ स्थान ३ पोषण ४ ऊति ५ मन्वंतर ६ ईश अनुकथा ७ निरोध ८ मुक्ति ९ आश्रय १० प्रथम सर्ग लक्षण महा भूत आकाशादि तन मात्रा पं-च शब्दादि इंद्री १० इश महत्तत्त्व अहंकार ए सब को ब्रह्म से गुण वैष-म्य करिकै जो परिनाम तातें बिराट स्वरूप अरु स्वरूप करिकै जो जन्म वाको नाम सर्ग १ विराट से जो भयो चराचर को जन्म सो विसर्ग २ भगवान के वि-जय पूर्वक सृष्टि को मर्यादा पालन करने से जो उत्कर्ष सो स्थान ३ अपने भक्त ऊपर अनुग्रह सो पोषण ४ कर्मन की वासना अरु वर्णाश्रम रूपा सो ऊति ५ अपने काल पर्यंत एक एक मनु सत धर्म को पालन करते हैं सो मन्वंतर ६ ईश भगवान को जो अनुचरित सोई ईशानु कथा अथ वा ई-श जो सूर्य चंद्र वंश के राजा उन्ह को जो कथा सोई ईशानु कथा कहिये ७ दु-ष्टन को मारनो बाहिर की जोग निद्रा के शक्ति सहित जीवन काल यासों नि-रोध ८ आरोपित कर्तृत्वादि त्यागि कै मुक्त ब्रह्म स्वरूप जो स्थिति सो मु-क्ति ९ जगत की उत्पत्ति अरु विनाश तातें ज्ञात होत हैं सो आत्मा पर ब्रह्म सब ही को आश्रय १० अरु अपर पुराण को जो पंच लक्षण कहे हैं सोयाही दश लक्षण के अंतरगत हैं अरु ये दश पांचों के अंतरगत हैं सो पांचों सर्ग १ विसर्ग २ वंश ३ मन्वंतर ४ वंशानुचरित ५ इति पुराण ६ अथ शास्त्र षट शास्त्र जो हैं वेदजा निवे को अंग ताको सिद्धांत बात कछू कछू पृथक पृथक लिखतु हैं प्रथम तो मीमां

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सा शास्त्र याको आचार्य जैमिनि मुनि यामें यज्ञादि धर्म विषय हैं अरु धर्म भा·
नही प्रयोजन है फल उपदेश करि वेद प्रति पाद्य जो अर्थ सो धर्म कहिये
स्वर्ग रूप फल के हेतु यज्ञ करिकै अपूर्व को भावना करनो अरु भावना
में तीन अंश की अपेक्षा है कारण १कार्य २कृति कर्तव्यता ३ कौनका·
र कै करनो या कर्ण अंश की अपेक्षा है क्या करनो या कार्य अंश की
अपेक्षा कौन प्रकार तें करनो या कृति कर्तव्यता अंश की अपेक्षा है अरु भा·
वना दोइ हैं एक आर्थी दूसरी शाब्दी अरु अपौरुषेय जो वाक्य सो वेद है वे·
द पांच प्रकार को है विधि १मंत्र २नामधेय ३अर्थ वाद ४ निषेध ५ भेदतें
संपूर्ण वेद जो हैं सो कोऊ साक्षात् तें कोऊ परं परातें धर्म प्रतिपादक हैं वि·
धि चार प्रकार की हैं उत्पत्ति १विनियोग २अधिकार ३ प्रयोग ४ भेदतें अग्नि
होत्र करनो उत्पत्ति १अंग की बोधक जो विधि सो विनियोग दधि करकै होम
करनो इहां विनियोग है अंग दो हैं एक सिद्ध दूसरो साध्य दधि आदि सिद्धि
प्रयाजादि साध्य २कर्मजन्य फल बोधक जो विधि सो अधिकार ३स्वर्ग
फल के हेतु यज्ञ करनो यहां अंग को क्रम बोधक जो विधि सो प्रयोग
४ वेद संपादन करकै वेदी करत हैं याके सहकारी भूत छः प्रमाण हैं
श्रुति १लिंग २वाक्य ३ प्रकरण ४ स्थान ५ समाख्या ६ भेद तें निरपेक्ष जो
शब्द सो श्रुति है १सामर्थ जो अर्थ का बोधक होय सो लिंग २एक अर्थ
को बोधक होय विभाग तें परस्पर आकांक्षा होय सो वाक्य ३जहां दोऊ
को आकांक्षा है सो प्रकरण ४ जहां दोऊ में एक को आकांक्षा होय सो स्था·
न ५समाख्या कही संकेत ६ पुनः विधि तीन प्रकार की है अपूर्व १नियम
२परि संख्या ३भेद ॥ अत्यंत अप्राप्त अर्थ की जो विधि सो अपूर्व १अग्नि
होत्र करनो यहां ॥ पक्ष में प्राप्त जो विधि नियम २ दधि करिकै होम कर·
नो इहां ॥ स्व भावतें प्राप्त संता पुनः जो विधान सो परि संख्या ३पंच पं·
च नखा भक्ष्या इति। प्रशंसा वाक्य जो है सो अर्थ वाद है १सो तीन
भांति गुण वाद १अनु वाद २भूतार्थ वाद ३भेदतें ॥ प्रत्यक्षादि प्रमा
णतें विरुद्ध स गुण वाद १ सूर्य रंभा है सो प्रत्यक्षादि प्रमाण तें ज्ञान
जो अर्थ वाको बोधक जो सो अनु वाद २ वेन की जलतें उत्पत्ति भूत का

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लिक अर्थ को प्रतिपादक जो सो भूतार्थवाद ३ इंद्र देवतन में श्रेष्ठतर है इति यज्ञ कर्मी को जो संकेत तद्विशिष्ट सो मंत्र ३ यज्ञन को जो नाम सो नाम धेय ४ इच्छा तें अनिष्ट जो प्रवृत्त पुरुष को निवृत्त करनो सो निषेध ५ कलंज को न खाना और उदय होते सूर्य को न देखनो इहां या रीति तें मीमांसा परिशोधित तर्क तें वेद के पांचो प्रकार कों जानि के यथोक्त कर्म के अनुष्ठान करके पुरुष कों परम पुरुषार्थ को लाभ होत है १ ॥ अथ द्वितीयवैशेषिक शास्त्र याको आचार्य कणाद मुनियों में पदार्थ विषय हैं और पदार्थ तत्व ज्ञान प्रयोजन हैं पदार्थ दोय एक भाव दूसरो अभाव भाव छः हैं द्रव्य १ गुण २ कर्म ३ सामान्य ४ विशेष ५ समवाय ६ एह छः पदार्थ के सामान्य धर्म अरु विरुद्ध धर्म जानिवे तें अनेक पदार्थों के अनेक धर्म को ज्ञान होत है अनेक धर्मों में एक निवृत्ति धर्म है निवृत्ति धर्म ते उत्पन्न जो आत्मा साक्षात् कार तातें मोक्ष होत है अभाव चार हैं आगमाव १ प्रध्वंसाभाव २ अत्यंताभाव ३ अन्योन्याभाव ४ अरु द्रव्यत्व १ गुणत्व २ कर्मत्व ३ एतीन जाति रूप धर्म हैं सामान्यत्व १ विशेषत्व २ समवायत्व ३ अभावत्व ४ एचार उपाधि रूप धर्म हैं पृथिवी १ जल २ तेज ३ वायु ४ आकाश ५ काल ६ दिशा ७ आत्मा ८ मन ९ येनव द्रव्य हैं अरु पृथिवीत्व १ जलत्व २ तेजत्व ३ वायुत्व ४ आत्मत्व ५ मनत्व ६ एछः जाति रूप धर्म हैं आकाशत्व १ कालत्व २ दिशात्व ३ येतीन उपाधि रूप धर्म हैं रूप १ रस २ गंध ३ स्पर्श ४ संख्या ५ परिमान ६ पृथक्त्व ७ संयोग ८ विभाग ९ परत्व १० अपरत्व ११ गुरुत्व १२ द्रवत्व १३ स्नेह १४ शब्द १५ बुद्धि १६ सुख १७ दुख १८ इच्छा १९ द्वेष २० प्रयत्न २१ धर्म २२ अधर्म २३ संस्कार २४ एचोबीस गुण हैं और रूपत्वादिक चौबीसों जाति रूप धर्म हैं पृथिवीमें रूप १ रस २ गंध ३ स्पर्श ४ संख्या ५ परिमाण ६ पृथक्त्व ७ संयोग ८ विभाग ९ परत्व १० अपरत्व ११ गुरुत्व १२ द्रवत्व १३ संस्कार १४ ए चौदह गुण हैं जल में रूप १ रस २ स्नेह ३ स्पर्श ४ संख्या ५ परिमाण ६ पृथक्त्व ७ संयोग ८ विभाग ९ परत्व १० अपरत्व ११ गुरुत्व १२ द्रवत्व १३ संस्कार १४ ये चौदहों गुण हैं तेज में रूप १ स्पर्श २ संख्या ३ परिमाण ४ पृथक्त्व ५ संयोग ६ विभाग ७ परत्व ८ अपरत्व ९

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

द्रवत्व १० संस्कार ११ ए ग्यारह गुण हैं वायु में स्पर्श १ संख्या २ परिमाण
३ पृथक्त्व ४ संयोग ५ विभाग ६ परत्व ७ अपरत्व ८ संस्कार ९ ए नव गुण हैं
आकाश में शब्द १ संख्या २ परिणाम ३ पृथक्त्व ४ संयोग ५ विभाग ६ ए
छः गुण हैं काल में अरु दिशा में संख्या १ परिमाण २ पृथक्त्व ३ संयोग ४
विभाग ५ ई पांच गुण हैं जीवात्मा में संख्या १ परिमाण २ पृथक्त्व ३ संयोग ४
विभाग ५ बुद्धि ६ सुख ७ दुख ८ इच्छा ९ द्वेष १० प्रयत्न ११ धर्म १२ अधर्म १३ सं-
स्कार १४ ए चौदह गुण हैं मन में संख्या १ परिमाण २ पृथक्त्व ३ संयोग ४ वि-
भाग ५ परत्व ६ अपरत्व ७ संस्कार ८ ए आठ गुण हैं ईश्वर में ज्ञान १ इच्छा
२ प्रयत्न ३ संख्या ४ परिमाण ५ पृथक्त्व ६ संयोग ७ विभाग ८ ए आठ गुण हैं
पृथ्वी १ जल २ वायु ३ तेज ४ ए चारों द्वै प्रकार के हैं एक परिमाण रूप दूसरो
सावयव घ्राणकादि रूप अरु आकाश १ काल २ दिशा ३ आत्मा ४ ए चारों व्या-
पक रूप हैं मन अनुरूप सावयव अनित्य है बाकी सब नित्य हैं सावयव के
तीन भेद हैं शरीर १ इंद्रिय २ विषय ३ मृत्यु लोक मों मिट्टी को शरीर है वरु-
ण लोक मों जल को सूर्य लोक मों तेज को वायु लोक मो वायु को अ-
रु घ्राण इन्द्री पृथवी को रसना इन्द्रिय जल को चक्षु इंद्रिय तेज को क-
र्ण इंद्रिय आकाश को पृथ्वी मों सातों रूप रहत हैं जल मों स्वच्छ रूप तेज सो
प्रकाश रूप अरु पृथ्वी मों छवों रस रहत हैं जल मों मधुर रस रहत है अरु पृ-
थ्वी मों दूनो गंध रहतु हैं कर्म पांच हैं ऊर्द्ध क्रिया १ अधोक्रिया २ संकोच ३ वि-
स्तार ४ गमन ५ ए पांचों कर्म द्रव्य मों रहत हैं अरु सामान्य कह जाति जाति ती-
न हैं व्याप्य १ व्यापक २ व्याप्य व्यापक ३ सत्ता जाति व्यापक है द्रव्य गुण
कर्म तीनों मों रहत हैं घटत्व जाति व्याप्य है द्रव्यत्व जाति व्याप्य व्यापक है
नित्य होय एक होय अरु अनेक मों रहैं सो जाति अरु नित्य द्रव्य मों रहै नित्य द्र-
व्य मों परस्पर भेद है जाति सों विशेष है समवाय कहिये नित्य संबंध अरु कार्य के पू-
र्व जो अभाव प्राग भाग १ कार्य को जो नाश सो प्रध्वंताभाव २ तीनों काल मों
जो अभाव सो अत्यंताभाव ३ परस्पर जो अभाव सो अन्योन्याभाव ४
अरु प्रमाण द्वै हैं प्रत्यक्ष १ अनुमान २ अरु शब्द औ उपमान ई दोऊ अनुमा-
न सों गतार्थ हैं इति तृतीय न्याय तर्क शास्त्र। याके आचार्य मुनि गौतम यामें

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सोरह पदार्थ विषय हैं सोरह पदार्थका ज्ञान प्रयोजन है वे प्रमाण १ प्रमेय २ संशय ३ प्रयोजन ४ दृशंत ५ सिद्धांत ६ अवयव ७ तर्क ८ निर्णय ९ बाद १० जल्प ११ वितंडा १२ हेत्वाभास १३ छल १४ जाति १५ निग्रहस्थान १६ ए सोरह पदार्थ हैं याके तत्व ज्ञान में मोक्ष होनु है मिथ्या ज्ञान के नाश तें दोष को नाश दोष के नाश तें प्रवृत्ति को प्रवृति के नाश ते जन्म को जन्म के नाश तें दुःख को दुःख नाशे मोक्ष है अरु प्रत्यक्ष १ अनुमान २ उपमान ३ शब्द ४ ए चार प्रमाण हैं इंद्रिय अरु अर्थ के संबंध तें उत्पन्न जो ज्ञान सो प्रत्यक्ष है १ जाके प्रत्यक्ष ज्ञान के अनंतर अनुमिति होय सो अनुमान २ जाके सादृश्य ज्ञान के अनंतर उपमिति होय सो उपमान ३ यथार्थ ज्ञान को जो उपदेश सो शब्द ४॥ आत्मा १ शरीर २ इंद्रिय ३ अर्थ ४ बुद्धि ५ मन ६ प्रवृत्ति ७ दोष ८ प्रेत्यभाव ९ फल १० दुःख ११ मोक्ष १२ ए बारह प्रमेय हैं इच्छा १ प्रयत्न २ ज्ञान ३ द्वेष ४ सुख ५ दुःख ६ ए छः आत्मा के लक्षण हैं १ चेष्टा १ इंद्रिय २ सुख ३ दुःख ४ ए चारों जामों हैं सो शरीर १ अरु घ्राण १ रसना २ चक्षु ३ त्वक ४ कर्ण ५ ए पांच इंद्रिय हैं सो भूतन तें उत्पन्न हैं पृथ्वी १ जल २ तेज ३ वायु ४ आकाश ५ ए पांच भूत हैं गंध पृथ्वी को गुण रस जल को गुण स्पर्श वायु को गुण शब्द आकाश को गुण गंध घ्राण को विषय रस रसना को रूप चक्षु को स्पर्श त्वचा को शब्द कान को विषय विषय जो है सो अर्थ है ४ बुद्धि कहिये ज्ञान ५ एक काल मों ए आत्मा में अनेक ज्ञान की उत्पत्ति नहीं है ए ही हेतु तें अणुत्व मन को लक्षण है ६ अरु वाणी १ बुद्धि २ शरीर ३ ए तीन का जो प्रयत्न सो प्रवृत्ति ७ प्रवृत्ति होय जातें सो दोष ८ सो दोष प्रीति द्वेष मोह रूप है अरु मरिके जन्म लेने प्रेत्य भाव है ९ प्रीति द्वेष मोह तें सुख दुःख का जो साक्षात्कार सो फल है १० सुख कहिये पीड़ा ११ दुःख नाश मोक्ष है १२ एक में अनेक विरोध धर्म को जो ज्ञान सो संशय १ जाके हेतु प्रवृत्ति होय सो प्रयोजन ४ वादी अरु प्रतिवादी का जो अर्थ में विरोध न होय सो दृशंत ५ सिद्धांत चार हैं सब शास्त्र १ एक शास्त्र २ तत्वेन अधिकरण ४ जाके सिद्धि के अनंतर और अर्थ की सिद्ध होय सो अधिकरण सिद्धांत है ६ अवयव पांच हैं प्रतिज्ञा १ हेतु २ उदाहरण उपनय ४

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

निगमन ५ पर्वत मो बन्हि है ई ज्ञान प्रतिज्ञान है १ धूम तें ई ज्ञान हेतु २ जहां धूम तहां बन्हि जैसे रसोई धर्म्मी ई उदाहरण ३ रसोई के घर सादृश्य पर्वत है ई ज्ञान उपनय ४ धूम ज्ञान तें पर्वत मों बन्हि है ई ज्ञान निगमन है ५ अरु कार्य अरु कारण का विचार सो तर्क ६ निर्णय कहिये निश्चय ७ सिद्धांत तें अविरुद्ध जो वादी प्रतिवादी का दूषण भूषण सो वाद १० छलादिक तें जो साधन में दूषण सो जल्प ११ अपने पक्ष के स्थापनों मों हीन जो दूषण सो वितंडा १२ हेत्वाभास पांच हैं व्यभिचारी हेतु १ विरोधी २ सत्प्रतिपक्ष ३ असिद्ध ४ बाधित हेतु ५ । १३ छल तीन हैं वाक् १ सामान्य २ उपचार ३ वक्ता के अभिप्राय तें अन्य अर्थ की जो कल्पना सो वाक्छल १ जाति विषयक जो छल सो सामान्य २ मुख्यार्थ में लक्षणा ते जो छल उपचार १४ सामान्य धर्म तें अरु विरुद्ध धर्म ते जो दूषण कथन सो जाति १५ वादी का विरुद्धार्थ के चुप रहना सो निग्रह स्थान १६ ३ ५ ५ ५

अथ चतुर्थ योग शास्त्र याके आचार्य पातंजलमुनि यामो चित्तवृत्तिका रोकनो योग मों विषय है वृत्ति पांच हैं प्रमाण १ विपर्यय २ विकल्प ३ निद्रा ४ स्मृति भेद तें ॥ प्रमाण तीन हैं प्रत्यक्ष १ अनुमान २ आगम ३ भेद तें विपर्यय कहिये मिथ्या ज्ञान जैसे रस्सी में सर्प ज्ञान २ शब्द ज्ञान तें पाछे होय अरु अर्थ तें शून्य होय सो विकल्प ३ जैसे स्वपुष्पादि अभाव ज्ञान विषयक वृत्ति निद्रा है ४ अनुभूति विषय को न भूलना स्मृति है ५ अभ्यास तें अरु वैराग्य तें पांचों को रोकनो समाधि है दोय एक सबीज दूसर निर्बीज ईश्वर की भक्ति तें समाधि सिद्ध होत है क्लेश १ कर्म २ कर्मफल ३ वासना ४ ईषणा ते रहित जो पुरुष विशेष सो ईश्वर है प्रणव के जपते अरु ईश्वर की भक्ति तें समाधि का लाभ अरु विघ्न का नाश होत है व्याधि १ सत्कर्म त्याग २ संशय ३ प्रमाद ४ आलस्य ५ अवैराग्य ६ भ्रमे ७ जड़ता ८ अस्वस्थता ९ ए विक्षेप चित्त मों नाहीं रहत दुःख १ चित्त की चंचलता २ अंग कंप ३ पूर करे चक स्वास ४ ए विक्षेप के संगी हैं याके दूर करने के हेतु ईश्वर सों चित्त भली भांति लगावनो काहू को बुरो न मानने विषयक के निवृत्ति होने संता अरु विचार तें अरु प्राणायाम

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ते चित्त एकाग्र होतु है या उपाय तें स्थिर चित्त में परिमाण ते लेकै आ-
काश पर्य्यंत सब वस्य होत हैं याके अनंतर जब विचार तें शुद्ध चित्त है त-
व स्थिर चित्त है स्थिर चित्त मों सत्य युक्ति प्रज्ञा होत है ता प्रज्ञा ते सबको
देखतु हैं ई सबीज समाधि है याके रोकने ते निर्बीज समाधि होत है वा
काल में पुरुष मात्रै रहत हैं व्रत १ मंत्रजप २ ईश्वर विषय फलकामना त्या-
गि सर्व समर्पन ३ ए तीन क्रियायोग हैं अरु क्रिया योग तें समाधि में चित्त
लगतु है अरु क्लेश कम होत है अविद्या १ अहंकार २ राग ३ द्वेष ४ आ-
ग्रह ५ ए पांच क्लेश हैं अविद्या कहिये अज्ञान १ पुरुष अरु अंतःकरण
की एकता अहंकार २ सुख में तृष्णा राग ३ पूर्व अनुभूत दुःख स्मरण ते
विरोध वृत्ति द्वेष ४ शरीर आदि वस्तु के स्थिरता मों तृष्णा आग्रह ५ स्थूल
सूक्ष्म क्लेशन का अरु ता क्लेशन की सुखदुःख मोह रूप वृत्तिन का ध्यान तें
त्याग करनो अरु क्लेश जन्य अशुभ कर्म को फल या जन्म मों है वा जन्मांतर
मों है विवेकी को सब दुःख ही है बुद्धि अरु पुरुष का जो संयोग सो संसार
को हेतु है भोग अरु मोक्ष की उत्पादक बुद्धि है पुरुष चेतन मात्र है अरु बुद्धि
रूप दर्पण मो प्रति बिंब संबंध स्वरूप आत्मा है एक विवेकी पुरुष की अवि-
द्या नष्ट होने तें और सब पुरुषों में अविद्या नष्ट नहीं होत बुद्धि अरु पुरुष को अ-
विवेक अज्ञान ते होत है अरु विवेक ज्ञान तें अज्ञान को नाश होत है एही पु-
रुष की मुक्ति है अरु विवेक ज्ञान ते पुरुष के सबीज समाधि पर्यंत सात प्रज्ञा
उत्पन्न होत हैं हम सब पदार्थ जान्यो १ हमारे अविद्या दि क्लेश नाश भयो २
त्याग को उपाय जान्यो ३ हम को विवेक ज्ञान भयो ४ मेरी बुद्धि कृतार्थ भई बु-
द्धि वृत्ति अपने कारण मों लय होगई पुनः उत्पन्न नहीं होवेगी ५ हमारे
स्वाधीन समाधि है ६ अब निर्विकार स्वरूप भयो ७ ई सात प्रज्ञा हैं संयोग
करने तें क्लेश क्षय होत है अरु ज्ञान को प्रकाश होत है यम १ नियम २
आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ धारणा ६ ध्यान ७ समाधि ८ ई
आठौ योगांग हैं अहिंसा १ सत्य २ आचार्य ३ ब्रह्मचर्य ४ असंग्रह ५ ई
पांच यम हैं शौच १ संतोष २ तप ३ मंत्र जप ४ ईश्वर निष्ठा ५ ये पांच नियम हैं
स्थिर सुख आसन है आसन तें सुखदुःखादि द्वंद्व को नाश होत है ॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

निगमन ५ पर्वत मो बन्हि है ई ज्ञान प्रतिज्ञान है १ धूम तें ई ज्ञान हेतु २ जहां धूम तहां बन्हि जैसे रसोई घर्मो ई उदाहरण ३ रसोई के घर सादृश्य पर्वत है ई ज्ञान उपनय ४ धूम ज्ञान तें पर्वत मों बन्हि है ई ज्ञान निगमन है ५ अरु कार्य अरु कारण का विचार सो तर्क ६ निर्णय कहिये निश्चय ७ सिद्धांत तें अविरुद्ध जो वादी प्रतिवादी का दूषण भूषण सो वाद १० छलादिक तें जो साधन में दूषण सो जल्प ११ अपने पक्ष के स्थापनों मों हीन जो दूषण सो वितंडा १२ हेत्वाभास पांच हैं व्यभिचारी हेतु १ विरोधी २ सत्प्रति पक्ष ३ असिद्ध ४ बोधित हेतु ५ । १३ छल तीन हैं वाक १ सामान्य २ उपचार ३ वक्ता के अभिप्राय तें अन्य अर्थ की जो कल्पना सो वाक छल १ जाति विषयक जो छल सो सामान्य २ मुख्यार्थ में लक्षणा ते जो छल उपचार १४ सामान्य धर्म तें अरु विरुद्ध धर्म ते जो दूषण कथन सो जाति १५ वादी का विरुद्धार्थ के चुप रहना सो निग्रह स्थान १६ ३ ४ ५ ६

अथ चतुर्थ योग शास्त्र याके आचार्य पातंजलऋषि यामो चित्तवृत्तिका रोकनो योग सों विषय है वृत्ति पांच हैं प्रमाण १ विपर्यय २ विकल्प ३ निद्रा ४ स्मृति भेद तें ॥ प्रमाण तीन हैं प्रत्यक्ष १ अनुमान २ आगम ३ भेद तें विपर्यय कहिये मिथ्या ज्ञान जैसे रस्सी में सर्प ज्ञान २ शब्द ज्ञान तें पाछे होय अस अर्थ तें शून्य होय सो विकल्प ३ जैसे स्वपुष्पादि अभाव ज्ञान विषयक वृत्ति निद्रा है ४ अनुभूति विषय को न भूलना स्मृति है ५ अभ्यास तें अरु वैराग्य तें पांचों को रोकनो समाधि है दोय सबीज दूसर निर्बीज ईश्वर की भक्ति तें समाधि सिद्ध होत है क्लेश १ कर्म २ कर्मफल ३ वासना ४ ईषणा ते रहित जो पुरुष विशेष सो ईश्वर है प्रणव के जपते अरु ईश्वर की भक्ति तें समाधि का लाभ अरु विघ्न का नाश होत है व्याधि १ स्त्यान ३ संशय ३ प्रमाद ४ आलस्य ५ अविरागय ६ भ्रम ७ जड़ता ८ अनवस्थितत्व ९ ए विक्षेप चित्त में नाहीं रहत दुःख १ चित्त की चंचलता २ अंग कंप ३ पूर करे चक स्वास ४ ए विक्षेप के संगी हैं याके दूर करने के हेतु ईश्वर सों चित्त भली भांति लगावनो काहू को बुरो न मानने विषयक के निवृत्ति होने संता अरु विचार तें अरु प्राणायाम

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ते चित्त एकाग्र होतु है या उपाय तें स्थिर चित्त में परिमाण ते लेकै आ-
काश पर्य्यंत सब वस्य होत हैं याके अनंतर जब बिचार तें शुद्ध चित्त है त-
ब स्थिर चित्त है स्थिर चित्त मों सत्य युक्ति प्रज्ञा होत है ता प्रज्ञा ते सबको
देखतु हैं ई सबीज समाधि है याके रोकने ते निर्बीज समाधि होत है वा
काल में पुरुष मात्रै रहत हैं व्रत १ मंत्रजप २ ईश्वर विषय फलकामनात्या-
गि सर्व समर्पन ३ ए तीन क्रियायोग हैं अरु क्रिया योग तें समाधि में चित्त
लगतु है अरु क्लेश कम होत है अविद्या १ अहंकार २ राग ३ द्वेष ४ आ-
ग्रह ५ ए पांच क्लेश हैं अविद्या कहिये अज्ञान १ पुरुष अरु अंतःकरण
की एकता अहंकार २ सुख में तृष्णा राग ३ पूर्व अनुभूत दुःख स्मरण ते
विरोध वृत्ति द्वेष ४ शरीर आदि वस्तु के स्थिरता मों तृष्णा आग्रह ५ स्थूल
सूक्ष्म क्लेशन का अरु ता क्लेशन की सुखदुःख मोह रूप वृत्तिन का ध्यान तें
त्याग करनो अरु क्लेश जन्य अशुभ कर्म को फल या जन्म मों है वा जन्मांतर
मों है विवेकी को सब दुःख ही है बुद्धि अरु पुरुष का जो संयोग सो संसार
को हेतु है भोग अरु मोक्ष की उत्पादक बुद्धि है पुरुष चेतन मात्र है अरु बुद्धि
रूप दर्पण मो प्रति बिंब संबंध स्वरूप आत्मा है एक विवेकी पुरुष की अवि-
द्या नष्ट होने तें और सब पुरुषों में अविद्या नष्ट नहीं होत बुद्धि अरु पुरुष को अ-
विवेक अज्ञान ते होत है अरु विवेक ज्ञान तें अज्ञान को नाश होत है एही पु-
रुष की मुक्ति है अरु विवेक ज्ञान ते पुरुष के सबीज समाधि पर्यंत सात प्रज्ञा
उत्पन्न होत हैं हम सब पदार्थ जान्यो १ हमारे अविद्या दि क्लेश नाश भयो २
त्याग को उपाय जान्यो ३ हम को विवेक ज्ञान भयो ४ मेरी बुद्धि कृतार्थ भई बु-
द्धि वृत्ति अपने कारण मों लय होगई पुनः उत्पन्न नहीं होवेगी ५ हमारे
स्वाधीन समाधि है ६ अब निर्विकार स्वरूप भयो ७ ई सात प्रज्ञा हैं संयोग
करने तें क्लेश क्षय होत है अरु ज्ञान को प्रकाश होत है यम १ नियम २
आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ धारणा ६ ध्यान ७ समाधि ८ ई
आठौ योगांग हैं अहिंसा १ सत्य २ आचार्य ३ ब्रह्मचर्य ४ असंग्रह ५ ई
पांच यम हैं शौच १ संतोष २ तप ३ मंत्र जप ४ ईश्वर निष्ठा ५ ये पांच नियम हैं
स्थिर सुख आसन है आसन तें सुखदुःखादि द्वंद्व को नाश होत है ॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्वास अरु स्वास का योगति विच्छेद सो प्राणा याम है सो यातें चित्त मों प्रकाश होत है ४ इंद्रियन के विषय तें निवृत्ति करके चित्त में लगावनो प्रत्याहार है ५ नासिका के अग्र भाग मों अरु नाभि चक्रादि वस्तु विशेष में चित्त का स्थिर करना धारणा है ६ चित्त का ध्येय विषयक जो वृत्त प्रवाह सो ध्यान है ७ इत्ति आदि भेद शून्य अर्थ मात्र का भान होय जेहि मों सो समाधि है ८ धारणा ध्यान समाधि एहीन एक मों होंहि सो संयम है अरु शब्द के संयम तें सब प्राणी का शब्द ज्ञान होत है अरु संस्कार संयम तें संस्कार साक्षात्कार करने से पूर्व जन्म को ज्ञान होत है पर चित्त विषे संयम तें पर चित्त का ज्ञान होत है अरु शरीर के रूप में संयम तें योगी अंतर्ध्यान होत है पुरुष में संयम तें पुरुष को ज्ञान होत है अरु प्रकृति १ बुद्धि २ अहंकार ३ रूप ४ रस ५ गंध ६ स्पर्श ७ शब्द ८ चक्षु ९ रसना १० कर्ण ११ नासिका १२ त्वचा १३ वाक् १४ पाणि १५ पाद १६ पायु १७ उपस्थ १८ मन १९ पृथ्वी २० जल २१ तेज २२ वायु २३ आकाश २४ पुरुष २५ ये पच्चीस तत्व हैं अरु प्रकृति तें बुद्धि की उत्पत्ति बुद्धि ते अहंकार अहंकार तें रूप रूपते लेके मनलों सोरह की उत्पत्ति है गंध तें पृथ्वी रस तें जल रूप तें तेज स्पर्श तें वायु शब्द तें आकाश की उत्पत्ति है अरु अपने निरुपाधिक स्वरूप में जो स्थिति सो मोक्ष पदार्थ है ४ ॐ अथ पंचम सांख्य शास्त्र॥ याके आचार्य कपिल मुनि यामें प्रकृति पुरुष को विवेक विषय है अरु अत्यंत दुःख त्रय की निवृत्ति प्रयोजन एह पच्चीस तत्व के ज्ञान तें विवेक होत है पुरुष १ प्रकृति २ बुद्धि ३ अहंकार ४ रूप ५ रस ६ गंध ७ स्पर्श ८ शब्द ९ चक्षु १० जिह्वा ११ नासिका १२ त्वचा १३ कर्ण १४ वाक् १५ पाणि १६ पाद १७ गुदा १८ उपस्थ १९ मन २० पृथ्वी २१ जल २२ तेज २३ वायु २४ आकाश २५ ये पच्चीस तत्व हैं प्रकृति तें बुद्धि की उत्पत्ति बुद्धि ते अहंकार अहंकार तें रूप १ रस २ गंध ३ स्पर्श ४ शब्द ५ ये पांच तन्मात्रा की अरु चक्षु १ जिह्वा २ नासिका ३ त्वचा ४ कर्ण ५ वाक् ६ पाणि ७ पाद ८ गुद ९ उपस्थ १० मन ११ ये ग्यारह इंद्रियन की उत्पत्ति है अरु पंच तन्मात्रा तें तेज १ जल २ पृथ्वी ३ वायु ४ आकाश ५ ये पंच स्थूल भूतन की क्रम तें उत्पत्ति है अरु दिशा १ काल २ आकाश

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तें सात्विक अहंकार तें एकादश इन्द्रिय की अरु तामस अहंकार तें पंच त-
न्मात्रा की ये सब इंद्रिय अहंकार तें उत्पन्न हैं भूतन से नहीं हैं अरु शरीर
पुरुष नहीं हैं पुरुष को भोग हेतु शरीर है अरु जाग्रत १ स्वप्न २ सुषुप्ति ३ ये
तीन अवस्था बुद्धि निष्ट हैं पुरुष इन को साक्षी है जन्म १ मरण २ सुख ३ दुः
ख ४ बंध ५ मोक्ष ६ ये सब पुरुष के भिन्न भिन्न व्यवस्था तें पुरुष बहुत हैं अरु
पुरुष में कोई धर्म नहीं रहतु पुरुष प्रकाश रूप है अरु असंग है ईश्वर नहीं है जो
ईश्वर मानें गो तौ ईश्वर बद्ध है बद्ध भयो तौ मूढ़त्व में सृष्टि कर्तृत्व का असंभव
होइ गो जो मुक्त मानोगे तौ भी राग द्वेष के अभाव तें सृष्टि कर्तृत्व का असंभव
है यातें ईश्वर नहीं है अरु ईश्वर प्रति पादक जेती श्रुति स्मृति हैं सो सब मु-
क्त पुरुष के प्रशंसा पर हैं अरु सत्व १ रज २ तमो गुण ३ इन की जो मान अवस्था
सो प्रकृति है प्रकृति अति सूक्ष्म है अरु परिणामी है अति सूक्ष्मत्व में प्र-
कृति प्रत्यक्ष नहीं है किंतु बुद्ध्यादि कार्य तें अनुमेय हैं बुद्ध्यादि सृष्टि पुरु-
ष के भोग मोक्ष के हेतु हैं प्रीति तें सृष्टि होत है अरु वैराग्य तें मुक्ति होत है
यज्ञादिक तें मोक्ष नाहीं होत मोक्ष प्रकृति पुरुष के विवेक तें होत है बुद्धि तें ज्ञा-
न १ वैराग्य २ धर्म ३ ऐश्वर्य्य ४ ये चार उत्पन्न होत हैं अरु पशु आदिक की बुद्धि र-
ज तम के संबंध तें विपरीत होत है यातें पश्वादिक के बुद्धि मों अधर्म १ अज्ञान २
अवैराग्य ३ अनैश्वर्य्य ४ ये चारों धर्म रहतु हैं अरु सूक्ष्म से महा भूत उत्पन्न होतु
हैं महा भूत तें शरीर अरु काहू के मत मों पंच भूत को शरीर है काहू के आकाश
रहित चार भूत को काहू के पृथ्वी १ जल २ तेज ३ तीन भूत को काहू के पृथ्वी १ ज-
ल २ द्वै भूत को काहू के बल पृथ्वी को शरीर है अरु पंच भूत को स्वाभाविक चै-
तन्य धर्म नहीं है अरु प्रत्येक में भी चैतन्य धर्म नहीं यातें सूक्ष्म शरीर तें दुःख सु-
ख जानि परत है जब लों विवेक ज्ञान नहीं होत तब लों सूक्ष्म भूत में आरंभ-
कत्व रहत है असत की उत्पत्ति नहीं होत सत की उत्पत्ति होत है अरु कारण
में जो लय सो नाश कहावत है सृष्टि काल मों धर्म अधर्म दोऊ तें पुरुष ब-
द्ध होत है प्रलय में धर्म अधर्म दोऊ तें पुरुष बद्ध होत है प्रलय में धर्म अ-
धर्म दोऊ सूते रहते हैं अरु सृष्टि काल में पुनः फलोन्मुख होइ के अधर्म धर्म
दोऊ शरीर को आरंभ करत हैं अरु मुक्त काल में धर्म अधर्म का नाश होजात है

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सच्चिदानंद ई आत्माका रूप है आत्मा है ई सब जानते हैं और चिदंश में भी काहू को संदेह नहीं होत आनंदांश में सब को संदेह है सांख्य के अभ्यास में कम ते कथित आनंद लाभ होय जात है कोई ऐसा मानत हैं सांख्य शास्त्र में आदि में अथ शब्दका प्रयोग है यातें सांख्य मत में ईश्वर नित्य सिद्ध है ५ ॐ अथ षष्ठम वेदांत शास्त्र ॥ वाके आचार्य वेदव्यास मुनियामें जीव ब्रह्मैक शुद्ध चैतन्य विषय है अज्ञान निवृत्ति आनंद प्राप्ति प्रयोजन है अरु साधन चार वैराग्य १ विवेक २ शमादि षट् ३ मुमुक्षुता ४ ब्रह्मा इंद्रादि लोकके सुख को काक विष्ठावत जान सो वैराग्य १ ब्रह्म नित्य और सब अनित्य यह विवेक २ अरु शम १ दम २ उपरति ३ तितिक्षा ४ श्रद्धा ५ समाधान ६ सदा वासना का त्याग सो शम ब्रह्म इंद्रियनका विषय से विरोध दम २ विषय ते पीठ उपरति ३ शीत उष्ण सहन तितिक्षा ४ गुरु वेदांत वाक्य में विश्वास श्रद्धा ५ चित्त एकाग्रता समाधान ६ संसार बंधन तें कबै छुटि हों यह दृढ निश्चय मुमुक्षुता ७ ये सब साधनयुक्त शांत चित्त जितेंद्रिय श्रद्धावान या को अधिकारी है ब्रह्म में अवस्तु को आरोप सो अध्यारोप है जैसे रज्जु में सर्प को आरोप है तैसेही ब्रह्म में जगत को सच्चिदानंद ब्रह्म वस्तु है अज्ञानादि सकल जड़ समूह अवस्तु हैं सत असत करके अनिर्वचनीय त्रिगुणात्मक ज्ञान का विरोधी भावरूप होय सो अज्ञान कहिये सो अज्ञान व्यष्टि अभिप्राय तें अनेक है अरु समष्टि तें एक है व्यष्टि कहिये अनेक प्रकार समष्टि कहिये समूह जैसे वन में व्यष्टि अभिप्राय तें अनेक वृक्ष ये व्यवहार होत है अरु अनेक वृक्ष में समष्टि अभिप्राय तें वन तैसे अनेकत्व करिके भासमान जो जीवन को अज्ञान वाके नानात्व करि के अनेकत्व व्यवहार होत है अरु जीवन को जो अनेक अज्ञान वामें समूहत्व अभिप्राय तें एकत्व व्यवहार होत है समष्टि उत्कृष्टि उपाधि करके शुद्ध सत्व प्रधान जो चैतन्य है सो सर्वज्ञ सब को नियामक अंतर्यामी जगत को कारण ईश्वर है याको आनंदमय कोश सुषुप्ति है और कोश पांच हैं १ अन्नमय १ प्राणमय २ मनोमय ३ विज्ञानमय ४ आनन्दमय ५ व्यष्टि निकृष्टि उपाधि करके मलिन सत्व प्रधान जो चैतन्य है सो

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अल्पज्ञ अनीश्वर प्राज्ञ है याके दूं आनंद मय कोश सुषुप्ति है अरु सुषुप्ति काल मो चैतन्य करिके प्रकाशित जो अति सूक्ष्म अज्ञान वृत्ति ताकरिके ईश्वर अरु प्राज्ञ ए दोऊ आनंद का अनुभव करत हैं जैसे बनका वृक्ष का अभेद तैसे समष्टि व्यष्टि को अभेद है अरु जैसे बन के आकाश को अरु वृक्ष के आकाश को अभेद है तैसे समष्टि उपाधि विशिष्ट ईश्वर को अरु व्यष्टि उपाधि विशिष्ट प्राज्ञ को अभेद है अज्ञान अरु अज्ञानो पाधि विशिष्ट चैतन्य ये दोऊ का आधार जो उपाधि रहित चैतन्य सो तुरीय है अज्ञान की दूं शक्ति हैं एक आवरण दूसरी विक्षेप जैसे अल्प मेघ सूर्य मंडल को आवरण करत है तैसे दूं अज्ञान आत्मा को आवरण शक्ति विशिष्ट जो आत्मा है वाको कर्तृत्व भोक्तृत्व सुखदुःखादि संसार का संभव है जैसे अपने अज्ञान तें ढांपी जो रस्सी है वामें सर्प को संभव है १ अरु जैसे रस्सीको अज्ञान अज्ञान सों ढांपी जो रस्सी है वामें विक्षेप शक्ति तें सर्प का उत्पादक है जैसे दूं अज्ञान तें ढांपे आत्मा में विक्षेप शक्ति तें आकाशादि प्रपंच को उत्पादक है २ अरु तमः प्रधान जो विक्षेप शक्ति विशिष्ट अज्ञान तद्विशिष्ट जो चैतन्य तातें आकाश उत्पन्न होत है आकाश तें वायु वायु तें अग्नि अग्नि तें जल जल तें पृथ्वी दून्हू हीं आकाशादि सूक्ष्म भूतन तें पंच महा भूत और सूक्ष्म शरीर की उत्पत्ति है सूक्ष्म शरीर जो है सोदूं लिंग शरीर यामें सत्रह १७ अवयव रहत हैं पांच ज्ञानेंद्रिय ५ पांच कर्मेंद्रिय ५ पांच प्राणादि बुद्धि १६ मन १७ निश्चयात्मक अंतःकरण की जो वृत्ति सो बुद्धि है संकल्पात्मक जो अंतःकरण की वृत्ति सो मन है चित्त को बुद्धि में अंतर भाव है अहंकार को मन में अंतर भाव है १ बुद्धि अरु मन आकाशादि कों के मिलत सात्विक अंशते उत्पन्न हैं ६ जो बुद्धि है सो ज्ञानेंद्रिय के संयुत विज्ञान मय कोश होत है २ अरु विज्ञान मय कोश जो है सो कर्तृत्व भोक्तृत्व का अभिमानी है यह लोक पर लोक गामी है सो व्यवहार में जीव कहावत है अरु मन ज्ञानेंद्रिय के सहित मनो मय कोश होत है ३ अरु प्राण वायु पांच हैं प्राण १ अपान २ व्यान ३ उदान ४ समान ५ हृदय को वायु प्राण गुदा को अपान सब सब शरीर को व्यान कंठ को उदान नासिका को समान पांचों

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्राण कर्मेंद्रिय सहित प्राण मय कोश होत है ४ आनंद मय कोश में ज्ञान अरु कर्तृत्व है मनो मय कोश में इच्छा अरु करणत्व है प्राण मय कोश में क्रिया अरु कर्मत्व है ई तीनों को सूक्ष्म रूप कहावत हैं सूक्ष्म रूप समूहमें एक बुद्धि विषयत्व करिके मन सारूप्य समष्टि है अरु सब सूक्ष्म शरीर में एक बुद्धि विषयत्व करिके व्यष्टि है अरु समष्टि उपाधिविशिष्ट जो चैतन्य है सो सूत्रात्मा अरु हिरण्य गर्भ कहावत है तहां ज्ञान १ इच्छा २ क्रिया ३ ये तीनों शक्ति हैं विज्ञान मयादि कोश तीन जो हैं सो जाग्रत अवस्था की वासना तें स्वप्न हैं स्वप्न काल में सूत्रात्मा जो है सो मन के वृत्ति तें सूक्ष्म विषय को अनुभव करत है आकाश में शब्द वायु में शब्द स्पर्श तेज में शब्द स्पर्श रूप जल में शब्द स्पर्श रूप रस पृथ्वी में शब्द स्पर्श रूप रस गंध हैं अरु पंच भूततें भूर्लोक १ भव २ स्वर ३ महर ४ जन ५ तप ६ सत्य ई सात लोक ऊपर के उत्पन्न होत हैं अरु अतल १ वितल २ सुतल ३ तलातल ४ महातल ५ रसातल ६ पाताल ७ ये सात लोक नीचे के उत्पन्न होत हैं एतत्समूहोपाधि विशिष्ट चैतन्य विराट हैं अरु स्थूल शरीर जो है सो अन्न को विकार है यातें अन्न में कोश है सो स्थूल भोग ते जाग्रत है स्थूल देह की जो अनेक उपाधि तद्विशिष्ट जो चैतन्य सो विश्व है अरु अज्ञानविशिष्ट जो चैतन्य सो जीव है ज्ञान विशिष्ट चैतन्य ईश्वर है भाग त्याग लक्षणा तें अज्ञान को त्याग करो अरु ईश्वर लक्षणा में ते ज्ञान को त्याग करो तो दोऊ चैतन्य एक है ब्रह्म सत्य है और सब मिथ्या है ऐसी दृष्टि समुझतें जीव है सो ब्रह्म है इति शास्त्र ॥ अथ वेद ॥ सो वेद अनादि सर्व पुराण शास्त्र संहितादि औ यावत व्यवहार परिभाषा को मूल है अरु सब आस्तिक सम्मत अपौरुषेय अगाध आशय अनंत है तेहि हेतु कह संक्षेप से लिखा वेद के भेद चार ऋग्वेद १ यजुर्वेद २ सामवेद ३ अथर्वन वेद ४ ऋग्वेद की मुख्य शाखा आठ सो साकल १ वाष्कल २ ऐतरेव ३ आश्वलायन ४ सांख्यायन ५ मंडूक ६ कौषीतकीय ७ आरण्यक ८ औ आठ स्थान हैं चर्चा १ आवक २ चचर्क ३ अवर्णीयपार ४ क्रमपार ५ क्रमपद ६ क्रमजटा ७ क्रमदंडु ८ आठ स्थान को क्रम से अर्थ चर्चा कहिये अध्ययन १ अध्ययन सुनावै सो गुरु श्रावक २ चचर्क कहिये शिष्य ३ वेद को समा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त्ति सो श्रवणीय पार ४ क्रम पार संज्ञा कहिये संहिता ५ संहिता का पद च्छेद जो पद नाम सें ख्यात सो क्रम पद ६ संहिता की जटा सो क्रम जटा ७ संहिता का दंड सो क्रम दंड ८ क्रम पारांदि चार स्थान के चार पारायण हैं १०५८० ऋचा का एक पारायण होत है संहिता का १ औषद का २ ई दोई प्रकृति पारायण जटा का १ औ दंड का २ ई दुइ विकृति पारायण विकृति नव हैं ९ क्रम १ जटा २ माला ३ शिखा ४ लेखा ५ ध्वज ६ दंड ७ रथ ८ घन ९ इन के लक्षण संहिता के पदन को अनुलोम विलोम पढ़ना सो क्रम १ दुइ पद को वा तीन पद को आदि औ अंत मों अनुलोम अरु मध्य मों संधि सहित विलोम पढ़ना सो जटा २ जटा कहिये उस के आगे के पद को एक वार उच्चारन कर तीन पदस संधिक विलोम पढ़ के पुनः अंत मों तीनों पद अनुलोम पढ़ना सो घन ३ इत्यादि॥ ऋग्वेद के अध्याय ६४ मंडल १० मंडल कहिये खंड वर्ग २००६ सूक्त १०१७ पद १५३७९२ इति ऋग्वेद॥ अथ यजुर्वेद॥ यजुर्वेद की शाखा ८६ बेरचक १ आह्वारक २ कट ३ प्राच्य कट ४ कपिशठ लकट ५ आस पणीय ६ वास पणीय ७ वार्तांतरेय ८ श्वेत ९ श्वेततर १० औष मन्यव ११ मैत्रा पणीय १२ कासव १३ माध्यंदनीय १४ इत्यादि मैत्रा पणीय शाखा के भेद ७ मानव १ दुंदुभेय २ चौकेय ३ बाराह ४ हारिद्रवेद्य ५ श्यामा ६ श्यामायवीये ७॥ वाजसनेय शाखा के भेद १७ काण्व १ माध्यंदनीय २ शावीय ३ स्थापायनीय ४ कापिल ५ पौंड्र ६ कात्यायनीय ७ इत्यादि॥ वाजसनेय शाखा के मंत्र॥ १९०० याही को शुक्ल यजु औ कृष्ण यजु कहते हैं मंत्र से चौगुन ब्राह्मण भाग हैं॥ तैतरेय शाखा के भेद २॥ औरव्य १ कांडिकेय २ कांडिकेय के भेद ५॥ आपस्तंबी १ वौधायनी २ सत्याषाढ़ी ३ हिरण्यकेशी ४ औधेयी ५ जैतरेय शाखा के कांड ७ प्रश्न ४४ अनुवाक ६५१ पताशी २१९८ पद १९२९० अक्षर २५३८६८ ब्राह्मण विषै वाक्य की संख्या १९४८० अध्याय ४४ यह तैतरेय संख्या है यही रीति से और सब का भेद भाष्य से जाने॥ इति यजुर्वेदः २॥ अथ सामवेद॥ सामवेद की शाखा १००० देश काल कलहादि निमित्त से बहुत शाखा लोप सी ह्वै गई जो बची सों कहत हैं आस रायणीय १ चासुरायणीय २ वार्तां-

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तरीय ३ प्रांजल ४ ऋग्वेन विधि ५ प्राचीन योग्य ६ एणा परणीय ७ इत्यादि एणा परणीय शारवा के नव भेद एणा परणीय पशा व्याधनी २ शांत्य खल ३ खल्वल ४ महा खल्वल ५ लांगल ६ कैथुम ७ गौतम ८ जैमिनीय इन्ह सोरह शारवा मों तीन शारवा विख्यात हैं सो प्रसिद्ध नहीं हैं गुजरात देश सों कैथुमी शारवा प्रसिद्ध है १ कर्नाटक देश मों जैमिनीशा० प्र० २ महाराष्ट्र देश मों एणा परणीय शा० प्र० ३ कैथुमी शारवा के भेद ६ कैथुमि २ आसुरायण २ वाताय म ३ प्रांजलि ४ प्राचीन योग्य ५ नैग मनीय ६ इति ॥ आरुनय मंत्र १०८ पाव मान मंत्र १०४ ऐंद्र मंत्र आरु सुपर्ण प्रेस्य शारवा सहित बाल खिल्य शारवा भेद ८० आरण्य क उपनिषद सहित औसुपर्ण प्रेस्य अरु बाल खिल्य सहित सूर्य सूक्त के भेद ८१० इन सब साम समूह के हैं साम के आचार्य ९३ इति हास वेद ३ अथ अथर्वन वेद॥ अथर्वन की शारवा नव हैं पैप्पल १ दांत २ प्रदांत ३ स्तोत ४ औत ५ ब्रह्मवद ६ शौनक की ७ देव दर्शी ८ चरण विद्य ९ सब शारवा के मंत्र ९००० कल्प पांच हैं नक्षत्र कल्प १ विधान कल्प २ संहिता विधि कल्प ३ अभिचार कल्प ४ शांति कल्प ५ इति अथ की ।४। कर्म १ उपासना २ ज्ञान ३ तीन को वेद प्रति पादन करत हैं यही से वेद त्रिकाह। विधि और निषेध मारग सें मुख्य फल मोक्ष अरु अवांतर फल स्वर्गादि सुख कहत हैं। वेद ध्यान पांच बीता का अरुन शरीर कमल नेत्र ऋग्वेद १ चार हाथ का दीरघ ताम्र रंग शरीर सूबर कनक नेत्र कपाली यजुर्वेद २ माला दंड धारी शांत दांत पवित्र वसन रवि सम लोचन पांच हाथ शरीर साम वेद ३ तीक्ष्ण स्वभाव कामी क्रोधी जगत प्रिय सात हाथ का तनु अथर्वन ४ ऋग्वेद का अत्रि गोत्र ब्रह्मा देवता गायत्री छंदः १ यजु र्भार द्वाज गोत्र महा देव देवता त्रिष्टुप छंदः २ साम का काश्यप गोत्र विसु देवता जगती छंदः ३ अथर्वन का बैतायन गोत्र दुंद्र देवता अनुष्टुप छंदः चारों वेद के अंग हैं॥ शिक्षा १ कल्प सूत्र २ व्याकरण ३ निरुक्ति ४ छंद प्रणास्त्र ५ ज्योतिष ६ चार वेद के चार उपवेद। ऋग्वेद का आयुर्वेद उपवेद सों चिकित्सा शास्त्र १ यजुर्वेद का धनुर्वेद उ० सो युद्ध शास्त्र १ साम वेद का गंधर्व उपवेद

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सो संगीत शास्त्र ३ अथर्वन का अर्थ शास्त्र उ·सो सिल्प शास्त्रसहित
नीति शास्त्र ४ इति निगम संक्षेपः ॥ ॐ ॥ अथ तंत्र शास्त्र ॥ याके कर्ता
महादेव अनेक छंद देवता सहित मंत्र यंत्रादि शब्दार्थ सृष्टि यामें प्र·
ति पाद्य विषय है धर्म १ अर्थ २ काम ३ मोक्ष ४ प्रयोजन हैं फल को
मना युक्त याको अधिकारी है शिव के निर्गुण और सगुण स्वरूप
जानतें मोक्ष होतु है प्रकृति सें परे सो निर्गुण १ प्रकृति युत सगुण २
सृष्टि दुदू हैं अकार उकार मकार नाद बिंदुर्द शब्द सृष्टि १ रुद्रादि अने·
क देवता और चर अचर जगत दे अर्थ सृष्टि २ याको क्रम पर ब्रह्मतें श·
क्ति भर्द शक्तितें नाद २ नादतें बिंदु ३ शिव शक्तितें सूक्ष्म शब्द होत है
यही को शब्द ब्रह्म कहत हैं पराशक्ति ही शरीर में कुंडलनी नाड़ी रूप
सों शब्द ब्रह्म रूप होय के परा १ पश्यंती २ मध्यमा ३ बैखरी ४ चार बि
धि वाणी होत है अकारादि शकारांत पचास वर्ण कुंडलिनी रूप परा
शक्तितें ही होत हैं शिव शक्तितें महत्तत्व १ महत्तत्वतें अहंकार अहंकार
तीनि बिधि सात्विक आदि भेदतें सात्विक अहंकारतें दश इंद्रियन के दश
देवता वे दिशा १ पवन २ सूर्य ३ वरुण ४ आदि राजस अहंकारतें दश इंद्रिय
१० तामस अहंकार तातें तन्मात्रा द्वारा पंच महा भूत शब्दतें आकाश १ स्प
र्शतें वायु २ रूपतें तेज ३ रसतें जल ४ गंधतें पृथ्वी ५ आकाश स्वच्छ रूप १ वा·
यु श्याम २ तेज लाल ३ जल शुक्ल ४ पृथ्वी पीत ५ पांच भूतन के पांच मंडल
हैं षट बिंदु युत गोल मंडल आकाश को १ वायु का त्रिकोण स्वस्ति के चि·
न्ह युत २ अग्नि का अर्द्ध चंद्राकार ३ जल का कमल के आकार ४ पृथ्वी का च·
क्र चिन्ह युत चौरस ५ पंच भूतन की पंच कला निवृत्ति १ प्रतिष्ठा २ विद्या ३ शां·
ति ४ शांत्यतीता ५ चराचर जगत पांच भूत रूप हैं अचर पर्वत वृक्षादि भेद
तें अनेक बिधि २ चर तीन भेद को कृमि कीटादि स्वेदज १ सर्व पक्षी आदि अं·
डज २ मनुष्यादि जरायुज ३ मातृ काके अक्षर तें सब मंत्रन की उत्पत्ति
मंत्र विविधि पुरुष १ स्त्री २ नपुंसक ३ पुनः मंत्र के चार भेद ४ सिद्ध १ सा·
ध्य २ सुसिद्ध ३ अरि ४ मंत्रन के दोष ४ छिन्न १ रुद्ध २ शक्ति हीन ३ प·
रा मुख ४ बधिर ५ नेत्र हीन आदि दोष युत मंत्र ते फल नाहीं होत ·

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मंत्रन के संस्कार १० जनन १ जीवन २ ताड़न ३ बोधन ४ अभिषेक ५ विम-
ली करण ६ अप्यायन ७ तर्प्पण ८ दीपन ९ गुप्ति १० मातृ का से मंत्रका
उद्धार सो जनन १ प्रणव युत जप सो जीवन २ मंत्राक्षर लिख चंदनजल
से मति अक्षर छिरकनो सो ताड़न ३ इत्यादि ई दस संस्कार से अवश्य।
मंत्र सिद्ध होतु है कूर्म चक्र ते सिद्ध आसाध्यादि भेद विचार करनो मंत्रजप
के स्थान तीर्थ नदी तीर पवित्र बन देवता मंदिर आदि गुरु लक्षण कुलीन
न सर्वागम शास्त्र को तत्व जानै जितेंद्रिय सत्य वादी आदि शिष्य लक्षण
कुलीन शुद्ध मन पुरुषार्थ युत वेद पठित जितेंद्रिय आदि। तंत्र शास्त्र मो
दीक्षा को ग्रहण मुख्य इष्ट देवता का गुरु से मंत्रोपदेश सों दीक्षा। पाप ता
श करि दिव्य ज्ञान देत है यातें दीक्षा नाम भयो याके भेद ४ चार क्रिया म
यी १ वर्णमयी २ कलामयी ३ वैद्य मयी ४ चारों के कर्ता गुरु नित्य कर्म कुंड
मंड पादि करनो क्रिया मयी १ शिष्य देह मों वर्णादि न्यास २ नि वृत्यादि पांच
कला कौंते हि ३ अंगन मों योजन कदी॰ ३ शिष्य शरीर मों चेतन शक्ति क
व्यापक ध्यान सो वेदा मयी दी॰ ४ अध्वाक्ष हैं कलाध्वा १ तत्वाध्वा २ भुव
नाध्वा ३ वर्णाध्वा ४ पलाध्वा ५ मंत्राध्वा ६ अध्वा कहिये रास्ता गुरु कोई
षट् अध्वा का साधन उचित है देवता पूजा का सातवां पांच आवरण है
एही सब रास्ता सें जीव को मोह होत है॥ इति तंत्र शास्त्र संक्षेपः॥ इति मा
नस दीपिका यां पुराणादि शास्त्र निगमागम वरणने द्वितीयः प्रकाशः २
अथ काव्य अंगया रामायण मों श्री गोसाईं जी जावत काव्य के अंग धरे हैं
अरु बिना काव्य जानै बहुत जन बहुत ठौर शंका करतु हैं ताते लक्षण और
और काव्य के ग्रंथन के अरु उदाहरण या रामायण के सरल रीति से लि-
खे जात हैं॥ अथ काव्य लक्षण॥ शब्द अर्थ सुंदर गुण युत दोष रहित अथ का
व्य प्रयोजन जस संपति आनंद दारिद्र नाश चातुरता संसार अरु राम बस होवो
अथ काव्य को कारण चित्त ताके कारण तीन शक्ति १ व्युत्पत्ति २ अभ्यास ३ शक्ति दे
व कृपा यथा जेहि पर कृपा करहिं जन ज्ञानी कवि उर अजिर न चावहिं बानी १ व्यु-
त्पत्ति पठन यथा गुरु गृह गए पठन रघुराई २ अभ्यास करे सिद्ध होय २ यथा उलटा
नाम जपत जग जाना॥ सो काव्य ३ भांति उत्तम १ मध्यम २ अधम ३ अथ उत्तम जीवव्यं

6514.

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ग प्रधान॥ यथा नीक दीन हरि सुंदर तार्द्द १ टी॰ नीक को बुरो समझनो लक्ष-
णा तातें नारद को अनुचित व्यंग अथ मध्यम व्यंग वाच्य बराबर यथा कंह कुं-
भज कंह सिंधु अपारा २ टी॰ दून को तेज देखाय राम का तेज सूचित कर संदेह
दूर होवो व्यंग अथ अधम जामों व्यंग नहीं सो द्वै भांति एक शब्द चित्र यथा मा-
रु मारु धरु धरु धरु मारू १ दूसरो अथ चित्र यथा नील सरोरुह नील मनि
नील नीर धर श्याम टी॰ उपमातें चमत्कार अर्थ है। अथ शब्द अर्थ निर्णय
सुनाय सो शब्द बुझाइ सो अर्थ सो शब्द द्वै भांति ध्वन्यात्मक वाजातें १ वर्णा-
त्मक मुखतें २ सो तीन भांति वाचक १ लक्षक २ व्यंजक ३ अरु अपर सब चारि
भाँति प्रभु सम्मति वेदादि १ मित्र सम्मित स्मृत्यादि २ कांता सम्मित पुराणा
दि सर्वोपकारक आगम ४ अथ वाचक जो सुनत हीं जानै यथा जलतें पा-
नी को बोध सो चारि भांति जाति १ देवादि इच्छा २ भैया आदि गुण ३
श्यामादि क्रिया ४ स्वरारि आदि अथ लक्षक सूधे शब्द सो टेढ़ो भा-
व यथा धिक धर्म ध्वज धंधक धोरी टी॰ है ऊंचो पै नीचो बोधक है॥ अ-
थ व्यंजक अधिक अर्थ बोधतें यथा मोर मनोरथ जानहुं नीके वसहु-
सदा उर पुर सब ही के टी॰ उर पुरतें सब के हृदय मों हमारी ऐसी मति दे-
हु॥ अथ अभिधा लक्षण बहुत अर्थ के शब्दों मों योगादिक तें एक
अर्थ प्रतीति होय यथा काक पक्ष शिरतें जुलुफ माथ को अरु भाल
तिलक में ललाट को अथ लक्षण लक्षण मुख्यार्थ त्यागि और अ-
र्थ करे सो द्वै प्रकार एकानु रूढ़ी ध्वनि रहित यथा राम गमन मंडप तब
कीन्हा टी॰ मंडप रूढ़ि अथ योग रूढि यथा पंकज कोक लोक सुख
दाता टी॰ पंकज योग रूढ़ि है अथ योगिक यथा जापक जन प्रल्हा
द जिमि पालहि दल सुर साल जापक यौगिक लक्षना निरूढि रूढ़ै
मों होत है अथ पूजै प्रयोजन वती यामें ध्वनि होय यथा व्याकुल नगर
देखि तब आयउ बाल कुमार टी॰ नगर तें नगर वासी सो प्रयोजन व-
ती छः प्रकार की प्रथम उपादान पर गुन लीन्हे यथा तब चले बान करा-
ल टी॰ चला बन हार को गुन लीन्हों। अथ लक्षित २ जिन लक्षण और
देई यथा बीच बास करि यमुनहिं आए टी॰ यमुनातें यमुना तट-

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ सारोपा और थापिये और को यथा चिंता सापिनि को नहिं खाया
टी· चिंता को सापिनि में आरोप अथ साध्य बखाना ४ उपमानतें उपमे·
य को बोध यथा मुकुर मलिन अरु नयन बिहीना टी· मुकुर मन नयन
ज्ञान देयत्व अथ गौणी सारोपा ५ गुन लखि आरोपतें यथा राम चंद्र
मुख चंद छबि लोचन चारु चकोर टी· मुख चंद्र के आरोपतें सारोपा अर
चंद्रमा के प्रकाशत्व गुन ते गौणी अथ गौनी साध्यवसना ६ केवल उ·
पमान यथा अरुन पराग जलज भरि नीके टी· अरुन पराग सिंदूर ज·
लज हाथ अथ व्यंजना जो शब्द अर्थतें अधिक अर्थ व्यंग में सो दै
भांति की शाब्दी १ आर्थि सो शाब्दी २ अभिधा मूल १ लक्षणा मूल
२ अथ अभिधा मूल व्यंग बहुत अर्थके शब्द मों एक की प्रतीति सो संयो·
ग १ प्रसंग २ बिरोध ३ देश ४ समय ५ वृत्यादि तें अरु लक्षण को फल लक्ष
णा मूल व्यंग मों अथ संयोग तें यथा जनक पाट महिषी जग जानी टी·
महिषी अनेकार्थ जनक अयोग तें एनी १ वियोग तें यथा कहेउ राम
वियोग तब सीता टी· सीता अनेकार्थ राम वियोग तें जानकी २ प्रसंगतें
यथा हरिहित सहित राम जब जोहे टी· हरि अनेकार्थ प्रसंग नें बाजी ३
बिरोधते यथा मत्त नाग तम कुंभ बिदारी शशि केशरी गगन बनचारी
टी· सिंह बिरोध तें हाथी ४ देश तें यथा जीवन मुक्ति हेतु जनु काशी ॥
टी· मुक्ति अनेकार्थ काशी देश तें मोक्ष ५ समय ते यथा चकई सांझस·
मय जनु मोही टी· चकई अनेक सांझ समय ते चकवा की है साहचर्य
ते यथा एहि बिधि आइ बिलोकी बेनी सुमिरत सकल सुमंगल देनी टी·
देनी अनेकार्थ सुमिरत मंगल देनी साहचर्यतें तीरथ बेनी ७ उचितते यथा
घन पय अवहिं नयन जल छाये टी· पय अनेकार्थ घन उचिततें दूध ८ सा·
मर्थ्य तें यथा तन महं प्रविसि निसरि सर जाहीं टी· अनेकार्थ प्रविसि निस·
रि सामर्थ्य तें बान ९ चिन्हतें यथा काम कुसुम धनु सायक लीन्हें ॥ टी·
काम अनेकार्थ कुसुम धनु चिन्हते मन्मथ १० अथ लक्षणा मूल
दै भांति एक छिप्यो गूढ़ व्यंग यथा तुम रहिं भाग राम बन जाहीं टी· तु
म्हरे पखतें गौर दि भुजता को मुख्यार्थ बाध योग मो लक्षणा भार उतार वो व्यंग

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गूढ़ दूसरो प्रगट व्यंग यथा रघुबंशिन कर सहज सुभाऊ टी॰ रघुबंशि
न की बड़ाई प्रगटै व्यंग है यातें अगूढ़ अथ तीनों शब्दतें व्यंग वाचक
तें यथा वर अनुहार बरातन भाई टी॰ बर की कुरूपता बरातिन की सुंद
रता व्यंग १ लच्छकते यथा कह अंगद सलज्ज मन माहीं टी॰ सलज्ज तें
निर्लज्जता व्यंग २ व्यंजक ते यथा सेवत तोहि सुलभ फल चारी टी॰ देवी
की स्तुति में कृपा कराइवो व्यंग आपनो कारज साधनो दूजो व्यंग इति शाब्दी
अथ अर्थ व्यंजक व्यंजक तें जो अर्थ अधिक होइ ताको भेद वक्ता बोधव्या
दि वक्ता यथा कत शिख देइ हमहिं कोइ माई टी॰ वक्ता मंथरा वचन तें राम रा
जनाश करिवो क्रिया छपावति है बोधव्यते यथा पुनि आउब यहि बेरि आका
ली टी॰ आउब जानकी पय बोधव्य २ व्यंग है काकु यथा बालमराल किमं
दर लेहीं टी॰ काकु प्रगटे है अरु वाक्य वशिष्ठ प्रस्ताव वशिष्ठ अन्य सन्निधि
देश समय चेष्टा इत्यादि बहुत हैं इति व्यंग अथ ध्वनि मूल लक्षणा मूढ़ व्यं
ग प्रधान होय सो ध्वनि है द्वै भांति अविवक्षित १ विवक्षित २ अथ अवि
वक्षित कहवै यानचा है आपुहिं तें ध्वनि होय यथा कहहिं सुसेवक बारहिं
बारा अरु सब सेवक गन गरहिं गलानी टी॰ गलानि अविवक्षित वाक्य है।
अविवक्षित मों भेद है एक अर्थांतर संक्रमित वाच्य ध्वनि जो अर्थ और सें मिलके
रहैं यथा जनु युग नामिक प्रजा प्राण के टी॰ एक प्रजा प्राण भरत हू जो रकार मका
र हू जो अत्यंत तिरस्कृत्य वाच्य ध्वनि व्यंग की अधिकाई कहिवे को वाचक अ
पनो अर्थ छोड्यो यथा कुंदकली दाडिम दामिनी इन्हींसें अरु हर्षे सकल पाइ
जनु राजू टी॰ हरष व्है वो असंभव वाचकतें अपनो अर्थ छोड्यो अरु तिहारे बैरि
को हर्ष हमतें नाहीं सह्यो जातु यह ध्वनि इति लक्षणा मूल ध्वनि अथ अभिधाय
मूल ध्वनि विवक्षित जामों इच्छित अर्थ ध्वनित होय यथा बहुरि गौरि कर ध्या
न करेहू विवक्षित मों भेद है असंलक्षक्रम १ संलक्षक्रम २ असंलक्षध्व
नि में रस भावादिक अनेक प्रकार अरु संलक्ष मों भेद तीन शब्द शक्ति १ अ
र्थ शक्ति २ शब्दार्थ शक्ति ३ यथा इहां कुम्हड़ बतिया को उनाहीं जो तरजनि
देखत मरि जाहीं टी॰ इहां व्यंग सब बिना सहाय जानो जातु है अरु क्रम नाहीं
यातें असंलक्षक्रम अरु अलंकार जहां और परम धाम होय अरु रस मुख्य

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

होइ तो रस वत अलंकार और जहां भाव अंग होइ मुख्य और होय तहां रो-
चित अलंकार अरु जहां भाव अंग होय मुख्य और होय तहां उरजस अलं-
कार अरु जहां भाव शांति कादिक अंग होय मुख्य और होय तहां समाहित
अलंकार रसन कहिये जासें रस ध्वनि है ए गुनी भूत व्यंग है सो मध्यम के अ-
संग में उदाहरण कहेंगे अब रस को स्वरूप कहत हैं रस को मूल भाव है
तातें प्रथम हि भाव को लक्षण कहियतु है भाव सब तें बड़ो है वासना रू-
प जानिये सो चार प्रकार विभाव १ अनुभाव २ संचारी ३ अस्थार्द ४ अरु
भाव भेद सों सात्विक भाव जो है सो अनुभाव ही में गनिए अथ विभाव
लक्षण जाते अस्थार्द भाव होइ सो विभाव १ अथ अनुभाव लक्षण थिर भा-
व को प्रगटै जो सो अनुभाव अरु संचारी लै सब रस में संचरै सो दिभाव है भां
ति आलंबन १ जो थिर भाव को स्थान यथा सीतहिं पहिराए प्रभु सादर दू-
रो उदीपन सुधि आए तें लखै सो है भांति देवी यथा नव पल्लव फल सुमनसु
हाए मानुषी २ यथा पट उरलाइ सोच अति कीन्हा यथा बोल वो देखबो
ठेढ़ो अरु सात्विक भाव जेतो है अरु आलिंगन चुंबन इत्यादि यथा भावेल-
यन कुटिल भौं हैं रद पट फरकत नयन रिसौ हैं अरु सात्विक प्रकार ८
आठ अस्प्रांव १ यथा रहि जनु कुंवरि चित्र अवरेखी स्वेद २ यथा श्रम
विंदु मुख राजीव लोचन अरुणा तन शोणित कनी रोमांच ३ यथा श्याम-
ल गात रोम भये ठाढ़े स्वर भंग ४ यथा पुलकित तनु मुख आवन बचनाकं-
प ५ यथा घर घर कों पहिं पुर नरनारी विवरन श्री हृत भये भूप धनु दूटे दे
खसु ७ तासु दसा देखी सखिन पुलक गात जलनैन लै ८ व्याकुल एउ
शिथिल सब गाता केचित मत जंभा यथा लखिका अमित उनींदवस स-
यन करा वहू जाइ अथ संचारी भाव ३३ निर्वेद १ यथा सब परि
हर रघु वीरहिं भजौ भजहि जेहिं संत ग्लानि २ भई ग्लानि मोरे सुतमा-
हीं शंका ३ शिवहिं विलोकि सशंक उमारू असूया ४ जिन्ह हिं मोह दू-
न अवध बधावा ५ जग योधा को मोहि समाना श्रम दै हंहु युद्ध देखहु
सकल श्रमित भये अति बीर आलस ७ रघु बर जाइ शयन तब कीन्हा। दी
नता ८ आपनि दारुन दीनता कहेउ सबहि शिरु नाइ चिंता ९ चिंता कव

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नहु बातकर तात कस्यि जानि मोर मोह पुन अति विकल मोह सति नाही स्मृति ११ सुधि न तात सीता की पाई धृति १२ सब प्रकार प्रभु पूरण कामा लाज १३ गुरु न लाज समाज बड़ि देख सीय सकुचानि उद्वेग १४ का देखा य चह काय देखा वा चपलता १५ मंदिर तें मंदिर चढ़ि धाई जड़ता १६ मुनि मग मांझ अचल होइ वैसा हर्ष १७ जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हर्ष न जाइ कहि गर्व्व १८ भुज बल भूमि भूप बिनु कीन्ही बियाद १९ राम राम रट विकल भुआलू निद्रा २० तेइ सिय राम साथरी सोए अमर्ष २१ कंदुक इव ब्रह्मांड उठावों औत्सुक्य २२ वेग चलिय प्रभु आनिए भुज बल खल दल जीति अपस्मार २३ गद मूर्छा रामहिं सुमिर नृप फिरि करवट लीन्ह स्वप्न २४ दिन प्रति देखहुं रात कु सुपने बोध २५ बिगत निसा रघुनायक जागे उग्रता २६ जितेहु सुरासुर तव श्रम नाहीं नर बानर केहि लेखे माहीं प्रान मगन ता मग्न २७ राम बिरह सागर महं भरत मगन मन होत ज्ञान २८ उपजा ज्ञान वचन तब बोला व्याधि २९ देखी व्याधि असाधि नृप अवहित्था लाज तें हर्ष शोक छिपे ३० तन सकोच मन परम उछाहू गूढ़ प्रेम लखि परइ न काहू उन्माद ३१ लक्ष्मण समुझाये बहु भांती पूंछत चले लता तरु पांती त्रास ३२ भा निरास उपजी मन त्रासा तर्क ३३ लंका निशिचर निकर निवासा इहां कहां सज्जन कर बासा इति संचारी ॥ अथ स्थाई लक्षण ॥

स्थाई भाव बड़ो है अरु रस स्वरूप को हेतु है रति १ हांसी २ शोक ३ क्रोध ४ उत्साह ५ भय ६ ग्लानि ७ आश्चर्य ८ अरु अनुभाव विभाव संचारी ए सब जब थाई भाव के अर्थ अनुकूल होइंगे तहां पूरन तारस की जानी जातु है। अरु शृंगार १ हास्य २ करुणा ३ रौद्र ४ वीर ५ भयानक ६ विभत्स ७ अद्भुत ८ इति नाटक मते नवम शांति रस ९ कोउ कवि मानत हैं तहां थाई निर्वेद अथ प्रथम शृंगार रस को देवता कृष्ण अरु बरन हू कृष्ण है सो देवतन मों श्रेष्ठ यातें यहू रसन मों एजो है अरु सकल व्यभिचारियों मों चरितार्थ होतु हैं सो शृंगार द्वै प्रकार एक संयोग यथा सीतहि पहिराये प्रभु सादर अरु दूसरो वियोग सों पांच प्रकार पूर्वानुराग १ यथा एक कहहिं नृप सुत तें आली इहां लै दरस ला[illegible] लोचन अकुलाने इन्हीं तक प्रवास २ कोमल

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चित्त कृपालु रघुराई अरु अहह नाथ मोहिं निपट बिसारी दूहां तक विरह
३ यथा सुसह बिरह अब नहिं सहि जाई दूहा ४ यथा शिव संकल्प की-
न्हमन माहीं रोष ५ गौतम नारी श्राप बस उपल देह धरि धीर ॥ जहां
मिलवे की आस सो वियोग शृंगार अरु जहां न मिलवे की सो करुण
अरु कहूं विभावना संचारी भाव न्यारे रहू रस प्रगटत हैं परंतु पूर्णता वि
ल मोहे अथ विभाव करि रस यथा हाकुर धुनि चहुं दिशा सोहई दूहा
लोनव पल्लव भय विटप अनेका दूहा तक अथ अनुभाव करि यथा भावे
लयण कुटिल भई भौंहैं संचारी ढीली लिखो पूर्व है भ्रम मूर्छा दूत्यादि अथ
हास्य रस १ जहां अजोग को योग उनको काम अरु बुरो देखि वो अरु स्व-
र बाजाऊंचो नीचो होवो हास्य के हेतु होतु है ब्रह्म देवता श्वेत रंग यथा
शिव समाज सब देखन लागे विदरि चले वाहन सब भागे अथ करुण
रस २ मित्र को दुख सुतक आप भई अंधो दारिद्र रोग कंप पीन रहो अ-
नुभाव मोह मूर्छा दीनता संचारी सो काव्य शृंग होई तब करुण रस यम
देवता कपोत रंग यथा मुख सुखाहिं लोचन स्रवहिं सोकन हरै समा दूस-
नहुं करुण रस कर कले उतरी अवध बजाद अथ रोद्र रस ४ गर्वतें बोलि
बो अनु हथियार काढ़ि बोहिं रव क्रोध होवो ए विभाव देखो मौंहैं आरबे ला
ल होठ फरकवो ए अनुभाव गर्व चपलता दूत्यादि संचारी रुद्र देवता अरुण
रंग यथा जो धनु शंकर करहिं सम्हार्द तदपि हतवर घुवीर दोहार्द दी-दूहा
दूषन तीन विभाव भुजादि फरकन अनुभाव गर्भ संचारि क्रोध स्थार्द तातें
रोद्र अथ वीर रस ५ स्थार्द उत्साह सो चार प्रकार युद्ध १ दान २ दया ३ ध-
र्म ४ युद्ध का दल समर ए विभाव अरु जो उग्र जीव हैं वचन उग्र बदन लाल
रंग प्रफुल्लित अनुभाव गर्भ उग्रता असूया संचारी इंद्र देवता पीत रंग स-
म लाकी सुधि लौ वीर सम सुध भूले तें रोद्र इन मों भेद इतनो यथा युद्ध वीर
चूतना कहत नीति रस भूला रन रस विटप पुलक मिस फूला दान वीर जो
संपति शिव रावणहिं दीन्ह दिये दश माथ सोद संपदा विभीषणहिं सकु-
च दीन्ह रघुनाथ दया वीर और को दुख देखि विभाव वाको दूर करि वो अ-
नुभाव गर्भ धीरज संचारी यथा सुनि सेवक दुख दीन दयाला फर-

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कि उठे द्वौ भुजा विशाला धर्मवीर यथा शिवदधीचि बलिजो कछु भाषा त-
न धन तजेउ वचन पन राषा अथ भयानक रस ६ भय विभाव कंप रोमां-
च प्रस्वेद अनुभाव मोह मूर्छा दीनता संचारी भाव विष्णु देवता श्वेत रंग
यथा डरपे गीध वचन सुनि काना अथ विभत्स रस ७ ग्लानि निभाव नि-
षिद्ध कदर्य को देखिवो अनुभाव निंदा करिवो रोम कंप दुःख असूया संचा-
रि महा काल देवता नील रंग यथा मज्जहिं भूत पिशाच बैताल अरु यदु-
वंशी खेलहिं चित्त दये इहां तक अथ अद्भुत रस ८ आचार्य देखि अन-
होनी विभाव वचन कंप रोमांच अनुभाव हर्ष डर मोह संचारी ब्रह्म देव-
ता पीत रंग यथा देखरावा मातहि निज अद भुत रूप अखंड रोम रोम प्र-
ति लागे कोटि कोटि ब्रह्मंड अथ सांत रस ९ सिद्धन की मंडली तपोवन क-
था संसार तुच्छ ए विभाव समता ज्ञान अनुभाव धीरज हर्ष संचारी विष्णु
देवता स्वेत रंग यथा परिहर सकल भरोस रामहिं भजहिं ते चतुर नर अरु औ-
र हू तीन रस गनाये हैं दास्य १ सख्य २ वात्सल्य ३ दास्य यथा चरण-
कमल चांपत विधि नाना सख्य यथा सखा नीति तुम नीक विचारी वात्स
ल्य यथा भइया कहहु कुशल दोउ बारे अथ रसन तें रस उत्पत्ति शृंगार तें
हास्य करुणा तें रौद्र वीर तें अद भुत वीभत्स तें भय अथ रस शत्रु मित्र शृंगार रि
पु वीभत्स वीर रिपु भय अद्भुत रिपु रौद्र करुणा रिपु हास्य अरु इन ही के विपरीत
तें मित्रता जानो इति रस ध्वनि अथ भाव ध्वनि संचारी तें व्यंग देव राज रत
इन की जहां प्रधानता होइ तहां भाव ध्वनि अथ संचारी भाव ध्वनि यथा
घन घमंड नभ गर्जत घोरा। प्रिया हीन डर पत मन मोरा अथ देव रति यथा प्र-
नवौं पवन कुमार खल बन पावक ज्ञान घन अथ राजरति यथा सुन हु मही
पति मुकुट मनि तुम सम धन्य न कोउ राम लषन जाके तनय विश्व विभूष-
न दोउ अरु ऐसे ही मुनि पुत्र स्नेह तें भाव ध्वनि अथ रसाभास भावा
भास रस अवचित्त ते रसा भाव अरु भाव अनुचित तें भावा भास अ-
थ रसाभाव यथा प्रभु लक्ष्मण पहं बहुरि पठाई अथ भासा भास य-
था हृदय विचारति बारहिं बारा कवन भांति लंका पति मारा टी॰ इहां
चित्ता अनुचित है अथ भावोदय यथा समाचार तेहि समय सुनि सी-

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

य उठी अकुलाय जाइ सासु पद कमल युग बंदि बैठि शिर नाइ टी· इहां शंका भाव को उदय अथ भाव संधि यथा सकुचन कहिन सकत गुरु पां· हीं पितु दरसन लालच मन माहीं टी· इहां लाज हर्ष की संधि है अथ भा· व सबलता दूत बचन रचना प्रिय लागी प्रेम प्रताप वीर रस पागी अथ भाव शांति यथा जनक लहेउ सुख सोच बिहाई दुख पैरत थके थाह जनु पाई टी० शंका भाव को शांति रस सब ठौर प्रधान बड़ो है अरु कहूं भावो गुरुता पावत है जैसो सेवक के घर स्वामी जाय यथा शंभु गये कुंभज रिषि पाहीं दूति असंलक्ष्य क्रम ध्वनि। शब्द अर्थ दोऊ तें भाई सो प्रतीति व्यंग होत तेहि साथ ही जहां क्रम ध्वनि अलंकार वस्तु व्यंग शब्द ते शब्द ध्व· नि अथ शब्द ते अलंकार यथा निशि चर अधम मलाय तन नाहि दीन्ह निज धाम अरु इहां दूत शब्दन के अर्थ न व्याज स्तुति व्यंग है यथा धर्म हेतु अवतरेहु गुसाईं मारेहु मोहिं व्याधकी नाईं अथ श· ब्द ते विरोधा भास व्यंग जहां शब्द सो व्यंग होइ वस्तुसों वस्तु ध्वनि है यथा गुरु विवेक सागर जग जाना तिनहिं विश्व कर बदर समाना टी· गु· रु विवेक सागर विश्व कर बदर शब्दन ते व्यंग होतु है कि ऐसो गुरु दून की का कहिये ए बड़े हैं यह वस्तु अथ अर्थ ध्वनि अर्थ शक्ति ते बारह प्रकार स्वतः संभवीते वस्तु अलंकार चार प्रकार अरु कवि प्रौढ़ोक्तिते चारि भां· ति अरु कवि निषिद्ध ते चारियों बारह भेद अथ वस्तु लक्षण ॥ सूधो कह· ना उक्ततें अलंकार नठ हरे ताको वस्तु कहिये अथ स्वतः संभवी लक्षण ख्यात अर्थ ते उचित व्यंग होइ अथ स्वतः संभवी वस्तु तें वस्तु १ यथा सूर समर करनी करहिं कहि न जनावहिं आपु विद्य मान रण पाइ रिपु कायर करहिं प्रलाप टी· सूर को अपने मुख बड़ाई न करनो स्वतः वस्तु अरु कायर ताजनाइबो परशुराम को दूसरो व्यंग अरु स्वतः संभवी वस्तु तें अलंकार २ यथा तहां राम रघुबंश मनि सुनिय महा महिपाल भं· जेउ चाप प्रयास विनु जिमि गज पंकज नाल टी· भंजिवो प्रयास बिन बड़ा ई वस्तु तें उत्प्रेक्षा व्यंग है अथ अलंकार तें अलंकार ३ यथा देखा भरत विशाल अति निशि चर मन अनुमानि विनु फर सायक मारेहु चाप अव-

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ण लगि तानि टी॰ अनुमान तें दूसरो विभावना व्यंग अथ अलंकार ते व॰
स्तु ४ यथा चंद किरन रस रसिक चकोरी रवि रुप नयन सके किमि जोरी
टी॰ दूहां दृष्टांत अलंकार तें सुकु मारता वस्तु अथ कवि प्रौढ़ोक्ति वस्तु ते
वस्तु ५ यथा नव पल्लव फल सुमन सोहाए निज संपति सुर रूख लजाये।
टी॰ सोहाद्बो वस्तु दूसरी वस्तु व्यंग कवि प्रौढ़ोक्ति कर सुर रूख को लजा
द्बो अथ वस्तु ते अलंकार ६ यथा लता भवन तें प्रगट भेजोहि अव
सर दोउ भाद् निकसे जनु युग विमल विधु जलद पटल विलगाद्॥
टी॰ लता ते प्रगट होबो वस्तु कारि उत्प्रेक्षा व्यंग युग ससि कवि क॰
ल्पित अथ अलंकार तें अलंकार ७ यथा आश्रम सागर सांत रस पू॰
रन पावन पाथ सैन मनहुं करुना सरि लिये जात रघुनाथ टी॰ दूहां
रूपक तें उत्प्रेक्षा लंकार अथ अलंकार ते वस्तु ८ यथा नृप भुज बल
विधु शिव धनु राहू गरुअ कठोर विदित सब काहू टी सम तद रूप रूपक कारि
कठोरता सूचित करा द्बो वस्तु शशि राहु कवि कल्पित अथ कवि निबद्ध
वस्तु ते वस्तु ९ यथा चरण कमल बन्दौं तिन्ह केरे पूरहु सकल मनोरथ मेरे
टी॰ बंदना वस्तु ते मनोरथ पूरब वस्तु चरण कमल कवि निबद्ध अथ वस्तु
ते अलंकार यथा शंभु प्रसाद सुमति हिय हुलसी राम चरित मानस क॰
वि तुलसी टी॰ दूहां हुलस बो वस्तु राम चरित मानस रूपक व्यंग अरु अ॰
लंकार ते अलंकार ११ यथा अरुण चरण पंकज नख जोती कमल द॰
लन बैठे जनु मोती टी॰ सम रूपक तें उत्प्रेक्षा व्यंग अथ अलंकार तें
वस्तु १२ यथा करि मुनि चरण सरोज प्रणामा आयसु पाद् कीन्ह
विश्रामा टी॰ दूहां मुनि चरण सरोज सम रूप का लंकार आयसु पा॰
द् विश्राम करिबो वस्तु अथ शब्दार्थ मूल व्यंग शब्द अर्थ दोउ शक्ति
मिल व्यंग कहे याहू को न भय शक्ति हूं कहत हैं यथा कवित्त विवेक ए॰
क नहिं मोरे सत्य कहौं लिख कागद कोरे टी॰ दूहां शब्दार्थ के चमत्कार तें
अपनी नवनता व्यंग अरु ध्वनि के ५१ भेद शुद्ध हैं और गुने तें बहुत होत हैं
सब भेद मों संकर संसृष्ट विस्तर भय नहीं लिख्यो दुनि उत्तम काव्य अथ म॰
ध्यम गुनी भूत व्यंग प्रकार ८ जहां वाच्य के चमत्कार ते व्यंग प्रधान होद्

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अगूढ़ २ अरुपरंगु ३ तुल्य प्रधान ४ अस्फुट ५ काकु ६ वाच्यसिद्धांगु ७ संदिग्ध ८ असुंदर ९ अथ अपरांग को अंग रसवत अलंकार यथा रूपवारि धरराम रवरारी पाहि पाहि प्रणतारतिहारी टी· इहां वीर को अंग करुनारस है सो राजरति भाव अंग है अथ भाव को अंग रस यथा श्री रघुवीर प्रताप तें सिंधुतरे पाषान ते मति मंद जे राम तजि भजहिं जाइ प्रभु आन टी· इहां देवरति भाव को अंग शांतिरस है अथ भाव अंग यथा आवा कपि लंका जेहि जारी टी· बैरिन को चिंता राजरति भाव अंग है अथ रसाभास उरजरा अलंकार यथा कपि बल बिपुल सराहन लागा टी· शत्रु बड़ाई करिबो अनुचित भाव सों वीर रस अंग है अथ भाव को अंग भास भागे भालु बली मुख यूथा टी· वीर को भाग बो अनुचित भाव को अंग भाव शांति अथ समाहित अलंकार यथा देत चाप आपुहि चढ़ि गयऊ परशुराम मन विस्मय भयऊ टी· इहां गर्व की शांति अथ भाव को अंग भाव उदय यथा रावण आवत सुनेउ सकोहा देवन्ह तके मेरु गिरि खोहा टी· त्रास को उदय अथ भाव को अंग भाव संधि यथा दुहुं समाज हिय हरष बिषादू टी· हर्ष बिषाद की संधि अथ भाव को अंग भाव सबलता यथा चले भाग कपि भालु भवानी विकल पुकारत आरत बानी। विकलता आरत दून भावन को सबलता है सो राजरति को अंग है अरु अर्थहि देइ बताइ सो वाच्य सिद्धांग व्यंग कहावै यथा अस कस कहहु मान मन ऊना सुख सुहाग तुम कहं दिन दूना टी· इहां शब्द शक्ति बारि आछेय को पोषक है अथ स्फुट व्यंग लक्षण। कविमित्रहू कठिन सो लखै यथा चकृत चितव कुदरी पहिचानी हर्ष विषाद हृदय अकुलानी टी· इहां कठिनता ते व्यंग अधिक विचारतें किलकिंचित हाव अथ संदेही व्यंग यथा की मैनाक कि खग पति होई टी· इहां एक जाने बिना संदेह प्रधान तें व्यंग अथ तुल्य प्रधान जहां वाच्य व्यंग बराबर यथा तोहिं देखि शीतल भई छाती पुनि मो कहं सो दिन सो राती टी· इहां दिन रात्रिनि सों कहे ते व्याकुलता ध्वनि वाच्य ध्वनि बराबर है अथ काकु पीछे कहि भए अथ असुंदर लक्षण ध्वनि ते वाच्य नि को होय यथा का वर्षा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जब कृषी सुखाने समय चूकि पुनि का पछताने टी॰ फेर चाप टूटे ऐसो समय मिलेगा व्यंग सो वाच्यतें सुंदर नाहीं इति मध्यम काव्य अथ दोष लक्षण शब्द अर्थ के आधिक्यता से रस न बूझ परै अंग नहीं नरसयति भयं अर्थश्र पार्थवर्न प्रयोजन करन कटु पुनरुक्ति अंध विरोधी बधिर पंगु नगन मृतक और हू दूषण के प्रभेद बहुत हैं ये राम चरित्र हैं सुहृदय मति ते दूषन नहीं है अथ गुन लक्षण रस की उत्कर्षता रचना सो गुन तीन भांति माधुर्य्य १ ओज २ प्रसाद ३ अथ माधुर्य्य जामे कटु वर्नन होइ मनरंजन करै य॰ था कंकन किंकिनि नूपुर धुन सुनि अथ ओज जा सों संयोगी अक्षर होइ अरु समास बड़ो यथा चिक्कर हिं मर्कट भालु छल बल करहिं जेहि खल छीजहीं इत्यादि अथ प्रसाद जहां सुनत ही अर्थ जानो जाय अरु सब गुन मों रहत है यथा ज्ञानी तापस सूर कवि कोविद गुन आगार केहि के लोभ विडंबना कीन्ह न यहि संसार अथ तीन वृत्ति गुन ते होत है उपनागरिका म धुर गुन १ पुरुषाडद्धत २ कोमला प्रसाद युत ३ अब गुनालंकार को भेद क हतु हैं दूनों ते बड़ाई होत है अरु बिसर नहीं होत यामें गुन को अरु अ- लंकार को भेद कैसो जानें रस को बढ़ावै अनुप्रास उपमादि दै अलंकार शुभ अथ नायका जाति पद्मिनी अति सुकुमारी १ चित्रनी उपभोगन मोरु चितें २ शंखिनी दया रोष नाहीं तें ३ हस्तिनी उदर भरि भोजन चावते ४ अ- थ नायका भेद स्वीया स्वामी सों अनुराग ते १ परिकीया छिपाय पर पुरुष अनुरागतें २ सामान्या धन लोभतें ३ अथ स्वीया त्रिधा मुग्धा अंकुरित यो- वना १ मध्या समान लज्जा कामतें २ प्रगल्भा केलि कला प्रवीन पति में ३ अथ मुग्धा भेद द्वै ज्ञात १ अज्ञात २ अरु न बोढ़ा लज्जा भय पराधीन रतितें १ विश्र ब्धन बोढ़ा पति में कछु विश्वास तें २ मध्या प्रगल्भा मानवस्था मों तीन प्रका- र धीरा व्यंग कोप प्रकाशिका १ अधीरा कोप अव्यंग प्रकाशिका २ धीराधीर व्यंगा व्यंग कोप प्रकाशिका ३ अरु ज्येष्ठा कनिष्ठा अधिक न्यून प्रीति ते धी- रादि भेद यहि मों होत है अथ परकीया भेद कन्या अनव्याही पर पुरुष अनु- रागतें १ परोढ़ी जो परने विवाह लयो २ अथ सुरत गुप्ता तीनि भूत १ भविष्य २ वर्त्तमान ३ ते विदग्धा है वचन चातुरी ते वचना विदग्धा १ क्रिया चातुरी ते

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्रिया विदग्धा २ लक्षिता लक्षण नामे ते कुलटा जो चाहे बहु नायक ने अ-
नुसयना के तीन भेद संकेतना वास होवे ते १ संकेत नाश हो निहारतें २ सं-
केतते नायक ह्वै आयो आपन गई पछताय ३ मुदिता लक्षण नामेते इति
अरुग निकाल क्षण पूर्व लिखि आये हैं अथ साधारण नायका भेद अन्य सं
भोग दुःखिता वक्रोक्ति गर्विता भेद प्रेम गर्विता रूप गर्विता वा अनुमान वती
भेद तीन लघु मध्यम गुरु मानतें इन सब की लक्षण नामे ते प्रथम हि जो ना-
यका कहि आये हैं सो सब आठ प्रकार की होती हैं और विरहिणी भेद तीन
प्रोषित पतिका १ जाको कंत विदेश गयो प्रोक्ष्यत पतिका जाको पति विदे-
श जायगो २ प्रोषित पति का जाको पति विदेश को चलतु है ३ अरु आग-
त पतिका लक्षण नामेते यहू को कोऊ विरहनी मानतु है पैय है नहीं खंडि-
ता अन्योप भोग चिन्हित पति देखेते और कलहांतरिता अपमान कर पी-
छे पछताय विप्र लुब्धा संकेत में पति न मिलेते व्याकुल होय उत्कंठिता ल-
क्षण नामेते वासक सज्जा आजु हमारे पति आवेंगे जानि रति सामग्री तैय्यार
करेते स्वाधीन पति का लक्षण नामेते अभिसारिका अपने जाय या पीय बो-
लायेते इति अष्ट नायका अथ उत्तमा मध्यमा अधमा नायका तीनों
का लक्षण नामेते अरु अभय दिव्य अदिव्य दिव्या दिव्य विचार लिखि-
त हों दिव्य इंद्राणी अदिव्य नर तिय दिव्या दिव्य द्रौपदी आदि इन्हते भेद
किये बहुत भेद होत हैं इति नायका सखी प्रीय नरमादि सिखावन धर्म
दूती चुरहारिनि गोसा इनि आदि अथ नायक भेद पति १ उपपति २ वैसि
क ३ इन्ह के लक्षण नाम हिंते सखा भेद चार पीठ मर्द १ बिट २ चटक ३
विदूषक ४ अथ दरशन चारि भांति श्रवण १ प्रत्यक्ष २ चित्र ३ स्वप्न
४ इति नायक मिलाय बो चारि भांति साम १ दाम २ दंड ३ विभेद ४॥
अथ हाव दश प्रकार लक्षण तरुनिन के अंगन ते प्रगट जे भाव हो-
तु हैं ताही को हाव कहते हैं प्रथम लीला हाव लक्षण बोलनि च-
लनि चितवनि सों सब भांति अनुराग करे नायका १ विलसि ल-
॥ पिय देखत मन हरबे की भाव करै २ विक्षिप्त लक्षण थोरा कि-
ये शृंगार पय शोभा अधिक होइ ३ विभ्रम लक्षण नाम हिते ४

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

किलकिंचितल· उरहंसिरोम हर्ष एकैबार होय ५ मोय इतल· पिय कथा मिलन की सुन चाह होइ ६ कुटुंमितल· अधर उरज के शनि न को धरै झूठी रूसवी होय हिय में सुख पावै ७ विंकेकल· आए आदरन करै ललितल· अंग अंग भूषण सो है ८ विहितल· लाज तेन बोलि सकै १० अथ शब्दालंकार छेकानुप्रास यथा भये प्रगट कृपाला दीनदयाला कौशिल्या हितकारी अथ वृत्तानुप्रास एकबरन बहु यथा कहिजय जय जय रघुकुलकेतू॥ अथ लाटानुप्रास एक पद बहुतबेर आवै यथा भव भवविभव परा भवकारणि वैदर्भी गौणी पंचाली यहू रीति क्वचित् मतहै अथ यमक एक शब्द दैवार आवै यथा भणविदेह विदेह विशेषी अरु यमक भेद चारों चरण अर्ध अर्ध को अर्ध इत्यादि अथ अर्थालंकार जाको वरणाय सो उपमेय जाको उपमा देइ सो उपमान ममता कारक वाचक धर्म दूनों मो जोरहे चारों होइ जहां पूरणा उपमा यथा नरुणा अरुणा अंबुज सम चरना अरु एकहै तीन लुप्तनें आठ भेद अथ वाचकलुप्ता यथा नवअंबुज अंबक छविनीकी अथ वाचकधर्म लुप्ता यथा विधुवदनी मृगशावक लोचनि अथ वाचक धर्म उपमान लुप्ता यथा यूथ यूथ मिलि सुमुख सुनैनी इत्यादि लुप्ता अथ अनन्य। उपमेय उपमा एक यथा इनसमये उपमा उर आनी अथ उपमा नोपमेय परस्पर लगे यथा राम कथा मुनि वर्ण्य बखानी। सुनी महेश परम सुख मानी। कृषि पूछी हरि भक्ति सोहाई कहौ शंभु अधिकारी पाई अथ प्रतीय प्रकार पांच उपमा नेको उपमेय करै यथा उतरि न हाये यमुन जल जो शरीर सम श्याम १ अथ उपमेय को उपमान ते आदर न होय २ यथा नांघहिं खग अनेक वारीशा सूरन होहिं ते सुनुशठ कीशा अथ उपमान को उपमेय ते आदर न होय ३ यथा सिय मुख सम ना पावकिमि चंद बापुरो रंक अथ उपमा जहां समता न करै ४ यथा सीय बदन सम हित कर नाहीं अथ उपमान जहां वृथा होइ ५ यथा कोटिकाम उपमा लघु सोऊ। अथ रूपक है भांति एक तद्रूप १ अभेद २ अधिक १ न्यून २ सम ३ सो उन के तीन तीन भेद होतु हैं अथ अधिक तद्रूप यथा विषवारुणी बंधु प्रियतेही कहिये रमा सम किमि वैदेही अथ न्यून तद्रूप यथा राममा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त लघुनाम हमारा परशु सहित बड़ नाम तुम्हारा। अथ समन रूप यथा
लषण उतर आहुति सरिस इत्यादि अथ अधिक अभेद रूपक यथा नव वि-
धु विमल तात जस तोरा रघुबर किंकर कुमुद चकोरा उदित सदा अथ इ-
हि कबहूँ ना घटिहि न जग नभ दिन दिन दूना॥ अथ न्यून अभेद यथा
अति खल जे विषयी बक कागा अथ सम भेद यथा। संपति चकई भरत
चक मुनि आय सुखेल वारतेहि निशि आश्रम पिंजरा राखे भाभिनुसार
अथ परिनाम उपमान कृपा करै उपमेय को यथा मामवलोकय पंकजलो-
चन अथ उल्लेख द्वै भांति बहुत कै एकै उल्लेख यथा॥ रहे असुर छल छो-
नि प्रवेशा॥ तिन्ह प्रभु प्रगट काल सम देखा॥ पुरवासिन देखे दोउ भाई नर
भूषण लोचन सुखदाई॥ दूसरो यथा॥ जय रघुवंश वनज वन भानू गहन द
नुज कुल दहन कृशानू अथ सुमिरन १ भ्रम २ संदेह इन को नामे ते लक्षण
सुमिरन यथा॥ सिय मुख सरिस देखि सुख पावा॥ भ्रम यथा॥ बहुरि आय
देखा सुत सोई। हृदय कंप मम धीर न होई। संदेह यथा॥ को तुम तीन देव महँ
कोई॥ नर नारायण की तुम दोई॥ अथ शुद्धा पन्हुति॥ औरको आरोप करि
सांचो धर्म छिपावै। बंधु न होय मोर यह काला अथ हेत्वा पन्हुति युक्ति नें
छिपावै वस्तु यथा। देखियत प्रगट गगन अंगारा। अवनि न आवत एको
तारा अथ पर्यस्ता पन्हुति आन के गुन आन में आरोपै यथा॥ मुकट न हो
हिं भूप गुन चारी अथ भ्रांता पन्हुति भ्रम दूर करै यथा। कह प्रभु हँसि जनि हृ
दय डेराहू लूकन अस निकेत नहिं राहू। एकि रीट दश कंधर केरे। आवत वालि
तनय के प्रेरे। अथ छेका पन्हुति युक्ति सों जहां बात दुरावै परसों यथा कछु न परी
क्षा लीन्ह गोसाईं कीन्ह प्रणाम तुम्हारिहि नाईं॥ अथ कैतवा पन्हुति एक को ब
ना करि वर्णे आन यथा॥ सखी नरेश बात सब सांची। तिय मिस मीच सीस पर नाची
अथ उत्प्रेक्षा संभावना॥ भांति तिन वस्तु हेतु फल ३ अथ वस्तु ते २ यथा छ-
त्र मेघ डंबर शिर धारी॥ सो जनु जलद घटा अति कारी हेतु ते २ यथा॥ प्रभु
कह गरल बंधु शशि केरा अति प्रिय निज उर दीन्ह बसेरा॥ फल तें ३ यथा
चारु चरण नख लेखति धरनी॥ नूपुर मुखर मधुर कवि बरनी॥ मनहु प्रेम
बस विनती करहीं हमहिं सीय पद जनि परिहरहीं॥ अथ अतिशयोक्ति रूपक

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जहां उपमान तें। उपमेय नगरै यथा॥ सिरस सुमन कनबेध हि हीरा॥ अथ
अपन्होक्ति और को गुन और पर ठहरावै यथा॥ तव मूरति उर विधु बसत सो-
ह श्यामता भास॥ अथ भेद कांति औरै पद जहां होय यथा॥ महि सरिता
गर सर गिरि नाना॥ तव प्रपंच तहं आनै आना॥ अथ संबधाति शयोक्ति॥
अयोग को जोगता देइ यथा॥ धवत धाम ऊपर नभ चुंवत। अथ दूसरो वाक
विपरीत यथा॥ नव पल्लव फल सुमन सुहाये॥ निज संपति सुर रूप लजाये अ-
थ क्रमाति शयोक्ति कारण कारज संगै सों होय यथा॥ संधानेउ प्रभु विशिख
कराला॥ उठी उदधि उर अंतर ज्वाला॥ अथ चपलातिसयोक्ति कारणतें हो-
तु नामैं काज यथा॥ विमल कथा कर कीन्ह अरंभा। सुनत नशाहिं काम मद दं-
भा। अथ अत्यंतातिशयोक्ति पूर्वापर क्रम नाहीं यथा॥ कह कपि सुनि गुरु दक्षि
णा लेहू पाछे हमहिं मंत्र तुम देहू॥ अथ त्रिविध तुल्य जोगता सम स्वभाव हि-
त अहित यथा॥ निंदा अस्तुति उभय सम इत्यादि दूसरो बहुमों एक वान यथा
॥ गति विलोकि खग नायक लाजे॥ तीसरो बहु सों समता गुन करि यथा
प्रभु समरथ सर्वज्ञ शिव सकल कला गुण धाम॥ योग ज्ञान वैराग्य नि-
धि प्रणत कल्प तरु नाम अथ दीपक निज गुन न ते वर्णे इतर यथा
॥ भलो भलाई पै लहै लहै निचाई नीच॥ अरु शब्द अर्थ दूनो के फि-
रैते तीन अथ प्रथम शब्द वृत्ति यथा॥ हे विधि मिलै कवन विधि वाला
अथ अर्था वृत्ति यथा॥ कूंजहिं कोकिल गुंजहिं भृंगा॥ अथ पदार्था
वृत्ति यथा। राम साधु तुम्ह साधु सयाने। अथ पति वस्तु उपमा जहां दूनों वा-
क्य बराबर यथा॥ राजत राम अतुल बल जैसे। तेज निधान लषण पुनि तैसे
अथ दृष्टांतालंकार जहां विंव प्रति विंव होय यथा॥ उभय बीच सिय सोहति
कैसी। ब्रह्म जीव बिच माया जैसी। अथ त्रिविध निदरसना प्रथम जहां वाक्य
अथ दूनो सम यथा। संत हंस गुन गहहिं पय परि हरि वारि विकार॥ दूसरो
आन मौं आन वस्तु आरो पै यथा अस कहि फिर चित्त ए तिहि ओरा। सिय
मुख शशि भे नयन चकोरा तीसरो कार्य्य देख भलो बुरो फल कहै यथा॥
रामानुज लघु रेख खिचाई॥ सो उनहिं नाघेउ अस मनुसाई॥ अथ सहोक्ति
सब एकै साथ वरणै यथा॥ बल प्रताप वीरता बड़ाई॥ नाक पिनाक हि संग सिधा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दू॥ अथ व्यतीक गुन दोय गनि समता तजि एक व्यंग वरणै॥ यथा॥ काल कूट मुख पय मुख नाहीं॥ अथ हि विधि विनोक्ति नीक बानि काम कछु दुरावैन हीं यथा॥ राम कहा सब कौशिक पाहीं॥ सरल सुभाव छुवा छल नाहीं दूसरो यथा॥ विधु बदनी सब भांति सवाँरी॥ सोहन बसन बिना वरनारी॥ अथ समा सोक्ति जहां प्रस्तुत में अप्रस्तुति को ज्ञान होय यथा॥ सूर समरकरनी करहिं कहि न जनावहिं आप अथ परि कर विशेषन मों अभिप्राय यथा। पति देवता सुतीय महँ मातु प्रथम तव रेख॥ अथ परि करों कुरु साभि प्राय विशेष जहं यथा॥ गुनहि लषण कर हम पर रोषू॥ अथ श्लेष बहुत अर्थ एक शब्द मों होय यथा॥ साधु चरित शुभ सरिस कपासू॥ निरस विसद गुनमय फल जासू॥ अथ अप्रस्तुत प्रशंसा सोहै प्रकार एक वरण प्रस्तुति दूसरो प्रस्तुति अंस प्रथम यथा॥ चहूं युग तीन काल तिहुं लोका॥ भये नाम जपि जीव विशोका॥ दूजो यथा॥ कविको विद अस हृदय विचारी गावहिं हरि जस कलि मल हारी॥ अथ प्रजा उक्ति के है भेद वात रचना ते कहे अरु मन भाव तो काम बखाने तें साधिवो प्रथम यथा॥ तिन्ह कहं कहिय नाथ किमि चीन्हें देखि य रवि कि दीयकर लीन्हे दूसरो यथा लषण हृदय लालसा विशेषी॥ जादू जनक पुर आदय देखी॥ अथ व्याज स्तुति मिस निंदा यथा। कोटि विप्र बध लागहिं जाहू॥ आए शरण तजौं नहिं ताहू॥ अथ व्याज निंदा निंदा मिस बड़ाई यथा। जननी तू जननी भई विधि सन कछु न बसाय। अथ आक्षेप तीन प्रकार एक निषेधाभास गुन दोष समता तें दूसरो पहले आप कहे पुनि वाको फेरि तीसरे निषेध को विधि वचन तें छिपावै प्रथम यथा। राम करहु सब संयम आजू जौ विधि कुशल निवाहू काजू। दूसरो यथा॥ यदपि कवित रस एकौ नाहीं। राम प्रताप प्रगट हिय माहीं। तीसरो राजदेन कहि दीन्ह बन मोहिं न शोच दूरब लेस। तुम बिनु भरत हिं भूपति हिं प्रजहिं प्रचंड कलेस॥ अथ विरोधाभास नाम लक्षण यथा॥ भूरि मेरु समजनक यम ताहि व्याल सम दाम॥ अथ विभावना षट प्रकार विनाकारनै कारज होइ १ यथा। आनन रहित सकल रस भोगी। दूसरो हेतु अपूरन ते कारज पूरन होय २ यथा॥ काम कुसुम धनु साय कलीन्हे सकल भुवन अपने बस कीन्हे। तीसरो प्र-

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तिबंधक यद्यपि तऊ कारज की पूरता ३ यथा॥ रखवारे हति विपिन उजारा। देखत तोहि अछै तेहि मारा॥ चौथो ए हेतु ते काज होय ४ यथा। भएउ तात निशि चर कुल भूषण। पांचवौं कौनौ कारन तें काज विरुद्ध ५ यथा। जेहि तरु रहों करत सो पीरा॥ छंदयों काहू काज तें कारन होय यथा॥ शंभु विरंचि विष्णु भगवाना। उपजहिं जासु अंश तें नाना। अथ विशेषोक्ति कारन होते काज न होय यथा तमकि ताकि तकि शिव धनु धरहीं। उठइ न कोटि भांति बल करहीं॥ अथ असंभावना अन होवे लायक कारज कहे फल सिद्धि तें यथा। हृदय विचारत बारहि बारा काज अरु कारन न्यारे जहां होई १ और ठौर करै और ठौर को काम २ हित करते अहित को लाभ होइ ३ प्रथम। पर हित हानि लाभ जिन केरे। उजरे हरष विषाद बसेरे। दूसरो। जोइ जोइ मन भावै सोइ लेहीं॥ मणिमुख मेलि डारि कपि देहीं। तीसरो। करत नीक फल अन इस पावा। अत्र त्रिविध विषम अन मिलन कौ संग १ कारन कारज भिन्न होइ २ भलो करे ते बुरो ३ प्रथम यथा। कठिन भूमि कोमल पद गामी दूसरो यथा। श्याम सुरभि पय विसद अति गुनद करहिं ते पान। तीसरो यथा। भलेउ कहत दुख रौ रहि लागा। अथ त्रिविधि सम दोऊ अनुरूप तें १ कारज मों कारन मिले २ विना श्रमै कारज सिद्ध होय ३ प्रथम यथा। जस दूल हत सबनी बराता। दूसरो यथा। का आचरज भरत अस करहीं। नहिं विष वेल अमिय फल फरहीं। तीसरो यथा। दुंदुभि अस्थि ताल देख राए। बिनु प्रयास रघुनाथ ढहाए॥ अथ विचित्र उलटे फल को यतन करनो यथा॥ राम कहेउ रिसि तजिय मुनीशा। कर कुठार आगे यह शीशा॥ अथ द्विविधि अधिक जहां आधार तें आधेय अधिक आधेय तें आधार अधिक २ प्रथम यथा। सुनि पाती पुल के दोउ भ्राता। अधिक सनेह समा तन गाता। दूसरो। यथा। व्यापक ब्रह्म निरंजन निर्गुन विगत विनोद सो अज प्रेम भक्ति वस कौशिल्या की गोद अथ। अल्प सूक्ष्म आधेय तें अति सूक्ष्म आधार। यथा। रोम रोम प्रति लागे कोटि कोटि ब्रह्मंड॥ अथ अन्योन्य परस्पर उपकार तें यथा। मुनहिं मिलत अस सोह कृपाला अथ त्रिविधि विशेष वे आधार आधेय १ थोड़े करतें सिद्ध बहुत एक कौ अनेक ठौर वरनै ३ प्रथम यथा। गहि गिरि निशि नभ धावत भएऊ दूसरो यथा। मंत्र परम लघु जासु बस विधि हरि हर सुर सर्व॥ तीसरो य-

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

था ॥ सती दीख कौतुक मग जाता । आगे राम सहित श्री भ्राता ॥ फिरि चितवा पाछे प्रभु देखा ॥ अथ व्याघात द्विविधि और कार्य्यतें और कार्य्यके २ निरोधीते कारज होय २ प्रथम यथा ॥ देखहु तात बसंत सोहावा । प्रिया हीन मोहिं भय उपजावा । दूसरो यथा । रविय अवध जुअवधि लगि रहत जानि ये प्रान । दीन बंधु सुंदर सुखद शील सनेह निधान ॥ अथ कारण माला उत्तर उत्तर होय पूर्व काज यथा । बिनु सत संत विवेक न होई ॥ राम कृपा बिनु सुलभ न सोई ॥ अथ एकावली जंजीरा जोरपद करे यथा ॥ बिनु गुरु होइ कि ज्ञान ज्ञान कि होइ बिराग बिनु ॥ अथ माला दीपक दीपक एकावली मिलके यथा ॥ जपउ जाय राम राम जपु जेही ॥ अथ सार एकतें एक अधिक यथा ॥ सबतें अधिक मनुज मोहि भाये ॥ अरु ॥ तिन्ह महुं निगम धर्म अनुसारी ॥ इत्यादि ॥ अथ न्यून सार यथा ॥ एक मंद मैं मोह बस कुटिल हृदय अज्ञान ॥ पुनि प्रभु मोहिं बिसारेउ दीन बंधु भगवान ॥ अथ यथा संख्य वर्णन विषे वस्तु अनुक्रमतें यथा । बंदौं नाम राम रघुवर के । हेतु कृशानु भानु हिम करके । अथ द्विविधि पर्याय अनेक को क्रमतें आश्रय एक २ पुनः एक कोश्रय अनेक प्रथम यथा । जनक लहेउ सुख सोच बिहाई । दूसरो यथा । नाम अनंत अनंत गुण अमित कथा विस्तार । अथ प्रवृत्ति कछु कछु को बरनगे यथा । तारा बिकल देखि रघुराया । दीन्ह ज्ञान हरि लीन्ही माया । अथ परावर्त्या एक ठौर बरजिके दूसरे ठौर ठहरे यथा । मनि मुक्ता मणिक छबि जैसी । अहि गिरि गज सिर सोहत तैसी । नृप किरीट तरुनी तन पाई । लहहिं सकल सोभा अधिकाई । अथ विकल्प यह है कि वह यथा ॥ कीतन भाण कि केवल ज्ञाना । अथ द्विविधि समुच्चै भाव बहुत एक ठौर गूंथे होंय १ एक काज चाहे अनेक संग होय २ प्रथम यथा ॥ चरन चितव मुरली पहिचानी हर्ष विषाद हृदै अकुलानी । दूसर यथा । अब मैं कुशल मिटे भय भारे । देखि राम पदकमल तुम्हारे ॥ अथ कारक दीपक एक मों क्रमतें अनेक भाव यथा ॥ बार बार मुख चुंबति माता ॥ नयन नेह जल पुलकित गाता ॥ अथ समाधि और हेतु मिल कारज सुगम होय यथा ॥ बचन सुनत कपि मन मुसुकाना ॥ भइ सहाय सारद मैं जाना ॥ अथ काव्यार्थ प्रति यह कियो बहुक्या यथा ॥ जिते उ सुरासुर तव श्रम नाहीं ॥ नर बानर केहि लेखे माहीं ॥ अथ काव्य लिंग युक्तितें अर्थसमर्थन होय

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यथा॥ सो नर क्यों दश कंध वालि वध्यो जेहि एक सर अथ अर्थांतर न्यास समा
न विशेष दृढ़ ते यथा॥ राम एक तापस तिय तारी इहां ते नाम प्रसाद शोच नहिं
सपने इहां लौ अथ बिक स्वर जहां विशेष होय पुनि समान विशेष यथा॥
सुमिरि पवन सुत पावन नामू अपने बस कर राखउ रामू अपत अजामिल
गज गन काऊ भए मुक्त हरि नाम प्रभाऊ अथ प्रौढ़ोक्ति बरनन में अधिकाई
अधिकार॥ काम कलभ करि भुज बल सीवां अथ संभावना ज्यों ऐसा होइ
तो ऐसा होय यथा जो छवि सुधा पयोनिधि होई यह प्रसंग भर अथ मिथ्या
धौंसित झूठहिं कथे झूठी रीति यथा॥ वारिमथे घृत होय बरु सिकता ते ब-
रु तेल अथ ललित जो कहो चाहै ताही को प्रति बिंब यथा॥ पिय तुम
ताहि जितब संग्रामा जाके दूत केर यह कामा अथ त्रिविध प्रहर्ष न बिनु
यतन इच्छा फल होइ १ इच्छा तें अधिक फल बिना श्रम मिलै २ जाको
यतन सीधे सो हाथ मिले २ प्रथम यथा॥ चितवत पंथ रहेउं दिन राती अब
प्रभु देखि जुड़ानी छाती। दूसरो यथा॥ धरहु धीर होइहिं सुत चारी त्रिभु-
वन विदित भक्त भय हारी अथ तीसरो एहि विधि मन विचार कर राजा आइ
गए कपि सहित समाजा अथ बिषाद चित चाहते उलटा जो होय यथा॥ लि-
खत सुधा कर गा लिखि राहू॥ अथ उल्लास गुन औगुन और को और यथा॥
पर दुख दुख सुख सुख देखे पर अथ अबला और को गुन दोख न लगै॥
यथा॥ ऊसर बरषै तृण नहिं जामा अथ लेस गुण मों दोष देखे १ दो मों गु-
न देखे २ यथा मोहि दीन्ह सुख सुयस सुराजू कीन्ह कै कई सब कर काजू
दूसरो यथा॥ जो नहिं होत मोह अति मोही मिलतेउं तात कवन विधि तोही
अथ अनु कै दोषै गुन मानै यथा॥ रामहि चितव सुरेश सुजाना गौतम शाप
परम हित माना अथ मुद्रा प्रस्तुत पद विषै औरै अर्थ प्रकासै यथा॥ पूछेउ
गुनिन्ह रेख तिन्ह खांची भरत भुआल होहिं यह सांची अथ रत्नावली
प्रस्तुत विषै अरु नाम क्रम तें यथा॥ बहुरि बच्छ कहि लाल कहि रघुपति रघु
वर तात॥ अथ तद्गुण आपनो गुन छोड़ और को लेइ यथा धूमौ तजे सहज करु
आई। अगरु प्रसंग सुगंध बसाई अथ पूर्व रूप द्विविधि संगति को गुन लेइ त-
जि पुनः अपनो गुन लेइ १ जहां गुन न मिटै यतन हूं कियेतें २ प्रथम यथा॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

खल उचरहिं भल पावू सुसंगू मिटइ न मलिन सुभाव अभंगू दूसरो यथा॥ एकापति षोडश उगहिं तारा गण समुदाय सकल गिरिन्ह दव लावू अविनु रवि राति न जाबरू बंधु कुलद गुण ज्ञान के संगहु गुण लेइ न आनको यथा॥ बायस पालहिं अति अनुरागा होहिं निरामिष कबहुं कि कागा अथ अन्यगुन अपनो गुन और के संग बढ़ावै यथा मज्जन फल देखिय तत काला॥ काक होहिं पिक बकउ मराला अथ मिलित समता ते दूजोन लखबू यथा॥ बेनु हरित मणि मय सब कीन्हे सरल सपर्व परहिं नहिचीन्हें अथ समान भिन्नो रूप सौं विशेष न पावूये यथा॥ राम लषन सरिस होहिं कि नाहीं अथ उन मिलन सा दृश्यते भेद कैसो खुलै यथा॥ बय वपु बरन रूप सोइ आली शील सनेह सरिस सम चाली वे पुनि सो सरिस सीयन संगा आगे चली अली चतुरंगा अथ गूढोक्ति अभिप्राय से उत्तर देय यथा॥ अब कहु कुशल बालि कहं अहई विहंसि वचन तब अंगद कहई दिन दस गए बालि पहं जाई बूझेउ कुशल सखा उर लाई अथ प्रश्नोत्तर प्रश्न उत्तर जामो होय यथा कह दशकंध कवन तैं बंदर भैं रघुवीर दूत दश कंधर अथ चित्र प्रश्न उत्तर एक पद मैं होय यथा॥ कपर्दा जब कपी सुरबाने समय चूकि पुनि का पछिताने अथ सूक्ष्म कथनो भावते मन की बात जाने यथा॥ सीतहिं सभय देखि रघुराई कहा अनुज सन सैन बुझाई अथ विहित छिपी बात बताय देइ यथा अंगद नाम बालि कर बेटा तासों कबहूं भई हैं भेटा॥ अथ व्याजोक्ति आकार छिपाय और विधि कहै यथा जिन्हहि बिरचि बड़ भएउ बिधाता महिमा अवधि राम पितु माता अथ गूढोक्ति और के बहाने और को उपदेश करै यथा बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू भूप किशोर देख किन लेहू अथ विशेषोक्ति स्नेय मो छिपै को प्रकाश करै यथा॥ प्रीति बिरोध समान सन करिय नीति असि आहि जो मृगपति बधि मेडु कनि भल कि कहै कोउ ताहि अथ युक्ति क्रिया करि बरन छिपावै यथा॥ बहुरि बदन बिधु अंचल ढांकी पिय तन चितइ भौंह करि बांकी खंजन मंजु तिरी छेनै मनि निज पति केहउ तिन्हहिं सिय सैनि अथ लोकोक्ति कछु वचन ते प्रवाद लेइ यथा॥ मास दिवस महं नाथ न आये तौ पुनि मोहि जियत नहिं पाये॥ वक्रोक्ति सूधी बात मो टेढ़ो आद यथा मैंसु कु

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मार नाथ बन योगू तुमहिं उचित तप मो कहुं भोगू॥ अथ स्वभावोक्ति जहां सुभाव बरनो जाइ भोजन करत चपल चित इत उत अवसर पाइ भाग चले किल कात मुख दधि ओदन लपटाय॥ अथ भाविक भूत भविष्यादि जहां प्रत्यक्ष लखाय यथा॥ भयउ न अहइ न अब होनिहारा भूप भरत जस पिता तुम्हारा॥ अथ उदात्त अथ लक्षन अधिकारी दै सो धिये यथा॥ बालिन कबहुं गाल अस मारा मिल तपसिन्ह तैं भयउ लबारा॥ अथात्युक्ति बहुत बढ़ाय कै कहै यथा॥ जो संपदा नीच गृह सोहा सो बिलोकि सुरनायक मोहा॥ अथ निरुक्ति जहां योग तें नाम को औरै अर्थ कल्पे यथा॥ नाम तुम्हार प्रताप दिनेशा सत्य केतु तव पिता नरेशा॥ अथ प्रतिषेध जहां निषेध को बखाने यथा॥ मुकुट न होहिं भूप गुण चारी॥ अथ विधि फेर कै अर्थ साधै यथा याको फल पावहुगे आगे बानर भाल चपेटन लागे॥ अथ हेतु द्विविध कारज कारन एक संगै होइ कारन कारज वस्तु एकै २ प्रथम यथा॥ उगेउ अरुण अवलोकहु ताता पंकज कोक लोक सुखदाता॥ दूसरो यथा सकल अमानुष करम तिहारे केवल कौशिक कृपा सुधारे इति अथ लिंकार अथ संकर संसृष्टि एक छंद मों जहां बहुत अलंकार परै तिल तंदुल न्याय यथा चली ल्याइ सीतहिं सखी सादर सजि सुमंगल भामिनी नव सप्त साजे सुंदरी सब मत्त कुंजर गामिनी कल गान सुनि मुनि ध्यान त्यागहिं काम को किल लाजहीं मंजीर नूपर कलित किंकिनि ताल गति बरवा जहीं टी॰ कुंजरगामिनी मो रूपक ध्यान संयोग मो आन्योक्ति लाजहिं तीसरी प्रतीय अथ संकर दो तीन अलंकार मिलैतें छीर नीर न्याय यथा। जिनके जस प्रताप के आगे शशि मलीन रवि सीतल लागे टी॰ यामों यथा॥ शेष प्रदीप को संकर हैं एक सुक आगे ते समान हो प्रधान अरु कहूं संदेह तें संकर को तीन प्रकार और अलंकार बहुत हैं विस्तार काव्य के ग्रंथन मों देखि लेंगे अथ कछु पिंगल यातें कि काव्य शरीर छंद रीति ही है अथ गुरु लघु विधि संयोगी के आदि गुरु यथा। सत्य अरु विसर्ग यथा कः अरु दीर्घ मात्रा विंदु युक्त यथा काकी कूके को कौ कं अरु पाद अंत मों विकल्प ए पांचों विधि गुरु अथ लघु मात्रा रहित लघु अरु इउ मात्रा लगे हूं लघु अरु काहू आदि संयोगी के लघु को लघु रहत है भारन परेते जैसे नाम प्रेम पीयूष ह्रद इत्यादि

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दि अथ प्रस्तार मात्रा तुत्त को मात्रा वृत्त के गन पांच हैं टगन छकल डगन पांच कल डगन चारि कल ठगन तीन कल णगन है कल अथ प्रस्तार रीति मात्रा को नव मैं गुरु के नीचे लघु बनावै पुनः सम पांति करै उवरे जो गुरु लघु तें पूरण करै सब लहू लो अथ पाचों मात्रा गन षट कल लौं उदाहरण अथ वरण प्रस्तार रीति प्रथम गुरु के तरे लघु धरे फिर अंत की पांती बराबर करै जो घटे तो गुर ही ते पांति पूरन करे तब प्रस्तार को अंत जानै अरु वरन के प्रस्तार मैं वरन की गिंती होत है अरु मात्रा प्रस्तार मैं कला गनती युत मोही भेद है यथा मात्रा वृत्त संज्ञा वल

णगन २ टगण ३ डगन ४ ढगण ५ टगन ६ नल लघु म गुर

ऽ ॥	।ऽ ऽ।	ऽऽ ॥ऽ	।ऽ। ऽ।ऽ।	ऽऽ॰ऽ ॥ऽऽ
	।।।	।ऽ। ऽ।।	ऽऽ।ऽ ऽऽ।	॥ ॥ ऽ।।ऽ
		।।।।	॥ऽ। ।ऽ।।	॥ऽ।।ऽ ।ऽऽ।
			ऽ।।। ।।।।।	॥ ।ऽ। ॥ ॥ऽ। ऽऽ ॥ ॥ऽ ॥
				।ऽ॥ । ऽ॥ ॥ ।।। ।।।

आयुध पंच कल तुरग चार कल करन है गुरु दिज वर चारि लघु प्रिय है लघु धुज लघु गुरहार एक गुर दंड एक लघु वरन वृत्तगन नाम संज्ञा मन यम सुगन रस जत कु-

वरण ३ रूप गन देव फल गन

ऽऽऽ मगन भूमि मंगल सुख
।ऽऽ यगन जल बुद्धि वृद्धि
।ऽ। रगन अग्नि आंगदाह दानि
।ऽऽ सगन पवन वा काल उचाट मीचु
ऽऽ। तगन आकाश फल सुन्न
।ऽ। जगन भानु रोग
ऽऽ। भगन चंद कीरति
।।। नगन नाग बुद्धि सुख

गन अथ गन विचार संज्ञा मगन नगन मित्र यगन भगन दास जगन तगन उदासीन रगन सगन शत्रु दुगन फलाफल मित्र मित्र सिद्धि मित्र दास विजय मित्र उदास गोत दुःख मित्र शत्रु प्रिय नाश दास मित्र सिद्धि दास दास हानि दास उदास पीड़ा दास शत्रु हारि उदास मित्र अलप कल उदास दास दुःख उदास उदास विफल उदास शत्रु सुख हानि शत्रु मित्र फल सून्य शत्रु दास तिय नाश शत्रु उदास शंका शत्रु शत्रु फलाफल नाश इति॥ गना गन अथ षट चरचा न दइ दिष्टादि अथ मात्रा वृत्ति नष्ट लक्षण जब कला मों जित नो भेद पूछने तो कला कला लिये तापर दूनों अंक धरै जैसो एक है

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तीन द्वै तीन पांच तीन पांच आठ ऐसो क्रम तें पुनः पूछे अंक को अंत अंक मों घटाइ कै जो उबरै जाको और अंक लिखे यों घटाइ कै ताके नीचे अगली कला लैके गुरु करे जैसे सप्त कला मों दशमो भेद १ २ ३ ५ ८ १३ २१ प्रस्तना को उत्तर यथा अथ मात्रा उदिष्ट लिख कर ॥ । पूछे तापर दूनों अंक धरै लघु के मांथे पर अरु गुरु के ऊपर नीचे गुरु के मांथे को अंक जोरि कै अंत के ॥ ऽऽ ॥ अंक मों घटावै जो बचे सो भेद कहै यथा अथ मात्रा मेरु प्रयोजन जो जानो चाहै कि इतने के प्रस्तार में कै इक गुरु के दु गुरु के तिगुरु के परेंगे इत्यादि प्रस्थ हेतु मे रूहै ताके लक्षण प्रथम द्वै द्वै कोठा बनावै बराबर तब अंत में कोठन मों एक अंक लिखि आवै अरु आदि कोठन मों एक एक कोठा बीच देइ कै एक एक अंक लिख आवै एक एक के खाली मों द्वै से गिनती लिखे तब जो खाली कोठा है तामों अंक धरै या क्रमते कि माथे पर के अंक ताके माथे को पर अंक लेइ कै दूनो जोरि भरि देइ ॥ पूरन अरु अंखड में रू की खचाइ वे मों भेद है अंक रीति एकै है अथ मात्रा में रू रूप यथा अथ मात्रा पता का प्रयोजन के प्रस्तार में इक गुरु द्वि गुरु तिगुरादि कोथे कोथे स्थान पर रहै ता हेतु है ताके लक्षण जै कला को पता का बनायो चाहै तेई कला को गेरू को खंड अलग कर कै ताही संख्या ते कोठा बनावै तब प्रथमै अदिष्ट अंक की रीति ऊपर के कोठा भरि आवै तब अन्त अंक अंत के कोठा तातें एक एक घटा के एक गुरु पंक्ति दुइ दुइ अंक ते घटे सो दु गुरु पंक्ति मों लिखे एही रीति ते जहां लौं चाहै अथ मात्रा रूप पताका यथा अथ मात्रा मर्कटी प्रयोजन जो पूछे इतने प्रस्तार मों कितने वृत्ति भेद मात्रा वरन लघु गुरु हैं ताके हेतु है ताके लक्षन छः पंक्ति कोठा खड़ा लिये पुन वृत्ति भेद मात्रा वरण लघु गुरु क्रमते कोठा के बाहर लिखै पुनः आदि कोठन एक एक लिखि जाइ गुरु ढिग सून्य लिखे फिर चौड़ाई वृत्ति कोठन मों दुइ आदि गिनती अंक भरे

१	२	३	८	२१
।	।	ऽ	ऽ	।
		५	१३	
		दश्रयो भेद		

२	१	१	२
३	२	१	
१	३	१	३
२	४	१	५
१	६	५	१
४	१०	६	१
गु॰ ३	गु॰ २	गु॰ १	ल॰

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१	३	८
२	२५	१३
४	६	२६
९	७	१८
गु३	१०	१९
	११	२०
	१२	
	१४	
	१५	
	१७	

२१ अरु भेद कोष्टन में उद्दिष्ट अंक भरै पुनः वृत्ति भेद गुरु क-
रि मात्रा पंगति मों भरे पुनः लघु पंक्ति में जो एक अंक है सो गुरु
पंक्ति शून्य के आगे लिखे ताही को मात्रा पंक्ति में घटाय वाका व-
रण कोठा में भरै सोई वरण पंक्ति में घटाय वाकी लघु पंक्ति मों
भरै पुनः ताही को गुरुपंक्ति में आन के घटाय वो याही रीति से
जितनो चाहै तितनो बनावै अथ मात्रा मर्कटी समकाल को य-
था अथ मात्रा सूची प्रयोजन जो पूछे प्रस्तार मों कि कितने भेद पर ल-
घु लघु गुर अंत है ताके हेतु है ताके लक्षण जितने अंक पर प्रस्तार
को अंत है ताके पाछे को अंत लघु अंत ताके पाछे को अंक गुरु अंत
गु॰२ सूची यथा वरण वृत्ति नष्ट पूछे की आधा करै सम आवै तो लघु ले
आवै विषम पावै तो
गुरु १ २ ३ ५ ८ १३ २१ लि॰
लिखि गु॰अं॰ल॰अं॰ रि
एक मिलाय भागे ऐसी ही क्रमते करतो जा-
य यथा पांच वरण प्रस्तार वर्मे तेरहां न-
ष्ट अथ उद्दिष्ट वरण वृत्ति को जो पूछो
लिखि वै तापर दूने दूने क्रमते अंक धरै

वृत्ति	१	२	३	४	५	६	७
भेद	१	२	३	५	८	१३	२१
मात्रा	१	४	९	२०	४०	७८	१४७
वरन	१	३	७	१५	३०	५८	१०९
लघु	१	२	५	१०	२०	३८	७१
गुरु	०	१	२	५	१०	२	३८

१ २ ४ ८ १६ ३२ जैसो जो अंक लघु शिर पर होइ ताको जोरि कै और
ऽऽ ॥ ऽ एक मिलाइ कै जितना होइ सोइ भेद जानो यथा वरण में इस ल-
क्षण प्रथम है कोठा पुनः चारि ऐसी रीति से बनावै तब आदि
अंत के कोठन में एक एक अंक लिख आवै तब माथे ४०
के अंक तें अंक जोरि जोरि के खाली कोठा भरै ८ १
यथा अथ वरण पता का लक्षण प्रथमै
उद्दिष्ट के समा वरण मे रून अंक धरि आवै
१ २ ४ ८ १६ पुनः पूरव के अंक
ऽ ऽ ॥ ऽ लेइ कै भरै पर अंक ते अरु आयो अंक न आवै अथ वरण
पता का यथा अथ वरण मर्कटी लक्षण छह कोठा बनावै आदि मों क्रमते अंक
एक है तीन चारि इत्यादि दूसरे यों उद्दिष्ट रीति अरु पहिले कोठा मों दूसरे तें गुन करि कै

२	१	१	१			
१	२	१	२			
३	३	५	३			
१६	१	४	६	४	१	४
३२ १	५	१०	१०	५	१	५

गु ५ गु ४ गु ३ गु २ गु १ ल॰

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चौथे कोठा मों भरै तब चौथे कोठा कै आधा पंच ए छट ए कोठा मों लिख देइ तब पांचये और चौथे कोठा तें जोरि कै तीसरा मों अंक धरि देइ यथा अथ वरण सूची लक्षण जितनें अंक पर प्रस्तार को अंक होति है ताके आधे पर गुरु अंत जितनोई लघु अंत है ॥

	२	४	८	१६	३२									
गु॰५	३	६	१२	२४	ल॰		वृ॰	१	२	३	४	५	६	७
	५	७	१४	२८										
यथा	९	१०	१५	३०	अथ दए		भे॰	२	४	८	१६	३२	६४	१२८
धाक्षर	१७	११	२०	३१	आठ ह १		मा॰	३	१३	३६	९६	२४	५७६	१३४४
	ज२	१३	२२	घ ३ ण ४ ख ५			व॰	२	८	२४	५७	१६०	३८४	८८६
	गु॰४	१८	२३	गु॰२			ल॰	१	४	१२	३२	८०	१९२	४४८
झ॰६ध॰७		१९	२६	र८ और कवि			गु॰	१	४	१२	३२	८०	१९२	४४८
लोग और		२१	३७	हूं धरे है ॥										
		२५	२९											
अथ छंद		गु॰३	गु॰२											

रीति। श्री गोसांई तुलसी दास जू या रामायण मों १३ प्रकार के छंद कहे हैं तिन ही को लक्षण लिखते हैं तेरह छंद मों नाना वृत्ति के ६ प्रकार अरु वरण वृत्ति के सात प्रकार अथ मात्रा वृत्ति छंद लक्षण प्रथम दोहा लक्षण प्रथम तुक तेरह मात्रा को दूसरा ग्यारह ऐसे ही पुनः तेरह ग्यारह करे तुक चार लौं यथा बोले बंदी वचन वर सुनहु सकल महिपाल पन बिदेह कर कहहिं हम भुजा उठाय बिशाल १ अरु दोहा के तेरहन मों एक एक कला घटाये ते दो बुरा छंद होत है अरु द्वैद्वै बढ़ाये दोहा होतु है यथा ॥ तात चरण गहि मांगौ राखहु मोर दुलार सीता देहु राम

गु॰ अं॰
१२ ४८ १६ ३२
लघु अं॰

कहं अहित न होइ तुम्हार। अरु कहूं कहूं दोहा मों कला एक घट बढ़ होतु है पाद अंत बिकल्प करि घट यथा सुनत विनीत वचन अति कह कृपाल सुख पाइ जिहि विधि उतरै कपि कटक तात सो करहु उपाय ॥ अथ वट यथा रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न संभार ॥ धनु ही सम त्रिपुरारि धनु विदित सकल संसार ॥ अथ सोरठा लक्षण ॥ दोहा ॥ कोउ उलटौ पढ़ै ग्यारह तेरह करि सोरठा होतु है यथा भरत कमल कर जोरि धीर धुरंधर धीर धर वचन अमिय जनु बोरि ॥ ॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

देत उचित उत्तर सब हिं २ अथ रूप चौपाई लक्षण रूप चौपाई सोरह १६ कला की मात्रा ॥ जब ते राम व्याह घर आये नित नव मंगल मोद बधाये ताही में विधुन्माला चंपक माला पादां कुलिश भ्रमर बिल सतादि सब होतु हैं एक घटाय पंद्रह १५ मात्रा की मैं आदि चौपाई हंसी उज्जलादि नाम होत हैं एक बढ़ाय १७ सत्रह की मैं धारी बालादि नाम होत है ३ अथ त्रिभंगी छंद लक्षण प्रथम यथा दस मात्रा पर विश्राम फेर आठ पर पुनः छः मात्रा पर यथा परम तपद पावन १० शोक नसावन ८ प्रगट भई तप ८ पुंजन ही ६ ॥ ४ ॥ अथ चौपद्या छंद लक्षण दश मात्रा प्रथम पुनः आठ पुनः बारह सब कला ३ व्यथा भये प्रगट कृपाला १० परम दयाला ८ कौशिल्या हित कारी १२ इत्यादि अथ हरि गीत छंद लक्षण अंत गुरु सब मिलि मात्रा अट्ठाईस २८ को यथा मन जाहि ५ एचो मिलहि ७ सोवर ४ सहज ३ सुंदर ४ सांवरो ५ ॥ ६ ॥ इत्यादि अथ बरण छंद लक्षण अथ मगन स्वरूप नी आठ अक्षर लघु गुरु क्रमते यथा नमामि भक्त वत्सलं कृपाल शील कोमलं १ इत्यादि अथ तोमर छंद लक्षण सगन एक जगन है नव अक्षर को रूप ॥ ऽ।ऽ॥ऽ। यथा महिमा उदार अपार २ इत्यादि अथ तोटक छंद लक्षण चारि सगन बारह अक्षर को ॥ ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ यथा जय राम सदा सुख धाम हरे । रघु नायक सायक चाप धरे ३ अथ भुजंग प्रयात लक्षण ॥ चारि मगन बारह अक्षर को । ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ यथा नमामीश मीशान निर्वाण रूपं । विभुं व्यापकं ब्रह्म वेद स्वरूपं ॥ ४ ॥ इत्यादि ॥ अथ अनुष्टुप् लक्षण ॥ पंचवा वरण लघु चारों चरण मों छठयां गुरु सतमो लघु नेम दूसरो चौथे चरण मों पहले तीसरे चरण मों सत या गुरु अक्षर आठ यथा यो ददाति सतां शंभुः कैवल्य मपि दुर्लभं खलानां दंड कर्त्ता सौ शंकरः शंतु नोवु मे ५ अथ शार्दूल विक्रीडित लक्षण प्रथम मगन सगन जगन सगन तगन है अंत मों अंत एक गुरु अक्षर २७ को ऽऽऽ।।ऽ।।ऽऽ ऽऽ।ऽऽ।ऽ यथा शांतं शाश्वतमप्रमेय मनघं निर्वाण शांति प्रदं ब्रह्मा शंभु फणींद्र सेव्य मनिशं वेदांत वेद्यं विभुं ॥ रामाख्यं जगदीश्वरं सुर गुरुं माया मनुष्यं हरिं वंदेहं करुणा करम् ॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रघुवर भूपाल चूड़ामणिं है अथ बसंत तिलक लक्षण तगन मगन ज-
गन है गुरु है अंत मों अक्षर चौदह ऽऽ।ऽ॥ ।ऽ।।ऽ। ऽऽ यथा नाना स्नेहा
रघुपते हृदये स्मरीय सत्यं वदामिच भवान खिलांतरात्मा ७ दूत्यादि
दूति पिंगल मत ॥अथ चित्र॥ चित्र को भेद बहुत है कछु या रामायण में
भेदचित्र उदाहरन देखा वनु है॥ चित्र मों प्रथम निरोह जामें ओरन लगे य-
था अग जग जीव नाग चर देवा नाथ सकल जग काल कलेवा अथ अंतर
लापिका जाको अर्थ छंद के भीतर ही निकरै यथा छप्पै कह गनपतपितु नाग
देव अर्पित का कहिये सज्जन को का कहत कौन हिय आनंद रहिये कौन च-
रित सुख देखू कहंते सरयू आई छंद बद्ध को करत राम जस भाषा गाई या-
मों यह चौपाई निकसतु है शंभु प्रसाद सुमति हिय तुलसी राम-चरित मान-
स कवि तुलसी दूति दूति अंतर लापिका अथ वहि लापिका जो अर्थ बा-
हर ते आवै यथा कह्यो नाम विपरीत के जामें भयो प्रसिद्ध सो अनादि सम
है गयो जान लेहु करि सिद्ध यामों यह चौपाई उलटा नाम जपत जग जाना
बालमीक भए ब्रह्म समाना अथ चित्र अश्व गति चक्रन मामि भक्त वत्स
लं कृपालु शील कोमलं भजामिते पदां बुजं अकामिनां स्वधामदं अथ
सीय बंध अरुन पराग जलज भरि नीके शशि हिं भूष अहि लोभ अमीके॥

न	मा	मि	णी	क्ष	को	त्स	लं
भ	का	मि	नां	प	धा	बु	दं
क्ष	पा	लु	भ	क्ष	ब	स	ल
श	जा	मि	ते	ख	दा	म	जं

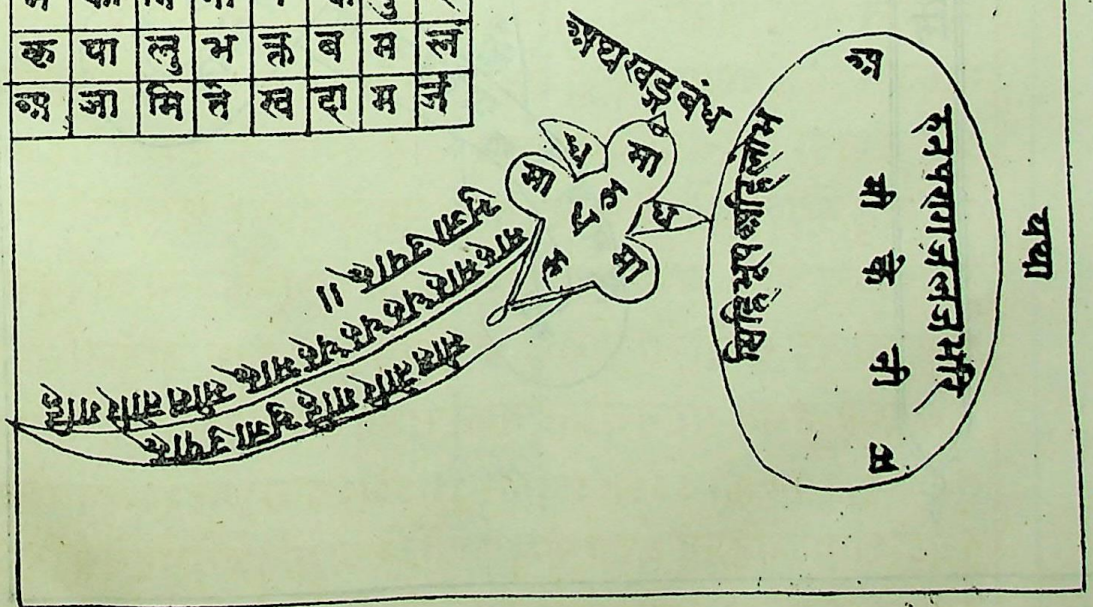

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ नालबंध

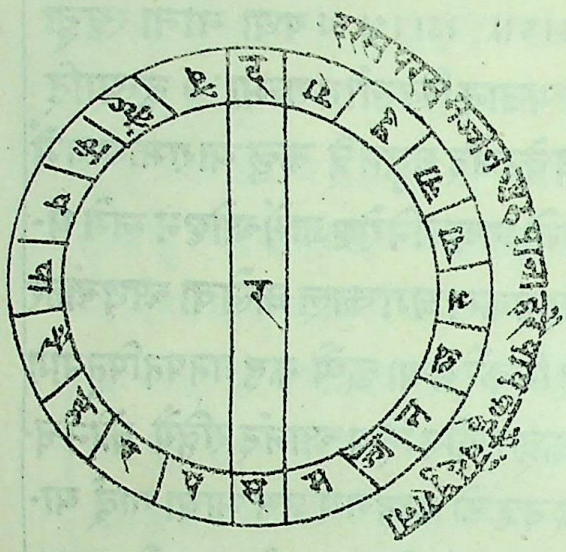

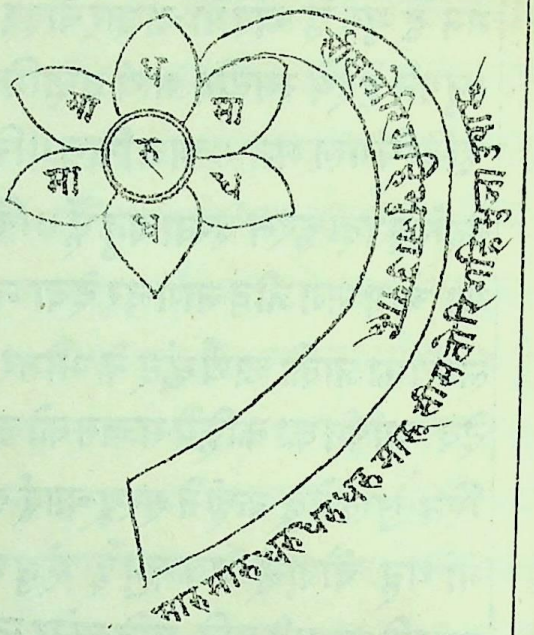

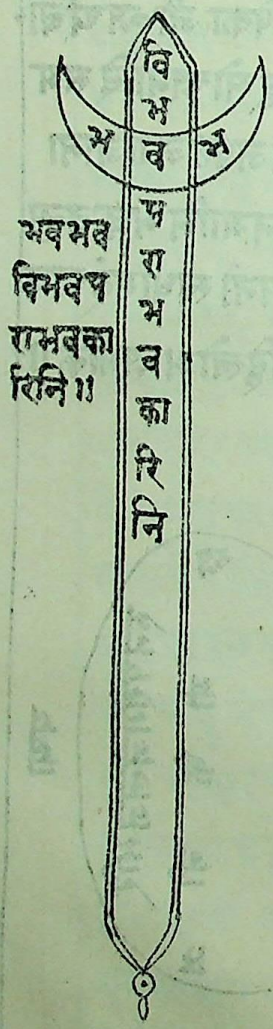

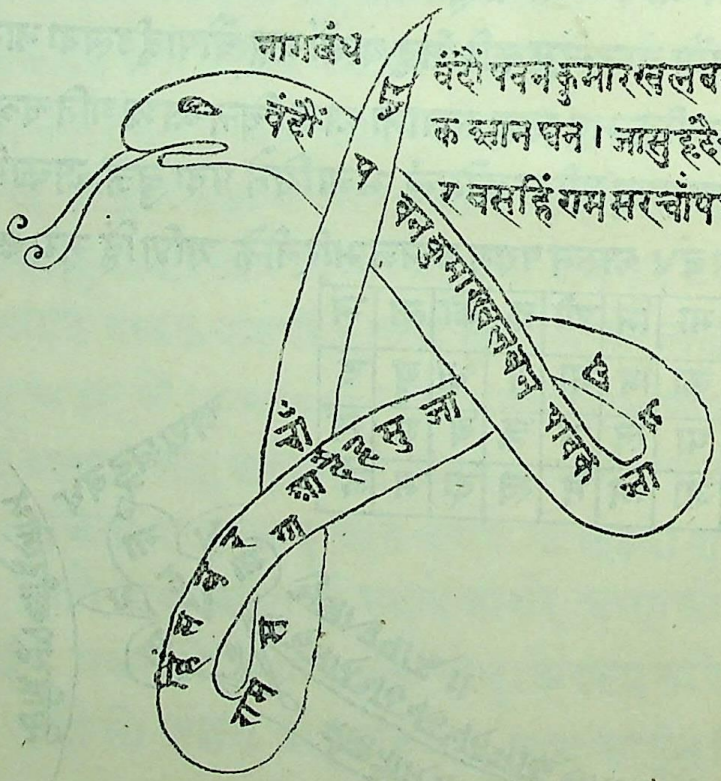

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

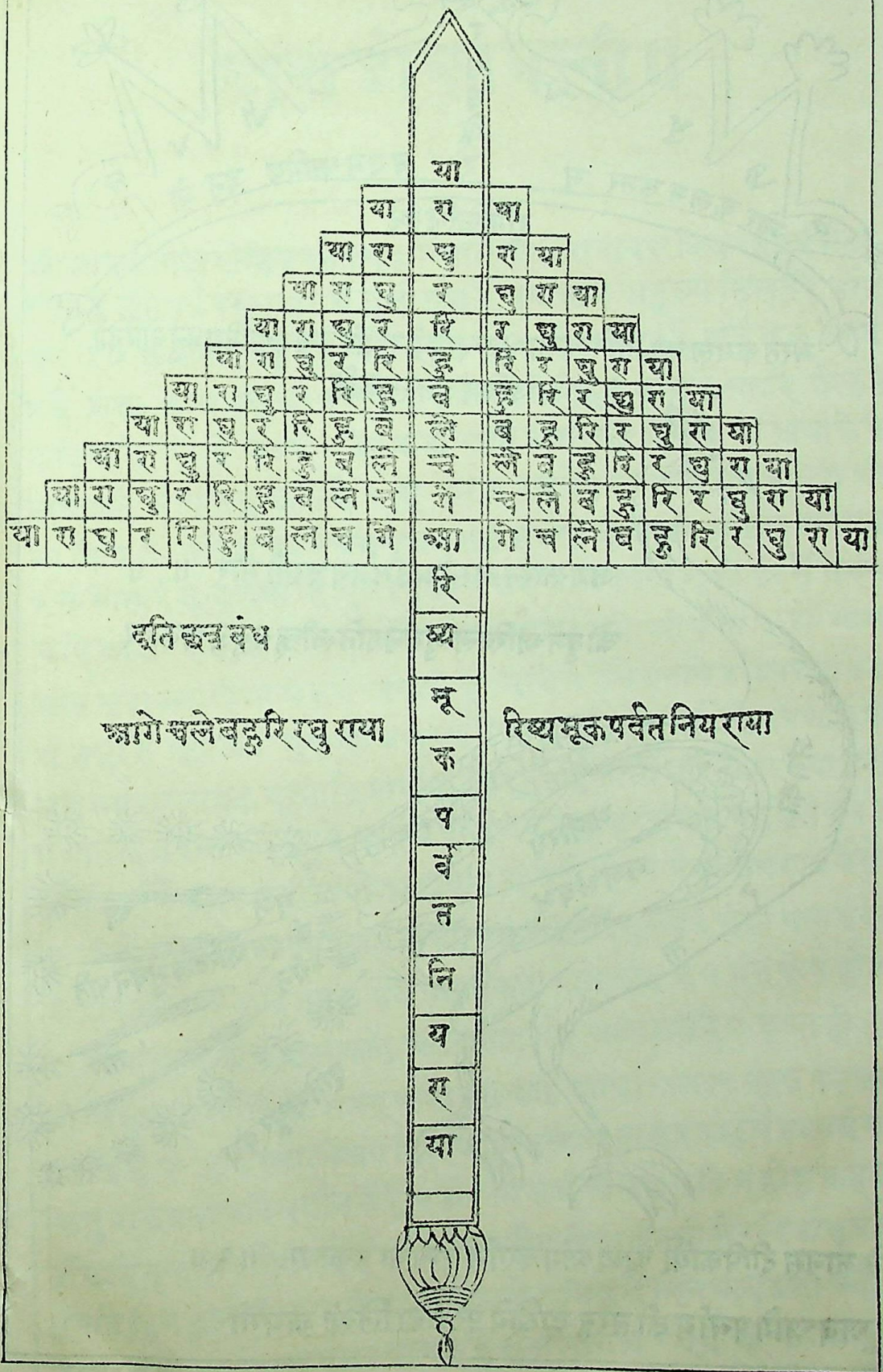

या
या रा या
या रा घु रा या
या रा घु र घु रा या
या रा घु र रि र घु रा या
या रा घु र रि हु रि र घु रा या
या रा घु र रि हु ब हु रि र घु रा या
या रा घु र रि हु ब ले ब हु रि र घु रा या
या रा घु र रि हु ब ले चे ले ब हु रि र घु रा या
या रा घु र रि हु ब ले चे गे च ले ब हु रि र घु रा या
या रा घु र रि हु ब ले च गे आ गे च ले ब हु रि र घु रा या

रि
ष्य
मू
क
प
र्व
त
नि
य
रा
या

इति छत्र बंध

आगे चले बहुरि रघु राया

रिष्यमूक पर्वत नियराया

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

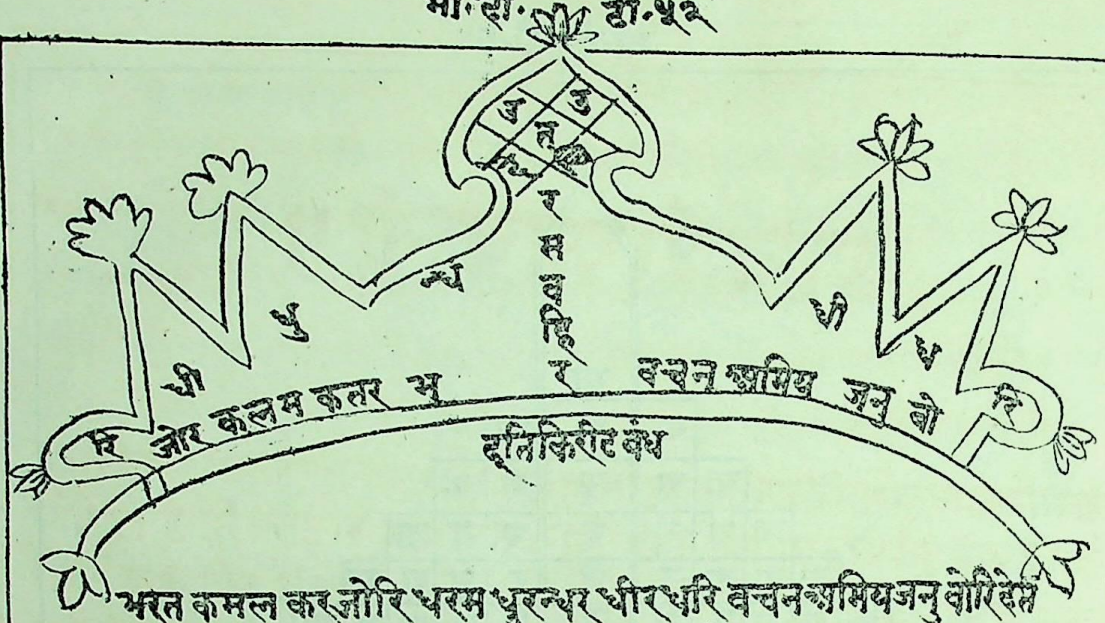

भरत कमल कर जोरि धरम धुरन्धर धीर धरि वचन अमिय जनु बोरि दीन्ह
उचित उत्तर सबहिं

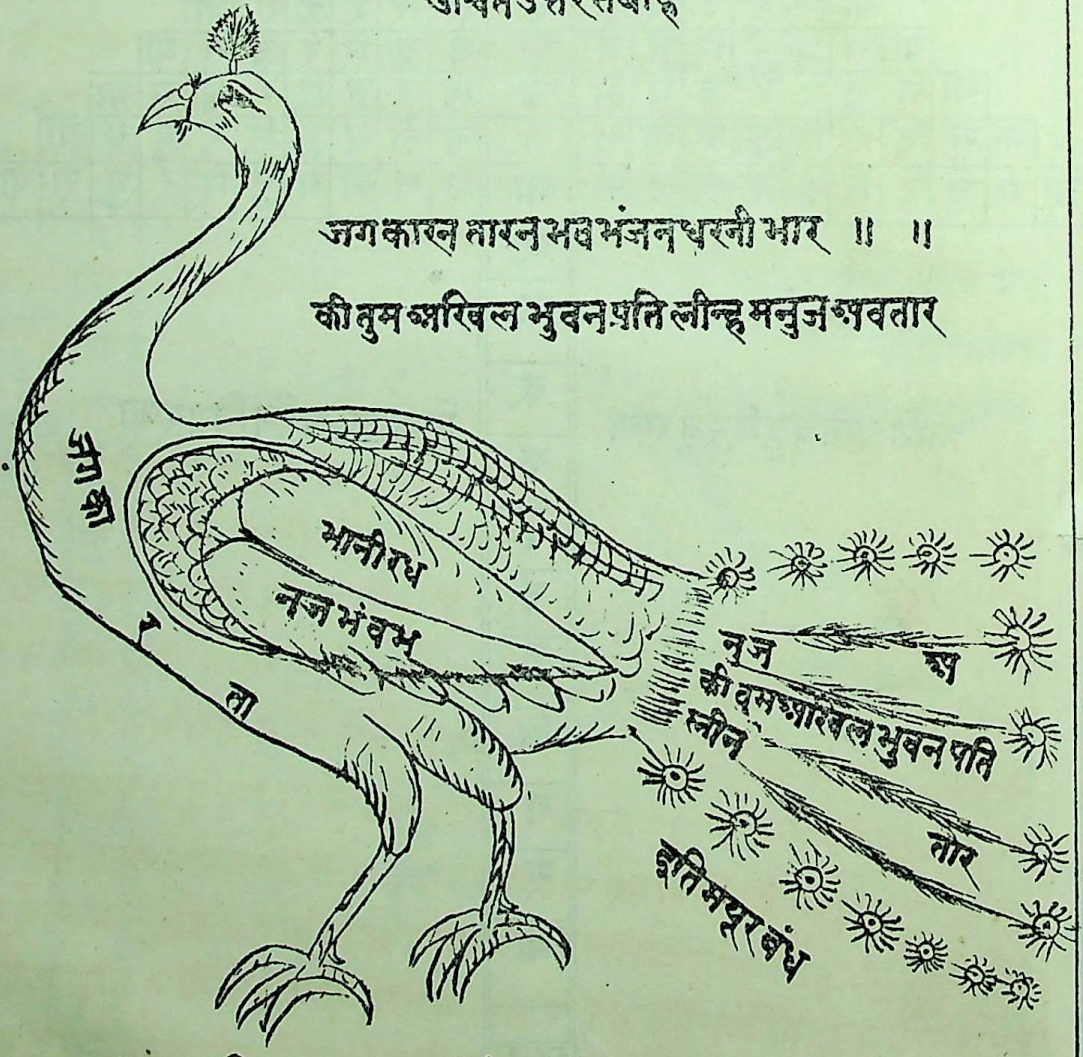

इति मानस दीपिकायां काव्य अंग वर्णनं तृतीयो प्रकाशः ॥ ३ ॥

अब आगे पर्याय की तरह दूसरिये पर टीका लिखी जायगी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ग्रंथ शंकावली ॥

श्रीजानकीवल्लभो विजयते॥ यह गोसांई जी की रामायण विचारतें सर्व शंका रहित है जातें पूर्व पर लगाएतें इसी ग्रंथ में समाधान बाहुल्य मिलत है परंतु इस ग्रंथ का प्रचार बहुत है यातें बहुत लोग शंका करत हैं तातें कछु लिख त हैं शंका भाषा बहु करब मैं सोई प्रतिज्ञा में विरुद्ध कांड के आदि संस्कृत कवि काहे लिखे· उत्तर ॥ देव वानी अति मंगल रूप जान कै वा भाषा के षट् लक्षणमें संस्कृत हू चाहिये १ सं· निज इष्ट देव त्यागि प्रथम गणेश बंद ना कि व उ· गणेश का प्रथम पूजन सर्व सम्मत वा प्रथम पूजियत नाम प्रभाऊ २ सं· गोसांई जू अनन्य द्वि भुज रघुबर उपासक नारायण जू को उर में बसाए काहे को उ· दोऊ का अभेद जानि प्रमाण प्रगट भये श्री कंता ३ शं· माया जीव ब्रह्म जग दीण ये सब अनादि हैं बिधि ने कैसे बनाये उ· उपजाने में तात्प र्य नहीं है गुण औ गुण का प्रकरण है वा प्रार्थना ते बिधि ने उपजाये प्रभा· जय जय सुर नायक इत्यादि प्रार्थना और तुमहिं लागि धरि हौं नर बेषा ४ शं· पू· र्व अनेक बंदना करि आये अब बंदौ प्रथम मही सुर चरणा यह कैसे बने उ· चारों वर्ण में प्रथम कही आदि आह्मण ५ शं· बंदौ प्रथम भरत के चरणा कैसे बने उ· तीनों भाइन में प्रथम भरत वा श्री राम भक्तन में मुख्य ६ शंका नाम बंदना में चाप भंग में कहि दंडक वन पावन कहा यामें कांड क्रम भंग दोष होत है उ· विवाहादि शेष बाल कांड चरित्र चाप भंग अंतर गत है प्र· दूरत ही धनु भं यो विवाहू इत्यादि औ समग्र अयोध्या कांड आधा आरण्य दंडक वन पावन में गतार्थ है प्र· मुनि गणा मिलन विशेष बन इत्यादि वा सप्त कांड में तात्पर्य नाहीं किंतु वाके प्रतापादि वर्णन में हैं ७ शं· गोसांई जी कहूं कवि न होहु कहत हैं क· हीं कवि तुलसी यामें का हेतु उ· कविन होहु निज दीनता सै कवि शंभु प्रसाद सुमति हिय हुलसी इत्यादि ८ शं· अघतो प्रसिद्ध है बिन अघ तजी सती यह कै से उ· इहां अघ शब्द दुःख वाचक है सती त्याग में शिव जू के कछु दुःख

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वर्णन भयो दुःखी भयउं वियोग प्रभु तोरे यह भक्ति विरह तें कहे पत्नी भावतें नहीं
९ प्रं॰ प्रजा सहित रघुबंश मणि निज धाम गये यह प्रश्न के उत्तर न दिये सो क्या
उ॰ उपासकन के नित्य प्रबंध विहार सम्मत है तातें वक्ता मौन रहे वा उत्तर में गुप्त
उत्तर दियो गयो जहां शीतल अमराई बाग में फिर गृह आगमन लिखे १० प्रं॰
जो प्रभु मैं नहीं पूछों सोभी कहना सो शिव जू कहा कहे उ॰ औरें एक कहों निज
चोरी दृष्टादि ११ प्रं॰ सतीमोह तो आरण्य कांड में भयो फूल वाटिका में गिरिजा ना-
मसे भूजन कैसे करे उ॰ देवता अनादि हैं दून में सब नाम सदा प्रसिद्ध हैं प्र॰ गुरु अनादि
जिय जानि १२ प्रं॰ निशि दिन नहिं अवलोकहिं कोका उभय घरी में रात दिन कैसे
बने उ॰ कोक निशही में भोग करने लगे दिन नाहीं देखत यह अचरज वाको पुरु-
षका स्त्री यह निज पत्नी संबंध कै मर्यादा न रही १३ प्रं॰ काम की चढ़ाई तो शं-
करके विजय हेतु है विश्व विजय गाये सो का हेतु उ॰ विश्व विजयी काम के संहार
से शंकर कै अति बड़ाई में तात्पर्य है १४ प्रं॰ मनु सत रूपा के बरदान समय में युग
ल प्रगटे बरदान राघव दियो किशोरी जी न बोलीं सो क्या हेतु उ॰ दोनों का अभे-
द है प्र॰ देखत भिन्न न भिन्न १५ प्रं॰ भानु प्रताप धर्मात्मा ज्ञानी सो आपतें राक्ष-
स भयो यामें क्या हेतु। जीवके प्रारब्ध कर्म मुख्य हैं प्र॰ तुलसी जस होनव्यता
दृष्टादि १६ प्रं॰ रावण के बरदान में बानर मनुज दुई ओर मरो एक मनुज राघव
हाथ से दूसर बर का क्या हेतु उ॰ रावण बध में राम जू प्र॰ आपन बध मानव कर
बांची हंस्यो राक्षस बध में ये दोऊ भिन्न भिन्न कारण हैं १७ प्रं॰ जन्म एक दुइ ए-
तीन कल्प की कथा पहिले शिव जू कहैं चतुर्थ कल्प के प्रसंग में मन प्रकरण
तें आकाश बानी तें कहे कश्यप अदिति महा तप कीन्हा पुनः नारद बचन सत्य
सब करिहौं यह पूर्व कल्प के कथा दूनों कहांते आई उ॰ भेद से दूनों। व्यवस्था
प्र॰ कल्प भेद हरि चरित सुहाये। भांति अनेक मुनी अन गाये इत्यादि २० प्रं॰ श्री
रामादि चारों भाइन्ह के नाम करण में क्रम भंग है उ॰ वहां पाठ क्रम ते अर्थ क्रम
बली है वा राम तापनी मांडूक्य उपनिषद में क्रम विपर्यय है बालक्रीड़ा के वि-
शेष गुण कहिने थे यातें भरत के लिखे नहीं शत्रुघ्न की आड़ से लिखे २१ प्रं॰
माता को यह अलौकिक विवेक दिये रहे अब सो भूली ए विश्वरूप
दिखाये यामें क्या हेतु उ॰ वात्सल्य की अधिकता में माता भूली प्रभु
विश्वरूप दिखाइ कै पूर्व विवेक दृढ़ करा इन्ह २२ प्रं॰ विश्वा मित्र प-
हिले ही जानते रहे तब ऋषि निज नाथ चीन्हे यह कैसे बने उ॰ राह में ऋषि

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बाल विनोद देखि भूले तातु का बध से पुनः ईश्वर जाने प्र·गीतावली प्रगट च·
रित सुहावे इत्यादि २१ पं· ऋषि दोउ भाइन्ह को यज्ञ रक्षा हेतु लाये राजा
ज्ञा बिना मिथिला को क्यों ले गये उ· सब मुनि ही पिता हैं प्र·राजा बचन तुम
मुनि पिता जान नहिं कोई २२ पं· मिथिलेश जू प्रथम ही विश्वामित्र से राम प्र·
ताप जाने रहे तब सभा में अनादर वचन सब के साथ क्यों कहे उ· राम रूप मो·
हनी तें जनक जू राघव का ऐश्वर्य भूले यहां वात्सल्य रस प्रधान है २३ पं· सी
य स्वयं बर देखिय जाई यह नाहीं बनत जाते सिया जू स्वतंत्र बर नाहीं बरा उ·
स्वयं बर दुइ विध है अन स्वयं बर द्रौपदी आदि का स्वतः स्वयं बर द्रौपदी दमयंती
आदि २४ पं· जनक बाम दिशि सोह सुनैना और स्मृति में अरु लोक में दक्षिण
दिशि पाइयतु है सो क्या हेतु उ· बाम कही शिव शिव कही कल्याण दिशि
अर्थ तें कल्याण दिशि आवत है वा जनक की बाम पत्नी सुनैना सोह दिशि
दक्षिण दिशि अथवा जनक है बाम दिशा जेहि के ऐसी सुनैना २५ पं· जब
ते राम व्याहि घर आये तब तें अयोध्या में सब आनंद बसे तो आगे क्या आ
नंद नहीं है उ· अल्हादनी शक्ति सीता जू जेहि तें आनंद पूर्ण भयो यह भा·
व है २६

इति संक्षेप तें बाल कांड शंका वली

अयोध्या कांड शंका वली पं· पूर्व बाल कांड में ही श्री गुरु पद रज तें विवेक
नेत्र विमल करे पुन दोहा निज मन मुकुर सुधार कहे लिखे उ· भरत महिमा वर्णन
अति अगम जानि पुनः मन निर्मल कीन्ह प्र·भरत परम महिमा सुनि रनी जान·
हिं राम न सकहिं बरबानी। अयोध्या कांड में मुख्य भरत चरित्र प्र·भरत चरि·
त करि नेम इत्यादि वा महा राज दशरथ आदि सब का मनोरथ भंग दूसरे कां
ड में विचार रज तें सो कमल दूर कीन्ह २७ पं· दशरथ जू राम जू को विश्वा मि·
त्र साथ भेजे तब तनु त्यागन करे बन यात्रा में कीन्ह सो क्या हेतु उ· विश्वामि
त्र के साथ गये तहां बशिष्ठ जू वचन तें संदेह नाश और मुनि सहाय के और
ऋषि तनु के नृप निज प्राण धारण करि बचे प्र· तुम मुनि पिता जान नहिं
कोऊ पुनः सुत उर लाइ मृतक जनु भेंटे बन में सब विपरीत तेहिं तें तनु त्या·
ग २८ पं· श्री जानकी जू बन यात्रा समय में सेवा करे को कहां और ग्रंथ
कार सेवा न लिखे सो क्या हेतु पिता वचन में तात्पर्य प्राण पति के साथ
जाने को है वा प्रत्यक्ष सेवा भी लिखे· वर काया भेद का मुहावरा इत्या·
दि २९ पं· राम जू के केई बर दान तो तापस वेष विशेष उदासी दुई

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तो धनुष बाण धारनो रथ चढ़िवो मृगया आदि कैसे बने उ० कैकेई का बरदान व्याज भरि है अवतार धरि स्वतंत्र लीला करिवो मुख्य राम जनम जग मंगल हेतू वा मुनि व्रत और स्व धर्म दूनो निबाहे ३ पूं· प्रयाग बासी भरत की बड़ाई करत हैं राम गुण ग्राम सुनिवो कैसे उ· निज बड़ाई सुन मुख्य उपासक स्वामी के गुण समुझत हैं वा बेनी के फूल में हरि कथा से राम गुण ग्राम सुनत चले ३९ पूं० भरद्वाज के शिष्य पचासक आये और सब राम प्रेमी मुनि चारेक बटु संग दिये में का हेतु उ· सीता समादि चारि बटु भी वा चार सबते अधिक सुकृती चार वा चार वेद यथा रथ मारग ज्ञाता ३२ पूं· श्री राघव का शिव पूजन अयोध्या औ लंका में लिये और मैना हीं सो क्या हेतु उ· श्री राघव जू के कुल देव रंगजू हैं और संकट में आराध्य शंकर जू यामें अनेक प्रमाण यही प्रथम में बाल उत्तर में संकट है नहीं आरण्यादि में सीता बिरह सों राम जू विकल ३३ पूं· श्री राघव के बन यात्रा में पग में फल का न लगाये भरत के कहे सो क्या हेतु उ· राम गवन पर्यंत है और बसंत ऋतु भरत के यात्रा ग्रीषम में और बिरह संताप तें ३४ पूं· भरद्वाज भरत के पहुनाई में ऐश्वर्य दिखाये सो क्या हेतु उ· भरत के वैराग्य की परीक्षा अर्थ यथा रथ भई प्र· मुनि आयसु खेल बार ३५ पूं· भरद्वाज से भरत की भेट गाये महा मुनि बालमीक सो नाहीं सो क्या हेतु उ· भरतजी बिरही हैं राम दरशन में अतित्वरा हैं भरद्वाज पहुनाई बस कदाचित बिघ्न करै तातें कबि भेट न गाये ॥ ३६ निषाद राज तो यमुना तीर ही सें फिरा भरत यात्रा में देखावत हैं किये पथ सरित समीप रघुवर परणा कुटी है तो ए कहां तें जान्यो उ· निषाद फिरो तो बीचही तें ये वर्ष भर के भीतर कैक बार गयो वा से बकन द्वारा प्रति दिन की खबर लगाये रह्यो राम जू के भरता गमन को पैलै विचार पुनः निश्चय है खलन केवल हृदय स्व भारे लखे यामें क्या हेतु उ· लक्ष्मण राम प्रेमांध हैं राघव का कलेश नाहीं सह सकतु प्र· मातु पिता नहिं जान उं काहू ३८ ॥ इति अयोध्या कांड शंका वली ॥ अथ आरण्य कांड शंका ॥ लक्ष्मण जू प्रथम निषाद को ज्ञान वैराग्य भक्ति उपदेश कीन्ह फिर राम जू से फिर षट प्रश्न किये को क्या हेतु उ· सब बात के ज्ञाता भी बडेन को प्रश्न करते हैं वा आगे रघुपति ललित नर लीला करेंगे सब बात पूछ राखे तातें नीहून होय ३९ पूं· सूर्पनखा ना परम सुंदरी बन के गई लक्ष्मण जू रिपु

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भगनी कैसे जानी उ· अगस्त्य के वचन तेंवा सूर्पनखा के वचन तें तीन लोक में खोजेउ नाहीं मिला तातें अब लगि कुआरी रही इत्यादि वचन ४० राम जू सूर्पनखा ते लक्ष्मण को कुवारे कहे एतो विवाहे हैं उ· हास्य रस और विवाह राजनीति आदि में झूठ का दोष नहीं कुमार अवस्था ४१ प्रं· काम लोभादि कोई रीति सों जीव सन्मुख जाय ईश्वर त्याग नहीं करत तो सूर्पनखा के से कर त्यागी विरूप करि उ· सीता विरोधनी अति बड़ा शत्रु भगनी रही ४२ प्रं· मारीच तो कपट मृग रहा ताको चर्म राम जू कैसे लाये उ· प्रभु सत्य संकल्प हैं तातें मृगो तन रहा प्र· राम कीन्ह चाहैं सो होई ४३ प्रं· मृग छाला लाये कि नाहीं यह कुछ कवि न लिखे सो क्या हेतु उ· जेहि प्रिया के अर्थ चर्म ल्याये सो चोरी गई तातें कवि चर्म ग्रंथ में प्रगट न कहे अवसर पाइ के कहे प्र· तापस रुचिर मृदुल मृग छाला ४४ प्रं· रावण तो मन में अनुमान कीन्ह गीधराज सुनत धायो यह कैसे बने उ· सुनत पर में रावण कछु कटु वचन कहे यह जानतु ४५ प्रं· राम जू गीध राज से कहे कि सीता हरण पिता सों न कहना जो मैं राम तो कुल सहित रावण कहै गो यामें क्या हेतु उ· सीता हरण सों पिता के स्वर्गो में अति दुःख होय गो रावण तो मरे पर कहे गो तातें सीता प्राप्ति शत्रु बध आदि सें अति सुख होइ गो ४६ प्रं· सेवरी को राम जू न वधा भक्ति कहे सो भागवत आदि ग्रंथ से विरुद्ध है उ· यह ग्रंथ नाना पुराणागम निगम है ॥ ४७ ॥ इति आरण्य प्रं· ॥ अथ किष्किंधा प्रंका॥ हनूमान विप्र रूप धरि स्त्री को राम को माथ नायो सो क्या हेतु उ० राम तेज न सहि सके वा नेत्र मुख द्वारा कपट लखि परे गो तातें माथ नीचे कीन्ह ४ प्रं· लक्ष्मण ते दूना प्रिय हनूमान को काहे कहे उ· लोक रीति सों कि हमारे प्राण हूंते तुम अधिक हो वा कपि केवल दुख में सहायक है लषण सुख दुख में वा लषण राम के सेवक हैं ये दोनों के सेवक वा लषण द्वारा प्रिया वियोग दून द्वारा प्राप्ति प्रं· महावीर ने ये प्रभु कैसे पहिचाने उ· दशरथ के जाये इत्यादि वचनतें ये बड़े पंडित हैं ५ प्रं· राघव अरु सुग्रीव अनेक देव छांड़ के पाव के सारवी कीं दिये उ· मित्रता वचन द्वारा वा गिंद्रिय को देवता अग्नि वा सुद्रता और सपथ और साक्षी यों अग्नि मुख्य प्र· तौ कृशानु सब के गति जाना ५ प्रं· राघव एक रूप दोऊ भाइन्ह के कहे जिनमें भग

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

औ माला मेली ये सब में क्या हेतु उ॰ नर नाट्य में सब बनत है ५२ शं॰ राम जू प्रथम वाली वध कै एक वाण से प्रतिज्ञा कीन्ह फिर दूसरा बाण चढ़ाये सो क्या हेतु उ॰ बानर राज वाली तेहि के सहायक निर्वाणार्थ बाण की अमोघता राम संकल्प के अधीन ५३ शं॰ रामजू सरतान के बालके हृदय मर्म स्थान में मार्यो जलदी न मर्यो सो क्या हेतु उ॰ राम रूप दर्शन संभाषण अंगद सौं पवन आदि हेतु राम इच्छा ५४ शं॰ जेहि शायक तें मैं वाली मारा तेहि वाण ते मैं काहू मूढ कौं हतौं यामें सत्य प्रतिज्ञा और शरणागत पालत्व कैसे बने उ॰ वोही दिन सुग्रीव आप आय मिले ५५ शं॰ और दिशा में छोटे वानर सात समुद्र पार गये दक्षिण में सब सुभट तहां निज निज वल कहे अंगद आइवे में संशय कहा सो क्या हेतु उ॰ अति वली रावण को भय वा गुप्त मुद्रिका देन आदि हनूमान को जानत हैं इति किष्किंधा शंका वली ॥ अथ सुंदर शंका ॥ महावीर अशोक वाटिका में सीता रहत संपाती से सुना रहा महल में खोजे काहे गये उ॰ अशोक वाटिका इन्ह की नहीं जानी यातें विभीषण कहैंगे ५७ महावीर के लंका जात पुर्ष बाधक न मिले तीन स्त्री ये मिली सो क्या हेतु उ॰ भव सागर के पार जात मुमुक्षु के तीनों लोक के स्त्री बाधक स्वर्ग की सुरसा पाताल की वासिनी सिंहि का मृत्युलोक के लंकिनी ५८ गयो दशानन मंदिर माहीं दुइ भ्राता के एक एक शिर या के दश क्यों भये उ॰ ब्रह्म विचार कीन्ह विद्या १४ हमारे मुख चार दश विद्या के अर्थ दशानन कीन्ह यह भाव मुरारी नाटक में वा परमार्थ रामायण में रावण मोह रूप है दश इन्द्रिय आनन हैं ५९ शं॰ राम लक्ष्मण तो राक्षसी माया तें बन गये और माया तें अस रचि नहिं जाइ यह कैसे उ॰ मुंदरी में राम नाम है नाम दूनो ब्रह्म तें बड़ा है ६० शं॰ सुग्रीव को वाल वध करि राज दीन्ह और विभीषण को रावण जीवत तिलक सारे या में क्या हेतु उ॰ सीता जी के धैर्य्य अर्थ वा जीवत शव सम चौदह प्राणी वा निशाचर हीन करौं मही या प्रतिज्ञा तें ६१ शं॰ समुद्र राम दूत के तौ मैं नाक द्वारा सेवा कीन्ह और राम के तीन दिन बीते न आयो न सेवा या में क्या हेतु उ॰ दूत का पराक्रम देखा और राम के नर नाट्य वचन तें भद्र भयो वा साठ हज़ार उत्तर तट वासी आभीरों के वध में तात्पर्य हैं ६२ इति सुंदर कांड शंका वली ॥ अथ लंका कांड शंका ॥ समुद्र के यह पार शंभु थापना में क्या हेतु उ॰ सब तीर्थ में समुद्र औ अष्ट वैकुंठ

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अंतर्गत द्रविड़ देश जान कै वा रावण शंभु भक्त है शंभुके यहि पार गरुड़ जाते उस्का पक्ष करैं ६३ प्रं· पहले सेतु के हेतु तीन कहे जलधि १नल नील २ग· घव ३ सेतु बांधे पर श्री रघुवीर प्रताप तें पाषाण तैरे सो क्या हेतु उ·और उपाय साधारण मुख्य हेतु सर्व शक्ति युत ईश्वर वा मारत लरत सुभट विजय मालिक राजा ६४ प्रं· सेतु बांध कै फेर तीन मार्ग कहे सो क्या हेतु उ·भव सागर पार के तीन मार्ग कर्म ज्ञान उपासना ३ जल चर कर्म मार्ग आकाश निरालंब ज्ञा·सेतु सम उ· पासना प्रं·सुवेल पर रामजू के सयन औ सिथलना कहे और रावण के नृत्यादि औ राज श्री सो क्या हेतु उ·राघव बिरही वह राज श्रीयुत वा रामजू देवी संपति युत शांत आसुरी संपति वालो वह चंचल वा राम के रावण कुछ माल नहीं जगमहं सखा निसा वा छिपाद कै श्री राम कहैं सो चंद्र वर्णन औ छद्र भंग से अस्पष्ट ६५ प्रं· फिरैं राम सीता में हारी सीता हारने वारे ये कौन उ·राम निंदा सुनि रेय तें साहस वा राम प्रताप समुझ कै ६७ प्रं· लक्ष्मण के प्रथम शक्ति लगी तब बड़ो दुख ब· ड़ो उपाय दूसरी शक्ति में कछु नाहीं यामें हेतु उ·प्रथम तें नर नाथ दूसरे में ईश्वर ता बाल पन की भूमि और दीनता यथा संख्य ६८ प्रं·महा वीर राम कार्य के अर्थ औ धधी लेने चले नहीं अनेक दुःख पाये मरते बचे सो क्या हेतु उ·स्वामी के आगे व· ल भाषि अभिमान तें चले ६९ प्रं·माया सर में मकरी कहां रही उ· सरतो पूर्व को रही रचना विशेष माया तें यही हेतु मूल में वर पद दीन्ह प्र·सर मंदर बर बाग वनाया ७० प्रं· राघव लषण को सहोदर कहे पुनः निज जननी के एक कुमार कहे यह कैसे बने उ· सहोदर प्रताप तें प्र· प्रभु प्रलाप सुनि कान बाच रुते वा पिता संबंध तें वा कौशिल्या उदर में लषण भी प्रथम रहे बल देव की नाईं प्र·शेष उपनिषद एक कुमार एक पद से मुख्य ७१ प्रं·विभीषण राम शर· णागये पर कुंभ करण के पांय जाद परे सो क्या हेतु उ·भेद करि मिलावे सो अर्थ वा निज वृत्तांत कहि शुद्धता अर्थ ७२ प्रं· अंगद हनूमान सुभट शिरोमणि सो मेघनाद के कोप के मारे वाको धावन औ मरे न तब फिर चले औ कुंभ करण रावण १ मुष्टि का से भूमि में गिरे या में क्या हेतु उत्तर एके और को विजय कहैं तो रण शोभा नहीं होय वा मेघनाद के उत्कर्ष तें लषण के उत्कर्ष में तात्पर्य ७३ प्रं· रावण कुंभ करण के घाण द्वारा लंका में पठाये औ मेघनाद के हनूमान लंका द्वार पर धर आये सो क्या हेतु उ·लषण के मेघनाद सम शत कोटि योधा न उठाये और मेघनाद को एके दास हनूमान उठाय लंका द्वार पर धरै यह

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उत्कर्ष ७४ प्रं॰ विज्ञानी विभीषण समर में विकल होय के रथ की दृच्छा करी सो क्या हेतु उ॰ नर नाट्य देख भूले रहे रामजू परमा रथ उपदेशतें पुनः सावधान कीन्ह जैसे अर्जुन प्रति गीता ७५ प्रं॰ शिवजू आरणये ते ८७ हज़ार वर्ष समाध में रहे हम हूं उमा रण चरित्र देखे यह कैसे बने उ॰ ईश्वर अनेक रूपतें समर्थ ७६ प्रं॰ प्रतिज्ञा तौ प्रति बिंब के ताको जरिबो कहै तौ पतिव्रत कैसे बने उ॰ सत्य सीता के प्रगटे में तात्पर्य प्रति बिंब को बिंब में लय ७७ प्रं॰ विभीषण पुष्पक कुबेर को न दियो राघव को दियो सो क्या उ॰ वर्ष १४ में थोरिक दिन बाकी रहे भरत देखबे की अतिजल्दी जानी पुनः राघव कुबेर को दिये इति लंका प्रंका॰

॥ अथ उत्तर प्रंकावली॥ पहले महावीर के वचन सुनि भरत बोले नहीं दूसरे वचन में बोले सो क्या॰ उ॰ दूसरे में विजेय रिपु रण जीत सीता अनुज सहित प्रभु आवत पहले में यह नाहीं ७८ प्रं॰ जिन्ह कपिन्ह को निज देह गेह आदि सों अधिक प्रिय कहेते विदा किये जे सामान्य प्रिय कहे ते रामजू समीप राखे यह कैसे उ॰ नीति विचारतें वा प्रीत मुख्य चाहिये दूर समीप ओहार गौरा ८० प्रं॰ दुदू सुत सीता जाये पुनः दुदू दुदू सुत सब भ्रातन्ह केरे और राम जी को नाम न लीन्ह सो क्या॰ उ॰ भरतादि के पुत्र अयोध्या में भये तेंहि तें तातें पिता नाम तें ख्यात सीता के पुत्र वाल्मीकि आश्रम में हैं वैहर के पुत्र भयेतें कन्या नाम से फलानी के बेटा भयो है मुनि के सीता जू में कन्या भाव गीता वली में प्रसिद्ध ८१ प्रं॰ अंगद अनेक भांति दीनता भाखे कृपाल राघव पास में न राखे सो क्या॰ उ॰ राज गादी दून की परंपरा भ्रष्ट न होवे ८२ प्रं॰ शंकर जू भुशुंडी से कथा प्रत्यक्ष रूपतें न सुने मराल तनु से सुने सो क्या हेतु उ॰ सब श्रोता मराल देखे वा गुप्त रूपतें कथा स्वाद अधिक वा शंकर भुशुंडी आचार्य हैं प्रगट में संकोच वा सत असत का निर्णय मराल सों ८३ प्रं॰ गरुड़ जू भुशुंडी प्रति कहै महाप्रलय में भी तुमारो नाश नाहीं सो कैसे उ॰ लोमस वरदान तें प्रकाम रूप इच्छा मरण दत्यादिक बहूं काल न व्यापिहि तोही यह श्री राघव वरदान वा उपासना मत में भगवत भागवतादि सब नित्य ८४ प्रं॰ रामउदर में भुशुंडी के अनेक कल्प बीते बाहर दुदू घरी सो क्या उ॰ राम प्रेरित यामें सब बनत है ८५ प्रं॰ भुशुंडी के मोह से भरतादि अनेक रूप देखे राघव एके रूप है तो भ्रातादि नित्य कैसे बनेंगे उ॰ कौतुक के भरतादि में नित्य विचार नाहीं ८६ प्रं॰ लोमस के प्रकरण में बिना अज्ञान द्वैत होते नाहीं और शिव जू

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta,eGangotri Gyaan Kosha

भुशुंडी की प्रमाण द्वैत ही कहै सो क्या उ॰ भक्ति रहित ज्ञान को अनादर भ॰
क्ति सहित को आदर दूनो पक्ष में यथा संख्य प्र॰ निज प्रभुमय देखिय जगत
इत्यादि ८७ शं॰ ज्ञान सिद्ध भये पर ग्रंथि खोलव लिखे वाकी कौन ग्रंथि रही
उ॰ अभ्यास की दृढ़ निवृत्ति में तात्पर्य ८८ प्र॰ औरों एक गुप्त मत इत्यादि ॥
८९ शं॰ पाछे कौन गुप्त मत कहै जाते यहां औरों गुप्त मत कहत हैं और हाथजो
रे में का भाव अरु शंकर भक्ति साधन और राम भक्ति साध्य कै क वार ग्रंथ॰
कार लिख आये पुनः यहां काहे लिखे उ॰ अद्वैत मत में ज्ञान विना मोक्ष
नाहीं यह सिद्धांत वाको गौण करि भक्ति से मोक्ष और भक्ति के आधीन ज्ञा॰
न विज्ञान यह गुप्त मत पाछे कहे बैठे गुरु मुनि अरु द्विज सज्जन या प्रमाण
से सभा में मुख्य गुरु तेहि ते कर जोरे वा राम जू को शील हेतु वा धर्म के अं॰
गी कराने का तात्पर्य ग्रंथ कार वर्त्तमान समय में परस्पर शैव वैष्णवन का
महा विरोध विचार कै परम धाम यात्रा के अंत सभा में श्री राम वचन द्वारा
शंकर भक्ति मुख्य साधन और श्री राम भक्ति साध्य फल यह सिद्धांत किये वा
को कोई विरले जानत हैं तातें गुप्त कहें या रीति से कुछ संदेह नहीं है प्र॰ ब॰
हुत जन्म कै सुधि मोहिं आई इत्यादि ९० शं॰ जन्मांतर स्मृति रहती है पु
राणन में तौ इति हास लिखा है परंतु इति हासन में तात्पर्य है कि जो जल
जल में मिले वा थल का ओ ही फिर आवेगा यही ते जीवन में अनेक वाद हैं
॥ काल भी एक है परंतु केतना विस्तृत हीन है सो चारों युगन के व्यवस्था में
ख्यात क्या चारों युगन में धर्म ये बीच ले हैं कुंडलिया ॥ प्रथम काल एकै
रह्यो वहु विधि किमि ह्वै जाइ युग सूक्ष्म स्थूल सुन सुत एकै दर साय आ॰
य गत अंकन देखो एकै नव गति जाय दशा फिर सून्य परे खो डोलु यंत्र
इति वेद युग कालहि अंतर खोल पिता मह एक में कवहु जुग मन्वंतर १
श्री स्वामी जी कपट कही प्रभु चार युगन के सतयुग ब्रह्मा चहुं मुख चा॰
रों वेद रहै त्रेता द्वापर विष्णु जीव आनंद लहै १ रुद्र आय कलि ह्वै कै चौद॰
ह भुवन दहै जीव लहा विश्राम जहां अस भाव अहै २ मुख तें विनु सा॰
धन ने निर्मल ज्ञान चहैं सो कलि के दोष न को नित मन लाइ गहै गुण में
कलि को रूप लोक विपरीति कहै देव दया विन कैसे केउ गुण हिं गहै अ॰
व कलि युग आवा घट घट पातक छावा कलि को प्रथम चरण जिन जानों
द्वापर अघ को द्वै चरण बखानो प्रथमहि को तिसरो कर नानों चौथो

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दंडु बजावा झूठ परंवद अकर्म अदाया पाप चरण को चौखल खाया चरण धर्म को एक बचाया सोई बीज बनावा २ ज्ञान योग जिव लेइ पराने धरम करम के रूप हे राने कलि के उर साधन थह राने नामैं पार लगावा २ नाम प्रताप सदोत जागा जाके डर कलि कौतम भागा बाढत देव चरण अनुरागा जासो यश श्रुति गावा ४ बहुत जन्म इत्यादि लिख आये जीव कै जन्म नाहीं होत और चारि अवस्था मैं जन्म रूप भेद पावा जात है जैसे बाल वृद्ध इत्यादि कोई सिर्फ लड़का देखे होइ फिर दूसरी अवस्था में जो देखेगा सो नहीं पहचानेगा और जन्म संसार का नाम है और चारों युग का जो भेद कहते हैं सो प्रमाण तो समान जानव याही तें धरमन में विरुद्ध भासत है जैसे समान और विशेष सो सब मतन में सामान्य विशिष्ट पायो जात है और विशिष्ट में अनेक विरुद्ध देखो परे है जैसे मांस भक्षन में विंध्य के दक्षिण वासीन को आज्ञा उत्तर वासी पतक होत हैं हनन धातु तो जीव में चरितार्थ नहीं होत जैसे घट मठ आकाश का नाश पावत है याही ते जीव व्यापक जानो जात है और जन्म सूक्ष्म स्थूल शरीर करके भासतु है जैसे ८४ लक्ष योनि जन्म पर मित कियो सो संस्कार और काल को धर्म न को मुख्य जान वो साम आयो दो०॥ मान युक्त मानस सुखद शंका रहित उदार बाध रहत निज मोह वश शंका करत उदार १ मानस मान अनेक युत मानी मन गम नाहिं मम साहस शंकावली क्षमव साधु महि माहिं ॥ २॥

इति सप्त काण्ड शंकावली संक्षेपः

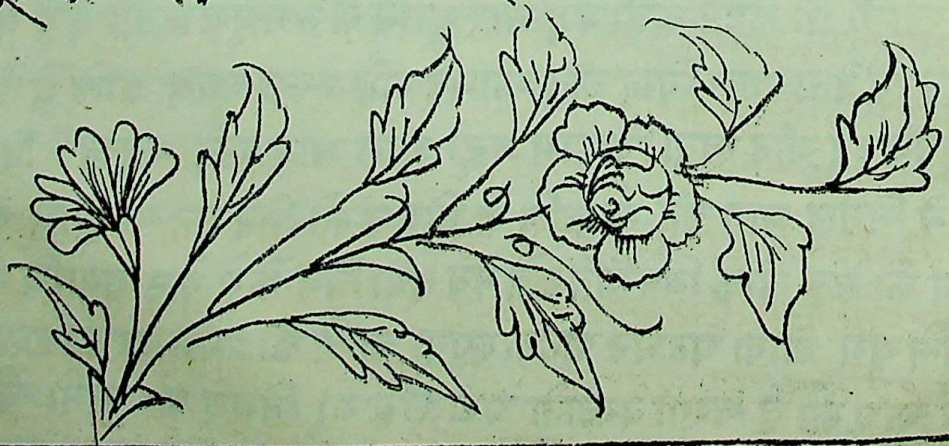

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

श्रीगणेशाय नमः

अथ विश्राम अंग प्रारम्भः ॥

विश्राम नाम धर्यौ ताको हेतु ॥ दोहा। विषै आप आकाश महं मन मटका जि-
मि चंग। यहि भू उतर विचार मग प्रेरक करथिर अंग १ अथ रामायण के परमा-
र्थ पक्ष को विचार। दो॰ रामायण द्रुम मोक्ष फल गायत्री गउ वीच राम सुरक्षा
अंकुरित वेद मूल शुभ बीज २ वेद विद्य परपुरुष मो दशरथ तन यह धार बाल
मीक ते भेद भो रामायण अवतार ३ कुंभज मुनि निज संहिता माहीं कह्यौ अ-
नूप रामायण अरु वेद को भिन्न न जानो रूप ४ भक्तमालवर ग्रंथ में कीन्हों य-
ह निरधार बालमीक तुलसी भये कुटिल जीव निस्तार ५ वेद मूल हृद तें चली कथा
भूमि के द्वार आतम ज्ञान तरंगिनी पान करत सुख सार ६ वार्त्ता यातें गूढ़ा शय वेद
रूप यह रामायण कथा भागते सगुण लीला प्रति पादन करतु हैं। अरु अंतर आश-
यतें परमार्थ पक्ष ऐश्वर्य्य छिपाइ कै कहत हैं यथा मानुष देह ब्रह्मांड जानो प्र-
वृत मार्ग सोइ लंक दुर्ग सो मन रूप मया सुर ने रच्यौ है नाना मनोरथ तालंका में
सुंदर मंदिर समूह जानो अविद्या समुद्र है सो राग द्वेष आदि मकर नक्र सर्पन तें
पूरण भयंकर विनीर्ण अथाह अति दुस्तर है अनेक संकल्प विकल्पता में भंव-
र है विषय आसा अंबकतरंग है मोह रावण है अहंकार वाको भाई कुंभकरण
है काम मेघनाद है क्रोध देवांतक गर्वनरांतक लोभ महोदर दुष्ट मत्सर अतिका-
य वीर है कपट अकंपन है द्वेष दुर्मुख वीर मद सूल पाणी दंभ महा पार्श्व अधं-
म दूषण असत्य कुंभ है पाखंड विकुंभ है असत्संग १ आलस्य २ विक्षेप ३ आदि
मोह राय के मंत्री जानो सत रज तम गुण सेनापति जानो अयश अनर्थ भ्रम संशया
दि धूम्राक्ष पूपाक्ष श्रोणिताक्ष इत्यादि मुख्य वीर यथा योग्य जानो विद्या मद
आदि अनेक मोह रावण के राक्षस सेना हैं ममता सूर्पनखा असत बासना
लोलुपता ईर्षा हिंसा तृष्णा अश्रद्धा आदि अनेक मोह भूपति की रानी
हैं भ्रष्टता धृष्टता चिंता कृपणता कामना अनेक विषय आसा आदि
अनंत राक्षसी जानो जीव विभीषण है सो दुष्टन के समूह में चिंता ग्रणी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वस्तु है दूहां विवेक राम जू विचार लक्ष्मण ब्रह्म विद्या सीता जू ज्ञान दया घ भक्ति कौशिल्या विषय बन भंजन हार अरु प्रवृत्ति लंका दहन मेघ वीर्य जो वैराग्य सो हनूमान जानो धर्म सुग्रीव १ सत्य अंगद २ सत संग जाम्बवान ३ शील नील ४ संतोष नल ५ धीरज केसरी ६ अभ्यास अंधाद न ७ जप तप संयम श्रवण निदिध्यासना आदि को मोक्ष के सब समाधान कुमुद १ द्विविद २ मयंद ३ सरभ ४ गवय गवाक्ष ६ गवय ७ ऋषभ ८ सुषेन ९ वेगदर्शी १० आप बानर भाल वीर यथा योग्य जानो यम १ नियम २ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ धारना ६ ध्यान ७ समाधि ८ आदिदेव वंदजानो मोह लंकेश तें सब सभीत अरु दुखी। दूति संक्षेपः॥ दो॰ चल्यो महाबल साज के रूप विवेक दूति वीर पहिर कवच श्रुति शास्त्र को अचल महारण धीर १ सैन साज दूति मोह नृप आयो रण भूधाय। अति विचित्र सब सुभट सुत मंत्री बंधु सहाय २ ढाढ़ो भयो विवेक नृप मनसा भूमि मझार हत सुभट जूझे जहां बही रुधिर की धार ३ वार्ता तब अ सत संग मंत्री के मंत्र तें मोह नृप अहंकार को जगाय कै रण भूमि में पठाये। सिंह नाद करत महा सेना लेइ चढ्यो ता समय भक्ति कोला हल भयो वैराग्य सत्य धर्म आदि सब वीरन को घायल करि विवेक राय सों महा युद्ध करत भयो तब विवेक राय आत्म चिंतन करतें अहंकार को शिर काट गिरायो तब सेना में महा हाहाकार भयो दो॰ समाचार सुनि मोह नृप ह्वै गयो निपट उदास। शोक अगिनि उर में जरत दीरघ लेत उसास १ वार्ता उनतें मोह को सुत महाबली अति धूर्त मदन वीर महा सेना लेइ चढ्यो दूत तें विवेक राय की आज्ञा तें विचार कुंवर वैराग्य सब शीला दि वीर सेना ले चढ्यो परस्पर महा युद्ध भयो मोहन सोषन उच्चाटन आदिक अनेक बानन तें विचार कुंवर को मार्यो ता पाछे अस त्रासना बरछी उर में मार कै विचार को मूर्छित कियो देखा तब वैराग्य विचार करि दीनो मतो अनूप अहो बंधु शोचत कहा सोधो युद्ध स्वरूप १ जग मिथ्या रजु सर्प वत सत्य ब्रह्म निरधार छुद्रानंदन चित धरो हरो अनंग विचार २ वार्ता तब विचार वीर सावधान होइ कै मदन को ललकार्यो दो॰ रे निलज्ज पापी कुटिल दुर बुद्धि धिक् तोहि कहा वस्तु ले बस करत लेत कृपण जन मोहि

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१ वार्ता या रीति तें परस्पर प्रचारत पुनः महायुद्ध भयो तब विचार वीर ने
मदन महा भट को मार गिरायो दो॰ समाचार सुन मोह नृप भयो सो निपट
अधीर हृदय दाह अति शय भयो विलपत कंप शरीर १ गई आस मोहिं
राज्य की मरो पुत्र वर वीर कुल मंडन अति काम सो दूजो वीर न धीर २ वार्ता
तब अधर्म अरु असत्संग आदि मंत्रिन्ह के मंत्र तें सजग ह्वै कै मोह नृप वि-
वेक राय सों महा युद्ध करत भयो दोहा उद्ध युद्ध भो परस्पर सो वरणयो न-
हिं जात कबहूं दबत विवेक नृप कबहूं मोह सकात १ राजा मोह विवेक
को युद्ध भयो बहु काल नृप विवेक बल अधिक लहि भो मन मोह विहा-
ल २ श्रवण मन निदिध्यास वर निज आयुध लै हाथ गुरु श्रुति वचन प्र-
माण सरहने मोह के माथ ३ मरो देखि नृप मोह को बहुतक कटक प-
राइ बहुत सुभट जूझे तहां पाछे धस्यो न पाय ४ वार्ता मोह नृपति को र-
ण भूमि में मरो देखि ममता तृष्णा चिंता ईर्षा आदि नारि अति शोक
युत विलाप करत भई इहां दोहा सत्य शीतल वैराग्य लौं मुदित सकल परि-
वार सुर नर मुनि जय जय कियो बाढ़ो मोह अपार १ वार्ता जीव स्वराज्य
पायो तब धर्म सत्य वैराग्यादि वीरन सहित अरु विचार बंधु सहित विवेक रा-
य ब्रह्म विद्या लेइ के निज राज धानी में अकंटक राज्य करत भयो विवेक चक्र-
वर्ती भूपति को जब तें प्रताप रवि उदय भयो तब तें काल कर्म गुण स्वभाव कृ-
त दोय दुख काहू को न भयो तीनों लोक में प्रकाश भयो तम कहूं न रह्यो
अविद्या निसा नाश भई अघ उलूक छिप गये क्रोधादि कैरव सकुचे मत्स-
र मनादि चोरन को अभाव भयो सुख संतोषादि कोक गये विगत शोक
भये प्रबोध चंद्रोदय नाटक आदि सद् ग्रंथन के सम्मत से यह परमार्थ
पक्ष अति दृढ़ परम प्रमाणिक जानो और नाटक अनेक दोष गुण के प्रधान
ता करके यथा विवेक मोहादि करके नाम अनेकता नाम में शंका न चाही॥ इ-
ति प्रमाण श्री तुलसी कृत विनय पत्रिका॥ यथा देव देहि अवलंब कर क-
मल कमला रमन दमन दुख समन संताप भारी ज्ञान राकेस ग्रासन
विधुंतुद दलन काम करि मत्त हरि दूष नारी १ देव वपुष ब्रह्माण्ड सु-
वृति लंकापति दुसा रचित मन दनुज मय रूप धारी विविध को सोध अति रु-

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चिर मंदर निकर सत्व गुण प्रमुख त्रय कटक कारी २ देव कुनृप अभिमान सागर भयंकर घोर विपुल अवगाद दुस्तर अपारं नक्र रागादि संकुल मनोरथ सकल संग संकल्प वीची विकारं ३ देव मोह दश मौलि तद भ्रात अहंकार पाकारि जित काम विश्राम हारी। ४ देव द्वेष दुर्मुख दंभ पर अकंपन पट दर्प मनुयाद मद शूल पानी समित वल परम दुर्जय निशाचर चमू सहित पद पर्गजो यातु धानी ५ देव जीव भव दंघ्रि सेवक विभीषण बसत मध्य दुष्टाटवी ग्रसित चिंता नियम जम सकल सुर जोग लोकेश लंकेश वस नाथ अत्यंत भीता ६ देव दीन उद्धरण रघुवर्य करुणा भवन समन संताप पापौघ हारी विमल विज्ञान विग्रह अनुग्रह रूप भूपवर विबुध नर्मद खरारी ७ देव विश्व विख्यात विश्वेश विश्वायतन विश्व मर्याद व्यालारि गामी ब्रह्म वर देव वागीश व्यापक विमल विपुल वलवान निर्वाण स्वामी २ देव सर्वमेवात्र त्वद्रूप भूपाल मणि व्यक्त मव्यक्त गत भेद विष्णो भुवन भव दंश कामारि वंदित पद द्वंद मंदाकिनी जनक जिष्णो ३ देव प्रकृति महतत्व शब्दाद गुण देवता व्योम मरुदग्नि अवलांबु उर्वी बुद्धि मन इंद्रिय प्राण चिंता तमा काल पर माणु चिच्छक्ति गुर्वी ४ देव आदि मध्यांत भगवंत त्वा सर्व गत मीश पश्यंति ते ब्रह्म वादी यथा पट तंतु घट मृत्तिका सर्व मृग दारु करि कनक कटकां गदादी ५ देव गूढ गंभीर गर्वघ्न गूढार्थ वित गुप्त गोतीत गुरु ज्ञान ज्ञाता ज्ञेय ज्ञान प्रिय प्रचुर गरिमा गार घोर संसार पर पार दाता ६ देव सत्य संकल्प अति कल्प कल्पांत कृत कल्पना तीत अहितल्प वासी बनज लोचन वनज नाम वन दाम वपु वन चर ध्वज कोटि लावण्य रासी ७ देव मुकुर दुष्कर दुराराध्य दुर्व्यसन हर दुर्ग दुर्द्धर्ष दुर्गार्ति हरता वेद गर्भर्भ का दभ्र गुण सर्वाक पर गर्व निरवाय कर्ता ८ देव भक्त अनुकूल भव शूल निर्मूल करि तूल अघ नाम पावक समानं तरल तृष्णा तमी तरणि धरणि धरन सरनि भय हरण करुणा निधानं ९ देव बहुल वृंदार का वृंद वृंदारु पद वंदि मंदार मालोर धारी पाहि माहीस संताप संकुल महा दास तुलसी प्रणत राव णारी ॥ १०॥ देव संसार कांतार पति घोर गंभीर घन महान तरु कर्म संकुल मुरारी वासना

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वल्लि खर कंटका कुल विपुल निविड़ विट पाटवी कठिन भारी १२ देव वि-
विध चित्त वृत्ति खग निकर सेनो लूक काक कट गृध्र आमिष अहारी
अखिल खल निपुन छल छिद्र निरखत सदा जीव जन पथिक मन खेद
कारी २ देव क्रोध करि मत्त मृगराज कंदर्प मद दर्प वृक भाल अति उग्र कर्मा
महिष मत्सर क्रोध सूकर सूर फेरु छल दंभ मार्जार धर्मा ३ देव कपन मर्क-
ट विकट व्याघ्र पाखंड दुखद मृग व्रात उत्पात कर्ता। हृदय अवलोकि
यह शोक शरणागतं पाहि मां पाहि भो विश्व कर्ता ४ प्रवल अहंकार दुर्घ
ट महीधर महा मोह गिरि गुहा निविड़ांधकारं चित्त वैताल मनुजाद म-
न प्रेत गण रोग भो गौघ वृश्चिक विकारं ५ देव विषय सुख लालसा दं-
स मसकादि खल भिल्लि रूपादि सब सर्प स्वामी तव आछिन्न तव विषम
माया नाथ अंध भय मंद व्यालाद गामी ६ देव घोर अवगाह भव आप-
गा पाप जल पूर दुःप्रेक्ष दुस्तर अपारा एकप दुर्वर्ग गो नक्र चक्रा कुलं
कुल शुभ्र शुभ तीव्र धारा ७ देव सकल संघट्ट पोच शोच वस सर्वदा
दास तुलसी विषम गहन ग्रस्तं चापि रघुवंश भूषण कृपा करि कठिन
काल विकराल कलि काल त्रस्तं ८ प्रमाण श्री स्वामी जू राम चरित कहु
काहि लगाय मुनि मति हूं भर भाय त्रिभुवन भावै प्रगट होइ कै राघव ज-
न्म कहाय भावन हूं को राम प्रकाशत ए तो पद ठहराय १ कोप मुनिन
की सिखा रूप धरि प्रगट जनक पुर आय राम प्रिया वन काज साधि पुन
वन में गयो समाय २ राम सिया को जनम करम नहिं नित हीं उदित सु-
भाय ते कैसे जनि हैं ते मदिरा अंचै रहैं बौराय ३ देव भाव वानर भा-
लू तन धारि कै भये सहाय त्रिभुवन भावै त्रिभुवन धनी बन रहा अव-
ध में छाय कुंभ कर्ण अहंकार राम गर्व प्रहारी जाको छुवत गिरत ब्र-
ह्मादिक ज्ञानी होत असार पर ब्रह्म हूं निर्गुण भासा लगत अकार हका-
र १ शीश उचार्द्ध भुज वल औहठ पद गत हिछ चार सब को दुख दाय-
क अति निर्भय अंग अंग अपकार २ राम प्रथम ताके भुज काटे तव शिर
काट पचारि पद काटे तब हूं धर दौरत डारी सिंधु मझारि ३ तजै उचार्द्ध मान
गरै तम धरिये दीन विहार देव मुदित श्री राम चंद्र पर वर्षत सुमन

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपार ४ इंद्रजीत जो काम है सब हीं सतावत छलकै मारत परगट मारत वीरन में सर नाम जाको नाम सुनत ही कांपें ब्रह्मादिक सर धाम मुनि व्रत हिं नसावत १ ज्ञानी योगी वैरागिन को मोल लेत विनु दाम ज्ञानध्यान सब विस्तर जात है चमकत आछो चाम तब नाच नचावत लषणयती जाहिर हनुमंतो ब्रह्म चरण विश्राम काम शत्रु इन हीं को पठवा काम हनन को राम तब मामन भावत ३ इंद्रजीत छल बल करि हारा लक्षमण एक बाण तें मारा बाज रहा है देव नगारा मिटा जगत को धाम लागे गुण गावत ४ इत्यादि दोहा वेद रटत पुनि शास्त्र सब आगम सकल पुराण एक वाक्यता सबन के वेद्य एक भगवान १ अक्ष दशा महं विषमता विज्ञ समै न विरोध तहं दुविधा कहं पाइयतु जहं निज पूरण बोध २ जैसे लहरि समुद्र में पृथक भाव दरसाय पलट मिलत जब सिंधु में एक भाव ह्वै जाय ३ जैसे पुरवासी सकल कहूं बैर कहुं प्रीति कठिन परै जब नगर को तब सब एकै रीति ४ एक पिता के पुत्र बहु करत परस्पर रारि सुनि निंदा निज तात के एकहिं होहिं विचारि ५ एक नगर के बहुत पथ सकल कुटिल बल जात अंत प्राप्य एकै नगर नहिं विरोध कुछ तात ६ जैसे नाना देश तें चली नदी बहु भांति भई अभेद मिल सिंधु में जैसे मति की पांति ७ आदि मध्य अरु अंत लौं ज्यौं तरु बीज सरूप ॥ लघु दीरघ त्यौं ग्रंथ सब व्यापक वेद्य अनूप ॥ ८ ॥ निगमागम बहु मत कहत यद्यपि कांड त्रय भेद एक वाक्य ताके भये एकै प्राप्य अखेद ९ प्रकृति दोष तें मोह तम छायो मति संसार ॥ जल्पित कल्पित भेद बहु मत मदिरा मत वार १० गुरु श्रुति वचन विचारि रवि उदै दोष निर्मूल एक वाक्यता ज्ञान लहि मिटत मोह भय शूल ११ वार्ता पहले रामायण की शंका में एक सत्य त्व दूसरो प्रसंग भेद में लिखा सो सत्य त्व में नाटक रीति करके और प्रसंग काल युगादि की एक वाक्यता करके कल्प भेद और देवन में अभेद तें संशय नहीं जानो गयो ॥ सोरठा ॥ रामायण सिद्धांत ज्ञान भक्ति संपुट कियो नाम रतन विख्यात प्रेम भक्तिमणि लेसतें। वार्ता प्रथम प्रकाश में ज्ञान भक्ति संपुट में नाम रत्न को

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्थापन कियो दोहा ॥ स्थान सर्ग विसर्ग पुनि वोषण आदि विचार ॥
इण लक्षण सुपुराण के प्रथमहिं कहे उदार २ वेद अर्थ के बोध कहें
अंग शास्त्र षट मान शास्त्र अंग में सबन को भाष्यो अर्थ सुजान ३
पूरव मीमांसा विषे धर्म तत्व प्रति पाद्य स्वर्गादिक फल धर्म को ज्ञान
प्रयोजन साध्य ४ वैशेषिक शास्त्र हि कियो सुमुनि कणाद अनूप ॥
सप्त पदारथ ज्ञान फल भावा भाव सरूप ॥ न्याय शास्त्र गोतम ऋषि
भाष्यो तर्क प्रधान प्रमाणादि षोडश अरथ बोध प्रयोजन जान ६
योग शास्त्र पातंजली मुनि कीन्हो सुख कंद जावत वृत्ति निरोधतें दू-
टत भव को फंद ७ सांख्य शास्त्र को विषय सुख प्रकृति सुपुरुष वि-
वेक हानि त्रिविध दुख मुक्ति सुख कपिल सुमुनि मति टेक ८ वेदव्या-
स वेदांत को आचार जवर लेखु जीव ब्रह्म कै एकता विषय मोक्ष फ-
ल देखु ९ बहु शास्त्रा सारवी सुखद वेद अपौरुष वाक चार वेदत्र-
यकांड फल मोक्ष अवांतर नाक १० तंत्र भाव में शिव कियो यंत्र मंत्र
प्रति पाद्य शंभु शक्ति के ज्ञान तें मोक्ष आदि फल साध्य ११ वार्ता हि-
तीय प्रकाश में पुराण शास्त्र वेद तंत्र को सिद्धांत ते अर्थ लिख्यो दोहा
भरत आदि आदित्य के आचारज मतिचारु कथित तासु इण कर्म फ-
ल रामायण सिंगारु १२ वार्ता तृतीय प्रकाश में यावत्काल व्यंग नि-
रूपन कियो चतुर्थ प्रकाश में प्रसंग अंग करके यावत् रामायण ता-
त्पर्य और छंद दोहा चौपाई को नेम कियो दोहा लंका शंका दहन को
हनुमत बुद्धि उदार मुख्य प्रश्न उत्तर लिखो समुझे सुमति उदार १३
वार्ता पंचम प्रकाश में मुख्य मुख्य शंका समूह को सावधान कियो।
दोहा ॥ अमर सिंह आदिक जिते कोश कार स उदार विषम शब्द के
अर्थ को पर काशक उपकार १४ वार्ता छठे प्रकाश में कोश अंग
करके विषम पदन को मुख्य अर्थ उद्धार कियो सप्तम प्रकाश में वि-
राम अंग करके नाटक रीति भाव प्रधान सें रामायण जू कथा भाग
से सगुण प्रति पादक औ अंतर आपसतें परमार्थ पक्ष सत्यत्व प्र-
ति पादक यह निरूपण कियो औ प्रसंग के भेद में देवतन को अ-

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भेद जनाय के अनंत शक्ति प्रभु में सब अविरुद्ध जानो चाहिये और कलि युग व्यवस्था इत्यादि सम दर सायो और प्रथम लिख आये तो मुख्य अर्थ है सो यही अक्षरन सों ज्ञात हैं और जो शंका करत हैं यह जो सप्तम अंग लिख आये यातें प्रगट बोध होइगो एतेहुं में जो शंका करैं तहां प्रमाण चौ॰ एतेहु पर करि हहिं जे शंका मोहिं ते अधिक ते जड़ मति रंका ॥ इति दोहा। करि प्रसंग के अंग तें हरियश हेतु जनाय यथा भानु समता लिखे खद्योतो गनि जाय १ रामायण सर सिज सरित चहियत भानु प्रकाश यह प्रसंग खद्योत इव किमि कर सकत विकाश २ रामायण के अर्थ को को समर्थ मति वंत यथा सिंधु खग चोंच भरि तृप्ति लहत नहिं अंत ३ को तुलसी भाषा कवन कौन वेद को सार कौन कोश तिहिं तिलक को चाही कहत गंवार ४ मत्सर मद माया मदन मारे मान मरोर। रामायण जाने कहा पर धन पर तिय चोर ५ कवि कोविद रघुवर भगत मानस मान सुजान की सन सिंधु गंभीरता मंदिर गिर पहिचान। मानस पारावार को पारवार को जान मंदिर गिरि बूड़त जहां मम मति की परमान ७ अष्टादश षट संहिता यामल तंत्र विचार धर्म नीति श्रुति सागर हि तुलसी कृत विस्तार ॥ वरवै ॥ श्री काशी पति पितु की आज्ञा पाइ द्यो गज राज कथनिन ममेल मिलाइ ९ चौ॰ सरल अरथ आखर की थोरी सहत प्रभाव शांत रस वोरी दूर देश दर सावन हारी ॥ ऐनक सम विधु विमल तमारी ॥१०॥

इति श्री रघुनाथ दास कृत मानस दीपिका टीकायां विश्राम अंग सप्तमः ७ प्रकाशः ॥

मानस दीपिका समाप्तः

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रामायणबालकांड

यह मूर्ति तुलसी दास की श्रोता सहित

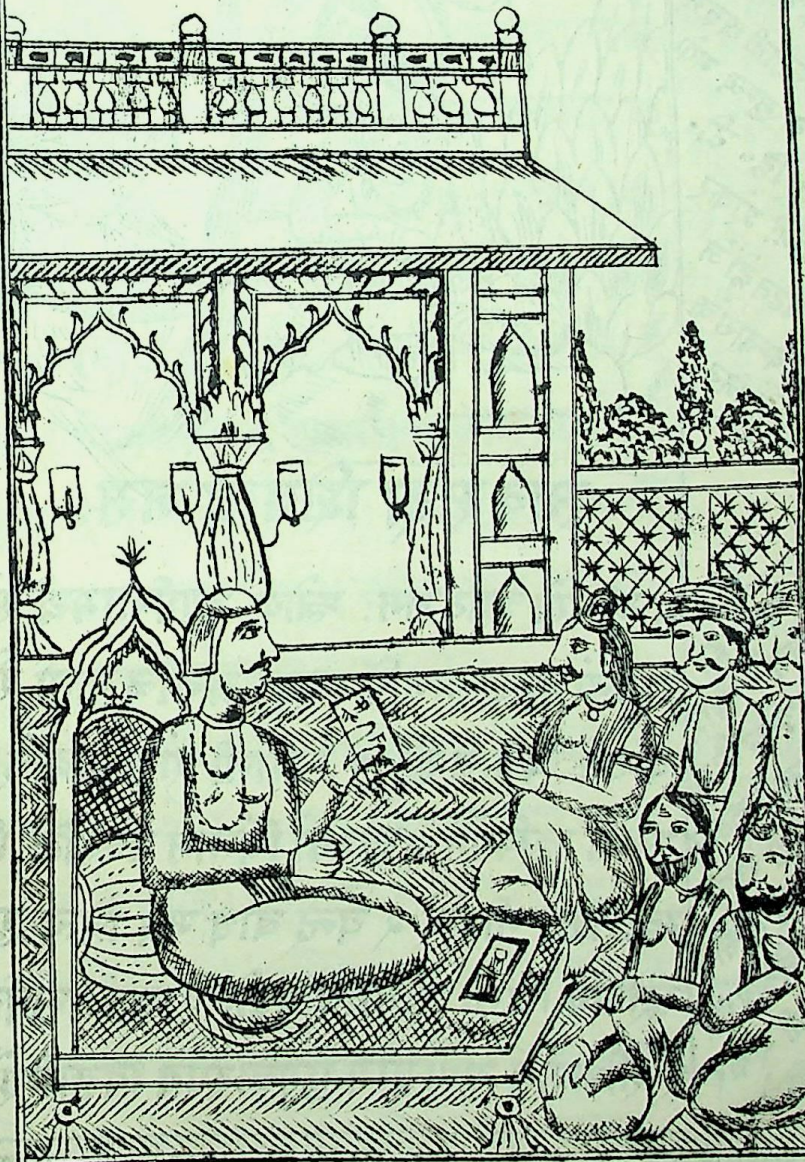

मतबअ मुन्शी नवलकिशोर मुक़ामलखनऊ में छापी गई

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऐसी छत्तीसी सरस्वती के छत्तीस वर्ण बने हैं यही हेतु छत्तीस वर्ग ब्रह्मचारी को योगाभ्यास मनुस्मृति में लिखा है राग रागिनी हू यातें छत्तीस भई अर्थ समूह कथन का भावार्थ शक्ति लक्षणा व्यंजना वृति करकै बहुत होत है इन सब को अरु सब को शृंगारादि रस को लक्षण अरु भेद आगे वर्णन काव्यांग में कियो तातें विस्तार नहीं कियो वर्णादि

सांव सदा शिवाय नमः

॥ श्रीगणेशाय नमः श्लोक वर्णानामर्थ संघानां रसानां छन्दसामपि । मङ्गलानांच कर्त्तारौ वन्दे वाणी विनायकौ १ भवानी शंकरौ वन्दे श्रद्धा विश्वास रूपिणौ । याभ्यां विनान पश्यंति सिद्धाः स्वांतस्थ मीश्वरं २ वन्दे बोध मयं नित्यं गुरुं शंकर रूपिणं । यमाश्रितोहि वक्रोपि चंद्रः सर्वत्र वंधिते ३ सीताराम गुणग्राम पुण्यारण्य विहारिणौ ॥

वहूं नहीं होते है तैसे हों जहां श्रद्धा तहां विश्वास अरु जहां विश्वास तहां श्रद्धा यह परस्पर नित्य संबंध कविने कहो टी॰३ ज्ञान निधि अविनाशी शंकर रूप गुरू को वंदत हों जिन के आश्रय तें कुटिल हू चंद्र वंदन योग्य भयो है कुटिल चंद के दृष्टांत तें निज वक्र कविताको पूज्यत्व वंदना वृत्ति कविने सूचन कियो ॥ ॥ ॥ ॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कहा क्वचिदन्यतोपि वशिष्ठ भुशुंडि शेष शारदा वचन साधु सम्मत कवि सम्प्रदाय सम्मत सा
नुभवहूं लेइ कै भाषा सें निबंध तुलसी करतु है अति मंजुल देशदेशकी नीकी नीकी भाषा चुनि
कै बहुत सुंदर स्वांतः सुखाय सो निज पांडित्य स्वांति आदि प्रयोजन हेतु माहीं किंतु

वन्दे विशुद्ध विज्ञानौ कवीश्वर कपीश्वरौ ४ उद्भव
स्थिति संहार कारिणीं क्लेश हारिणीं । सर्व श्रे
यस्करीं सीतां नतोहं राम बल्लभां ५ यन्माया वश
वर्त्ति विश्व मखिलं ब्रह्मादि देवा सुरायत्सत्वाद मृ
षैव भाति सकलं रज्जौ यथा हेर्भ्रमः । यत्पादः
प्लव मेव भाति हि भवाम्भोधेस्ति तीर्षा वतां वंदे
ऽहं तम शेष कारण परं रामाख्य मीशं हरिं ६
नाना पुराण निगमा गम सम्मतं यद्रामायणें नि
गदितं क्वचि दन्य तोपि स्वान्तः सुखाय तुलसी
रघुनाथ गाथा भाषा निबंध मति मंजुलमात नो
ति ॥७॥ अग्रे सोरठा भाषायाम्

दो- जेहि सुमिरत सिधि होय गण नायककरि वर बदन
करो अनुग्रह सोइ । बुद्धि राशि शुभ गुण सदन
मूक होइ वाचाल । पंगु चढैं गिरिवर गहन
जासु कृपा सुदयाल । द्रवौ सकल कलि मल दहन
नील सरोरुह श्याम । तरुण अरुण वारिज नयन
करो सो मम उर धाम । सदा क्षीर सागर सयन

जैसे ध्रुव पांच बरष के बालक पंचजन्य शंख के कपोल में लगतहीं वक्ता भये अरु पंगु श्चर
ण वा यमलार्जुन वृक्ष पुनः नलकूवर देह धरि गहन पर्वत चढो २ अरु कमलापति
मों भेदत्व क्षीरसागर को भाव क्षीरसागर शुद्ध धर्म को स्वरूप है तैं सोई हमारो उर बनाइ कै बसो

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नद रूप बंदना कियो अरु शुद्ध भये नख रूप अरुणावत स्तुना दृष्टि होगी भव पद्म मो चार गुन
हैं रुचि बास रस रंग ए सब गुन पराग में हैं भव रुज भव रोग के परिवार काम आदिक उन
रकाण्ड में कहे हैं उघरहिं नख अरुणाई सूर्य की उपमा मन में राखि के यह क
हत हैं रात को दोष तम है सो दुख स्वपन आदि यथा सु अंजन जैसे सिचां जनल

कुंद इंदु सम देह । उमा रमण करुणा अयन ॥
जाहि दीन पर नेह । करो कृपा मर्दन मयन ॥
बंदों गुरु पद कंज । कृपा सिंधु नर रूप हरि ॥
महा मोह तम पुंज । जासु बचन रवि कर निकर ॥

चौ. बंदौ गुरु पद पद्म पराग । सुरुचि सुवास सरस अनुराग ॥
अमिय मूरि मय चूरण चारू । शमन सकल भवरुज परिवारू ॥
सुकृत शंभु तन विमल विभूती । मंजुल मंगल मोद प्रसूती ॥
जन मन मंजु मुकुर मल हरणी । किये तिलक गुण गण वश करणी
श्री गुरु पद नख मणि गण ज्योती । सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती ॥
दलन मोह तम सो सु प्रकासू । बड़े भाग्य उर आवहिं जासू ॥
उघरहिं बिमल बिलोचन हिय के । मिटहिं दोष दुख भव रजनी के
सूझहिं राम चरित मणि माणिक । गुप्त प्रगट जहं जो जेहि खानिक

दो. यथा सु अंजन आज दृग साधक सिद्ध सुजान ॥
कौतुक देखहिं शैल वन भूतल भूरि निधान ॥

गुरु पद रज मृदु मंजुल अंजन । नयन अमिय दृग दोष विभंजन
तेहि कर विमल बिवेक बिलोचन । बरणौं राम चरित भव मोचन ॥
बंदौ प्रथम मही सुर चरणा । मोह जनित संशय सब हरणा ॥

या में से जलथल के वा दूर के देश के आड़ नाहीं रहत गड़े गड़ाये धन बिना खोदे
देख परत है जैसे ही आखन में रज लगाये से माया की आड़ रहत कतना
ही ॥ २ ॥ चौ० २ दो० गुरु पद रज मृदु अरु बंदौ संत समाज लौं ॥

सुजन समाज सकल गुण खानी। करौं प्रणाम सप्रेम सुबानी
साधु चरित सुभ सरिस कपासू। निरस बिसद गुणमय फलजासू
जो सहि दुख परछिद्र दुरावा। बंदनीय जेहि जग यश पावा
मुद मंगल मय संत समाजू। जो जग जंगम तीरथ राजू॥
राम भक्ति जहं सुरसरि धारा। सरस्वति ब्रह्म बिचार प्रचारा
बिधि निषेध मय कलिमल हरणी। कर्म्म कथा रवि नंदनि बरणी
हरि हर कथा बिराजत बेनी। सुनत सकल मुद मंगल देनी
बट बिस्वास अचल निज धर्मा। तीरथ राज समाज सु कर्मा॥
सबहि सुलभ सब दिन सबदेशा। सेवत सादर समन कलेशा
अकथ अलौकिक तीरथ राऊ। देय सद्य फल प्रगट प्रभाऊ

दो॰ सुनि समुझहिं जन मुदित मन मज्जहिं अति अनुराग
लहहिं चारि फल अछत तनु साधु समाज प्रयाग

मज्जन फल देखिय तत काला। काक होहिं पिक बकौ मराला
सुनि आश्चर्य करहिं जनि कोई। सत संगति महिमा नहिं गोई
बालमीक नारद घट योनी। निज निज मुखनि कही निज होनी
जलचर थलचर नभचर नाना। जे जड़ चेतन जीव जहाना॥
मति कीरति गति भूति भलाई। जब जेहि यतन जहां जेहि पाई
सो जानव सतसंग प्रभाऊ। लोकहुं वेदहु आन उपाऊ॥
बिन सत संग बिवेक न होई। राम कृपा बिनु सुलभ न सोई
सत संगत मुद मंगल मूला। सोइ फल सिद्धि सब साधन फूला
शठ सुधरहिं सत संगति पाई। पारस परसि कुधातु सुहाई

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बिधि बस सुजन कुसंगति परहीं। फणि मणि सम निज गुण अनुसरहीं
बिधि हरि हर कवि कोविद बानी। कहत साधु महिमा सकुचानी
सो मोहि सन कहि जात न कैसे। साक बणिक मणि गुण गण जैसे

दो॰ बंदौं संत समान चित हित अनहित नहिं कोउ।
अंजलि गत सुभ सुमन जिमि सम सुगंध कर दोउ
संत सरल चित जगत हित जानि सुभाव सनेहु
बाल बिनय सुनि करि कृपा राम चरण रति देहु

बहुरि बंदि खल गण सति भाये। जे बिन काज दाहिनहु बांये
पर हित हानि लाभ जिन्ह केरे। उजरे हर्ष बिषाद बसेरे ॥ ॥
कहत सुनत पर अघ न अघाहीं। ज्यों पृथु शेष सरस जग माहीं
हरि हर यश राकेश राहु से। पर अकाज भट सहस बाहु से
जे पर दोष लखहिं सह सारी। पर हित घृत जिन्ह के मन मारी
तेज कृशानु रोष महिषेशा। अघ अवगुण धन धनिक धनेशा
उदय केतु सम हित सबहीके। कुंभ करण सम सोवत नीके
पर अकाज लगि तनु परिहरहीं। जिमि हिम उपल कृषी दलि गरहीं
बंदौं खल जस शेष सरोषा ॥। सहस बदन बरनै पर दोषा
पुनि प्रणवौं पृथुराज समाना। पर अघ सुनै सहस दश काना
बहुरि शक्र सम बिनवौं तेही। संतत सुरानीक हित जेही
बंदौं जग नर शक्र समाना। करिहि उपाय कार्य जेहि हाना
बचन बज्र जेहि सदा पियारा। सहस नयन पर दोष निहारा

दो॰ उदासीन अरि मीत हित सुनत जरहिं खल रीति

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जानु पाणि जुग जोरि जन बिनती करौं स प्रीति
मैं आपन दिसि कीन्ह निहोरा। तिन निज ओर न लाउब भोरा
बायस पालिय अति अनुरागा। होहिं निरामिष कबहुं कि कागा
बंदौं संत असज्जन चरणा ॥ दुख प्रद उभय बीच कछु बरणा
बिछुरत एक प्राण हरि लेहीं। मिलत एक दारुण दुख देहीं
उपजहिं एक संग जग माहीं। जलज जोक जिमि गुन बिलगाहीं
सुधा सुरासम साधु असाधू। जनक एक जग जलधि अगाधू
भल अनभल निज निज करतूती। लहत सुयश अपलोक बिभूती
सुधा सुधाकर सुरसरि साधू। गरल अनल कलिमल सरि व्याधू
गुण अवगुण जानत सब कोई। जो जेहि भाव नीक तेहि सोई

दो॰ भले भलाई पै लहहिं लहहिं निचाई नीच
सुधा सराहिय अमरता गरल सराहिय मीच

खल गह अगुण साधु गुण गाहा। उभय अपार उदधि अवगाहा
तेहि ते कछु गुण दोष बखाने। संग्रह त्याग न बिनु पहिचाने
भलेउ पोच सब बिधि उपजाये। गनि गुण दोष बेद बिलगाये
कहहिं बेद इतिहास पुराना। बिधि प्रपंच गुण अवगुण साना
दुख सुख पाप पुण्य दिन राती। साधु असाधु सुजाति कुजाती
दानव देव ऊंच अरु नीचू। अमिय सजीवन माहुर मीचू
माया ब्रह्म जीव जगदीशा। लच्छि अलच्छि रंक अवनीशा
काशी मग सुरसरि क्रमनाशा। मरु मालव महिदेव गवाशा
स्वर्ग नर्क अनुराग बिरागा। निगमागम गुण दोष बिभागा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो· जड़ चेतन गुण दोष मय बिस्व कीन्ह करतार
संत हंस गुण गहहिं पै परिहरि बारि बिकार
अस बिबेक जब देहिं बिधाता। तब तजि दोष गुणहिं मन राता
काल सुभाव करम बरिआई। भलेउ प्रकृति बस चुकइ भलाई
सो सुधारि हरिजन जिमि लेहीं। दलि दुख दोष बिमल जसु देहीं
खलउ करहिं भल पाइ सुसंगू। मिटइ न मलिन सुभाव अभंगू
लखि सुबेष जग बंचक जेऊ। बेष प्रताप पूजिअत तेऊ ॥॥
उघरहिं अंत न होइ निबाहू। कालनेमि जिमि रावण राहू ॥
किएँ कुबेष साधु सनमानू। जिमि जग जामवंत हनुमानू
हानि कुसंग सुसंगति लाहू। लोकहु बेद बिदित सब काहू
गगन चढ़ै रज पवन प्रसंगा। कीचहि मिलै नीच जल संगा
साधु असाधु सदन सुकसारी। सुमिरहिं राम देहिं गन गारी
धूम कुसंगति कारिख होई। लिखिअ पुराण मंजु मसि सोई
सोइ जल अनल अनिल संघाता। होइ जलद जग जीवन दाता
दो· ग्रह भेषज जल पवन पट पाइ कुजोग सुजोग
होहिं कुबस्तु सुबस्तु जग लखहिं सुलच्छन लोग
सम प्रकाश तम पारख दुहु नाम भेद बिधि कीन्ह
ससि सोषक पोषक समुझि जग जस अपजस दीन्ह
जड़ चेतन जग जीव जत सकल राम मय जानि
बंदउँ सब के पद कमल सदा जोरि जुग पानि ॥
देव दनुज नर नारि खग प्रेत पितर गंधर्व ॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बंदौ किन्नर रजनिचर। कृपा करहु अब सर्ब ॥
आकर चारि लाख चौरासी। जाति जीव जल थल वासी
सियाराममय सब जगजानी। करौं प्रणाम जोरि जुग पानी ॥
जानि कृपा करि किंकर मोहू। सब मिलि करहु छाँड़ि छल छोहू
निज बुधि बल भरोस मोहि नाहीं। तातें बिनय करउं सब पाहीं ॥
करन चहौं रघुपति गुण गाहा। लघु मति मोरि चरित अवगाहा
सूझ न एकौ अंग उपाऊ ॥ मन मति रंक मनोरथ राऊ ॥
मति अति नीच ऊँच रुचि आछी। चहिअ अमिय जग जुरै न छाछी
छमिहहिं सज्जन मोरि ढिठाई। सुनिहहिं बाल बचन मन लाई
जौं बालक कह तोतरि बाता। सुनहिं मुदित मन पितु अरु माता
हँसिहहिं कूर कुटिल कुबिचारी। जे पर दूषण भूषण धारी ॥ ॥
निज कवित्त केहि लाग न नीका। सरस होउ अथवा अति फीका
जे पर भणिति सुनत हरषाहीं। ते बर पुरुष बहुत जग नाहीं
जग बहु नर सर सरि सम भाई। जे निज बाढ़ि बढ़हिं जल पाई ॥
सज्जन सुकृत सिंधु सम कोई। देखि पूर बिधु बाढ़हिं जोई ॥

दो. भाग छोट अभिलाषु बड़ करउं एक बिस्वास
पैहहिं सुख सुनि सुजन सब खल करिहहिं उपहास

खल परिहास होइ हित मोरा। काक कहहिं कल कंठ कठोरा ॥
हँसिहहिं बक दादुर चातकही। हँसिहहिं मलिन खल बिमल बतकही
कवित रसिक न राम पद नेहू। तिन्ह कहँ सुखद हास रस एहू ॥
भाषा भणिति मोरि मति भोरी। हँसिबे जोग हँसें नहिं खोरी ॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रभु पद प्रीति न समुझत नीकी। तिन्हहि कथा सुनि लागहि फीकी
हरि हर पद रति मति न कुतरकी। तिन्ह कहँ मधुरि कथा रघुबर की
राम भगति भूषित जिय जानी। सुनिहहिं सुजन सराहि सुबानी
कबि न होउँ नहिं चतुर प्रबीना। सकल कला सब बिद्या हीना
आखर अरथ अलंकृति नाना। छंद प्रबंध अनेक बिधाना
भाव भेद रस भेद अपारा ॥। कबित दोष गुन बिबिधप्रकारा
कबित बिबेक एक नहिं मोरे। सत्य कहौं लिखि कागद कोरे
दो॰ भनिति मोर सब गुन रहित बिस्व बिदित गुन एक
सो बिचारि सुनिहहिं सुमति जिन्हके बिमल बिबेक
एहि महँ रघुपति नाम उदारा। अति पावन पुरान श्रुति सारा
मंगल भवन अमंगल हारी। उमा सहित जेहि जपत पुरारी
भनिति बिचित्र सुकबि कृत जोऊ। राम नाम बिनु सोह न सोऊ
बिधु बदनी सब भाँति सँवारी। सोह न बसन बिना बर नारी
सब गुन रहित कुकबि कृत बानी। राम नाम जस अंकित जानी
सादर कहहिं सुनहिं बुध ताहीं। मधुकर सरिस संत गुनग्राही
जदपि कबित गुन एकउ नाहीं। राम प्रताप प्रगट एहि माहीं
सोइ भरोस मोरें मन आवा। केहिं न सुसंग बड़ापन पावा
धूम सजे सहज करुआई। अगर प्रसंग सुगंध बसाई॥
भनिति भदेस बस्तु भलि बरनी। राम कथा जग मंगल करनी
छं॰ मंगल करनि कलि मल हरनि तुलसी कथा रघुनाथ की
गति कूर कबिता सरित की ज्यों सरित पावन पाथ की

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रभु सुयश संगति भनिति भलि होइहि सुजन मन भावनी
भव अंग भूति मसान की सुमिरत सुहावन पावनी ॥ ॥
दो॰ प्रिय लागहि अति सबहि मम भनिति राम यश संग
दारु बिचार कि करइ कोउ बंदिय मलय प्रसंग ॥
श्याम सुरभि पय बिशद अति गुणद करहिं सब पान
गिरा ग्राम सिय राम यश गावहिं सुनहिं सुजान
मणि माणिक मुकुता छबि जैसी । अहि गिरि गज शिर सोह न तैसी
नृप किरीट तरुणी तनु पाई । लहहिं सकल शोभा अधिकाई
तैसहिं सुकवि कवित बुध कहहीं । उपजहिं अनत अनत छबि लहहीं
भक्ति हेतु बिधि भवन बिहाई । सुमिरत शारद आवति धाई ॥
राम चरित सर बिनु अन्हवाये । सो श्रम जाइ न कोटि उपाये ।
कवि कोविद अस हृदय बिचारी । गावहिं हरि गुण कलिमल हारी
कीन्हे प्राकृत जन गुण गाना । शिर धुनि गिरा लागि पछिताना
हृदय सिंधु मति सीप समाना । स्वाती शारद कहहिं सुजाना ॥
जो बरषे बर बारि बिचारू । होहिं कवित मुकुता मणि चारू
दो॰ युक्ति बेधि पुनि पोहिये राम चरित बर ताग ॥
पहिरहिं सज्जन बिमल उर शोभा अति अनुराग
जे जनमें कलिकाल कराला । करतब बायस बेष मराला ॥ ॥
चलत कुपंथ वेद मग छाँडे ॥ ॥ कपट कलेवर कलि मल भाँडे ॥
बंचक भक्त कहाइ राम के ॥ ॥ किंकर कंचन कोह काम के ॥ ॥
तिनहं प्रथम रेख जग मोरी । धिकधरम ध्वज धंधक धोरी ॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जो अपने अवगुन सब कहऊं । बाढ़ै कथा पार नहिं लहऊं ॥
तातें मैं अति अल्प बखाने । थोरे महं जानिहहिं सयाने ॥
समुझि बिबिध बिधि बिनती मोरी । कोउ न कथा सुनि देइहि खोरी
एतेहु पर करिहहिं जे संका । मोहि ते अधिक ते जड़ मति रंका
कवि न होउं नहिं चतुर कहाऊं । मति अनुरूप राम गुन गाऊं
कहं रघुपति के चरित अपारा । कहं मति मोरि निरत संसारा ॥
जेहि मारुत गिरि मेरु उड़ाहीं । कहहु तूल केहि लेखे माहीं ॥
समुझत अमित राम प्रभुताई । करत कथा मन अति कदराई

दो॰ सारद सेष महेस बिधि आगम निगम पुराण
नेति नेति कहि जासु गुन करहिं निरंतर गान

सब जानत प्रभु प्रभुता सोई । तदपि कहे बिनु रहा न कोई ॥
तहाँ बेद अस कारण राखा ॥ भजन प्रभाव भांति बहु भाषा
एक अनीह अरूप अनामा ॥ अज सच्चिदानंद पर धामा ॥
ब्यापक बिस्व रूप भगवाना ॥ तेहि धरि देह चरित कृत नाना ॥
सो केवल भगतन हित लागी ॥ परम कृपाल प्रनत अनुरागी
जेहि मन परम मता अति छोहू । तेहि करुणाकर कीन्ह न कोहू ॥
गई बहोरि गरीब नेवाजू ॥ ॥ ॥ सरल सबल साहिब रघुराजू ॥
बुध बरणहिं हरि जस अस जानी । करहिं पुनीत सुफल निज बानी
तेहि बल मैं रघुपति गुन गाथा । कहिहौं नाइ राम पद माथा ॥ ॥
मुनिन्ह प्रथम हरि कीरति गाई । तेहि मग चलत सुगम मोहि भाई

दो॰ अति अपार जे सरित बर जो नृप सेतु करांहि ॥

चढ़ि पिपीलिका परमलघु बिनु श्रम पारहिं जाहिं
यहि प्रकार बल मनहिं दृढ़ाई ॥ ॥ करिहौं रघुपति कथा सुहाई ॥
व्यास आदि कवि पुंगव नाना। जिन्ह सादर हरि चरित बखाना
चरण कमल बंदौं सब केरे ॥ । पुरवहु सकल मनोरथ मेरे ॥
कलिके कविन करौं परणामा। जिन्ह बरणे रघुपति गुणग्रामा
जो प्राकृत कवि परम सयाने । भाषा जिन्ह हरि चरित बखाने ॥
भये जे अहहिं जे होइहैं आगे । प्रणवौं सबहिं कपट छल त्यागे
होउ प्रसन्न देहु बर दानू ॥ ॥ ॥ साधु समाज भणीत सनमानू
जो प्रबंध नहिं बुध आदरहीं ॥ ॥ सो श्रम बादि बाल कवि करहीं
कीरति भणीत भूत भलि सोई। सुरसरि सम सब कहं हित होई
राम सुकीरति भणीत भदेशा । असमंजस अस मोहि अंदेशा ॥
तुम्हरी कृपा सुलभ सोउ मोरे । सियनि सुहावनि टाट पटोरे ॥
करहु अनुग्रह अस जिय जानी। बिमल यशहिं अनुहरहु सुबानी
दो० सरल कवित कीरति बिमल सोइ आदरहिं सुजान
सहज बयर बिसराय रिपु सो सुनि करहिं बखान
सो न होइ बिनु बिमलमति मोहि मतिबल अति थोरि
करहु कृपा हरि यश कहौं पुनि पुनि करउं निहोरि
कबि कोबिद रघुबर चरित मानस मंजु मराल ॥
बाल बिनय सुनि सुरुचि लखि मोपर होहु कृपाल
सो० बंदौं मुनि पद कंज रामायण जिन निर्मयो ॥
सरबरस कोमल मंजु दोष रहित दूषणसहित

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बंदौ चारों बेद भव वारिधि बोहित सरिस ॥ ॥
जिनहिंन सपनेहुं खेद बरनत रघुपति बिसदयश
बंदौ बिधि पद रेणु भवसागर जिन्ह कीन्ह यह ॥
संत सुधा शशि धेनु प्रगटे खल बिष वारुणी
दो· बिबुध बिप्र बुध गुरु चरण बंदि कहौं करजोरि
होइ प्रसन्न पुरवहु सकल मंजु मनोरथ मोर
पुनि बन्दौ शारद सुर सरिता । युगल पुनीत मनोहर चरिता ॥
मज्जन पान पाप हर एका ॥ कहत सुनत इकहर अविवेका ॥
गुरु पितु मातु महेश भवानी । प्रणऊं दीन बंधु हित दानी ॥
सेवक सरवस्वामि सिय पीके । हित निरूप सब बिधि तुलसीके
कलि बिलोकि जग हित हरि गिरिजा । शाबर मंत्र जाल जिन सिरजा
अनमिल आखर अरथ न जापू । प्रगट प्रभाव महेश प्रतापू ॥
सो महेश मोपर अनुकूला । करौं कथा मुद मंगल मूला ॥
सुमिरि शिवा शिव पाइ पसाऊ । बरणौं राम चरित चित चाऊ
भणित मोर शिव कृपा विभाती । शशि समाज मिलि मनहु सुराती
जो यह कथा सनेह समेता । कहिहहिं सुनिहहिं समुझि सचेता
होइहहिं राम चरण अनुरागी । कलिमल रहित सुमंगल भागी
दो· सपनेहुं साँचेहु मोहि पर जोहर गौरि पसाउ ॥
जो फुर होउ तो कहउं सब भाषा भणितप्रभाउ
बंदौं अवधपुरी अति पावनि । सरयू सरि कलि कलुष नशावनि
प्रणऊँ पुर नर नारि बहोरी । ममता जिनपर प्रभुहिं न थोरी ।

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रिय निंदक अघ ओघ नसाये। लोक बिसोक बनाइ बसाये
बंदौं कौसल्या दिसि प्राची। कीरति जासु सकल जग माँची
प्रगटेउ जहँ रघुपति ससि चारू। बिस्व सुखद खल कमल तुसारू
दसरथ राउ सहित सब रानी। सुकृति सुमंगल मूरति खानी
करौं प्रनाम करम मन बानी। करहु कृपा सुत सेवक जानी
जिनहिं बिरचि बड़ भयउ बिधाता। महिमा अवधि राम पितु माता

सो. बन्दौं अवध भुआल सत्य प्रेम जेहि राम पद
बिछुरत दीन दयाल प्रिय तनु तृन इव परिहरेउ

प्रनवौं परिजन सहित बिदेहू। जाहि राम पद गूढ़ सनेहू॥
जोग भोग महँ राखेउ गोई। राम बिलोकत प्रगटेउ सोई
प्रनवौं प्रथम भरत के चरना। जासु नेम ब्रत जाइ न बरना
राम चरन पंकज मन जासू। लुब्ध मधुप इव तजै न पासू॥
बंदौं लछिमन पद जल जाता। सीतल सुभग भगत सुखदाता
रघुपति कीरति बिमल पताका। दंड समान भयउ जस जाका
सेष सहस्र सीस जग कारन। जो अवतरेउ भूमि भय टारन
सदा सो सानुकूल रह मोपर। कृपासिंधु सौमित्रि गुनाकर
रिपुसूदन पदकमल नमामी। सूर सुसील भरत अनुगामी
महाबीर बिनवौं हनुमाना॥ राम जासु जस आप बखाना

सो. बंदौं पवन कुमार खल बन पावक ज्ञान घन
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर

कपि पति रीछ निसाचर राजा। अंगदादि जे कीस समाजा॥

सब सनेह के बिषय कौसिलादि सादर प्रनवौं मिथिलेसा प्रजा परीवार सुत मरतहि भाता सब ही मान ३ सुग्रीव बिभीषन अंगदादि हनुमदादि सब कीस

दो॰ रा॰ बा॰ २५

अकलंक भगत कलंकहारि नर दोहि अरबिंद के अ श्रीराम जानकी जू मोहि अभेद निरूपन कीयो बिनको मो न रहित जो प्रि पै ॥ १८॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गुण निधान सो रामनाम ज्ञान बैराग्य आदि गुनकी निधि हैं यातें जापक लोगन में दोष परतु है २ मू॰ महामंत्र टी॰ जेहि महामंत्र को महेश आप जपत हैं अरु काशी ऐसे सिद्ध पीठ में अनेक जीवन के मुक्ति हेतु है याको प्रमान रामताप नी उपनिषद में है ३ मू॰ महिमा जासु टी॰ जेहि नाम की महिमा को गणेश जू जानतु हैं नामहीं के प्रताप तें सबतें प्रथम पूजा पावत हैं यह कथा को सब ऋषि अरु देवता ब्रह्मा ने पूछो अब पूज्य कौन ब्रह्मा कह्यो जो सर्व भुवन के प्रदक्षिणा

बन्दौं सब के चरण सुहाये ॥ । अधम शरीर राम जिन पाये ॥
रघुपति चरण उपासक जेते । खग मृग सुर नर असुर समेते
बन्दौं पद सरोज सब केरे ॥ ॥ जे बिनु काम राम के चेरे ॥ ॥
शुक सनकादि आदि मुनि नारद । जे मुनिवर विज्ञान बिशारद
प्रणऊं सबहिं धरणि धरि शीशा । करहु कृपा जन जानि मुनीशा
जनक सुता जग जननि जानकी । अतिशय प्रिय करुणा निधान की
ताके युग पद कमल मनाऊं । जासु कृपा निर्मल मति पाऊं ॥
पुनि मन बचन करम रघुनायक । चरण कमल बन्दौं सब लायक
राजिव नयन धरे धनु शायक । भक्त बिपति भंजन सुखदायक

दो॰ गिरा अर्थ जल बीचि सम कहियत भिन्न न भिन्न
बन्दौं सीताराम पद । जिनहिं परम पद खिन्न ॥

बन्दौं राम नाम रघुबर के ॥ ॥ हेतु कृशानु भानु हिम कर के
विधि हरि हर मय वेद प्रान से । अगुण अनूपम गुण निधान से
महामंत्र जोइ जपत महेशू ॥ ॥ काशी मुक्ति हेतु उपदेशू ॥ ॥
महिमा जासु जान गण राऊ । प्रथम पूजियत नाम प्रभाऊ ॥
जानि आदि कवि नाम प्रतापू । भयउ सिद्ध करि उलटा जापू

प्रथम करि आवै तब सब धाये गणेश जू डील भारी अरु मूषा बाहन बिचारि राम लिखि प्रदक्षिणा कियो तातें प्रथम पूज्य भए यह कथा बिस्तार पद्मपुराण में ४ मू॰ जान आदि कवि टी॰ आदि कवि बालमीक जू नाम प्रताप जानतु हैं मरा मरा जपि शुद्ध भये यह कथा बिस्तार पूर्वक अध्यात्म के अयोध्या काण्ड में ॥

टी॰ रा॰ बा॰ १६

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भक्ति बिना सब साधन वृथा वर्षा तें धान पुष्ट होत है भक्ति तें सुदोष राम नाम के गुन उत्तम जग वरन रकार मकार दोऊ अक्षर सावन अरु भादों मास हैं भाव वह कि सावन भादों बरषा के बारह मास में सार हैं तैसे ही भक्ति को सार दोनों अक्षर ९ मृ आखर मधुर। टी. अब दोउ अक्षरन के गुन कहत हैं दोउ आखर मधुर उच्चारण में अरु फल सों मनोहर गुन तें अरु अर्थ तें बरनन टी. हे जग जिय में जो बिचारि देखि ये दोऊ आखर सब अक्षरन के बिलोचन हैं आठों वर्ग के वर्ण सरस्वती के अष्टांग हैं चरणन के क्रम तें रकार मकार दोऊ नेत्र अस्थान में हैं याही ते वरन बिलोचन कहे १० सुमिरत टी. कैक नाम मंत्र जप में कठिन जैसे काकुस्थ अरु ए दोऊ सुमिरत सुलभ हैं गायत्री आदि मंत्र में सब को अधिकार नहीं राम नाम में जाति पाति को नेम नहीं यही हेतु तें सुखद सब काहू कहों कैक मंत्र लोक में लाभ दाई ए दोउ लोक में धन यश सुख दाता अरु परलोक में निबाह कहें बिषै कथा अरु जो दूए ना

सहस नाम सम सुनि शिव बानी। जप जेई शिव सङ्ग भवानी॥
हरषे हेतु हेरि सबही को। किय भूषण तिय भूषण तीको
नाम प्रभाव जान शिव नीके। कालकूट फल दीन्ह अमीके
दो. बरषा ऋतु रघुपति भगति तुलसी शालि सु दास
राम नाम वर वरण युग। श्रावण भादों मास॥
आखर मधुर मनोहर दोऊ। बरण बिलोचन जन जिय जोऊ
सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू। लोक लाहु परलोक निबाहू॥
कहत सुनत सुमिरत सुठि नीके। राम लषण सम प्रिय तुलसी के
वरणत वरण प्रीति बिलगाती। ब्रह्म जीव सम सहज संघाती
नर नारायण सरिस सु भ्राता। जग पालक बिशेष जन त्राता

आदि कथा कहत सुनत टी. तौ प्रिय भासतु है परंतु समुझ में फल निषिद्ध ए दोउ अक्षर कहत अरु सुनत अरु अर्थ के समुझत अति नीक हैं अरु मोकों तो राम लषण सम प्रिय हैं १२ बरनत टी. रा अरु म दोऊ अक्षर तिन के अस्थान प्रयत्न आकार अर्थ ए सब भिन्न २ बरनत इनकी प्रीति परस्पर छूटी सी देखतु है परंतु हैं तो दोऊ ब्रह्म जीव की नांई निरंतर प्रेमी जैसे ब्रह्म बिना जीव नाहीं रह सकतु अरु ब्रह्म बिन जीव हेतु रा यह नाम शब्द को है म यह नाम अर्थ ज्ञान को है ये दोऊ अर्थ अरु शब्द बिलग कबहूं नहिं देखे तैसें दोऊ आखर सहज सुभाव बिलग नहीं है १३ नर नारायन टी. जैसे नरनारायण दोऊ भाई सदा एक जगह रह के असुरन को भार धर्म बल तें जगत की रक्षा करतु हैं अरु जप तप के बल तें साधुन की बिशेष रक्षा करतु हैं तैसेई रकार मकार धर्म के बल तें सब जग पालक अरु जापक जन के बिशेष रक्षक हैं

टी. रा. बा. २७

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इहां जानों १७ दो॰ टी॰ एक छत्र छत्र जैसे माथे पर राजत है तैसेही रकार सब अक्षर के मांथे पर अरु मकार मुकुट मनि जैसे बिंदु रूप तें सब पर सोहत है प्रथम बन्दौं अवधपुरी इनादि लेइ कै धाम अरु रूप बंदना कर पुनः बन्दौं राम नाम रघुबर के इत्यादि नाम बंदना रंभ कियो नाम मंत्र को अर्थ कह्यौ पुनः महेश गणेश आदि भक्तन के द्वारा नाम महात्म्य को पुनः आखर मधुर मनोहर दोऊ इत्यादि प्रकारतें दोऊ अक्षर को लोक परलोक साधक कह्यौ अरु नाम अरु नामी के सब भाव को सब उपासना ग्रंथन के। अविरोध अर्थ कहतु हैं अरु निर्गुण सर्गुण दोऊ ब्रह्म तें नाम की अधिकता कहत हैं १८ समुझत टी॰ जो समुझ कै देखे तो नाम अरु नामी कहीं नाम वारो रूप ए दोनो सम हैं कैसे नामी में जे गण हैं तेई गुण नाम में हैं याते सदृश जानियें अरु दोऊ की परस्पर अति सय प्रीति नाम बिनु नामी अरु नामी बिनु नाम ए को क्षण बिलग नाहीं रहतु अरु अति प्रीति को लक्षण परस्पर दोऊ प्रभु अनुगामी है कोऊ समय नाम अरु कोऊ समय नामी नाम अनुगामी नाम

भक्ति सुतिय कल करण विभूषण। जग हित हेतु बिमल बिधु पूषण
स्वाद तोष सम सुगति सुधा के। कमठ शेष सम धर बसुधा के
जन मन मंजु कंज मधु कर से। जीह जसोमति हरि हलधर से

दो॰ एक छत्र इक मुकुटमणि सब बरणन पर जोउ
तुलसी रघुबर नाम के बरण विराजत दोउ ॥

समुझत सरस नाम अरु नामी। प्रीति परस्पर प्रभु अनुगामी
नाम रूप दोइ ईश उपाधी ॥ । अकथ अनादि सु समुझ साधी
को बड़ छोट कहत अपराधू। सुनि गुण भेद समुझि हैं साधू
देखिय रूप नाम आधीना। रूप ज्ञान नहिं नाम विहीना
रूप बिशेष नाम बिनु जाने। करतल गत न परहिं पहिचाने

रूप दोऊ टी॰ नाम अरु रूप ए दोऊ ईश कही संसार तें पार करे समर्थ एही सब उपासना ग्रंथन का नीक सिद्धांत उपाधी अकथ दोउ में परस्पर न्यून अधिक भाव उपाधि कहे कौन चाही हेतु दोउ अनादि हैं नाम पहले बा रूपई बात को ऊ नहीं कहि सकत एहि बात है बेद पुराण आदि समुझ कै साधी है। २०। को बड़ छोट टी॰ दोऊ में बड़ छोट कहिये महा अपराध एही रीति तें बास्तेविक शास्त्र सिद्धांत कह केवल भक्तन के उपासना अनुसार अरु कलि में नामी तें नाम को प्रभाव अधिक समुझ निज भाव के अनुकूल सिद्धांत कहतु हैं सुनिगुन टी॰ नामी ते नाम के अधिक गुन सुन के २१ देखिय टी॰ हैं तो दोउ समान परंतु लोक में नाम कहि कै बोला वे तो रूप चलो आवत है। दूसरे नाम को अर्थ जाने विना रूप की ज्ञान नहीं होत यातें नाम के आधीन रूप है

टी॰ रा॰ बा॰ १८

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पं॰ १ सुमिरिय टी॰ रूप जदपि नहीं देखो तदपि बिशेष सनेह ते नाम के सुमरत रूप चलो आवतु है हृदय
में वा नाम में रूप को बिशेष सनेह है ताते नाम के सुमरत रूप चलो आवत है मंत्र के आधीन देवता
यह बात मंत्र शास्त्र में अरु मीमांसा में प्रसिद्ध है अरु लोक में तो प्रत्यक्ष २३ नाम रूप टी॰ यद्यपि
नाम अरु रूप दोउ के गुन की कथा कहिवे सों नहीं आवत समुझ में सुख दे है तथापि नाम में अ
ब्रह्म को अनुभव करत हैं अनूप आदि ब्रह्म बिशेषण अनामय अविद्या रोगतें रहित यहां
योगी पट ज्ञानी को वाचक जीव ब्रह्म की एकता योग कहावत है लोमस सनकादि ज्ञानी
भक्त २७ जाना चहैं टी॰ गूढ़ गति कही ब्रह्म स्वरूप को जो जानो चहत हैं तेऊ जिज्ञासु भ
क्त जीह ते नाम जपि जानत हैं गूढ़ गति कही सब में गुप्त गम्लृ गतौ धातु भाव में प्रत्यय गति
शब्द ब्रह्म स्वरूप बाचक है यहां लो उद्धव आदि जिज्ञासु भक्त कहे २८ साधक टी॰
निज अर्थ साधक अर्थार्थी भक्त हू लय लगाये नाम जपि अणिमा महिमा
आदि सब सिद्धि पाइ कै सिद्ध होत हैं इहां सुग्रीव बिभीषणादि अर्थार्थी भक्त

सुमिरिय नाम रूप बिनु देषे । आवत हृदय सनेह बिशेषे ॥
नाम रूप गति अकथ कहानी । समुझत सुखद न परै बखानी
अगुण सगुण बिच नाम सुसाखी । उभय प्रबोधक चतुर दुभाखी
दो॰ राम नाम मणि दीप धरु जीह देहरी द्वार ॥ ॥
तुलसी भीतर बाहिरौ जो चाहसि उजियार ॥
नाम जीह जपि जागहिं योगी । बिरति बिरंच प्रपंच बियोगी
ब्रह्म सुखहिं अनुभवहिं अनूपा । अकथ अनामय नाम न रूपा
जाना चहहिं गूढ़ गति जेऊ । नाम जीह जपि जानहिं तेऊ
साधक नाम जपहिं लय लाये । होहिं सिद्ध अणिमादिक पाये
जपहिं नाम जन आरत भारी । मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी
राम भक्ति जग चारि प्रकारा । सुकृती चारिउ अनघ उदारा
चहुं चतुरन कहं नाम अधारा । ज्ञानी प्रभुहि बिशेष पियारा
चहुं युग चहुं श्रुति नाम प्रभाऊ । कलि बिशेष नहिं आन उपाऊ

कहे २९ जपहि नाम टी॰ आरत भक्त को नाम जपतु हैं तिन के भारी कुसंकट मिटत
हैं अरु सुखी होत हैं इहां गजेंद्र द्रोपदी आदि आरत भक्त कहे ४ यहि बिधि तें
राम भक्त चार प्रकार के हैं चारों सुकृती अरु पाप रहित उदार चतुर हैं चारि
उ को नामही आधार हैं तिन में ज्ञानी भक्त प्रभु को अति प्रिय हैं प्रभु को तीनों में
ज्ञानी अधिक स्वरूपज्ञ अरु प्रयोजन शून्य सर्वात्म दृष्टि भये पर हूं नाम नाराय
ण हैं तातें अधिक प्रिय कह्यो कलि बिशेष टी॰ कलि में नाम को प्रभाव बड़ो
आन उपाय योग यज्ञ जप तप आदि यथार्थ नहीं बनतु अथवा चारों जुग की
व्यवस्था लिखी है और चारों बेद तें नाम संमत समान आयो कलि पाप मय
जीवन को बिशेष नामही श्रेय जनायो अर्थात् सर्व काठिन्य इत्यादि कर्के परत्व सूच
ना कियो परंतु सो काल को समान जानवो उत्तम है यातें अधर्म की व्याप ताते बचत है ३०
पर राम मनि को दीपक धर सब उपाधि रहित अरु दिष्टता जनाये याते मनि दीप कह्यो २६ अब ज्ञा
नी जिज्ञासु अर्थार्थी आरत प्रेमी पंच बिधि भक्तन के राम नामही ते सब प्रयोजन की सिद्धि अरु अंत
एव जिन्ह के नाम परायण ता गावत हैं नाम जीह दो॰ बैराग्य बल करि बिधि रचित संसार तें बियो
गी जो जोगी ज्ञानी हैं तेऊ जीह तें नाम जपि भवनिसा में जागत हैं अरु नाम के प्रसाद सुख स्वरूप

धक गु
न २४ अगुन स
गुन टी॰ निर्गुण
सगुण दोऊ ब्रह्म
के बोध करै को
नाम सुंदर साखी
निर्णय करि सम
झावने वारो कैसे
जैसे चतुर दुभा
षी आप जुदो रह
कै दोउ को बोध
कराइ देत है राम
नामही समुझो
पास कहे के दश

टी॰
रा॰ बा॰
१९

रथात्मज को बो
धक अस रस नी
ति रामः या रीति
तें सर्व व्यापक नि
र्गुणही को बोध
कहै २५ दोहा
राम नाम मनि टी॰
हृदय भीतर निर्गु
ण ब्रह्म वा सगुण
दोऊ जन की इ
च्छा जो होइ तो
देह मंदर मुख द्वा
रके जीह दे
हरी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नाम दूनों ब्रह्मको बस कीन्हो जो नाम शब्द ब्रह्म न हो तो तो दोउन को कोऊ न जा
न तो अरुन दोऊ हाथ लगतु आशंका मन कपिल व्यास जैमिन आदि ऋषिन
को उचित तन तो भाषत कलि के जीव तुम्हारो सब ते बिलक्षण नत अनुचित स
माधान ३३ प्रौढि सुजन टी॰ सुजन लोग दासकी प्रौढि कही जबरई यह न जा
ने मोरे मन को नाम मों ऐसी प्रतीति प्रीति रुचि भई है सो कहतु हों वेद शास्त्र
सुनि प्रतीति गुरु उपदेशतें प्रीति रुचि पूर्व जन्म के सुकृति तें मै सत बादी ना
हीं श्री गोसांई जू की दैन्य घाट है तातें मोर मन को अर्थ यही करनों हन जै
से सकल साधन हीन दीन जीवन के संमत में नाम दोऊ ते बड़ो है यह सिद्धांत

दो॰ सकल कामना हीन जे राम भक्ति रस लीन
नाम सु प्रेम पियूष हृद तिनहुं किये मन मीन

अगुण सगुण दोउ ब्रह्म सरूपा। अकथ अगाध अनादि अनूपा
मोरे मत बड़ नाम दुहूं ते । किय जेहि युग निज बस निज बूते
प्रौढ़ सुजन जन जानहिं जनकी। कहउं प्रतीति प्रीति रुचि मनकी
एक दास गत देखिय एकू । पावक युग सम ब्रह्म विवेकू
उभय अगम युग सुगम नाम तें। कहउं नाम बड़ ब्रह्म राम तें
व्यापक एक ब्रह्म अविनाशी। जड़ चेतन घन आनंद राशी
अस प्रभु हृदय अछत अविकारी। सकल जीव जग दीन दुखारी
नाम निरूपण नाम यतन तें । सोउ प्रगटत जिमि मोल रतन तें

संदेह नाहीं अब प्रथम निर्गुण तें नाम अधिक ३४ एक दारु गत टी॰ दोऊ ब्रह्म को
विवेकहि निर्णय अग्नि के सम एक आगि गुप्त काष्ट में एक अग्नि प्रत्यक्ष घर
में देखियतु है दूनों नाम ता मिलि सकतु है तैसेई नाम बिन दोऊ ब्रह्म अगम
अरु नाम तें दोऊ मिलि सकतु हैं ३५ व्यापक एक टी॰ व्यापक आदि विशेषण
युक्त ब्रह्म के हृदय सें रहतु बिन जाने सब जीव दीन दुखारी नाम निरूपन तें ना
म का अर्थ समुझे न अरु नाम के यतन ते निरंतर जपते सोऊ आनन्द रूप ब्रह्म
प्रगट है जैसे रतन को मोल रतनही में अलक्ष रहत परंतु जब रतन को नाम कहै
और रतन में मिलाय तौल तेज आदि यतन ते देखे तब ताको मोल प्रगटत है ३६

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ताड़का सो सेना अरु मरीच सुबाहु पुत्रन सहित विवाक किये इहां नाम दासन के दुरासा दुष्ट अनेक आसा को दोष दुख सहित हरत हैं जैसे रवि अनायास रात्रि को विशेषता प्रथम ऋषि दूसरे गुरु संबंध तीजे व्याह साधक ताड़का एक सेन घोरिक पुत्र दुइ तासें हूं मरीच बच गयो या हेतु गोसाईं जी विवाकी पद दयो विपक्षी जैसे उड़े वारो मरीच वाकी रह गयो यह ध्वनि नाम पक्षमें दास अरु ताड़का तें अति जबर अनेक दुरासा के पुत्र अनेक दुख सेन और

दो॰ निरगुण तें दुहिं भांति बड़ नाम प्रभाव अपार
कहउं नाम बड़ राम तें निज बिचार अनुसार

राम भक्त हित नरतनु धारी। सहि संकट किय साधु सुखारी
नाम सप्रेम जपत अनयासा। भक्त होहिं मुद मंगल बासा
राम एक तापस तिय तारी। नाम कोटि खल कुमति सुधारी
रिषि हित राम सुकेतु सुताकी। सहित सेन सुत कीन्ह बिबाकी
सहित दोष दुख दास दुरासा। दलइ नाम जिमि रवि निसिनासा
भंजेउ राम आपु भव चापू। भव भय भंजन नाम प्रतापू
दंडक बन प्रभु कीन्ह सुहावन। जन मन अमित नाम किय पावन
निसिचर निकर दले रघुनंदन। नाम सकल कलि कलुष निकंदन

दो॰ सबरी गीध सुसेवकनि सुगति दीन्ह रघुनाथ
नाम उधारे अमित खल बेद बिदित गुन गाथ

विनयसे अनायास नाम १ भंजेउ टी॰ जहां आप बड़े अमतें भव महादेव को चाप भंग किये दूहां अति दुस्तर संसार भव तापर प्रताप प्रभु आप नाम यह विशेष दंडक बन दूहां एक जनके अनेक मन बन निशिचर निकर स्वरूप ण आदि राक्षस वृंद राम चू मारे तदपि बहुत रह गए नाम तो कलि के स कल पाप को नास कर देत है ४ शबरी गीध टी॰ जहां सुंदर सेक्क अरु गिनती में दइ दूहां खल अरु अनेक वेद में इत्यादि नाम की अनंत क था प्रसिद्ध है ॥ २४॥

ब्रह्म तें अरु राम जू तें एहि बिधि नाम बड़ो है बरदायक ब्रह्मादि देवता तिनतूं के बर देन हार नाम है अरु राम चरित सत कोटि को जीव सार राम यह नाम है ऐसो ना नके महेश जू तीनों लोक में बांट कै एही दो अक्षर आप लिये नेंनीस तें नीस कोटि प्रथम बांटे पुनः तीनों लोक में ३३ लक्ष ऊनेही एही रीत सें दुइ अक्षर शिव आ प लिये सो समझो २५ दोउ ब्रह्म तें नाम बड़ो कह अब पुनः भक्तन हार नाम को म हत्व कहतु हैं १ नाम प्रसाद टी. शिव जू नाम कहत अवनाशी कही अमर भये अरु छार सर्प नर कपाल गज चर्म धतूर आदि अमंगल की राशि सब सामिग्री मंगल राशि भई रकार मकार संबंध तें छार आदि साज धारना किये शुकदेव

राम सुकंठ बिभीषण दोऊ । राखे शरण जान सब कोऊ
नाम अनेक गरीब निवाजे । लोक बेद बर बिरद बिराजे
राम भालु कपि कटक बटोरा । सेतु हेतु अम कीन्ह न थोरा
नाम लेत भव सिंधु सुखाहीं । करहु बिचार सुजन मन माहीं
राम सकल रण रावण मारा । सीय सहित निज पुर पगु धारा
राजा राम अवध रज धानी । गावत गुण सुर मुनि वर बानी
सेवक सुमिरत नाम सप्रीती । बिनु अम प्रबल मोहदल जीती
फिरत सनेह मगन सुख अपने । नाम प्रसाद शोच नहिं सपने

दो. ब्रह्म रामतें नाम बड़ बरदायक वरदानि ॥
राम चरित शत कोटि महं लिय महेश जिय जानि

नाम प्रसाद शंभु अबिनाशी । साज अमंगल मंगल राशी
शुक सनकादि सिद्ध मुनि योगी । नाम प्रसाद ब्रह्म सुख भोगी
नारद जानेउ नाम प्रतापू । जग प्रिय हरि हर हरि प्रिय आपू
नाम जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू । भक्ति शिरोमणि भे प्रहलादू

जु वान अवस्था डाकिन सदा समीप ताके कुल में नाहीं आवत तातें प्रथम नाम कह्यो या डाकन तें डर के बालगन रहैं वा सनकादिक बर मांगे तातें पछि गना ये ब्रह्म सुख ब्रह्मानंद में लयलीन २ जगत प्रिय टी. जगत के प्रिय तो हरि हर अरु विष्णु शिव के प्रिय नारद विष्णु प्रिय प्रसिद्ध शिव प्रिय में प्रमाण अति प्रिय जान महे श सिखाए प्रह्लाद भक्त शिरोमणि प्रमाण पांडव गीता प्रह्लाद नारद पाराशरादि

कृति को फल है अरु कलि में केवल नामही को प्रधान कहतु हैं २ ध्यान प्रथम युग
टी॰ सतयुग में ध्यान प्रधान त्रेता में बिधि पूर्वक यज्ञ करनो द्वापर में पूजा तें प्रभु का
परतोष कलि में केवल नाम को आधार कैसो है कलि आप मलिन औरन के पापको
मूल जड़ पाप के समुद्र में मन मीन ऐसेहू कराल कलि में नाम सब मनोरथ पूरे करै
को कल्पवृक्ष है अरु सुमिरे ते सब संसार बंधन काटन हारो अरु बांछित दाता हित
परलोक हू को मित्र अरु यह लोक में तो पितु माता सुरव पालक ३ नहिं कलि टी॰
कलि में सांगोपांग कर्म नाहीं बनतु नवधा प्रेमा परा ३ तीनों भक्ति दुर्लभ हेतु मन बि
षय लंपट विवेक यथारथ आत्म बोध सोऊ नाही हेतु गुरु शिष्य दोउ रामगीता
में ऐसे राम नाम आधार आशंका वेद के तीनों कांड जिसे नाम परभी कलिकाल

ध्रुव सगलानि जपेउ हरि नामू। पायेउ अचल अनूपम धामू ॥
सुमिरि पवन सुत पावन नामू। अपने बस करि राखेउ रामू ॥
अपर अजामिल गज गणिकाऊ। भए मुक्त हरि नाम प्रभाऊ ॥
कहउं कहां लगि नाम बड़ाई। रामु न सकहिं नाम गुण गाई

दो॰ राम नाम को कल्पतरु। कलि कल्याण निवास
जो सुमिरत भये भांग तें तुलसी तुलसी दास

चहुं युग तीनि काल तिहुं लोका। भये नाम जपि जीव बिशोका
वेद पुराण संत मत एहू ॥ सकल सुकृत फल राम सनेहू
ध्यान प्रथम युग मख युग दूजे। द्वापर परि तोषत प्रभु पूजे ॥
कलि केवल मल मूल मलीना। पाप पयो निधि जन मन मीना
नाम काम तरु काल कराला। सुमिरत शमन सकल जग जाला
राम नाम कलि अभिमत दाता। हित परलोक लोक पितु माता
नहिं कलि कर्म न भक्ति बिबेकू। राम नाम अवलंब न एकू ॥
कालनेमि कलि कपट निधानू। नाम सुमति समरथ हनुमानू

दो॰ राम नाम नर केसरी कनक कशिपु कलिकाल
जापक जन प्रहलाद जिमि पालहि दलि सुरसाल

बिघ्न करै गो समाधान कपट निधान कलिकाल नेमी असुर है ताके नाश करे को
राम नाम समरथ हनुमान है ॰ दो॰ टी॰ नर केसरी नृसिंह जू कनक कशिपु
सुर साल सुरन के सालिवे वारो यह हिरण्यकशिपु को बिशेषण कलि है बि
धि ते जीवन को मारत है कपट ते और निसंक प्रत्यक्ष नेहि हेतु है रूपक २७
और मंत्र तें दूजो न्यास ध्यानादि नियम नाहीं ॥

रोजन मत भयोहै राजा ७ ॥ सुनि सनमान टी॰ सो राजा निज प्रशंसा सुनि गिर बचन ने सब को सनमान करत है कविताई आदि पहिचान के डुकविक कवि की भनित ग्राम नर मूढ आदि कल की अगति गनी अरु उजागरन की नति नम्रता गरीब आदि की दया यह सामान्य राजाको सुभाव होतु हैं कोश ल राव तो जान कास के शिरोमनि हैं अवश्य मेरी बिनय सुनयहीं गे अरु भी

भाय कुभाय अनख आलसहूं। नाम जपत मंगल दिशि दसहूं
सुमिरि सो नाम राम गुण गाथा। करौं नाइ रघुनाथहिं माथा ॥
मोरि सुधारहिं सो सब भांती। जासु कृपा नहिं कृपा अघाती
राम सु स्वामि कुसेवक मोसे। निज दिशि देखि दयानिधि पोसे
लोकहुं वेद सु साहेब रीती॥ बिनय सुनत पहिचानत प्रीती
गनी गरीब ग्राम नर नागर। पंडित मूढ मलीन उजागर
सुकवि कुकवि निज मति अनुसारी। नृपहि सराहत सब नर नारी
साधु सुजान सुशील नृपाला। ईश अंश भव परम कृपाला
सुनि सनमानहिं सबहिं सुबानी। जानत भक्ति मति गति पहिचानी
यह पाकृत महिपाल सुभाऊ। जानि शिरोमणि कोशल राऊ
रीझत राम सनेह निसोते ॥ को जग मंद मलिन मति मोते

दो॰ शठ सेवक की प्रीति रुचि रखिहहिं राम कृपालु
उपल किये जल जानजेहि सचिव सुमति कपि भालु
होंहु कहावत सब कहत राम सहत उपहास ॥
साहेब सीता नाथ से। सेवक तुलसीदास ॥

ति पहिचान कृपा करहिं गे ८ रीझत टी॰ रामजू तदपि निसोत कही निरालप्रेम तें रीझत हैं अरु मोतें तदपि अधिक मतिमंद अरु मलिन मन जग में कोई नाहीं तदपि मैं सब सेवक हों मेरी प्रीति अरु रुचि राम कृपाल अवश्य राखैं गे। उदाहरण जे आप बंदें अरु आन को वारे ते पाषाण समुद्र पार जहाज किये अरु कपि भालु सुमति अरु मंत्री किये अरु मैं राम दास कहावत हौं अरु सब लोग यही बात कहतु हैं परंतु रामजू मेरे हेतु उपहास सहतु हैं कैसे सीता नाथ जैसो तो सु साहिब अरु तुलसी दास कु सेवक ऐसे न चाही ॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

केवल उन के हृदय की प्रीति देख भरत के भेटन प्रसंसा किये अरु राज सभा में निज मुख तें तिन्ह के गुण कहे ६ टी॰ स्वामी तरु के तरे बैठे अरु दास कपि ऊंचे डारन पर ऐसे निर्बुद्धि मूढ न कहे प्रभु आप समान किये जैसे राम यश गाइ नरभव सागर पार

अति बड़ि मोरि ढिठाई खोरी। सुनि अघ नरकहुं नाक सकोरी
समुझि सहमि मोहि अपडर अपने। सो सुधि राम कीन्ह नहिं सपने
सुनि अवलोकि सुचित चखु चाही। भक्ति मोरि मति स्वामि सराही
कहत न साइ ढोइ अति नीकी। रीझत राम जानि जन जीकी
रहत न प्रभु चित चूक किये की। करत सुरत सै बार हिये की
जेहि अघ बधेउ व्याध जिमि बाली। फिरि सुकंठ सोइ कीन्ह कुचाली
सोइ करतूति बिभीषण केरी। सपनेहु सो न राम हिय हेरी
ते भरतहि भेटत सनमाने। राज सभा रघुबीर बखाने॥

दो॰ प्रभु तरु तर कपि डार पर ते किय आपु समान
तुलसी कहूं न राम से। साहेब शील निधान
राम निकाई रावरी। है सबही को नीक
जो यह सांची है सदा। तो नीको तुलसीक
इहिं बिधि निज गुण दोष कहि सबहि बहुरि शिर नाइ
बरणौं रघुबर बिशद यश सुनि कलि कलुष नसाइ

याज्ञवल्क्य जो कथा सुहाई। भरद्वाज मुनिवरहि सुनाई॥
कहि सो सोइ संवाद बखानी। सुनहु सकल सज्जन सुखदानी
शंभु कीन्ह यह चरित सुहावा। बहुरि कृपा करि उमहिं सुनावा

जाय तैसही बानर यश यह आप सम एहीते नीके बूझि परा कि राम सम शील निधान साहिब दूसरो नहीं ६ टी॰ हे राम आपकी भलाई तें सब को भलो है सो यह बात सत्य है जो स्वामी की भलाई ते तुलसीहू के नीक अवश्य होइगो एहि बिधि यह रीति से स्वामी के गुन और आपने दोष कहि पूर्व जे बंदन किये तिन्ह सबन को बारि बंद रघुबर यश बरनत हौं॥ २८॥

सो शिव काकभुसुंडहिं दीन्हा। राम भक्ति अधिकारी चीन्हा
नेहि सन याज्ञवल्क्य पुनि पावा। तिन्ह पुनि भरद्वाज प्रति गावा
ते श्रोता बकता सम शीला ।सम दरशी जानहिं हरि लीला
जानहिं तीनि काल निज ज्ञाना।करतल गत आमलक समाना
औरो जे हरि भक्त सुजाना ।कहहिं सुनहिं समुझहिं बिधिनाना

दो॰ मैं पुनि निज गुरु सन सुनी कथा सु सूकर खेत
समुझी नहीं तस बालपन तब अति रहेउं अचेत
श्रोता वकता ज्ञान निधि कथा राम की गूढ़
किमि समुझै यह जीव जड़ कलि मल ग्रसित बिमूढ़

तदपि कही गुरु बारहि बारा। समुझि परी कछु मति अनुसारा
भाषा बंध करब मैं सोई ॥ ।मोरे मन प्रबोध जेहि होई
जस कछु बुधि बिबेक बल मेरे।तस कहिहौं हिय हरि के प्रेरे
निज संदेह मोह भ्रम हरणी ।करौं कथा भव सरिता तरणी
बुध बिश्राम सकल जन रंजनि। राम कथा कलि कलुष बिभंजनि
राम कथा कलि पन्नग भरणी। पुनि बिबेक पावक कहं अरणी
राम कथा कलि कामद गाई ।सुजन सजीवन मूरि सुहाई ॥
सोइ वसुधा तल सुधा तरंगिनि। भव भंजनि भ्रम भेक भुअंगिनि
असुर सेन सम नरक निकंदनि। साधु विबुध कुल हित गिरिनंदिनि
संत समाज पयोधि रमासी ।विश्व भार धर अचल क्षमासी
यम गण मुहँ मसि जग जमुना सी।जीवन मुक्ति हेतु जनु कासी
रामहि प्रिय पावनि तुलसी सी। तुलसिदास हित हियहुलसीसी
शिव प्रिय मेकल शैल सुतासी।सकल सिद्धि प्रद संपति रासी
सद्गुण सुर गण अंब अदिति सी। रघुबर भक्ति प्रेम परमिति सी

दो॰ राम कथा मंदाकिनी चित्र कूट चित चारु ॥
तुलसी सुभग सनेह वन सिय रघुबीर विहारु

दो॰ ॥ अंगो
तीर तो यों घाट
नहं बारह के
तर भसो ॥ भल
मरिता दो॰ सानन
न कहो हेतु एवं के
यों के आगे भव
कछ चीज नहीं
फिर नदिवि
वीचै कथातो

दो॰ रा॰ बा॰ २६

राम वंदिनी दो॰
पंक्ति २८
अचल क्षमासी
दो॰ अचल
पर्वत क्षमा पृ
थ्वी अर्थ ज
ओ हो ओ
गर ॥

राम चरित चिंतामणि चारू । संत सुमति तिय सुभग सिंगारू
जग मंगल गुण ग्राम राम के । दानि मुक्ति धन धर्म धाम के
सद गुरु ज्ञान विराग योग के । बिबुध वैद भव भीम रोग के
जननि जनक सिय राम प्रेम के । बीज सकल ब्रत धर्म नेम के
शमन पाप संताप शोक के । प्रिय पालक परलोक लोक के
सचिव सुभट भूपति बिचार के । कुंभज लोभ उदधि अपार के
काम कोह कलिमल करि गण के । केहरि शावक जन मन वन के
अतिथि पूज्य प्रीतम पुरारि के । कामद धन दारिद दवारि के
सब महा मणि बिषय व्याल के । मेटत कठिन कुअंक भाल के ॥
हरण मोह तम दिन कर कर से । सेवक शालि पाल जल धर से
अभिमत दानि देव तरु वर से । सेवत सुलभ सुखद हरि हर से
सुकवि शरद नभ मन उडु गण से । सकल सुकृत फल भूरि भोग से
जग हित निरुपधि साधु लोग से । सेवक मन मानस मराल से ॥ पावन गंग तरंग माल से ॥

दो॰ कुपथ कुतर्क कुचालि कलि कपट दंभ पाखंड
दहन राम गुण ग्राम इमि इंधन अनल प्रचंड
राम चरित राकेश कर सरिस सुखद सब काहु
सज्जन कुमुद चकोर चित हित बिशेष बड़ लाहु

कीन्ह प्रश्न जेहि भांति भवानी । जेहि बिधि शंकर कहा बखानी
सो सब हेतु कहब मैं गाई । कथा प्रबंध बिचित्र बनाई ॥
जिन यह कथा सुनी नहिं होई । जनि आश्चर्य करै सुनि सोई
कथा अलौकिक सुनहिं जे ज्ञानी । नहिं आश्चर्य करहिं अस जानी
राम कथा की मिति जग नाहीं । अस प्रतीति तिन के मन माहीं
नाना भांति राम अवतारा । रामायण शत कोटि अपारा
कल्प भेद हरि चरित सुहाये । भांति अनेक मुनीशन गाये

कड़ याग वल्क्य
भरद्वाज गो
साई ने सु बो
ध वो सुजन
उपकारार्थ
३० ॥ अरु
हरि कथा म
हात्म्य स
नेके विधि
३१ अदयो
अं उनको सं
देह करो न
वाहिये अब
न बनाय सो
पूर्वक अब
करो उचित
॥ ३३ ॥ ॥

करिय न संशय अस उर आनी। सुनिय कथा सादर रति मानी
दो॰ राम अनंत अनंत गुण अमित कथा बिस्तार
सुनि आश्चर्य्य न मानिहहिं जिनके बिमल बिचार
इहि बिधि सब संशय करि दूरी। शिर धरि गुरु पद पंकज धूरी
पुनि सबही बिनवौं कर जोरी ॥ करत कथा जेहि लाग न खोरी
सादर शिवहिं नाइ अब माथा। बरणौं बिशद राम गुण गाथा
संवत सोरह सै इकतीसा ॥ ॥ करौं कथा हरि पद धरि शीसा
नौमी भौमवार मधुमासा ॥ अवधपुरी यह चरित प्रकासा
जेहि दिन राम जन्म श्रुति गावहिं। तीरथ सकल तहां चलि आवहिं
असुर नाग खग नर मुनि देवा। आय करहिं रघुनायक सेवा
जन्म महोत्सव रचहिं सुजाना। करहिं राम कल कीरति गाना
दो॰ मज्जहिं सज्जन वृन्द बहु पावन सरयू नीर ॥
जपहिं राम धरि ध्यान उर सुंदर श्याम शरीर
दरस परस मज्जन अरु पाना। हरै पाप कह वेद पुराना ॥ ॥
नदी पुनीत अमित महिमा अति। कहि न सकै शारदा बिमलमति
राम धामदा पुरी सुहावनि ॥ ॥ लोक समस्त बिदित जग पावनि
चारि खानि जग जीव अपारा। अवध तजे तनु नहिं संसारा ॥
सब बिधि पुरी मनोहर जानी। सकल सिद्धि प्रद मंगल खानी
विमल कथा कर कीन्ह अरंभा। सुनत नसाहिं काम मद दंभा
राम चरित मानस यह नामा। सुनत श्रवण पाइय विश्रामा
मन करि विषय अनल बन जरई। होइ सुखी जो इहि सर परई
राम चरित मानस मुनि भावन। विरचेउ शंभु सुहावन पावन

आदि विशेषण जल सुजस दोऊ के लीला टी॰ सगुण ब्रह्म की जो लीला साधु कहत हैं सोई जल की स्वच्छता जल अरु लीला दोऊ निज स्वच्छता भेंश रीर अरु मन मल को दोऊ दूर करत हैं प्रेम भक्ति टी॰ प्रेम भक्ति को बर्णन सो ई सुजस जल में मधुरता अरु शीतलता गुन है कैसी है प्रेमा भक्ति जाकी दशा

त्रिविध दोष दुख दारिद दावन। कलि कुचालि कलि कलुष नसावन
रचि महेश निज मानस राखा। पाइ सु समय शिवासन भाखा
तातें राम चरित मानस वर ॥। धरेउ नाम हिय हेरि हरषि हर
कहौं कथा सोइ सुखद सुहाई। सादर सुनहु सुजन मन लाई

दो॰ जस मानस जेहि विधि भयो जग प्रचार जेहि हेतु
अब सोइ कहौं प्रसंग सब सुमिरि उमा वृष केतु

अथ मान सरोवर

शंभु प्रसाद सुमति हिय हुलसी। राम चरित मानस कवि तुलसी
करउं मनोहर मति अनुहारी। सुजन सुचित सुनि लेहु सुधारी
सुमति भूमि थल हृदय अगाधू। वेद पुराण उदधि घन साधू
बरषहिं राम सुयश वर वारी ॥। मधुर मनोहर मंगल कारी
लीला सगुण जो कहहिं बखानी। सोइ स्वच्छता करै मल हानी
प्रेम भक्ति जो बरणि न जाई। सोइ मधुरता शीतलताई ॥

चले में नहीं आवतु वा सुख को प्रेमी ही जानत भए हैं कहि नहिं सकतु आ न को कहे प्रथम साधारण जल दृष्टि तें मधुर गुण कहे वहां मेघ जल दृष्टि तें विशेष मधुरता कहे तातें पुन रुक्ति दोष नाहीं प्रेम दशा बारेहू को मिठाई ने ओठ बंद बोल नहीं सकत अरु नेत्र जल ते सब संताप की हानि तें शीत लता हेतु है तातें जल औ प्रेम भक्ति में दोउ गुन सम जानव ॥५॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भरि के घाट बिना तड़ाग जलके प्राप्ति दुर्घट जानि अब घाट रचना करतु है बुद्धि अरु बिचार दोऊ कारीगर ने अति सुंदर बिरचे ते उत्तम चारि संबाद तेई यह सुभग सर के मनोहर चारि घाट हैं ते संबाद कौन प्रथम गोसांई जू को अरु संतन को संबाद दैन्य घाट १ द्वितीय याज्ञ वल्क्य भरद्वाज को कर्म घाट २ तृतीय शंकर पार्वती को ज्ञान घाट ३ चतुर्थ भुशुंडि गरुड़ को उपासना घाट ४ संबाद नके स्वरूप को उदाहरण क्रमतें यथा कहौं कथा सोई सुखद सुहाई सादर सुनहु सुजन मन लाई ॥ १ ॥ कहौं युगल मुनि बर्य करि मिलन सुभग संवाद

सो जल सुकृत शालि हित होई। राम भक्त जन जीवन सोई ॥
मेधा महि गत सो जल पावन। सिमिटि श्रवण मगु चलेउ सुहावन
भरेउ सुमानस शिथिल थिराना। सुखद शीत रुचि चारु चिराना।
दो॰ सुठि सुंदर संबाद वर विरचेउ बुद्धि बिचारि ॥
तेइ यह पावन सुभग सर घाट मनोहर चारि

कहौं सुमति अनुहारि अब उमा शंभु संबाद ३ कहा भुशुंडि बखानि सुन बिहंग नायक गरुड़ ४ सो संबाद अब क्रम तें चारों घाट को उदाहरण यथा अति बड़ि मोरि ढिठाई खोरी सुनि अघ नरकहुं नाक सकोरी ॥ इत्यादि दैन्य घाट १ भरद्वाज सुनि जाहि जब होत विधाता बाम मेरु धूरि सम जनक जम ताहि व्याल सम दाम ॥ इति कर्म घाट २ रजत सीप महं भास जिमि यथा भानु कार बारि ॥ तदपि मृषा तिहुं काल सोइ भ्रम न सकइ कोउ टारि इति ज्ञान घाट ३ सेवक सेव्य भाव बिनु भवन तरिय उरगारि इत्यादि उपासना घाट ४ ॥ ३३ घाट बांधे परभी सीढ़ी बिना सर जल दुर्लभ समुझि कै अब सीढ़ी की रचिना करतु हैं ॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

श जल में मृत सम माधुर्य गुण कह्यौ इहां तीसरी बार जल मधुरता लिये सो संदेह न हीं तीन कोटि पीछे लिख चुके नव १ पुरान २ चिरान ३ उपमा बीचि· टी· उपमा आदि सब अलंकार एहि जल में तरंगन को परसरि वो है ॥ पुर इति टी· चारु सुंदर चौपाई एहि सर के सघन पुरइन छाय रही है भाव जैसे पुरइन सघन तैसे चौपाई सघन एहि हेतु चौपाई रामायन कहावतु है प्रमाण पुरइन सघन ओट जल बेगन पाइय मरम यातें पुरइन तें राम सुयश जल को छाय राख्यो है शीघ्र व्याह कोऊ नहीं पावतु ॥ सुगति टी· सुहाई कबिताई सीय तामें युक्ति

सप्त प्रबंध सुभग सोपाना ॥ । ज्ञान नयन निरखत मन माना
रघुपति चरण उपासक जेते । सोइ सुकृती सुर मज्जहिं तेते
रघुपति महिमा अगुण अबाधा । बरणब सोइ बरबारि अगाधा
राम सीय यश सलिल सुधा सम । उपमा बीचि बिलास मनो रम
पुरइनि सघन चारु चौपाई । युक्ति मंजु मणि सीप सुहाई
छंद सोरठा सुंदर दोहा ॥ । सोइ बहु रंग कमल कुल सोहा
अरथ अनूप सुभाव सुभासा । सोइ पराग मकरंद सुवासा ॥

सुंदर मुक्ता मनि ॥ मू· छंद सोरठा ॥ टी· छंद सोरठा दोहा ए सब बहु रंग के कमल वृंद में सोह हैं यह ग्रंथ में सब तेरह १३ जाति के छंद हैं सो काव्य अंग में लिए गये भाव सब पुरइन समीप कमल नहीं होतु तातें आठ वा दश चौपाई पास सोरठा आदि कमल अरु कमलन में पराग आदि इहां वाच्यार्थ पराग पद ने बे सुंदर भाव मकरंद संस्कृत असि नाना बिधि की भाषा सो सुवास कही सुंदर कमल गात सुगंध हे भाव पराग कमल के कहु पर बरीनि के भीतर मकरंद अंतर गुप्त सुगंध दूरते महकतु है यथा सांख्य सब लगाय समरूप कमलन के शोभा अर्थ अब अलि और मराल कहतु हैं ॥

टी· रा· बा· ३१

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रहतु है अरु कबित जाति चार कोस की १ भारती २ आरभटी ३ सात्विकी ४ इन्ह को रीति भी कहतु हैं ते जाति सहरी मीन हैं सिमिटि कें ह्रद के बृंद चलतु हैं जल तें कछू तरे इ त्यादि ध्वनि आदि सब के लक्षण बिशेष तें काव्यांग में लिखो गयो ।।३।। अर्थ धर्म टी॰ अर्थादि फल चारि ४ रस शृंगारादि ८ बा शांत मिलि ९ बा बात्सल्य आदि तीन मिलाये तें १२ जप तप योग बिराग ४ ज्ञान परोक्ष बिज्ञान अपरोक्ष २ ए सब उन्नीस १९ दूहा जे आगे बर्णन करे को हैं ते सब सुंदर तड़ाग में मगर घरियाल आदि जलचर जीव हैं ॥ सुकृती॰।

सुकृत पुंज मंजुल अलिमाला। ज्ञान बिराग बिचार मराला
ध्वनि अवरेव कबित गुण जाती। मीन मनोहर ते बहु भांती ॥
अर्थ धर्म कामादिक चारी ॥ ।कहव ज्ञान बिज्ञान बिचारी
नवरस जप तप योग बिरागा। ते सब जलचर चारु तड़ागा
सुकृती साधु नाम गुण गाना। ते बिचित्र जल बिहंग समाना
संत सभा चहुं दिशि अंवराई। अद्धा ऋतु बसंत समगाई
भक्ति निरूपण बिबिधि बिधाना। क्षमा दयादम लता बिताना

टी॰ दूहा ग्रंथ में सुकृति अरु साधु राम नाम ई तीनहु के गुन को अनेक बिधि निरूपण तेई अनेक चक्र वाक जल कुक्कुट आदि जल बिहंग हैं क्रम तें तीनऊं यथा को सुकृती हम सरिस बिशेषी १ इत्यादि सुकृती पद बिकार जित अनघ अकामा इत्यादि साधु गुन राम नाम महिमा सुर कहही ३ इत्यादि नाम गुन । संत सभा टी॰ संत सभा सोई चारों दिशा में यामा नस सर के आम को बाग है दोऊ परोपकारी अरु अमृत फल साधु सभा अमराई के प्रफुल्लित करे को अद्धा वसंत ऋतु सम है नवधा प्रेमा पर भक्ति का अरु क्षमा दया दम कहीं इंद्रिय निरोध आदि सब का जो साधु सभा में निरूपण है सोई अमराई को लता बितान कहाएहैं

करण को परस्पर संबंध अरु सब काव्य अंगन को बिचार यति भंग आदि दोष बचाइ कै पढ़त एही चरित को संभारि बोलै तेई चतुर शिरोमनि या सर के रखवारे हैं सदा नेम ते जे नर नारी आदर सहित राम चरित सुनत हैं तेई उत्तम देवता मानसर के योग्य अधिकारी हैं अब अनधिकारी ६ पं. ७ अति खल टी. बाहिर सुबेष भीतर कपटी ते बक भीतर बाहिर मलिन बिषयी ते काग ते अभागी या सर के निकट

संयम नियम फूल फल ज्ञाना। हरि पद रति रस वेद बखाना
औरौं कथा अनेक प्रसंगा। तेइ शुक पिक बहु बरण बिहंगा

दो. पुहप बाटिका बाग बन सुख सु बिहंग बिहारु
माली सुमन सनेह जल सींचत लोचन चारु

जे गावहिं यह चरित संभारे। तेइ एहि ताल चतुर रखवारे॥
सदा सुनहिं सादर नर नारी। तेइ सुरवर मानस अधिकारी
अति खल जे बिषयी बक कागा। इहिं सर निकट न जाहिं अभागा
शंबुक भेक सिवार समाना। इहां न बिषय कथा रस नाना
तेहि कारण आवत हिय हारे। कामी काक बलाक बिचारे
आवत इहि सर अति कठिनाई। राम कृपा बिनु आइ न जाई

कबहूं नहिं जात तहां हेतु घोंघा मेंडुक सिवार समान बिषय रस की कथा उन का अहार दिव्य रस में इच्छा नहीं नातें हिय में हार के घर में बैठ रहतु हैं इहां आवते नहिं जातें काम के मारे बिचारे हैं अति कठिनाई जो पीछे कह्यो ताही को स्पष्ट कहतु हैं ॥२०॥

हेतु है नींद कदाचित न आवै तौ मूढ़ता जाड़ा के उर में लगे ते कथा श्रवन अस्नान मानस सर में नहीं पावत हेतु अभागा भाग्य हीन जड़ता जड़ाते श्रवन स्नान अरु सुति को धारन पान दोऊ नाहीं करि जात औरो अभिमान मैल समेत फिरि आवतु है जो मज्जन पान होत तो दूनो जन मल मैल जात सोतो नहीं सर निंदा

कठिन कुसंग कुपंथ कराला। तिन के बचन व्याघ्र हरि व्याला
गृह कारज नाना जंजाला। तेइ अति दुर्गम सैल बिसाला
बन बहु बिषय मोह मद माना। नदी कुतर्क भयंकर नाना ॥
दो॰ जे श्रद्धा संबल रहित नहिं संतन कर साथ ॥
तिन कहं मानस अगम अति जिन्हहिं न प्रिय रघुनाथ
जो करि कष्ट जाइ पुनि कोई। जातहि नींद जुड़ाई होई ॥
जड़ता जाड़ बिषम उर लागा। गयउ न मज्जन पाव अभागा
करि न जाइ सर मज्जन पाना। फिरि आवै समेत अभिमाना
जो बहोरि कोउ पूछन आवा। सर निंदा करि ताहि सुनावा

उहां हम गये पानि कठवता भरि लै आवा इत्यादि पानी अरु कठवता निषाद पुन्ह की कथा सुनी ऐसन आषा चौपाई हजारन हम बनाइ सकतु हैं उहां कथा गये इत्यादि अनेक कुतर्कन में राम कथा की निंदा ॥ ९ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कबिता नदी चली सो नदी निर्मल राम यश जलतें पूरण सोहत है सरयू नाम यह नाम करण कियो नदी के दै कूल इहां बेद मत ऊंचा कूल कबिता सरयू के धारा एही ओर है लोक मत भी चा कूल इधर प्रवाह कम बेद कूल यथा वेद बिहित कहि सकल बिधाता इत्यादि लोक कूल यथा लोक रीति जननी कर

सकल विघ्न व्यापहिं नहिं तेई। राम कृपा करि चितवहिं जेई
सोइ सादर सर मज्जन करहीं। महा घोर त्रयताप न जरहीं॥
ते नर यह सर तजहिं न काऊ। जिनके राम चरित भल भाऊ
जो नहाइ चह इहि सर भाई। सो सत संग करौ मन लाई॥
अस मानस मानस चख चाही। भै कबि बुद्धि बिमल अवगाही
भयो हृदय आनंद उछाहू। उमगेउ प्रेम प्रमोद प्रवाहू
चली सुभग कविता सरि ता सों। राम बिमल यश जल भरि तासों
सरयू नाम सुमंगल मूला॥ लोक बेद मत मंजुल कूला
नदी पुनीत सुमानस नंदिनि। कलि मल तृण तरु मूल निकंदिनि

हिं बर दुलहन सकुचहिं इत्यादि दोऊ नदी पुनीत अरु सुंदर मानस सर की बेटी सुनंदिनि बिशेषणतें पिता संबंध जनायो जैसे कलिंद जा वह सरयू तट के तरु मूलतें उखाड़त हैं यह कलि मल तट तरु को मूल समेत नास करते हैं मूल पदतें पुनः आप को अभाव जनायो॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सरयू दूरि और गंगा में मिली तैसहिं कविता सरयू कहू दूर चल के मनु महा राज को भक्ति गंगा भें मिली अवतार को मुख्य कारण मनु भक्ति कथा हृदय भक्ति मति सारंग पानी इत्यादि लक्ष्मन सहित जो राघो का समर जो से इस हानद सोनभद्र गंगा ते मिल्यो यथा पावक ससि बाहु पुनि जारा अनुज निशाचर कटक संहारा इत्यादि ५ पं॰ टी॰ युग बिच॰ उहां वांए सरयू दह ने सोनभद्र बीच में गंगा की धारा सोहति है इहां कविता अरु समर जस के बीच में भक्ति कैसे जैसे ज्ञान अरु सुबिरति सहित भक्ति सोहति है

दो॰ श्रोता त्रिबिधि समाज पुर ग्राम नगर दहुं कूल
संत सभा अनुपम अवध सकल सुमंगल मूल
रामभक्ति सुरसरितहि जाई। मिली सुकीरति सरजु सुहाई
सानुज राम समर यश पावन। मिलेउ महानद शोण सुहावन
युग बिच भक्ति देव धुनि धारा। सोहति सहित सुबिरति बिचारा
त्रिविध ताप त्रासक तिमुहानी। राम स्वरूप सिंधु समुहानी
मानस मूल मिली सुर सरिही। सुनत सुजन मन पावन करिही

सु बिरति कहे बैराग्य ॥ पं॰ ६ टी॰ त्रिबिधि॰ तिमुहानी तीन मुख वारे तीन उ प्रवाह वहति सुहानी समुद्र के सन्मुख संगम हित चली यह राम स्वरूप सिंधु के सन्मुख निरंतर चली है यथा वह शोभा समाज मुख कहत न बनै घगेश। इत्यादि कहत न बनै ध्वनितें अगाध अकथ राम रूप कहा अब संगम को फल कहतु हैं ॥ पं॰ ७ मानस टी॰ मानस है मूल जाको ऐसी कविता सूर्य भक्ति गंगा ते मिल के सुनतें सुजन मन को पावन करतु है प्रथम सरयू और गंगा को संगम कहि पुनः समुद्र संगम कहे फिर संगम फल कह्यो अब केवल सरयू बरनन करत हैं ॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

४ इत्यादि नृप रानी के सुकृत भँवर बात्सल्य रस मकरंद के भोगी चारि वार लोगन्ह के सुकृत जल पक्षी चक्रवाक जल कुक्कुटादि ४० पं. ६ टी. सीय के सुहाई स्वयंबर कथा कविता सरयू के शोभा छाय रही है ॥ पं. ७ टी. नदी नाव० पथ बिचार पूर्वक प्रश्न दा पथ लोगन के प्रश्न नदी पर नावरि हित बिबिक उत्तर सोई कुसल चतुर के वट सुनि सुनि के परस्पर बार बार मनन

बिच बिच कथा बिचित्र बिभागा। जनु सरि तीर तीर बन बागा
उमा महेश बिबाह बराती ॥ तेइ जलचर अगनित बहुभाँती
रघुबर जन्म अनंद बधाई । भँवर तरंग मनोहर ताई ॥
दो. बाल चरित चहुँबंधु के बनज बिपुल बहुरंग
नृपरानी परिजन सुकृत मधुकर बारि बिहंग
सीय स्वयंबर कथा सुहाई ॥ सरित सुहावनि सो छबि छाई
नदी नाव बहु प्रश्न अनेका । केवट कुसल उतर सबिबेका
पुनि अनुकथन परस्पर होई । पथिक समाज सोह सरि सोई
घोर धार भृगुनाथ रिसानी । घाट सुबंध राम बर बानी ॥
सानुज राम बिबाह उछाहू ॥ सो सुभ उमग सुखद सबकाहू
कहत सुनत हरषहिं पुलकाहीं । ते सुकृती जन मुदित नहाहीं

करै बार पथि के बंद जाए हेतु नदी पर सोहत हैं पं. ८ घोर धार टी. भृगु नाथ परशुराम को रिस सबके मान भंग करै को घोर धारा है यथा भृगु पति सुनि सुनि निर्भय बानी रिस तनु जरै होत बल हानी इत्यादि ॥ पं. १० सानुज टी. अनुज सहित राम बिबाह उछाह सब काहू के सुखदाई नदी के सुभग उमग हैं बरषाते नदी उमगतु है तातें यथा देवन्ह दीन्ही दुंदुभी प्रभु पर बरषहिं फूल ॥ इत्यादि यह बरषा ॥१०॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुहावनि अरु बहुत पावनि है पं॰ ६ हिम हिम टी॰ हिम सैल सुता और शिव को ब्याह हिम रितु है हिम रितु नें रितु का प्रारंभ सब तें सुरव्य समुझ के गीता में अ गहन परमेश्वर रूप लिख्यो है वा वर्ण मयत्री अगहन पूस हिम रितु माघ फा गुन सिसर सो भोजनादि सब विधितें सुखद अरु तैसोई प्रभु को जन्मोत्सव सुखद बरनव॰ राम के विवाह को समाज बरात सजब आदि सोई हर्ष म गल बहुत जामें औ सब नब संत रितु है ॥ बसंत में सब तरु फूलत हैं तैसेई बरात आदि जेठ अषाढ ग्रीषम अरु राम गवन दोऊ दुसह यथा सहन स के रघुबर बिरहागी चले लोग सब व्याकुल भागी इत्यादि ग्रीषम में तीक्ष

राम तिलक हित मंगल साजा । पर्व योग जनु जुरेउ समाजा ।
काई कुमति कैकेई केरी ॥ । परी जासु फल बिपति घनेरी
दो॰ सगन अमित अनपात सब भरत चरित जप याग
कलि अघ खल अवगुण कथन ते जल मल बकबाग
कीरति सरित छहूं रितु रूरी । समय सुहावनि पावनि भूरी
हिम हिम सैल सुता शिव व्याहू । शिशिर सुखद प्रभु जन्म उछाहू
बरनव राम बिवाह समाजू ॥ । सो मुद मंगल मय रितु राजू
ग्रीषम दुसह राम वन गवनू । पथ कथा खर आतप पवनू
वर्षा घोर निशाचर रारी ॥ । सुर कुल शालि सुमंगल कारी
राम राज सुख बिनय बड़ाई । विशद सुखद सोइ शरद सुहाई

न घाम औ पवन सोई इहां राम बधुन करि कह्यौ रघुबर के पंथ की कथा य था जो जगदीश इनहिं बन दीन्हा । कस न सुमन मय मारग कीन्हा ।। इत्यादि वर्षा सावन भादों बर्षा रितु सो घोर निशा संग्राम बर्णन यथा बाण विंदु अद वृष्टि अपारा ॥ इत्यादि कैसी है बर्षा देव कुल धान को पोषन हारी ॥ पं॰ १० राम राज टी॰ राम राज सोई कुआर कातिक शरद रितु उहां राम राज को सुख इहां रितु सुखद उहां बिनय बिशेष नीति इहां रितु विसद उज्वल उहां बड़ाई इहां सुहाई राम राज लौं सुख्य रामायण कथा आगे उत्तर चरित्र एहि हेतु ससुझि बालमीकि मुनि राज गादी लौं रामायण समाप्त कियो सोई भाव बिचारि गुसाईं नू हिम रितु नें प्रारंभ किये और सरद रितु में षट रितु की समाप्त करी अब सुकृता आदजल के गुन कहत हैं

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२ इत्यादि पं॰ ६ अद्भुत टी॰ यह सलिल जल अद्भुत है भाव सुनते ज्ञान वैराग्य आदि गुनकारी अरु विषय पियास अरु कामादि मनोमल हारी है॥ पं॰ ७ राम सुप्रेमहिं टी॰ राम विषयक सुप्रेम बिरचा के यह पानि पुष्टक रतु हैं यह पानी स्नान तें गलानि हरतु है यह कलि कलुष गलानि को हरतु है वह श्रमदूर करत है यह संसार श्रम को दूरि करि संतोष को पुष्ट करत है। सम॰

सुनी शिरोमणि सिय गुण गाथा। सोइ गुण अमल अनूपम पाथा
भरत सुभाउ सुशीतल ताई ॥ सदा एक रस बरणि न जाई
दो॰ अलोकनि बोलनि मिलनि प्रीति परस्पर हास
भायप भल चहुं बंधु की जल माधुरी सुवास ॥
आरति बिनय दीनता मोरी ॥ लघुता ललित सुवारि नवोरी
अद्भुत सलिल सुनत गुण कारी। आश पियास मनोमल हारी
राम सुप्रेमहिं पोषत पानी ॥ हरत सकल कलि कलुष गलानी
भव श्रम शोषक तोषत तोषा। शमन दुरित दुख दारिद दोषा
काम कोह मद मोह नसावन। विमल विवेक विराग बढ़ावन
सादर मज्जन पान किये तें ॥ मिटहिं पाप परिताप हिये तें
जिन यह वारि न मानस धोये। तिन कायर कलिकाल विगोये

तनासक दुरित पाप॥ पं॰ १० सादर मज्जन टी॰ श्रद्धायुक्त सुनि के प्रेम हो नो सो मज्जन धारन करणा सोपान विपरीत भावमें दंड कहतु हैं पं॰ ११ जिन यह टी॰ एहि जल सो जिन लोगन मनकी नहिं धोवा ते कादर कलिकाल ठगने ठगे से अलते विषयी ॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ता तब भगवत स्वरूप ज्ञान ना पोछे उपासना यह सनातन बेद मर्यादा रा खी ॥४२॥

त्रषित निरखि रविकर भव वारी। फिरहिं मृगा जिमि जीवदुखारी

दो० मति अनुहारि सुबारि गुण गण गन अन्हवाइ
सुमिरि भवानी शंकरहिं कह कवि कथा सुहाइ ॥
भरद्वाज जिमि प्रश्न किय याज्ञवल्क्य मुनि पाइ ॥
प्रथम सुखद संवाद सोइ कहिहौं हेतु लखाइ ॥ ॥
अब रघुपति पद पंकरुह हिय धरि पाय प्रसाद ॥
कहौं युगल मुनिवर्य कर मिलन सुभग संवाद

मान सरोवर
तालाब

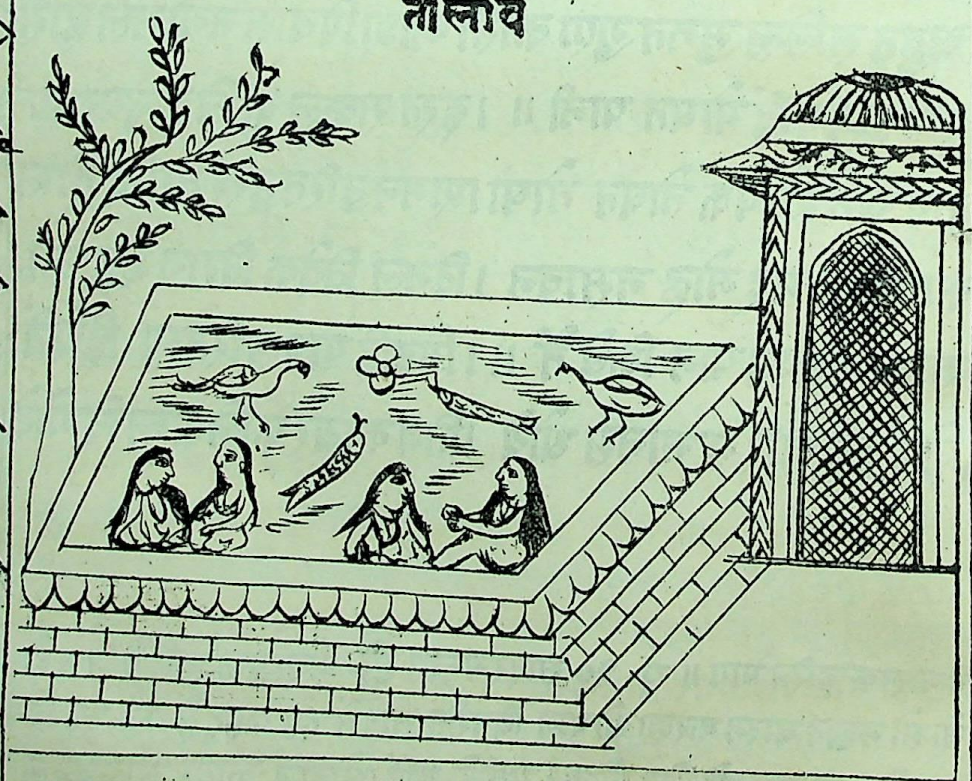

भरद्वाज मुनि बसहिं प्रयागा । जिनहिं राम पद अति अनुरागा
तापस सम दम दया निधाना । परमारथ पथ परम सुजाना ॥
माघ मकर गत रवि जब होई । तीरथ पतिहिं आव सब कोई
देव दनुज किन्नर नर श्रेणी । सादर मज्जहिं सकल त्रिवेणी
पूजहिं माधव पद जल जाता । परसि अछय बट हरषित गाता
भरद्वाज आश्रम अति पावन । परम रम्य मुनिवर मन भावन
तहां होइ मुनि रिषय समाजा । जाहिं जे मज्जन तीरथ राजा
मज्जहिं प्रात समेत उछाहा । कहहिं परस्पर हरि गुन गाहा

दो॰ ब्रह्म निरूपण धर्म बिधि बरनहिं तत्व बिभाग
कहहिं भक्ति भगवंत की संयुत ज्ञान बिराग ।

दुहि प्रकार भरि मकर नहाहीं । पुनि सब निज निज आश्रम जाहीं
प्रति संवत अति होइ अनंदा । मकर मज्जि गवनहिं मुनि बृंदा
एक बार भरि मकर नहाये । सब मुनीस आश्रम निसि धाये
याज्ञवल्क्य मुनि परम बिबेकी । भरद्वाज राखेउ पद टेकी ॥
सादर चरण सरोज पखारे । अति पुनीत आसन बैठारे ॥
करि पूजा मुनि सुयश बखानी । बोले अति पुनीत मृदु बानी
नाथ एक संशय बड़ मोरे । करतल बेद तत्व सब तोरे
कहत मोहि लागत भय लाजा । जो न कहौं बड़ होइ अकाजा

दो॰ संत कहहिं अस नीति प्रभु श्रुति पुराण जो गाव
होइ न बिमल बिबेक उर गुरु सन किये दुराव ॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अस विचारि प्रगटौं निज मोहू। हरहु नाथ करि जन पर छोहू
राम नाम कर अमित प्रभावा। संत पुराण उपनिषद गावा
संतत जपत संभु अविनाशी। शिव भगवान ज्ञान गुण राशी
आकर चारि जीव जग अहहीं। काशी मरत परम पद लहहीं
सो कि राम महिमा मुनि राया। शिव उपदेश करत करि दाया
राम कवन प्रभु पूछौं तोही। कहहु बुझाइ कृपा निधि मोही
एक राम अवधेश कुमारा॥। तिन कर चरित बिदित संसारा
नारि बिरह दुख लहेउ अपारा। भए रोष रण रावण मारा॥

दो. प्रभु सोइ राम कि अपर कोउ जाहि जपत त्रिपुरारि
सत्य धाम सर्बज्ञ तुम कहहु बिबेक बिचारि॥

जैसें मिटै मोह भ्रम भारी। कहहु सो कथा नाथ बिस्तारी
जागबल्क बोले मुसुकाई। तुमहिं बिदित रघुपति प्रभुताई
राम भक्त तुम मन क्रम बानी। चतुराई तुम्हारि मैं जानी॥
चाहहु सुनै राम गुण गूढ़ा। कीन्हेउ प्रश्न मनहुं अति मूढ़ा
तात सुनहु सादर मन लाई। कहहुं राम की कथा सुहाई॥
महा मोह महिषेष बिशाला। राम कथा कालिका कराला
राम कथा शशि किरण समाना। संत चकोर करहिं जेहि पाना
ऐसे संशय कीन्ह भवानी॥। महादेव तब कहा बखानी॥

दो. कहौं सकति अनुहारि अब उमा शंभु संवाद
भयउ समय जेहि हेतु जेहि सुनि मुनि मिटहिं बिषाद

एक बार त्रेता युग माहीं॥। शंभु गये कुंभज ऋषि पाहीं

संग सती जग जननि भवानी। पूजे ऋषि अखिलेश्वर जानी
राम कथा मुनि वर्य बखानी। सुनी महेश परम सुख मानी
ऋषि पूछा हरि भक्ति सुहाई । कही शंभु अधिकारी पाई ॥
कहत सुनत रघुपति गुण गाथा। कछु दिन तहां रहे गिरि नाथा
मुनि सन विदा मांगि त्रिपुरारी। चले भवन संग दक्ष कुमारी ॥
तेहि अवसर भंजन महि भारा । हरि रघुबंश लीन्ह अवतारा
पिता बचन तजि राज उदासी । दंडक वन बिचरत अविनाशी

दो· हृदय बिचारत जात हर केहि बिधि दरशन होइ
गुप्त रूप अवतरेउ प्रभु। गये जान सब कोइ ॥

सो· शंकर उर अति छोभ सती न जानहिं मर्म सोइ
तुलसी दरसन लोभ मन डर लोचन लालची

रावण मरण मनुज कर यांचा। प्रभु बिधि बचन कीन्ह चह सांचा
जो नहिं जाउं रहै पछतावा । करत बिचार न बनत बनावा ॥
इहि बिधि भये शोच बश ईशा। तेही समय जाय दश शीशा
लीन्ह नीच मारीचहि संगा । भयउ तुरत सोइ कपट कुरंगा
करि छल मूढ़ हरी बैदेही । प्रभु प्रताप उर बिदित न तेही
मृग बधि बंधु सहित हरि आये। आश्रम देखि नयन जल छाये
बिरह बिकल नर इव रघुराई । खोजत बिपिन फिरत दोउ भाई
कबहूं योग बियोग न जाके। देखा प्रगट बिरह दुख ताके

दो· अति बिचित्र रघुपति चरित जानहिं परम सुजान
जे मति मंद बिमोह बस हृदय धरहिं कछु आन

शम्भु समय तेहि रामहि देखा। उपजा हिय अति हर्ष बिशेषा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भरि लोचन छबि सिंधु निहारी। कुसमय जानि न कीन्ह चिन्हारी
जय सच्चिदानंद जग पावन। अस कहि चले मनोज नसावन
चले जात सिव सती समेता। पुनि पुनि पुलकित कृपा निकेता
सती सो दसा संभु की देखी। उर उपजा संदेह बिसेषी ॥
संकर जगत बंद्य जगदीसा। सुरनर मुनि सब नावत सीसा
तिन्ह नृप सुतहि कीन्ह परनामा। कहि सच्चिदानंद परधामा
भये मगन छबि तासु बिलोकी। अजहु प्रीति उर रहति न रोकी

दो॰ ब्रह्म जो व्यापक बिरज अज अकल अनीह अभेद
सो कि देह धरि होइ नर। जाहि न जानत वेद

बिष्नु जो सुर हित नर तनु धारी। सोउ सर्बज्ञ यथा त्रिपुरारी
खोजत सो कि अज्ञ इव नारी। ज्ञान धाम श्रीपति असुरारी
संभु गिरा पुनि मृषा न होई। सिव सर्बज्ञ जान सब कोई
अस संसय मन भयउ अपारा। होइ न हृदय प्रबोध प्रचारा
यद्यपि प्रगट न कहेउ भवानी। हर अंतरजामी सब जानी
सुनहु सती तव नारि सुभाऊ। संसय अस न धरिय उर काऊ
जासु कथा कुंभज ऋषि गाई। भगति जासु मैं मुनिहि सुनाई
सोइ मम इष्ट देव रघुबीरा। सेवत जाहि सदा मुनि धीरा

छं॰ मुनि धीर जोगी सिद्ध संतत बिमल मन जेहि ध्यावहीं
कहि नेति निगम पुराण आगम जासु कीरति गावहीं
सोइ राम व्यापक ब्रह्म भुवन निकाय पति माया धनी
अवतरेउ अपने भगत हित निज तंत्र नित रघुकुल मनी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सो॰ लागन उर उपदेश यदपि कहेउ शिव बार बहु ॥
बोले बिहंसि महेश। हरिमाया बल जानि जिय
जो तुम्हरे मन अति संदेहू। तो किन जाइ परीक्षा लेहू ॥
तब लगि बैठि रहौं बट छाहीं। जब लगि तुम ऐहौ मोहि पाहीं
जैसें जाइ मोह भ्रम भारी। करइ सो यतन बिबेक बिचारी
चली सती शिव आयसु पाई। करहिं बिचार करौं का भाई
इहां शंभु अस मन अनुमाना। दक्ष सुता कहं नहिं कल्याना
मोरेहुं कहे न संशय जाहीं। बिधि बिपरीत भलाई नाहीं
होइहै सोइ जो राम रचि राखा। को करि तर्क बढ़ावहि साखा
अस कहि जपन लगे हरिनामा। गई सती जहं प्रभु सुख धामा
दो॰ पुनि पुनि हृदय बिचार करि धरि सीता कर रूप
आगे होइ चलि पंथ तेहि जेहि आवत नृप रूप
लछमण दीख उमा कृत बेषा। चकित हृदय भा भयउ बिशेषा
कहिन सकत कछु अति गंभीरा। प्रभु प्रभाव जानत मति धीरा
सती कपट जानेउ सुर स्वामी। राम दरसी सब अंतर जामी
सुमिरत जाहि मिटत अज्ञाना। सोइ सर्वज्ञ राम भगवाना
सती कीन्ह चह तहउं दुराऊ। देखइ नारि सुभाव प्रभाऊ
निज माया बल हृदय बखानी। बोले बिहंसि राम मृदु बानी
जोरि पाणि प्रभु कीन्ह प्रणामू। पिता समेत लीन्ह निज नामू
कहेउ बहोरि कहां बृष केतू। बिपिन अकेलि फिरहु केहि हेतू
दो॰ राम बचन मृदु गूढ़ सुनि उपजा अति संकोच

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सती सभीत महेश पहं चली हृदय बड़ सोच
मैं शंकर कर कहा न माना। निज अज्ञान राम पहं आना
जाइ उतर अब देहौं काहा। उर उपजा अति दारुण दाहा
जाना राम सती दुख पावा। निज प्रभाव कछु प्रगटि जनावा
सती दीख कौतुक मग जाता। आगे राम सहित सिय भ्राता
फिर चितवा पाछें प्रभु देखा। सहित बंधु सिय सुंदर बेषा
जहं चितवति तहं प्रभु आसीना। सेवहिं सिद्ध मुनीश प्रवीना
देखे शिव बिधि बिष्णु अनेका। अमित प्रभाव एक ते एका
बंदत चरण करत प्रभु सेवा। बिबिध बेष देखे सब देवा

टी. रा. बा. ५६

दो. सती बिधात्री इंदिरा। देखी अमित अनूप
जेहि जेहि बेष अजादि सुर तेहि तेहि तनु अनुरूप
देखे जहं तहं रघुपति जेते। शक्तिन सहित सकल सुर तेते
जीव चराचर जे संसारा। देखे सकल अनेक प्रकारा
पूजहिं प्रभुहि देव बहु बेषा। राम रूप दूसर नहिं देखा
अवलोके रघुपति बहु तेरे। सीता सहित न बेष घनेरे॥
सोइ रघुवर सोइ लक्ष्मण सीता। देखि सती अति भई सभीता
हृदय कंप तनु सुधि कछु नाहीं। नयन मूंदि बैठी मग माहीं
बहुरि बिलोकेउ नयन उघारी। कछु न दीख तहं दक्षकुमारी
पुनि पुनि नाइ राम पद शीशा। चली तहां जहं रहे गिरीशा
दो. गई समीप महेश तब हंसि पूछी कुशलात
लीन्ह परीक्षा कवन बिधि कहहु सत्य सब बात

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सती समुझि रघुबीर प्रभाऊ। भय बस शिव सन कीन्ह दुराऊ
कछु न परीक्षा लीन्ह गोसाईं। कीन्ह प्रणाम तुम्हारिहि नाईं
जो तुम कहा सो मृषा न होई। मोर मन प्रतीति अस सोई
तब शंकर देखेउ धरि ध्याना। सती जो कीन्ह चरित सबजाना
बहुरि राम मायहिं शिर नावा। प्रेरि सतिहि जेहिं मृठ कहावा
हरि इच्छा भावी बलवाना। हृदय विचारत शंभु सुजाना
सती कीन्ह सीता कर बेषा। शिव उर भयउ विषाद बिशेषा
जो अब करौं सती सन प्रीती। मिटै भक्ति पथ होइ अनीती

दो· परम प्रेम नहिं जाइ तजि किये प्रेम बड़ पाप
प्रगट न कहत महेश कछु हृदय अधिक संताप

तबहि शंभु प्रभु पद सिरनावा। सुमिरत राम हृदय अस आवा
इहि तनु सतिहि भेट मोहि नाहीं। शिव संकल्प कीन्ह मनमाहीं
अस बिचारि शंकर मति धीरा। चले भवन सुमिरत रघुबीरा
चलत गगन भै गिरा सुहाई। जय महेश भलि भक्ति दृढ़ाई
अस पण तुम बिनु करै को आना। राम भक्ति समरथ भगवाना
सुनि नभ गिरा सती उर शोचू। पूछा शिवहिं समेत संकोचू
कीन्ह कवन पण कहहु कृपाला। सत्यधाम प्रभु दीन दयाला
यदपि सती पूछा बहु भांती। तदपि न कहेउ त्रिपुर आराती

दो· सती हृदय अनुमान किय सब जाना सर्बज्ञ
कीन्ह कपट मैं शंभु सन नारि सहज जड़ अज्ञ

सो· जल पय सरिस बिकाइ देखहु प्रीति की रीति भल

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बिलग होइ रस जाइ । कपट खटाई परत हीं ॥
हृदय शोच समुझत निज करणी । चिंता अमित जाइ नहिं बरणी ॥
कृपा सिंधु शिव परम अगाधा । प्रगट न कहेउ मोर अपराधा ॥
शंकर रुख अवलोकि भवानी । प्रभु मोहि तजेउ हृदय अकुलानी
निज अघ समुझि न कछु कहि जाई । तपै अवाइव उर अधिकाई ॥
सतिहि ससोच जानि वृष केतू । कहेउ कथा सुंदर सुख हेतू ॥
बरणत पंथ बिबिधि इतिहासा । बिश्वनाथ पहुंचे कैलासा ॥
तहं पुनि शंभु समुझि प्रण आपन । बैठे बटतर करि कमला सन ॥
शंकर सहज सरूप संभारा ॥ लागि समाधि अखंड अपारा
दो॰ सती बसहिं कैलाश तब अधिक शोच मन माहिं
मर्म्म न कोऊ जान कछु युग सम दिवस सिराहिं ॥
निति नव सोच सती उर भारा । कब जैहौं भव सागर पारा ॥।
मैं जो कीन्ह रघुपति अपमाना । पुनि पति बचन मृषा करि जाना
सो फल मोहिं बिधाता दीन्हा । जो कछु उचित रहा सो कीन्हा
अब बिधि अस बूझिय नहिं तोही । शंकर बिमुख जिआवहु मोही ॥
कहि न जाइ कछु हृदय गलानी । मन महं रामहिं सुमिरि सयानी
जो प्रभु दीनदयालु कहावा ॥। आरति हरण बेद यश गावा
तौ मैं विनय करौं कर जोरी । छूटै वेगि देह अब मोरी ॥
जो मोरे शिव चरण सनेहू ॥ । मन क्रम वचन सत्य व्रत येहू
दो॰ तौ सन दर्शी सुनिय प्रभु करो सो वेगि उपाय ॥
होइ मरण जेहि बिनहि श्रम दुस्सह बिपति बिहाय

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इहि बिधि दुखित प्रजेश कुमारी। अकथनीय दारुण दुख भारी
बीते संवत सहस सतासी। तजी समाधि संभु अबिनासी
राम नाम शिव सुमिरण लागे। जानेउ सती जगत पति जागे
जाय संभु पद बंदन कीन्हा। सनमुख शंकर आसन दीन्हा
लगे कहन हरि कथा रसाला। दक्ष प्रजेश भये तेहि काला
देखा बिधि बिचारि सब लायक। दक्षहि कीन्ह प्रजापति नायक
बड़ अधिकार दक्ष जब पावा। अति अभिमान हृदय तब आवा
नहिं कोउ अस जनमेउ जगमाहीं। प्रभुता पाय जाहि मद नाहीं

दो. दक्ष लिये मुनि बोलि सब करण लगे बड़ याग
नेवते सादर सकल सुर जे पावत मख भाग ॥

दी. रा. का. ४८

किन्नर नाग सिद्ध गंधर्वा ॥ बधुन समेत चले सुर सर्वा
बिष्णु बिरंचि महेश बिहाई। चले सकल सुर यान बनाई
सती बिलोके गगन बिमाना। जात चले सुंदर बिधि नाना
सुर सुंदरी करहिं कल गाना। सुनत श्रवण छूटहिं मुनि ध्याना
पूछेउ तब शिव कहेउ बखानी। पिता यज्ञ सुनि कै हरषानी
जो महेश मोहि आयसु देहीं। कछु दिन जाय रहौं मिस एहीं
पति परित्याग हृदय दुखभारी। कहेन निज अपराध बिचारी
बोली सती मनोहर बानी ॥ भय संकोच प्रेम रस सानी ॥

दो. पिता भवन उत्सब परम जो प्रभु आयसु होइ
तो मैं जाउं कृपाय तन सादर देखन सोइ ॥

कहेउ नीक मोरे मन भावा। यह अनुचित नहिं नेवत पठावा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दक्ष सकल निज सुता बुलाई। हमरे वयर तुम्हैं विसराई॥
ब्रह्म सभा हम सन दुख माना। तेहि ते अजहुं करहिं अपमाना
जो बिनु बोले जाहु भवानी। रहै न शील सनेह न कानी
यदपि मित्र प्रभु पितु गुरु गेहा। जाइय बिनु बोले न संदेहा
तदपि बिरोध मान जहं कोई। तहां गये कल्याण न होई
भांति अनेक शंभु समुझावा। भावी बस न ज्ञान उर आवा
कह प्रभु जाहु जो बिनहिं बुलाये। नहिं भलि बात हमारे भाये

दो॰ कहि देखा हर यत्न बहु रहै न दक्ष कुमारि
दिये मुख्य गण संग तब बिदा किये त्रिपुरारि

पिता भवन जब गई भवानी। दक्ष त्रास काहु न सन मानी
सादर भलेहिं मिली इक माता। भगिनी मिलीं बहुत मुसुकाता
दक्ष न कछु पूछी कुशलाता। सतिहि बिलोकि जरे सब गाता
सती जाइ देखेउ तब यागा। कतहुं न दीख शंभु कर भागा
तब चित चढ़ेउ जो शंकर कहेऊ। प्रभु अपमान समुझि उर दहेऊ
पाछिल दुख न हृदय अस व्यापा। जस यह भयउ महा परितापा
यद्यपि जग दारुण दुख नाना। सबतें कठिन जाति अपमाना
समुझि सोच तिहि भो अति क्रोधा। बहु बिधि जननी कीन्ह प्रबोधा

दो॰ शिव अपमान न जाइ सहि हृदय न होत प्रबोध
सकल सभहि हठि हटकि तब बोली बचन स क्रोध

सुनहु सभा सद सकल मुनिंदा। कही सुनी जिन्ह शंकर निंदा
सो फल तुरत लहव सब काहू। भली भांति पछिताब पिताहू

टी॰ रा॰ टी॰ ५०

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संत शंभु श्रीपति श्रपबादा। सुनिय जहां तहं श्रसि मर्य्यादा
काटिय तासु जीभ जो वसाई। श्रवण मूंदि नहिं चलियपराई
जगदातमा महेश पुरारी। जगत जनक सब के हितकारी
पिता मंदमति निंदत तेही। दक्ष शुक्र संभव यह देही
तजि हौं तुरत देह तेहि हेतू। उर धरि चंद्रमौलि वृष केतू
श्रस कहि योग श्रगिनि तनु जारा। भयउ सकल मख हाहाकारा

सं॰ सती मरण सुनि शंभु गण लगे करण मख खीश
यज्ञ विध्वंस विलोकि भृगु रक्षा कीन्ह मुनीश ॥

समाचार जब शंकर पाये। बीरभद्र करि कोप पठाये
यज्ञ विध्वंस जाय तिन्ह कीन्हा। सकल सुरन्ह विधिवत फल दीन्हा
भद्र जग विदित दक्ष गति सोई। जस कछु शंभु विमुख की होई
यह इतिहास सकल जग जाना। तातें मैं संक्षेप बखाना ॥
सती मरत हरि सन वर मांगा। जन्म जन्म शिव पदश्रनुरागा
तेहि कारण हिम गिरि गृह जाई। जनमी पारबती तनु पाई
जबतें उमा शैल गृह श्राई। सकल सिद्धि संपति तहं छाई
जहं तहं मुनिन्ह सुश्राश्रम कीन्हें। उचित वास हिम भूधर दीन्हे

दो॰ सदा सुमन फल सहित सब द्रुम नव नाना जाति
प्रगटी सुंदर शैल पर मणि श्राकर बहु भांति

सरिता सब पुनीत जल वहई। खग मृग मधुप सुखी सब रहई
सहज वयर सब जीवन त्यागा। गिरि पर सकल करहिं श्रनुरागा
सोह शैल गिरिजा गृह श्राये। जिमि श्रनुराग भक्ति के पाये

दी॰ वा॰ ५१

लिति बूतन मंगल गृह तासू। ब्रह्मादिक गावहिं यश जासू
नारद समाचार सब पाये। कौतुक हिम गिरि गेह सिधाये
शैल राज बड़ आदर कीन्हा। पद पखारि वर आसन दीन्हा
नारि सहित मुनि पद सिर नावा। चरण सलिल सब भवन सिंचा
निज सौभाग्य बहुत गिरि बरणा। सुता बोलि मेली मुनि चरणा
दो॰ त्रिकालज्ञ सर्वज्ञ तुम गति सर्वत्र तुम्हारि ॥
कहहु सुता के दोष गुण मुनिवर हृदय बिचारि
कह मुनि बिहंसि गूढ़ मृदुबानी। सुता तुम्हारि सकल गुणखानी
सुंदरि सहज सुशील सयानी। नाम उमा अंबिका भवानी
सब लक्षण संपन्न कुमारी। होइहि संतत पियहि पियारी
सदा अचल एहि कर अहिबाता। दुहि तें यश पैहहिं पितु माता
होय है पूज्य सकल जग माहीं। एहि सेवत कछु दुर्लभ नाहीं
एहि कर नाम सुमिरि संसारा। त्रिय चढ़िहहिं पतिव्रत असिधारा
शैल सुलक्षणि सुता तुम्हारी। सुनहु जे अब अवगुण दुइचारी
अगुण अमान मातु पितु हीना। उदासीन सब संशय छीना
दो॰ योगी जटिल अकाम तन नगन अमंगल भेख
अस स्वामी एहि कहं मिलिहि परी हस्त अस रेख
सुनि मुनि गिरा सत्य जिय जानी। दुख दंपतिहि उमा हरषानी
नारद हूं यह भेद न जाना। दशा एक समुझत बिलगाना
सकल सखी गिरिजा गिरि मयना। पुलक शरीर भरे जल नयना
होइ न मृषा देव ऋषि भाखा। उमा सो बचन हृदय धरि राखा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपजेउ शिव पद कमल सनेहू। मिलन कठिन मन भा संदेहू
जानि कुअवसर प्रीति दुराई। सखी उछंग बैठि पुनि जाई
छुधि न होइ देव ऋषि बानी। सोचहिं दंपति सखी सयानी
उर धरि धीर कहै गिरि राऊ। कहहु नाथ का करिय उपाऊ
दो॰ कह मुनीश हिमवंत सुनु जो विधि लिखा लिलार
देव दनुज नर नाग मुनि कोउ न मेटनि हार ॥
तदपि एक मैं कहौं उपाई। होइ करै जो दैव सहाई॥
जस वर मैं बरनेउ तुम पाहीं। मिलिहि उमहि कछु संशय नाहीं
जे जे बर के दोष बखाने। ते सब शिव पहं मैं अनुमाने
जो बिबाह शंकर सन होई। दोषो गुण सम कह सब कोई
जो अहि सेज शयन हरि करहीं। बुध कछु तिन कहं दोषन धरहीं
भानु कृशानु सर्ब रस खाहीं। तिन कहं मंद कहत कोउ नाहीं
शुभ अरु अशुभ सलिल सब बहहीं। सुरसरि कोउ न अपावन कहहीं
समरथ कहं नहिं दोष गुसांई। रवि पावक सुरसरि की नांई
दो॰ जो अस हिं दूषा करहिं। जड़ बिबेक अभिमान
परहिं कल्प भर नर्क महिं। जीव कि ईश समान
सुरसरि कृत जल वारुणी जाना। कबहु न संत करहिं तेहि पाना
सुरसरि मिले सु पावन जैसे। ईश अनीसहि अंतर तैसे ॥
शंभु सहज समरथ भगवाना। इहि बिबाह सब बिधि कल्याना
दुराराध्य पै अहहिं महेसू। आशु तोष पुनि किये कलेसू
जो तप करै कुमारि तुम्हारी। भाविउ मेटि सकै त्रिपुरारी॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यद्यपि वर अनेक जग माहीं। इहि कहं शिव तजि दूसर नाहीं
वरदायक प्रणतारति भंजन। कृपासिंधु सेवक मन रंजन
इच्छित फल बिनु शिव आराधे। लहइ न कोटि योग जप साधे
दो॰ अस कहि नारद सुमिरि हरि गिरिजहिं दीन्ह असीस
होइहि यहि कल्याण अब संशय तजहु गिरीश
कहि अस ब्रह्म भवन मुनि गयेऊ। आगिल चरित सुनहु जस भयेऊ
पतिहि एकांत पाय कह मयना। नाथ न मैं समुझेउं मुनि बयना
जो घर वर कुल होइ अनूपा। करिय बिवाह सुता अनुरूपा
नतु कन्या वरु रहौ कुमारी। कंत उमा मम प्राण पियारी
जो न मिलिहि वर गिरिजहि जोगू। गिरि जड़ सहज कहहिं सब लोगू
सो बिचारि पति करहु बिवाहू। जेहि न बहोरि होइ उर दाहू
अस कहि परी चरण धरि शीशा। बोले सहित सनेह गिरीशा
बरु पावक प्रगटै शशि माहीं। नारद बचन अन्यथा नाहीं ॥
दो॰ प्रिया सोच परिहरहु सब सुमिरहु श्री भगवान
पार्वती जिन निर्मयउ सोइ करिहहिं कल्यान ॥
अब जो तुमहिं सुता पर नेहू। तो अस जाय सिखावन देहू
करै सो तप जेहि मिलहिं महेशू। आन उपाय न मिटिहि कलेशू
नारद बचन स गर्भ सहेतू ॥। सुंदर सब गुण निधि वृष केतू
अस बिचारि तुम तजि सबशंका। सबहि भांति शंकर अकलंका
सुनि पति बचन हर्ष मन माहीं। गई तुरत उठि गिरिजा पाहीं
उमहिं बिलोकि नयन भरि बारी। सहित सनेह गोद बैठारी ॥

टी॰ रा॰ बा॰ ५५

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बारहि बार लेति उर लाई । गद गद कंठ न कछु कहि जाई
जगत मातु सर्वज्ञ भवानी । मातु सुखद बोली मृदु बानी
दो॰ सुनहु मातु मैं दीख अस सपन सुनाऊं तोहि
सुंदर गौर सु विप्रवर । अस उपदेशेउ मोहि ।
करहु जाइ तप शैल कुमारी । नारद कहा सो सत्य बिचारी
मातु पितहि पुनि यह मत भावा । तप सुख प्रद दुख दोष नसावा
तप बल रचै प्रपंच बिधाता । तप बल बिष्नु सकल जग त्राता
तप बल शंभु करहिं संहारा । तप बल शेष धरहिं महि भारा
तप अधार सब सृष्टि भवानी । करहु जाइ तप अस जिय जानी
सुनत बचन बिस्मित महतारी । सपन सुनायेउ गिरिहि हंकारी
मातु पितहिं बहु बिधि समुझाई । चली उमा तप हित हरषाई
प्रिय परिवार पिता अरु माता । भये बिकल मुख आवन बाता
दो॰ बेद सिरा मुनि आइ तब सबहि कहा समुझाइ
पार्वती महिमा सुनत रहे प्रबोधहि पाइ ॥
उर धरि उमा प्रान पति चरणा । जाइ बिपिन लागीं तप करणा
अति सुकुमारि न तनु तप योगू । पति पद सुमिरि तजेउ सब भोगू
नित नव चरण उपज अनुरागा । बिसरी देह तपहि मन लागा
संबत सहस मूल फल खाये । सागक खाय सत बर्ष गंवाये
कछु दिन भोजन बारि बतासा । किये कठिन कछु दिन उपवासा
बेल पात महि परे सुखाई । तीनि सहस संबत सो खाई
पुनि परिहरेउ सुखानेउ पर्णा । उमा नाम तब भयउ अपर्णा

टी॰ रा॰ बा॰ ५५

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

देखि उमहिं तब क्षीण शरीरा। ब्रह्म गिरा भइ गगन गंभीरा
दो॰ भयउ मनोरथ सुफल तव सुनु गिरिराज कुमारि
परिहरु दुसह कलेश सब अब मिलिहहिं त्रिपुरारि
अस तप काहु न कीन्ह भवानी। भये अनेक धीर मुनि ज्ञानी
अब उर धरहु ब्रह्म बर बानी। सत्य सदा संतत शुचि जानी
आवै पिता बुलावन जबहीं। हठ परिहरि घर जायहु तबहीं
मिलहिं तुमहिं जब सप्त ऋषीशा। जानेहु तब प्रमाण बागीशा
सुनत गिरा बिधि गगन बखानी। पुलक गात गिरिजा हरषानी
उमा चरित मैं सुंदर गावा। सुनहु शंभु कर चरित सुहावा
जबतें सती जाइ तनु त्यागा। तबतें शिव मन भयेउ बिरागा
जपहिं सदा रघुनायक नामा। जहं तहं सुनहिं राम गुणग्रामा
दो॰ चिदानंद सुख धाम शिव विगत मोह मद काम ॥
बिचरहिं महि धरि हृदय हरि सकल लोक अभिराम
कतहुं मुनिन उपदेशहिं ज्ञाना। कतहुं राम गुण करहिं बखाना
यदपि अकाम तदपि भगवाना। भक्त बिरह दुख दुखित सुजाना
एहि बिधि गयेउ काल बहु बीती। नित नव होइ राम पद प्रीती
नेम प्रेम शंकर कर देखा। अबिचल हृदय भक्ति कीं रेखा
प्रगटे राम कृतज्ञ कृपाला। रूप शील निधि तेज बिशाला
बहु प्रकार शंकरहि सराहा। तुम बिनु अस ब्रत को निरवाहा
बहु विधि राम शिवहि समुझावा। पारवती कर जन्म सुनावा
अति पुनीत गिरिजा की करणी। बिस्तर सहित कृपा निधि बरणी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो॰ अब बिनती मम सुनहु शिव जो मो पर निजनेहु
जाइ बिवाहहु शैलजहिं यह मोहि मांगे देहु।
कह शिव यदपि उचित अस नाहीं। नाथ बचन पुनि मेटि न जाहीं
शिर धरि आयसु करिय तुम्हारा। परम धरम यह नाथ हमारा
मातु पिता गुरु प्रभु की बानी। बिनहिं बिचार करिय शुभ जानी
तुम सब भांति परम हित कारी। आज्ञा सिर पर नाथ तुम्हारी
प्रभु तोषेउ सुनि शंकर बचना। भक्ति बिवेक धर्म युत रचना।
कह प्रभु हर तुम्हार प्रण रहेऊ। अब उर राखेउ जो हम कहेऊ
अंतर्धान भये अस भाखी। शंकर सोइ मूरति उर राखी
तबहिं सप्त ऋषि शिव पहं आये। बोले प्रभु अस बचन सुहाये
दो॰ पारवती पहं जाइ तुम प्रेम परीक्षा लेहु ॥
गिरिहि प्रेरि पठवेहु भवन दूर करेहु संदेहु ॥
ऋषिन गौरि देखी तहं कैसी। मूरति मंत तपस्या जैसी ॥
बोले मुनि सुन शैल कुमारी। करहु कवन कारण तप भारी
केहि आराधहु का तुम चहहू। हम सन सत्य मर्म सब कहहू
सुनत ऋषिन के बचन भवानी। बोली गूढ़ मनोहर बानी
कहत मर्म मन अति सकुचाई। हंसिहहु सुनि हमारि जड़ताई
मन हठ परा न सुने सिखावा। चहत वारि पर भीति उठावा
नारद कहा सत्य सोइ जाना। बिनु पंखन हम चहत उड़ाना
देखिय मुनि अविवेक हमारा। चाहत पति शंकर अविकारा
दो॰ सुनत बचन बिहंसे ऋषय गिरि संभव तव देह

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नारद कर उपदेश सुनि कहहु बसे को गेह ॥
दक्ष सुतन उपदेशिन जाई । तिन फिरि भवन न देखा आई
चित्र केतु कर घर उन घाला । कनक कशिपु कर पुनि अस हाला
नारद शिख जु सुनहिं नर नारी । अवश भवन तजि होंहिं भिखारी
मन कपटी तन सज्जन चीन्हा । आप सरिस सबही चह कीन्हा
तेहि के वचन मान बिस्वासा । तुम चाहहु पति सहज उदासा
निर्गुण निलज कुवेष कपाली । अकुल अगेह दिगंबर व्याली
कहहु कवन सुख अस वर पाये । भल भूलिहु ठगके बौराये
पंच कहे शिव सती विवाही । पुनि अवडेरि मरा दुख ताही

टी० रा० बा० ५८

दो० अब सुख सोवत सोच नहिं भीख मांगि भव खाहि
सहज एकाकिन के भवन कबहुं कि नारि खटाहि

अजहूं मानहु कहा हमारा । हम तुम कहं बर नीक बिचारी
अति सुंदर शुचि सुखद सुशीला । गावहिं बेद जासु यश लीला
दूषण रहित सकल गुण रासी । श्रीपति पुर वैकुंठ निवासी
अस बर तुमहिं मिलाउब आनी । सुनतबिहंसि कह वचन भवानी
सत्य कहहु गिरि भव तन एहा । हठ न छूट छूटै बरु देहा ॥
कन कौ पुनि पषान नें होई । जारहु सहज न परिहर सोई
नारद बचन न मैं परिहरऊं । बसौ भवन उजरो नहिं डरऊं
गुरु के बचन प्रतीति न जेही । सपनेहु सुगम न सुख सिधि तेही

दो० महादेव अवगुण भवन बिष्णु सकल गुण धाम
जेहि कर मन रम जाहि सन तेहि तेहि सन काम

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जो तुम मिलतेउ प्रथम मुनीशा। सुनतेउ सिख तुम्हारि धरि शीशा
अब मैं जन्म शंभु हित हारा। को गुण दोष कहिं कै बिचारा
जो तुम्हरे हठ हृदय बिशेषी। रहि न जाइ बिनु किये बरेषी
तो कौतुकि अन्ह आलस नांही। बर कन्या अनेक जग माहीं
जन्म कोटि लगि रगरि हमारी। बरौं शंभु नत रहौं कुमारी।
तजौं न नारद कर उपदेशू ॥ आप कहहिं सतबार महेशू
मैं पा परौं कहै जगदंबा ॥ तुम गृह गवनहु भयउ बिलंबा
देखि प्रेम बोले मुनि ज्ञानी। जय जय जय जगदंब भवानी

दो· तुम माया भगवान शिव सकल जगत पितु मात
नाइ चरण सिर मुनि चले पुनि पुनि हर्षित गात

जाइ मुनिन्ह हिमवन्त पठाये। करि बिनती गिरिजहि गृह ल्याये
बहुरि सप्त ऋषि शिव पहं जाई। कथा उमा की सकल सुनाई
भये मगन शिव सुनत सनेहा। हरषि सप्त ऋषि गवने गेहा
मन थिर करि तब शंभु सुजाना। लगे करण रघुनायक ध्याना
तारक असुर भये तेहि काला। भुज प्रताप बल तेज बिशाला
ते सब लोक लोकपति जीते। भये देव सुख संपति रीते ॥
अजर अमर सो जीति न जाई। हारे सुर करि बिबिधि लराई
तब बिरंचि सन जाइ पुकारे। देखे बिधि सब देव दुखारे

दो· सब सन कहा बुझाइ बिधि दनुज निधन तबहोइ
शंभु शुक्र संभूत सुत। इहिं जीते रण सोइ ॥

मोर कहा सुनि करहु उपाई। होइहि ईश्वर करहि सहाई

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सती जो तजी दक्ष मख देहा। जनमी जाइ हिमाचल गेहा
तेइ तप कीन्ह संभु पति लागी। शिव समाधि बैठे सब त्यागी
यदपि अहै असमंजस भारी। तदपि बात इक सुनहु हमारी
पठवहु काम जाइ शिव पाहीं। करै क्षोभ शंकर मन माहीं
तब हम जाइ शिवहिं सिरनाई। करवाउब बिवाह बरि आई
इहि बिधि भलेहिंदेव हित होई। मत अति नीक कहा सब कोई
अस्तुति तुरत कीन्ह अति हेतू। प्रगटेउ विषम बाण रख केतू

दो॰ सुरन कही निज बिपति सब सुनि मन कीन्ह बिचार
संभु बिरोध न कुशल मोहि बिहंसि कहेउ अस मार
तदपि करब मैं काज तुम्हारा। श्रुति कह परम धर्म उपकारा
परहित लागि तजै जो देही। संतत संत प्रशंसहिं तेही
अस कहि चलेउ सबहिं सिरनाई। सुमन धनुष कर सहित सहाई
चलत मार अस हृदय बिचारा। शिव बिरोध ध्रुव मरण हमारा
तब आपन प्रभाव विस्तारा। निज बस कीन्ह सकल संसारा
कोपेउ जबहिं वारिचर केतू। छण महं मिटे सकल श्रुति सेतू
ब्रह्म चर्य्य व्रत संयम नाना। धीरज धर्म ज्ञान विज्ञाना॥
सदाचार जप योग विरागा। सभय बिबेक कटक सब भागा

छं॰ भागे बिबेक सहाय सहित सो सुभट संयुग महि मुरे
सद ग्रंथ पर्वत कंदरन महं जाइ तेहि अवसर दुरे
होनि हार करतार को रखवार जग खरभर परा
दृढ़ माथ केहि रति नाथ जेहि कहं कोपि धनुसर कर धरा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो॰ जे सजीव जग अचरचर नारि पुरुष अस नाम
ते निज निज मर्य्याद तजि भये सकल वस काम
सब के हृदय मदन अभिलाषा। लता निहारि नवहिं तरु शाखा
नदी उमगि अंबुधि कहं धाईं। संगम करहिं तलाव तलाईं
जहं अस दशा जड़न की बरणी। को कहि सके सचेतन करणी
पशु पक्षी नभ जल थल चारी। भये काम वस समय बिसारी
मदन अंध व्याकुल सब लोका। निशि दिन नहिं अवलोकहिं कोका
देव दनुज नर किन्नर व्याला॥। प्रेत पिशाच भूत बैताला
इन की दशा न कहेउ बरवानी। सदा काम के चेरे जानी॥
सिद्ध विरक्त महा मुनि योगी। तेपि काम वस भये वियोगी
छं॰ भये काम वस योगीश तापस पामरन की को कहै॥
देखहिं चराचर नारि मय जे ब्रह्म मय देखत रहे॥
अबला विलोकहिं पुरुष मय जग पुरुष सब अबला मयं
दृढ़ दंड भरि ब्रह्मांड भीतर काम कृत कौतुक अयं॥
सो॰ धरा न काहू धीर सब के मन मन सिज हरे
जेहि राखे रघुबीर ते उबरे तेहि काल महं
उभय घरी अस कौतुक भयऊ। जब लगि काम शंभु पहं गयऊ
शिवहिं विलोकि ससंकेउ मारू। भयउ यथा थित सब संसारू
भये तुरत जग जीव सुखारे॥। जिमि मद उतरि गये मतवारे
रुद्रहि देखि मदन भय माना। दुरा धर्ष दुर्गम भगवाना॥
फिरत लाज कछु कहि नहिं जाई। मरण ठानि मन रचेसि उपाई

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रगटिसि तुरत रुचिर ऋतु राजा। कुसुमित नव तरु राज विराजा
वन उपवन वापिका तड़ागा। परम सुभग सब दिशा विभागा
जहं तहं जनु उमगत अनुरागी। देखि मुएहु मन मनसिज जागी
छं॰ जागेउ मनोभव मुए मन बन सुभगता न परै कही ॥
शीतल सुगंध सुमंद मारुत मदन अनल सखा सही
बिकसे सरन्हि बहु कंज गुंजत पुंज मंजुल मधु करा ॥
कल हंस पिक शुक सरस रव करि गान नाचहिं अपसरा
दो॰ सकल कला करि कोटि बिधि हारेउ सेन समेत
चली न अचल समाधि शिव कोपेउ हृदय निकेत

टी॰ रा॰ बा॰ ६२

देखि रसाल बिटप बर साखा। तेहि पर चढ़ेउ मदन मन माखा
सुमन चाप निज सर संधाने। अति रिस ताकि श्रवन लगि ताने
छाड़े बिषम बिशिख उर लागे। छूटि समाधि शंभु तब जागे ॥
भयउ ईश मन छोभ बिशेषी। नयन उघारि सकल दिशि देखी
सौरभ पल्लव मदन बिलोका। भयउ कोप कंपेउ त्रैलोका ॥
तब शिव तीसर नयन उघारा। चितवत काम भयउ जरि छारा
हाहा कार भयउ जग भारी। डरपे सुर भये असुर सुखारी
समुझि काम सुख सोचहिं भोगी। भये अकंटक साधक योगी
छं॰ योगी अकंटक भये पति गति सुनति रति मूर्छित भई ॥
रोदति बदति बहु भांति करुणा करति शंकर पहं गई
अति प्रेम करि बिनती बिबिधि बिधि जोरि कर सन्मुख रही
प्रभु आशु तोष कृपाल शिव अबला निरखि बोले सही

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो॰ अबतें रति तव नाथ कर होइहि नाम अनंग ॥
बिनु वपु व्यापिहि सबहिं पुनि सुन निज मिलन प्रसंग
जब यदुवंश कृष्ण अवतारा। होइहि हरण महा महि भारा
कृष्ण तनय होइहि पति तोरा। वचन अन्यथा होइ न मोरा
रति गवनी सुनि शंकर बानी। कथा अपर अब कहौं बखानी
देवन समाचार सब पाये ॥। ब्रह्मादिक बैकुंठ सिधाये ॥
सब सुर बिष्णु बिरंचि समेता। गये जहां शिव कृपा निकेता
पृथक् पृथक् तिन कीन्ह प्रशंसा। भये प्रसन्न चंद्र अवतंसा
बोले कृपा सिंधु वृष केतू। कहहु अमर आवेहु केहि हेतू
कह बिधि तुम प्रभु अंतर जामी। तदपि भक्ति वस बिनवउं स्वामी

दो॰ सकल सुरन के हृदय अस शंकर परम उछाह
निज नयननि देखा चहहिं नाथ तुम्हार बिवाह
यह उत्सव देखिय भरि लोचन। सो कछु करिय मदन मद मोचन
काम जारि रति कहं वर दीन्हा। कृपा सिंधु यह अति भल कीन्हा
सासति करि पुनि करहिं पसाऊ। नाथ प्रभुन कर सहज सुभाऊ
पारवती तप कीन्ह अपारा। करहु तासु अब अंगी कारा
सुनि बिधि बचन समुझि प्रभु बानी। ऐसेइ होउ कहा सुख मानी
तब देवन दुंदुभी बजाई ॥। बरषि सुमन जय जय सुरसाईं
अवसर जानि सप्त ऋषि आये। तुरतहिं बिधि गिरि भवन पठाये
प्रथम गये जहं रही भवानी। बोले बचन मधुर छल सानी

दो॰ कहा हमार न सुनेहु तब नारद कर उपदेश

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अबभा कूठ तुम्हार पण जारउ काम महेश
सुनि बोली मुसकाइ भवानी । उचित कहेहु मुनिवर विज्ञानी
तुम्हरे जान काम हर जारा । अब लगि शंभु रहे सबिकारा
हमरे जान सदा शिव योगी । अज अनवद्य अकाम अभोगी
जो मैं शिव सेयेउं अस जानी । प्रीति समेत कर्म मन बानी
तो हमार पण सुनहुं मुनीशा । करिहहिं सत्य कृपा निधि ईशा
तुम जो कहा हर जारउ मारा । सो अति बड़ अविवेक तुम्हारा
तात अनल कर सहज सुभाऊ । हिम तेहि निकट जाइ नहिं काऊ
गये समीप सो अवशि नसाई । अस मन मथ महेश की नाई

टी. गा. बा. ६४

दो. हिय हरषे मुनि बचन सुनि देखि प्रीति विश्वास
चले भवानिहिं नाइ सिर गये हिमाचल पास

सब प्रसंग गिरि पतिहिं सुनावा । मदन दहन सुनि अति दुख पावा
बहुरि कहेउ रतिकर वरदाना । सुनि हिमवंत बहुत सुख माना
हृदय विचारि शंभु प्रभुताई । सादर मुनिवर लिये बुलाई ॥
सुदिन सुनखत सुघरी सुहाई । बेगि बेद विधि लगन धराई
पत्री सप्त ऋषिन सोइ दीन्ही । गहि पद विनय हिमाचल कीन्ही
जाइ विधिहिं तिन दीन्ह सो पाती । बांचत प्रीति न हृदय समाती
लगन बांचि अज सबहिं सुनाई । हरषे मुनि सब सुर समुदाई
सुमन वृष्टि नभ बाजन बाजे । मंगल कलश दशहुं दिशि साजे

दो. लगे संवारन सकल सुर वाहन विविधि विमान
होहिं सगुन मंगल सुभग करहिं अपसरा गान।

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शिवहिं शंभु गण करहिं सिंगारा। जटा मुकुट अहि मौर संवारा
कुंडल कंकण पहिरे व्याला। तन विभूति पट केहरि छाला॥
ससि ललाट सुंदर सिर गंगा। नयन तीन उपवीत भुजंगा
गरल कंठ उर नर सिर माला। असिव भेष शिवधाम कृपाला
कर त्रिशूल अरु डमरु बिराजा। चले बसह चढ़ि बाजहिं बाजा
देखि शिवहिं सुर त्रियमुसुकाहीं। वर लायक दुलहिनि जग नाहीं
बिष्नु बिरंचि आदि सुर ब्राता। चढ़ि चढ़ि वाहन चले बराता
सुर समाज सब भांति अनूपा। नहिं बरात दूलह अनुरूपा

दो. बिष्नु कहा अस विहंसि तब बोलि सकल दिशराज
बिलग बिलग होइ चलहु सब निज निज सहित समाज

पर अनुहार बरात न भाई॥ हंसी करैहहु पर पुर जाई॥
बिष्नु बचन सुनि सुर मुसुकाने। निज निज सेन सहित बिलगाने
मनहीं मन महेश मुसुकाहीं। हरि के व्यंग बचन नहिं जाहीं
अति प्रिय बचन सुनत हरि केरे। भृंगी प्रेरि सकल गण टेरे
शिव अनुशासन सुनि सब आये। प्रभु पद जलज शीश तिन नाये
नाना बाहन नाना भेषा॥ विहंसे शिव समाज निज देखा
कोउ मुख हीन बिपुल मुख काहू। बिनु पद कर कोउ बहु पदबाहू
बिपुल नयन कोउ नयन बिहीना। रिष्ट पुष्ट कोउ अति तनु क्षीना

छं. तनु क्षीण कोउ अति पीन पावन कोउ अपावन तनुधरे
भूषण कराल कपाल कर सब सद्य शोणित तनु भरे
खर श्वान सुअर शृगाल मुख गण भेष अगणित को गने

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बहु जिनिस प्रेत पिशाच योगिनि भांति बरनत नहिं बने
सो॰ नाचहिं गावहिं गीत। परम तरंगी भूत सब ॥
देखत अति बिपरीत। बोलहिं बचन बिचित्र बिधि
जस दूलह तसबनी बराता ॥। कौतुक बिबिधि होहिं मग जाता
इहां हिमाचल रचेउ बिताना ॥ अति बिचित्र नहिं जाय बखाना
शैल सकल जहं लगि जग माहीं। लघु बिशाल नहिं बरन सिराहीं
बन सागर सब नदी तलावा। हिम गिरि सब कहं नेवत पठावा
काम रूप सुंदर तनु धारी ॥ । सहित समाज सहित बरनारी
गये सकल तु हिमाचल गेहा। गावहिं मंगल सहित सनेहा
प्रथमहिं गिरि बहु गृह संबराये। यथा योग जहं तहं सब छाये
पुर शोभा अवलोकि सुहाई। लागे लघु बिरंचि निपुणाई
कं॰ लघु लाग बिधि की निपुणता अवलोकि पुर शोभा सही
बन बाग कूप तड़ाग सरिता सुभग सब सक को कही
मंगल बिपुल तोरण पताका केतु गृह गृह सोहहीं।
बनिता पुरुष सुंदर चतुर छबि देखि मुनि मन मोहहीं
दो॰ जगदंबा जहं अवतरी सो पुर बरनि न जाइ
रिद्धि सिद्धि संपति सकल नित नूतन अधिकाइ
नगर निकट बरात जब आई। पुर चर भर शोभा अधिकाई
करि बनाव सजि बाहन नाना। चले लेन सादर अगवाना
हिय हरषे सुर सेन निहारी। हरिहि देखि अति भये सुखारी
शिव समाज जब देखन लागे। बिडरि चले बाहन सब भागे

टी॰ रा॰ बा॰ ६६

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

धरि धीरज तहं रहे सयाने । बालक सब लै जीव पराने
गये भवन पूछहिं पितु माता । कहहिं बचन भय कंपित गाता
कहिय कहा कहि जाइ न बाता । यम कर धार किधौं बरियाता
बर बौराह बरद असवारा । ब्याल कपाल बिभूषण छारा
छं॰ तन छार ब्याल कपाल भूषण नगन जटिल भयंकरा
संग भूत प्रेत पिशाच योगिनि बिकट मुख रजनीचरा
सो जियत रहिहिं बरात देखत पुन्य बड़ तिन कर सही
देखहि सो उमा बिवाह घर घर बात असि लौकन कही
दो॰ समुझि महेश समाज सब जननि जनक मुसुकाहिं
बाल उलाये बिबिध बिधि निडर होहु डर नाहिं
ले अगवान बरातहि आये । दिये सबहि जनवास सुहाये
मैना सुभ आरती सँवारी । संग सुमंगल गावहिं नारी
कंचन थार सोह बर पानी । परिछन चली हरहिं हरषानी
बिकट भेष जब रुद्रहिं देखा । अबलन उर भय भयउ बिसेषा
भागि भवन पैठी अति त्रासा । गये महेश जहां जनवासा
मयना हृदय भयउ दुख भारी । लीन्ही बोलि गिरीशकुमारी
अधिक सनेह गोद बैठारी ॥ । श्याम सरोज नयन भरि बारी
जेहि बिधि तुम्हहिं रूप अस दीन्हा । तेहि जड़ बर बावर कस कीन्हा
छं॰ कस कीन्ह बर बौराह बिधि जेहि तुमहि सुंदरता दई
जो फल चहिय सुरतरुहिं सो बरबस बबूरहिं लागई
तुम्ह सहित गिरितें गिरौं पावक जरौं जल निधि महं परौं

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

घर जाउ अपयश होउ जग जीवत बिबाह नहौं करौं
दो॰ भई बिकल अबला सकल दुखित देखि गिरि नारि
करि बिलाप रोदति बदति सुता सनेह संभारि
नारद कर मैं कहा बिगारा। भवन मोर जिन बसत उजारा
अस उपदेश उमहिं जिन दीन्हा। बौरे बरहिं लागि तप कीन्हा
साचेउ उनके मोह न माया। उदासीन धन धाम न जाया
पर घर घालक लाज न भीरा। बांझ कि जान प्रसव की पीरा
जननिहिं बिकल बिलोकि भवानी। बोली युत बिबेक मृदु बानी
अस बिचारि सोचहु मति माता। सो न टरै जो रचै बिधाता॥
करम लिखा जो बाकर नाहू। तौ कत दोष लगाउब काहू॥
तुम्हरा मिटहिं कि बिधि के अंका। मातु व्यर्थ जनि लेहु कलंका
छं॰ जनि लेहु मातु कलंक करुणा परिहरहु अवसर नहीं॥
दुख सुख जो लिखा लिलार हमरे जाब जहं पाउब तहीं
सुनि उमा बचन बिनीत कोमल सकल अबला सोचहीं
बहु भांति बिधिहिं लगाइ दूषण नयन बारि बिमोचहीं
दो॰ तेहि अवसर नारद सहित अरुन ऋषि सप्त समेत
समाचार सुनि तुहिन गिरि गवने तुरत निकेत।
तब नारद सबही समुझावा। पूरब कथा प्रसंग सुनावा
मयना सत्य सुनहु मम बानी। जगदंबा तव सुता भवानी॥
अजा अनादि शक्ति अबिनाशिनि। सदा संभु अरधंग निवासिनि
जग संभव पालन लय कारिणि। निज इच्छा लीला वपु धारिणि

दो॰ रा॰ बा॰ ६८

CC-0. In Public Domain. Digitized By ... anta eGangotri Gyaan Kosha

जनमी प्रथम दक्ष गृह जाई। नाम सती सुंदर तनु पाई
तहउं सती संकरहिं बिबाही। कथा प्रसिद्ध सकल जग माही
एक बार आवत सिव संगा। देखेउ रघुकुल कमल पतंगा
भयउ मोह सिव कहा न कीन्हा। भ्रम बस बेष सीय कर लीन्हा
छं॰ सिय बेष सती जो कीन्ह तेहि अपराध संकर परिहरी
हर बिरह जाइ बहोरि पितु के जग्य जोगानल जरी॥
अब जनमि तुम्हरे भवन निज पति लागि दारुण तप किया
अस जानि संसय तजहु गिरिजा सर्बदा संकर प्रिया
दो॰ सुनि नारद के बचन तब सब कर मिटा बिषाद
छन महं ब्यापेउ सकल पुर घर घर यह संबाद

तब मयना हिमवंत अनंदे। पुनि पुनि पारबती पद बंदे
नारि पुरुष सिसु जुवा सयाने। नगर लोग सब अति हरषाने
लगे होन पुर मंगल गाना॥। सजे सबहिं हाटक घट नाना
भांति अनेक भई जेवनारा॥। सूप सास्त्र जस कछु ब्यवहारा
सो जेवनार कि जाइ बरबानी। बसहिं भवन जेहि मातु भवानी
सादर बोले सकल बराती। बिष्नु बिरंचि देव सब जाती
बिबिधि पांति बैठी जेवनारा। लगे परोसन निपुन सुआरा
नारिबृंद सुर जेवत जानी॥। लागीं देन गारि मृदु बानी
छं॰ गारी मधुर सुर देहिं सुंदरि बंग बचन सुनावहीं
भोजन करहिं सुर अति बिलंब बिनोद सुनि सचु पावहीं
जेवंत जो बढ्यो अनंद सो मुख कोटिहूं न परै कह्यो

दो॰ ए॰ बा॰ ६८

अंचवाइ दीन्हे पान गवने वास जहं जाको रह्यो ॥
दो. बहुरि मुनिन हिमवंत कहं लगन जनाई आइ
समय बिलोकि बिवाह कर पठये देव बुलाइ ॥
बोलि सकल सुर सादर लीन्हे। सबहिं यथोचित आसन दीन्हे
बेदी बेद बिधान संवारी ॥ सुभग सुमंगल गावहिं नारी
सिंहासन अति दिव्य सुहावा। जाइ न बरणि बिरंचि बनावा
बैठे सिव बिप्रन्ह सिर नाई। हृदय सुमिरि निज प्रभु रघुराई
बहुरि मुनीसन उमा बुलाई। करि सिंगार सखी लै आई
देखत रूप सकल सुर मोहे। बरने छबि अस जग कबि कोहे
जगदंबिका जानि भव भामा। सुरन मनहिं मन कीन्ह प्रणामा
सुंदरता मर्य्याद भवानी ॥ जाइ न कोटिहुं बदन बखानी
छं. कोटिहुं बदन नहिं बनै बरणत जग जनबि शोभा महा
सकुचहिं कहत श्रुति शेष सारद मंद मति तुलसी कहा
छबि खानि मातु भवानि गवनी मध्य मंडप शिव जहां
अवलोकि सकहिं न सकुचि पति पद कमल मन मधुकर तहां
दो. मुनि अनुसासन गणपतिहिं पूजे शंभु भवानि ।
कोउ मुनि संशय करै जनि सुर अनादि जियजानि
जस बिबाह की बिधि श्रुति गाई। महा मुनिन सो सब करवाई
गहि गिरीश कुश कन्या पानी। शिवहिं समर्पी जानि भवानी
पाणि गृहण जब कीन्ह महेशा। हिय हर्षे तब सकल सुरेशा
बेद मंत्र मुनि वर उच्चरहीं। जय जय जय शंकर सुर करहीं

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बाजहिं बाजन विविधि विधाना। सुमन वृष्टि नभभै विधि नाना
हरि गिरिजा कर भयउ विवाहू। सकल भुवन भरि रहा उछाहू
दासी दास तुरंग रथ नागा। धेनु बसन मणि वस्तु विभागा
अन्न कनक भाजन भरि जाना। दाइज दीन्ह न जाइ बखाना
छं· दाइज दियो बहु भांति पुनि कर जोरि हिम भूधर कह्यो
का देउं पूरण काम शंकर चरण पंकज गहि रह्यो
शिव कृपा सागर ससुर कर परितोष सब भांतिन कियो
पुनि गहेउ पद पाथोज मयना प्रेम परिपूरण हियो ॥
दो· नाथ उमा मम प्राण सम गृह किंकरी करेहु
क्षमेहु सकल अपराध अब होइ प्रसन्न बरदेहु
बहु बिधि शंभु सासु समुझाई। गवनी भवन चरण शिरनाई
जननी उमा बोलि तब लीन्ही। लै उछंग सुंदर सिख दीन्ही
करहु सदा शंकर पद पूजा। नारि धर्म पति देव न दूजा
बचन कहति भरि लोचन बारी। बहुरि लाइ उर लीन्ह कुमारी
कत बिधि सिरजि नारि जग माहीं। पराधीन सपनेहु सुख नाहीं
मै अति प्रेम विकल महतारी। धीरज कीन्ह कुसमय विचारी
पुनि पुनि मिलति परति गहि चरणा। परम प्रेम कछु जाइ न बरणा
सब नारिन मिलि भेटि भवानी। गइ जननि उर पुनि लपटानी
छं· जननिहिं बहुरि मिलि चली उचित असीस सबकाहूं दई
फिरि फिरि बिलोकति मातु तन तब सखी लै शिव पहं गई
याचक सकल संतोषि शंकर उमा सहित भवनहिं चले ॥

CC-0. In Public Domain D... By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सब अमर हरषे सुमन बरषि निसाननभ बाजहिं भले
दो॰ चले संग हिमवंत तब पहुंचावन अति हेतु ।
बिबिध भांति परितोष करि बिदा कीन्ह वृषकेतु
तुरत भवन आये गिरि राई। सकल शैल सर लिये बुलाई
आदर दान बिनय बहु माना। सब कर बिदा कीन्ह हिमवाना
जबहिं शंभु कैलाशहिं आये। सुर सब निज निज लोक सिधाये
जगत मातु पितु शंभु भवानी। तेहि शृंगार न कहौं बखानी
करहिं बिबिध बिधि भोग बिलासा। गणन समेत बसहिं कैलासा
हर गिरजा बिहार नित नयऊ। इहि बिधि बिपुल काल चलि गयऊ
तब जन्मे षटबदन कुमारा। तारक असुर समर जिन मारा
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना। षट सुख जन्म कर्म जग जाना
छं॰ जग जान षट मुख जन्म कर्म प्रताप पुरुषारथ महा
तेहि हेतु मैं वृष केतु सुत कर चरित संक्षेपहि कहा
यह उमा शंभु बिबाह जे नर नारि कहहिं जे गावहीं
कल्याण काज बिवाह मंगल सर्बदा सुख पावहीं
दो॰ चरित सिंधु गिरिजा रमण बेद न पावहिं पार
बरणै तुलसी दास किमि अति मति मंद गंवार
शंभु चरित सुनि सरस सुहावा। भरद्वाज मुनि अति सुख पावा
बहु लालसा कथा पर बाढ़ी। नयन नीर रोमावलि ठाढ़ी
प्रेम बिवस मुख आवन बानी। दशा देखि हरषे मुनि ज्ञानी
अहो धन्य तब जन्म मुनीशा। तुमहिं प्राण सम प्रिय गौरीश

टी॰ रा॰ बा॰ ७२

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शिव पद कमल जिनहिं रति नाहीं। रामहिं ते सपनेहुं न सुहाहीं
बिनु छल बिस्वनाथ पद नेहू। राम भक्त कर लक्षण येहू
शिव सम को रघुपति व्रतधारी। बिनु अघ तजी सती असनारी
पण करि रघुपति भक्ति दृढ़ाई। को शिव सम रामहिं प्रियभाई

दो॰ प्रथम कहे मैं शिव चरित। बूझा मरम तुम्हार
सुचि सेवक तुम राम के रहित समस्त विकार

मैं जाना तुम्हार गुण शीला। कहौं सुनहुं अब रघुपति लीला
सुनु मुनि आजु समागम तोरे। कहि न जाइ जस सुख मन मोरे
राम चरित अति अमित मुनीशा। कहि न सकहिं शत कोटि अहीशा
तदपि यथा श्रुति कहौं बखानी। सुमिरि गिरा पति शंभु धनुपानी
शारद दारु नारि सम स्वामी। राम सूत्र धर अंतर जामी॥
जेहि पर कृपा करहिं जन जानी। कबि उर अजिर नचावहिं बानी
प्रणऊं सोइ कृपालु रघुनाथा। बरणउं बिशद तासु गुण गाथा
परम रम्य गिरिबर कैलासू। सदा जहां शिव उमा निवासू

दो॰ सिद्ध तपोधन योगिजन सुर किन्नर मुनिबृंद॥
बसहिं तहां सुकृती सकल सेवहिं शिव सुखकंद

हरि हर बिमुख धर्म रत नाहीं। ते नर तहां न सपनेहुं जाहीं
तेहि गिरि पर बट बिटप बिशाला। नित नूतन सुंदर सब काला
त्रिविध समीर सुशीतल छाया। शिव बिश्राम बिटप श्रुति गाया
एकबार तेहि तर प्रभु गयेऊ। तरु बिलोकि उर अति सुख भयऊ
निज कर डासि नाग रिपु छाला। बैठे सहजहिं शंभु कृपाला।

सब अमर हरषे सुमन बरषि निसाननभ बाजहिं भले
दो॰ चले संग हिमवंत तब पहुंचावन अति हेतु ।
बिबिध भांति परितोष करि बिदा कीन्ह वृषकेतु
तुरत भवन आये गिरि राई। सकल शैल सर लिये बुलाई
आदर दान बिनय बहु माना। सब कर बिदाकीन्ह हिमवाना
जबहिं शंभु कैलाशहिं आये। सुर सब निज निज लोक सिधाये
जगत मातु पितु शंभु भवानी। तेहि शृंगार न कहौं बखानी
करहिं बिबिध बिधि भोग बिलासा। गणन समेत बसहिं कैलासा
हर गिरजा बिहार नित नयऊ। इहि बिधि बिपुल काल चलिगयऊ
तब जन्मे षटबदन कुमारा। तारक असुर समर जिन मारा
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना। षट मुख जन्म कर्म जग जाना
टी॰ रा॰ बा॰ ७२
छं॰ जग जान षट मुख जन्म कर्म प्रताप पुरुषारथ महा
तेहि हेतु मैं वृष केतु सुत कर चरित संक्षेपहि कहा
यह उमा शंभु बिबाह जे नर नारि कहहिं जे गावहीं
कल्याण काज बिवाह मंगल सर्बदा सुख पावहीं
दो॰ चरित सिंधु गिरिजा रमण बेद न पावहिं पार
बरणै तुलसी दास किमि अति मति मंद गंवार
शंभु चरित सुनि सरस सुहावा। भरद्वाज मुनि अति सुख पावा
बहु लालसा कथा पर बाढ़ी। नयन नीर रोमावलि ठाढ़ी
प्रेम बिवस मुख आवन बानी। दशा देखि हरषे मुनि ज्ञानी
अहो धन्य तब जन्म मुनीशा। तुमहिं प्राण सम प्रिय गौरीश

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शिव पद कमल जिनहिं रति नाहीं। रामहिं ते सपनेहुं न सुहाहीं
बिनु छल बिस्वनाथ पद नेहू। राम भक्त कर लक्षण येहू
शिव सम को रघुपति व्रतधारी। बिनु अघ तजी सती असनारी
पण करि रघुपति भक्ति दृढ़ाई। को शिव सम रामहिं प्रियभाई

दो॰ प्रथम कहे मैं शिव चरित। बूझा मरम तुम्हार
सुचि सेवक तुम राम के रहित समस्त विकार

मैं जाना तुम्हार गुण शीला। कहीं सुनहुं अब रघुपति लीला
सुनु मुनि आजु समागम तोरे। कहि न जाइ जस सुख मन मोरे
राम चरित अति अमित मुनीशा। कहि न सकहिं शत कोटि अहीशा
तदपि यथा श्रुति कहीं बखानी। सुमिरि गिरा पति शंभु धनुपानी
शारद दारु नारि सम स्वामी। राम सूत्र धर अंतर जामी॥
जेहि पर कृपा करहिं जन जानी। कबि उर अजिर नचावहिं बानी
प्रणऊं सोइ कृपालु रघुनाथा। बरणउं बिशद तासु गुण गाथा
परम रम्य गिरिबर कैलासू। सदा जहां शिव उमा निवासू

दो॰ सिद्ध तपोधन योगिजन सुर किन्नर मुनिबृंद॥
बसहिं तहां सुकृती सकल सेवहिं शिव सुखकंद

हरि हर बिमुख धर्म रत नाहीं। ते नर तहां न सपनेहुं जाहीं
तेहि गिरि पर बट बिटप बिशाला। नित नूतन सुंदर सब काला
त्रिबिध समीर सुशीतल छाया। शिव बिश्राम बिटप श्रुति गाया
एकबार तेहि तर प्रभु गयेऊ। तरु बिलोकि उर अति सुख भयऊ
निज कर डासि नाग रिपु छाला। बैठे सहजहिं शंभु कृपाला।

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कुंद इंदु वर गौर शरीरा । भुज प्रलंब पर धन मुनि चीरा
तरुण अरुण अंबुज समचरणा । नख दुति भक्त हृदय तम हरणा
भुजग भूति भूषण त्रिपुरारी । आनन शरद चंद्र छबि हारी
दो॰ जटा मुकुट सुर सरित शिर लोचन नलिन विशाल
नीलकंठ लावन्य निधि सोह बाल बिधु भाल ॥
बैठे सोह काम रिपु कैसे । धरे शरीर शान्त रस जैसे ॥
पारबती भल अवसर जानी । गईं शंभु पहं मातु भवानी ॥
जानि प्रिया आदर अति कीन्हा । बाम भाग आसन हर दीन्हा
बैठी शिव समीप हरषाई । पूरब जन्म कथा चित आई ॥
पति हिय हेतु अधिक अनुमानी । बिहंसि उमा बोली प्रिय बानी
कथा जो सकल लोक हितकारी । सोइ पूछन चह शैल कुमारी
बिश्वनाथ मम नाथ पुरारी । त्रिभुवन महिमा बिदित तुम्हारी
चर अरु अचर नाग नर देवा । सकल करहिं पद पंकज सेवा
दो॰ प्रभु समर्थ सर्बज्ञ शिव । सकल कला गुण धाम
योग ज्ञान बैराग्य निधि प्रणत कल्प तरु नाम
जो मोपर प्रसन्न सुख रासी । जानिअ सत्य मोहि निज दासी
तौ प्रभु हरहु मोर अज्ञाना । कहि रघुनाथ कथा विधि नाना
जासु भवन सुर तरु तर होई । सहं कि दरिद्र जनित दुख सोई
शशि भूषण अस हृदय बिचारी । हरहु नाथ मम मति भ्रम भारी
प्रभु जे मुनि परमारथ बादी । कहहिं राम कहं ब्रह्म अनादी
शेष शारदा वेद पुराना । सकल करहिं रघुपति गुण गाना

तुम पुनि राम नाम दिन राती। सादर जपहु अनंग आराती
राम सो अवध नृपति सुत सोई। की अज अगुण अलख गति कोई
दो॰ जौ नृप तनय तो ब्रह्म किमि नारि बिरह मति भोरि
देखि चरित महिमा सुनत भ्रमति बुद्धि अति मोरि
जौ अनीह व्यापक बिभु कोऊ। कहहु बुझाइ नाथ मोहि सोऊ
अग्य जानि रिस उर जनि धरहू। जेहि बिधि मोह मिटै सोइ करहू
मैं बन दीख राम प्रभुताई। अति भय बिकल न तुमहि सुनाई
तदपि मलिन मन बोध न आवा। सो फल भली भांति मैं पावा
अजहूं कछु संशय मन मोरे। करहु कृपा बिनवऊं कर जोरे
प्रभु तब मोहि बहु भांति प्रबोधा। नाथ सो समुझि करहु जनि क्रोधा
तव कर अस विमोह मोहि नाहीं। राम कथा पर रुचि मन माहीं
कहहु पुनीत राम गुण गाथा। भुजग राज भूषण सुर नाथा
दो॰ बंदौ पद धरि धरणि सिर विनय करौं कर जोरि
बरणहु रघुवर विशद यश श्रुति सिद्धांत निचोरि
यद्यपि योषिता अग्य अधिकारी। दासी मन क्रम बचन तुम्हारी
गूढ़ो तत्व न साधु दुरावहिं। आरत अधिकारी जहं पावहिं
अति आरत पूछौं सुर राया। रघुपति कथा कहहु करि दाया
प्रथम सो कारण कहहु विचारी। निर्गुण ब्रह्म सगुण वपुधारी
पुनि प्रभु कहहु राम अवतारा। बाल चरित पुनि कहहु उदारा
कहहु यथा जानकी बिबाहा। राज तजा सो दूषण काहा
बन बसे कीन्हेउ चरित अपारा। कहहु नाथ जिमि रावण मारा

राम वैठि कीन्ही वह लीला। सकल कहहु शंकर सुख शीला

दो॰ वड़ेरि कहहु करुणायतन कीन्ह जो अचरज राम
प्रजा सहित रघुवंश मणि किमि गवने निज धाम

पुनि प्रभु कहहु सो तत्व बखानी। जेहि विज्ञान मगन मुनि ज्ञानी
भक्ति ज्ञान विज्ञान विरागा। पुनि सब बरणहु सहित विभागा
औरो राम रहस्य अनेका। कहहु नाथ अति विमल विवेका
जो प्रभु मैं पूछा नहिं होई। सोउ दयाल राखहु जनि गोई
तुम त्रिभुवन गुरु वेद बखाना। आन जीव पावर का जाना
प्रश्न उमा की सहज सुहाई। छल विहीन सुनि शिव मन भाई
हर हिय राम चरित सब आये। प्रेम पुलकि लोचन जल छाये
श्रीरघुनाथ रूप उर आवा। परमानंद अमित सुख पावा

दो॰ मगन ध्यान रस दंडयुग पुनि मन बाहिर कीन्ह
रघुपति चरित महेश तब हर्षित वरणे लीन्ह॥

झूठो सत्य जाहि बिनु जाने। जिमि भुजंग बिनु रजु पहिचाने
जेहि जाने जग जाइ हेराई। जागे यथा सपन भ्रम जाई
बंदौं बाल रूप सोइ रामू। सब विधि सुलभ जपत जसनामू
मंगल भवन अमंगल हारी। द्रवो सो दशरथ अजिर विहारी
करि प्रणाम रामहिं त्रिपुरारी। हरषि सुधा सम गिरा उचारी
धन्य धन्य गिरिराज कुमारी। तुम समान नहिं कोउ उपकारी
पूछेहु रघुपति कथा प्रसंगा। सकल लोक जग पावनि गंगा
तुम रघुवीर चरण अनुरागी। कीन्हेहु प्रश्न जगत हित लागी

दो॰ राम कृपा तें पार्वती सपनेहु तव मन माहिं।
शोक मोह संदेह भ्रम मन विचार कछु नाहिं
तदपि अशंका कीन्हेहु सोई। कहत सुनत सबकर हित होई
जिन हरि कथा सुनी नहिं काना। श्रवण रंध्र अहिभवन समाना
नयनन संत दरस नहिं देखा। लोचन मोर पंख कर लेखा॥
ते सिर कटु तूमरि सम तूला। जे न नमत हरि गुरु पद मूला
जिन हरि भक्ति हृदय नहिं आनी। जीवत शव समान ते प्रानी
जे नहिं करहिं राम गुण गाना। जीह सु दादुर जीह समाना
कुलिश कठोर निदुर सोइ छाती। सुनि हरि चरित न जो हरषाती
गिरिजा सुनहु राम कर लीला। सुर हित दनुज विमोहन शीला

दो॰ राम कथा सुर धेनु सम सेवत सब सुखदान
संत सभा सुरलोक सम कोन सुने अस जान
रामकथा सुंदर करतारी॥ ॥ संशय विहंग उड़ावन हारी
राम कथा कलि विटप कुठारी। सादर सुन गिरिराज कुमारी
राम नाम गुण चरित सुहाये। जन्म कर्म अगणित श्रुति गाये
यथा अनंत राम भगवाना। तथा कथा कीरति गुण नाना
तदपि यथा श्रुति जस मति मोरी। कहि हौं देखि प्रीति अति तोरी
उमा प्रश्न तव सहज सुहाई। सुखद संत संमत मोहि भाई
एक बात नहिं मोहि सुहानी। यदपि मोह वस कहेउ भवानी
तुम जो कहा राम कोउ आना। जेहि श्रुति गाव धरहिं मुनिध्याना

दो॰ कहहिं सुनहिं अस अधम नर ग्रसे जो मोह पिशाच

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पाखंडी हरि पद विमुख जानहिं झूठ न सांच

अज्ञ अकोविद वोध अभागी। काई विषय मुकुर मन लागी
लंपट कपटी कुटिल विशेषी। सपनेहुं संत सभा नहिं देषी
कहहिं ते वेद असंमत वानी। जिनहिं न सूझ लाभ नहिं हानी
मुकुर मलिन अरु नयन विहीना। राम रूप देखहिं किमि दीना
जिनके अगुण न सगुण विवेका। जल्पहिं कल्पित वचन अनेका
हरि माया वस जगत भ्रमाहीं। तिनहिं कहत कछु अघटित नाहीं
वा तुल भूत विवस मतवारे। ते नहिं बोलहिं बचन संभारे
जिन कृत महा मोह मद पाना। तिन कर कहा करिय नहिं काना

सो॰ अस निज हृदय विचारि तज संशय भज राम पद
सुन गिरि राज कुमारि भ्रम तम रवि कर वचन मम

सगुणहिं अगुणहिं नहिं कछु भेदा। गावहिं मुनि पुराण वुध वेदा
अगुण अरूप अलख अज सोई। भक्त प्रेम बस सगुण सो होई
जो गुण रहित सगुण सो कैसे। जल हिम उपल विलग नहिं जैसे
जासु नाम भ्रम तिमिर पतंगा। तिहिं किमि कहिय विमोह प्रसंगा
राम सच्चिदानंद दिनेशा। नहिं तहं मोह निशा लवलेशा
सहज प्रकाश रूप भगवाना। नहिं तहं पुनि विज्ञान विहाना
हरष विषाद ज्ञान अज्ञाना। जीव धर्म अहमिति अभिमाना
राम ब्रह्म व्यापक जग जाना। परमानंद परेश पुराना

दो॰ पुरुष प्रसिद्ध प्रकाश निधि प्रगट चराचर नाथ
रघुकुल मणि मम स्वामि सोइ कहि शिव नायउ माथ

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

निज भ्रम नहिं समुझहिं अज्ञानी। प्रभु पर मोह धरहिं जड़ प्रानी
यथा गगन घन पटल निहारी। झाँपो भानु कहहिं कुविचारी
चितवत लोचन अंगुलि लायें। प्रगट युगल शशि तेहिके भाये
उमा राम विषयक अस मोहा। नभ तम धूम धूरि जिमि सोहा
विषयक ण सुर जीव समेता। सकल एकतें एक सचेता
सबकर परम प्रकाशक जोई। राम अनादि अवध पति सोई
जगत प्रकाश्य प्रकाशक रामू। माया धीश ज्ञान गुण धामू
जासु सत्य तातें जड़ माया। भास सत्य इव मोह सहाया
दो॰ रजत सीप महं भास जिमि यथा भानु कर वारि
यद्यपि मृषा तिहुं काल सोइ भ्रम न सकै कोउ टारि
इहि विधि जग हरि आश्रित रहई। यदपि असत्य देत दुख अहई
जो सपने सिर काटै कोई। विनु जागे दुख दूरि न होई
जासु कृपा अस भ्रम मिटि जाई। गिरिजा सोइ कृपालु रघुराई
आदि अंत कोउ जासु न पावा। मति अनुमान निगम अस गावा
बिनु पद चलै सुनै बिनु काना। कर बिनु कर्म्म करै विधि नाना
आनन रहित सकल रस भोगी। बिनु बाणी बक्ता बड़ योगी
तनु बिनु परस नयन बिनु देखा। ग्रहै घ्राण बिनु बास अशेषा
अस सब भांति अलौकिक करणी। महिमा जासु जाइ नहिं बरणी
दो॰ जेहि इमि गावहिं बेद बुध जाहि धरहिं मुनि ध्यान
सोइ दशरथ सुत भक्त हित कोशल पति भगवान
काशी मरत जन्तु अवलोकी। जासु नाम बल करौं बिशोकी

CC-0. In Public Domain.Digiti Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपरमित बिस्तार के ढवल्ली में उपनिषद में जानव ११८ शिवजू के नाम म
हात्म इत्यादि कहवे तें दारुणा असंभावना दशरथात्मज ब्रह्म नहीं सो
जात रही अरु पार्वती जीकी सात्विक अवस्था को प्राप्त हो बोलत भई

सोइ प्रभु मोर चराचर स्वामी। रघुबर सब उर अंतर जामी ॥
बिबसहु जासु नाम नर कहहीं। जन्म अनेक संचित अघ दहहीं
सादर सुमिरण जो नर करहीं। भव बारिधि गो पद इव तरहीं
राम सो परमातमा भवानी। तहं भ्रम अति अविहित तव बानी
अस संशय आनत उर माहीं। ज्ञान बिराग सकल गुण जाहीं
सुनि शिव के भ्रम भंजन बचना। मिटि गइ सब कुतर्क की रचना
भइ रघुपति पद प्रीति प्रतीती। दारुण असंभावना बीती ॥

दो॰ पुनि पुनि प्रभु पद कमल गहि जोरि पंकरुह पानि
बोली गिरिजा बचन बर। मनहुं प्रेम रस सानि ॥

शशि कर सम सुनि गिरा तुम्हारी। मिटा मोह शरदा तप भारी
तुम कृपाल सब संशय हरेऊ। राम स्वरूप जानि मोहि परेऊ
नाथ कृपा अब गयेउ बिषादा। सुखी भइउं प्रभु चरण प्रसादा
अब मोहि आपनि किंकर जानी। यदपि सहज जड़ नारि अयानी
प्रथम जो मैं पूछा सोइ कहहू। जो मोपर प्रसन्न प्रभु अहहू
राम ब्रह्म चिन्मय अविनाशी। सर्ब रहित सब उर पुर वासी॥
नाथ धरेउ नर तनु केहि हेतू। मोहि समुझाइ कहहु वृष केतू
उमा बचन सुनि परम पुनीता। राम कथा पर प्रीति पुनीता ॥

११९ पं॰ १०। ८ चौ॰ २ सो॰ १ दो॰ शशि कर अरु हरि गुन नाम
अपार लौं॰ कुआर के घाम ऐसो मोह चंद्र किरन

टी॰ रा॰ बा॰ ८०

CC-0. In Public Domain Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो· हिय हर्षे कामारि तव शंकर सहज सुजान ॥
बहु बिधि उमहिं प्रशंसि पुनि बोले कृपा निधान
सो· सुन शुभ कथा भवानि राम चरित मानस बिमल
कहा भुशुंडि बखानि सुना विहंग नायक गरुड़
सोइ संबाद उदार जेहि बिधि भा आगे कहब ॥
सुनहु राम अवतार चरित परम सुंदर अनघ
हरि गुण नाम अपार कथा रूप अगणित अमित
मैं निज मति अनुसार कहौं उमा सादर सुनहु
सुन गिरिजा हरि चरित सुहाये। बिपुल बिशद निगमागम गाये
हरि अवतार हेतु जेहि होई। इद मिथ्या कहि जाइ न सोई
राम अतर्क बुद्धि मन वानी। मत हमार अस सुनहु भवानी
तदपि संत मुनि वेद पुराना। जस कछु कहहिं स्वमति अनुमाना
तस मैं सुमुखि सुनावउं तोही। समुझि परै जस कारण मोही
जब जब होइ धर्म की हानी। बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी
करहिं अनीत जाइ नहिं वरणी। सीदहिं विप्र धेनु सुर धरणी
तब तब प्रभु धरि बिबिध शरीरा। हरहिं कृपा निधि सज्जन पीरा
दो· असुर मारि थापहिं सुरन्हि राखहिं निज श्रुति सेतु
जग बिस्तारहिं बिशद यश राम जन्म कर हेतु
सोइ यश गाइ भक्त भव तरहीं। कृपा सिंधु जन हित तनु धरहीं
राम जन्म के हेतु अनेका। परम विचित्र एकतें एका
जन्म एक दुइ कहौं बखानी। सावधान सुनु सुमति भवानी

दी· रा· बा· ८१

द्वारपाल हरि के प्रिय दोऊ। जय अरु विजय जान सब कोऊ
विप्र श्राप तें दोनों भाई। तामस असुर देह तिन पाई।
कनक कशिपु अरु हाटक लोचन। जगत विदित सुरपति मद मोचन
विजयी समर बीर विख्याता। धरि वराह बपु एक निपाता।
होइ नर हरि पुनि दूसर मारा। जन प्रहलाद सुयश बिस्तारा
दो॰ भये निशाचर जाइ ते महावीर बल वान ॥
कुंभकर्ण रावण सुभट। सुर विजयी जग जान
सुक्र न भयेउ हते भगवाना। तीन जन्म द्विज बचन प्रमाना
एक बार तिन के हित लागी। धरेउ शरीर भक्त हित लागी॥
कश्यप अदिति तहां पितु माता। दशरथ कौशल्या विख्याता
एक कल्प इहि विधि अवतारा। चरित पवित्र किये संसारा
एक कल्प सुर देखि दुखारे। समर जलंधर सन सब हारे॥
शंभु कीन्ह संग्राम अपारा। दनुज महाबल मरै न मारा
परम सती असुराधिप नारी। तेहि बल ताहि न जीत पुरारी
दो॰ छल करि टारेउ तासु व्रत प्रभु सुर कारज कीन्ह
जब तेहि जानेउ मरम तब श्राप कोप करि दीन्ह
तासु श्राप हरि कीन्ह प्रमाना। कौतुकनिधि कृपाल भगवाना
तहां जलंधर रावण भयेऊ। रण हति राम परम पद दयेऊ
एक जन्म कर कारण एहा। जेहि लगि राम धरी नर देहा
प्रति अवतार कथा प्रभु केरी। सुनि सुनि बरणी कविन घनेरी
नारद श्राप दीन्ह इक बारा। कल्प एक तेहि लगि अवतारा

गिरिजा चकित भई सुनि बानी। नारद बिष्नु भक्त मुनि ज्ञानी
कारण कवन श्राप मुनि दीन्हा। का अपराध रमा पति कीन्हा
यह प्रसंग मोहि कहहु पुरारी। मुनि मन मोह सो अचरज भारी
दो॰ बोले बिहंसि महेश तब ज्ञानी मूढ़ न कोइ ॥
जेहि जस रघुपति करहिं जब सो तस तेहि छण होइ
सो॰ कहौं राम गुण गाथ। भरद्वाज सादर सुनहु ॥
भव भंजन रघुनाथ भज तुलसी तज मान मद
हिम गिरि गुहा एक अति पावनि। वह समीप सुर सरित सुहावनि
आश्रम परम पुनीत सुहावा। देखि देव ऋषि मन अति भावा
निरखि शैल गिरि विपिन विभागा। भयउ रमापति पद अनुरागा
सुमिरत हरिहिं श्राप गति बाधी। सहज बिमल मन लागि समाधी
मुनि गति देखि सुरेश डराना। कामहिं बोलि कीन्ह सनमाना
सहित सहाय जाहु मम हेतू। चलेउ हरषि हिय जलचर केतू
सुना सीर मन महं अति त्रासा। चहत देव ऋषि मम पुर बासा
जे कामी लोलुप जग माहीं। कुटिल काक इव सबहिं डेराहीं
दो॰ सूख हाड़ ले भाग शठ श्वान निरखि मृग राज ॥
छीनि लेइ जनि जान जड़ तिमि सुरपतिहि न लाज
तेहि आश्रमहिं मदन जब गयेऊ। निज माया बसंत निर्मयऊ
कुसुमित बिबिध बिटप बहु रंगा। कूजहिं कोकिल गुंजहिं भृंगा
चली सुहावनि त्रिविधि बयारी। काम कृशानु बढ़ावन हारी
रंभादिक सुर नारि नवीना। सकल असम शर कला प्रवीना

करहिं गान बहु तान तरंगा। बहु बिधि क्रीड़हिं पानि पतंगा
देखि सहाय मदन हरषाना। कीन्हेसि पुनि प्रपंच बिधि ताना
काम कला कछु मुनिहिन व्यापी। निज भय डरेउ मनोभव पापी
सीम कि चापि सकै कोउ तासू। बड रखवार रमापति जासू

दो॰ सहित सहाय सभीत अति मानि हारि मन मैन
गहेसि जाइ मुनि वर चरण कहि सुठि आरत वैन

भयउन नारद मन कछु रोषा। कहि प्रिय बचन काम परितोषा
नाइ चरण शिर आयसु पाई। गयेउ मदन तब सहित सहाई
मुनि सुशीलता आपनि करणी। सुरपति सभा जाइ सब बरणी
सुनि सब के मन अचरज आवा। मुनिहिं प्रशंसि हरिहिं शिर नावा
तब नारद गवने शिव पाहीं। जीति काम अहमिति मन माहीं
मारु चरित शंकरहिं सुनावा। अति प्रिय जानि महेश सिखावा
बार बार विनवउं मुनि तोही। जिमि यह कथा सुनायउ मोही
तिमि जनि हरिहि सुनावहु कबहूं। चलेहुं प्रसंग दुरायहु तबहूं

दो॰ शंभु दीन्ह उपदेश हित नहिं नारदहि सुहान
भरद्वाज कौतुक सुनहु हरि इच्छा बलवान॥

राम कीन्ह चाहैं सो होई। करै अन्यथा अस नहिं कोई
शंभु बचन मुनि मनहिं न भाये। तब बिरंचि के लोक सिधाये
एक बार करतल बर बीणा। गावत हरि गुण गान प्रवीणा
क्षीरसिंधु गवने मुनि नाथा। जहं बस श्री निवास श्रुति माथा
हरषि मिले उठि रमा निकेता। बैठे आसन ऋषिहि समेता

श्रेष्ठता अरु अवतार हेतु जनायो

टी॰ रा॰ बा॰ ८४

अरु विषम पद व्याख्या कोष अंग में जनाय १३८

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बोले बिहसि चरा चर राया। बहुत दिनहिं कीन्ही तुम दाया
काम चरित नारद सब भाषे। यद्यपि प्रथम बरजि शिव राखे
अति प्रचंड रघुपति की माया। जेहि न मोह अस को जग जाया
दो॰ रूख बदन करि बचन मृदु बोले श्री भगवान ॥
तुम्हरे सुमिरण ते मिटहिं मोह मार मद मान
सुनु मुनि मोह होइ मन ताके। ज्ञान बिराग हृदय नहिं जाके
ब्रह्मचर्य्य ब्रत रत मति धीरा। तुमहिं कि करै मनोभव पीरा
नारद कहेउ सहित अभिमाना। कृपा तुम्हारि सकल भगवाना
करुणा निधि मन दीख बिचारी। उर अंकुरेउ गर्व तरु भारी
बेगि सो मैं डारिहौं उपारी ॥ प्रण हमार सेवक हितकारी
मुनि कर हित मम कौतुक होई। अवशि उपाय करब मैं सोई
तब नारद हरि पद शिर नाई। चले हृदय अहमिति अधिकाई
श्रीपति निज माया तब प्रेरी। सुनहु कठिन करनी तेहि केरी
दो॰ बिरचेउ मग महं नगर तेहि शत योजन विस्तार
श्री निवास पुर ते अधिक रचना बिबिध प्रकार
बसहिं नगर सुंदर नर नारी। जनु बहु मनसिज रति तनु धारी
तेहि पुर बसै शील निधि राजा। अगणित हय गज सेन समाजा
शत सुरेश सम बिभव बिलासा। रूप तेज बल नीति निवासा
बिश्व मोहनी तासु कुमारी। श्री बिमोह जेहि रूप निहारी
सो हरि माया सब गुण खानी। शोभा तासु कि जाइ बखानी
करै स्वयंवर सो नृप बाला। आये तहं अगणित महिपाला

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मुनि कौतुकी नगर तेहि गयेऊ। पुरवासिन सब बूझत भयेऊ॥
सुनि सब चरित भूप गृह आये। करि पूजा नृप मुनि बैठाये॥
दो॰ आनि देखवाई नारदहिं। भूषति राज कुमारि
कहहु नाथ गुण दोष सब एहिकर हृदय बिचारि
देखि रूप मुनि बिरति बिसारी। बड़ी बार लगि रहे निहारी॥
लक्षण निज बिलोकि भुलाने। हृदय हर्ष नहिं प्रगट बखाने
जो एहि बरै अमर सो होई। समर भूमि तेहि जीत न कोई
सेवहिं सकल चराचर ताही। बरै शील निधि कन्या जाही
लक्षण सब बिचारि उर राखे। कछुक बनाइ भूप सन भाखे
सुता सुलक्षणि कहि नृप पाहीं। नारद चले सोच मन माहीं॥
टी॰ रा॰ बा॰ ६६
करौं जाइ सोइ यतन बिचारी। जेहि प्रकार मोहि बरै कुमारी
जप तप कछु न होइ इहि काला। हे बिधि मिलै कवन बिधि बाला
दो॰ एहि अवसर चाहिय परम शोभा रूप बिशाल
जो बिलोकि रीझै कुंवरि तब मेलै जय माल
हरि सन मागौं सुंदरताई। होइहि जात गहरु अति भाई
मोरे हित हरि सम नहिं कोऊ। एहि अवसर सहाय सो होऊ
बहु बिधि बिनय कीन्ह तेहि काला। प्रगटेउ प्रभु कौतुकी कृपाला
प्रभु बिलोकि मुनि नयन जुड़ाने। होइहि काज हिये हरषाने
अति आरत कहि कथा सुनाई। करहु कृपा प्रभु होउ सहाई॥
आपन रूप देहु प्रभु मोही। आन भांति नहिं पावउं ओही
जेहि बिधि नाथ होहि हित मोरा। करो सो बेगि दास मैं तोरा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

निज माया बल देखि विशाला। हिय हंसि बोले दीन दयाला

दो॰ जेहि बिधि होइहि परम हित नारद सुनहु तुम्हार
सोइ हम करब न आन कछु बचन न मृषा हमार

कपथ मांगु रुच व्याकुल रोगी। वैद न देहि सुनहु मुनि जोगी
इहि बिधि हित तुम्हार मैं ठयऊ। कहि अस अंतर हित प्रभु भयऊ
माया बिबश भये मुनि मूढ़ा। समुझ नहीं हरि गिरा निगूढ़ा
गवने तुरत तहां रिषिराई। जहां स्वयंबर भूमि बनाई॥
निज निज आसन बैठे राजा। बहु बनाव करि सहित समाजा
मुनि मन हर्ष रूप अति मोरे। मोहि तजि आवरिहि नहिं भोरे
मुनि हित कारण कृपा निधाना। दीन्ह कुरूप न जाइ बखाना॥
सो चरित्र लखि काहुन पावा। नारद जानि सबहि सिर नावा

दो॰ रा॰ बा॰ ८७

दो॰ रहे तहां दुइ रुद्र गण ते जानहि सब भेउ॥
बिप्र भेष देखत फिरहिं परम कौतुकी तेउ

जेहि समाज बैठे मुनि जाई। हृदय रूप अहमिति अधिकाई
तहं बैठे महेश गण दोऊ। बिप्र भेष गति लखै न कोऊ
करहिं कूट नारदहिं सुनाई। नीक दीन्ह हरि सुंदर ताई॥
रीझहि राज कुंवरि छवि देखी। इनहिं बरहि हरि जानि बिसेषी
मुनिहि मोह मन हाथ पराये। हंसहिं शंभु गण अति सचुपाये
यदपि सुनहिं मुनि अटपटि बानी। समुझि न परै बुद्धि भ्रम सानी
काहु न लखा सो चरित बिशेषी। सो सरूप नृप कन्या देखी॥
मर्कट बदन भयंकर देही॥ ॥देखत हृदय क्रोध भा तेही॥

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो॰ सखी संग लै कुंवरि तब चलि जनु राज मराल
देखति फिरै महीप सब कर सरोज जय माल
जेहि दिशि बैठे नारद फूली। सो दिशि तेइ न बिलोकी भूली
पुनि पुनि मुनिउ सकहिं अकुलाहीं। देखि दशा हरगण मुसुकाहीं
धरि नृप तन तहं गयउ कृपाला। कुंवरि हरषि मेली जय माला
दुलहिनि लै गो लच्छि निवासा। नृप समाज सब भयो निरासा
मुनि अति बिकल मोह मति नाठी। मणि गिरि गई छूटि जनु गांठी
तब हरगण बोले मुसुकाई। निज मुख मुकर बिलोकहु जाई
अस कहि दोउ भागे भय भारी। बदन दीख मुनि बारि निहारी
भेष बिलोकि क्रोध अति बाढ़ा। तिन्हहिं आप दीन्हा अति गाढ़ा

दो॰ होहु निशाचर जाइ तुम। कपटी पापी दोउ ॥ १ ॥
हंसेहु हमहिं सो लेहु फल बहुरि हंसेउ मुनि कोउ

पुनि जल दीख रूप निज पावा। तदपि हृदय संतोष न आवा
फरकत अधर कोप मन माहीं। सपदि चले कमला पति पाहीं
देहौं आप कि मरिहौं जाई। जगत मोर उपहास कराई ॥
बीचहिं पंथ मिले दनुजारी। संग रमा सोइ राजकुमारी ॥
बोले मधुर बचन सुरसाई। मुनि कहं चले बिकल की नाईं
सुनत बचन उपजा अति क्रोधा। माया बस न रहा मन बोधा ॥
पर संपदा सकहु नहिं देखी। तुमरे ईर्षा कपट विशेषी ॥
मथत सिंधु रुद्रहिं बौरायहु। सुरन प्रेरि बिष पान करायहु
दो॰ असुर सुरा बिष शंकरहिं आपु रमा मणि चारु

टी॰ रा॰ बा॰ ८८

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्वारथ साधक कुटिल तुम सदा कपट व्यवहारु
परम स्वतंत्र न शिर पर कोई। भावै मनहिं करहु तुम सोई
भलेहिं मंद मंदहि भल करहू। बिसमय हरष न हिय कछु धरहू
डहकि डहकि परिके सब काहू। अति असंक मन सदा उछाहू
कर्म्म सुभा सुभ तुमहिं न बाधा। अब लगि तुमहि न काहू साधा
भले भवन अब बायन दीन्हा। पावहुगे फल आपन कीन्हा
बंचेहु मोहि जवन धरि देहा। सोइ तनु धरहु श्राप मम येहा
कपि आकृति तुम कीन्ह हमारी। करिहहिं कीस सहाय तुम्हारी
मम अपकार कीन्ह तुम भारी। नारि बिरह तुम होहु दुखारी

दो॰ आप शीश धरि हरषि हिय प्रभु बहु बिनती कीन्ह
निज माया की प्रबलता हरषि कृपानिधि लीन्ह

जब हरि माया दूरि निवारी। नहिं तहं रमा न राज कुमारी
तब मुनि अति सभीत हरि चरणा। गहे पाहि प्रणतारतिहरणा
मृषा होहु मम श्राप कृपाला। मम इच्छा कह दीन दयाला
मैं दुर्बचन कहेउं बहु तेरे। कह मुनि पाप मिटहिं किमि मेरे
जपहु जाइ शंकर शत नामा। होइहि हृदय तुरत बिश्रामा
कोउ नहिं शिव समान प्रियमोरे। अस प्रतीति त्यागेहु जनि भोरे
जेहि पर कृपा न करहिं पुरारी। सो न पाव मुनि भक्ति हमारी॥
अस उर धरि महि बिचरहु जाई। अब न तुमहिं माया नियराई

दो॰ बहु बिधि मुनिहिं प्रबोधि प्रभु तब भये अंतर्ध्यान
सत्यलोक नारद चले। करत राम गुण गान॥

दो॰ रा॰ बा॰ ८६

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हरगण मुनिहिं जान पथ देखी। बिगत मोह मन हर्ष बिसेषी ॥
अति सभीत नारद पहँ आये। गहि पद आरत बचन सुनाये
हरगण हमन विप्र मुनि राया। बड़ अपराध कीन्ह फल पाया
आप अनुग्रह करइ कृपाला। बोले नारद दीन दयाला ॥ ॥
निशिचर जाय होइ तुम दोऊ। वेगि भद विपुल तेज बल होऊ ॥
भुज बल विश्व जितब तुम जहिआ। धरिहहिं बिष्नु मनुज तनु तहिआ
समर मरण हरि हाथ तुम्हारा। होइहइ मुक्ति न पनि संसारा ॥
चले युगल मुनि पद शिर नाई। भये निशाचर कालहिं पाई ॥

दो॰ एक कल्प इहि हेतु प्रभु लीन्ह मनुज अवतार
सुर रंजन सज्जन सुखद हरि भंजन भूभार ॥

इहि विधि जन्म करम हरि केरे। सुंदर सुखद बिचित्र घनेरे ॥
कल्प कल्प प्रति प्रभु अवतरहीं। चारु चरित नाना विध करहीं ॥
तब तब कथा मुनीशन गाई। परम विचित्र प्रबंध बनाई ॥
विविध प्रसंग अनूप बखाने। करहिं न सुनि आचर्य्य सयाने
हरि अनंत हरि कथा अनंता। कहहिं सुनहिं बहु विधि सुति संता
राम चंद्र के चरित सुहाये। कल्प कोटि लगि जाहिं न गाये
यह प्रसंग मैं कहा भवानी ॥ ॥ हरि माया मोहहिं मुनि ज्ञानी
प्रभु कौतुकी प्रणत हितकारी। सेवत सुलभ सकल दुख हारी

सो॰ सुर नर मुनि कोउ नाहिं जेहि न मोह माया प्रबल
अस विचारि मन माहिं भजिय महा मायापतिहिं

अपर हेतु सुनु शैल कुमारी ॥ कहौं विचित्र कथा विस्तारी ॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जेहि कारण अज अगुण अरूप। ब्रह्म भयो कोशल पुर भूप॥
जो प्रभु विपिन फिरत तुम देखा। बंधु समेत किये मुनि वेषा॥
जासु चरित अवलोकि भवानी। सती शरीर रहेउ बौरानी॥
अजहुँ न छाया मिटत तुम्हारी। तासु चरित सुनु भृषु रुज हारी॥
लीला कीन्ह जो तिहि अवतारा। सो सब कहिहौं मति अनुसारा॥
भरद्वाज मुनि शंकर बानी॥ सकुचि सप्रेम उमा मुसकानी॥
लगे बहुरि बरनै वृष केतू॥ सो अवतार भयउ जेहि हेतू॥

दो॰ सो मैं तुम सन कहौं सब सुनु मुनीश मन लाइ
राम कथा कलि मल हरणि मंगल करणि सुहाइ

स्वायंभू मनु अरु शत रूपा। जिनते भै नर सृष्टि अनूपा॥
दंपति धर्म आचरण नीका। अजहुँ मान श्रुति जिनकी लीका॥
नृप उत्तान पाद सुत तासू॥ ध्रुव हरि भक्त भये सुत जासू॥
लघु सुत नाम प्रियव्रत ताही। वेद पुराण प्रशंसत जाही॥
देवहूती पुनि तासु कुमारी। जो मुनि कर्दम की प्रिय नारी॥
आदि देव प्रभु दीन दयाला। जठर धरेउ जेहि कपिल कृपाला॥
सांख्य शास्त्र जिन प्रगट बखाना। तत्व विचार निपुण भगवाना॥
तेहि मनुराज कीन्ह बहु काला। प्रभु आयसु बहु विधि प्रतिपाला॥

सो॰ होइ न बिषय विराग भवन बसत भा चौथ पन
हृदय बहुत दुख लाग। जन्म गयो हरि भक्ति बिन
बरबस राज सुतहिं तब दीन्हा। नारि समेत गवन बन कीन्हा

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बसहिं तहां मुनि सिद्ध समाजा। तहं हिय हरषि चले मनु राजा
पंथ जात सोहहिं मति धीरा। ज्ञान भक्ति जनु धरे शरीरा॥
पहुंचे जाइ धेनु मति तीरा। हरषि नहाने निर्म्मल नीरा
आये मिलन सिद्ध मुनि ज्ञानी। धर्म्म धुरंधर नृप ऋषि जानी
जहं जहं तीरथ रहे सुहाये। मुनिन सकल सादर कर वाये
कृश शरीर मुनि पट परिधाना। संत सभा निति सुनहिं पुराना

दो॰ द्वादश अक्षर मंत्र बर। जपहिं सहित अनुराग
वासुदेव पद पंकरुह। दंपति मन अति लाग

करहिं अहार शाक फलकंदा। सुमिरहिं ब्रह्म सच्चिदा नंदा
पुनि हरि हेतु करन तप लागे। बारि अहार मूल फल त्यागे
उर अभिलाष निरंतर होई। देखिय नयन परम प्रभु सोई
अगुण अखंड अनंत अनादी। जेहि चिंतहिं परमारथ वादी
नेति नेति जेहि बेद निरूपा। चिदानंद निरुपाधि अनूपा
शंभु बिरंचि बिष्णु भगवाना। उपजहिं जासु अंश तें नाना
ऐसे प्रभु सेवक बस अहहीं। भक्त हेतु लीला तनु गहहीं
जौ यह बचन सत्य श्रुति भाषा। तौ हमार पूजिहि अभिलाषा

दो॰ इहि बिधि बीते बर्ष षट सहस बारि आहार
सम्वत सप्त सहस्र पुनि रहे समीर अधार

बरष सहस दश त्यागेउ सोऊ। ठाढ़े रहे एक पद दोऊ
बिधि हरि हर तप देखि अपारा। मनु समीप आये बहु बारा
मांगहु बर बहु भांति लुभाये। परम धीर नहिं चलहिं चलाये

टी॰ रा॰ बा॰ ६२

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अस्थि मात्र होय रहे शरीरा। तदपि मनाग मिनहिं मन पीरा
प्रभु सर्वज्ञ दास निज जानी। गति अनन्य तापस नृप रानी
मागु मागु बर भै नभ बानी। परम गंभीर कृपामृत सानी
मृतक जिआवनि गिरा सुहाई। श्रवण रंध्र होइ उर जब आई
हरष पुष्ट तन भयेउ सुहाये। मानहुं अवहिं भवन ते आये
दो॰ श्रवण सुधा सम वचन सुनि पुलक प्रफुल्लित गात
बोले मनु करि दंडवत। प्रेम न हृदय समात ॥
सुनु सेवक सुर तरु सुर धेनू। बिधि हरि हर बंदित पद रेनू
सेवक सुलभ सकल सुखदायक। प्रणत पाल सचराचर नायक
जौ अनाथ हित हम पर नेहू। तौ प्रसन्न होय यह बर देहू
जो सरूप बस शिव मन माहीं। जेहि कारण मुनि यतन कराहीं
जो भुशुंडि मन मानस हंसा। सगुण अगुण जेहि निगम प्रशंसा
देखहिं हम सो रूप भरि लोचन। कृपा करहु प्रणतारति मोचन
दंपति वचन परम प्रिय लागे। मृदुल विनीत प्रेम रस पागे
भक्त वछल प्रभु कृपा निधाना। विश्व वास प्रगटे भगवाना
दो॰ नील सरोरुह नील मणि नील नीर धर श्याम
लाजहिं तन शोभा निरखि कोटि कोटि शत काम
शरद मयंक वदन छवि सींवा। चारु कपोल चिबुक दर ग्रीवा
अधर अरुण रद सुंदर नासा। विधु कर निकर विनिंदक हासा
नव अंबुज अंबुक छवि नीकी। चितवन ललित भावती जीकी
भृकुटि मनोज चाप छवि हारी। तिलक ललाट पटल दुति कारी

दो॰ रा॰ बा॰ ६३

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कुंडल मकर मुकुट सिर भ्राजा। कुटिल केस जनु मधुप समाजा।
उर श्रीवत्स रुचिर बन माला। पदक हार भूषण मणि जाला॥
केहरि कंध बाहु जनेऊ॥ ॥ बाहु बिभूषण सुंदर तेऊ॥ ४॥
करि कर सरिस सुभग भुजदंडा। कटि निषंग कर सर कोदंडा
दो॰ तडित बिनिंदक पीत पट उदर रेख बर तीनि ॥ ॥
नाभि मनोहर लेति जनु जमुन भँवर छबि छीनि॥
पद राजीव बरनि नहिं जाहीं। मुनि मन मधुप बसहिं जेहिं माहीं
बाम भाग शोभित अनुकूला॥ आदि शक्ति छबि निधि जगमूला
जासु अंश उपजहिं गुण खानी। अगनित उमा रमा ब्रह्मानी॥
भृकुटि बिलास जासु जग होई। राम बाम दिशि सीता सोई॥
छबि समुद्र हरि रूप बिलोकी। इकटक रहे नयन पट रोकी॥
चितवहिं सादर रूप अनूपा॥ ॥ तृप्ति न मानहिं मनु शत रूपा
हर्ष बिवश तनु दशा भुलानी। परे दंड इव गहि पद पानी॥ ॥
सिर परसे प्रभु निज कर कंजा॥ तुरत उठाये करुणा पुंजा॥ ॥
दो॰ बोले कृपा निधान पुनि अति प्रसन्न मोहि जानि
मांगहु बर जोइ भावमन महादानि अनुमानि॥
सुनि प्रभु बचन जोरि जुगपाणी। धरि धीरज बोले मृदु बाणी
नाथ देखि पद कमल तुम्हारे। अब पूजे सब काम हमारे॥ ॥
एक लालसा बड़ि मन माहीं। सुगम अगम कहि जात सोनाहीं
तुमहिं देत अति सुगम गुसाईं। अगम लाग मोहि निज कृपिनाईं
यथा दरिद्र बिबुध तरु जाई॥ बहु संपति मांगत सकुचाई॥

दी॰ रा॰ बा॰ ६५

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तासु प्रभाव न जानै सोई ॥ । यथा हृदय मम संशय होई ॥
सो तुम जानहु अन्तरयामी । पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी ॥
सकुच विहाइ मांगु नृप मोही । मोर नहिं अदेय कछु तोही ॥
दो॰ दानि शिरोमणि कृपा निधि नाथ कहौं सतभाव
चाहौं तुमहिं समान सुत प्रभु मन कवन दुराव ॥
देखि प्रीति सुनि वचन अमोले । एवमस्तु करुणा निधि बोले ॥
आप सरिस खोजौं कहं जाई । नृप तव तनय होव मैं आई ॥
अति दुखहिं बिलोकि कर जोरे । देवि मांगु वर जो रुचि तोरे ॥
जो वर नाथ चतुर नृप मांगा । सोइ कृपाल मोहिं अति प्रिय लागा
प्रभु परंतु सुठि होति ढिठाई । यदपि भक्ति हित तुमहि सुहाई ॥
तुम ब्रह्मादि जनक जग स्वामी । ब्रह्म सकल उर अंतर यामी ॥
अस समुझत मन संशय होई । कहा जो प्रभु प्रमाना पनि सोई ॥
जे निज भक्त नाथ तव अहई । जो सुख पावहिं सो गति लहई ॥
दो॰ सोइ सुख सोइ गति सोइ भगति सोइ निज चरण सनेहु
सोइ विवेक सोइ रहनि प्रभु मोहि कृपा करि देहु ॥
सुनि मृदु गूढ रुचिर वर रचना । कृपासिंधु बोले मृदु वचना ॥
जो कछु रुचि तुम्हरे मन माहीं । मैं सो दीन्ह सब संशय नाहीं ॥
मातु विवेक अलौकिक तोरे । कबहुं न मिटिहि अनुग्रह मोरे ॥
बंदि चरण मनु कहेउ बहोरी । अवर एक विनती प्रभु मोरी ॥
सुत विषयक तव पद रति होऊ । मोहि बरु मूढ कहै किन कोऊ ॥
मणि बिनु फणि जिमि जल बिनु मीना । मम जीवन तिमि तुमहिं अधीना ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

असवर मांगि चरण गहि रहेऊ। एवमस्तु करुणानिधि कहेऊ
अब तुम्ह मम अनुशासन मानी। बसहु जाइ सुरपति रजधानी

सो॰ नहं करि भोग बिलास तात गये कछु काल पुनि
होइहहु अवध भुआल तबहैं होब तुम्हार सुत

इच्छा मय नर भेष सँवारे। होइहौं प्रगट निकेत तुम्हारे
अंशन सहित देह धरि ताता। करिहौं चरित भक्त सुख दाता
जे सुनि सादर नर बड़ भागी। भव तरिहैं ममता मद त्यागी
आदि शक्ति जेहि जग उपजाया। सोउ अवतरिहिं मोरि यह माया
पुरउब मैं अभिलाष तुम्हारा। सत्य सत्य पण सत्य हमारा
पुनि पुनि अस कहि कृपानिधाना। अंतर्धान भये भगवाना
दंपति उर धर भक्ति कृपाला। तेहि आश्रम निवसे कछु काला
समय पाइ तनु तजि अनुयासा। जाइ कीन्ह अमरावति वासा

दो॰ यह इतिहास पुनीत अति उमहि कहेउ वृषकेतु
भरद्वाज सुनु अपर पुनि राम जन्म कर हेतु॥

सुनु मुनि कथा पुनीत पुरानी। जो गिरिजा प्रति शंभु बखानी
विश्व विदित इक कैकय देशू। सत्य केतु तहं बसै नरेशू॥
धर्म्म धुरंधर नीति निधाना। तेज प्रताप शील बलवाना॥
तेहि के भये युगल सुत बीरा। सब गुण धाम महा रण धीरा
रजधानी जेठे सुत आही॥ नाम प्रताप भानु अस ताही
अपर सुतहिं अरिमर्दन नामा। भुज बल अतुल अचल संग्रामा
भाइहि भाइहि परम सभीती। सकल दोष छल बर्जित प्रीती

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जेठे सुतहिं राज नृप दीन्हा। हरि हित आपु गवनबन कीन्हा
दो॰ जग प्रताप रवि भयेउ नृप फिरी दोहाई देश
प्रजा पाल अति बेद बिधि कतहुं नहीं अघलेश
नृप हित कारक सचिव सुजाना। नाम धर्म्म रुचि सुक्र समाना
सचिव सयानबंधु बल वीरा। आपु प्रताप पुंज रण धीरा
सेन संग चतुरंग अपारा। अमित सुभट सब समरजुझारा
सेन विलोकि राउ हरषाना। अरु बाजे गह गहे निसाना
बिजय हेतु कटकाइ बनाई। सुदिन साधि नृप चलेउ बजाई
जहं तहं परी अनेक लराई। जीते सकल भूप बरिआई
सप्तदीप भुजबल बस कीन्हा। लै लै दंड छाड़ि नृप दीन्हा
सकल अवनि मंडल तेहि काला। एक प्रताप भानु महिपाला
दो॰ स्ववस बिस्व करि बाहु बल निज पुर कीन्ह प्रवेश
अर्थ धर्म्म कामादि सुख सेवहिं सबै नरेश
भूप प्रताप भानु बल पाई। कामधेनु भै भूमि सुहाई॥
सब दुख वर्जित प्रजा सुखारी। धर्म शील सुंदर नर नारी॥
सचिव धर्म रुचि हरि पद प्रीती। नृप हित हेतु सिखावत नीती
गुरु सुर संत पितर महि देवा। करैं सदा नृप सबकी सेवा
भूप धर्म जे बेद बखानैं। सकल करैं सादर सुख मानैं
दिन प्रति देइ बिबिधि बिधि दाना। सुनै शास्त्र वर बेद पुराना
नाना बापी कूप तड़ागा। सुमन वाटिका सुंदर बागा
बिप्र भवन सुर भवन सुहाये। सब तीरथन बिचित्र बनाये

दो॰ ए॰ बा॰ ६७

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो॰ जहं लगि कहे पुराण श्रुति एक एक सब याग
बार सहस्र सहस्र नृप किये सहित अनुराग

हृदय न कछु फल अनु संधाना। भूप बिबेकी परम सुजाना
करै जो धर्म कर्म मन बानी। बासुदेव अर्पित नृप ज्ञानी
चढ़ि बर बाजि बार इक राजा। मृगया कर सब साजि समाजा
बिंध्याचल गंभीर बन गयऊ। मृग पुनीत बहु मारत भयऊ
फिरत बिपिन नृप दीख बराहू। जनु बन दुरेउ ससिहिं ग्रस राहू
बड़ बिधु नहिं समात मुख माहीं। मनहुं क्रोध कर उगलित नाहीं
कोल कराल दसन छबि गाई। तनु बिसाल पीवर अधिकाई
घुरु घुरात हय आरव पाये। चकित बिलोकत कान उठाये

दो॰ नील महीधर सिखर सम देखि बिसाल बराह
चपरि चलेउ हय सुटुकि नृप हांकि न होइ निबाह

आवत देखि अधिक रव बाजी। चला बराह मरुत गति भाजी
तुरत कीन्ह नृप सर संधाना। महि मिलि गयउ बिलोकत बाना
तकि तकि तीर महीस चलावा। करि छल सुअर सरीर बचावा
प्रगटत दुरत जाहु मृग भागा। रिसि बस भूप चलेउ संग लागा
गयउ दूरि घन गहन बराहू। जहं नाहीं गज बाजि निबाहू
अति अकेल बन बिपुल कलेसू। तदपि न मृग मग तजै नरेसू
कोल बिलोकि भूप बड़ धीरा। भागि पैठ गिरि गुहा गंभीरा
अगम देखि नृप अति पछिताई। फिरेउ महाबन परेउ भुलाई

दो॰ खेद खिन्न छुधित तृषित राजा बाजि समेत

बी॰ ए॰ बा॰ ६८

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

खोजत व्याकुल सरित सर जल बिनु भये अचेत
फिरत बिपिन आश्रम इक देखा। तहं बस नृपति कपट मुनि भेषा
जासु देश नृप लीन्ह छुड़ाई। समर सेन तजि गयउ पराई॥
समय प्रताप भानु कर जानी। आपन अति असमय अनुमानी
गयेउ न गृह मन बहुत गलानी। मिला न राजहिं नृप अभिमानी
रिपि उर मारि रंक जिमि राजा। बिपिन बसै तापस के साजा
तासु समीप गवन नृप कीन्हा। यह प्रताप रवि तेइ तब चीन्हा
राउ तृषित नहिं सो पहिचाना। देखि सुभेष महामुनि जाना
उतरि तुरग तें कीन्ह प्रणामा। परम चतुर न कहेउ निज नामा

दो॰ भूपति तृषित बिलोकि तेइ सरवर दीन्ह देखाइ
मज्जन पान समेत हय कीन्ह नृपति हरषाइ॥

दो॰ बा॰ ६६

गो श्रम सकल सुखी नृप भयऊ। निज आश्रम तापस लै गयऊ
आसन दीन्ह अस्त रबि जानी। पुनि तापस बोला मृदु बानी
को तुम कस बन फिरहु अकेले। सुंदर जुवा जीव परहेले॥
चक्रवर्ति के लच्छन तोरे॥ देखत दया लागि अति मोरे
नाम प्रताप भानु अवनीशा। तासु सचिव मैं सुनहु मुनीशा
फिरत अहेरहिं परेउं भुलाई। बड़े भाग्य देखेउं पद आई
हम कहं दुर्लभ दरस तुम्हारा। जानत हौं कछु भल होनिहारा
कह मुनि तात भयेउ अंधियारा। योजन सत्तर नगर तुम्हारा

दो॰ निसा घोर गंभीर बन पंथ न सुरु सुजान॥
बसहु आजु अस जानि तुम जायेहु होत बिहान

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तुलसी जस भवितव्यता तैसे मिलै सहाय
आपुन आवे ताहि पै कि ताहि तहां लै जाय

भलेहि नाथ आयसु धरि शीशा। बांधि तुरग तरु बैठ महीशा
नृप बहु भांति प्रशंसेउ ताही। चरण बंदि निज भाग्य सराही
पुनि बोलेउ मृदु गिरा सुहाई। जानि पिता प्रभु करौं ढिठाई
मोहि मुनीश सुत सेवक जानी। नाथ नाम निज कहहु बखानी
तेहि न जान नृप नृपहिं सो जाना। भूप सुहृदय सो कपट सयाना
बैरी पुनि क्षत्री पुनि राजा। छल बल कीन्ह चहै निज काजा
समुझि राज सुख दुखित अराती। अवा अनल इव सुलगै छाती
सरल बचन नृप के सुनि काना। बयर संभारि हृदय हरषाना

दो. कपट बोरि बानी मृदुल बोलेउ युक्ति समेत
नाम हमार भिखारि अब निरधन रहित निकेत

कह नृप जे बिज्ञान निधाना। तुम सारिखे गलित अभिमाना
सदा रहहिं अपने पौ दुराये। सब बिधि कुशल कुभेष बनाये
तेहिते कहहिं संत श्रुति टेरे। परम अकिंचन प्रिय हरि केरे
तुम सम अधम भिखारि अगेहा। होत बिरंचि शिवहिं संदेहा
जोसि सोसि तव चरण नमामी। मो पर कृपा करिय अब स्वामी
सहज प्रीति भूपति की देखी। आप बिषै बिश्वास बिशेषी
सब प्रकार राजहिं अपनाई। बोलेउ अधिक सनेह जनाई
सुन सति भाव कहौं महिपाला। इहां बसत बीते बहु काला

दो. अपलोगी मोहि न मिलेउ कोउ मैं न जनायेउं काहु

टी. ए. बा. २०

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लोक मान्यता अनल सम करतप कानन दाहु
सो॰ तुलसी देख सु बेष । भूलें मूढ न चतुर नर
सुंदर केकी पेखि । बचन सुधा सम असन अहि
तातें गुप्त रहौं जग माहीं । हरि तजि किमपि प्रयोजन नाहीं
प्रभु जानत सब बिनहिं जनाये । कहहु कवन सिधि लोक रिझाये
तुम सुचि सुमति परम प्रिय मोरे । प्रीति प्रतीति मोहिं पर तोरे
अब जो तात दुरावौं तोही । दारुण दोष बंदु अति मोही
जिमि जिमि तापस कथै उदासा । तिमि तिमि नृपै होइ बिस्वासा
देखा स्वबस कर्म मन बानी । तब बोला तापस बक ध्यानी
नाम हमार एक तनु भाई । सुनि नृप बोलेउ पुनि सिरनाई
कहहु नाम कर अरथ बखानी । मोहि सेवक अति आपन जानी
दो॰ आदि सृष्टि उपजी जबै । तब उतपति भइ मोरि
नाम एक तनु हेतु तेहि देह न धरी बहोरि ॥
जनि आचरज करहु मन माहीं । सुत तपतें दुर्लभ कछु नाहीं
तप बल तें जग सृजै बिधाता । तपबल बिष्नु भये परित्राता
तपबल संभु करहिं संहारा । तपतें अगम न कछु संसारा
भयउ नृपहि सुनि अति अनुरागा । कथा पुरातन कहै सो लागा
कर्म धर्म इतिहास अनेका । करै निरूपण बिरति बिबेका
उदभव पालन प्रलय कहानी । कहेसि अमित आचरज बखानी
सुनि महीस तापस बस भयऊ । आपन नाम कहन तब लयऊ
कह तापस नृप जानौं तोही । कीन्हेउ कपट लाग भल मोही

टी॰ ए॰ बा॰ २०१

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सो॰ सुनि महीश अस नीति जहं तहं नाम न कहहिं नृप
मोहि तोहि पर अति प्रीति परम चतुरता निरखि तव
नाम तुम्हार प्रताप दिनेश। सत्यकेतु तव पिता नरेश।
गुरु प्रसाद सब जानिय राजा। कहिय न आपनि जानि अकाजा
देखि तात तव सहज सुधाई। प्रीति प्रतीति नीति निपुणाई
उपजि परी ममता मन मोरे। कहेउ कथा निज पूछेउ तोरे॥
अब प्रसन्न मैं संशय नाहीं। मांगु जो भूप भाव मन माहीं
सुनि मुद बचन भूपति हरषाना। गहि पद बिनय कीन्ह बिधि नाना
कृपासिंधु मुनि दरशन तोरे। चारि पदारथ करतल मोरे
प्रभु हित थापि प्रसन्न बिलोकी। मांगि अगम बर होउं असोकी

दो॰ जरा मरण दुख रहित तन समर न जीते कोउ
एक छत्र रिपु हीन महि राज कल्प शत होउ।

कह नापस नृप ऐसइ होऊ। कारण एक कठिन सुनु सोऊ
कालउ तव पद नाइहि शीशा। एक बिप्र कुल छाड़ि महीशा
तप बल बिप्र सदा बरियारा। तिनके कोप न कोउ रखवारा
जो बिप्रन बस करहु नरेशा। तो तव बस बिधि बिष्णु महेशा
चलन ब्रह्म कुल की बरिआई। सत्य कहौं दोउ भुजा उठाई
बिप्र श्राप बिनु सुनु महिपाला। तोर नाश नहिं कवनेहुं काला
हरषेउ राउ बचन सुनि तासू। नाथ न होइ मोर अब नासू
तव प्रसाद प्रभु कृपा निधाना। मोकहं सर्वकाल कल्याना

दो॰ एवमस्तु कहि कपट मुनि बोला कुटिल बहोरि

दी॰ रा॰ बा॰ १०२

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मिलब हमार भुलाव जनि कहहु तो मोरि नरबोरि
तातें मैं तोहि बरजौं राजा। कहे कथा तब परम अकाजा
छठे श्रवण यह परत कहानी। नाश तुम्हार सत्य मम बानी
यह प्रगटे अथवा द्विज श्रापा। नाश तोर सुनु भानु प्रतापा
आन उपाय निधन तव नाहीं। जौ हरि हर कोपहिं मन माहीं
सत्य नाथ पद गहि नृप भाषा। द्विज गुरु कोप कहहु को राषा
राँपे गुरु जो कोप विधाता। गुरु बिरोध नहिं कोउ जग त्राता
जौं न चलब हम कहे तुम्हारे। होइ नाश नहिं शोच हमारे
एकहि डरडरपत मन मोरा। प्रभु महि देव श्राप अति भोरा

दो॰ होंहिं बिप्र बस कवन बिधि कहहु कृपा करि सोउ
तुम तजि दीनदयाल निज हितू न देखौं कोउ

सुन नृप बिबिध यतन जग माहीं। कष्ट साध्य पुनि होहिं कि नाहीं
अहै एक अति सुगम उपाई। तहां परंतु एक कठिनाई ॥
मम आधीन युक्ति नृप सोई। मोर जाब तव नगर न होई॥
आजु लगे अरु जबतें भयऊं। काहू के गृह ग्राम न गयऊं
जो न जाब तव होइ अकाजू॥ बना आइ असमंजस आजू
सुनि महीप बोले मृदु बानी। नाथ निगम असनीति बखानी
बड़े सनेह लघुन पर करहीं। गिरि निज शिरन सदा तृणधरहीं
जल अगाधि मौलि वह फेनू। संतत धरणि धरत शिर रेनू

दो॰ असकहि गहे नरेश पद स्वामी होहु कृपालु
मोहि लागि दुख सहिय प्रभु सज्जन दीनदयालु

दी॰ रा॰ बा॰ १७३

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जानि नृपहिं आपन आधीना। बोला तापस कपट प्रवीना
सत्य कहौं भूपति सुनु तोही। जग महं नहिं दुर्लभ कछु मोही
अवशि काज मैं करिहौं तोरा। मन क्रम बचन भक्त मैं मोरा
योग युक्ति तप मंत्र प्रभाऊ। फलै तबहिं जब करिय दुराऊ
जौ नरेश मैं कर उर सोई। तुम परसह मोहि जानन कोई
अन्न जो जोइ जोइ भोजन करई। सोइ सोइ तब आयसु अनुसरई
पुनि तिनके गृह जेवैं जोई। तब बस होइ भूप सुनु सोई
जाइ उपाय रचह नृप येहू। संबत भरि संकल्प करेहू

दो॰ नित नूतन द्विज सहस शत बरेह सहित परिवार
मैं तुम्हरे संकल्प लगि। दिनहिं करब जेवनार

ही॰ ए॰ बा॰ १०५

इहि बिधि भूप कष्ट अति थोरे। होइहहिं सकल बिप्र बस तोरे
करिहहिं बिप्र होम मख सेवा। तेहि प्रसंग सहजहिं बस देवा
और एक तोहि कहौं लखाऊ। मैं यहि भेष न आउब काऊ
तुम्हरे उपरोहित कहं राया। हरि आनब मैं करि निज माया
तप बल तेहि करि आपु समाना। रखिहौं इहां बरष परवाना
मैं धरि तासु भेष सुनु राजा। सब बिधि तोर संवारब काजा
गे निशि बहुत शयन अब कीजै। मोहि तोहि भूप भेंट दिन तीजै
मैं तप बल तोहि तुरग समेता। पहुंचैहौं सोवतहि निकेता

दो॰ मैं आउब सोइ भेष धरि पहिचानेहु तब मोहि
जब एकांत बुलाइ सब कथा सुनाऊं तोहि।

शयन कीन्ह नृप आयसु मानी। आसन जाइ बैठ छल ज्ञानी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अमित भूप निद्रा अति आई। सो किमि सोद शोच अधिकाई
कालकेतु निशिचर तहं आवा। जेहि सूकर होर नृपहिं भुलावा
परम मित्र तापस नृप केरा। जानै सो अति कपट घनेरा
तेहि के सत सुत अरु दश भाई। खल अति अजय देव दुखदाई
प्रथमहिं भूप समर सब मारे। विप्र संत सुर देखि दुखारे
तेहि खल पाछिल बैर संभारा। तापस नृप मिलि मंत्र बिचारा
जेहि रिपु छय सोइ रचेसि उपाऊ। भावी वस न जान कछु राऊ

दो॰ रिपु तेजसी अकेल अपि लघु करि गणिय न ताहु
अजहुं देत दुख रवि शशिहिं सिर अवशेषित राहु

तापस नृप निज सखहि निहारी। हरषि मिलेउ उठि भयउ सुखारी
मित्रहि कहि सब कथा सुनाई। यातुधान बोला सुख पाई
अब साधेउं रिपु सुनहु नरेशा। जो तुम कीन्ह मोर उपदेशा॥
परिहरि शोच रहहु तुम सोई। बिनु औषधहिं व्याधि बिधि खोई
कुल समेत रिपु मूल बहाई। चौथे दिवस मिलब मैं आई
तापस नृपहिं बहुत परितोषी। चला महा कपटी अति रोषी
भानु प्रतापहि बाजि समेता। पहुंचायेसि सोवतहि निकेता
नृपहिं नारि पहं शयन कराई। हय गृह बांधेसि बाजि बनाई

दो॰ राजा के उपरोहितहिं हरि लै गयउ बहोरि॥
लै राखेसि गिरि खोह महं माया करि मति भोरि

आपु बिरचि उपरोहित रूपा। परा जाइ तेहि सेज अनूपा
जागेउ नृप अनभयउ बिहाना। देखि भवन अति अचरज माना

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मुनि महिमा मन महं अनुमानी। उठे गवहिं जेहि जान न रानी।
कानन गयउ बाजि चढ़ि तेही। पुर नर नारि न जानेउ केही
गये याम युग भूपति आवा। घर घर उत्सव बाजि बधावा
उपरोहितहिं देख जब राजा। चकित बिलोकि सुमिरि सोइ काजा।
युग सम नृपहि गए दिन तीनी। कपटी मुनि पद रह मति लीनी
समय जानि उपरोहित आवा। नृपहि मते सब कहि समुझावा।

दो. नृप हरषे पहिचानि गुरु भ्रम बस रहा न चेत
बरे तुरत शत सहस बर बिप्र कुटुंब समेत

उपरोहित जेवनार बनाई। छरस चारि बिधि जस श्रुति गाई
माया मय तेहि कीन्ह रसोई। बंजन बहु गनि सकै न कोई
बिबिध मृगन कर आमिष राँधा। तेहि महं बिप्र मांसु खल साँधा
भोजन कहं सब बिप्र बुलाये। पद पखारि सादर बैठाये॥
परुसन लागु जबहिं भूमिपाला। भइ अकाश बानी तेहि काला
बिप्र बृन्द उठि उठि गृह जाहू। है बड़ि हानि अन्न जनि खाहू
भयउ रसोई भूसुर मांसू। सब द्विज उठे मानि बिस्वासू
भूप बिकल मति मोह भुलानी। भावी बस न आव मुख बानी

दो. बोले बिप्र सकोप तब नहिं कछु कीन्ह बिचार
जाइ निशाचर होहु नृप मूढ़ सहित परिवार॥

तुरत बंध तें बिप्र बोलाई। घालै लिये सहित समुदाई
ईश्वर राखा धर्म हमारा। जैहसि तैं समेत परिवारा
संबत मध्य नाश तव होई। जल दाता न रहिहि कुल कोई

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नृप सुनि श्राप विकल श्रतित्रासा। भइ बहोरि बर गिरा श्रकासा
विप्रहु श्राप बिचारि न दीन्हा। नहिं श्रपराध भूप कछु कीन्हा
चकित बिप्र सब सुनि नभबानी। भूप गये जहं भोजन रवानी
तहं न श्रशन नहिं विप्रसुश्रारा। फिरेउ राउ मन सोच श्रपारा
सब प्रसंग महि सुरन सुनाई। त्रसित परेउ श्रवनी श्रकुलाई
दो. भूपति भावी मिटै नहिं यदपि न दूषण तोर
किये श्रन्यथा होइ नहिं बिप्र श्राप श्रति घोर
श्रस कहि सब महिदेव सिधाये। समाचार पुरलोगन पाये
सोचहिं दूषण दैवहिं देहीं। बिरचित हंस काक किय जेहीं
उपरोहितहि भवन पहुंचाई। श्रसुर तापसहिं खबरि जनाई
तेहि खल जहं तहं पत्र पठाये। सजि सजि सेन भूप सब श्राये
घेरिन्ह नगर निसान बजाई। बिबिध भांति नित होति लराई
जूझे सकल सुभट करणी। बंधु समेत परे नृप धरणी॥
सत्य केतु कुल कोइ न बांचा। बिप्र श्राप किमि होइ श्रसांचा
रिपुहिं जीति नृप नगर बसाई। निज निज पुरगये नय जलधाई
दो. भरद्वाज सुनु जाहि जब होत बिधाता बाम
धूरि मेरु सम जनकयम ताहि व्याल सम दाम
काल पाइ मुनि सुनु सोइ राजा। भयउ निशाचर सहित समाजा
दश शिर ताहि बीश भुज दंडा। रावण नाम बीर बरिबंडा॥
भूप श्रनुज श्ररि मर्दन नामा। भयउ सो कुंभकर्ण बल धामा
सचिव जो रहा धर्म रुचि जासू। भयउ बि भीषण बंधु लघु तासू

CC-Q. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नाम विभीषण जेहि जग जाना। विष्नु भक्त विज्ञान निधाना
रहे जे सुत सेवक नृप केरे । भये निसाचर घोर घनेरे ॥
काल रूप खल जिमि अनेका। कुटिल भयंकर बिगत बिवेका
कृपा रहित हिंसक सब पापी। बरनि न जाइ बिस्व परितापी
दो॰ उपजे जदपि पुलस्त्य कुल पावन अमल अनूप
तदपि महीसुर श्राप बस भये सकल अघ रूप
कीन्ह बिबिध तप तीनों भाई। परम उग्र सो बरणि न जाई
गयउ निकट तप देखि बिधाता। मांगहु बर प्रसन्न मैं ताता
करि बिनती पद गहि दसमाथा। बोलेउ बचन सुनहु जगनाथा
हम काहू कर मरहिं न मारे। बानर मनुज जाति दुइ बारे
एवमस्तु तुम बड़ तप कीन्हा। मैं ब्रह्मा मिलि तेहि बर दीन्हा
पुनि प्रभु कुंभकर्ण पहं गयऊ। तेहि बिलोकि मन बिस्मय भयऊ
जौ एहि खल निति करब अहारा। होइहि सब उजारि संसारा ॥
सारद प्रेरि तासु मति फेरी । मांगेसि नींद मास षट केरी
दो॰ गयउ बिभीषण पास तब कहा पुत्र बर मांगु
तेहि मांगेउ भगवंत पद कमल अमल अनुरागु
तिनहिं देइ बर ब्रह्म सिधाये । हर्षित ते अपने गृह आये
मय तनुजा मंदोदरि नामा । परम सुंदरी नारि ललामा ॥
सोइ मय दीन्ह रावणहिं आनी। भई सो यातु धान पति रानी ॥
हर्षित भयउ नारि भलि पाई। पुनि दोउ बंधु बिवाहेसि जाई
गिरि त्रिकूट इक सिंधु मझारी। बिधि निर्मित दुर्गम अति भारी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सोइ गय दानव बहुरि संवारा। कनक रचित मणि भवन अपारा
भोगवती जस अहि कुल वासा। अमरावति जस शक्र निवासा
तिनतें अधिक रम्य अति बंका। जग विख्यात नाम तेहि लंका

दो॰ खाई सिंधु गंभीर अति चारिउ दिशि फिरि आव
कनक कोट मणि खचित दृढ़ बरणिन जाइ बनाव
हरि प्रेरित तेहि कल्प जोइ यातुधान पति होय
सूर प्रतापी अतुल बल दल समेत बस सोय ॥

रहे तहां निशिचर भट भारे। ते सब सुरन समर संहारे ॥
अब तहं रहहिं शक्र के प्रेरे। रक्षक कोटि यक्ष पति केरे ॥
दशमुख कबहुं खबरि अस पाई। सेन साजि गढ़ घेरेसि जाई
देखि बिकट भट बड़ि कटकाई। यक्ष जीव लै गये पराई ॥
फिरि सब नगर दशानन देखा। गयउ शोच सुख भयउ बिशेषा
सुंदर सहज अगम अनुमानी। कीन्ह तहां रावण रजधानी
जेहि जस योग बांटि गृह दीन्हे। सुखी सकल रजनीचर कीन्हे
एकबार कुबेर पहं धावा। पुष्पक यान जीति लै आवा

दो॰ कौतुक ही कैलाश पुनि लीन्हेसि जाइ उठाइ ॥
मनहुं तौलि भट बाहु बल चला अधिक सुख पाइ

सुख सपति सुत सेन सहाई। जय प्रताप बल बुद्धि बड़ाई
निति नूतन सब बाढ़त जाई। जिमि प्रति लाभ लोभ अधिकाई
अति बल कुंभकर्ण अस भ्राता। जेहि कहं नहिं प्रति भट जग जाता
करि मद पान सोव षट मासा। जागत होइ तिहूं पुर त्रासा ॥

CC-0. In Public Domain [illegible]d By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

औ दिन प्रति अहार कर सोई। बिष्नु बेग सब चौपट होई
सुमर धीर नहिं जाइ बखाना। तेहि सम अधिक न कोउ बलवाना
बारिदनाद जेठ सुत तासू। भट महं प्रथम लीक जग जासू
जेहि न होइ रण सन्मुख कोई। सुरपुर नितहि परावन सोई
दो॰ कुमुख अकंपन कुलिश रद धूम्रकेतु अतिकाय
एक एक जग जीति सक ऐसे सुभट निकाय ॥
काम रूप जानहिं सब माया। सपनेहु जिनके धर्म न दाया
दसमुख बैठ सभा इक बारा। देखि अमित आपन परिवारा
सुत समूह जन परिजन नाती। गनै को पार निसाचर जाती
सेन बिलोकि सहज अभिमानी। बोला बचन क्रोध मद सानी
दो॰ बा॰ ११०
सुनहु सकल रजनीचर जूथा। हमरे बैरी बिबिध बरूथा ॥
ते सन्मुख नहिं करहिं लराई। देखि सकल रिपु जाहिं पराई
तिन कर मरण एक बिधि होई। कहौं बुझाय सुनहु अब सोई
द्विज भोजन मख होम सराधा। सब कर जाय करहु तुम बाधा
दो॰ सुधा हीन बल हीन सुर सहजहिं मिलिहहिं आइ
तब मारिहौं कि छाड़िहौं भली भांति अपनाइ ॥
नारद मिले कहासि मुसकाई। देख कहा मुनि देव दिरवाई ॥
दीपक
सुनत बचन नारद नहिं भावा। सेतु दीप तेहि तुरत पठावा
सागर उतर पार सोइ गयऊ। नारि वृंद तहं देखत भयऊ
तिन सन कहेउ पतिन्ह परिनाहू। कहेउ कि आवा निसिचर नाहू
तब मैं तिन्हैं जीति संग्रामा। लै जैहौं तुम कहं निज धामा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनत बचन दुक जरठ रिसानी। धाइ चरण गहि गगन उड़ानी
गई अंबर धरि धरि रुक रोरा। डारिसि सिंधु मध्य अति जोरा
दो॰ गयेउ पताल अचेत होइ मरै न बिप्र प्रसाद
सावधान उठि गर्जे पुनि हिये न हर्ष बिषाद
जीतेसि नाग नगरु सब झारी। गयेउ बहोरि बलि लोक सुरारी
बामन रावन आवत जाना। किये देव ऋषि मन अभिमाना
खेलत रहे नगर शिशु नाना। निज बल तिन्हहिं दीन भगवाना
धाइ धरा तिन्ह पुर ले आये। नगर नारि नर देखन धाये।
बीस बाहु दशकंधर जाई। बिधि हय गढनि कहां कै आई
एकेन्हि बांध बजावहि तारी। नाम न कहैं सहै बहु मारी
बामनन्दीख बहुत सकुचाना। तब छुड़ाय दिये कृपा निधाना
चला तुरंत निशाचर नाहा लाज शंक कछु नहिं मन माहा
तब तुरंत पंपापुर आवा। बालि नाम कपि पति जेहि ठावा
दीख जाइ कस सर बर शोभा। जेहि मन महा मुनिन कर छोभा
जहां कपीस करै निज ध्याना। आदर सै संध्या मन आना
जाइ ठाढ़ नहं भा रज नीसा। गेकेउ बाहु गर्जि भुज बीसा
तब कपीस चितवा मुसुकाई। ध्यान के अवसर रिसि बिसराई
तब रावण बोला करि क्रोधा। बक ध्यानी कपि सुन मठ बोधा
दो॰ मोहि जीते बिनु समर सुनु ना करु ध्यान कपीस
अंजलि देइ न पायहू सपथ करौं अजईस
तब बाली बोला मुस काई। बल तुम्हार ऐसे हैं भाई॥
रवि अंजलि मैं देउं स मीती। ठाढ़ होइ जायेउ मोहि जीती

दो॰ रा॰ बा॰ ११२

तब निशिचर पति उठा रिसाई। दे कपि युद्ध छाड़ कदराई
तबहि कीस पति मनहि बिचारा। द्विज वर दीन्ह मरहि नहि मारा
हे दशकंधर जाहु बिचारी। अजय तुम्हार छत्र भुज चारी
बहु भांती बालो समुझावा। कौनिहु भांति बोध नहिं आवा
तब सकोप होइ उठा कपीसा। धरि तेहिं कांख चाप दश शीसा
संज नि दीन्ह रविहि मन मानी। अंचेउ सत्त उदधि के पानी
जपेउ आदित्य मंत्र मन मानी। तेहि खन संध्या बंद सिरानी
दो॰ आवा धरहि कपीस तब कारव रहेउ लंकेश
एहि बिधि बीते मास षट पावा बहुत कलेश
बहु प्रसेद करवरी मह जामा। अति कुबास नाकहुं भै धामा
कल मलाइ रिस दसनन काटा। कच्च कर जीव मनहु भ्रम छाटा
एक दिवस रवि अंजुलि साजा। करव ते निसरि महा धुनि गाजा
सो पुनि धरि कपीस तें बाधा। ले आयेउ अंगद के राधा
बीस भुजा दश शीश सुधारा। चरनहु सो पुनि धरि उर मारा
धरि समेट दूमर सम कीन्हा। बांध सेज पर शोभा दीन्हा
अंगद खेल लात शिर मारा। किल किलाइ किलके किल कारा
दो॰ तारा चीन्हेउ रावनहिं तेहि खन दीन्ह छोड़ाइ
जाहु तुरत लंकेश गृह बहुरि धरहिं कपिराइ
सुनि रावन आये तेहि ठाई। सहस बाहु तहं रास बनाई
जल कीड़ा करैं संग सब नारी। विविध भांति शोभा अति भारी
आइ रचा मंडल जल रेवा। सुर नर नाग करहिं सब सेवा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जाय दीख रावण सुख माना। हर्ष समेत हृदय सुख माना
तहं लंकेश जाइ शिव देखा। रचेह बिरंचि मनहुं बह रेखा
तुलसी अर्क पत्र सब आना। बिल्वपत्र अरु पुष्प प्रमाना
जाइ जले छोभेउ दश शीशा। थांभेउ मंत्र सुमिरि गौरीशा

दो॰ जब प्रचंड जल छोभेउ बूड़ेउ सबै समाज
सहस बाहु मन शंक अति सकल त्रिये उर लाज

तब राजा सन बोलहिं नारी। अति सुंदर सब राज कुमारी
सुनु नरपति आएउ कोउ गाढ़ा। आकस मात महा नद बाढ़ा
सुनि राजहिं भा क्रोध अपारा। जस त्रिनेत्र त्रिपुर कहं जारा
जाइ दीख रावण तहं ठाढ़ा। जासु मंत्र बल जल निधि बाढ़ा
धावा प्रबल महा बल भारी। लंकेश्वर कहं धरेसि प्रचारी
लेइ पुनि बांधि गयेउ त्रिय पासा। गढ़नि देख सब परम दुलासा
करि अशनान पूजि गौरीशा। हय शाला बांधे दश शीशा

दो॰ कह भुशुंडि खगपति सुनो अब यह कथा रसाल
हय शाला ले बांधऊं बीस भुजा दश भाल ॥

सकल आइ देखहिं नर नारी। मारहिं लात हंसैं दे तारी
नाम न कहै रहै सकुचाना। बह विधि पूछत नृपति सुनाना
नृत्य करहिं रंभादिक नारी। दशह माथ दश दीपक बारी
कछुक मास एहि भांति गवांवा। सो पुलस्त्य मुनि जाइ बुलावा
चला तुरंत महा अभिमानी। नल कूबर कै श्राप नियरानी
मारग जात देखि बिबुधारी। अति सुंदरी अनूपम नारी

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चंदन पुष्प पत्र कर थारी । पूजन चली जाइ त्रिपुरारी।
देखि उर्बसी मन सकुचानी । तब रावन बोले मृदु बानी
दो· निकट जाइ दशकंध तब गही अंक भरि लीन
पुत्रहि बधू कुबेर के नहिं बिचार कछु कीन ॥
चीन्ह त्रियहि मन बिस्मय भयऊ। लंकेश्वर लंका महं गयऊ
चलित उर्बसी आई तहां । अलका पुरि नलकूबर जहां
समाचार सब पतिहि सुनावा। सुनी कथा मनहूं दुख पावा
दीन्ह शाप करि क्रोध अपारा। रावन बंश होइ क्षय कारा
चली आप लंका महं आई। दशकंधर बैठेउ जेहि ठाई
आगे आइ ठाढ़ भा आपा । तब लंकेश्वर अति भय कापा
सडर सकोप चितव तेहि ओरा। नलकूबरक आप अति घोरा
दो· आपहिं अंगीकार करि मन महुं कीन्ह बिचार
ऋषिन दंड नहिं दीन्हेउ राखेउ लंक भुआर
दूत चारि तेहि पठए भवानी। भरद्वाज मुनि कथा बखानी
आए दूत ऋषिन के गेहा । देखत सबहि भएउ संदेहा
पूछहिं ऋषय कहां पगु धारा। अहहिं कुशल लंकेश भुआरा
नात कुशल अब भई बिपरीता। तुम सन मांगिन्हि दंड अभीता
देहो दंड अस कहेउ रिसाई। के गिरि कंदर जाहु पराई
सुनि अस बचन सबहिं दुख पावा। तुरत बेगि एक पात्र मंगावा
सब मिल कर बिचार एक ठाए। भरि घट रुधिर ऋषय लेआये
दूतन कह सौंपो मुनि ज्ञानी। होइ सकोप बोले मृदु बानी

दी· रा· बा· २१४

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो· घट उघरत क्षय होइही सकल सहित परिवार
लेइ दूत नहं आयऊ जहं लंकेश मुआर
आगे आय धरा घट भारी। देख सकल लंका पति धारी
बोलेन्हि बचन कहा है भाई। सकल कथा तिन्ह नृपहि सुनाई
एहि घट ते लंका पति नासा। सब दूतन अस बचन प्रकासा
एहि घट ले उत्तर दिशि जाहू। यतन समेत देहु लै काहू
सुनि नृप बचन चले सब कैसे। जनक राय के देशहि पैसे
क्षेत्र कुंभ धरि चले बिचारी। तहां प्रगट भई दिव्य कुमारी
जग जननी को बरने पारा। राजा जनक तहां पगु धारा
कन्या देखि अनूप भवानी। सुता भांति राजा गृह आनी
नाम जानकी परम पुनीता। नारद आनि कहेउ पुनि सीता
दो· सकल कथा नृप जनक सों नारद कहा बखानि
सकल सुलक्षण लक्षि गुण जग दंबा मन जानि
कहि ते कथा ऋषि राउ सिधाए। बहुरि दूत लंका पुर आए
कहिन्ह जाइ आए हम रूपी। सो शंकर गिरिजा सन भाषी
याज्ञ वल्क्य मुनि कथा रसाला। साधु साधु पति परम कृपाला
पुनि मुनि कहेउ कथा उपदेशा। जग जीते सब लंक नरेशा
चारि दाउं हारेसि भय त्रासा। सकल देव कीन्हेउ निज दासा
मेघनाद कहं पुनि हंक रावा। दीन्ह सीख बल बयर बढ़ावा
जे सुर समर धीर बल वाना। जिनके लरिवे को अभिमाना
तिनहिं जीत रण आनसि बांधा। उठि सुत पितु अनुशासन सांधा

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चंदन पुष्प पत्र कर थारी । पूजन चली जाइ त्रिपुरारी।
देखि उर्बसी मन सकुचानी । तब रावन बोले मृदु बानी
दो· निकट जाइ दशकंध तब गही अंक भरि लीन
पुत्रहि बधू कुबेर के नहिं बिचार कछु कीन ॥
चीन्ह त्रियहि मन बिस्मय भयऊ। लंकेश्वर लंका महं गयऊ
चलित उर्बसी आई तहां । अलका पुरि नलकूबर जहां
समाचार सब पतिहि सुनावा। सुनी कथा मनहूं दुख पावा
दीन्ह शाप करि क्रोध अपारा। रावन बंश होइ क्षय कारा
चली आप लंका महं आई। दशकंधर बैठेउ जेहि ठाई
आगे आइ ठाढ़ भा आपा । तब लंकेश्वर अति भय कापा
सडर सकोप चितव तेहि ओरा। नलकूबरक आप अति घोरा
दो· आपहिं अंगीकार करि मन महुं कीन्ह बिचार
ऋषिन दंड नहिं दीन्हेउ राखेउ लंक भुआर
दूत चारि तेहि पठए भवानी। भरद्वाज मुनि कथा बखानी
आए दूत ऋषिन के गेहा । देखत सबहि भएउ संदेहा
पूछहिं ऋषय कहां पगुधारा। अहहिं कुशल लंकेश भुआरा
नात कुशल अब भई बिपरीता। तुम सन मांगिन्हि दंड अभीता
देहो दंड अस कहेउ रिसाई। कै गिरि कंदर जाहु पराई
सुनि अस बचन सबहिं दुख पावा। तुरत बेगि एक पात्र मंगावा
सब मिल कर बिचार एक ठाए। भरि घट रुधिर ऋषय लै आये
दूतन कह सौंपो मुनि ज्ञानी। होइ सकोप बोले मृदु बानी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो· घटउघरत क्षय होइही सकल सहित परिवार
लेइ दूत तहं आयऊ जहं लंकेश अुआर
आगे आय धरा घट भारी। देख सकल लंका पति धारी
बोलेन्हि बचन कहा है भाई। सकल कथा तिन्ह नृपहि सुनाई
एहि घट ते लंका पति नासा। सब दूतन अस बचन प्रकासा
एहि घट ले उत्तर दिशि जाहू। यतन समेत देहु लै काहू
सुनि नृप बचन चले सब कैसे। जनक राय के देशहि पैसे
क्षेत्र कुंभ धरि चले बिचारी। तहां प्रगट भई दिव्य कुमारी
जग जननी को बरनै पारा। राजा जनक तहां पगु धारा
कन्या देखि अनूप भवानी। सुता भांति राजा गृह आनी
नाम जानकी परम पुनीता। नारद आनि कहेउ पुनि सीता

दो· सकल कथा नृप जनक सों नारद कहा बखानि
सकल सुलक्षण लक्षि गुण जग देवा मन जानि
कहि ते कथा ऋषि राउ सिधाए। बहुरि दूत लंका पुर आए
कहिन्ह जाइ आए हम रषी। सो शंकर गिरिजा सन भाषी
याज्ञ वल्क्य मुनि कथा रसाला। साधुसाधु पति परम कृपाला
पुनि मुनि कहेउ कथा उपदेशा। जग जीते सबलक नरेशा
चारि ढाउं हारेसि भय त्रासा। सकल देव कीन्हेउ निज दासा
मेघनाद कहं पुनि हंक रावा। दीन्ह सीख बल बयर बढ़ावा
जे सुर समर धीर बल वाना। जिन के लरिवे को अभिमाना
तिनहिं जीत रण आनसि बांधा। उठि सुत पितु अनुशासन कांधा

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

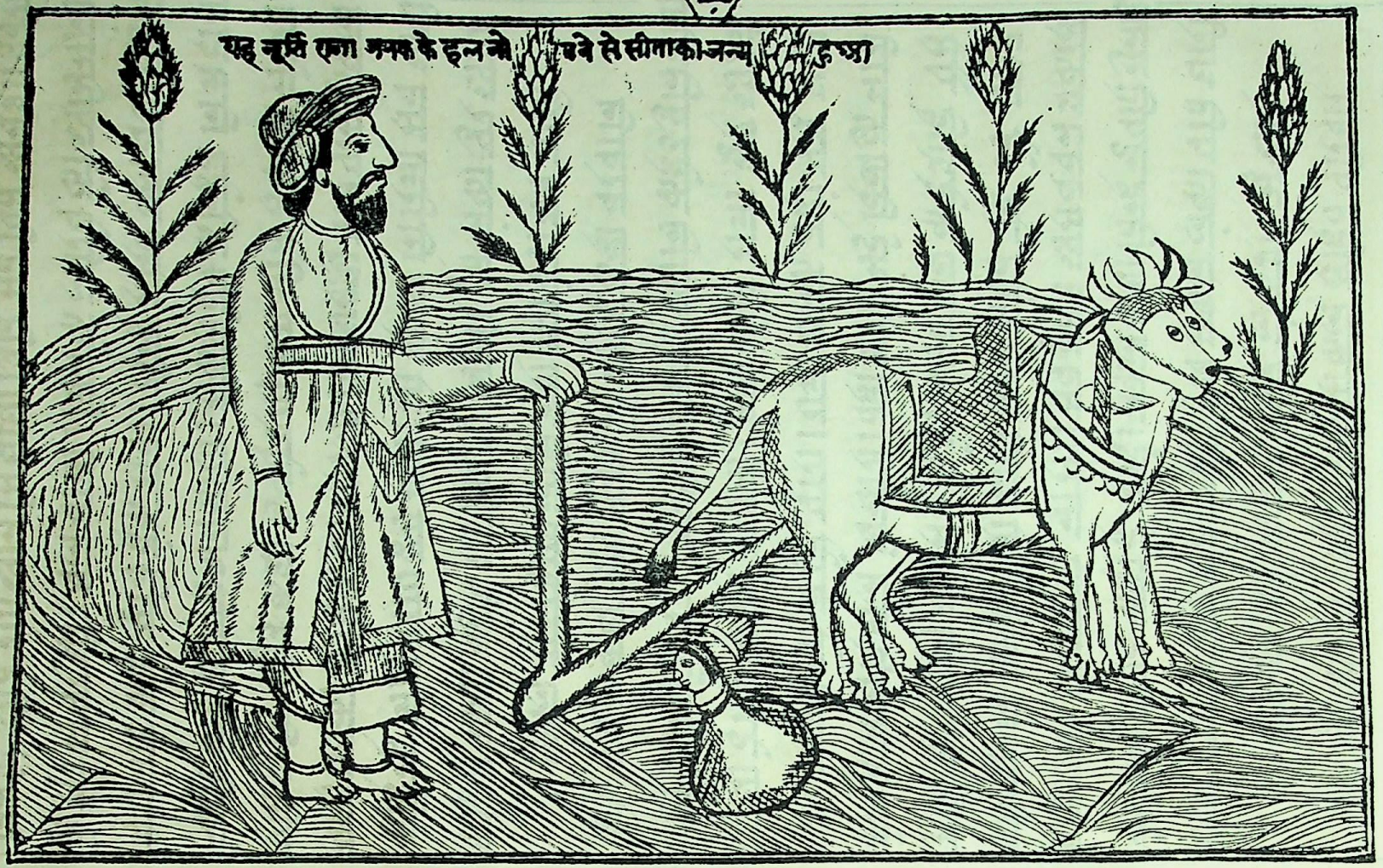

CC-0. In Public Domain.Digitized by eGangotri Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इहि बिधि सबही आज्ञा दीन्हा। आपुन चलेउ गदा कर लीन्हा
चलत दशानन डोलत अवनी। गर्जत गर्भ श्रवत सुर रवनी
रावण आवत सुनेउ सकोहा। देवन तकेउ मेरु गिरि खोहा
दृग पालन के लोक सिधाए। सूने सकल दशानन पाए।
पुनि पुनि सिंहनाद करि भारी। देव देवतन गारि प्रचारी॥
रण मद मत्त फिरै जग धावा। प्रति भट खोजत कतहुं न पावा
रवि शशि पवन बरुण तनु धारी। अग्नि काल यम सब अधिकारी
किन्नर सिद्ध मनुज सुर नागा। हठि सबही के पंथहि लागा
ब्रह्म सृष्टि जहं लगि तनु धारी। दशमुख बश वर्ती नर नारी
आयसु करहिं सकल भय भीता। नवहिं आइ नित चरण विनीता

दो॰ भुज बल विश्व विजय करि राखेसि कोउ न स्वतंत्र
मंडलीक महि रावण राज करै निज मंत्र ॥
देव यक्ष गंधर्व नर किन्नर नाग कुमार
जीति बरी निज बाहु बल बहु सुंदर बर नार

इंद्र जीत सन जो कछु कहेऊ। सो सब जनि पहिले कर रहेऊ
प्रथमहिं जिन्ह कहं आयसु दीन्हा। तिन्ह कर चरित सुनहुं जो कीन्हा
देखत भीम रूप सब पापी। निशिचर निकर देव परितापी
करहिं उपद्रव असुर निकाया। नाना रूप धरहिं कर माया
जेहि बिधि होय धर्म निर्मूला। सो सब करहिं बेद प्रति कूला
जेहि जेहि देश धेनु द्विज पावहिं। नगर ग्राम पुर आग लगावहिं
शुभ आचरण कतहुं नहिं होई। बेद बिप्र गुरु मान न कोई॥

CC-0. In Public Domain. ... Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नहिं हरि भक्त यज्ञ जप दाना। सपनेहुं सुनिय न बेद पुराना
छं. जप जोग बिरागा तप मख भागा श्रवण सुने दशशीशा
आपुन उठ धावै रहै न पावै धरि सब घालै खीसा।
अस भ्रष्ट अचारा भा संसारा धर्म सुनिय नहिं काना
तेहि बहु बिधि त्रासै देश निकासै जो कहै बेद पुराना
सो. बरणि न जाइ अनीत घोर निशाचर जो करहिं
हिंसा पर अति प्रीति तिनके पापहि कवन मिति
बाढ़े बहु खल चोर जुवारी। जे लंपट पर धन पर नारी॥
मानहिं मात पिता नहिं देवा। साधुन सो कर पावहिं सेवा॥
जिनके यह आचरण भवानी। ते जानहुं निशिचर सम प्रानी
अति शय देखि धर्म की हानी। परम सभीत धरा अकुलानी
गिरि सरि सिंधु भार नहिं मोही। जस मोहि गरुअ एक परद्रोही
सकल धर्म देखहिं बिपरीता। कहि न सकै रावण भय भीता
धेनु रूप धरि हृदय बिचारी। गई तहां जहं सुर मुनि झारी
निज संताप सुनायेसि रोई। काहू ते कछु काज न होई॥
छं. सुर मुनि गंधर्वा मिलि करि सर्बा गए बिरंचिके लोका
संग गो तनु धारी भूमि बिचारी परम बिकल भये शोका
ब्रह्मा सब जाना मन अनुमाना मेरो कछु न बसाई
जा करि तैं दासी सो अबिनासी हमरो तोर सहाई
सो. धरणि धरहु मन धीर कह बिरंचि हरि पद सुमिरि
जानत जनकी पीर प्रभु भंजहिं दारुण बिपति

टी. ए. बा. ११८

बैठे सुर सब करहिं बिचारा। कहं पाइय प्रभु करिय पुकारा।
पुर बैकुंठ जान कह कोई। कोइ कह पय निधि महं प्रभु सोई।
जाके हृदय भक्ति जस प्रीती। प्रभु तेहि प्रगट सदा यह रीती।
तेहि समाज गिरिजा मैं रहेऊं। अवसर पाइ बचन इक कहेऊं।
हरि व्यापक सर्बत्र समाना। प्रेम तें प्रगट होहिं मैं जाना।
देश काल दिशि बिदिशिहु माहीं। कहहु सो कहां जहां प्रभु नाहीं।
अग जग मय सब रहित बिरागी। प्रेम तें प्रभु प्रगटे जिमि आगी।
मोर बचन सब के मन माना। साधु साधु करि ब्रह्म बखाना।

दो॰ सुनि बिरंचि मन हर्ष तन पुलक नयन बह नीर
अस्तुति करत सजोरि कर सावधान मति धीर

छं॰ जय जय सुर नायक जन सुखदायक प्रणतपाल भगवंता।
गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिंधु सुता प्रियकंता।
पालन सुर धरणी अद्भुत करणी मर्म न जाने कोई।
जो सहज कृपाला दीन दयाला करो अनुग्रह सोई।
जय जय अबिनाशी सब घटबासी व्यापक परमानंदा।
अबिगत गोतीतं चरित पुनीतं मायारहित मुकुंदा।
जेहि लागि बिरागी अति अनुरागी बिगत मोह मुनिबृंदा।
निशि बासर ध्यावहिं गुण गावहिं जयति सच्चिदानंदा।
जेहि सृष्टि उपाई त्रिबिध बनाई संग सहाय न दूजा।
सो करहु उबारी चिंत हमारी जानिय भगति न पूजा।
जो भव भय भंजन मुनि मन रंजन गंजन बिपति बरूथा।

CC-0. In Public Domain. Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मन बच क्रम बाणी छांड़ि सयानी शरण सकल सुर यूथा
शारद श्रुति शेषा ऋषय अशेषा जा कहं कोउ न जाना
जेहि दीन पियारे वेद पुकारे द्रवो सो श्री भगवाना
भव वारिध मंदर सब बिधि सुंदर गुण मंदिर सुख पुंजा
मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पद कंजा
दो॰ जानि समय सुर भूमि मुनि बचन समेत सनेह
गगन गिरा गंभीर भइ हरण शोक संदेह
जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेशा। तुमहिं लागि धरिहौं नरभेशा
अंशन सहित मनुज अवतारा। लैहौं दिनकर बंश उदारा
कश्यप अदिति महा तपकीन्हा। तिन्ह कहं मैं पूरब वर दीन्हा
ते दशरथ कौशल्या रूपा। कोशल पुरी प्रगट नर भूपा
तिनके गृह अवतरिहौं जाई। रघुकुल तिलक सो चारिउ भाई
नारद बचन सत्य सब करिहौं। परम शक्ति समेत अवतरिहौं
हरिहौं सकल भूमि गरुआई। निर्भय होहु देव समुदाई
गगन ब्रह्म बाणी सुनि काना। तुरत फिरे सुर हृदय जुड़ाना
तब ब्रह्मा धरणिहि समुझावा। अभय भई भरोस जिय आवा
दो॰ निज लोकहिं बिरंचि गये देवन्ह इहै सिखाइ
बानर तनु धरि धरणि महं हरि पद सेवहु जाइ
गये देव सब निज निज धामा। भूमि सहित पाये बिश्रामा
जो कछु आयसु ब्रह्मै दीन्हा। हर्षे देव बिलंब न कीन्हा
बनचर देह धरी क्षिति माहीं। अतुलित बल प्रताप तिन पाहीं

यह मूर्ति ऋंगीऋषि वशिष्ठकी राजा दशरथके पुत्र निमित्त यज्ञ करना

टी॰ ए॰ बा॰ १२१

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गिरि तरु नख आयुध सब बीरा। हरि मारग चितवहिं मतिधीरा
गिरि कानन जहं तहं भरि पूरी। रहे निज निज अनीक रचि रूरी
यह सब रुचिर चरित मैं भाषा। अब सो सुनहु जो बीचहि राखा
अवध पुरी रघुकुल मनि राऊ। बेद बिदित तेहि दसरथ नाऊ
धर्म धुरंधर गुननिधि ग्यानी। हृदय भगति मति सारंग पानी
दो॰ कौसल्यादि नारि प्रिय सब आचरन पुनीत
पति अनुकूल सप्रेम दृढ़ हरि पद कमल बिनीत
एक बार भूपति मन माहीं। भै गलानि मोरे सुत नाहीं
गुरु गृह गये तुरत महिपाला। चरन लागि करि बिनय बिसाला
निज दुख सुख नृप गुरुहि सुनायउ। कहु बसिष्ठ बहु बिधि समुझायउ
धरहु धीर होइहैं सुत चारी। त्रिभुवन बिदित भगत भयहारी
सृंगी ऋषिहि बसिष्ठ बुलावा। पुत्र काम लगि जग्य करावा
भगति सहित मुनि आहुति दीन्हे। प्रगटे अगिनि चारु कर लीन्हे
जो बसिष्ठ कछु हृदय बिचारा। सकल काज भा सिद्ध तुम्हारा
यह हबि बाँटि देहु नृप जाई। यथा जोग जेहि भाग बनाई
दो॰ तब अदृस्य पावक भये सकल सभहि समुझाइ
परमानंद मगन नृप हरष न हृदय समाइ
तबहिं रायँ प्रिय नारि बुलाईं। कौसल्यादि तहाँ चलि आईं
अर्द्ध भाग कौसल्यहिं दीन्हा। उभय भाग आधे कर कीन्हा
कैकेई कहं नृप सो दयऊ। रहेउ सो उभय भाग पुनि भयऊ
कौसल्या कैकेई हाथ धरि। दीन्ह सुमित्रहि मन प्रसन्न करि

इहि बिधि गर्भ सहित सब नारी। भयउ हृदय हरषित सुख भारी
जा दिन ते हरि गर्भहिं आये। सकल लोक सुख संपति छाये
मंदिर महं सब राजहिं रानी। सोभा सील तेज की खानी
सुख जुत कछुक काल चलि गयऊ। जेहि प्रभु प्रगट सो अवसर भयऊ

दो॰ योग लग्न ग्रह बार तिथि सकल भये अनुकूल
चर अरु अचर हर्षजुत राम जनम सुख मूल

नवमी तिथि मधु मास पुनीता। सुकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता
मध्य दिवस अति सीत न घामा। पावन काल लोक बिश्रामा
सीतल मंद सुरभि बह बाऊ। हरषित सुर संतन मन चाऊ॥
बन कुसुमित गिरिगन मनियारा। स्रवहिं सकल सरिताऽमृत धारा
सो अवसर बिरंचि जब जाना। चले सकल सुर साजि बिमाना
गगन बिमल संकुल सुर जूथा। गावहिं गुन गंधर्ब बरूथा
बरषहिं सुमन सुअंजलि साजी। गहगह गगन दुंदुभी बाजी॥
अस्तुति करहिं नाग मुनि देवा। बहु बिधि लावहिं निज निज सेवा

दो॰ सुर समूह बिनती करी पहुंचे निज निज धाम
जग निवास प्रभु प्रगटेउ अखिल लोक बिश्राम

छं॰ भये प्रगट कृपाला दीन दयाला कौसल्या हितकारी
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप निहारी
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी
भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभा सिंधु खरारी॥
कह दुहुं कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंता

परमात्मा
जन्म मरण रहि
त बिलंब भयउ
स्यादि ते बिकार
बही पास है अह
सब अवतार धरे
को इच्छा करते है
तब प्रभु भीत प
तब देवता उदर वे
क अह प्रस्ति को
ह प्रतीति कराउ
मूर्ति है को कथा वे
हिये वर्त पुराणके
छल जन्म खंड
ं बिस्तार ही ए
ं जन्म करं प्रभु
के सब दिय ज
ं पुनर्वस नक्ष
ह सूर्य भगवा
हस्पति अरुण
ह पांचो ग
ह उच्च कर्म स्थ
कस्पति चंद्रमा

दो॰
रा॰ बा॰
ये अंगाल का
नवमी चैत्र शुक्ल अभिजि
मति न मुहूर्त सब
को भव काल के
आदि अंत हीनो
प्रभु प्रगट ते
वनादिकन के
आनंद

माया गुण ज्ञानातीत अमाना बेद पुराण भनंता
करुणा सुख सागर सब गुण आगर जेहि गावहिं श्रुति संता
सोमम हित लागी जन अनुरागी प्रगट भये श्रीकंता
ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहैं
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीरमति थिर न रहैं
उपजा जब ज्ञाना प्रभु मुसकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै
कहि कथा सुनाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा
कीजै शिशु लीला अति प्रिय शीला यह सुख परम अनूपा
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होय बालक सुर भूपा
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा

दो॰ बिप्र धेनु सुर संत हित। लीन्ह मनुज अवतार
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुण गो पार

सुनि शिशु रुदन परम प्रिय बानी। संभ्रम चलि आई सब रानी
हर्षित जहं तहं धाईं दासी । आनंद मगन सकल पुरबासी
दशरथ पुत्र जन्म सुनि काना। मानहुं ब्रह्मानंद समाना
परम प्रेम मन पुलक शरीरा । चाहत उठत करत मति धीरा
जाकर नाम सुनत शुभ होई । मोरे गृह आवा प्रभु सोई
परमानंद पूरि मन राजा। कहा बुलाइ बजावहु बाजा
गुरु बशिष्ठ कहं गयउ हंकारा। आये द्विजन सहित नृप द्वारा
अनुपम बालक देख न जाई। रूप राशि गुण कहि न सिराई

CC-0. In Public Domain. Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो॰ तब नांदी मुख श्राद्ध करि जात कर्म सब कीन्ह
हाटक धेनु बसन मणि नृप विप्रन कहं दीन्ह

ध्वज पताक तोरण पुर छावा। कहि न जाइ बहु भांति बनावा
सुमन वृष्टि आकाश ते होई। ब्रह्मानंद मगन सब कोई
बृन्द बृन्द मिलि चलीं लुगाईं। सहस सिंगार किये उठि धाईं
कनक कलश मंगल भर थारा। गावत पैठहिं भूप दुआरा।
करि आरती निछावर करहीं। बार बार शिशु चरणन परहीं
मागध सूत बंदि गण गायक। पावन गुण गावहिं रघुनायक
सर्बस दान दीन्ह सब काहू। जेहि पावा राखा नहिं ताहू
मृग मद चंदन कुंकुम सींचा। मची सकल वीथिन विच कीचा

दो॰ गृह गृह बाज बधाव शुभ प्रगट भये सुख कंद
हरषवंत सब जहं तहं नगर नारि नर बृंद ॥

केकय सुता सुमित्रा दोऊ। सुन्दर सुत जन्मत भइ सोऊ
वह सुख संपति समय समाजा। कहि न सकै शारद अहि राजा
अवधपुरी सोहै इहि भांती। प्रभुहि मिलन आई जनु राती
देखि भानु जनु मनु सकुचानी। तदपि बनी संध्या अनुमानी
अगर धूप जनु बहु अंधियारी। उड़े अबीर मनहुं अरुणारी
मंदिर मणि समूह जनु तारा। नृप गृह कलश सो इंदु उदारा
भवन बेद धुनि अति मृदु बानी। जनु खग मुखर समय जनु सानी
कौतुक देखि पतंग भुलाना। एक मास तेहि जात न जाना

दो॰ मास दिवस का दिवस भा मरम न जाने कोइ

पं॰ २५ मू॰ प्रभुहि मिलन टी॰ रामचंद्र स माधि निशा के

टी॰ रा॰ बा॰ १२६

पति हैं नामक रण क्षत्रिय का ब्राह्मण द्वारा

नौ

रथ समेत रवि थाकेऊ। निशा कवन विधि होइ
यह रहस्य काहू नहिं जाना। दिन मणि चले करत गुण गाना
देखि महोत्सव सुर मुनि नागा। चले भवन बरणत निज भागा
औरौं एक कहौं निज चोरी। सुनु गिरिजा अति दृढ़ मति मोरी
काक भुशुंडि संग हम दोऊ। मनुज रूप जानै नहिं कोऊ
परमानंद प्रेम सुख फूले। बीथिन फिरहिं मगन मन भूले
यह सब चरित जान पै सोई। कृपा राम की जापर होई॥
तेहि अवसर जो जेहि विधि आवा। दीन्ह भूप जो जेहि मन भावा
गजरथ तुरग हेम गो हीरा। दीन्हे नृप नाना विधि चीरा॥
दो॰ मन संतोषे सबन के। जहं तहं देहिं अशीश
सकल तनय चिरजीवहु तुलसिदास के ईश।
कछुक दिवस बीते इहि भांती। जात न जानहिं दिन अरु राती
नाम करण कर अवसर जानी। भूप बोलि पठये मुनि ज्ञानी
करि पूजा भूपति अस भाषा। धरिय नाम जो मुनि गुनि राषा
इनके नाम अनेक अनूपा। मैं नृप कहव स्वमति अनुरूपा
जो आनंद सिंधु सुख रासी। सी कर तें त्रैलोक्य सुपासी
सो सुखधाम राम अस नामा। अखिल लोक दायक बिश्रामा
विश्व भरण पोषण करु जोई। ताकर नाम भरत अस होई
जाके सुमिरन तें रिपु नाशा। नाम शत्रुहन बेद प्रकाशा॥
दो॰ लक्ष्मण धाम राम प्रिय सकल जगत आधार
गुरु बशिष्ट तेहि राखा लक्ष्मण नाम उदार॥

पंक्ति १४
मुनि गुन राषा
टी॰ योग्यता
माफिक नाम मा
हीं आप तप के
बल तें निकालन
हैं वेद तत्व अपा
वहैं माता है बा
लक देखे हेतु
प्रत्यक्ष ईश्वर तत्व

टी॰
रा॰ बा॰
१२७

इष्टदेव को भोग
लगायो सो पुनः
हंसि कै माया
करी कि न स्वाद्य
करनो है और वि
षम पदन को अ
र्थ कोश शंका
पली में १०५
रामचंद्र जी

धेरे नाम गुरु हृदय बिचारी । बेद तत्त्व नृप तव सुत चारी
मुनि जन धन सर्बस शिव प्राना। बाल केलि सेतेहि सुख माना
बारेहि तें निज हित पति जानी। लक्षमण राम चरण रति मानी
भरत शत्रुहन दोनों भाई । प्रभु सेवक जस प्रीति बड़ाई
श्याम गौर सुंदर दोउ जोरी। निरखहिं छबि जननी तृण तोरी
चारु शील रूप गुण धामा। तदपि अधिक सुख सागर रामा
हृदय अनुग्रह इंदु प्रकासा। सूचत किरण मनोहर हासा
कबहुं उछंग कबहुं बर पालन। मातु दुलारहिं कहि प्रिय लालन
दो. व्यापक ब्रह्म निरंजन। निर्गुण बिगत बिनोद
सो अज प्रेम भक्ति बस कौशल्या की गोद
काम कोटि छबि श्याम शरीरा। नील कंज बारिद गंभीरा
अरुण चरण पंकज नख जोती। कमल दलन बैठे जनु मोती
रेख कुलिश ध्वज अंकुश सोहे। नूपुर धुनि सुनि मुनि मन मोहे
कटि किंकिणी उदर त्रय रेखा। नाभि गंभीर जान जेहि देखा
भुज बिशाल भूषण युत भूरी । हिय हरि नख शोभा अति रूरी
उर मणि हार पदिक की सोभा। बिप्र चरण देखत मन लोभा
कंबु कंठ अति चिबुक सुहाई। आनन अमित मदन छबि छाई
दुइ दुइ दसन अधर अरुणारे । नासा तिलक को बरने पारे।
सुंदर श्रवण सुचारु कपोला । अति प्रिय मधुर तोतरि बोला
नील कमल दोउ नयन बिशाला। बिकट भृकुटि लटकन बन माला
चिक्कन कच कुंचित गभुआरे । बहु प्रकार रचि मातु संवारे ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by ... Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पीत झिंगुलिया तन पहिराये। जानु पाणि बिचरन मोहि भाये
रूप सकहिं नहिं कहि श्रुति शेषा। सो जाने सपनेहुं जिन्ह देषा
दो· सुख संदोह मोह पर। ज्ञान गिरा गो तीत ॥
दंपति परम प्रेम बस कर शिशु चरित पुनीत
इहि विधि राम जगत पितु माता। कोशलपुर वासिन सुख दाता
जिन रघुनाथ चरण रति मानी। तिन की यह गति प्रगट भवानी
रघुपति बिमुख यतन कर कोरी। कवन सकै भव बंधन छोरी ॥
जीव चराचर बसकै राखे ।सो माया प्रभु सो भय भाखे॥
भृकुटि विलास नचावै ताही। अस प्रभु छांड़ि भजिय कहु काही
मन क्रम बचन छांड़ि चतुराई। भजत कृपा करिहैं रघुराई ॥
इहि विधि शिशु विनोद प्रभु कीन्हा। सकल नगर वासिन सुख दीन्हा
ले उछंग कबहूं हलरावै ॥।कबहूं पालन घालि झुलावै ॥
दो· प्रेम मगन कौशल्या निशि दिन जात न जान
सुत सनेह बस माता। बाल चरित कर गान
एकबार जननी अन्हवाये। करि सिंगार पलना पौढ़ाये ॥
निज कुल इष्ट देव भगवाना। पूजा हेतु कीन्ह अस्नाना ॥
करि पूजा नैबेद्य चढ़ावा ॥। आपु गई जहं पाक बनावा॥
बहुरि मातु तहं वहं चलि आई। भोजन करत देख रघुराई ॥
गइ जननी शिशु पहं भय भीता। देखा बाल तहां पुनि सूता
बहुरि आइ देखा सुत सोई। हृदय कंप मन धीर न होई ॥
इहां उहां दुइ बालक देखा ॥ मति भ्रम मोरि कि आन विशेषा

देखि राम जननी अकुलानी। प्रभु हंसि दीन्ह मधुर मुसकानी
दो॰ देखिरावा मातहिं निज अद्भुत रूप अखंड
रोम रोम प्रति लागे कोटि कोटि ब्रह्मंड ॥ ८
अगणित रवि शशि शिव चतुरानन। बहु गिरि सरित सिंधु महिकानन
काल कर्म गुण दोष सुभाऊ। सो देखा जो सुना न काऊ
देखी माया सब विधि गाढ़ी। अति सभीत जोरे कर ठाढ़ी
देखा जीव नचावै जाही। देखी भक्ति जो छोरै ताही ॥
तन पुलकित मुख वचन न आवा। नयन मूंदि चरणन शिरनावा
विस्मयवंती देखि महतारी। भये बहुरि शिशु रूप खरारी ॥
अस्तुति करि न जाइ भय माना। जगत पिता मैं सुत करि जाना
हरि जननिहि बहु विधि समुझाई। यह जनि कतहुं कहसि सुनु माई
दो॰ बार बार कौशल्या। विनय करै कर जोरि
अब जनि कबहूं व्यापै। प्रभु मोहि माया तोरि
बाल चरित हरि बहु विधि कीन्हा। अति आनंद दासन कहं दीन्हा
कछुक काल बीते सब भाई। बड़े भये परिजन सुखदाई
चूड़ा करण कीन्ह गुरु आई। विप्रन पुनि दक्षिणा बहु पाई
परम मनोहर चरित अपारा। करत फिरत चारिउ सुकुमारा
मन क्रम वचन अगोचर जोई। दशरथ अजिर विचर प्रभु सोई
भोजन करत बुलावत राजा। नहिं आवहिं तजि बाल समाजा
कौशल्या जब बोलन जाई। ठुमुकि ठुमुकि प्रभु चलहिं पराई
निगम नेति शिव अंत न पावा। ताहि धरे जननी हठि धावा

CC-0. In Public Domain. Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

धूसर धूर भरे तनु आये। भूपति बिहंसि गोद बैठाये ॥
दो॰ भोजन करत चपल चित इत उत अवसर पाइ
भाजि चले किलकात मुख दधि ओदन लपटाइ
बाल चरित अति सरल सुहाये। सारद सेष संभु श्रुति गाये
जिन कर मन इन मन नहिं राता। ते जग बंचित किये बिधाता
भये कुमार जबहिं सब भ्राता। दीन्ह जनेउ गुरु पितु माता
गुरु गृह गये पढ़न रघुराई। अलप काल बिद्या सब आई
जाकी सहज स्वास श्रुति चारी। सो हरि पढ़ यह कौतुक भारी
बिद्या बिनय निपुन गुन सीला। खेलहिं खेल सकल नृपलीला
करतल बान धनुष अति सोहा। देखत रूप चराचर मोहा ॥
निज बीथिन बिहरहिं सब भाई। थकित होहिं सब लोग लुगाई
दो॰ कोसलपुर बासी नर नारि बृद्ध अरु बाल ॥
प्रानहु ते प्रिय लागते। सब कहं राम कृपाल
बंधु सखा सब लेहिं बुलाई। बन मृगया नित खेलहिं जाई
पावन मृग मारहिं जिय जानी। दिन प्रति नृपहिं दिखावहिं आनी
जो मृग राम बान के मारे। ते तनु तजि सुरलोक सिधारे
अनुज सखा संग भोजन करहीं। मातु पिता आज्ञा अनुसरहीं
जेहि बिधि सुखी होहिं पुर लोगा। करहिं कृपानिधि सोइ संजोगा
बेद पुराण सुनहिं मन लाई। आपु कहहिं अनुजहि समुझाई
प्रातकाल उठि के रघुनाथा। मातु पिता गुरु नावहिं माथा
आयसु मांगि करहिं पुर काजा। देखि चरित हरषहिं मनराजा

दो॰ रा॰ बा॰ १९

टी. ए. बी. ३२

CC-0. In Public Domain. Digitized by ... Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो॰ व्यापक अकल अनीह अज निर्गुण नाम न रूप
भक्त हेतु नाना विधि करत चरित्र अनूप ॥

यह सब चरित कहा मैं गाई। आगिल कथा सुनहु मन लाई
बिश्वामित्र महा मुनि ज्ञानी। बसहिं बिपिन सुभ आश्रम जानी
जहं तप जग्य जोग मुनि करहीं। अति मारीच सुबाहुहि डरहीं
देखत जग्य निशाचर धावहिं। करहिं उपद्रव मुनि दुख पावहिं
गाधि तनय मन चिंता व्यापी। हरि बिनु मरहिं न निशिचर पापी
तब मुनिवर मन कीन्ह बिचारा। प्रभु अवतरेउ हरण महि भारा
एहि मिसु देखौं प्रभु पद जाई। करि बिनती आनौं दोउ भाई
ज्ञान बिराग सकल गुण अयना। सो प्रभु मैं देखब भरि नयना

दो॰ यह बिधि करत मनोरथ। जात न लागी बार
करि मज्जन सरयू जल। गये भूप दरबार॥

मुनि आगमन सुना जब राजा। मिलन गयउ लै बिप्र समाजा
करि दंडवत मुनिहि सनमानी। निज आसन बैठारिन्ह आनी
चरण पखारि कीन्ह अति पूजा। मो सम आजु धन्य नहिं दूजा
बिबिध भांति भोजन करवावा। मुनिवर हृदय हर्ष अति छावा
पुनि चरणन मेले सुत चारी। राम देखि मुनि बिरति बिसारी
भये मगन देखत मुख शोभा। जनु चकोर पूरण शशि लोभा
तब मन हर्ष बचन कह राऊ। मुनि अस कृपा कीन्ह नहिं काऊ
केहि कारण आगमन तुम्हारा। कहहु सो करत न लावउं बारा
असुर समूह सतावहिं मोही। मैं याचन आयेउं नृप तोही

अनुज समेत देहु रघुनाथा। निशिचर वध मैं होउं सनाथा
दो॰ देहु भूप मन हर्षित। तजहु मोह अज्ञान
धर्म सुयश नृप तुम कहं इन कहं अति कल्यान
सुनि राजा अति अप्रिय बानी। हृदय कंप मुख दुति कुम्हिलानी
चौथेपन पायेउं सुत चारी। बिप्र बचन नहिं कहेउ बिचारी
मांगहु भूमि धेनु धन कोषा। सर्बस देउं आजु सहरोषा
देह प्राण ते प्रिय कछु नाहीं। सोउ मुनि देउं निमिष इक माहीं
सब सुत प्रिय मोहि प्राण किनाईं। राम देत नहिं बनै गोसाईं
कहं निशिचर अति घोर कठोरा। कहं सुंदर सुत परम किशोरा
सुनि नृप गिरा प्रेम रस सानी। हृदय हर्ष माना मुनि ज्ञानी
तब बशिष्ठ बहु बिधि समुझावा। नृप संदेह नाशकहं पावा
अति आदर दोउ तनय बुलाये। हृदय लाइ बहु भांति सिखाये
मेरे प्राण नाथ सुत दोऊ। तुम मुनि पिता आन नहिं कोऊ
दो॰ सौंपे भूपति ऋषिहि सुत बहु बिधि देइ असीस
जननी भवन गयेउ प्रभु चले नाइ पद शीश
पुरुष सिंह दोउ बीर हर्षि चले मुनिभय हरण
कृपा सिंधु अति धीर अखिल बिश्व कारण करण
अरुण नयन उर बाहु बिशाला। नील जलज तन श्याम तमाला
कटि पट पीत कसें बर भाथा। रुचिर चाप शायक दुहु हाथा
श्याम गौर सुंदर दोउ भाई। बिश्वामित्र महानिधि पाई
प्रभु ब्रह्मण्य देव मैं जाना। मोहि लगि पिता तजे भगवाना

CC-0. In Public Domain. Digitized by ... eGangotri Gyaan Kosha

चले जात मुनि दीन्ह दिखाई। सुनि ताड़िका क्रोध करि धाई
एकहि बान प्राण हर लीन्हा। दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा
तब ऋषि निज नाथहि जिय चीन्हा। विद्या निधि कहं विद्या दीन्हा
जातें लाग न क्षुधा पिपासा। अतुलित बल तनतेज प्रकासा

दो॰ आयुध सकल समर्पि के प्रभु निज आश्रम आनि
कंद मूल फल भोजन। दिये भक्त हित जानि॥

प्रात कहा मुनि सन रघुराई। निर्भय यज्ञ करहु तुम जाई॥
होम करन लागे मुनि झारी। आपु रहे मख की रखवारी
सुनि मारीच निशाचर कोही। लै सहाय धावा मुनि द्रोही
बिनु फर बाण राम तेहि मारा। शत योजन गा सागर पारा
पावक शर सुबाहु पुनि मारा। अनुज निशाचर कटक संहारा
मारि असुर द्विज निर्भय कारी। अस्तुति करहिं देव मुनि झारी
तहं पुनि कछुक दिवस रघुराया। रहे कीन्ह विप्रन पर दाया
भक्ति हेतु बहु कथा पुराणा। कहे विप्र यद्यपि प्रभु जाना
तब मुनि सादर कहा बुझाई। चरित एक देखिय प्रभु जाई
धनुष यज्ञ सुनि रघुकुल नाथा। हर्षि चले मुनिवर के साथा
आश्रम एक दीख मग माहीं। खग मृग जीव जन्तु तहं नाहीं
पूछा मुनिहि शिला प्रभु देखी। सकल कथा ऋषि कही विशेषी

दो॰ गौतम नारी श्राप बस उपल देह धरि धीर
चरण कमल रज चाहती कृपा करहु रघुबीर

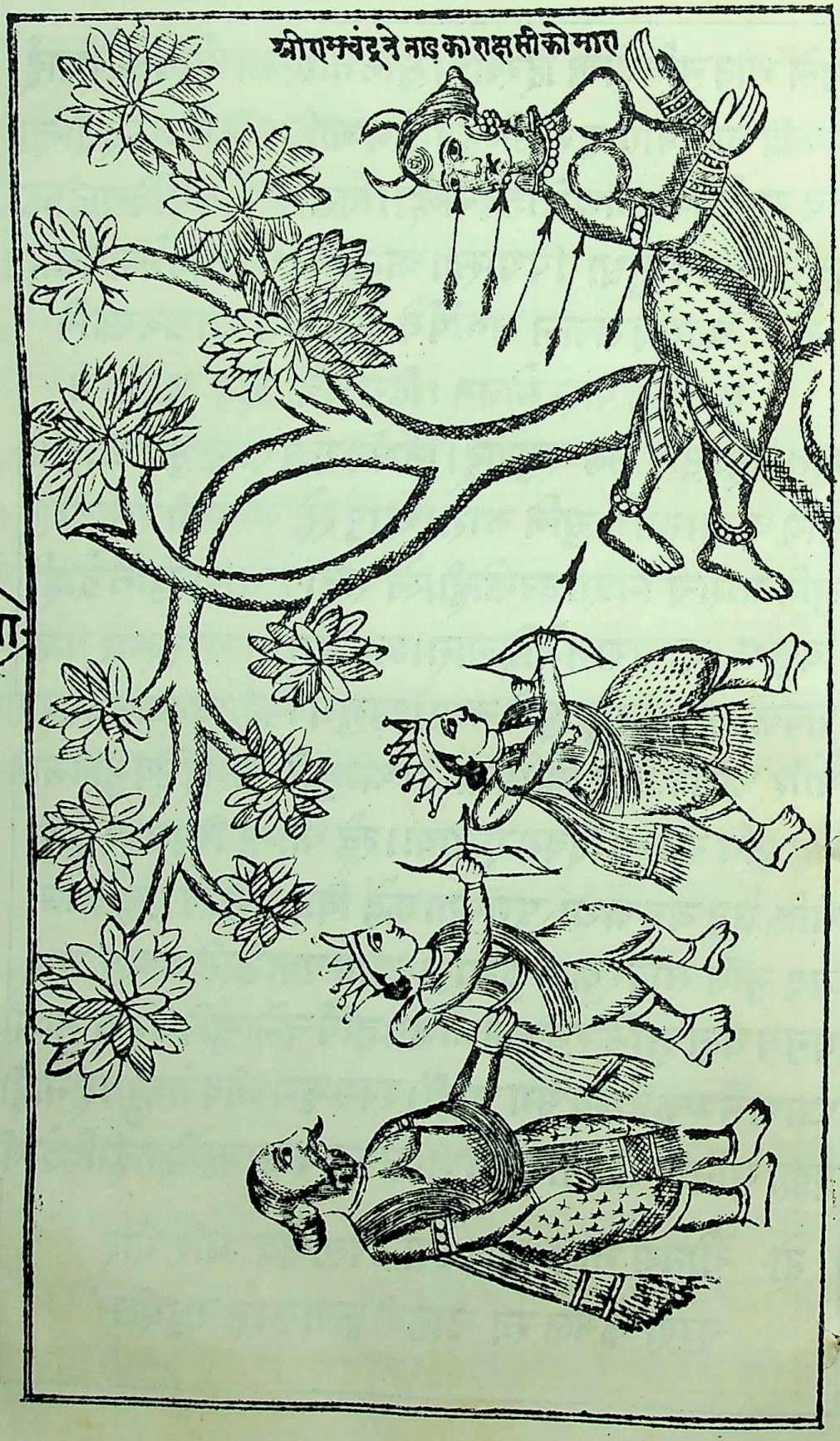
श्रीरामचंद्रने ताड़का राक्षसीको मारा

टी॰ रा॰ बा॰ १३६

CC-0. In Public Domain Digitized ... Santa eGangotri Gyaan Kosha

ए. बी. बी. ३७

छं॰ परसत पद पावन शोक नसावन प्रगट भई तपपुंज सही
देखत रघुनायक जन सुखदायक सनमुख होइ कर जोरि रही
अति प्रेम अधीरा पुलक शरीरा मुख नहिं आवै बचन कही
अतिशय बड़भागी चरणन लागी जुगल नयन जलधार बही
धीरज मन कीन्हा प्रभु कहं चीन्हा रघुपति कृपा भक्ति पाई
अति निर्मल बानी अस्तुति ठानी ज्ञान गम्य जय रघुराई
मैं नारि अपावनि प्रभु जग पावन रावण रिपु जन सुखदाई
राजिव लोचन भव भय मोचन पाहि पाहि शरणहि आई
मुनि आपजो दीन्हा अति भल कीन्हा परम अनुग्रह मैं माना
देखेउं भरि लोचन हरि भव मोचन यहै लाभ संकर जाना
बिनती प्रभु मोरी मैं मति भोरी नाथ न बर मांगौं ज्ञाना
पद कमल परागा रस अनुरागा मम मन मधुप करै पाना
जेहि पद सुर सरिता परम पुनीता प्रगट भई शिव सीस धरी
सोइ पद पंकज जेहि पूजत अज मम शिर धरेउ कृपाल हरी
इहि भांति सिधारी गौतम नारी बार बार हरि चरण परी
जो अति मन भावा सो बर पावा गै पति लोक अनन्द भरी
दो॰ अस प्रभु दीन बंधु हरि कारण रहित कृपाल
तुलसिदास सठ नहि भजै छांड़ि कपट जंजाल
चले राम लक्ष्मण मुनि संगा। गये जहां जग पावनि गंगा
अनुज सहित प्रभु कीन्ह प्रणामा। बहु प्रकार सुख पायेउ रामा
पुनि सुर सरि उतपति रघुराई। कौशिक सब भाखा सिर नाई

CC-0. In Public Domain. Digitized by ... eGangotri Gyaan Kosha

कह मुनि प्रभु तव कुल कर राजा। नाम सगर सिहं लोक बिराजा
तेहि के सुत भामिनि सुकुमारी। प्रथम कोशिनी सुमति पियारी
सब प्रकार संपति सुर भूजा। सुत बिहीन मन विस्मय राजा
एक समय भामिनि देउ साधा। गये बन तनय हेतु रघुनाथा
लखन सकल तरु सुंदर नाना। तहं भृगु मुनि तपतेज निधाना

दो॰ सहित नारि नृप मुदित मन रहे बरष शत एक
कीन्हे तपबल देखि भृगु अस्तुति कीन्ह अनेक

कहि निज दुख प्रणाम नृप कीन्हा। दै असीस तब मुनि वर दीन्हा
नृपसनी सन मुनि अस भाषा। लेहु खबर जो जेहि अभिलाषा
सुनि मुनि बचन सीस तिन नावा। देहु नाथ जो प्रभु मन भावा
एकहि कहेउ एक सुत होना। दूसरी साठ सहस्र सुन लोना
हरषित भयो सुभग वर पाई। पानि जोरि चरनन शिर नाई
सहित भामिनी अवधहि आये। हरष सहित कछु दिवस गंवाए
जानि सुघर सुंदर सुरदाई। नाम केसि अस मजस जाई
सुमति प्रसव एक दुवरि सोई। भय सुत प्रगट कहे मुनि जोई
निरखे सुत हरषित सब होई। मंगलचार किये सब कोई॥
हरष सहित दिये दान नरेशू। पूजि बिप्र गुरु गौरि गणेशू
घृत घट सुंदर विविध मंगाए। ते सब सुत नृप निज मुख नाए

दो॰ एहि विधि भएऊ सकल सुत पूजे सब मन काम
जाइ दिवस निसि हरष बस सुनहु राम घन श्याम
पुरजन सब घर घरनि नरेशू। अति आनंद तन मिटा कलेशू

दो॰ रा॰ बा॰ ४८

बालि केलि कर भये कुमारा। लीला कौं अगम संसारा
होइ सो काज सकल मन चीते। एहि सुख बसत बहुत दिन बीते
सरजू नदी अवध जो अहई। बिमल सलिल उत्तर तट बहई
प्रजा लोक के बालक नाना। नित उठि नहां करैं अस्नाना
अति मज्जन तहं करनी आनी। तिनहिं चढ़ाइ वोरि निज पानी
भये प्रजा सब परम दुखारी। बालक बध सुनि सुनहु खरारी
सकल गये जहं बैठ नृपाला। बोले बचन नाय पद भाला
तुम नृप चहहु प्रजा प्रतिपाला। सुत तुम्हार भा सब कर काला
तजव देश सब सुनहु नरेशू। बिना तजे नहिं मिटै कलेशू
दो॰ तब सुत कीन्हेउ पाप बहु मारे बालक बृंद ॥
तुम कहं प्राण समान यह सकल प्रजन कह बंद
प्रजा गिरा सुनि धीरज दीन्हा। सुतहिं देश तें बाहर कीन्हा
तासु तनय जग बिदित प्रभाऊ। गुन निधि अंसुमान तिहिनाऊ
बसत हृदय नृप के सो कैसे। मुनि मन मीन सलिल रहै जैसे
गये प्रजा सब निज निज धामा। भये बिलोक मन गुण बिश्रामा
बहुरि नृपति मन कीन्ह बिचारा। आइ भयेउ पन चौथ हमारा
हित मंत्री गुरु सुतहु बुलाये। हिम गिरि बिंध्य मध्य तब आये
रुचिर बेदिका एक बनाई। देखत बनइ बरनि नहिं जाई
मख आरंभ कीन्हेउ तब तुरगा। बेग बंत जिमि देखिय उरगा
दो॰ सुरपति सुत भय दारुणहि मन महि कीन्ह सनमान
अश्व तुरग तब लीन्हेउ मर्म न कोऊ जान ॥

CC-0. In Public Domain.Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रक्षेउ आनि कपिल मुनि पाहीं। कोउ न जान काहुहि गम नाहीं
जुगवत रहेउ जे सुभट सयाने। ते तुरंग रहे किन्हु न जाने
तिन सब आन कही नृप पाहीं। महाराज हम कहत डराहीं
लीन्ह तुरंग कोइ जानव कोऊ। कहा करिय सो आयसु होऊ
सुनत वचन नृप विस्मय पाये। सकल सुतन कहं तुरत बुलाये
जाहु तुरंग तुम्ह हेरहु जाई। सकल चले चरनन सिर नाई
सुरपति सम देखिय सब बीरा। सकल धनुर्धर अति रण धीरा
तिनहिं चलत धरनी अकुलाई। बलि पशु जीव भये सब आई
सुखन वाटिका उपवन बागा। सरित कूप वापिका तड़ागा
नगर गांव मुनीश थल जाना। गिरि कंदर कानन अस्थाना
दो॰ इहि विधि खोजेहुं तुरंग तिन आये भूपति पाहिं
चरनन नायहि माथहि कहि खोज अश्व कहीं नाहिं
खोदहु महि सुत करहि पठाये। चले सकल पूरब दिशि आये
तिनके कर जिमि कुलिश समाना। जोजन भरि खोदहिं बलवाना
देखि अतुल बल देव डराने। भरहु नाह बिरंचि मन माने
सोधत महि पताल सब आये। दिग्गज देखि एक सिर नाये
तिन पूछा सब कथा सुनाये। बहुरि सकल दक्षिण दिशि आये
इहि विधि पुनि दूसर गज देखा। अति उतंग गज बिकल विशेषा
नाहू कहु प्रणाम तिन कीने। चले सुभट पश्चिम चित दीने
तीसर देखि प्रदक्षिण कीन्ही। पुनि उत्तर दिशि सोधहि लीन्ही
दिग्गज श्वेत निरख सुख पाये। सकल कपिल मुनि पहिं पुनि आये

खोजत मही पार नहिं पावा। शोभा चहुंदिशि जलधि सुहावा
दो॰ देखिन आप तुरंग तब बांधा मुनिबर पास ॥
बोले बचन सकोप करि भा चह सबकर नास
खोदा नहि हम चाहिउ कोधा। रेरे दुष्ट बहुत तोहि सोधा
कोउ कहि चोर दीख बहु होई। एहि सम छली अवर नहिं कोई
परधन लै पताल पुनि आयो। तसकर मुनिबर भेष बनायो
कोऊ कहै यह मुनिबर नाहीं। समुझि देखि लक्षण मन माहीं
कोउ कह बक तप कीन्ह अपारा। अहो दुष्ट लै तुरंग हमारा ॥
सुनत बचन मुनि चितवा जबहीं। भये भस्म सब छिन में तबहीं
उगा बचन जिह समुझ न बोला। सुधा होइ बिष तिक्त न चोला
पावक जानि धरहिं कर प्रानी। जरहिं काहि नहिं अति अभिमानी
जान गरल जे संग्रह करहीं। सुनहुं राम ते काहे न मरहीं ॥
क्रोध करैं बिन किये बिचारा। भये सकल तेहि ते जरि छारा
इहां नृपति अंसुमान बुलाये। नहिं आये सब तिनहिं पठाये
दो॰ दीन्ही नृपति अशीश तब अति हित बारहिबार
बेगि फिरो ले तुरंग सुत मेरे प्राण अधार ॥
चले नाइ पद शीश कुमारा। विष्णु भक्त हित कुल उजियारा
जहं तहं निरखि मुनिन के धामा। पूंछि खबर करि दंड प्रणामा
पन्नग नाग सब पाइ अशीशा। चहुं दिग्गज कहुं नावन शीशा
एहि बिधि सोधत मग महु जाता। मिले गरुड सुमनी कर भ्राता
चरन परत तब आशिष दयेऊ। जरे सकल जेहि बिधि सो कहेऊ

टी॰ रा॰ बा॰ १४२

सुनतै बचन सोच भयो भारी। लिये खगेश दिपा थल बारी
अंस मान तहं मज्जन कीन्हा। क्रम क्रम सबहिं तिलांजलि दीन्हा
बहुरि गरुड़ बोले सुनु बाता। मैं तोहि कहौं करिहि एक बाता
सो॰ कर सुत सोइ उपाय गंगा आवहिं अवनि महुं
दरशन ते अघ जाय मज्जन कीन्हे परम सुख
षष्ट सहस्र तरिहैं एही बिधि। गंगा पाय परम पावन निधि
सुन अस बचन हृदय मन भाये। सहित गरुड़ मुनिबर पहिं आये
तब खगेश मुनि चरनन आसेउ। पूरब कथा सकल मुनि गायउ
आयसु देइ तुरग मुनि दीन्हा। हरषि हृदय निज अश्वहि चीन्हा
नगर समीप गरुड़ पहुंचाई। गये भवन निज तब रघुराई॥
इहां तुरग लै नृप शिरु नाई। षट सहस्र मुनि कथा सुझाई
विस्मय हरष विवस नृप भएऊ। कीन्हा यज्ञ दान बहु दयेऊ
बहु विधि नृपति राज पुनि कीन्हा। प्रजा लोक कहं अति सुख दीन्हा
दो॰ अंसुमान हित राज दै निज मन हरि पद लाग
गयेउ सगर तप काज बन हृदय अधिक अनुराग
ता सुत नाम दिलीप नृप भयेऊ। मन तप हेतु उतर दिशि गयेऊ
उहां अगम तप कीन्ह कृपाला। भए काल बस गए कछु काला
कहहु कवन दिलीप प्रभुताई। सेवैं सकल नृपति जेहि आई
जुगवत जिहि नित सुरपति रहहीं। महिमा तासु कवि केहि विधि कहहीं
भागीरथ अस सुत भयो जासू। पितु सम नीति अधिक उर तासू
तिनहिं बोलि नृप दीन्हेउ राजू। आप चले उठि तप के काजू

...d By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मन महुं करत पंथ अनुमाना। सुरसरि आव तजउ नत प्राना
निज मनु तनु दीनेउ तिमि देऊं। फिरि निजु नगर कनामन लेऊं
सो॰ एहि बिधि करत बिचार नृप कीन्हे तब प्रबल तप
बीते कछु एक काल देह तजी कोउ प्रगट नहिं ॥
जेहि सुरसरि लगि तजे न भूपा। सो तजि मूढ़ पियहिं जल कूपा
इहां भगीरथ अस मन भयेऊ। पितु न आव बहु दिन चलि गयेऊ
काकुस्थ नाम तनय एक रहेऊ। दीन्हा राज नीति बहु कहेऊ
कहि तब पूर्ब कथा सुत पाहीं। दीन्ह अशीश चले नर नाहीं
निकसत नगर सगुन भल पाये। अतिहि निवड़ बन जहं नृप आये
देख भगीरथ बन सुख पावा। सुरसरि हित तप कहं मन लावा
एक चरन दोउ भुजा उठाये। रवि सन्मुख चितवहिं मन लाये
बरष सहस बीते इहि भांती। जात न जाने दिन अरु राती ॥
देखि उग्र तप अज चलि आये। बोले बचन नृपहिं मन भाये
चहहि नृपति जो ले बर दाना। बोले नृप कर अजहिं प्रनामा
जो मांगों सो जानत अहहू। मो सन मांगन प्रभु किम कहहू
दो॰ तदपि कहौं प्रभु देहु बर सब संतन कह वृद्धि
दूसर मांगौं जोरि कर गंगा आवहिं निद्धि ॥
एवमस्तु कहि पुनि बिधि भवहीं। सुरसरि देहु राखि को सकहीं
छूट जाइ पुनि तुरत रसातल। फिरहिं न नृपति बहुरि सुनभूतल
तेहि तें कहौं एक तेहि पाहीं। अति दयाल शंकर मन माहीं
सोइ शंकर राखि देव सर आजू। उनहिं जपे तब होय है काजू

टी॰
रा॰ बा॰
२४४

अस कहि बिधि अंतर हित भये। बहुरि भगीरथ शिव पहं गये
बिबुध बरष अंगुष्ट अधारा। बार बार शिव नाम उचारा॥
शिव दयाल प्रगटे तब आई। हाथ जोरि नृप बिनय सुनाई
मैं राखब सुरसरि कह ईशा। बहुरि रमापति ध्यान करीशा
दो॰ उहां देव सरि शिव बचन सुन मन कीन्ह बिचार
जाउं रसातल शिव सहित जात न लागैं बार
अंतरयामी शिवहि उपाई। निज सिर जटा सो अगम बनाई
इहां भगीरथ अस्तुति कीन्ही। सुनि मृदु गिरा छांड विधि दीन्ही
छूटे सोर भयेउ जग भारी। चकित देव अहि दिग्गज चारी
सुरसरि पुनि हर जटा समानी। बर्ष एक तहं रहीं भवानी
कौतुक देख सकल सुर हरषे। कह जय जयति सुमन बहु बरषे
बहुरि भगीरथ सुमरन कीन्हा। डारि जटा शिव बुंदक दीन्हा
तेहि तें भई तीन पुनि धारा। एक गई नभ एक पतारा॥
गई नभ सोई किअघ नासिनी। देवन धरा नाम मंदाकिनी
दो॰ दूसर गई पताल में नाम प्रभावति हरन दुख
तीसरि भई गंगा सोई सब संतन कूं करन सुख
सलिल प्रवाह निरख नृपतिउर अति भयेउ अनंद
जैसे उमड़त सिंधु तब पूर्ण कला लखब चंद
आय भगीरथ पुनि शिर नाये। बोली सुरसरि बचन सुहाये
बेगवंत नृप रथले आनू। तुरत तुरंग सुमगति जिमि भानू
तेहि रथ चढ़ि नृप चल मग आगे। सलिलौ मैं तब पाछे लागे

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुनि नृप दिव्य तुरंग रथ आना। चले हृदय सुमरत भगवाना
चली अग्र करि नृपहि सुरसरी। देवन्ह मुदित सुमन सुर करी
चलत तेज कछु बरनि न जाई। टूटहिं गिरि तरु शैल सुहाई
करै कुलाहल बिधि बड़ भांती। कमठ नक्र रुष व्याल सो माती
मज्जन करहिं देव तहं आई। सुन गति सिद्ध रहे सब छाई

सो॰ तरपन कर मन लाय हर्ष हृदय नहिं जात कहि
दरशन ते अघ जाय तरै सकल मुनि जन कहैं
मज्जन कर हरषाय सुर अजादि सनकादि ऋषि
पान करत अघ जाय अस मत सब कोऊ कहहिं ॥

टी॰ रा॰ बा॰ १६६

कर जो मज्जन जप मन लाई। तिन्हकी महिमा कहि न सिराई
रथ पर जात सोहै नृप कैसे। तेजवंत रवि दूसरिवय जैसे ॥
लांघित शैल सुहावन देशा। पाछे सुरसरि आगे नरेशा
हरिद्वार समीप तब आये। तीर्थ देखि सुरसरि मन लाये
तीर्थ निरखि मन भा सुखभारी। आद प्रयाग पहुंचि अघहारी
तहां मज्जन कीन्हे दुख जाई। बहुरि देव सरि काशी आई
सो शिवपुरी सहज सुख दाई। बरनि न जाइ मनोहरताई ॥
अपर से तीर्थ विविधि बिधि जानी। गई तहां किमि कहौं बखानी
मग लोगन कहँ करत सनाथा। जाइ चली इहि बिधि रघुनाथा

दो॰ मिली जाइ पुनि उदधि महं उदधि हृदय सुखमान
लगी कहन भागी रथहिं तुम सम धन्य न आन
कीन्हो अस जो करहि न कोई। तपमहिमा बलकस नहिं होई

सगर सुतनय तरे तत काला। हर्षवंत तब भयो नृपाला ॥
अबलौ रहोहै कुल महि कोऊ। तिन्हके संग तरे सब सोऊ
तुम समान नृप अवरन भयेऊ। जग बिख्यात अचलजस लयेऊ
सकल सुरन्ह तहां संग बिधाता। नृप सन आय कही सब बाता
धन्य भगीरथ जस जग जयऊ। तुम समान नृप और न भयऊ
अपनी सत्य प्रतिज्ञा कियऊ। सम्मत बेद जनन सुख दयऊ
गंगा सागर सब कोउ कहहीं। अघउलूक देखत रवि डरहीं
भागीरथी नाम अब कहहीं। सुन सुर सिद्ध नाग जस लहहीं
अस बिधि कह निज लोकहि आये। जहां भगीरथ अति सुख पाये

छं॰ पायो अमित सुख बहुरि पूजा सुरसरिहि मन लाइकै
तब दीन्ह आशिष मुदित गंगा नृप भक्त सुख पाइकै
इहि भांति सुन गंगा कथा तब राम रुचि चरननि नये
कह दास तुलसी राम लषणहि महा मुनि आशिष दये

दो॰ कौशिक आशिष अमिय सब पाय हरष रघुराज
प्रभु संशय सब दूर गई लवा निरषि जिमि बाज
आशिष सुधा समान सुनि हरषे श्री रघुनाथ।
प्रभु सुख पाइ कहेउ पुनि बेग चलिय मुनिनाथ

राम नाम तें संशय जाई ॥। देह धरे कर यह फल भाई ॥
गाधि सुवन सब कथा सुनाई। जेहि प्रकार सुरसरि महि आई
तब प्रभु ऋषिन समेत अन्हाये। बिबिध दान महिदेवन पाये
हर्षि चले मुनिवृंद सहाया। बेग बिदेह नगर नियराया ॥

पुर रचना एम जब देखी । हर्षे अनुज समेत बिसेषी ॥
बापी कूप सरित सर नाना । सलिल सुधा सम मणि सो पाना
गुंजत मंजु मत्त रस भृंगा । कूजत कल बहु बरण बिहंगा
बरण बरण बिकसे जल जाता । त्रिबिध समीर सदा सुखदाता
दो॰ सुमन बाटिका बिहग बन बिपुल बिहंग निवास
फूलत फलत सुपल्लवित सोहत पुर चहुं पास ।
बने न बरनत नगर निकाई । जहां जाइ मन तहां लुभाई
चारु बजार बिचित्र अटारी । मणिमय बिधि अनु स्वकर संवारी
धनिक बणिक बर धनद समाना । बैठे सकल बस्तु लै नाना
चौहट सुंदर गली सुहाई । सन्तत रहहिं सुगंध सिंचाई
मंगल मय मंदिर सब केरे । चित्रित जनु रति नाथ चितेरे
पुर नर नारि सुभग सुचि संता । धर्मशील ज्ञानी गुण वन्ता
अति अनूप जहं जनक निवासू । बिथकहिं बिबुध बिलोकि बिलासू
होत चकित चित कोट बिलोकी । सकल भुवन शोभा जनु रोकी
दो॰ धवल धाम मणि पुरट पट सुघटित नाना भांति
सिय निवास सुंदर सदन शोभा किमि कहि जाति
सुभग द्वार सब कुलिश कपाटा । भूप भीर नट मागध भाटा ॥
बनी बिशाल बाजि गज शाला । हय गय रथ संकुल सब काला
सूर सचिव सेनप बहु तेरे । नृप गृह सरिस सदन सबकेरे
पुर बाहिर सर सरित समीपा । उतरे जहं तहं बिपुल महीपा
देखि अनूप एक अंबराई । सब सुपास सब भांति सुहाई

कौशिक कहेउ मोर मन माना। इहां रहिय रघुबीर सुजाना
भलेहि नाथ कहि कृपा निकेता। उतरे तहं मुनि बृन्द समेता
बिश्वामित्र महा मुनि आये। समाचार मिथिलापति पाये
दो॰ संग सचिव सुचि भूरि भट भूसुरबर गुरु ग्याति
चले मिलन मुनि नायकहि मुदित राउ एहिं भांति
कीन्ह प्रणाम धरणि धरि माथा। दीन्ह असीस मुदित मुनिनाथा
बिप्र बृंद सब सादर बंदे। जानि भाग्य बड़राउ अनंदे।
कुशल प्रश्न कहि बारहि बारा। बिश्वामित्र नृपहिं बैठारा
तेहि अवसर आये दोउ भाई। गये रहे देखन फुलवाई॥
श्याम गौर मृदु वयस किशोरा। लोचन सुखद बिश्वचितचोरा
उठे सकल जब रघुपति आये। बिश्वामित्र निकट बैठाये॥
भये सब सुखी देखि दोउ भ्राता। बारि बिलोचन पुलकित गाता
मूरति मधुर मनोहर देखी। भयउ बिदेह बिदेह बिशेषी।
दो॰ प्रेम मगन मन जानि नृप करि बिबेक धरि धीर
बोलेउ मुनि पद नाइ सिर गद्गद गिरा गंभीर
कहहु नाथ सुंदर दोउ बालक। मुनिकुल तिलक कि नृपकुल पालक
ब्रह्म जो निगम नेति कहि गावा। उभय भेष धरि सोइ किमि आवा
सहज बिराग रूप मन मोरा। थकित होत जिमि चंद चकोरा
ताते प्रभु पूछौं सत भाऊ। कहहु नाथ जानि करहु दुराऊ
इनहिं बिलोकत अति अनुरागा। बरबस ब्रह्म सुखहिं मन त्यागा
कह मुनि बिहंसि कहेउ नृपनीका। बचन तुम्हार न होहिं अलीका

ये प्रिय सबहिं जहां लगि प्राणी। मन मुसकाहिं राम सुनि बाणी
रघुकुल मणि दशरथ के जाये। मम हित लागि नरेश पठाये
दो॰ राम लषन दोउ बंधु बर रूप शील बल धाम ॥
मख राखेउ सब साखि जग जीति असुर संग्राम
मुनि सब चरण देखि कह राऊ। कहि न सकौं निज पुण्य प्रभाऊ
सुंदर श्याम गौर दोउ भ्राता। आनंद हू के आनंद दाता
इनकी प्रीति परस्पर पावनि। कहि न जाइ मन भाव सुहावनि
सुनहं नाथ कह मुदित बिदेहू। ब्रह्म जीव इव सहज सनेहू
पुनि पुनि प्रभुहि चितव नरनाहू। पुलक गात उर अधिक उछाहू
मुनिहि प्रशंसि नाइ पद शीशा। चले लिवाइ नगर अवनीशा
सुंदर सदन सुखद सब काला। तहां बास लै दीन्ह भुआला
करि पूजा सब विधि सेवकाई। गयउ राउ गृह बिदा कराई ॥
दो॰ ऋषिय संग रघुबंश मणि करि भोजन बिश्राम
बैठे प्रभु भ्राता सहित दिवस रहा भरि याम ॥
लषण हृदय लालसा बिशेषी। जाइ जनक पुर आइय देखी
प्रभु भय बहुरि मुनिहि सकुचाहीं। प्रगटन कहहिं मनहिं मुसुकाहीं
राम अनुज मन की गति जानी। भक्त बछलता हिय हुलसानी
परम बिनीत सकुचि मुसुकाई। बोले गुरु अनुशासन पाई
नाथ लषण पुर देखन चहहीं। प्रभु सकोच डर प्रगटन कहहीं
जौं राउर आयसु मैं पाऊं। नगर देखाइ तुरत लै आऊं
सुचि मुनीश कह बचन सप्रीती। कस न राम रघुकुल नीती

धर्म सेतु पालक तुम ताता। प्रेम बिबस सेवक सुखदाता
दो॰ जाइ देखि आवहु नगर सुख निधान दोउ भाइ
करहु सुफल सबके नयन सुंदर बदन देखाइ
मुनि पद कमल बंदि दोउ भ्राता। चले लोक लोचन सुखदाता
बालक बृन्द देखि अति शोभा। लगे संग लोचन मन लोभा
पीत बसन परिकर कटि भाथा। चारु चाप शर सोहत हाथा
तनु घनु हरत सुचंदन खोरी। श्याम गौर मनोहर जोरी
केहरि कंधर बाहु बिशाला। उर अति रुचिर नाग मणि माला
सुभग श्रवण सरसीरुह लोचन। बदन मयंक ताप त्रय मोचन
कानन्ह कनक फूल छबि देहीं। चितवत चितहि चोरि जनु लेहीं
चितवनि चारु भृकुटि बर बांकी। तिलक रेख शोभा जनु चांकी
दो॰ रुचिर चौतनी सुभग सिर मेचक कुंचित केश
नख सिख सुंदर बंधु दोउ शोभा सकल सुदेश
देखन नगर भूप सुत आये। समाचार पुरबासिन पाये
धाये धाम काम सब त्यागे। मनहु रंक निधि लूटन लागे॥
निरखि सहज सुंदर दोउ भाई। होहिं सुखी लोचन फल पाई
युवती भवन झरोखन्हि लागीं। निरखहिं राम रूप अनुरागीं
कहहिं परस्पर बचन सप्रीती। सखि इन कोटि काम छबि जीती
सुर नर असुर नाग मुनि माहीं। शोभा अस कहुं सुनियत नाहीं
बिष्नु चारि भुज बिधि मुख चारी। बिकट भेष मुख पंच पुरारी
अपर देव अस को जग माहीं। देह छबि सखि पट तरियै जाहीं

दो॰ रा॰ बा॰ २५१

दो॰ वय किशोर सुखमा सदन श्याम गौर सुख धाम
अंग अंग पर वारियें कोटि कोटि शत काम॥

कह सखी अस को तनुधारी। जो न मोह यह रूप निहारी
कोउ सप्रेम बोली मृदु बानी। जो मैं सुना सो सुनहु सयानी
ये दोउ नृप दशरथ के ढोटा। बाल मरालनि के कल जोटा
मुनि कौशिक मख के रखवारे। जिन रण अजय निशाचर मारे
श्याम गात कल कंज बिलोचन। जो मारीच सुभुज मदमोचन
कौशल्या सुत सो सुख खानी। नाम राम धनु सायक पानी
गौर किशोर भेष बर काछें। कर शर चाप राम के पाछें
लक्ष्मण नाम राम लघु भ्राता। सुनु सखि तासु सुमित्रा माता

दो॰ बिप्र काज करि बंधु दोउ मग मुनि बधू उधारि
आये देखन चाप मख सुनि हरषीं सब नारि

देखि राम छबि कोउ इक कहई। योग्य जानकी यह बर अहई
जो सखि इनहिं देखि नर नाहू। पण परिहरि हठ करै बिवाहू
कोउ कह इन्ह भूपति पहिचाने। मुनि समेत सादर सनमाने
सखि परंतु पण राउ न तजई। बिधि बस हठि अबिबेकहि भजई
कोउ कह जौं भल अहै बिधाता। सब कहं सुनिय उचित फलदाता
तौ जानकिहि मिलिहि बर एहू। नाहिन आली यह संदेहू
जो बिधि बस अस बनै संयोगू। तौ कृत कृत्य होहिं सब लोगू
सखि हमरे आरति अति तासू। कबहुं क ये आवहिं इहि पासू

दो॰ नाहिन हम कहं सुनहु सखि इन्ह कर दरशन दूरि

यह संघट तब होइ जब पुण्य पुरातन भूरि
बोली अपर कहउ सखि नीका। यह बिबाह अति हित सबही का
कोउ कह शंकर चाप कठोरा। ये श्यामल मृदु गात किशोरा
सब अस मंजस अहै सयानी। यह सुनि अपर कहै मृदु बानी
सखि इनकहं कोउ कोउ अस कहहीं। बड़ प्रभाव देखत लघु अहहीं
परसि जासु पद पंकज धूरी। तरी अहल्या कृत अघ भूरी
सो कि रहैं बिनु शिव धनु तोरे। यह प्रतीति परिहरिय न भोरे
जेहि बिरंचि रचि सीय सँवारी। तेइ श्यामल बर रचेउ बिचारी
तासु बचन सुनि सब हरषानी। ऐसेइ होउ कहहिं मृदु बानी

टी॰ रा॰ बा॰ २५४

दो॰ हिय हरषहिं बरषहिं सुमन सुमुखि सुलोचनि बृंद
जाहिं जहां जहं बंधु दोउ तहं तहं परमानंद ॥

पुर पूरब दिशि गे दोउ भाई। जहां धनुष मख भूमि बनाई
अति बिस्तार चारु गच ढारी। बिमल बेदिका रुचिर सँवारी
चहुं दिशि कंचन मंच बिशाला। रचे जहां बैठहिं महिपाला
तेहि पाछें समीप चहुं पासा। अपर मंच मंडली बिलासा
कछुक ऊंच सब भांति सुहाई। बैठहिं नगर लोग जहं जाई
तिन के निकट बिशाल सुहाये। धवल धाम बहु बरण बनाये
जहं बैठीं देखहिं पुर नारी। जथा योग्य निज कुल अनुहारी
पुर बालक कहि कहि मृदु बचना। सादर प्रभुहि देखावहिं रचना

दो॰ सब शिशु दृहि मिस प्रेम बस परसि मनोहर गात
तन पुलकहिं अति हर्ष हिय देखि देखि दोउ भ्रात

शिशु सब राम प्रेम बस जाने। प्रीति समेत निकेत बखाने
निज निज रुचि सबलेहिं बुलाई। सहित सनेह जाहिं दोउ भाई
राम देखावहिं अनुजहि रचना। कहि मृदु मधुर मनोहर बचना
लवनि भेष महं भुवन निकाया। रचै जासु अनुशासन माया
भक्त हेतु सोइ दीन दयाला। चितवत चकित धनुष मख शाला
कौतुक देखि चले गुरु पाहीं। जानि बिलम्ब त्रास मन माहीं
जासु त्रास डर कहं डर होई। भजन प्रभाव देखावत सोई॥
कहि बातैं मृदु मधुर सुहाई। किये बिदा बालक बरिआई

दो॰ सभय सप्रेम विनीत अति सकुचि सहित दोउ भाइ
गुरु पद पंकज नाइ शिर। बैठे आयसु पाइ ॥

निशि प्रवेश मुनि आयसु दीन्हा। सबही संध्या बंदन कीन्हा
कहत कथा इतिहास पुरानी। रुचि रजनी युग याम सिरानी
मुनिबर शयन कीन्ह तब जाई। लगे चरण चापन दोउ भाई
जिनके चरण सरोरुह लागी। करत विबिध जप योग बिरागी
ते दोउ बंधु प्रेम बस जीते। गुरु पद कमल पलोटत प्रीते
बार बार मुनि आज्ञा दीन्ही। रघुबर जाइ शयन तब कीन्ही
चापत चरण लषण उर लाये। समय सप्रेम परम सुख पाये
पुनि पुनि प्रभु कह सोवहु ताता। पौढ़े धरि उर पद जल जाता

दो॰ उठे लषण निश विगत सुनि अरुण शिखा धुनि कान
गुरु ते पहिले जगत पति जागे राम सुजान ॥

सकल शौच करि जाइ नहाये। नित्य निवाहि गुरुहि शिर नाये

पं॰ ११ चौ॰ १२९ छं॰ १ सो॰ १ दो॰ १३ निशि प्रवेश मुनि अरु सतानंद पद बंदि २२९ लौं मुर्गा बोलत प्रात जानि लषण युत श्रीरघुनाथ मुनि पद बंद फूल है त गये राजा बाग

टी॰ रा॰ बा॰ २५५

गीरिजा बंदन हेतु जानकी जी की परस्पर अवलोकन अरु स्वाभाविक प्रीति अरु गिरिजा माहात्म्य वरदान बरनन पुनः गुरु समीप गवन अरु सतानंद जनक आदि आगमन कह्यौ १३९

समय जानि गुरु आयसु पाई। लेन प्रसून चले दोउ भाई
भूप बाग बर देखेउ जाई । जहं बसन्त ऋतु रहे लुभाई
लागे बिटप मनोहर नाना । बरण बरण बर बेलि बिताना
नव पल्लव फल सुमन सुहाये। निज संपति सुर तरुहि लजाये
चातक कोकिल कीर चकोरा। कूजत बिहंग नटत कल मोरा
मध्य बाग सर सोह सुहावा। मणि सो पान बिचित्र बनावा
बिमल सलिल सरसिज बहुरंगा। जल खग कूजत गुंजत भृंगा
दो· बाग तड़ाग बिलोकि प्रभु हर्षे बंधु समेत
परम रम्य आराम यह जो रामहि सुखदेत
चहं दिशि चितै पूछि मालीगन। लगे लेन दल फूल मुदित मन
तेहि अवसर सीता तहं आई। गिरिजा पूजन जननि पठाई
संग सखी सब सुभग सयानी। गावहिं गीत मनोहर बानी
सर समीप गिरिजा गृह सोहा। बरणि न जाइ देखि मन मोहा
मज्जन करि सर सखी समेता। गई मुदित मन गौरि निकेता
पूजा कीन्ह अधिक अनुरागा । निज अनुरूप सुभग वर मांगा
एक सखी सिय संग बिहाई । गई रही देखन फुलवाई ॥
तेहि दोउ बंधु बिलोकेउ जाई । प्रेम बिवस सीता पहं आई
दो· तासु दशा देखी सखिन पुलक गात जल नयन
कहु कारण निज हरषकर पूछहिं सब मृदु वयन
देखन बाग कुंवर दोउ आये। वय किशोर सब भांति सुहाये
श्याम गौर किमि कहौं बखानी। गिरा अनयन नयन बिनु बानी

टी· रा· बा· २५६

सुनि हरषीं सब सखी सयानी। सिय हिय अति उत्कंठा जानी
एक कहहिं भूप सुत तेते आली। सुने जे मुनि संग आये काली
जिन निज रूप मोहनी डारी। कीन्हे स्वबस नगर नर नारी
बरणत छबि जहं तहं सब लोगू। अवशि देखिये देखन जोगू
तासु बचन अति सियहि सुहाने। दरस लागि लोचन अकुलाने
चली अग्र करि प्रिय सखि सोई। प्रीति पुरातन लखै न कोई
दो॰ सुमिरि सीय नारद बचन उपजी प्रीति पुनीत ॥
चकित बिलोकति सकल दिशि जनु शिशु मृगी सभीत
कंकण किंकिणि नूपुर धुनि सुनि। कहत लषण सन रामहृदय गुनि
मानहु मदन दुन्दुभी दीन्ही। मनसा विश्व विजय कहं कीन्ही
अस कहि फिरि चितये तेहि ओरा। सिय मुख शशि भये नयन चकोरा
भये बिलोचन चारु अचंचल। मनहुं सकुचि निमि तजेउ दृगंचल
देखि सीय शोभा सुख पावा। हृदय सराहत बचन न आवा
जनु बिरंचि सब निज निपुणाई। बिरचि बिश्व कहं प्रगट दिखाई
सुंदरता कहं सुंदर करई। छबि गृह दीप शिखा जनु बरई
सब उपमा कबि रहे जुठारी। केहि पटतरिय बिदेह कुमारी
दो॰ सिय शोभा हिय बरणि प्रभु आपनि दशा बिचारि
बोले शुचि मन अनुज सन बचन समय अनुहारि
तात जनक तनया यह सोई। धनुष यज्ञ जेहि कारण होई
पूजन गौरि सखी लै आई ॥। करति प्रकाश फिरति फुलवाई
जासु बिलोकि अलौकिक शोभा। सहज पुनीत मोर मन छोभा

टी॰ रा॰ बा॰ १५८

सो सब कारण जानि बिधाता। फरकहिं सुभग अंग सुनु भ्राता
रघुवंशिन कर सहज सुभाऊ। मन कुपंथ पग धरें न काऊ
मोहि अति शय प्रतीति जिय केरी। जेहि सपनेहु परनारि न हेरी
जिन के लहहिं न रिपु रण पीठी। नहिं लावहिं पर तिय मन डीठी
मंगन लहहिं न जिनके नाहीं। ते नरबर थोरे जग माहीं ॥
दो॰ करत बतकही अनुज सन मन सिय रूप लुभान
मुख सरोज मकरंद छबि करत मधुप इव पान
चितवति चकित चहूं दिशि सीता। कहं गये नृप किशोर मन चीता
जहं बिलोकि मृग शावक नयनी। जनु तहं बरष कमल सित अयनी
लता ओट तब सखिन लखाये। श्यामल गौर किशोर सुहाये
देखि रूप लोचन ललचाने। हर्षे जनु निज निधि पहिचाने
थके नयन रघुपति छबि देखी। पलकनहूं परि हरी निमेषी।
अधिक सनेह देह भइ भोरी। शरद शशिहि जनु चितव चकोरी
लोचन मग रामहि उर आनी। दीन्हे पलक कपाट सयानी
जब सियसखिन प्रेम बस जानी। कहिन सकहिं कछु मन सकुचानी
दो॰ लता भवन ते प्रगट भे तेहि अवसर दोउ भाइ ॥
निकसे जनु युग विमल विधु जलद पटल बिलगाइ

दो॰ रा॰ बा॰ ३५८

शोभा सींव सुभग दोउ बीरा। नील पीत जल जात शरीरा ॥
काकपक्ष शिर सोहत नीके। गुच्छे बिच बिच कुसुम कलीके
भाल तिलक श्रम बिंदु सुहाये। श्रवण सुभग भूषण छबि छाये
बिकट भ्रकुटि कच घूंघर बारे। नव सरोज लोचन रतनारे ॥

चारु चिबुक नासिका कपोला। हास विलास लेत जनु मोला
मुख छवि कहि न जाइ मोहि पाहीं। जो विलोकि बहु काम लजाहीं
उर मणि माल कंबु कल ग्रीवा। काम कलभ कर भुज बल सींवा
सुमन समेत बाम कर दोना। सांवर कुंवर सखी सुठि लोना
दो॰ केहरि कटि पट पीत धर सुखमा शील निधान
देखि भानुकुल दूषणहिं बिसरा सखिन अपान
धरि धीरज इक सखी सयानी। सीता सन बोली गहि पानी
बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू। भूप किशोर देखि किन लेहू
सकुचि सीय तब नयन उघारे। सन्मुख दोउ रघुबंश निहारे
नख शिख देखि रामकी शोभा। सुमिरि पिता प्रण मन अतिक्षोभा
परवस सखिन लखी जब सीता। भये गहरु सब कहहिं सभीता
पुनि आउब इहि बिरिया काली। अस कहि मन बिहंसी इक आली
गूढ़ गिरा सुनि सिय सकुचानी। भये बिलंब मातु भय मानी
धरि बड़ धीर राम उर आनी। फिरि आपन प्रण पितु बस जानी
दो॰ देखन मिसु मृग बिहग तरु फिरे बहोरि बहोरि
निरखि निरखि रघुबीर छबि बाढ़ी प्रीति न थोरि
जानि कठिन शिव चाप बिसूरति। चली राखि उर श्यामल मूरति
प्रभु जब जात जानकी जानी। सुख सनेह शोभा गुण खानी
परम प्रेम मय मृदु मसि कीन्ही। चारु चित्र भीतर लिखि लीन्ही
गई भवानी भवन बहोरी। बंदि चरण बोली कर जोरी
जय जय जय गिरिराज किशोरी। जय महेश मुख चंद्र चकोरी

दी॰ ए॰ बा॰ १६०

जय गज वदन खड़ानन माता। जगत जननि दामिनिदुति गाता
नहिं तव आदि मध्य अवसाना। अमित प्रभाव वेद नहिं जाना
भव भव विभव पराभव कारिणि। विश्व विमोहनि स्ववस विहारिणि
दो. पति देवता सुतीय महं मातु प्रथम तव रेख ॥
महिमा अमित न कहि सकहिं सहस शारदाशेष
सेवत तोहि सुलभ फल चारी। बर दायनि त्रिपुरारि पियारी
देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे
मोर मनोरथ जानहु नीके। बसहु सदा उर पुर सबही के
कीन्हेउं प्रगट न कारण तेही। अस कहि चरण गहे बैदेही
बिनय प्रेम बस भई भवानी। खसी माल मूरति मुसुकानी
सादर सिय प्रसाद उर धरेऊ। बोली गौरि हर्ष हिय भरेऊ
सुनु सिय सत्य अशीस हमारी। पूजिहि मन कामना तुम्हारी
नारद बचन सदा शुचि सांचा। सो वर मिलिहि जाहि मन राचा
छं. मन जाहि राचो मिलिहि सो वर सहज सुंदर सांवरो
करुणा निधान सुजान शील सनेह जानत रावरो
एहि भांति गौरि अशीश सुनि सिय सहित हिय हर्षित अली
तुलसी भवानिहिं पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली
सो. जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हर्ष न जाय कहि
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे
हृदय सराहत सीय लुनाई। गुरु समीप गवने दोउ भाई
राम कहा सब कौशिक पाहीं। सरल सुभाव छुआ छल नाहीं

सुमन पाइ मुनि पूजा कीन्ही। पुनि असीस दीउ भाइन्ह दीन्ही
सुफल मनोरथ होउ तुम्हारे। राम लषण सुनि भये सुखारे
करि भोजन मुनिवर बिज्ञानी। लगे कहन कछु कथा पुरानी
बिगत दिवस मुनि आयसु पाई। संध्या करण चले दोउ भाई
प्राची दिशि शशि उगेउ सुहावा। सिय मुख सरिस देखि सुख पावा
बहरि बिचार कीन्ह मन माहीं। सीय बदन सम हिम कर नाहीं

दो॰ जन्म सिंधु पुनि बंधु बिष दिन मलीन सकलंक
सिय मुख समता पाव किमि चंद बापुरो रंक

घटै बढ़ै बिरहिनि दुखदाई। ग्रसै राहु निज संधिहि पाई॥
कोक शोक प्रद पंकज द्रोही। अवगुण बहुत चंद्रमा तोही
बैदेही मुख पटतर दीन्हे॥ होइ दोष बड़ अनुचित कीन्हे
सिय मुख छबि बिधु ब्याज बखानी। गुरु पहं चले निशा बड़ि जानी
करि मुनि चरण सरोज प्रणामा। आयसु पाइ कीन्ह बिश्रामा
बिगत निशा रघुनायक जागे। बंधु बिलोकि कहन अस लागे
उगेउ अरुण अवलोकहु ताता। पंकज कोक लोक सुख दाता
बोले लषण जोरि युग पाणी। प्रभु प्रभाव सूचक मृदु बाणी

दो॰ अरुणोदय सकुचे कुमुद उडु गण जोति मलीन
तिमि तुम्हार आगमन सुनि भये नृपति बलहीन

नृप सब नखत करहिं उजियारी। टारि न सकहिं चाप तम भारी
कमल कोक मधुकर खग नाना। हरषे सकल निशा अवसाना
ऐसहिं प्रभु सब भक्त तुम्हारे। होइहहिं टूटे धनुष सुखारे॥

उदय भानु बिनु श्रमतमनाशा। दुरे नरवत जग तेज प्रकाशा
रवि निजउदय व्याज रघुराया। प्रभु प्रताप सब प्रगट जनाया
तव भुज बल महिमा उदघाटी। प्रगटी धनु बिघटन परिपाटी
बंधु बचन सुनि प्रभु मुसुकाने। होइ सुचि सहज पुनीत नहाने
नित्य क्रिया करि गुरु पहं आये। चरण सरोज सुभग सिर नाये
सतानंद तब जनक बुलाये। कौसिक मुनि पहं तुरत पठाये
जनक बिनय तिन आय सुनाई। हरषे बोलि लिये दोउ भाई
दो. सतानंद पद बंदि प्रभु बैठे गुरु पहं जाइ ॥
चलहु तात मुनि कहेउ तब पठवा जनक बुलाइ
सीय स्वयंबर देखिय जाई। ईश काहि धौं देहिं बड़ाई ॥
लषण कहा यश भाजन सोई। नाथ कृपा तव जापर होई ॥
हरषे मुनि सब सुनिबर बानी। दीन्ह असीस सबहि सुखमानी
पुनि मुनि वृन्द समेत कृपाला। देखन चले धनुष मख शाला
रंगभूमि आये दोउ भाई। असि सुधि सब पुरवासिन पाई
चले सकल गृह काज बिसारी। बालक युवा जठर नर नारी ॥
देखी जनक भीर भइ भारी। सुचि सेवक सब लिये हंकारी
तुरत सकल लोगन पहं जाहू। आसन उचित देहु सब काहू
दो. कहि मृदु बचन बिनीत अति बेगारे नर नारि
उत्तम मध्यम नीच लघु निज निज थल अनुहारि
राज कुंवर तेहि अवसर आये। मनहु मनोहरता छवि छाये
गुण सागर नागर वर बीरा। सुंदर श्यामल गौर शरीरा।

राज समाज बिराजत रूरे ॥ ।उडुगण महं युग बिधुजनु पूरे
जिन के रही भावना जैसी । प्रभु मूरति देखी तिन तैसी
देखहिं भूप महा रण धीरा। मनहुं बीर रस धरे शरीरा
डरे कुटिल नृप प्रभुहि निहारी। मनहुं भयानक मूरति भारी
रहे असुर छल जो नृप वेषा ।तिन प्रभु प्रगट काल सम देषा
पुरवासिन देखे दोउ भाई । नर भूषण लोचन सुखदाई

दो· नारि बिलोकहिं हरषि हिय निज निज रुचि अनुरूप
जनु सोहत शृंगार धरि। मूरति परम अनूप ॥

बिदुषन प्रभु बिराट मय दीसा। बहु मुख कर पग लोचन शीसा
जनक जानि अवलोकहिं कैसें। सजन सगे प्रिय लागहि जैसें
सहित बिदेह बिलोकहिं रानी। शिशु सम प्रीति न जात बखानी
योगिनि परम तत्त्व मय भासा। संत शुद्ध मन सहज प्रकासा
हरि भक्तन देखेउ दोउ भ्राता। इष्टदेव इव सब सुखदाता ॥
रामहि चितव भाव जेहि सीया। सो सनेह मुख नहिं कथनीया
उर अनुभवति न कहि सक कोऊ। कवन प्रकार कहै कवि कोऊ
इहि बिधि रहा जाहि जस भाऊ। तेइ तस देखेउ कोशल राऊ

दो· राजत राज समाज महं कोशल राज किशोर
सुंदर श्यामल गौर तन विश्व बिलोचन चोर

सहज मनोहर मूरति दोऊ । ।कोटि काम उपमा लघु सोऊ
शरद चंद निंदक मुख नीके। नीरज नयन भाव ते जीके ॥
चितवनि चारु मार मद हरणी। भावत हृदय जाय नहिं बरणी

टी· रा· बा· २६४

कल कपोल श्रुति कुंडल लोला। चिबुक अधर सुंदर मृदु बोला
कुमुद बंधु कर निंदक हासा। भृकुटी बिकट मनोहर नासा॥
भाल बिसाल तिलक झलकाहीं। कच बिलोकि अलि अवलि लजाहीं
पीत चौतनी सुभग सुहाई। कुसुम कली बिच बीच बनाई
रेखा रुचिर कंबु कल ग्रीवा। जनु बिधुबल सुरबस की सींवा
दो॰ कुंजर मणि कंठा कलित उर तुलसी की माल
बृषभ कंध केहरि ठवनि बल निधि बाहु बिशाल
कटि तूणीर पीत पट बांधे। कर शर धनुष बाम बर कांधे
पीत यज्ञ उपवीत सुहाई। नख शिख मंजु महा छवि छाई
देखि लोग सब भये सुखारे। इकटक लोचन टरहिं न टारे॥
हरषे जनक देखि दोउ भाई। मुनि पद कमल गहे तब जाई
करि बिनती निज कथा सुनाई। रंग अवनि सब मुनिहि दिखाई
जहं जहं जाहिं कुवर बर दोऊ। तहं तहं चकित चितव सब कोऊ
निज निज रुचि रामहिं सब देखा। कोउ न जान कछु मर्म बिशेषा
भलि रचना नृप सन मुनि कहेऊ। राजा सुखी महासुख लहेऊ
दो॰ सब मंचन तें मंच इक सुंदर बिशद बिशाल
मुनि समेत दोउ बंधु तहं बैठारे महिपाल
प्रभुहि देखि सब नृप हिय हारे। जनु राकेश उदय भये तारे
असि प्रतीति तिन्हके मन माहीं। राम चाप तोरब कस नाहीं
बिनु भंजेहु भव धनुष बिशाला। मेलिहि सीय राम उर माला
अस बिचारि गवनहु घर भाई। जय प्रताप बल तेज गंवाई

इंद्रके स
हायक कालस्थ रा
जा सोके वंश में
देव विनयी दशरथ
तिनके उजन को म
रूप विजय लक्ष्मि
नाथ होनें मही
रण में क्षत्रि गति
वे दक्षु रूप प्रथम
होते दशीनार्थ श्री
रामतें सीता दूको
जगदंबा कहे सुन
लक्षणि काम का
सखा त्यागी हरषी
ब सोसा जानि
को भाव धनुष
भंग राम को क
ल सीता के देखे
बिना राजन के
प्रीति उत्साह घ
उष भंग में छोड़ो
नहीं इसको भाव
जैसे छुरी सुन
दोऊ भाइन को
आदबी रंग सभी
में बड़ी उमंगतें
गेय कार गायो
तैसेई सरली व
भाज सहित प्रीति
शोभा तें सीता
आगमन उ श्री
सह जानि बल
नहीं पढ़ जग
बी की उपमा
भाखति ना बीज
श्री परशु
अंदर नौसे
गोपी
रघुपति
श्री लक्ष्मण
बोले
श्री विश्वा मित्र

विहंसे परम भूप सुनि बानी । जे अविवेक अंध अभिमानी
तोरेहुं धनुष व्याह अवगाहा । बिनु तोरे को कुंवरि बिवाहा
एकवार कालहु किन होई । सिय हित समर जितव हम सोई
यह सुनि अपर भूप मुसुकाने । धर्म्म शील हरि भक्त सयाने
सो॰ सीय बिवाहव राम । गर्व दूरि करि नृपन कर
जीति को सके संग्राम । दशरथ के रण बांकुरे
वृथा मरहु जनि गाल बजाई । मन मोदक नहिं भूख बुझाई
शिख हमार सुनु परम पुनीता । जगदंबा जानहु जिय सीता
जगत पिता रघुपतिहि बिचारी । भरि लोचन छबि लेहु निहारी
सुंदर सुखद सकल गुण रासी । ये दोउ बंधु शंभु उर वासी
सुधा समुद्र समीप बिहाई । मृग जल निरखि मरहु कत धाई
करहु जाय जाकहं जोइ भावा । हम तो आजु जन्म फल पावा
अस कहि भले भूप अनुरागे । रूप अनूप बिलोकन लागे
देखहिं सुर नभ चढ़े बिमाना । बरषहिं सुमन करहिं कल गाना
दो॰ जानि सुअवसर सीय तब पठवा जनक बुलाइ
चतुर सखी सुंदरि सकल सादर चली लिवाइ
सिय शोभा नहिं जाइ बखानी । जगदंबिका रूप गुण खानी
उपमा सकल मोहि लघु लागी । प्राकृत नारि अंग अनुरागी
सीय बरणि तेहि उपमा देई । को कवि कहै अयश को लेई
जौं पट तरिय तीय सम सीया । जग अस युवति कहां कमनीया
गिरा मुखर तन अर्द्ध भवानी । रति अति दुखित अतन माते जानी

टी॰
रा॰ वा॰
२६६

बिष बारुणी बंधु प्रिय जेही। कहिय रमा सम किमि बैदेही
जौ छबि सुधा पयोनिधि होई। परम रूप मय कच्छप सोई
सोभा रजु मंदर सिंगारू। मथै पाणि पंकज निज मारू
दो॰ एहि बिधि उपजै लच्छि जब सुंदरता सुख मूल
तदपि सकोच समेत कबि कहहिं सीय सम तूल
चली संग लै सखी सयानी। गावति गीत मनोहर बानी
सोह नवल तन सुंदर सारी। जगत जननि अतुलित छबि भारी
भूषण सकल सुदेस सुहाये। अंग अंग रचि सखिन बनाये
रंग भूमि जब सिय पगु धारी। देखि रूप मोहे नर नारी
हरषि सुरन दुंदुभी बजाई। बरषि प्रसून अपसरा गाई॥
मणि सरोज सोह जय माला। सोचक चितै सकल महिपाला
सीय चकित चित रामहि चाहा। भये मोहबस सब नर नाहा
मुनि समीप देखे दोउ भाई। लगे ललकि लोचन निधि पाई
दो॰ गुरुजन लाज समाज बड़ि देखि सीय सकुचानि
लगी बिलोकन सखिन तन रघुबीरहि उर आनि
राम रूप अरु सियछबि देखी। नर नारिन परिहरी निमेषी
सोचहिं सकल कहत सकुचाहीं। बिधि सन बिनय करहिं मनमाहीं
हरु बिधि बेगि जनक जड़ताई। मति हमार असि देइ सुहाई
बिनु बिचार प्रण तजि नरनाहू। सीय राम कर करै बिबाहू॥
जग भल कहहिं भाव सब काहू। हठ कीन्हे उर अंतर दाहू
एहि लालसा मगन सब लोगू। बर सांवरो जानकी योगू॥

नव बंदी जन जनक बुलाये। बिरदावली कहत चलि आये
कह नृप जाइ कहहु प्रण मोरा। चले भाट हिय हर्ष न थोरा
दो॰ बोले बंदी बचन वर। सुनहु सकल महिपाल
प्रण विदेह कर कहहिं हम भुजा उठाइ विशाल
नृप भुज बल विधु शिव धनु राहू। गरुअ कठोर बिदित सब काहू
रावण बाण महा भट भारे। देखि शरासन गवहिं सिधारे
सोइ पुरारि को दंड कठोरा। राजु समाज आजु जोइ तोरा
त्रिभुवन जय समेत बैदेही। बिनहि बिचार बरै हठि तेही
सुनि प्रण सकल भूप अभिलाषे। भट मानी अतिशय मन माखे
परि कर बांधि उठे अकुलाई। चले इष्ट देवन शिर नाई॥
तमकि ताकि तकि शिव धनु धरहीं। उठइ न कोटि भांति बल करहीं
जिनके कछु बिचार मन माहीं। चाप समीप महीप न जाहीं
दो॰ तमकि धरहिं धनु मूढ़ नृप उठइ न चलहिं लजाइ
मनहुं पाइ भट बाहु बल अधिक अधिक गरुआइ
भूप सहस दस एकहि बारा। लगे उठावन टरइ न टारा॥
डगै न शंभु सरासन कैसें। कामी बचन सती मन जैसें
सब नृप भये योग उपहासी। जैसे बिनु बिराग सन्यासी
कीरति बिजय बीरता भारी। चले चाप कर सरबस हारी
श्री हत भये हारि हिय राजा। बैठे निज निज जाइ समाजा
नृपन बिलोकि जनक अकुलाने। बोले बचन रोष जनु माने
दीप दीपके भूपति नाना। आये सुनि हम जो प्रण ठाना

टी॰ रा॰ बा॰ ३६८

दस सहस्र राजा ओं ने धनुष मिल कर उठाया न उठा

देव दनुज धरि मनुज शरीरा। बिपुल बीर आये रणधीरा
दो॰ कुंवरि मनोहरि बिजय बड़ि कीरति अति कमनीय
पावन हार बिरंचि जनु। रचेउ न धनु दमनीय॥
कहहु काहि यह लाभ न भावा। काहु न शंकर चाप चढ़ावा
रहो चढ़ाउब तोरब भाई। तिल भरि भूमि न सकेउ छड़ाई
अब जनि कोउ भाषे भट मानी। बीर बिहीन मही मैं जानी
तजहु आश निज निज गृह जाहू। लिखा न बिधि बैदेहि बिवाहू
सुकृत जाइ जौं प्रणपरि हरऊं। कुंवरि कुंवारि रहो का करऊं
जौं जनितेउं बिनु भट भुबि भाई। तो प्रण करि होतेउं न हंसाई
जनक बचन सुनि सब नर नारी। देखि जानकी भये दुखारी
सुनतहि लषण कुटिल भे भौंहें। रद पट फरकत नयन रिसौंहें
दो॰ कहि न सकत रघुबीर डर लगे बचन जनु बाण
नाद राम पद कमल शिर बोले गिरा प्रमाण
रघुबंशिन महं जहं कोउ होई। तेहि समाज अस कहइ न कोई
कही जनक जस अनुचित बानी। बिद्यमान रघुकुल मणि जानी
सुनहु भानुकुल पंकज भानू। कहौं सुभाव न कछु अभिमानू
जो राउर अनुशासन पाऊं। कंदुक इव ब्रह्माण्ड उठाऊं।
कांचे घट जिमि डारौं फोरी। सकौं मेरु मूलक इव तोरी
तव प्रताप महिमा भगवाना। का बापुरो पिनाक पुराना
नाथ जानि अस आयसु होऊ। कौतुक करौं बिलोकिय सोऊ
कमल नाल जिमि चाप चढ़ावौं। शत योजन प्रमाण लै धावौं

टी. रा. बा. १७

दो॰ तोरौं छत्रक दंड जिमि तव प्रताप बल नाथ
जौं न करौं प्रभु पद सपथ पुनि न धरौं धनु हाथ

लषण सकोप बचन जब बोले। डग मगानि महि दिग्गज डोले
सकल लोक सब भूप डराने। सिय हिय हर्ष जनक सकुचाने
गुरु रघुपति सब मुनि मन माहीं। मुदित भये पुनि पुनि पुलकाहीं
सैनहिं रघुपति लषण निवारे। प्रेम समेत निकट बैठारे ॥
विश्वामित्र समय शुभ जानी। बोले अति सनेह मृदु बानी
उठहु राम भंजहु भव चापू। मेटहु तात जनक परितापू
सुनि गुरु बचन चरण शिर नावा। हर्ष विषाद न कछु उर आवा
ठाढ़ भये उठि सहज सुभाये। ठवनि युवा मृगराज लजाये ॥

दो॰ उदित उदय गिरि मंच पर रघुपति बाल पतंग
बिकसे सन्त सरोज सब हर्षे लोचन भृंग ॥

नृपन केरि आशा निशनाशी। बचन नखत अवलीन प्रकाशी
मानि महीप कुमुद सकुचाने। कपटी भूप उलूक लुकाने ॥
भये बिशोक कोक मुनि देवा। बरषहिं सुमन जनावहिं सेवा
गुरु पद बंदि सहित अनुरागा। राम मुनिन सन आय सुमांगा
सहजहिं चले सकल जग स्वामी। मत्त मंजु कुंजर बर गामी
चलत राम सब पुर नर नारी। पुलक पूरि तन भये सुखारी
बंदि पितर सुर सुकृत संभारे। जौ कछु पुण्य प्रभाव हमारे
तौ शिव धनुष मृणाल किनाईं। तोरहिं राम गणेश गुंसाईं

दो॰ रामहिं प्रेम समेत लखि सखिन समीप बुलाइ

लषन बचन सुनि जनक जू जानकी को हर्ष भयो भा वगई पति के रावन हार जानि के गुरादि के मुदित की भाव भली औसर लष न संभारे पुनः गुरु आज्ञा तें श्री

टी॰ रा॰ बा॰ २७२

राम जू हर्ष बिषाद रहित उठे बाल सूर्य राम जू के कहवे को भाव कि बल प्रताप आगे कहैंगे २५४ कपटी भूपन को बिषाद देवतन को हर्ष दिखावो २२५

सीता मातु सनेह बस। बचन कहे बिलखाइ
सारि सबै कौतुक देखन हारे। जेउ कहावत हितू हमारे
कोउ न बुझाइ कहइ नृप पाहीं। ये बालक असहठ भल नाहीं
रावण बाण छुआ नहिं चापा। हारे सकल भूप करि दापा
सो धनु राज कुंवर कर देहीं। बाल मराल कि मंदर लेहीं
भूप सयानप सकल सिरानी। सखि बिधि गति कछु जाय न जानी
बोली चतुर सखी मृदु बानी। तेजवन्त लघु गणिय न रानी
कहं कुंभज कहं सिंधु अपारा। सोषेउ सुयश सकल संसारा
रवि मंडल देखत लघु लागा। उदय तासु त्रिभुवन तम भागा

दो. मंत्र परम लघु जासु बस बिधि हरिहर सुर सर्व
महा मत्त गज राज कहं बस कर अंकुस खर्व

दो. ए. बा. १२२

काम कुसुम धनु सायक लीन्हे। सकल भुवन अपने बस कीन्हे
देबि तजिय संसय अस जानी। भंजब धनुष राम सुनु रानी
सखी बचन सुनि भइ परतीती। मिटा बिषाद बढ़ी अति प्रीती
तब रामहिं बिलोकि बैदेही। सभय हृदय बिनवति जेहि तेही
मनहीं मन मनाय अकुलानी। होहु प्रसन्न महेश भवानी
करहु सुफल आपनि सेवकाई। करि हित हरहु चाप गरुआई
गण नायक बरदायक देवा। आजु लगे कीन्ही तव सेवा
बार बार बिनती सुनि मोरी। करहु चाप गरुता अति थोरी

दो. देखि देखि रघुबीर तन सुर मनाव धरि धीर
भरे बिलोचन प्रेम जल पुलकावली सरीर

नीके निरखि नयन भरि शोभा। पितु पण सुमिरि बहुरि मन छोभा
अहह तात दारुण हठ ठानी। समुझत नहिं कछु लाभ न हानी
सचिव सभय सिख देइ न कोई। बुध समाज बड़ अनुचित होई
कहं धनु कुलिशहु चाहि कठोरा। कहं श्यामल मृदु गात किशोरा
विधि केहि भांति धरौं उर धीरा। सिरस सुमन किमि बेधिहि हीरा
सकल सभा की मति भइ भोरी। अब मोहि शंभु चाप गति तोरी
निज जड़ता लोगन पर डारी। होहु हरुष रघुपतिहि निहारी
अति परिताप सीय मन माहीं। लवनि मेष युग सम चलि जाहीं

दो· प्रभुहि चितै पुनि चितै महि राजत लोचन लोल
खेलत मनसिज मीन युग जनु बिधुमंडल डोल

गिरा अलिनि मुख पंकज रोकी। प्रगट न लाज निशा अवलोकी
लोचन जलरहु लोचन कोना। जैसे परम कृपण कर सोना
सकुची व्याकुलता बड़ि जानी। धरि धीरज प्रतीति उर आनी
तन मन बचन मोर पन सांचा। रघुपति पद सरोज मन रांचा
तो भगवान सकल उर वासी। करिहहिं मोहि रघुपति की दासी
जेहि के जेहि पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलत न कछु संदेहू
प्रभु तन चितै प्रेम पण ठाना। कृपा निधान राम सब जाना
सियहि बिलोकि तकेउ धनु कैसे। चितव गरुड़ लघु व्यालहि जैसे

दो· लषण लखेउ रघुवंश मणि ताकेउ हर को दंड
पुलकि गात बोले बचन चरण चापि ब्रह्मंड

दिशकुंजरहु कमठ अहि कोला। धरहु धरणि धरि धीर न डोला

पुनः जानकी ज
निजप्रेमके पण
ह मोहि कहहि
ये गोपीज
ह लतादिनेंह
ह कथा पूछ
ह भई जैसे
बाल स्वाधी
यहहिं के क
ही २५८ ज्ञान
की जीकी सेम प

न मानिवो अती
ति रामचंद्र देको
धनुष तकिनो
लषन लखि वो
ये २५९ हिंगा
जन को तजग
कियो अरु जहो
ज के हपक में
बड़ो वारो समाज
कयो १६०

राम चहहिं शंकर धनु तोरा। होहु सजग सुनि आयसु मोरा
चाप समीप राम जब आये। नर नारिन सुर सुकृत मनाये
सब कर संशय अरु अज्ञानू। मंद महीपन कर अभिमानू
भृगुपति केरि गर्व गरु आई। सुर मुनि नृपन केरि कदराई
सिय कर शोच जनक पछतावा। रानिन कर दारुण दुख दावा
शंभु चाप बड़वो हित पाई। चढ़े जाइ सब संग बनाई
राम बाहु बल सिंधु अपारा। चहत पार नहिं कोउ कड़िहारा
दो॰ राम बिलोके लोग सब चित्र लिखे से देषि ॥
चितई सीय कृपाय तन जानी विकल विशेषि
देखी विपुल बिकल बैदेही। निमिष बिहात कल्प समतेही
तृषित बारि बिनु जौं तनु त्यागा। मुये करै का सुधा तड़ागा
का बर्षा जब कृषी सुखाने। समय चूकि पुनि का पछताने
अस जिय जानि जानकी देषी। प्रभु पुलके लखि प्रीति बिशेषी
गुरुहि प्रणाम मनहि मन कीन्हा। अति लाघव उठाइ धनु लीन्हा
दमकेउ दामिनि जिमि घन लयऊ। पुनि धनु नभ मंडल सम भयऊ
लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़े। काहु न लखा देखि सब ठाढ़े
तेहि क्षण मध्य राम धनु तोरा। भरेउ भुवन धुनि घोर कठोरा
छं॰ भरि भुवन घोर कठोर रव रवि वाजि तजि मारग चले
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि कोल कूरम कलमले
सुर असुर मुनि कर कान दीन्हे सकल विकल विचारहीं
को दंड भंजेउ राम तुलसी जयति बचन उचारहीं

जानकी जी को विकल देखिकै

टी॰ रा॰ बा॰ २७५

रामजू धनुष भंग ६१ ॥

सो॰ शंकर चाप जहाज । सागर रघुबर बाहु बल
बूड़े सकल समाज । चढ़े जे प्रथमहि मोहबस
प्रभु दोउ चाप खंड महि डारे । देखि लोग सब भये सुखारे ॥
कौशिक रूप पयोनिधि पावन । प्रेम वारि अवगाह सुहावन
राम रूप राकेश निहारी ॥ । बढ़ी बीचि पुलकावलि भारी
बाजे नभ गह गहे निसाना । देव बधू नाचहिं करि गाना ॥
ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनीशा । प्रभुहि प्रशंसहिं देहि अशीशा
बरषहिं सुमन रंग बहु माला । गावहिं किन्नर गीत रसाला
रही भुवन भरि जय जय वानी । धनुष भंग धुनि जात न जानी
मुदित कहहिं जहं तहं नर नारी । भंजेउ राम शंभु धनु भारी ॥
दो॰ वंदी मागध सूत गण विरद बदहिं मति धीर
करहिं निछावरि लोग सब हयगय धनि मणि चीर
झांझ मृदंग शंख सहनाई । भेरि ढोल दुन्दुभी सुहाई ॥
बाजहिं बहु बाजने सुहाये । जहं तहं युवतिन मंगल गाये ॥
सखिन सहित हर्षित अतिरानी । सूखत धान परा जनु पानी
जनक लहेउ सुख सोच विहाई । पैरत थके थाह जनु पाई ॥
श्रीहत भये भूप धनु टूटे । जैसें दिवस दीप छवि छूटे ॥
सिय हिय सुख बरणिय केहि भांती । जनु चातकि पाए जल स्वाती
रामहिं लषण बिलोकत कैसें । शशिहि चकोर किशोरक जैसें
सतानंद तब आयसु दीन्हा । सीता गमन राम पहं कीन्हा
दो॰ संग सखी सुंदरि चतुर गावहिं मंगल चार

धनुष भंग संता
बिश्वामित्र को
प्रेम सिंधु राम
चंद्र शशि देख
उमगत भयो
अरु जनक देव
आदि आनंद में

दो॰
रा॰ बा॰
२७५

फूल बर्षा किये
२६२ पुनः सता
नंद आज्ञा तें सी
ता जू सखिन यु
त गमन कियो
जयमाल पहरा
वन हेतु ३६३

गवनी बाल मराल गति सुखमा अंग अपार
सखिन मध्य सिय सोहति कैसी। छवि गण मध्य महाछवि जैसी
कर सरोज जयमाल सुहाई। विश्व विजय शोभा जनु छाई
तन सकोच मन परम उछाहू। गूढ़ प्रेम लखि परै न काहू
जाइ समीप राम छवि देखी। रहि जनु कुंवरि चित्र अवरेखी
चतुर सखी लखि कहा बुझाई। पहिरावहु जयमाल सुहाई
सुनत युगल कर माल उठाई। प्रेम बिवस पहिराइ न जाई
सोहत जनु युग जलज सनाला। ससिहि सभीत देत जयमाला
गावहिं छबि अवलोकि सहेली। सिय जयमाल राम उर मेली

सो॰ रघुबर उर जय माल। देखि देव बरषहिं सुमन
सकुचे सकल भुआल जनु बिलोकि रबि कुमुद गण

पुर अरु व्योम बाजने बाजे। खल भये मलिन साधु सब गाजे
सुर किन्नर नर नाग मुनीशा। जय जय सब कहि देहिं असीसा
नाचहिं गावहिं बिबुध बधूटी। बार बार कुसुमावलि छूटी॥
जहं तहं बिप्र बेद धुनि करहीं। बंदी बिरदावलि उच्चरहीं॥
महि पाताल नाक यश व्यापा। राम बरी सिय भंजेउ चापा
करहिं आरती पुर नर नारी। देहि निछावरि वृत्ति बिसारी
सोहत राम सीय की जोरी। छवि शृंगार मनहुं दुक ठोरी॥
सखी कहहिं प्रभु पद गहु सीता। करति न चरण परस अति भीता

दो॰ गौतम तिय गति सुरति करि नहिं परसति पद पानि
मन बिहंसे रघुबंश मणि प्रीति अलौकिक जानि

दी. बां. सं. ७

तव सिय देखि भूप अभिलाषे। कूर कपूत मूढ़ मन माषे ॥
उठि उठि पहिरिस नाह अभागे। जहं तहं गाल बजावन लागे
लेहु छुड़ाइ सीय कहं कोऊ। धरि बांधहु नृपबालक दोऊ
तोरे धनुष काज नहिं सरई। जीवत हमहिं कुंवरि को वरई
जो विदेह कछु करै सहाई। जीतहु समर सहित दोउभाई
साधु भूप बोले सुनि बानी। राज समाजहिं लाज लजानी
बल प्रताप वीरता बड़ाई। नाक पिनाकहि संग सिधाई
सोइ सूरता कि अबकहुं पाई। अस बुधि तो बिधि मुहमसि लाई

दो. देखहु रामहिं नयन भरि तजि इरिषा मद मोहु
लषण रोष पावक प्रबल जानि शलभ जनि होहु

बैन तेय बलि जिमि चह कागू। जिमि शशु चहहिं नाग अरिभागू
जिमि चह कुशल अकारण कोही। सुख संपदा चहहिं शिवद्रोही
लोभी लोलुप कीरति चहई। अकलंकिता कि कामी लहई
हरि पद विमुख परम गति चाहा। तस तुम्हार लालच नर नाहा
कोलाहल सुनि सीय सकानी। सखी लिवाइ गई जहं रानी
राम सुभाय चले गुरु पाहीं। सिय सनेह वरणत मन माहीं
रानिन सहित सोच बस सीया। अबधौं बिधि हि कहा करनीया
भूप बचन सुनि इतउत कहहीं। लषण रामडर बोलि न सकहीं

दो. अरुण नयन भृकुटी कुटिल चितवत नृपन सकोप
मनहु मत्त गज गण निरखि सिंह किशोरहि चोप

खरभर देखि बिकल महतारी। सब मिलि देहिं महीपन गारी

तेहि अवसर सुनि शिवधनुभंगा। आये भृगुकुल कमल पतंगा
देखि महीप सकल सकुचाने। बाज रूपट जनु लवा लुकाने
गौर शरीर भूति भलि भ्राजा। भाल बिशाल त्रिपुंड बिराजा
शीश जटा शशि बदन सुहावा। रिसि बस कछुक अरुण होइ आवा
भृकुटी कुटिल नयन रिसि राते। सहजहि चितवत मनहु रिसाते
वृषभ कंध उर बाहु विशाला। चारु जनेउ माल मृग छाला
कटि मुनि बसन तूण दुइ बांधे। धनु शर कर कुठार कल कांधे
दो॰ सान्त भेष करणी कठिन बरणि न जाइ सरूप
धरि मुनि तनु जनु वीर रस आये जहं सब भूप
देखत भृगुपति भेष कराला। उठे सकल भय विकल भुआला
पितु समेत कहि कहि निज नामा। लगे करण सब दंड प्रणामा
जेहि सुभाय चितवहिं हित जानी। सो जानै जनु आइ खुटानी
जनक बहोरि आय शिर नावा। सीय बुलाइ प्रणाम करावा
आशिष दीन्ह सखी हरषानी। निज समाज लै गई सयानी
विश्वामित्र मिले पुनि आई। पद सरोज मेले दोउ भाई ॥
राम लषण दशरथ के ढोटा। दीन्ह अशीश जानि भल जोटा
रामहि चितव रहे थकि लोचन। रूप अपार मार मद मोचन
दो॰ बहुरि बिलोकि बिदेह सन कहहु कहा अति भीर
पूछत जान अजान जिमि व्यापेउ कोप शरीर
समाचार कहि जनक सुनाये। जेहि कारण महीप सब आये
सुनत बचन फिरि अनत निहारे। देखे चाप खंड महि डारे

अति रिसि बोले बचन कठोरा। कहु जड़ जनक धनुषकेहि तोरा
बेगि देखाउ मूढ़ न त आजू। उलटौं महि जहं लगि तव राजू
अति डर उतर देत नृप नाहीं। कुटिल भूप हरषे मन माहीं
सुर मुनि नाग नगर नर नारी। सोचहिं सकल त्रासउर भारी
मन पछिताति सीय महतारी। बिधि संवारि सब बात बिगारी
भृगुपति कर सुभाव सुनि सीता। अहई निमेष कल्प सम बीता

दो. सभय बिलोके लोग सब जानि जानकी भीर
हृदय न हर्ष बिषाद कछु बोले श्री रघुबीर ॥

नाथ शंभु धनु भंजन हारा। होइहि कोउ एक दास तुम्हारा
आयसु कहा कहिय किन मोही। सुनि रिसाय बोले मुनि कोही
सेवक सो जो करै सेवकाई। अरि करणी करि करिय लराई।
सुनहु राम जेहि शिव धनु तोरा। सहस बाहु सम सो रिपु मोरा
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न तु मारे जैहैं सब राजा ॥
सुनि मुनि बचन लषण मुसुकाने। बोले परशुधरहिं अपमाने
बहु धनुहीं तोरेउ लरिकाईं। कबहुं न असि रिसि कीन्ह गोसाईं
एहि धनु पर ममता केहि हेतू। सुनि रिसाय कह भृगुकुलकेतू

दो. रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न संभार
धनुहीं सम त्रिपुरारिधनु बिदित सकल संसार

लषण कहा हंसि हमरे जाना। सुनहु देव सब धनुष समाना
का छति लाभ जीर्ण धनु तोरे। देखा राम नयेके भोरे ॥
छुवत टूट रघुपतिहि न दोसू। मुनि बिनु काज करिय कत रोसू

जनक बिनय करि बार बार तिरिस की जीति करषसे अरु सकुचाने नहीं श्री रघुनाथहू बोलेभए १७० नीति पूर्वक राम बचन ते परशुराम जी को क्रोध बढ़ा

भाषण से लक्ष्मण उत्तर अंग पूर्ण के नेहभरी जहां बिदा जानो तहां खसखली छत्र से धैर्य अस्तुति मा ना बिस्तर भयेते चहीं लिखो २०

बोले चितय परशु की ओरा। रे शठ सुनेसि सुभाव न मोरा
बालक बोलि बधौं नहिं तोही। केवल मुनि जड़ जानेसि मोही
बाल ब्रह्म चारी अति कोही। विश्व विदित छत्री कुल द्रोही
भुज बल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुल बार महि देवन दीन्ही
सहस बाहु भुज छेदन हारा। परशु बिलोकु महीप कुमारा
दो॰ मातु पितहि जनि शोच बस करसि महीप किशोर
गर्भन के अर्भक दलन परशु मोर अति घोर
बिहसि लषण बोले मृदु बानी। अहो मुनीश महा भट मानी
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारा। चहत उड़ावन फूंकि पहारा
इहां कुम्हड़ बतिया कोउ नाहीं। जो तर्जनि देखत मरि जाहीं
देखि कुठार शरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना
भृगुकुल समुझि जनेउ बिलोकी। जो कछु कहहु सहौं रिसि रोकी
सुर महि सुर हरजन अरु गाई। हमरे कुल इनपर न सुराई
बधे पाप अपकीर तिहारे। मारत हूं पांपरिय तुम्हारे
कोटि कुलिश सम बचन तुम्हारा। वृथा धरहु धनु बाण कुठारा
दो॰ जो बिलोकि अनुचित कहेउं छमहु महा मुनि धीर
सुनि सरोष भृगु बंश मणि बोले गिरा गंभीर
कौशिक सुनहु मंद यह बालक। कुटिल काल बश निज कुल घालक
भानु बंश रा केश कलंकू। निपट निरंकुश अबुध अशंकू
काल कवर होइहि क्षण माहीं। कहौं पुकारि खोरि मोहि नाहीं
तुम हटकहु जो चहहु उबारा। कहि प्रताप बल रोष हमारा

भृगुपति क्रोधा
धिक्यतें श्री रघुना
थ जी ने वारणक
रि के नीति व्यंग
पूर्वक संभाषन
तें परशु राम जू
को पूर्वज्ञान भ
यो तब आपुनो

दो॰
रा॰ बा॰
२८२

धनुष रघुनाथ
देतु ते तौ ब
लि गयो प्रत्यंचा
साथही यातें लु
ति करि तप हेतु
बन को जाउ
भये २८५

लषण कहेउ मुनि सुयश तुम्हारा। तुमहि अछत को बरणै पारा
अपने मुख तुम आपनि करणी। बार अनेक भांति बहु बरणी
नहिं संतोष तो पुनि कछु कहहू। जनि रिसि रोकि दुसह दुख सहहू
वीर वृत्ति तुम धीर अछोभा। गारी देत न पावहु शोभा

दो॰ सूर समर करणी करहिं कहि न जनावहिं आपु
विद्यमान रण पाइ रिपु कायर कथहिं प्रलापु

तुम तौ काल हांकि जनु लावा। बारबार मोहि लागि बुलावा
सुनत लषण के बचन कठोरा। परशु सुधारि धरेउ कर घोरा
अब जनि देहु दोष मोहि लोगू। कटु बादी बालक बध योगू
बालि विलोकि बहुत मैं बाचा। अब यह मरण हार भा सांचा
कौशिक कहा छमिय अपराधू। बाल दोष गुण गणहिं न साधू
कर कुठार मैं अकरण कोही। आगें अपराधी गुरु द्रोही
उतर देत छाडौं बिनु मारे। केवल कौशिक शील तुम्हारे
न तु इहि काटि कुठार कठोरे। गुरुहि उरिण होतेउं श्रम थोरे

दो॰ गाधि सुअन कह हृदय हंसि मुनिहिं हरि अरे सूझ
अय मय खंडेउ ऊष जिमि अजहुं न बूझ अबूझ

कहेउ लषण मुनि शील तुम्हारा। को नहिं जान बिदित संसारा
मातुहि पितहिं उरिण भये नीके। गुरु ऋण रहा शोच बड़ जीके
सो जनु हमरे माथे काढ़ा। दिन चलि गयउ ब्याज बहु बाढ़ा
अब आनिय ब्यवहरिया बोली। तुरत देव मैं थैली खोली
सुनि कटु बचन कुठार सुधारा। हाहा कहि सब लोग पुकारा

भृगुबर परसु देखावहु मोही। बिप्र बिचारि बचौं नृपद्रोही
मिले न कबहुं सुभट रण गाढ़े। द्विज देवता घरहि के बाढ़े।
अनुचित कहि सब लोग पुकारे। रघुपति सैनहि लषण निवारे

दो॰ लषण उतर आहुति सरिस भृगुबर कोप कृसानु
बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुल भानु

नाथ करहु बालक पर छोहू। सूध दूध मुख करिय न कोहू
जौ पै प्रभु प्रभाव कछु जाना। तौ कि बराबर करत अयाना
जौ लरिका कछु अनुचित करहीं। गुरु पितु मातु मोद मन भरहीं
करिय कृपा शिशु सेवक जानी। तुम सम शील धीर मुनि ज्ञानी
राम बचन सुनि कछुक जुड़ाने। कहि कछु लषण बहुरि मुसकाने
हंसत देखि नख शिख रिस व्यापी। राम तोर भ्राता बड़ पापी
गौर शरीर श्याम मन माहीं। काल कूट मुख पै सुख नाहीं
सहज टेढ़ अनुहरै न तोही। नीच मीच सम लरवै न मोही

दो॰ लषण कहेउ हंसि सुनहु मुनि क्रोध पाप कर मूल
जेहि बस जन अनुचित करहिं चरहिं बिश्व प्रतिकूल

मैं तुम्हार अनुचर मुनि राया। परिहरि कोप करिय अब दाया
टूट चाप नहिं जुरहिं रिसाने। बैठिय होइहि पाय पिराने
जौ अति प्रिय तो करिय उपाई। जोरिय कोउ बड़ गुणी बुलाई
बोलत लषणहि जनक डेराहीं। मष्ट करहु अनुचित भल नाहीं
थर थर कांपहिं पुर नर नारी। छोट कुमार खोट अति भारी
भृगुपति सुनि सुनि निर्भय बानी। रिसि तनु जरै होइ बल हानी

बोले रामहिं देइ निहोरा । बचौ बिचारि बंधु लघु तोरा
मन मलीन तन सुंदर कैसे । बिष रस भरा कनक घट जैसे
दो॰ सुनि लछमण बिहंसे बहरि नयन तरेरे राम
गुरु समीप गवने सकुचि परिहरि बानी बाम
स्रुति बिनीत मृदु सीतल बाणी । बोले राम जोरि युग पाणी
सुनहु नाथ तुम सहज सुजाना । बालक बचन करिय नहिं काना
बरे बालक एक सुभाऊ । इनहिं न सन्त बिदूषहिं काऊ
तिन नाहीं कछु काज बिगारा । अपराधी मैं नाथ तुम्हारा
कृपा कोप बध बंध गुसाईं । मो पर करिय दास की नाईं
कहिय बेगि जेहि बिधि रिसि जाई । मुनि नायक सोइ करिय उपाई
कह मुनि राम जाइ रिसि कैसे । अजहुं बंधु तव चितवत्र नैसे
एहि के कंठ कुठार न दीन्हा । तौ मैं कहा कोप करि कीन्हा
दो॰ गर्भ अवहिं अवनिय रवनि सुनि कुठार गति घोर
परसु अछत देखौं जियत बैरी भूप किशोर ॥
बहे न हाथ दहे रिसि छाती । भा कुठार कुंठित नृप घाती
भयउ बाम बिधि फिरेउ सुभाऊ । मोरे हृदय कृपा कस काऊ
आजु दैव दुख दुसह सदावा । सुनि सौमित्र बिहंसि शिरनावा
बाड़ी कृपा मूरति अनुकूला । बोलत बचन झरत जनु फूला
जो पै कृपा जरै मुनि गाता । क्रोध भये तनु राख बिधाता
देख जनक हठ बालक येहू । कीन्ह चहत जड़ यमपुर गेहू
बेगि करहु किन आंखिन ओटा । देखत छोट खोट नृप ढोटा

यहमूर्तिपरशुराम आगमन की
वि.
ल.
रा.
परशुराम

बिहंसे लषण कहा मन माहीं। मूदिय आंखि कतहुं कोउ नाहीं
दो॰ परशुराम तब राम प्रति बोले बचन स क्रोध
शंभु सरासन तोरि शठ करसि हमार प्रबोध
बंधु कहे कटु संमत तोरे ॥ तू छल विनय करसि कर जोरे
करु परितोष मोर संग्रामा। नाहित छांडु कहावव रामा
छल तजि करहु समर शिव द्रोही। बंधु सहित नतु मारों तोही
भृगुपति तमकि कुठार उठाये। मन मुसुकाहिं राम शिर नाये
गणहु लषण कर हमपर रोषू। कतहु सुधाइहु ते बड़ दोषू
टेढ़ जानि शंका सब काहू। वक्रचंद्रमहिं ग्रसै न राहू ॥
राम कहेउ रिसि तजिय मुनीशा। कर कुठार आगें यह शीशा
जेहि रिसि जाइ करिय सोइ स्वामी। मोहि जानि आपन अनुगामी
दो॰ प्रभुहिं सेवकहि समर कस तजहु बिप्र बर बेष
भेष विलोकि कहसि कछु बालक हू नहिं दोष
देखि कुठार बाण धनु धारी। भै लरिकहि रिसि बीर बिचारी
नाम जान पै तुमहि न चीन्हा। बंश स्वभाव उतर तेहि दीन्हा
जो तुम अवतेहु मुनिकी नाईं। पद रज शिर शिशु धरत गुसाईं
छमहु चूक अनजानत केरी। चहिय बिप्रउर कृपा घनेरी
हमहिं तुमहिं सरबरि कस नाथा। कहहु न कहां चरण कहं माथा
राम मात्र लघु नाम हमारा। परशु सहित बड़ नाम तुम्हारा
देव एक गुण धनुष हमारे। नव गुण परम पुनीत तुम्हारे
सब प्रकार हम तुम सम हारे। छमहु विप्र अपराध हमारे

दो॰ रा॰ वा॰ १९६

दो॰ बार बार मुनि बिप्र बर कहा राम सन राम
बोले भृगुपति सरुष होइ तुहूं बंधु सम बाम
निपटहि द्विज करि जानेहु मोही। मैं जस बिप्र सुनावउं तोही
चाप स्रुवा सर आहुति जानू। कोप मोर अति घोर कृशानू
समिधि सेन चतुरंग सुहाई। महा महीप भये पसु आई
मैं एहि परसु काटि बलि दीन्हा। समर जज्ञ जग कोटिन कीन्हा
मोर प्रभाव बिदित नहिं तोरे। बोलसि निदरि बिप्र के भोरे
भंजेउ चाप दाप बड़ बाढ़ा। अहमिति मनहुं जीति जग काढ़ा
राम कहा मुनि कहहु बिचारी। रिसि अति बड़ि लघु चूक हमारी
छुअतहि टूट पिनाक पुराना। मैं केहि हेतु करौं अभिमाना
दो॰ जौ हम निदरहिं बिप्र बदि सत्य सुनहु भृगुनाथ
तौ अस को जग सुभट जेहि भय बस नावहिं माथ
देव दनुज भूपति भट नाना। सम बल अधिक होउ बलवाना
जो रण हमहिं प्रचारय कोऊ। लरहिं सुखेन काल किन होऊ
छत्रिय तनु धरि समर सकाना। कुल कलंक तेहि पांवर जाना
कहौं सुभाव न कुलहि प्रसंसी। कालहु डरहिं न रण रघुबंसी
बिप्र बंश कै अस प्रभुताई। अभय होइ जो तुमहि डेराई
सुनि मृदु गूढ़ बचन रघुपति के। उघरे पटल परसुधर मति के
राम रमापति कर धनु लेहू। खैंचहु चाप मिटै संदेहू
देत चाप आपुहि चढ़ि गयऊ। परसुराम मन बिसमय भयऊ
दो॰ जाना राम प्रभाव तब पुलक प्रफुल्लित गात

बिहंसे लषण कहा मन माहीं। मूदिय आंखि कतहुं कोउ नाहीं
दो॰ परशुराम तब राम प्रति बोले बचन स क्रोध
शंभु सरासन तोरि शठ करसि हमार प्रबोध
बंधु कहे कटु संमत तोरे ॥ तू छल बिनय करसि कर जोरे
करु परितोष मोर संग्रामा। नाहित छांडु कहावत रामा
कुल तजि कहु समर शिष द्रोही। बंधु सहित नतु मारौं तोही
भृगुपति तमकि कुठार उठाये। मन मुसुकाहिं राम शिर नाये
गणहु लषण कर हमपर रोषू। कतहु सुधाइहु ते बड़ दोषू
टेढ़ जानि शंका सब काहू। बक्रचंद्रमहिं ग्रसै न राहू ॥
दो॰ रा॰ वा॰ १८६ राम कहेउ रिसि तजिय मुनीशा। कर कुठार आगें यह शीशा
जेहि रिसि जाइ करिय सोइ स्वामी। मोहि जानि आपन अनुगामी
दो॰ प्रभुहिं सेवकहि समर कस तजहु बिप्र बर बेष
भेष बिलोकि कहसि कछु बालक हू नहिं दोष
देखि कुठार बाण धनु धारी। भै लरिकहि रिसि बीर बिचारी
नाम जान पै तुमहि न चीन्हा। बंश स्वभाव उतर तेहि दीन्हा
जो तुम अवतेहु मुनिकी नाईं। पद रज शिर शिशु धरत गुसाईं
छमहु चूक अनजानत केरी। चहिय बिप्र उर कृपा घनेरी
हमहिं तुमहिं सरबरि कस नाथा। कहहु न कहां चरण कहं माथा
राम मात्र लघु नाम हमारा। परशु सहित बड़ नाम तुम्हारा
देव एक गुण धनुष हमारे। नव गुण परम पुनीत तुम्हारे
सब प्रकार हम तुम सम हारे। छमहु बिप्र अपराध हमारे

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो॰ बार बार मुनि बिप्र बर कहा राम सन राम
बोले भृगुपति सरुष हेाइ तुहूं बंधु सम बाम
निपटहि दिज करि जानेहु मोही। मैं जस बिप्र सुनाऊं तोही
चाप स्रुवा सर आहुति जानू। कोप मोर अति घोर कृशानू
समिधि सेन चतुरंग सुहाई। महा महीप भये पसु आई
मैं एहि परसु काटि बलि दीन्हा। समर यज्ञ जग कोटिन कीन्हा
मोर प्रभाव बिदित नहिं तोरे। बोलसि निदरि बिप्र के भोरे
भंजेउ चाप दाप बड़ बाढ़ा। अहमिति मन्हं जीति जग काढ़ा
राम कहा मुनि कहहु बिचारी। रिसि अति बड़ि लघु चूक हमारी
छुअतहि टूट पिनाक पुराना। मैं केहि हेतु करौं अभिमाना

दो॰ जौ हम निदरहिं बिप्र बदि सत्य सुनहु भृगुनाथ
तौ अस को जग सुभट जेहि भय बसनावहिं माथ

देव दनुज भूपति भट नाना। सम बल अधिक होउ बलवाना
जो रण हमहिं प्रचारय कोऊ। लरहिं सुखेन काल किन होऊ
छत्रिय तनु धरि समर सकाना। कुल कलंक तेहि पांवर जाना
कहौं सुभाव न कुलहि प्रशंसी। कालहु डरहि न रण रघुवंशी
बिप्र बंशकी अस प्रभुताई। अभय होइ जो तुमहि डेराई
सुनि मृदु गूढ़ बचन रघुपतिके। उघरे पटल परसुधर मतिके
राम रमापति कर धनु लेहू। खैंचहु चाप मिटै संदेहू
देत चाप आपुहि चढ़ि गयऊ। परशुराम मन बिसय भयऊ

दो॰ जाना राम प्रभाव तब पुलक प्रफुल्लित गात

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जोरि पाणि बोले बचन प्रेम न हृदय समात
जय रघुबंश बनज बन भानू। गहन दनुज कुल दहन कृशानू
जय सुर बिप्र धेनु हित कारी। जय मद मोह कोह भ्रम हारी
बिनय शील करुणा गुण सागर। जय ति बचन रचना अति नागर
सेवक सुखद सुभग सब अंगा। जय शरीर छबि कोटि अनंगा
करौं कहा मुख एक प्रशंसा। जय महेश मन मानस हंसा।
अनुचित बहुत कहेउं अज्ञाता। क्षमहु क्षमा मंदिर दोउ भ्राता
कहि जय जय जय रघुकुल केतू। भृगुपति गये बनहि तप हेतू
अपभय कुटिल महीप डेराने। जहँ तहँ कायर गवँहि पराने

दो॰ देवन दीन्ही दुन्दुभी। प्रभु पर बर्षहिं फूल
हरषे पुरनर नारि सब मिटा मोह भय शूल

अति गहगहे बाजने बाजे। सबहि मनोहर मंगल साजे
तृण तृण मिलि सुमुखि सुनयनी। करहिं गान कल कोकिल बयनी
सुख बिदेह कर बरणि न जाई। जन्म दरिद्र मनहु निधि पाई
बिगत त्रास भइ सीय सुखारी। जनु बिधु उदय चकोर कुमारी
जनक कीन्ह कौशिकहि प्रणामा। प्रभु प्रसाद धनु भंजेउ रामा
मोहि कृत कृत्य कीन्ह दुहु भाई। अब जो उचित सो कहिय गुसाईं
कह मुनि सुन नरनाह प्रबीना। रहा बिबाह चाप आधीना
टूटत ही धनु भयउ बिबाहू। सुर नर नाग बिदित सब काहू

दो॰ तदपि जाइ तुम करहु अब यथा बंश व्यवहार
बूझि बिप्र कुल बृद्ध गुरु बेद बिदित आचार॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दूत अवध पुर पठवहु जाई । आनै नृप दशरथहिं बुलाई
मुदित राउ कहि भलेहि कृपाला। पठये दूत अवध तेहि काला
बहुरि महाजन सकल बुलाये। आइ सबन सादर शिर नाये
हाट बाट मंदिर सुर बासा । नगर संवारहु चारिहु पासा
हरषि चले निज निज गृह आये। पुनि परिचारक बोलि पठाये
रचहु बिचित्र बितान बनाई । शिर धरि बचन चले सचुपाई
पठये बोलि गुणी तिन्ह नाना। जो बितान बिधि कुशल सुजाना
बिधिहि बंदि तिन्ह कीन्ह अरंभा। बिरचे कनक केदली थंभा।

दो॰ हरित मणिन के पत्र पल पद्म राग के फूल
रचना देखि बिचित्र अति मन बिरंचि के भूल

बेनु हरित मणिमय सब कीन्हे। सरल सपर्ण परहिं नहिं चीन्हे
कनक कलित अहि बेलि बनाई। लखि नहिं परै सवर्ण सुहाई
तेहि के रचि पचि बंध बनाये। बिच बिच मुकता दाम सुहाये
मानिक मरकत कुलिश पिरोजा। चीर कोर पचि रचे सरोजा
किये भृंग बहु रंग बिहंगा। गुंजहि कुंजहि पवन प्रसंगा
सुर प्रति मा खंभन गहि काढ़े। मंगल द्रव्य लिये सब ठाढ़े
चौके भांति अनेक पुराये। सिंदुर मणिमय सहज सुहाये

दो॰ सौरभ पल्लव सुभग सुठि किये नीलमणि कोर
हेम बौर मरकत घँवरि लसत पाटमय डोर॥

रचे रुचिर बर बंदन वारे । मनहुं मनोभव फंद संवारे।
मंगल कलश अनेक बनाये। ध्वज पताक पट चमर सुहाये

आज्ञा दई सुभ
सगुन सब भ
ये अरु दिव्य
थन पर दशरथ
अरु बाशिष्ठ अरु

दो॰
रा॰ बा॰
१८९

सब कुमार ते
हित सनेह ब
रात सानि चल
त भये ॥३०४॥

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दीप मनोहर मणि मय नाना। जाइ न बरणि बिचित्र बिताना
जेहि मंडप दुलहिनि बैदेही। सो बरणै असमति कवि केही
दूलह राम रूप गुण सागर। सो बितान तिहुंलोक उजागर
जनक भवन की शोभा जैसी। गृह गृह प्रति पुर देखिय तैसी
जेहिं ति रहति तेहि समय निहारी। तेहि लघु लगे भुवनदस चारी
जो संपदा नीच गृह सोहा। सो बिलोकि सुरनायक मोहा॥

दो॰ बसै नगर जेहि लक्षि करि कपट नारि बर भेष
तेहि पुर की शोभा कहत सकुचै शारद शेष॥

पहुंचे दूत राम पुर पावन। हरषे नगर बिलोकि सुहावन
भूप द्वार तिन्ह खबरि जनाई। दसरथ नृप सुनि लिये बुलाई
करि प्रणाम तिन्ह पाती दीन्ही। मुदित महीप आपुदुहि लीन्ही
बारि बिलोचन बांचत पाती। पुलकि गात आई भरि छाती
राम लषण उर कर बर चीठी। रहि गये कहत न खाटी मीठी
पुनि धरि धीर पत्रिका बांची। हरषी सभा बात सुनि सांची
खेलत रहे तहां सुधि पाई। आये भरत सहित दोउ भाई
पूछत अति सनेह सकुचाई। तात कहां तें पाती आई॥

दो॰ कुशल प्राण प्रिय बंधु दोउ अहहिं कहहु केहि देश
सुनि सनेह साने बचन बांची बहुरि नरेश॥

सुनि पाती पुलके दोउ भ्राता। अधिक सनेह समात न गाता
प्रीति पुनीत भरत की देखी। सकल सभा सुखलहेउ बिशेखी
तब नृप दूत निकट बैठारे। मधुर मनोहर बचन उचारे॥

दो॰ रा॰ बा॰ ९९०

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भैया कुशल कहहु दोउ वारे। तुम नीके निज नयन निहारे॥
श्यामल गौर धरे धनु भाथा। बय किशोर कौशिक मुनि साथा
पहिचानेहु नो कहहु सुभाऊ। प्रेम बिवश पुनि पुनि कह राऊ॥
जा दिनतें मुनि गये लिवाई। तबतें आजु सांचि सुधि पाई॥
कहहु बिदेह कवन विधि जाने। सुनि प्रिय बचन दूत मुसुकाने
दो॰ सुनहु महीपति मुकुट मणि तुम सम धन्य न कोउ
राम लषण जिनके तनय विश्व बिभूषण दोउ॥
पूछन योग न तनय तुम्हारे। पुरुष सिंह तिहुं पुर उजियारे
जिन के यश प्रताप के आगे। शशि मलीन रवि शीतल लागे
तिन कहं कहिय नाथ किमि चीन्हे। देखिय रविहि कि दीपक लीन्हे
सीय स्वयंबर भूप अनेका। समिटे सुभट एकतें एका॥
शंभु सरासन काहु न टारा। हारे सकल भूप बरियारा॥
तीन लोक महं जे भट मानी। सबकी शक्ति शंभु धनु भानी
सकैं उठाइ सुरासुर मेरू। सोउ हिय हारि गयउ करि फेरू
जेहि कौतुक शिव शैल उठावा। सोउ तेहि सभा पराभव पावा
दो॰ तहां राम रघुबंश मणि सुनिय महा महिपाल
भंजेउ चाप प्रयास बिनु जिमि गज पंकज नाल॥
सुनि सरोष भृगुनायक आये। बहुत भांति तिन आंखि देखाये
देखि राम बल निज धनु दीन्हा। करि बहु बिनय गवन बन कीन्हा
राजत राम अतुल बल जैसे। तेज निधान लषण पुनि तैसे
कंपहि भूप बिलोकत जाके। जिमि गज हरि किशोर के ताके

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

देव देहि तव बालक दोऊ । अवधि आरति आवन कोऊ
दूत बचन रचना प्रिय लागी । प्रेम प्रताप बीर रस पागी ॥
सभा समेत राउ अनुरागे । दूतहिं देन निछावर लागे ॥
कहि अनीति ते मूदहु काना । धर्म बिचारि सबहिं सुख माना
दो॰ तब उठि भूप बसिष्ठ कहं दीन्ह पत्रिका जाइ
कथा सुनाई गुरुहिं सब सादर दूत बोलाइ ॥
सुनि बोले मुनि अति सुख पाई । पुण्य पुरुष कहं महि सुख छाई
जिमि सरिता सागर महं जाहीं । यद्यपि ताहि कामना नाहीं
तिमि सुख संपति बिनहिं बोलाए । धर्म सील पहं जाहिं सुभाए
तुम गुरु बिप्र धेनु सुर सेवी । तस पुनीत कौशल्या देवी
सुकृती तुम समान जग माहीं । भयउ नहै कोउ होनेउ नाहीं
तुमतें अधिक पुण्य बड़ काके । राजन राम सरिस सुत जाके
बीर बिनीत धर्म ब्रत धारी । गुण सागर बालक बर चारी
तुम कहं सर्बकाल कल्याना । सजहु बरात बजाइ निसाना
दो॰ चलहु बेगि सुनि गुरु बचन भलेहि नाथ सिर नाइ
भूपति गवने भवन तब दूतहि बास देवाइ ॥
राजा सब रनिवास बोलाई । जनक पत्रिका बाँचि सुनाई
सुनि संदेश सकल हरषानी । अपर कथा सब भूप बखानी
प्रेम प्रफुल्लित राजा रानी । मनहुं सिखिनि सुनि बारिद बानी
मुदित असीस देहिं गुरु नारी । अति आनंद मगन महतारी
लेहिं परस्पर अति प्रिय पाती । हृदय लगाइ जुड़ावहिं छाती

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राम लषण की कीरति करणी। बारहिं बार भूप बहु बरणी ॥
मुनि प्रसाद कहि द्वार सिधाये। राजिन्ह तब महिदेव बुलाये ॥
दिये दान आनंद समेता। चले बिप्रबर आशिष देता ॥ ॥

सो० बाचक लिये हंकारि दीन्ह निछावरि कोटि बिधि
चिरजीवहु सुत चारि चक्रवर्ति दशरत्थ के

कहत चले पहिरे पट नाना। हरषि हने गह गहे निसाना ॥
सगाचार सब लोगन पाये। लागे घर घर होन बधाये ॥
भुवन चारि दश भरेउ उछाहू। जनक सुता रघुबीर बिवाहू ॥
सुनि शुभ कथा लोग अनुरागे। मग गृह गली संवारन लागे
जद्यपि अवध सदैव सुहावनि। राम पुरी मंगल मय पावनि
तदपि प्रीति की रीति सुहाई। मंगल रचना रची बनाई ॥
ध्वज पताक पट चामर चारू। छावा परम बिचित्र बजारू
कनक कलश तोरण मणि जाला। हरद दूब दधि अक्षत माला

दो० मंगल मय निज निज भवन लोगन रचे बनाइ
बीथी सींची चतुर सम। चौके चारु पुराइ ॥

जहं तहं यूथ यूथ मिलि भामिनि। सजि नव सप्त सकल दुति दामिनि
बिधु बदनी मृग शावक लोचनि। निज सरूप रति मान बिमोचनि
गावहिं मंगल मंजुल बानी। सुनि कल रव कल कंठ लजानी
भूप भवन किमि जाइ बखाना। बिश्व बिमोहन रचेउ बिताना
मंगल द्रव्य मनोहर नाना। राजत बाजत बिपुल निसाना
कतहुं बिरद बंदी उच्चरहीं। कतहुं बेद धुनि भूसुर करहीं

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गावहिं सुंदरि मंगल गीता । लै लै नाम राम अरु सीता ॥
बहुत उछाह भवन अति थोरा । मानहुं उमगि चला चहुं ओरा
दो॰ शोभा दशरथ भवन की को कवि बरनै पार
जहां सकल सुर शीश मणि रामलीन्ह अवतार
भूप भरत पुनि लिये बुलाई । हय गय स्यंदन साजहु जाई
चलहु बेगि रघुवीर बराता । सुनत पुलक पूरे दोउ भ्राता ॥
भरत सकल साहनी बुलाये । आयसु दीन्ह मुदित उठिधाये
रुचि रुचि तुरंग साज तिन साजे । बर्णि बर्ण बरबाजि बिराजे
शुभग सकल सुठि चंचल करणी । अय जिमि जरत धरत पगु धरणी
नाना भांति न जाहिं बखाने । निदरि पवन जनु चहत उड़ाने
तिन सब छयल भये असवारा । भरत सरिस सब राजकुमारा
सब सुंदर सब भूषण धारी । कर शर चापतूण कटि भारी
दो॰ छरे छबीले छयल सब शूर सुजान नवीन ॥
युग पद चर असवार प्रति जेइ सिकला प्रवीन
बांधे बिरद बीर रण गाढ़े । निकसि भये पुर बाहर ठाढ़े ॥
फेरहिं चतुर तुरंगहि नाना । हरषहिं धुनि सुनि पनव निसाना
रथ सारथिन विचित्र बनाये । ध्वज पताक मणि भूषण छाये
चंवर चारु किंकिणि धुनि करहीं । भानु यान शोभा अपहरहीं
स्यामकर्ण अगणित हय होते । ते तिन्ह रथन सारथिन जोते
सुंदर सकल अलंकृत सोहै । जिनहिं विलोकत मुनि मन मोहै
जे जल चलहिं थलहिं की नाईं । टापन बूड़ बेग अधिकाई

दो॰ रा॰ बा॰ १६४

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अस्त्र शस्त्र सब साज सजाई। रथी सारथिन लिये बुलाई॥

दो॰ चढ़ि चढ़ि रथ बाहिर नगर लागी जुरन बरात
होत शगुन सुंदर सुरवद जो जेहि कारज जात

सुंदर हस्तिन सोहै अंबारी। कहि न जाइ जेहि भांति सवारी
चले मत्त गज घंट बिराजे। मनहु शुभग सावन घन गाजे
बाहन अपर अनेक बिधाना। सिबिका शुभग सुखासन याना
तिन चढ़ि चले विप्र बर वृंदा। जनु तनु धरे सकल श्रुति छंदा
मागध सूत बंदि गण गायक। चले यान चढ़ि जो जेहि लायक
बेसर ऊंट वृषभ बहु जाती। चले बस्तु भरि अगणित भांती
कोटिन्ह कांवरि चले कहारा। बिबिध बस्तु को बरनै पारा
चले सकल सेवक सुखदाई। निज निज साज समाज बनाई

दो॰ सबके उर निर्भर हरष पूरित पुलक शरीर॥
कबहिं देखि हौं नयन भरि रामलषण दोउबीर

गरजहिं गज घंटा धुनि घोरा। रथ रव बाजि धूम चहुं ओरा
निदरि घनहि घूमरहि निसाना। निज पराय कछु सुनिय न काना
महा भीर भूपति के द्वारे॥ रज होइ जाइ पषान पवारे
चढ़ी अटारिन देखहिं नारी। लये आरती मंगल थारी
गावहिं गीत मनोहर नाना। अति आनंद नहिं जाइ बखाना
तब सुमंत दुइ स्यंदन साजी। जोते रबि हय निंदक बाजी
दोउ रथ रुचिर भूप पहं आने। नहिं शारद प्रति जाहिं बखाने
राज समाज एक रथ साजा। दूसर तेज पुंज अति राजा

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो॰ तेहि रथ रुचिर वशिष्ठ कहं हरषि चढ़ाइ नरेश
आपु चढ़ेउ स्यंदन सुमिरि हर गुरु गौरि गणेश
सहित वसिष्ठ सोह नृप कैसें। सुर गुरु संग पुरंदर जैसें॥
करि कुल रीति वेद बिधि राऊ। देखि सबहि सब भांति बनाऊ
सुमिरि राम गुरु आयसु पाई। चले महीपति शंख बजाई
हरषे विबुध बिलोकि बराता। बरषहिं सुमन सुमंगल दाता
भयउ कोलाहल हय गय गाजे। व्योम बरात बाजने बाजे॥
सुर नर नारि सुमंगल गाई। सरस राग बाजहिं सहनाई
घंट घंटि धुनि बरणि न जाई। सरों करैं पायक फहराई॥
करहिं विदूषक कौतुक नाना। हास कुशल कल गान सुजाना

दो॰ रा॰ बा॰ १९६

दो॰ तुरंग नचावहिं कुंवर वर अकनि मृदंग निसान
नागर नट चितवहिं चकित डिगहिं न ताल विधान
बने न बरनत बनी बराता। होहिं सगुन सुंदर सुभ दाता
चारा चारव बाम दिशि लेई। मनहुं सकल मंगल कहि देई
दाहिन काग सुखेत सुहावा। नकुल दरश सब काहुन पावा
सानुकूल बह त्रिबिधि वयारी। सघट सबाल आव वर नारी
लोबा फिर फिरि दरश दिखावा। सुरभी सन्मुख शिशुहि पिआवा
मृग माला दाहिन दिशि आई। मंगल गण जनु दीन्ह दिखाई
छेमकरी कह छेम विशेषी। श्यामा बाम सुतरु पर देषी
सन्मुख आयउ दधि अरु मीना। कर पुस्तक दुइ बिप्र प्रवीना
दो॰ मंगल मय कल्याण मय अभिमत फल दातार

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जनु सब सांचे होन हित भये सगुन एक बार
मंगल सगुन सुगम सब ताके। सगुन ब्रह्म सुंदर सुत जाके
राम सरिस बरदुलहिनि सीता। समधी दसरथ जनक पुनीता
सुनि अस ब्याह सगुन सब नाचे। अब कीन्हे बिरंचि हम साँचे
दुहि बिधि कीन्ह बरात पयाना। हय गय गाजहिं हने निसाना
आवत जानि भानुकुल केतू। सरित न जनक बंधाये सेतू
बीच बीच बर बास सुहाये। सुरपुर सरिस संपदा छाये॥
असन सयन बर बसन सुहाये। पावहिं सब निज निज मन भाये
नित नूतन सुख लखि अनुकूला। सकल बरातिन मंदिर भूला
दो॰ आवत जानि बरात बर सुनि गहगहे निसान
सजि गज रथ पदचर तुरंग लेन चले भगवान
कनक कलश कल कोपर थारा। भाजन ललित अनेक प्रकारा
भरे सुधा सम सब पकवाना। भांति भांति नहिं जाहि बखाना
फल अनेक बर बस्तु सुहाई। हरषि भेंट हित भूप पठाई॥
भूषण बसन महा मनि नाना। खग मृग हय गय बहु बिधि याना
मंगल सगुन सुगंध सुहाये। बहुत भांति महिपाल पठाये
दधि चिदुवा उपहार अपारा। भरि भरि कांवरि चले कहारा
अगवानन जब दीख बराता। उर आनंद पुलक भर गाता
देखि बनाव सहित अगवाना। मुदित बरातिन हने निसाना
दो॰ हरषि परस्पर मिलन हित कछुक चले बग मेल
जनु आनंद समुद्र दुइ मिलन बिहाइ सुबेल

बरषि सुमन सुर सुंदरि गावहिं। मुदित देवदुन्दुभी बजावहिं ॥
बस्तु सकल राखी नृप आगे। बिनय कीन्ह तिन्ह अति अनुरागे
प्रेम समेत राउ सब लीन्हा। भै बकसीस याचकन्ह दीन्हा
करि पूजा मान्यता बड़ाई। जनवासे कहं चले लिवाई ॥
बसन बिचित्र पांवड़े परहीं। नृप दशरथ तापर पग धरहीं
देखि धनद धन मद परिहरहीं। बरषि सुमन सुर जयजय करहीं
अति सुन्दर दीन्हेउ जनवासा। जहं सब कहं सबभांति सुपासा
जानी सिय बरात पुर आई। कछु निज महिमा प्रगटि जनाई
हृदय सुमिर सब सिद्धि बुलाई। भूप पहुनई करण पठाई ॥

दो॰ सिय आयसु सिर सिद्धि धरि गई जहां जनवास
लये संपदा सकल सुख सुरपुर भोग बिलास

निज निज बास बिलोकि बराती। सुर सुख सकल सुलभ सबभांती
बिभव भेद कछु कोउ न जाना। सकल जनक कर करहिं बखाना
सिय महिमा रघुनायक जानी। हरषे हृदय हेतु पहिचानी
पितु आगमन सुनत दोउ भाई। हृदय न अति आनंद समाई
सकुचत कहि न सकत गुरु पाहीं। पितु दरसन लालच मन माहीं
बिस्वामित्र बिनय बड़ि देखी। उपजा उर संतोष बिसेषी
हरषि बंधु दोउ हृदय लगाये। पुलक अंग अंबक जल छाये
चले जहां दशरथ जनवासे। मनहुं सरोबर तके पियासे

दो॰ भूप बिलोके जबहि मुनि आवत सुतन समेत
उठेउ हरषि सुख सिंधु महं चले थाह सी लेत

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मुनिहि दंडवत कीन्ह महीशा। बार बार पद रज धरि शीशा
कौशिक राउ लिये उर लाई। कहि आशीश पूछी कुशलाई
पुनि दंडवत करत दोउ भाई। देखि नृपति उर सुख न समाई
सुत हिय लाइ दुसह दुख मेटे। मृतक शरीर प्राण जनु भेटे
पुनि वशिष्ठ पद शिर तिन नाये। प्रेम मुदित मुनिवर उर लाये
विप्र वृंद वंदे दुहु भाई। मन भावत आशीश तिन्ह पाई
भरत सहानुज कीन्ह प्रणामा। लिये उठाइ लाइ उर रामा
हरषे लषण देखि दोउ भ्राता। मिले प्रेम परिपूरण गाता ॥

दो॰ पुरजन परिजन जाति जन याचक मंत्री मीत
मिले यथा विधि सबहि प्रभु परम कृपालु विनीत

दो॰ रा॰ बा॰ १६६

रामहिं देखि बरात जुड़ानी। प्रीति की रीति न जाइ बखानी
नृप समीप सोहहिं सुत चारी। जनु धन धर्मादिक तनु धारी
सुतन्ह सहित दशरथ कहं देखी। मुदित नगर नर नारि विशेखी
सुमन वरषि सुरहनहिं निसाना। नाक नटी नाचहिं करि गाना
सनानंद गुरु विप्र सचिव गण। मागध सूत विदुष बंदी जन
सहित बरात राउ सनमाना। आयसु मांगि फिरे अगवाना
प्रथम बरात लगन ते आई। तारे पुर प्रमोद अधिकाई॥
ब्रह्मानंद लोग सब लहहीं। बढ़उ दिवस निशि बिधि सन कहहीं

दो॰ राम सीय शोभा अवधि सुकृत अवधि दोउ राज
जहं तहं पुरजन कहहिं अस मिलि नरनारि समाज
जनक सुकृत मूरति वैदेही। दशरथ सुकृत राम धरि देही

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इन सम काहु न शिव अवराधे। काहु न इन समान फल साधे
इन सम कोउ न भयेउ जग माहीं। है नहिं कतहूं होनेउ नाहीं
हम सब सकल सुकृत की रासी। भये जग जन्मि जनकपुर वासी
जिन जानकी राम छबि देखी। को सुकृती हम सरिस बिशेखी
पुनि देखब रघुबीर बिवाहू। लेब भली बिधि लोचन लाहू
कहहिं परस्पर कोकिल बयनी। यह बिवाह बड़ लाभ सुनयनी
बड़े भाग बिधि बात बनाई। नयन अतिथि होइहैं दोउ भाई
दो॰ बारहिं बार सनेह बस। जनक बोलाउब सीय
लेन आइहहिं बंधु दोउ कोटि काम कमनीय
बिबिधि भांति होइहि पहुनाई। प्रिय न काहि अस सासुर भाई
तब तब राम लषणहिं निहारी। होइहहिं सब पुर लोग सुखारी
सखि जस राम लषण कर जोरा। तैसेइ भूप संग दोउ छोरा
श्याम गौर सब अंग सुहाये। ते सब कहहिं देखि जे आये
कहा एक मैं आजु निहारे। जनु बिरंचि निज हाथ संवारे
भरत राम एकहि अनुहारी। सहसा लखि न सकहिं नर नारी
लषण शत्रुसूदन इक रूपा। नख शिख ते सब अंग अनूपा
मन भावहिं मुख बरणि न जाहीं। उपमा कहं त्रिभुवन कोउ नाहीं
छं॰ उपमान कोउ कह दास तुलसी कतहुं कवि कोविद कहैं
बल बिनय विद्या शील शोभा सिंधु इन सम ये अहैं
पुर नारि सकल पसारि अंचल बिधिहि बचन सुनावहीं
ब्याहिय उचारिउ भाइहिं पुर हम सुमंगल गावहीं

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सो॰ कहहिं परस्पर नारि वारि बिलोचन पुलक तन
सखि सब करब पुरारि पुन्य पयोनिधि भूप दोउ

इहि बिधि सकल मनोरथ करहीं। आनंद उमगि उमगि उर भरहीं
जे नृप सीय स्वयंवर आये। देखि बंधु सब तिन सुख पाये
कहत राम यश बिशद बिशाला। निज निज भवन गये महिपाला
गये बीति कछु दिन एहि भांती। प्रमुदित पुरजन सकल बराती
मंगल मूल लगन दिन आवा। हिम ऋतु अगहन मास सुहावा
ग्रह तिथि नखत योग बर बारू। लगन शोधि बिधि कीन्ह बिचारू
पठै दीन्ह नारद सन सोई। गुनी जनक के गण कल जोई
सुनी सकल लोगन यह बाता। कहहिं जोतिषी आहहिं बिधाता

दो॰ धेनु धूरि बेला बिमल सकल सुमंगल मूल
बिप्रन कहेउ बिदेह सन जानि समय अनुकूल

उपरोहितहि कहेउ नर नाहा। अब बिलंब कर कारण काहा
सतानंद तब सचिव बुलाये। मंगल कलश साजि सब ल्याये
शंख निसान पनव बहु बाजे। मंगल कलश शगुन सब साजे
सुभग सुआसिनि गावहिं गीता। करहिं बेद धुनि बिप्र पुनीता
लेन चले सादर एहि भांती। गये जहां जनवास बराती ॥
कोशल पति कर देखि समाजू। अति लघु लगे तिनहि सुरराजू
भयउ समय अवधारिय पाऊ। यह सुनि परा निसान न घाऊ
गुरुहिं पूछि करि कुल बिधि राजा। चले संग मुनि साज समाजा
दो॰ भाग्य विभव अवधेश कर देखि देव ब्रह्मादि

लगे सराहन सहस मुख जानि जन्म निज बादि
सुर सुमंगल अवसर जाना। बरषहिं सुमन बजाइ निसाना
शिव ब्रह्मादिक बिबुध बरूथा। चढ़े बिमानन्ह नाना यूथा॥
प्रेम पुलक तन हृदय उछाहू। चले बिलोकन राम बिबाहू॥
देखि जनक पुर सुर अनुरागे। निज निज लोक सबहि लघु लागे
चितवहिं चकित बिलोकि बिताना। रचना सकल अलौकिक नाना
नगर नारि नर रूप निधाना। सुघर सुधर्म सुशील सुजाना
तिनहिं देखि सब सुरपुर नारी। भये नखत जनु बिधु उजियारी
बिधिहि भयउ आश्चर्य बिशेषी। निज करनी कछु कतहुं न देखी

दो॰ शिव समुझाये देव सब जनि आश्चर्य्य भुलाइ
हृदय बिचारहु धीर धरि सिय रघुबीर बिबाहु

दो॰ रा॰ बा॰ २०३

जिन कर नाम लेत जग माहीं। सकल अमंगल मूल नसाहीं
करतल होहिं पदारथ चारी। तेइ सिय राम कहेउ कामारी
एहि बिधि शंभु सुरन समुझावा। पुनि आगे बर बसह चलावा
देखन देखे दशरथ जाता। भहा मोद मन पुलकित गाता
साधु समाज संग महिदेवा। जनु तनु धरे करहिं सुर सेवा
सोहत साथ सुभग सुत चारी। जनु अपवर्ग सकल तनुधारी
मरकत कनक बरन बर जोरी। देखि सुरन भै प्रीति न थोरी
पुनि रामहिं बिलोकि हिय हरषे। नृपहि सराहि सुमन तिन्ह बरषे

दो॰ राम रूप नख शिख सुभग बारहि बार निहारि
पुलक गात लोचन सजल उमा समेत पुरारि

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

केकि कंठ दुति श्यामल अंगा। तड़ित बिनिंदक बसन सुरंगा
ब्याह बिभूषण बिबिध बनाये। मंगल मय सब भांति सुहाये
शरद बिमल बिधु बदन सुहावन। नयन नवल राजीव लजावन
सकल अलौकिक सुंदरताई। कहि न जाय मनहीं मन भाई
बंधु मनोहर सोहहिं संगा। जात नचावत चपल तुरंगा
राज कुंवर बर बाजि नचावहिं। बंश प्रशंसक बिरद सुनावहिं
जेहि तुरंग पर राम बिराजे। गति बिलोकि खगनायक लाजे
कहि न जाइ सब भांति सुहावा। बाजि भेष जनु काम बनावा
छं· जनु बाजि भेष बनाइ मन सिज राम हित अति सोहहीं
अपन बय बल रूप गुण गति सकल भुवन बिमोहहीं
जग मगत जीन जड़ाव जोति सु मोति मानिक तेहि लगे
किंकिणि ललाम लगाम ललित बिलोकि सुर नर मुनि ठगे
दो· प्रभु मनसहिं लय लीन मन चलत बाजि छबि पाव
भूषण उडुगण तड़ित घन जनु बर बरहि नचाव
जेहि बर बाजि राम असवारा। तेहि शारदहु न बरनै पारा
शंकर राम रूप अनुरागे। नयन पंच दश अति प्रिय लागे
हरि हित सहित राम जब जोहे। रमा समेत रमा पति मोहे
निरखि राम छबि बिधि हरषाने। आठै नयन जानि पछिताने
सुरसेनप उर बहुत उछाहू। बिधि ते रे बढ़े लोचन लाहू
रामहिं चितव सुरेश सुजाना। गोतम श्राप परम हित माना
देव सकल सुरपतिहि सिहाहीं। आजु पुरंदर सम कोउ नाहीं

टी· रा· बा· २०५

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मुदित देवगण रामहिं देखी नृप समाज दुहुं हरष बिसेखी
छं॰ अति हर्ष राज समाज दुहुं दिशि दुन्दुभी बाजहिं घनी
बरषहिं सुमन सुर हरषि कहि जय जयति जय रघुकुलमनी
इहि भांति जानि बरात आवत बाजने बहु बाजहीं
रानी सुआसिनि बोलि परिछन हेतु मंगल साजहीं
दो॰ सजि आरती अनेक बिधि मंगल सकल संवारि
चली मुदित परिछन करन गज गामिनि बर नारि ८

बिधु बदनी मृगशावक लोचनि। सब निज तनुछबि रतिमदमोचनि
पहिरे बरन बरन बर चीरा। सकल बिभूषण सजे शरीरा
सकल सुमंगल अंग बनाये। करहिं गान कलकंठ लजाये
कंकण किंकिणि नूपुर बाजहिं। चाल बिलोकि काम गजलाजहिं
बाजहिं बाजन बिबिध प्रकारा। नभ अरु नगर सुमंगलचारा
शची शारदा रमा भवानी। जे सुर तिय शुचि सहज सयानी
कपट नारि बर भेष बनाई। मिली सकल रनिवासहिं आई
करहिं गान कल मंगल बानी। हरष बिवस सब काहुन जानी
छं॰ को जान केहि आनंद बस सब ब्रह्म बर परिछन चली
कलगान मधुर निसान बरषहिं सुमन सुर शोभा भली
आनंदकंद बिलोकि दूलह सकल हिय हर्षित भई॥
अंभोज अंबक अंबु उमगि सु अंग पुलकावलि छई
दो॰ जो सुखभा सिय मातु मन देखि राम बर भेष
सो न सकहिं कहि कल्प शत सहस शारदा शेष

CC-0. In Public Domain Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नयन नीर हरि मंगल जानी। परिछन करहिं मुदित मन रानी
बेद बिहित अरु कुल व्यवहारू। कीन्ह भली बिधि सब परिचारू
पंच शब्द धुनि मंगल गाना। पट पावड़े परहिं बिधि नाना
करि आरती अर्घ तिन दीन्हा। राम गवन मंडप तब कीन्हा
दशरथ सहित समाज बिराजे। बिभव बिलोकि लोकपति लाजे
समय समय सुर बरषहिं फूला। शांति पढ़हिं महिसुर अनुकूला
नभ अरु नगर कोलाहल होई। आपन पर कछु सुनै न कोई
एहि बिधि राम मंडपहि आये। अर्घ देइ आसन बैठाये॥

छं॰ बैठारि आसन आरती करि निरखि वर सुख पावहीं
मणि बसन भूषण भूरि वारहि नारि मंगल गावहीं
ब्रह्मादि सुर बर बिप्र भेष बनाइ कौतुक देखहीं
अवलोकि रघुकुल कमल रबि छबि सुफल जीवन लेखहीं

दो॰ नाऊ बारी भाट नट। राम निछावरि पाइ॥
मुदित असीसहिं नाइ शिर हर्षन हृदय समाइ

मिले जनक दशरथ अति प्रीती। करि वैदिक लौकिक सब रीती
मिलत महा दोउ राज बिराजे। उपमा खोजि खोजि कवि लाजे
लही न कतहुं हारि हिय मानी। इन सम येउपमा उर आनी
समधी देखि देव अनुरागे। सुमन बरषि यश गावन लागे
जग विरंचि उपजावा जबते। देखे सुने ब्याह बहु तबते॥
सकल भांति सम साज समाजू। सम समधी देखे हम आजू
देव गिरा सुनि सुंदर सांची। प्रीति अलौकिक दुहुं दिशि मांची

टी॰ रा॰ बा॰ २०६

देत पावड़े अर्घ सुहाये । सादर जनक मंडपहिं ल्याये ॥
छं॰ मंडप बिलोकि बिचित्र रचना रुचिरता मुनि मन हरे ॥
निज पाणि जनक सुजान सब कहं आनि सिंहासन धरे
कुल इष्ट सरिस बशिष्ठ पूजे बिनय करि आशिष लही
कौशिकहि पूजत परम प्रीति की रीति तौ न परै कही
दो॰ बामदेव आदिक ऋषिय पूजे मुदित महीश ॥
दिये दिव्य आसन सबहि सब सन लही अशीश
बहुरि कीन्ह कोशलपति पूजा । जानि ईश सम भाव न दूजा
कीन्ह जोरि कर बिनय बड़ाई । कहि निज भाग्य बिभव बहुताई
पूजे भूपति सकल बराती । समधी सम सादर सब भांती ॥
आसन उचित दये सब काहू । कहौं कहा मुख एक उछाहू ॥
सकल बरात जनक सनमानी । दान मान बिनती बर बानी ॥
बिधि हरि हर दिशपति दिनराऊ । जे जानहिं रघुबीर प्रभाऊ
कपट बिप्र बर भेष बनाये । कौतुक देखहिं अति सचु पाये
पूजे जनक देव सम जाने । दये सु आसन बिन पहिचाने
छं॰ पहिचान को केहि जान सबहि अपान सुधि भोरी भई
आनंद कंद बिलोक दूलह उभय दिशि आनंद मई
सुर लखे राम सुजान पूजे मानसिक आसन दये ।
अवलोकि सरल सुभाव प्रभुको बिबुध मन प्रमुदित भये
दो॰ रामचंद्र मुख चंद्र छवि लोचन चारु चकोर
करत पान सादर सकल प्रेम प्रमोद न थोर

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

समय बिलोकि बशिष्ट बुलाये। सादर सतानंद मुनि आये
बेगि कुंवरि अब आनहु जाई। चले मुदित मुनि आयसु पाई
रानी सुनि उपरोहित बानी। प्रमुदित सखिन समेत सयानी
बिप्र बधू कुल बृद्ध बुलाई। करि कुलरीति सुमंगल गाई
नारि भेष जे सुर बर बामा। सकल सुभाय सुंदरी श्यामा॥
तिनहि देखि सुख पावहिं नारी। बिन पहिचानि प्रान तें प्यारी
बार बार सनमानहिं रानी। उमा रमा शारद सम जानी॥
सीय संवारि समाज बनाई। मुदित मंडपहिं चलीं लिवाई
छं॰ चलि ल्याइ सीतहि सखी सादर सजि सुमंगल भामिनी
नव सप्त साजे सुंदरी सब मत्त कुंजर गामिनी ॥
कल गान सुनि मुनि ध्यान त्यागहिं काम कोकिल लाजहीं
मंजीर नूपुर कलित कंकण ताल गति बर बाजहीं ॥
दो॰ सोहति बनिता बृन्द महं सहज सुहावनि सीय
छबि ललना गण मध्य जनु सुखमा तिय कमनीय
सिय सुंदरता बरनि न जाई। लघु मति बहुति मनोहर ताई
आवत देखि बरातिन सीता। रूप राशि सब भांति पुनीता॥
सबहिं मनहिं मन कीन्ह प्रणामा। देखि राम भये पूरण कामा
हरषे दशरथ सुतन समेता। कहि न जाइ उर आनंद जेता
सुर प्रणाम करि बरषहिं फूला। मुनि अशीश धुनि मंगल मूला
गान निसान कुलाहल भारी। प्रेम प्रमोद मगन नर नारी
एहि बिधि सीय मंडपहिं आई। प्रमुदित शांति पढ़हिं मुनिराई

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तेहि अवसर करि विधि व्यवहारू। दुहुं कुल गुरु सब कीन्ह अचारू
छं॰ आचार करि गुरु गौरि गणपति मुदित विप्र पुजावहीं ॥
सुर प्रगट पूजा लेहिं देहिं अशीस मुनि सुख पावहीं
मधु पर्क मंगल द्रव्य जो जेहिं समय मुनि मन में चहैं॥
भरे कनक कोपर कलश सब कर लिये परिचारक रहैं
कुल रीति प्रीति समेत रवि कहि देत सब सादर किये
इहि भांति देव पुजाइ सीतहि सुभग सिंहासन दिये
सियराम अवलोकन परस्पर प्रेम काहु न लखि परै
मन बुद्धि बर बाणी अगोचर प्रगट कबि कैसे करै
दो॰ होम समय तनु धरि अनल अति हित आहुति लेहिं
बिप्र भेष धरि बेद सब कहि बिवाह बिधि देहिं ॥
सीय मातु किमि जाइ बखानी। जनक पाट महिषी जग जानी
सुयश सुकृत सुख सुंदरताई। सब समेटि बिधि रची बनाई।
समय जानि मुनिवर न बुलाई। सुनत सुआसिनि सादर ल्याई
जनक बाम दिशि सोह सुनयना। हिम गिरि संग बनी जनु मयना
कनक कलश मणि कोंपर रूरे। शुचि सुगंध मंगल जल पूरे
निज कर मुदित राउ अरु रानी। धरे राम के आगे आनी
पढ़हिं बेद मुनि मंगल बानी। मगन सुमन झरि अवसर जानी
बर बिलोकि दंपति अनुरागे। पाय पुनीत परवारन लागे
छं॰ लागे परवारन पाय पंकज प्रेम तनु पुलका वली ॥
नभ नगर गान निसान जय धुनि उमगि जनु चहुं दिशि चली

टी॰
रा॰ बा॰
२०९

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जे पद सरोज मनोज अरि उर सरस देव बिराजहीं ॥
जे सुकृत सुरति बिमल ताकत सकल कलि मल भाजहीं
जे परसि मुनि बनिता लही गति रही जो पातक मई ॥
मकरंद जिन को शंभु शिर सुचिता अवधि सुर बरनई
करि मधुप मुनि मन योगि जन जे सेइ अभिमतगति लहैं
ते पद पखारत भाग्य भाजन जनक जय जय सब कहैं
बर कुंअरि करतल जोरि साखोच्चार दोउ कुल गुरु करैं
भयो पाणि ग्रहण बिलोकि बिधि सुर मनुज मुनि आनंद भरैं
सुख मूल दूलह देखि दंपति पुलक तनु हुलसें हिये ॥
करि लोक बेद बिधान कन्या दान नृप भूषण दिये ॥

टी. रा. बा. २१०

हिमवंत जिमि गिरिजा महेशहिं हरिहिं श्री सागर दई
तिमि जनक रामहिं सिय समर्पी बिश्व कल कीरति नई
क कौर कर जोरी शुभग पुनि गौरि मूरति सांवरी ॥
करि होम बिधिवत गांठि जोरी होन लागी भांवरी
दो. जय धुनि बंदी बेद धुनि मंगल गान निसान ॥
सुनि हरषहिं बरषहिं बिबुध सुरतरु सुमन सुजान
कुंवरि कुंवर कल भांवरि देहीं। नयन लाभ सब सादर लेहीं
जाइ न बरणि मनोहर जोरी। जो उपमा कछु कहिय सो थोरी
राम सीय सुंदर परिछाहीं। जग मगाहिं मणि खंभन माहीं
मनहु मदन रति धरि बहु रूपा। देखहिं राम बिवाह अनूपा
दरस लालसा सकुचि न थोरी। प्रगटत दुरत बहोरि बहोरी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भये मगन सब देखन हारे जनक समान अपान बिसारे ॥
प्रमुदित मुनिन भांवरी फेरी। नेग सहित सब रीति निबेरी ॥
राम सीय सिर सिंदुर देहीं। शोभा कहि न जात बिधि केहीं
अरुण पराग जलज भरि नीके। शशिहि भूषि अहि लोभ अमीके
बहुरि बशिष्ठ दीन्ह अनुशासन। बरदुलहिनि बैठे एक आसन
छं: बैठे बरासन राम जानकि मुदित मन दशरथ भये ॥
तन पुलकि पुनि पुनि देखि अपने सुकृत सुर तरु फल नये
भरि भुवन रहा उछाह राम बिवाह भा सबही कहा ॥
केहि भांति बरणि सिरात रसना एक यहु मंगल महा
तब जनक पाइ बशिष्ठ आयसु ब्याह साज सँवारि के
मांडवी श्रुति कीरति उर्मिला कुंवरि लईं हंकारि के
कुशकेतु कन्या प्रथम जो गुण शील सुख शोभा मयी
सब रीति प्रीति समेत करि सो ब्याहि नृप भरतहि दयी
जानकी लघु भगिनी जो सुंदरि सिरोमणि जानि कै
सो जनक दीन्ही ब्याहि लषणहि सकल विधि सनमानि कै
जेहि नाम श्रुति कीरति सुलोचनि सुमुखि सब गुण आगरी
सो दई रिपुसूदनहिं भूपति रूप शील उजागरी ॥
अनुरूप बर दुलहिनि परस्पर लखि सकुचि हिय हरषहीं
सब मुदित सुंदरता सराहहिं सुमन सुर गण बरषहीं
सुंदरी सुंदर बरन्ह सह सब एक मंडप राजहीं
जनु जीव उर चारिउ अवस्था बिभुन सहित बिराजहीं

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मूर्ति सम विवाह मंडप की सब सहित

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो॰ मुदित अवधपति सकल सुत बधुन समेत निहारि
जनु पाये महिपालमणि क्रयन सहित फल चारि

जस रघुबीर ब्याह बिधि बरणी। सकल कुंवर ब्याहे तेहि करणी
कहि न जाइ कछु दाइज भूरी। रहा कनक मणि मंडप पूरी
कोमल वसन विचित्र पटोरे। भांति भांति बहु मोल न थोरे
गज रथ तुरंग दास अरु दासी। धेनु अलंकृत काम दुहासी
वस्तु अनेक करिय किमि लेखा। कहि न जाइ जानहिं जिनदेखा
लोकपाल अवलोकि सिहाने। लीन्ह अवध पति सब सुख माने
दीन्ह याचकन्ह जो जेहि भावा। उबरा सो जनवासहिं आवा
तब कर जोरि जनक मृदु बानी। बोले सब बरात सनमानी

छं॰ सनमान सकल बरात आदर दान बिनय बढ़ाय कैं
प्रमुदित महा मुनि बृन्द बंदे पूजि प्रेम लड़ाइकैं
शिरनाइ देव मनाइ सब सन कहत कर संपुट कियें
सुर साधु चाहत भाव सिंधु कि तोष जल अंजलि दियें
कर जोरि जनक बहोरि बंधु समेत कोशल राय सों
बोले मनोहर बयन सानि सनेह शील सुभाय सों
संबंध राजन रावरे हम बड़े अब सब बिधि भये
यह राज साज समेत सेवक जानिबी बिनु गथ लये
ये दारिका परिचारिका करि पालबी करुणा भई
अपराध छमियो बोलि पठयो बहुत हौं ढीठो दई
सुनि भानुकुल भूषण सकल सनमान निधि समधी किये

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कहिजात नहिं बिनती परस्पर प्रेम परिपूरण हिये ॥
बृन्दारका गण सुमन बरषहिं राउ जन बासहिं चले
दुन्दुभी धुनि बेद धुनि नभ नगर कौतुक हल भले ॥
तब सखिन मंगल गान करत मुनीस आयसु पाइकै
दूलह दुलहिनि सहित सुन्दरि चलीं कुँअर लवाइकै
दो॰ पुनि पुनि रामहिं चितव सिय सकुचति मन सकुचइ
हरति मनोहर मीन छबि प्रेम पियासे नयन ॥
श्याम शरीर सुभाय सुहावन। शोभा कोटि मनोज लजावन
यावक युत पद कमल सुहाये। मुनि मन मधुप रहत जहं छाये
पीत पुनीत मनोहर धोती। हरत बाल रबि दामिनि जोती
कल किंकिणि कटि सूत्र मनोहर। बाहु बिशाल बिभूषण सोहर
पीत जनेउ महा छबि देई। कर मुद्रिका चोर चित लेई ॥
सोहत ब्याह साज सब साजे। उर आयत सब भूषण राजे
पीत उपरना कांख सोती। दुह आंचरन्ह लगे मणि मोती
नयन कमल कल कुंडल काना। बदन सकल सौंदर्य्य निधाना
सुन्दरि भृकुटि मनोहर नासा। भाल तिलक रुचि रुचिर निवासा
सोहत मौर मनोहर माथे। मंगल सब मुकुता मणि गांथे
छं॰ गांथे महा मणि मौर मंजुल अंग सब चित चोरहीं ॥
पुर नारि सुंदर बर बिलोकहिं निरखि छबि तृण तोरहीं
मणि बसन भूषण वारि आरति करहिं मंगल गावहीं
सुर सुमन बरषहिं सूत मागध बंदि सुयश सुनावहीं ॥

टी॰ रा॰ बा॰ २१५

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कुह बरहिं आने कुंवर कुवरि सुआसिनिन्ह सुख पाइकैं
अति प्रीति लौकिक रीति लागी करण मंगल गाइ कैं
लह कौरि गौरि सिखाव रामहिं सीय सब सादर कहैं
रनिवांस हास बिलास रस बस जनम को फल सब लहैं
निज पाणि मणि महं देखि प्रति मूरति सरूप निधानकी
चालति न भुज बल्ली बिलोकनि बिरह बस भइ जानकी
कौतुक बिनोद प्रमोद प्रेम न जाइ कहि जानहिं अली
वर कुंवरि सुंदर सकल सखिन लवाइ जन वांसहि चली
तेहि समय सुनिय असीस जहं तहं नगर नभ आनंद महा
चिरजियहु जोरी चारु चारिउ मुदित मन सबही कहा
योगींद्र सिद्ध मुनीश देव बिलोकि प्रभु दुन्दुभि हनी
चले हरषि बरषि प्रसून निज निज लोक जय जय जय भनी

दो॰ सहित बधूटिन कुंवर सब तब आये पितु पास
शोभा मंगल मोद भरि उमगेउ जनु जनवास

पुनि जेंवनार भयउ बहु भांती। पठये जनक बुलाइ बराती॥
परत पावड़े बसन अनूपा। सुतन समेत गवन किय भूपा
सादर सब के पांव पखारे। यथा योग पीढ़न बैठारे॥
धोये जनक अवध पति चरणा। शील सनेह जाहि नहि बरणा
बहुरि राम पद पंकज धोये। जे हर हृदय कमल महं गोये॥
तीनौ भाइ राम सम जानी। धोये चरण जनक निज पानी
आसन उचित सबहि नृप दीन्हे। बोलि सूप कारी सब लीन्हे

टी॰
रा॰ बा॰
२२५

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सादर लगे परन पनवारे ।कनक कील गणि परण संवारे ॥
दो· सूपोदन सुरभी सुरपि सुंदर स्वाद पुनीत ॥
छण महं सबके परुसि गे चतुर सुआरि बिनीत
पंच कौर करि जेवन लागे ॥ गारि गान सुनि अति अनुरागे
भांति अनेक परे पकवाना । सुधा सरिस नहिं जाहिं बखाना
परुसन लगे सुआर सुजाना । बंजन बिबिध नाम को जाना
चारि भांति भोजन जो गाई । एकएकु बिधि बरणि न जाई
छरस रुचिर व्यंजन बहु जाती । एक एक रस अगनित भांती
जेंवत देहिं मधुर धुनि गारी । लै लै नाम पुरुष अरु नारी
समय सुहावन गारि बिराजा । हंसत राउ सुनि सहित समाजा
दुहि बिधि सबही भोजन कीन्हा । आदर सहित आचमन दीन्हा
दो· देइ पान पूजे जनक । दशरथ सहित समाज
जनवासे गवने मुदित । सकल भूप शिरताज ॥
नित नूतन मंगल पुर माहीं । निमिष सरिस दिन यामिनि जाहीं
बड़े भोर भूपति मनि जागे । याचक गुण गण गावन लागे
देखि कुवर बर बधुन समेता । किमि कहि जात मोद मन जेता
प्रात कृया करि गे गुरु पाहीं । महा प्रमोद प्रेम मन माहीं ॥
करि प्रणाम पूजा कर जोरी । बोले गिरा अमिय जनु बोरी
तुम्हरी कृपा सुनिय मुनि राजा । भयउ आजु मम पूरण काजा
अब सब विप्र बुलाइ गुसाईं । देहु धेनु सब भांति बनाई ॥
सुनि गुरु करि महिपाल बड़ाई । पुनि पठये मुनिवृन्द बुलाई

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो॰ वामदेव अरु देव ऋषि बालमीक जा बालि ॥
आये मुनिबर निकर तब कौशिकादि तपसालि
दंड प्रणाम सबहिं भूप कीन्हा। पूजि सप्रेम बरासन दीन्हा॥
चारि लक्ष बर धेनु मंगाई। कामसुरभि सम शील सुहाई॥
सब विधि सकल अलंकृत कीन्ही। मुदित महीप महाधन दीन्ही
करत बिनय बहु बिधि नरनाहू। लहेउं आजु जग जीवन लाहू
पाइ असीस महीश अनंदा। लिये बोलि पुनि याचक बृन्दा
कनक बसन मणि हय गय स्यंदन। दये भूमिरुचि रबि कुलनंदन
चले पढ़त गावत गुण गाथा। जय जय जय दिनकर कुलनाथा
इहि बिधि राम बिवाह उछाहू। सकै न बरणि सहस मुख जाहू
दो॰ बार बार कौशिक चरण। शीश नाइ कह राउ ॥
अहसब सुख मुनि राज तव कृपाकटाक्ष प्रभाउ
जनक सनेह शील करतूती। नृप सब भांति सराह बिभूती
दिन उठि बिदा अवधपति मांगा। राखहिं सहित जनक अनुरागा
नित नूतन आदर अधिकाई। दिन प्रति सहस भांति पहुनाई
नित नव नगर अनंद उछाहू। दशरथ गवन सोहाइ न काहू
बहुत दिवस बीते एहि भांती। जनु सनेह रजु बंधे बराती॥
कौशिक सतानंद तब जाई। कहा बिदेह नृपहिं समुझाई॥
अब दशरथ कहं आयसु देहू। यद्यपि छांड़ि न सकहु सनेहू
भलेहि नाथ कहि सचिव बुलाये। कहि जय जीव शीश तिन नाये
दो॰ अवध नाथ चाहत चलन भीतर करहु जनाव

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भये प्रेम बस सचिव सुनि बिप्र सभा सदराव
पुरवासी सुनि चली बराता। पूछन बिकल परस्पर बाता॥
सत्यगवन सुनि सब बिलखाने। मनहुं साझ सर सिज सकुचाने
जहं जहं आवत बसे बराती। तहं तहं सीधचला बहु भांती॥
बिबिध भांति मेवा पकवाना। भोजन साज न जाइ बखाना
भरि भरि बसु रथ कनक कहारा। पठये जनक अनेक सुआरा
तुरंग लाख रथ सहस पचीसा। सकल संवारे नख अरु सीसा
मत्त सहस दस सिंधुर साजे। जिनहि देखि दिसि कुंजर लाजे
कनक बसन मनि भरि भरि याना। महिषी धेनु बस्तु बिधि नाना
दो. दाइज अमित न सकिय कहि दीन्ह बिदेह बहोरि
जो अवलोकत लोकपति लोक संपदा थोरि
सब समाज इहि भांति बनाई। जनक अवधपुर दीन्ह पठाई
चलिहि बरात सुनत सब रानी। बिकल मीन गण जनु लघुपानी
पुनि पुनि सीय गोद करि लेहीं। देइ असीस सिखावन देहीं
होइहहु संतत पियहि पियारी। चिर अहिवात असीस हमारी
सास ससुर गुरु सेवा करेहू। पति रुख लखि आयसु अनुसरेहू
अति सनेह बस सखी सयानी। नारि धर्म सिखवहिं मृदु बानी
सादर सकल कुंवरि समुझाईं। रानिन बार बार उर लाईं॥
बहुरि बहुरि भेटहिं महतारी। कहहिं बिरंचि रची कत नारी॥
दो. तेहि अवसर भाइन सहित राम भानुकुलकेतु
चले जनक मंदिर मुदित बिदा करावन हेतु

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चारिउ भाइ सुभाय सुहाये। नगर नारि नर देखन धाये।
कोउ कह चलन चहत हहिं आजू। कीन्ह बिदेह बिदा कर साजू
लेहु नयन भरि रूप निहारी। प्रिय पाहुने भूप सुत चारी॥
को जाने केहि सुकृत सयानी। नयन अतिथि कीन्हे बिधि आनी
मरण शील जिमि पाव पियूषा। सुरतरु लहै जन्म कर भूखा
पावनारकी हरि गत जैसें। दूनकर दरशन हम कहं तैसें॥
निरखि राम शोभा उर धरहू। निज मन फणि मूरति मणि करहू
दूहि विधि सबहि नयनफलदेता। गये कुंवर सब राज निकेता

दो॰ रूप सिंधु सब बंधु लखि हरषि उठी रनिवासु
करहिं निछावरि आरती महा मुदित मनसासु

देखि रामछवि अति अनुरागी। प्रेम बिवस पुनि पुनि पद लागी
रही न लाज प्रीति उर छाई। सहज सनेह बरणि किमि जाई
भाइन सहित उबटि अन्हवाये। छरस असन अति हेतु जेंवाये
बोले राम सुअवसर जानी। शील सनेह सकुच मय बानी
राउ अवधपुर चहत सिधाये। बिदा होन हम इहां पठाये
मातु मुदित मन आयसु देहू। बालक जानि करब नित नेहू
सुनत बचन बिलखेउ रनिवासू। बोलि न सकहिं प्रेम बस सासू
हृदय लगाइ कुंवरि सब लीन्ही। पतिन सौंपि बिनती अति कीन्ही

छं॰ करि बिनय सिय रामहिं समर्पी जोरिकर पुनिपुनि कहै
बलि जाउं तात सुजान तुम कहं बिदित गति सबकी अहै
परिवार पुरजन मोहि राजहि प्राण प्रिय सिय जानिबी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तुलसी सुशील सनेह लखि निज किंकरी करि मानिबी
दो॰ तुम परिपूरण काम। जान सिरोमणि भाव प्रिय
जन गुण गाहक राम। दोष दलन करुणायतन
अस कहि रही चरण गहि रानी। प्रेम पंक जनु गिरा समानी ॥
सुनि सनेह सानी बर बानी। बहु बिधि राम सासु सनमानी
राम बिदा मांगत कर जोरी। कीन्ह प्रणाम बहोरि बहोरी ॥
पाइ असीस बहुरि सिर नाई। भाइन सहित चले रघुराई ॥
मंजु मधुर मूरति उर आनी। भई सनेह शिथिल सब रानी
पुनि धीरज धरि कुंवरि हंकारी। बार बार भेटहिं महतारी ॥
फुंचावहिं फिरि मिलहिं बहोरी। बढ़ी परस्पर प्रीति न थोरी
पुनि पुनि मिलहि सखिन बिलगाई। बालबत्स जनु धेनु लवाई
दो॰ प्रेम बिवस नर नारि सब सखिन सहित रनिवास
मानहुं कीन्ह बिदेह पुर करुणा विरह निवास ॥
सुक सारिका जानकी ज्याये। कनक पिंजरन राखि पढ़ाये
व्याकुल कहहिं कहां बैदेही। सुनि धीरज परिहरै न केही ॥
भये बिकल खग मृग एहि भांती। मनुज दशा कैसें कहि जाती
बंधु समेत जनक तब आये। प्रेम उमगि लोचन जल छाये
सीय बिलोकि धीरता भागी। रहे कहावत परम बिरागी
लीन्ह राउ उर लाइ जानकी। मिटी महा मर्य्याद ज्ञान की
समुझावत सब सचिव सयाने। कीन्ह विचार न अवसर जाने
बारहि बार सुता उर लाई। सजि सुंदर पालकी मंगाई ॥

टी॰ रा॰ बा॰ २३०

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो· प्रेम बिबस परिवार सब जानि सुलगन नरेश
कुंवरि चढ़ाई पालकी। सुमिरे सिद्धि गणेश ॥
बहु बिधि भूप सुता समुझाई। नारि धर्म कुल रीति सिखाई
दासी दास दिये बहु तेरे। सुचि सेवक जे प्रिय सिय केरे
सीय चलत व्याकुल पुरबासी। होहि सगुण सुभ मंगल रासी
भूसुर सचिव समेत समाजा। संग चले पहुंचावन राजा ॥
रथ गज बाजि बरातिन साजे। दुंदुभि गहगहे बाजने बाजे
दशरथ बिप्र बोलि सब लीन्हे। दान मान परिपूरण कीन्हे
चरन सरोज धूरि धरि शीशा। मुदित महीपति पाइ असीसा
सुमिरि गजानन कीन्ह पयाना। मंगल मूल शकुन भये नाना

दो· सुर प्रसून बरषहिं हरषि करहिं अपछरा गान ॥
चले अवधपति अवधपुर मुदित बजाइ निसान

दो. रा. बा. २२१

नृप करि बिनय महाजन फेरे। सादर सकल मांगने टेरे ॥
भूषण बसन बाजि गज दीन्हे। प्रेम पोषि ठाढ़े सब कीन्हे
बार बार बिरदावलि भाषी। फिरे सकल रामहिं उर राखी ॥
बहुरि बहुरि कोशलपति कहहीं। जनक प्रेम बस फिरन चहहीं
पुनि कह भूपति बचन सुहाये। फिरिय महीपदूरि बड़ि आये
राउ बहोरि उतरि भये ठाढ़े। प्रेम प्रवाह बिलोचन बाढ़े ॥
तब बिदेह बोले कर जोरी। बचन सनेह सुधा जनु बोरी
करौं कवन बिधि बिनय सुहाई। महाराज मोहि दीन्ह बड़ाई

दो· कोशलपति समधी सजन सनमाने सबभांति

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मिलन परस्पर विनय अति प्रीति न हृदय समाति
मुनि मंडली जनक शिर नावा। आशिर्वाद सबहि सन पावा
सादर पुनि भेटे जा माता। रूप शील गुण निधि सब भ्राता
जोरि पंकरुह पाणि सोहाये। बोले बचन प्रेम जनु जाये
राम करौं केहि भांति प्रशंसा। मुनि महेश मन मानस हंसा
करहिं योग योगी जेहि लागी। कोह मोह ममता मद त्यागी
व्यापक ब्रह्म अलख अविनाशी। चिदानंद निर्गुण गुण राशी
मन समेत जेहि जान न बानी। तरकि न सकहिं सकल अनुमानी
महिमा निगम नेति कहि कहहीं। जो तिहुकाल एक रस रहहीं

दो. नयन विषय मो कहं भयउ सो समस्त सुख मूल
सबहि लाभ जग जीव कहं। भये ईश अनुकूल

सबहि भांति मोहि दीन्ह बड़ाई। निजजन जानि लीन्ह अपनाई
होइ सहस दस शारद शेषा। करहिं कल्प कोटिक भरि लेखा
मोर भाग्य राउर गुण गाथा। कहि न सिराहिं सुनिय रघुनाथा
मैं कछु कहौं एक बल मोरे। तुम रीझहु सनेह सुठि थोरे
बार बार मांगौं कर जोरें। मन परिहरै चरण जनि भोरे
सुनि बर बचन प्रेम जनु पोषे। पूरण काम राम परितोषे
करि बर विनय ससुर सनमाने। पितु कौशिक वशिष्ठ सम जाने
विनती बहुत भरत सन कीन्ही। मिलि सप्रेम पुनि आशिष दीन्ही

दो. मिले लषण रिपुसूदनहिं दीन्ह अशीश महीश
भये परस्पर प्रेम बस। फिरि फिरि नावहिं शीश

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बार बार करि बिनय बड़ाई। रघुपति चले संग सब भाई
जनक गहे कौसिक पद जाई। चरणरेणु सिर नयनन लाई
सुनि मुनीस लखि दरसन तोरे। अगम न कछु प्रतीति मन मोरे
जो सुख सुयस लोकपति चहहीं। करत मनोरथ सकुचत अहहीं
सो सुख सुयस सुलभ मोहि स्वामी। सब विधि नव दरसन अनुगामी
कीन्ह बिनय पुनि पुनि सिरनाई। फिरे महीपति आसिष पाई
चली बरात निसान बजाई। मुदित छोट बड़ सब समुदाई
रामहिं निरखि ग्राम नर नारी। पाइ नयन फल होहिं सुखारी
दो॰ बीच बीच बर बास करि। मग लोगन सुख देत
अवध समीप पुनीत दिन पहुंची आय जनेत
हने निसान पणव बहु बाजे। भेरि संख धुनि हय गय गाजे
झांझ मृदंग डिम डिमी सुहाई। सरस राग बाजहि सहनाई
पुरजन आवत अकनि बराता। मुदित सकल पुलकावलि गाता
निज निज सुंदर सदन संवारे। हाट बाट चौहट पुर द्वारे
गली सकल अरगजा सिंचाई। जहं तहं चौके चारु पुराई
बना बजार न जात बखाना। तोरण केतु पताक बिताना
सुफल पुंगफल कदलि रसाला। रोपे बकुल कदंब तमाला
लगे सुभग तरु परसत धरणी। मणिमय आल बाल कल करणी
दो॰ विविधि भांति मंगल कलश गृह गृह रचे संवारि
सुर ब्रह्मादि सिहाहिं सब रघुवर पुरी निहारि
भूप भवन तेहि अवसर सोहा। रचना देखि मदन मन मोहा

टी॰ रा॰ बा॰ २३३

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मंगल सगुन मनोहरताई ॥ रिधि सिधि सुख संपदा सुहाई
जनु उछाह सब सहज सुहाये । तनु धरि धरि दशरथ गृह आये
देखन हेतु राम बैदेहीं । कहहु लालसा होइ न केहीं
यूथ यूथ मिलि चलीं सुआसिनि । निजछबि निदरहिं मदन विलासिनि
सकल सुमंगल सजे आरती । गावहिं जनु बहु बेष भारती
भूपति भवन कुलाहल होई । जाइ न बरणि समय सुख सोई
कौशिल्यादि राम महतारी । प्रेम विवस तनु दशा बिसारी
दो· दिये दान बिप्रन विपुल । पूजि गणेश पुरारि
प्रमुदित परम दरिद्र जनु । पाइ पदारथ चारि
टी० रा० बा० २२४
प्रेम प्रमोद बिबस सब माता । चलहिं न चरण शिथिल भए गाता
राम दरस हित अति अनुरागी । परिछन साज सजन सब लागी
विविध विधान बाजने बाजे । मंगल मुदित सुमित्रा साजे ॥
हरद दूब दधि पल्लव फूला । पान फूल फल मंगल मूला
अक्षत अंकुर रोचन लाजा । मंजुल मंजरि तुलसि बिराजा
छुहे पुरट घट सहज सुहाये । मदन शकुनि जनु नीड़ बनाये
शकुन सुगंधन जाहिं बखानी । मंगल सकल सजहिं सब रानी
रची आरती विविध विधाना । मुदित करहिं कल मंगल गाना
दो· कनक थार भरि मंगलन्ह कमल करनि लिये मातु
चली मुदित परिछन करन पुलक पल्लवित गातु
धूप धूम नभ मेचक भयऊ । सावन घन घमंड जनु छयऊ
सुरतरु सुमन माल सुर बरषहिं । मनहुं बलाक अवलि मनकरषहिं

मंजुल मणि मय बंदन बारा। मनहुं पाक रिपु चाप सँवारा
प्रगटहिं दुरहिं अटन्ह पर भामिनि। चारु चपल जनु दमकहिं दामिनि
दुन्दुभि धुनि घन गरजहिं घोरा। याचक चातक दादुर मोरा॥
शुचि सुगंध कहुं बरषहिं बारी। सुखी सकल शशिपुर नरनारी
समय जानि गुरु आयसु दीन्हा। पुर प्रवेश रघुकुल मणि कीन्हा
सुमिरि शंभु गिरिजा गणराजा। मुदित महीपति सहित समाजा
दो॰ होहिं शकुन बरषहिं सुमन सुर दुन्दुभी बजाइ
विबुध वधू नाचहिं मुदित मंजुल मंगल गाइ
मागध सूत बंदि नट नागर। गावहिं यश तिहुं लोक उजागर
जय धुनि विमल बेद बर बानी। दश दिश सुनिय सुमंगल सानी
बिपुल बाजने बाजन लागे। नभ सुर नगर लोग अनुरागे
बने बराती वरणि न जाहीं। महा मुदित मन सुखन समाहीं
पुरवासिन्ह तब राउ जोहारे। देखत रामहिं भये सुखारे
करहिं निछावरि मणि गण चीरा। बारि बिलोचन पुलक शरीरा
आरति करहिं मुदित पुर नारी। हरषहिं निरखि कुंवर बर चारी
शिबिका सुभग ओहार उघारी। देखि दुलहिनिन्ह होहिं सुखारी
दो॰ एहि विधि सबही देत सुख आये राज दुआर
मुदित मातु परिछन करहिं बधुन समेत कुमार
करहिं आरती बारहिं बारा। प्रेम प्रमोद कहै को पारा॥
भूषण मणि पट नाना जाती। करहिं निछावरि अगणित भांती
बधुन समेत देखि सुत चारी। परमानंद मगन महतारी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुनि पुनि सीय राम छवि देखी। मुदित सफल जग जीवन लेखी
सखी सीय मुख पुनि पुनि चाही। गान करहिं निज सुकृत सराही
बरषहिं सुमन छनहिं छन देवा। नाचहिं गावहिं लावहिं सेवा
देखि मनोहर चारिउ जोरी। शारद उपमा सकल ढंढोरी ॥
देत न बनहिं निपट लघु लागी। एकटक रही रूप अनुरागी
दो॰ निगम नीति कुल रीति करि अरघ पाँवड़े देत
बधुन सहित सुत परिछि सब चलीं लिवाइ निकेत
चारि सिंहासन सहज सुहाये। जनु मनोज निज हाथ बनाये
तिन पर कुँवरि कुँवर बैठारे। सादर पाय पुनीत पखारे ॥
धूप दीप नैवेद्य बेद विधि। पूजे वर दुलहिनि मंगल निधि
बारहिं बार आरती करहीं। व्यजन चारु चामर सिर ढरहीं
बस्तु अनेक निछावरि होहीं। भरी प्रमोद मातु सब सोहीं
पाया परम तत्व जनु योगी। अमृत लही जनु संत बियोगी
जनम रंक जनु पारस पावा। अंधहि लोचन लाभ सुहावा
मूक बदन जस शारद छाई। मानहु समर सूर जय पाई
दो॰ इहि सुख ते शत कोटि गुण पावहिं मातु अनंद
भाइन सहित बिआहि घर आये रघुकुल चंद
लोक रीति जननी करहिं बर दुलहिनि सकुचाहिं
मोद बिनोद बिलोकि बड़ राम मनहिं मुसुकाहिं
देव पितर पूजे बिधि नीकी। पूजी सकल बासना जीकी
सबहि बंदि मांगहि बरदाना। भाइन सहित राम कल्याना

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अंतर हित सुर आशिष देहीं। मुदित मातु अंचल भरि लेहीं
भूपति बोलि बरातिन्ह लीन्हे। यान बसन मनि भूषण दीन्हे
आयसु पाइ राखि उर रामहिं। मुदित गये सब निज निज धामहिं
पुर नर नारि सकल पहिराये। घर घर बाजहिं अनंद बधाये
याचक जन याचहिं जोइ जोई। प्रमुदित राउ देहिं सोइ सोई
सेवक सकल बजनिया नाना। पूरन किये दान सनमाना॥

दो॰ देहिं अशीश जुहारि सब गावहिं गुण गण गाथ
तब गुरु भूसुर सहित गृह गवन कीन्ह रघुनाथ

जो वशिष्ठ अनुशासन दीन्हा। लोक वेद विधि सादर कीन्हा
भूसुर भीर देखि सब रानी। सादर उठीं भाग्य बड़ जानी
पाय पखारि सकल अन्हवाये। पूजि भली विधि भूप जेंवाये
आदर दान प्रेम परि पोषे। देत अशीश चले मन तोषे।
बड़ विधि कीन्ह गाधिसुत पूजा। नाथ मोहि सम धन्य न दूजा
कीन्ह प्रशंसा भूपति भूरी। रानिन्ह सहित लीन्ह पग धूरी
भीतर भवन दीन्ह बर बासू। मन जोगवत रह नृप रनिवासू
पूजे गुरु पद कमल बहोरी। कीन्ह बिनय मन प्रीति न थोरी

दो॰ बधुन समेत कुमार सब रानिन सहित महीश
पुनि पुनि बंदत गुरु चरण देत अशीश मुनीश

बिनय कीन्ह उर अति अनुरागे। सुख संपदा राखि सब आगे
नेग मांगि मुनि नायक लीन्हा। आशिर बाद बहुत विधि दीन्हा
उर धरि रामहिं सीय समेता। हरषि कीन्ह गुरु गवन निकेता

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विप्र बधू कुल वृद्ध बुलाई ।चीर चारु भूषण पहिराई ॥
बहुरि बुलाइ सुआसिनि लीन्हा।रुचि बिचारि पहिरावन दीन्हा
नेगी नेग योग सब लेहीं । रुचि अनुरूप भूप मणि देहीं
प्रिय पाहुने पूज्य जे जाने।भूपति भली भांति सनमाने
देव देखि रघुबीर बिबाहू। ।बरषि प्रसून प्रशंसि उछाहू
दो· चले निशान बजाइ सुर निज निज पुर सुख पाइ
कहत परस्पर राम यश हर्ष न हृदय समाइ ॥
सब बिधि सबहि समदि नर नाहू।रहा हृदय भरि पूरि उछाहू ॥
जहं रनिवास तहां पगु धारे। सहित बधूटिन कुंवर निहारे
लिये गोद करि मोद समेता।को कहि सकै भयउ सुख जेता
बधू सप्रेम गोद बैठारी ।बार बार हिय हरषि दुलारी॥
देखि समाज मुदित रनिवासू। सब के उर आनंद किय बासू
कहेउ भूप जिमि भयेउ बिबाहू।सुनि सुनि हरष होत सब काहू
जनक राज गुण शील बड़ाई।प्रीति रीति संपदा सुहाई॥
बहु बिधि भूप भाट जिमि बरणी। रानी सब प्रमुदित सुनि करणी
दो· सुतन समेत नहाइ नृप बोलि लिये गुरु ज्ञाति
भोजन कीन्ह अनेक बिधि घरी पांच गइ राति
मंगल गान करहिं वर भामिनि।भइ सुख मूल मनोहर गामि
अचै पान सब काहुन पाये।अंग सुगंध भूषित छबि छाये
रामहिं देखि रजायसु पाई । निज निज भवन चले शिर नाई
प्रेम प्रमोद बिनोद बड़ाई । समय समाज मनोहर ताई ॥

टी· रा· बा· २२८

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कहि न सकहिं श्रुति शारद सेसू। बेद बिरंचि महेस गनेसू
सो मैं कहौं कवन बिधि बरणी। भूमि नाग सिर धरै कि धरणी
नृप सब भांति सबहि सनमानी। कहि मृदु बचन बुलाई रानी
बधू लरिकिनी पर घर आई। राखेउ नयन पलक की नांई
दो॰ लरिका श्रमित उनींद बस सयन करावहु जाइ
अस कहि गे बिश्राम गृह राम चरण चितलाइ
भूप बचन सुनि सहज सुहाये। जड़ित कनक मणि पलंग डसाये
सुभग सुरभि पय फेनु समाना। कोमल कलित सुपेती नाना
उप बरहन बर बरनि न जाहीं। स्त्रग सुगंध मणि मंदिर माहीं
रतन दीप सुठि चारु चंदोवा। कहत न बने जान जेहि जोवा
सेज रुचिर रचि राम उठाये। प्रेम समेत पलंग पौढ़ाये॥
आज्ञा पुनि पुनि भाइन दीनी। निज निज सेज शयन तिनकीनी
देखि श्याम मृदु मंजुल गाता। कहहिं सप्रेम बचन सब माता
मारग जात भयावन भारी। केहि बिधि तात ताड़का मारी
दो॰ घोर निशाचर बिकट भट समर गने नहिं काहु
मारे सहित सहाय किमि खल मारीच सुबाहु
मुनि प्रसाद बलि तात तुम्हारे। ईश अनेक करवरे टारे॥
मख रखवारी करि दुहुं भाई। गुरु प्रसाद सब बिद्या पाई॥
मुनि तिय तरी लगत पगधूरी। कीरति रही भुवन भरि पूरी
कमठ पीठ पबि चाहि कठोरा। नृप समाज महं शिव धनु तोरा
बिश्व बिजय यश जानकि पाई। आये भवन ब्याहि सब भाई

बी॰ ए॰ बा॰ २२८

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सकल अमानुष कर्म तुम्हारे। केवल कौशिक कृपा सुधारे
अनु सुफल जग जन्म हमारे। देखि तात बिधु बदन तुम्हारे
जे दिन गये तुमहिं बिनु देखे। ते बिरंचि जनि पारहिं लेखे

दो॰ राम मनोषी सबु सब कहि बिनती बर बयन।
सुमिरि शंसु गुरु विप्र पद किये नींद बस नयन

नींदउ बदन सोह सुठि लोना। मनहुं साझ सरसीरुह सोना
घर घर करहिं जागरण नारी। देहिं परस्पर मंगल गारी
पुरी बिराजति राजत रजनी। रानी कहहिं बिलोकहु सजनी
सुंदर बधुन सासु लै सोई। फनि पति जनु शिर मणि उर गोई
प्रात पुनीत काल प्रभु जागे। अरुण चूड़ बर बोलन लागे
बंदी मागध गुण गण गाये। पुरजन द्वार जुहारन आये
बंदि बिप्र सुरगुरु पितु माता। पाइ अशीश मुदित सब भ्राता
जननिन्ह सादर बदन निहारे। भूपति संग द्वार पगु धारे॥

दो॰ कीन्ह शौच सब सहज शुचि सरित पुनीत नहाइ
प्रात किया करि तात पहं आये चारिउ भाइ

भूप बिलोकि लिये उर लाई। बैठे हरषि रजायसु पाई॥
देखि राम सब सभा जुड़ानी। लोचन लाभ अवधि अनुमानी
पुनि बशिष्ठ मुनि कौशिक आये। सुभग आसनन्ह मुनि बैठाये
सुतन समेत पूजि पद लागे। निरखि राम दोउ उर अनुरागे
कहहिं बशिष्ठ धर्म इतिहासा। सुनहिं महीप सहित रनिवासा
मुनि धन अगम गाधि सुत करणी। मुदित बशिष्ठ बिपुल बिधि बरणी

बोले बामदेव सब सांची । कीरति कलित लोक तिहुं मांची
सुनि आनंद भयउ सब काहू । राम लषण उर अधिक उछाहू
दो॰ मंगल मोद उछाह नित । जांहि दिवस इहि भांति
उमगी अवध अनंद भरि अधिक अधिक अधिकांति
सुदिन साधि कर कंकण छोरे । मंगल मोद विनोद न थोरे
नित नव सुख सुर देखि सिहाहीं । अवध जन्म याचहिं विधि पाहीं
विश्वामित्र चलन नित चहहीं । राम स प्रेम विनय बस रहहीं
दिन दिन सद गुण भूपति भाऊ । देखि सराह महा मुनि राऊ ॥
मांगत विदा राउ अनुरागे । सुतन समेत ठाढ़ भये आगे
नाथ सकल संपदा तुम्हारी । मैं सेवक समेत सुत नारी ॥
करब सदा लरिकन पर छोहू । दरसन देत रहब मुनि मोहू
अस कहि राउ सहित सुत रानी । परे चरण मुख आवन बानी
दीन्ह अशीस विप्र बहु भांती । चले न प्रीति रीति कहि जाती
राम सप्रेम सङ्ग सब भाई । आयसु पाइ फिरे पहुंचाई ॥
दो॰ राम रूप भूपति भगति । ब्याह उछाह अनन्द
जात सराहत मनहिं मन मुदित गाधि कुलचन्द
बामदेव रघुकुल गुरु ज्ञानी । बहुरि गाधि सुत कथा बखानी
सुनि सुनि सुयश मनहिं मन राऊ । बरणत आपन पुण्य प्रभाऊ
बहुरे लोग रजायसु भयऊ । सुतन समेत नृपति गृह गयऊ
जहं तहं राम ब्याह यश गावा । सुयश पुनीत लोक तिहुं छावा
आये ब्याहि राम घर जबतें । बसे अनन्द अवध सब तबतें

व्यवहार चरित्र
दि अपार हैं जो
साईं जी दीनता
पूर्वक उपकारार्थ
बरनत भए ३६१
इति बालकाण्ड प्रसं
गअंग समाप्तम्

टी॰
रा॰ बा॰
२३२

श्लोक ७ चौपाई २९७९ छंद ३९ सोरठा ३६ दोहा ३६१

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रभु विवाह जस भयउ उछाहू। सकहिं न बरणि गिरा अहिनाहू
कबि कुल जीवन पावन जानी। राम सीय यश मंगल खानी
तेहि ते मैं कछु कहा बखानी। करण पुनीत हेतु निज बानी
छं. निज गिरा पावन करण कारण राम यश तुलसी कह्यो
रघुबीर चरित अपार बारिधि पार कबि कवने लह्यो
उपबीत ब्याह उछाह मंगल सुनहिं सादर गावहीं
बैदेहि राम प्रसाद ते जन सर्वदा सुख पावहीं ॥
सुन गाय कहौं गिरीश कन्या धन्य अधिकारी सही
नित प्रीति नूतन सुनत हरि गुण भक्ति अनुपमतें लही
रघुबीर पद अनुराग जल लो भाग बेग बुझावई
यह जान तुलसीदास मन क्रम बचन हरिगुण गावई
दो. कठिन काल मल ग्रसित तनु साधन कछु न होइ
यह बिचारि बिश्वास करि हरि सुमिरै बुध सोइ ॥
सो. मन हरि पद अनुराग। करहु त्याग नाना कपट
महा मोह निशि जाग। सोवत बीते कालबहु
सिय रघुबीर बिबाह। जे सप्रेम सादर सुनहिं
तिन कहं सदा उछाह। मंगलायतन राम यश
इतिश्री राम चरित मानसे सकल कलि कलुष बिध्वं
सने द्वितीय बिज्ञान बैराग्य संतोष सम्पादनो नाम
तुलसी कृत बालकाण्ड प्रथमस्सोपानः समाप्तः ॥
लिखितं दरसोहन दास

टी. रा. बा. २३२

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यह मूर्ति नृसिंहावतार की

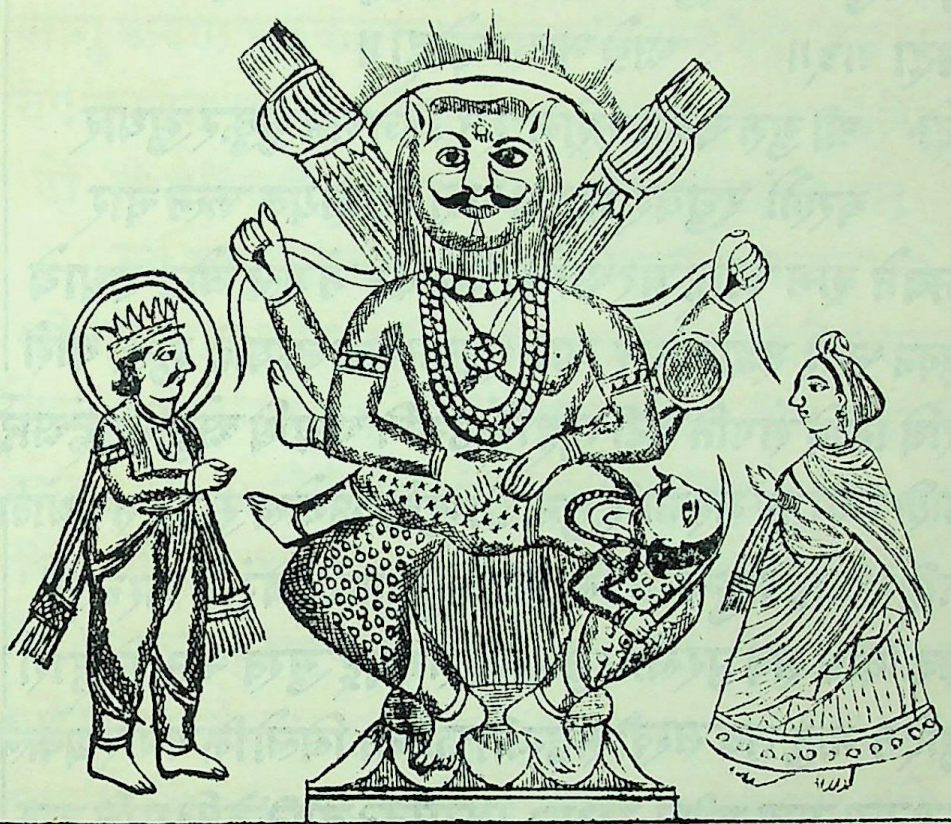

अयोध्या काण्डः २

श्री गणेशायनमः श्लोक वामांकेच विभाति भूधर सुता
देवाप गामस्तके भाले बाल विदुर्गलेच गरलं यस्यो रसि
व्याल राट् सोयं भूति विभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा
सर्वः सर्वगतः शिवः शशि निभः श्रीशंकरः पातुमां १ नीलां
बुजं श्यामल कोमलांगं सीता समारोपित वाम भागंपाणौ
महा शायक चारु चापं नमामि रामं रघुवंश नाथम् ॥२॥

प्रसन्नतां योन गतो भिषेकस्तथा नमम्लौबन वास दुःखितः
मुखांबुज श्री रघुनंदनस्य में सदास्तु सा मंजुल मंगल
प्रदा ॥३॥ अग्रे भाषा दोहा ॥

दो॰ श्री गुरु चरण सरोज रज निज मन मुकुर सुधार
बरणौं रघुबर बिशद यश जो दायक फल चार

जबते राम ब्याह घर आये। नित नव मंगल मोद बधाये
भुवन चारि दश भूधर भारी। सुकृत मेघ बरषहिं सुख बारी
रिधि सिधि संपति नदी सुहाई। उमगि अवधि अंबुधि कहं आई
मणि गण पुर नर नारि सुजाती। शुचि अमोल सुंदर सब भांती
कहि न जाइ कछु नगर बिभूती। जनु इतनी बिरंचि कर तूती
सब बिधि सब पुर लोग सुखारी। रामचंद्र मुख चंद्र निहारी
मुदित मातु सब सखी सहेली। फलित बिलोकि मनोरथ केली
राम रूप गुण शील सुभाऊ। प्रमुदित होहिं देखि मुनि राऊ

दो॰ सबके उर अभिलाष अति कहहिं मनाइ महेश
आप अछत युव राज पद रामहिं देहिं नरेश

एक समय सब सहित समाजा। राज सभा रघुराज बिराजा
सकल सुकृति मूरति नर नाहू। राम सुयश सुन अतिहि उछाहू
नृप सब रहहिं कृपा अभिलाषे। लोकप रहहिं प्रीति रुष राषे
त्रिभुवन तीन काल जग माहीं। भूरि भाग दशरथ सम नाहीं
मंगल मूल राम सुत जासू। जो कछु कहिय थोर सब तासू
राउ सुभाउ मुकुर कर लीन्हा। बदन बिलोकि मुकुट सम कीन्हा

CC-0. In Public Domain. Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

श्रवण समीप भए सित केशा। मनहु जरठपन अस उपदेशा
नाम श्रवण जनु कहत बुढ़ाई। राम हिं राज्य देहु किन जाई
नृप युवराज राम कहं देहू। जीवन जन्म सुफल करि लेहू ॥
दो॰ अस बिचारि उर आनि नृप सुदिन सुअवसर पाइ
तन पुलकित मन मुदित अति गुरुहि सुनायउ जाइ
कहेउ भुआल सुनिय मुनि नायक। भए राम सब बिधि सब लायक
सेवक सचिव सकल पुरबासी। जे हमार अरि मित्र उदासी
सबहि राम प्रिय जेहि बिधि मोही। प्रभु अशीष जनु तनु धरि सोही
बिप्र सहित परिवार गुसाईं। करहिं छोह सब रौरिहि नाईं ॥
जे गुरु चरण रेणु शिर धरहीं। ते जनु सकल बिभव बस करहीं
मोहि सम यह अनुभयउ न दूजे। सब पायउ पद पावन पूजे
अब अभिलाष एक मन मोरे। पूजिहि नाथ अनुग्रह तोरे ॥
मन प्रसन्न लखि सहज सनेहू। कहेउ नरेश रजायसु देहू ॥

दो॰ राजन राउर नाम यश सब अभिमत दातार ॥
फल अनुगामी महिप मणि मन अभिलाष तुम्हार

सब बिधि गुरु प्रसन्न जिय जानी। बोलेउ राउ बिहंसि मृदु बानी
नाथ राम कीजिय युव राजू। कहिय कृपा करि करिय समाजू
मोहि अछत अस होउ उछाहू। लहहिं लोग सब लोचन लाहू
प्रभु प्रसाद शिव सबै निबाही। यह लालसा एक मन माही

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुनि न शोच तनु रहहि कि जाऊ जेहि न होइ पाछे पछिताऊ
सुनि सुनि दशरथ बचन सुहाए। मंगल मोद मूल मन भाए
सुनि नृप जासु बिमुख पछिताहीं। जासु भवन बिनु जरनि न जाहीं
भयउ तुम्हार तनय सो स्वामी। राम पुनीत प्रेम अनुगामी
दो॰ बेग बिलंबन करिय नृप साजिय सबहि समाजु
सुदिन सुमंगल तबहिं जब राम होहिं युव राजु
मुदित महीपति मंदिर आए। सेवक सचिव सुमंत्र बुलाए
कहि जय जीव शीश तिन्ह नाए। भूप सुमंगल बचन सुनाए
जो पंचहिं मत लागै नीका। करहु हरषि हिय रामहिं टीका
मंत्री मुदित सुनत प्रिय बानी। अभिमत बिरव परेउ जनु पानी
बिनती सचिव करहिं कर जोरी। जियहु जगत पति बरष करोरी
जग मंगल भल काज बिचारा। बेगिय नाथ न लाइय बारा॥
नृपहिं मोद सुनि सचिव सुभाषा। बढ़त बौड़ जनु लही सुसाखा
दो॰ कहेउ भूप मुनि राज कर जोइ जोइ आयसु होइ
राम राज अभिषेक हित बेगि करहु सोइ सोइ

टी॰ रा॰ अ॰ ४

हरष मुनीश कहेउ मृदु बानी। आनहु सकल सुतीरथ पानी
औषध मूल फूल फल पाना। कहे नाम गनि मंगल नाना
चामर चमर बसन बहु भांती। रोम पाट पट अगनित जाती
मनि गन मंगल बस्तु अनेका। जो जग जोगु भूप अभिषेका
बेद बिहित कहि सकल बिधाना। कहेउ रचेउ पुर बिबिध बिताना

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Gyaan Kosha

सफल रसाल पुंग फल केरा। रोपहु बीथिन पुर चहुं फेरा॥
चहुं मंजु मनि चौंके चारू। कहेउ बनाइन बेगि बजारू॥
पूजहु गणपति गुरु कुल देवा। सब बिधि करहु भूमि सुर सेवा
दो॰ ध्वज पताक तोरण कलश सजहु तुरग रथ नाग॥
सिर धरि मुनिवर बचन सब निज निज काजहिं लाग
सुनि सुमंत मन अति हरषाना। जीवन जन्म सुफल कर जाना दो॰
जहं तहं धावन कोटि पठाए। मंगल द्रव्य सकल लै आए॥
कनक कलश सज धरे दुवारे। गजरथ तुरंग अनेक संवारे
बहु बिधि बांधे बंदन वारा। ध्वज पताक मणि बसन अपारा
बनेहु नगर नहिं बरनि न जाई। सकल लोक शोभा पुर छाई
जेहि मुनीश जो आयसु दीन्हा। सो जनु काज प्रथमतेहि कीन्हा
मुनि मन इच्छा करन न पावा। सो सुमंत पहिलेहि ले आवा
बिप्र साधु सुर पूजत राजा। करत राम हित मंगल काजा
सुनत राम अभिषेक सुहावा। बाजु गहा गह अवध बधावा
राम सीय तनु शकुन जनाये। फरकहिं मंगल अंग सुहाये
पुलकि सप्रेम परस्पर कहहीं। भरत आगमन सूचक अहहीं
भए बहुत दिन अति अवसेरी। सगुन प्रतीति भेंटि प्रिय केरी
रामहि शोच वधू दिन राती। अंडन कमठ हृदय जेहि भांती
भरत सरस प्रिय को जग माहीं। यहि सगुन फल दूसर नाहीं
दो॰ तेहि अवसर मंगल परम सुनि हरषीं रनवासु।
शोभित लखि विधु बढ़त जनु बारिधि बीच बिलासु

टी॰ रा॰ अ॰ ५

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रथम जाइ तिन्ह खबर सुनाये। भूषण बसन भूरि तिन्ह पाये
अंग पुलकि तनु मन अनुरागी। मंगल साज सजन सब लागी
चौके चारु सुमित्रा पूरे ॥ मणि मय बिबिध भांति अति रूरे
आनंद मगन राम महतारी। दिये दान बहु बिप्र हंकारी ॥
पूजेउ ग्राम देव सुर नागा। कहेउ बहोरि देन बलि भागा
बार बार गणपतिहि निहोरा। कीजिय सफल मनोरथ मोरा
भूप हृदय प्रभु प्रेरेहो जाई। मन दृढ़ होहि जो जिय में आई
जो कछु इच्छा करि मन माहीं। सो प्रभु होइ आन कछु नाहीं
जेहि विधि होइ राम कल्याना। देहु दया करि सो वरदाना ॥
गावहिं मंगल कोकिल बयनी। बिधु बदनी मृग सावक नयनी
दो॰ राम राज अभिषेक सुनि हिय हरषे नर नारि ॥
लगी सुमंगल सजन सब बिधि अनुकूल बिचारि
तब नरनाह बशिष्ठ बुलाये। राम धाम सिख देन पठाये
गुरु आगमन सुनत रघुनाथा। द्वार आइ नाये पद माथा
सादर अर्घ देइ घर आने। सोरह भांति पूजि सनमाने
गहे चरण सिय सहित बहोरी। बोले राम कमल कर जोरी
सेवक सदन स्वामि आगमनू। मंगल मूल अमंगल दमनू
तदपि उचित अस बोलि सप्रीती। पठइय नाथ काज अस नीती
प्रभुता तजि प्रभु कीन्ह सनेहू। भयेउ पुनीत आज मम गेहू
आयसु होइ सो करिय गुसांई। सेवक लहै स्वामि सेवकाई
दो॰ पुनि सनेह सने बचन सुनि रघुबरहि प्रशंस

टी॰ रा॰ अ॰ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Gyaan Kosha

राम कसन तुम कहहु अस हंस बंस अवतंस

बरणि राम गुण शील सुभाऊ। बोले प्रेम पुलकि मुनि राऊ

भूप सजेउ अभिषेक समाजू। चाहत देन तुमहि जुव राजू

राम करहु सब संजम आजू। जो बिधि कुशल निवाहें काजू

गुरु सिख देइ राउ पहं गयेऊ। राम हृदय अस बिस्मय भयेऊ

जनमे एक संग सब भाई। भोजन शयन केलि लरिकाई

कर्ण बेध उपवीत बिवाहा। संग संग सब भयउ उछाहा

बिमल बंश यह अनुचित एका। अनुज बिहाइ बड़ेहि अभिषेका

प्रभु सप्रेम पछितानि सुहाई। हरेउ भक्त मन की कुटिलाई

दो॰ तेहि अवसर आये लषण मगन प्रेम आनंद

सनमाने प्रिय बचन कहि रवि कुल कैरव चंद

टी॰ रा॰ अ॰ ७

बाजहिं बाजन बिबिध बिधाना। पुर प्रमोद नहिं जाइ बखाना

भरत आगमन सकल मनावहिं। आवहिं वेग नयन फल पावहिं

हाट बाट घर गली सुहाई। कहहिं परस्पर लोग लुगाई

काल लगन भल केतिक वारा। पूजिहि बिधि अभिलाष तुम्हारा

कनक सिंहासन सीय समेता। बैठहिं राम होइ चित चेता

सकल कहहिं कब होइहि काली। बिघ्न मनावहिं देव कुचाली

तिनहि सोहात न अवध बधावा। चोरहिं चांदनि रात न भावा

सारद बोलि बिनय सुर करहीं। बारहिं बार पांवलै परहीं

दो॰ विपति हमारि बिलोकि बड़ि मातु करिय सोइ आज

राम जाहिं बन राज तजि होइ सकल सुर काज

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

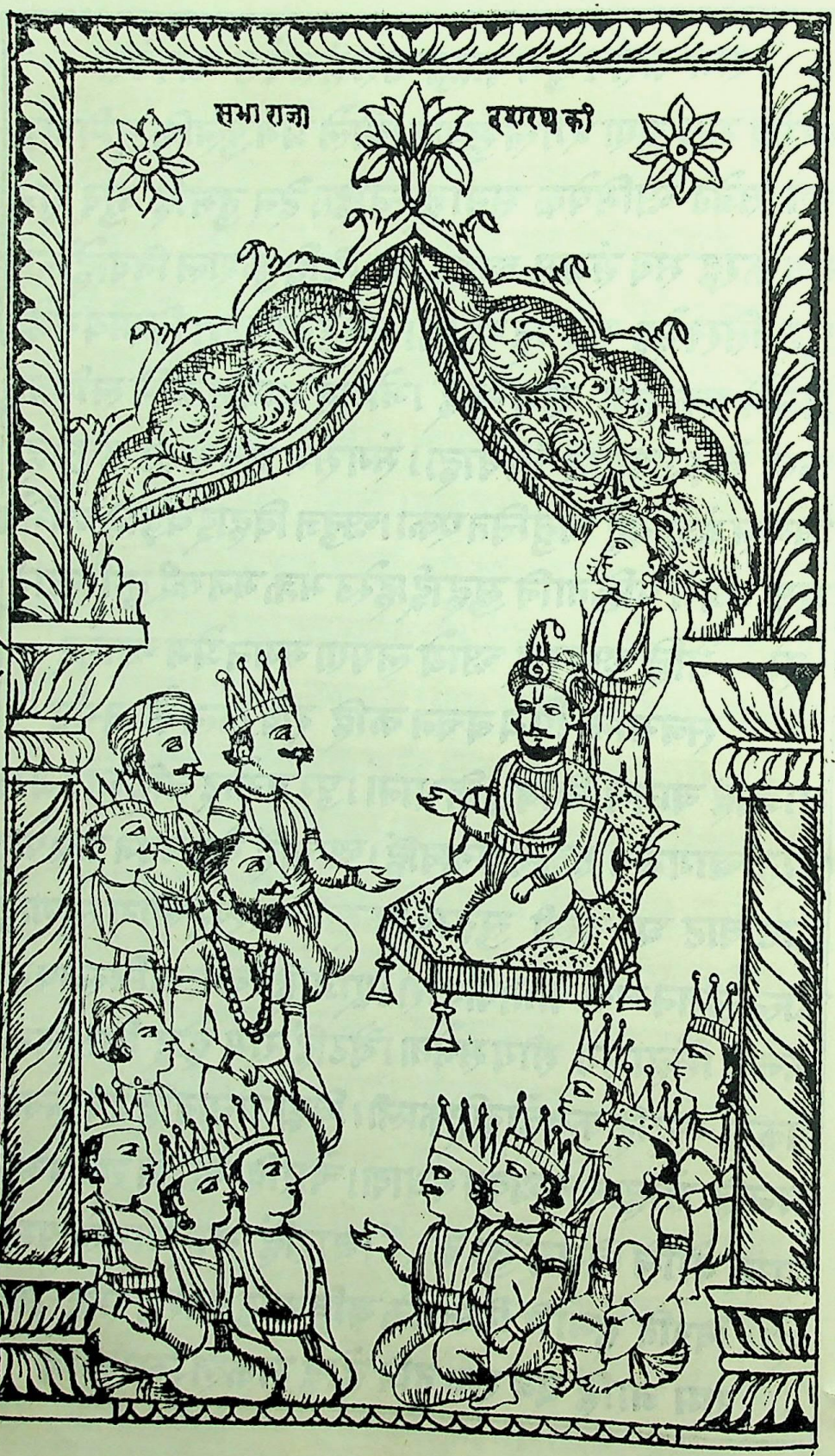

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Digitized by eGangotri Gyaan Kosha

सुनि सुर बिनय ठाढ़ि पछिताती। भई सरोज बिपिन हिम राती
देखि देव पुनि कहहिं निहोरी। मातु तोहि नहिं थोरिउ खोरी
बिस्मय हर्ष रहित रघुराऊ। तुम जानहु रघुबीर सुभाऊ॥
जीव कर्म बस दुख सुख भागी। जइये अवध देव हित लागी
बार बार गहि चरण सकोची। चली बिचार बिबुध मति पोची
ऊंच निवास नीच करतूती। देखि न सकहिं पराइ बिभूती
आगिल काज बिचारि बहोरी। करिहैं चाह कुशल कवि मोरी
हरषि हृदय कोशल पुर आई। जनु ग्रह दशा दुसह दुख दाई

दो॰ नाम मंथरा मंद मति चेरी केकइ केरि॥
अयश पिटारी ताहि करि गई गिरा मति फेरि

देखि मंथरा नगर बनावा। मंगल मंजुल बाज बधावा॥
पूछेसि लोगन काह उछाहू। राम तिलक सुनि भा उर दाहू
करै बिचार कुबुद्धि कुजाती। होइ अकाज कवन बिधि राती
देखि लागु मधु कुटिल किराती। जिमि गव तकै लेउ केहि भांती
भरत मातु पहं गइ बिलखानी। का अनमनी रहसि कह रानी
उतरु न देइ सो लेइ उसांसू। नारि चरित करि ढारति आंसू
हंसि कहि रानि गाल बड़ तोरे। दीन लषन सिष अस मन मोरे
तबहु न बोलि चेरि बड़ि पापिनि। छाड़ै स्वास करि जनु सांपिनि

दो॰ सभय रानि कह कहसि किन कुशल राम महिपाल
भरत लषन रिपु दवन सुनि भा कुबरी उर साल॥

का सोवत सुहाग अभिमानी। निकट महा भय तून डरानी

टी॰ रा॰ अ॰ ९

कत सिख देइ हमहिं को माई। गाल करब केहि कर बल पाई
रामहिं छांड़ि कुशल केहि आजू। जाहि नरेश देत युवराजू ॥
भा कौशिल्यहि बिधि अति दाहिन। देखत गर्ब रहा उर नाहिन
देखहु कसन जाइ सोइ शोभा। जो अवलोकि मोर मन छोभा
पूत बिदेश न शोच तुम्हारे। जानति हो बस नांह हमारे
नींद बहुत प्रिय सेज तुराई। लखहु न भूप कपट चतुराई
सुनि प्रिय बचन कपट मन जानी। झुकि रानी अब रहु अरगानी
पुनि अस कबहु कहसि घर फोरी। तौ धरि जीह कटावौं तोरी
दो॰ काने खोरे कूबरे कुटिल कुचाली जानि ॥
तिय बिशेष पुनि चेरि कहि भरत मातु मुसकानि
प्रिय बादिनि सिख दीन्हेउ तोही। सपनेहु तोपर कोप न मोही
सुदिन सुमंगल दायक सोई। तोर कहा फुर जा दिन होई
जेठ स्वामि सेवक लघु भाई। यह दिन कर कुल रीति सुहाई
राम तिलक जो सांचेहु काली। मांगु देव मन भावति आली
कौशिल्या सम सब महतारी। रामहिं सहज सुभाव पियारी
मोपर करहिं सनेह बिशेषी। मैं करि प्रीति परीक्षा देषी
जो बिधि जन्म देइ कर छोहू। होहिं राम सिय पूत पतोहू
प्राणतें अधिक राम प्रिय मोरे। तिनके तिलक क्षोभ कस तोरे
अस प्रिय बचन सुनायो मोही। कहु मंथरा देहु का तोही
दो॰ भरत सपथ तोहि सत्य कहु परि हरि कपट दुराइ
हरष समय बिस्मय करसि कारण मोहि सुनाइ

बिदा होइ बन साज
टी॰
रा॰ अ॰
१०
सुत पिता समीप
जाइ बिदा भए ७६

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddh... Gangotri Gyaan Kosha

सुनत बचन मंथरा रिसानी। बोली बचन कपट छल सानी
एकहि बार आस सब पूजी। अब कछु कहब जीह कर दूजी
फोरे योग कपार अभागा। भलो कहत दुख रौरहु लागा
कहहु झूठ फुर बात बनाई। ते प्रिय तुमहिं करुइ मैं माई
हमहु कहब अब ठकुर सुहाती। नाहिं तो मौन रहब दिन राती
करि कुरूप बिधि परबस कीन्हा। बाचा साल हमैं बिधि दीन्हा
कोउ नृप होउ हमें का हानी। चेरि छाड़ि अब होब किरानी
जारे योग सुभाव हमारा। अनभल देखि न जाइ तुम्हारा
तातें कछुक बात अनुसारी। क्षमहु देवि बड़ चूक हमारी॥

दो॰ गूढ़ कपट प्रिय बचन सुनि तिय अधरन बुधरानि
सुर माया बस बैरिणिहि सुहृद जानि पतिआनि

सादर पुनि पुनि पूंछति ओही। सबरी गान मृगी जनु मोही
तस मति फिरी अहइ जसभावी। रहसी चेरि घात जनु फाबी
तुम पूंछउ मैं कहत डेराऊं। धरेउ मोरि घर फोरी नाऊं
जस प्रतीति बहु बिधि गढ़ि छोली। अवध साढ़ साती तब बोली
प्रिय सिय राम कहा तुम रानी। रामहिं तुम प्रिय सो फुरि बानी
रहा प्रथम अब ते दिन बीते। समउ फिरे रिपु होहिं पिरीते
भानु कमल कुल पोषन हारा। बिनु जल जारि करै सोइ छारा
जरि तुम्हारि चह सवति उपारी। रूंधहु करउपाय बर बारी॥

दो॰ तुम्हहिं न शोच सुहाग बल निज बस जानहु राउ
मन मलीन मुंह मीठ नृप राउर सरल सुभाउ॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चतुर गंभीर राम महतारी। बीच पाइ निज बात संवारी
पठये भरत भूपननि औरे। राम मातु मत जानव रौरे॥
सेवहिं सकल सवति मोहि नीके। गरबित भरत मातु बल पीके
साल तुम्हार कौशिलहि माई। कपट चतुर नहिं होइ जनाई
राजहिं तुम पर प्रेम बिशेखी। सवति सुभाव सकइ नहिं देखी
रचि प्रपंच भूपहि अपनाई। राम तिलक हित लगन धराई
यह कुल उचित राम कहुं टीका। सबहिं सुहाय मोहि सुठि नीका
आगलि बात समुझ डर मोही। देउ दैउ फिर सो फल ओही
दो. रचि पचि कोटिक कुटिल पन कीन्हेसि कपट प्रबोधु
कहसि कथा सत सवति कै जेहि बिधि बाहु बिरोधु
भावी बस प्रतीति उर आई। पूछि रानि पुनि सपथ देवाई
का पूछहु तुम अवहु न जाना। निज हित अनहित पशु पहिचाना
भएउ पाख दिन सजत समाजू। तुम पाई सुधि मोहि सन आजू
खाइअ पहिरिय राज तुम्हारे। सत्य कहे नहिं दोष हमारे
जो असत्य कछु कहब बनाई। तौ बिधि देइहि हमहिं सजाई
रामहिं तिलक काल जो भएऊ। तुम कहं बिपति बीज बिधि बयऊ
रेख खचाइ कहौं बल भाखी। भामिनि भइहु वूध की माखी
जौ सुत सहित करहु सेवकाई। तौ घर रहहु न आन उपाई
दो. कद्रू बिनतहिं दीन्ह दुख तुमहि कौशिला देव
भरत बंदि गृह सेइहहिं लषन राम के नेव
कैकय सुता सुनत कटु बानी। कहि न सकइ कछु सहमि सु

टी. रा. अ. १२

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तनप सेव कदली जिमि कांपी। कुवरी दशन जीह तव चांपी
कहि कहि कोटिक कपट कहानी। धीरज धरेउ प्रबोधेसि रानी॥
कीन्हेसि कठिन पढ़ाइ कुपाठू। जिमि न नवइ फिरउ कठा काठू
फिरा करमु प्रिय लागि कुचाली। बकिहि सराहहि मनहुं मराली
सुनि मंथरा बात फुरि तोरी। दहनि आंख नित फरकहि मोरी
दिन प्रति देखउं राति कुसपनें। कहउं न तोहि मोह बस अपनें
कहा करौं सखि सूध सुभाऊ। दाहिन बाम न जानउं काऊ
दो॰ अपने चलत न आजु लगि अनभल काहुक कीन्ह
केहि अघ एकहि बार मोहि दैव दुसह दुख दीन्ह
नैहर जन्म भरव बरु आई। जियत न करव सवति सेवकाई
अरि बस दैव जिआवत जाही। मरनु नीक तेहि जीवन चाही
दीन बचन कह बहु बिधि रानी। सुनि कुवरी तिय माया ठानी
अस कस कहहु मानि मन ऊना। सुख सुहाग तुम कहं दिन दूना
जेहि राउर अति अनभल ताका। सोइ पाइहि यह फल परिपाका
जबतें कुमति सुना मैं स्वामिनि। भूषन बासर नींद न जामिनि
पूछेउ गुनिन्ह रेख तिन्ह खांची। भरत भुआल होंहि यह सांची
भामिनि करउत कहौं उपाऊ। है तुम्हरी सेवा बस राऊ॥
दो॰ परौं कूप तव बचन पर सकौं पूत पति त्यागि
कहसि मोर दुख देख बड़ि कसन करव हित लागि
कुबरी करि कबली कै केई। कपट छुरी उर पाहन टेई॥
लषइ न रानि निकट दुख कैसे। चरइ हरित तृन बलि पशु जैसे

टी॰ रा॰ अ॰ १३

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनत बात मृदु अंत कठोरी। देति मनहुं मधु माहुर घोरी॥
कहइ चेरि सुधि अहइ कि नाहीं। स्वामिनि कहहु कथा मोहि पाहीं
दुइ बरदान भूप सन थाती। मांगहु आजु जुड़ावहु छाती
सुतहि राजु रामहिं बनबासू। देहु लेहु सब सवति हुलासू
भूपति राम सपथ जब करई। तब मांगेहु जेहि बचनु न टरई
होउ अकाजु आजु निसि बीते। बचन मोर प्रिय मानहु जीते
दो॰ बड़ कुघात करि पातकिनि कहेसि कोप गृह जाहु
काजु सवारेहु सजगु सब सहसा जनि पतिआहु
कुबरिहि रानि प्रान प्रिय जानी। बार बार बड़ि बुद्धि बखानी
तोहि सम हितु न मोहि संसारा। बहे जात कर भइसि अधारा
जो बिधि पुरब मनोरथु काली। करौं तोहि चख पूतरि आली
बहु बिधि चेरिहि आदरु देई। कोपभवन गवनी कैकेई॥
बिपति बीज बरषा रितु चेरी। भुइं भुंइ कुमति कैकेई केरी
पाइ कपट जल अंकुर जामा। बर दोउ दल दुख फल परिनामा
कोप समाजु साजि सबु सोई। राजु करत निज कुमति बिगोई
राउर नगर कोलाहलु होई। यह कुचालि कछु जान न कोई
दो॰ प्रमुदित पुर नर नारि सब सजहिं सुमंगल चार
इक प्रबिसहिं इक निर्गमहिं भीर भूप दरबार॥
बाल सखा सुनि हिय हरषाहीं। मिलि दस पांच राम पहं जाहीं
प्रभु आदरहिं प्रेम पहिचानी। पूछहिं कुसल खेम मृदु बानी
फिरहिं भवन प्रिय आयसु पाई। करत परस्पर राम बड़ाई

टी॰ रा॰ स॰ १४

को रघुवीर सरिस संसारा। सील सनेह निबाहन हारा॥
जेहि जेहि जोनि करम बस भ्रमहीं। तेहि तेहि ईसु देउ यह हमही
सेवक हम स्वामी सिय नाहू। होउ नाथ यह ओर निबाहू
अस अभिलाष नगर सब काहू। कैकै सुता हृदय अति दाहू
कोउ कुसंगति पाइ नसाई। रहै न नीच मते चतुराई॥
दो॰ साँझ समय सानंद नृपु गयो केकई गेह॥
गवनु निठुरता निकट किय जनु धरि देह सनेह
कोप भवन सुनि सकुचे राऊ। भय बस अगहुड़ परै न पाऊ
सुरपति बसइ बाहुबल जाके। नरपति सकल रहहिं रुख ताके
सो सुनि तिय रिस गयेउ सुखाई। देखहु काम प्रताप बड़ाई
सूल कुलिस असि अँगवनिहारे। ते रति नाथ सुमन सर मारे
सभय नरेस प्रिया पहं गयऊ। देखि दसा दुख दारुन भयऊ
भूमि सयन पटु मोट पुराना। दिये डार तन भूषन नाना
कुमतिहि कस कुबेषता फाबी। अन अहिवात सूच जनु भाबी
जाइ निकट नृप कहं मृदुबानी। प्रानप्रिया केहि हेतु रिसानी
छं॰ केहि हेतु रानि रिसानि परसत पानि पतिहि निबारही
मानहं सरोष भुअंग भामिनि बिषम भांति निहारही
दोउ बासना रसना दसन बर मरम ठाहरु देखई।
तुलसी नृपति भवितव्यता बस काम कौतुक लेखई
सो॰ बार बार कह राउ सुमुखि सुलोचनि पिक बचनि
कारन मोहि सुनाउ गज गामिनि निज कोप कर

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनहित तोरि प्रिया केहि कीन्हा। केहि दुइ सिर केहि जमु चह लीन्हा
कहु केहि रंकहि करौं नरेशू। कहु केहि नृपहिं निकासउ देशू
सकौं तोर अरि अमरौं मारी। काहि कीट बपुरे नर नारी
जानसि मोर सुभाउब रोरू। मन तव आनन चंद चकोरू
प्रिया प्रान सुत सर्बस मोरे। परिजन प्रजा सकल बस तोरे
जों कछु कहउं कपट करि तोहीं। भामिनि सपथ राम सत मोहीं
बिहंसि मांगु मन भावति बाता। भूषन सजहिं मनोहर गाता
घरी कुघरी समुझि जिय देखू। बेगि प्रिया परिहरिहि कुबेखू

दो॰ यह सुनि मन गुनि सपथ बड़ि बिहंसि उठी मति मंद
भूषन सजति बिलोकि मृग मनहुं किरातनि फंद

टी॰ रा॰ अ॰ २६

पुनि कह राउ सुहृद जिय जानी। प्रेम पुलकि मृदु मंजुल बानी
भामिनि भएउ तोर मन भावा। घर घर नगर अनंद बधावा
रामहिं देउं काल युवराजू। सजहिं सुलोचनि मंगल साजू
दलकि उठेउ सुनि हृदय कषेरू। जनु छुइ गएउ पाकबर तोरू
ऐसेउ पीर बिहंसि तब गोई। चोर नारि जिमि प्रगट न रोई
लखी न भूप कपट चतुराई। कोटि कुटिल मनि गुरू पढ़ाई
जद्यपि नीति निपुन नर नाहू। नारि चरित जल निधि अवगाहू
कपट सनेह बढ़ाइ बहोरी। बोली बिहंसि नयन मुंह मोरी

दो॰ मांगु मांगु पै कहहु पिय कबहुं न देहु न लेहु
देव कहेउ बरदान दुइ तेइ पावत संदेहु॥

जानेउ सरम राउ हंसि कहई। तुम्हहिं को होव परम प्रिय अ

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

घातिन राखेउ मांगेउ काऊ। बिसर गयो मोहि मोर सुभाऊ
झूठेहु हमहिं दोष जनि देहू। दुइ कै चार मांग किन लेहू ॥
रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्रान जाहु बर बचन न जाई
नहिं असत्य सम पातक पुंजा। गिरि सम होहि कि कोटिक गुंजा
सत्य मूल सब सुकृत सुहाये। बेद पुरान बिदित मुनि गाये
तेहि पर राम सपथ करि आई। सुकृत सनेह अवधि रघुराई
बात दृढ़ाइ कुमति हंसि बोली। कुमति कुबिहंग कुलह जनु खोली
दो॰ भूप मनोरथ सुभग बन सुख सु बिहंग समाज
भिल्लनि जिमि छांड़न चहति बचन भयंकर बाज
सुनहु पान पति भावत जीका। देहु एक बर भरतहिं टीका
मांगो दूसर बर कर जोरी। पुरवहु नाथ मनोरथ मोरी
तापस बेष बिशेष उदासी। चौदह बरष राम बनबासी
सुनि मृदु बचन भूप हिय सोकू। ससि कर छुअत बिकल जिमि कोकू
गएउ सहमि नहिं कछु कहि आवा। जनु सचान बन झपटेउ लावा
बिवरन भएउ निपट नरपालू। दामिनि हनेउ मनहु तरु तालू
मांथे हाथ मूदि दोउ लोचन। तनु धरि शोच लाग जनु सोचन
मोर मनोरथ सुर तरु फूला। फरत करिनि जिमि हतेउ समूला
अवध उतार कीन्ह कै केई। दीन्हेसि अचल बिपति कै नेई
दो॰ कवने अवसर का भएउ गयउ नारि बिश्वास ॥
जोग सिद्धि फल समय जिमि जतिहि अविद्या नास
एहि बिधि राउ मनहिं मन झाषा। देखि कुभांति कुमति मन माषा

टी॰
रा॰ अ॰
१७

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भरथ कि राउर पूत न होहीं । आनेहु बोलि बिसाहि कि मोहीं
जो सुनि सर अब लागु तुम्हारे । कहिन बोलहु बचन संभारे
देहु उतरु अरु कहहु कि नाहीं । सत्य संध तुम रघुकुल माहीं
देन कहेउ अब जनि बर देहू । तजहु सत्य जग अपयश लेहू
सत्य सराहि कहेउ बर देना । जानेउ लेइहि मांगि चबेना
शिव दधीच बलि जो कछु भाषा । तनु धनु तजेउ बचन प्रण राषा
अति कटु बचन कहबि कैकेई । मानहु लोन जरे पर देई
दो॰ धरम धुरंधर धीर धरि नयन उघारे राय ॥ ॥
सिर धुन लीन उसास असि मारेसि मोहि कुठाय
आगे दीख जरति रिस भारी । मनहुं रोष तरवार उघारी
मूढ़ कुबुद्धि धार निठुराई । धरी कूबरी सान बनाई ॥
लखी महीप कराल कठोरा । सत्य कि जीवनु लेइहि मोरा
बोले राउ कठिन करि छाती । बानी सबिनय तासु सोहाती
प्रिया बचन कस कहसि कुभांती । भीरु प्रतीति प्रीति कर हांती
मेरे भरत राम दुइ आंखी । सत्य कहहुं करि शंकर साखी
अवसि दूत मैं पठउब प्राता । ऐहहिं वेगि सुनत दोउ भ्राता
सुदिन साधि सब साज सजाई । देउं भरत कहं राज बजाई
दो॰ लोभु न रामहि राज कर बहुत भरत पर प्रीति
मैं बड़ छोट बिचारि जिय करत रहेंउ नृपनीति
राम सपथ सत कहउं सुभाऊ । राम मातु कछु कहेउ न काऊ
मैं सब कीनु तोहि बिनु पूछें । तेहि तें परेउ मनोरथ छूछे

टी॰ रा॰ अ॰ २८

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रिस परि हर अब मंगल साजू। कछु दिन गये भरत युव राजू
एकहि बात मोर दुख लागा। बर दूसर अस मंजस मांगा
अजहुं न हृदय जरत तेहि आंचा। रिस परिहास कि सांचेउ सांचा
कह तजि रोष राम अपराधू। सब कोउ कहइ राम सुठि साधू
तुहूं सराहसि करसि सनेहू। अब सुनि मोहि भएउ संदेहू
जासु सुभाउ अरिहि अनुकूला। सो किमि करहि मातु प्रतिकूला
दो॰ प्रिया हास रिस परिहरहि मांग बिचार बिबेक
जेहि देखों अब नयन भरि भरत राज अभिषेक
जिऐ मीन बरु बारि बिहीना। मनि बिनु फनिकु जियै दुखदीना
कहउ सुभाव न कछु मन माहीं। जीवन मोर राम बिनु नाहीं
समुझि देखि जिय प्रिया प्रवीना। जीवन राम दरस आधीना
सुनि मृदु बचन कुमति अति जरई। मनहुं अनल आहुति घृत परई
कहइ करहु किन कोटि उपाया। इहां न लागहि राउरि साया
देहु कि लेहु असज करि नाहीं। मोहि न बहुत प्रपंच सोहाहीं
राम साधु तुम साधु सयाने। राम मातु भलि सब पहिचाने
जस कोसिला मोर भल ताका। तस फल उन्हहिं देहु करि साका
दो॰ होत प्रात मुनि बेष धरि जौन राम बन जाहिं
मोर मरन राउर अजस नृप समुझिय मन माहिं
अस कहि कुटिल भई उठ ठाढ़ी। मानहुं रोष तरंगिनि बाढ़ी॥
पाप पहार प्रगट भइ सोई। भरी क्रोध जल जाइ न जोई
दोउ बर कूल कठिन हठ धारा। भंवर कूबरी बचन प्रचारा॥

दो॰ रा॰ अ॰ १६

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ढाहत भूप रूप तरु मूला। चली बिपति बारिधि अनुकूला
लखी नरेस बात सब साँची। तिय मिस मीचु सीस पर नाँची
गहि पद बिनय कीन्ह बैठारी। जनि दिनकर कुल होसि कुठारी
मागु माथ अबहीं देउँ तोही। राम बिरह जनि मारसि मोही
राखु राम कहुँ जेहि तेहि भाँती। जाहित जरहि जन्म भरि छाती
दो॰ देखी ब्याधि असाध नृप परेउ धरनि धुनि माथ
कहत परम आरत बचन राम राम रघुनाथ ॥
ब्याकुल राउ सिथिल सब गाता। करिनि कलप नरु मनहुँ बिपाता
कंठ सूख मुख आव न बानी। जनु पाठीन दीन बिनु पानी
पुनि कह कटु कठोर कैकेई। मनहुँ घाव महुँ माहुर देई
टी॰ रा॰ अ॰ २० जौ अंतहु अस करतब रहेऊ। माँगु माँगु तुम केहि बल कहेऊ
दुइ कि होंहि एक समय भुआला। हँसब ठठाइ फुलाउब गाला
दानि कहाउब अरु कृपनाई। होइ कि खेम कुसल रौताई
छाड़हु बचन कि धीरज धरहू। जनि अबला जिमि करुना करहू
तनु तिय तनय धाम धनु धरनी। सत्य संध कहुँ तृन सम बरनी
दो॰ मरम बचन सुनि राउ कह कहु कछु दोषु न तोर
लागेउ तोहि पिसाच जिमि काल कहावत मोर
चरत न भरत भूप पद भोरे। बिधि बस कुमति बसी उर तोरे
सो सब मोर पाप परिनामू। भयउ कुठाहर जेहि बिधि बामू
सुबस बसिहि फिर अवध सुहाई। सब गुन धाम राम प्रभुताई
करिहहिं भाइ सकल सेवकाई। होइहि तिहुँ पुर राम बड़ाई

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मोर कलंक ओर पछिताऊ। मुएहुँ न मिटहि न जाइहि काऊ
अब तोहि नीक लाग करु सोई। लोचन ओट बैठु मुंह गोई
जब लगि मिऊँ कहउँ कर जोरी। तब लगि जनि कछु कहसि बहोरी
फिर पछितैहसि अंतर नाही। मारसि गाय नहरु हि लागी
दो॰ परेउ राउ कहि कोटि बिधि काहे करसि निदान
कपट सयानिन कहति कछु जागति मनहुं मसान
राम राम रट बिकल भुआलू। जनु बिनु पंखहि बिहंग बिहालू
हृदयं मनाव भोरु जनि होई। रामहिं जाइ कहइ जनि कोई
उदय करहु जनि रबि रघुकुलगुर। अवध बिलोकि सूलहोइहि उर
भूप प्रीति कैकेइ कठिनाई। उभय अवधि बिधि रची बनाई
बिलपति नृपहि भयउ भिनुसारा। बीना बेनु संख धुनि द्वारा
पढ़हिं भाट गुन गावहिं गायक। सुनत नृपहिं जनु लागहिं सायक
मंगल सकल सोहाइ न कैसे। सहगामिनिहि बिभूषण जैसे
तेहि निसि नींद परी नहिं काहू। राम दरस लालसा उछाहू
दो॰ द्वार भीर सेवक सचिव कहहिं उदित रबि देख
जागेउ अजहुं न अवध पति कारन कवन बिसेष
पिछले पहर भूप नित जागा। आजु हमहिं बड़ अचरजु लागा
जाहु सुमंत्र जगावहु जाई। कीजिय काजु रजायसु पाई॥
गए सुमंत्र तब राउर पाहीं। देखि भयानक जात डेराहीं
धाइ खाइ जनु जाइ न हेरा। मानहुं बिपति बिषाद बसेरा
पूंछे कोउ न उत्तर देई। गए जेहि भवन भूप कैकेई

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कहि जय जीव बैठ सिर नाई। देखि भूप गति गएउ सुखाई
शोच बिकल बिबरन महि परेऊ। मानहु कमल मूल परिहरेऊ
सचिव सभीत सकै नहिं पूंछी। बोली असुभ भरी सुभ छूछी
दो॰ परी न राजहिं नींद निसि हेतु जानु जगदीश ॥
राम राम रट भोर किय कहदु न मरम महीश
आनहु रामहि बेग बुलाई। समाचार तब पूंछेहु आई ॥
चलेउ सुमंत राउ रुख जानी। लखी कुचालि कीन्ह कछु रानी
शोच बिकल मग परइ न पाऊ। रामहिं बोलि कहहिं का राऊ
उर धरि धीरजु गयेउ दुआरे। पूंछहिं सकल देखि मनु मारे
समाधान कर सो सबही का। गयउ जहां दिनकर कुल टीका
राम सुमंतहि आवत देखा। आदर कीन्ह पिता सम लेखा
निरखि बदन कहं भूप रजाई। रघुकुल दीपहि चले लिवाई
राम कुभांति सचिव संग जाहीं। देखि लोग जहं तहं बिलखाहीं
दो॰ जाइ दीख रघुबंश मणि नरपति निपट कुसाजु
सहमि परेउ लखि सिंहनिहिं मनहुं बृद्ध गज राजु
सूखहि अधर जरहिं सब अंगू। मनहुं दीन मनि हीन भुअंगू
सरुख समीप देखि कैकेई। मानहु मीचु घरी गनि लेई
करुना मय मृदु राम सुभाऊ। प्रथम दीख दुख सुना न काऊ
तदपि धीर धरि समउ बिचारी। पूंछी मधुर बचन महतारी
मोहि कहु मात तात दुख कारन। करिय जतन जेहि होइ निवारन
सुनहु राम सब कारन एहू। राजहि तुम पर परम सनेहू

टी॰ रा॰ रा॰ २२

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

देन कहेउ मोहि दुइ बरदाना। मांगेउ जो कछु मोहि सुहाना॥
सो सुनि भयउ भूप उर सोचू। छोड़ि न सकहिं तुम्हार सकोचू॥

दो॰ सुत सनेह इत बचन उत संकट परेउ नरेस॥
सकहु तो आयसु धरहु सिर मेटहु कठिन कलेस॥

निधरक बैठि कहै कटु बानी। सुनत कठिनता अति अकुलानी
जीभ कमान बचन सर नाना। मनहु महिप मृदु लक्ष समाना॥
जनु कठोर पनु धरे धरीरू। सिखइ धनुष बिद्या बर बीरू॥
सब प्रसंग रघुपतिहि सुनाई। बैठि मनहुं तनु धरि निठुराई॥
मन मुसकाय भानु कुल भानू। राम सहज आनंद निधानू॥
बोले बचन बिगत सब दूषन। मृदु मंजुल जनु बाग बिभूषन॥
सुनु जननी सोइ सुतु बड़भागी। जो पितु मातु बचन अनुरागी॥
तनय मातु पितु तोषन हारा। दुर्लभ जननि सकल संसारा॥

दो॰ मुनि गन मिलन बिशेष बन सबहि भांति हित मोर
तेहि महं पितु आयसु बहुरि संमत जननी तोर॥

भरत प्राण प्रिय पावहिं राजू। विधि सब बिधि मोहि सन्मुख
जौ न जाउं बन ऐसेहु काजा। प्रथम गनिय मोहि मूढ़ समाजा॥
सेवहिं अरंड कल्प तरु त्यागी। परिहर अमृत लेहि बिष मागी॥
तेउन पाइ अस समय चुकाहीं। देखु बिचारि मातु मन माहीं॥
अंब एक दुख मोहि बिशेषी। निपट बिकल नर नायक देखी॥
थोरिहि बात पितहि दुखभारी। होति प्रतीति न मोहि महतारी॥
राउ धीर गुण उदधि अगाधू। भा मोहि तें कछु बड़ अपराधू॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जोतें मोहि न कहत कछु राऊ। मोरि सपथ तोहि कहु सतभाऊ
दो॰ सहज सरल रघुवर बचन कुमति कुटिल करि जान
चलइ जोंक जिमि बक्र गति जद्यपि सलिल समान
रहसी रानि राम रुख पाई। बोली कपट सनेह जनाई
सपथ तुम्हारि भरत कइ आना। हेतु न मैं कछु दूसर जाना
तुम अपराध जोग नहिं ताता। जननी जनक बंधु सुखदाता
राम सत्य जो सब कछु कहहू। तुम पितु मातु बचन रति अहहू
पितहि बुझाइ कहहु बलि सोई। चौथे पन जेहिं अजस न होई
तुम सम सुवन सुकृत जेहिं दीन्हे। उचित न तासु निरादर कीन्हे
लागहिं कुमुख बचन सुभ कैसे। मगह गयादिक तीरथ जैसे
रामहिं मातु बचन सब भाए। जिमि सुर सरि गत सलिल सुहाए
टी॰ रा॰ अ॰ २५
दो॰ गइ मुरुछा रामहि सुमिरि नृप फिरि करवट लीन्ह
सचिव राम आगमनु कहि बिनय समय सम कीन्ह
अविनय अकनि राम पगुधारे। धरि धीरज तब नयन उघारे
सचिव संभारि राउ बैठारे। चरन परत नृप राम निहारे
लिये सनेह बिकल उर लाई। गद मनि मनहुं फनिक फिरि पाई
रामहिं चितइ रहेउ नर नाहू। चला बिलोचन बारि प्रवाहू
सोक बिबस कछु कहइ न पारा। हृदय लगावत बारहिं बारा
बिधिहि मनाउ राउ मन माहीं। जेहि रघुनाथ न कानन जाहीं
सुमिरि महेसहि कहइ निहोरी। बिनती सुनहु सदा सिव मोरी
आसुतोष तुम अवढर दानी। आरति हरहु दीन जनु जानी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो॰ तुम प्रेरक सब के हृदय सो मति रामहिं देहु
बचन मोर तजि रहहिं घर परिहर सील सनेहु

अयसु होउ वर सुयश नसाऊं। नरक परौं वरु सुरपुर जाऊं
सब दुख दुसह सहावहु मोही। लोचन ओट सदा जनि होही
अस मन गुणित राउ नहिं बोला। पीपर पात सरिस मन डोला
रघुपति पितहि प्रेम बस जानी। पुनि कछु कहेउ मातु अनुमानी
देश काल अवसर अनुसारी। बोले बचन विनीत विचारी
तात कहौं कछु करौं ढिठाई। अनुचित क्षमब जानि लरकाई
अति लघु बात लागि दुख पावा। काहुन कहि मोहि अथम जनावा
देखि गुसाइहिं पूछेउ माता। सुनि प्रसंग भा सीतल गाता

दो॰ मंगल समय सनेह बस शोच परिहरिय तात
आयसु देइय हरषि हिय कहि पुलके प्रभु गात

धन्य जन्म जग सीतल तासू। पितहि प्रमोद चरित सुनजासू
चारि पदारथ करतल ताके। प्रिय पितु मातु प्राण सम जाके
आयसु पालि जन्म फल पाई। आयेहौं बेगि जो होउ रजाई
बिदा मातु सन आवौं मागी। चलिहौं बनहिं बहुरि पग लागी
अस कहि राम गवन तब कीन्हा। भूप शोक बस उतर न दीन्हा
नगर व्याप गइ बात सुतीछी। छुवत चढ़ी जनु सबतनु बीछी
सुनि भये बिकल सकल नरनारी। बेल बिटप जनु देखु दवारी
जो जहं सुनै धुनै शिर सोई। बड़ बिषाद नहिं धीरज होई

दो॰ मुख सूखहिं लोचन श्रवहिं सोक न हृदय समाय

टी॰ रा॰ अ॰ २५

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मानहु करुणा रस कटक उतरा अवध बजाय

भलि बनाय बिधि बात बिगारी। जहं तहं देहिं कैकेइहि गारी
इहि पापिनिहि बूझि का परेऊ। छाय भवन पर पावक धरेऊ
निज कर नयन काट चह दीखा। डारि सुधा बिष चाहत चीखा
कुटिल कठोर कुबुद्धि अभागी। भइ रघुबंश बेणु बन आगी
पल्लव बैठि पेड़ इन काटा। सुख मैं शोक ठाट धरि ठाटा
सदा राम इहि प्राण समाना। कारण कवन कुटिल पन ठाना
सत्य कहहिं कवि नारि सुभाऊ। सब बिधि अगम अगाध दुराऊ
निज प्रति बिंब बरु कि कह जाई। जानि न जाइ नारि गति भाई

दो॰ काह न पावक जारि सक का न समुद्र समाइ
कान करै अबला प्रबल केहि जग काल न खाइ

का सुनाइ बिधि काह सुनावा। का देखाय चह काह दिखावा
एक कहहिं भल भूप न कीन्हा। बरु बिचार नहिं कुमतिहि दीन्हा
जो हठि भएउ सकल दुख भाजन। अबला बिबस ज्ञान गुन गाजन
एक धरम परमति पहिचाने। नृपहिं दोष नहिं देहिं सयाने
शिवि दधीचि हरिचंद कहानी। एक एक सन कहहिं बखानी
एक भरत कर संमत कहहीं। एक उदास भाय सुन रहहीं
कान मूंदि कर रद गहि जीहा। एक कहहिं यह बात अलीहा
सुकृत जाइ अस कहत तुम्हारे। राम भरत कहं प्रान पियारे

दो॰ चंद श्रवइ बरु अनल कन सुधा होइ बिष तूल
सपनेहु कबहु न करहिं कछु भरत राम प्रतिकूल

टी॰ रा॰ अ॰ २६

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एक बिधातहिं दूषन देहीं । सुधा दिखाइ दीन्ह बिष जेहीं
खर भर नगर सोच सब काहू । दुसह दाह उर मिटा उछाहू
बिप्र बधू कुल मान्य जेठेरी । जे प्रिय परम कैकेई केरी ॥
लगीं देन सिख सील सराही । बचन बान सम लागहिं ताही
भरत मोहि प्रिय राम समाना । सदा कहहु यह सब जग जाना
करहु राम पर सहज सनेहू । केहि अपराध आजु बन देहू
कबहुँ न कियेहु सवति आरेसू । प्रीति प्रतीति जान सब देसू
कौसिल्या अब काह बिगारा । तुम जेहि लागि बज्र पुर पारा

दो॰ सीय कि पिय संगु परिहरिहि लषन कि रहिहहिं धाम
राज कि भूंजब भरत पुर नृप कि जिअहिं बिनु राम

अस बिचारि उर छाड़हु कोहू । सोक कलंक कोटि जनु होहू
भरतहि अवसि देहु जुबराजू । कानन काह राम कर काजू ॥
नाहिन राम राज के भूखे । धरम धुरीन बिषय रस रूखे
गुरु गृह बसहुँ राम तजि गेहू । नृप सन अस बर दूसर लेहू
जौं नहिं लगिहहु कहे हमारे । नहिं लागिहि कछु हाथ तुम्हारे
जौं परिहास कीन्ह कछु होई । तौ कहि प्रगट जनावहु सोई
राम सरिस सुत कानन जोगू । काह कहहिं सुनि तुम्ह कहुँ लोगू
उठहु बेगि सोइ करहु उपाई । जेहि बिधि सोक कलंक नसाई

छं॰ जेहि भाँति सोक कलंकु जाइ उपाय करि कुल पालही
हठि फेरि रामहि जात बन जनि बात दूसरि चालही
जिमि भानु बिनु दिन भानु बिनु तनु चंद बिनु जनु जामिनी

दो॰ अ॰ २७

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तिमि अवध तुलसी दास प्रभु बिनु समुझौं जिय भामिनी
सो. सखिन सिखावन दीन्ह सुनत मधुर परनाम हित
तेहि कछु कानन कीन्ह कुटिल प्रबोधी कूबरी
उतरु न देइ दुसह रिस रूखी। सृगन चितव जनु बाधिनि भूखी
ब्याधि असाधि जानि तिन्ह त्यागी। चली कहत मतिमंद अभागी
राज करत यह दैअ बिगोई। कीन्हेसि अस जस करइ न कोई
एहि बिधि बिलपहिं पुर नर नारी। देहिं कुचालिहिं कोटिक गारी
जरहिं बिषम जर लेहिं उसासा। कवनि राम बिनु जीवन आसा
बिपुल बियोग प्रजा अकुलानी। जनु जलचर गन सूखत पानी
अति बिषाद बस लोग लुगाई। गये मातु पहं राम गोसाईं
मुख प्रसन्न चित चौगुन चाऊ। एहे सोच जनि राखै राऊ
दो. नव गयंद रघुबीर मनु राज अलान समान
छूट जानि बन गवन सुनि उर अनंद अधिकान
रघुकुल तिलक जोर दोउ हाथा। मुदित मातु पद नाएउ माथा
दीन्ह असीस लाइ उर लीन्हे। भूषन बसन निछावर कीन्हे
बार बार मुख चुंबति माता। नयन नेह जल पुलकित गाता
गोद राखि पुनि हृदय लगाए। स्रवत प्रेम रस पयद सुहाये
प्रेम प्रमोद न कछु कहि जाई। रंक धनद पदवी जनु पाई।
सादर सुंदर बदन निहारी। बोली मधुर बचन महतारी॥
कहहु तात जननी बलिहारी। कबहिं लगन मुद मंगलकारी
सुकृत सील सुख सीवं सुहाई। जन्म लाभ कर अवध अघाई

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो॰ जेहि चाहत नर नारि सब अति आरत एहि भांति
जिमि चातक चातकि तृषित वृष्टि सरद ऋतु स्वाति
तात जाउ बलि बेगि नहाऊ। जो मन भाव मधुर कछु खाऊ
पितु समीप तब जाएहु भैया। भै बड़ बार जाउ बलि मैया॥
मातु बचन सुनि अति अनुकूला। जनु सनेह सुर तरु के फूला
सुख मकरंद भरे श्रिय मूला। निरखि राम मनु भवरु न भूला
धरम धुरीन धरम गति जानी। कहेउ मातु सन अति मृदु बानी
पिता दीन्ह मोहि कानन राजू। जहं सब भांति मोर बड़ काजू
आयसु देहि मुदित मन माता। जेहिं मुद मंगल कानन जाता
जनि सनेह बस डरपसि मोरे। आनंद अंब अनुग्रह तोरे॥
दो॰ बर्ष चारि दस बिपिन बस करि पितु बचन प्रमान
आइ पाइ पुनि देखिहौं मन जनि करसि मलान
बचन बिनीत मधुर रघुबर के। सर सम लगे मातु उर करके
सहमि सूखि सुनि सीतल बानी। जिमि जवासु पर पावस पानी
कहि न जाइ कछु हृदय बिषादू। मनहुं मृगी सुनि केहरि नादू
नयन सजल तन थर थर कांपी। मांजहि खाइ मीन जनु मांपी
धरि धीरज सुत बदन निहारी। गद गद बचन कहति महतारी
तात पितहि तुम्ह प्रान पियारे। देखि मुदित नित चरित तुम्हारे
राज देन कहं सुभ दिन साधा। कहेउ जान बन केहि अपराधा
तात सुनावहु मोहि निदानू। को दिनकर कुल भयउ कृशानू
दो॰ निरखि राम रुख सचिव सुत कारन कहेउ बुझाइ

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनि प्रसंग रहि मूक जिमि दशा बरनि नहिं जाइ
रावन सकहि न कहि सक जाहू। दुहूं भांति उर दारुण दाहू
लिखत सुधाकर गा लिखि राहू। बिधि गति बाम सदा सब काहू
धरम सनेह उभय मति घेरी। भइ गति सांप छछूंदर केरी
राखौं सुतहि करौं अनुरोधू। धर्म जाइ अरु बंधु बिरोधू॥
कहौं जान बन तौ बड़ि हानी। संकट सोच बिबस भइ रानी
बहुरि समुझि तिय धरम सयानी। राम भरत दोउ सुत सम जानी
सरल सुभाउ राम महतारी। बोली बचन धीर धरि भारी॥
तात जाउं बलि कीन्हेउ नीका। पितु आयसु सब धरम कटीका
दो॰ राजदेन कहि दीन्ह बन मोहि न सो दुख लेश।
तुम बिनु भरतहि भूपतिहि प्रजहि प्रचंड कलेश॥
जौ केवल पितु आयसु ताता। तौ जनि जाहु जानि बड़ि माता
जौ पितु मातु कहेउ बन जाना। तौ कानन सत अवध समाना
पितु बनदेव मातु बन देवी। खग मृग चरन सरोरुह सेवी
अंतहु उचित नृपहि बन बासू। बय बिलोकि हियहोत हरासू
बड़भागी बन अवध अभागी। जो रघुबंस तिलक तुम त्यागी
जौ सुत कहौं संग मोहि लेहू। तुम्हरे हृदय होइ संदेहू॥
पूत परम प्रिय तुम सबहीके। प्रान प्रान के जीवन जीके
ते तुम कहहु मातु बन जाऊं। मैं सुनि बचन बैठि पछिताऊं
दो॰ यह बिचार नहिं करौं दृढ़ पूत सनेह बढ़ाइ॥
जानि मातु कर नात बलि सुरति बिसरि जनि जाइ

दी॰ रा॰ अ॰ २

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

देव पितर सब तुमहि गोसाईं। राखहु पलक नयन की नाईं
अवधि अंबु प्रिय परिजन मीना। तुम करुना कर धरम धुरीना
अस विचारि सोइ करहु उपाई। सबहि जिअत जेहि भेटहु आई
जाहु सुषेन बनहिं बल जाऊं। करि अनाथ जन परिजन गाऊं
सब कर आजु सुकृत फल बीता। भएउ कराल काल बिपरीता
बहु बिधि बिलपि चरन लपटानी। परम अभागिनि आपुहि जानी
दारुन दुसह दाह उर व्यापा। बरनिन जाइ बिलाप कलापा
राम उठाइ मात उर लाई। कहि मृदु बचन बहुरि समुझाई

दो॰ समाचार तेहि समय सुनि सीय उठी अकुलाइ
जाइ सासु पद कमल युग बंदि बैठि शिर नाइ

दीन्ह अशीश सासु मृदु बानी। अति सुकुमारि देख अकुलानी
बैठि नमित मुख सोचति सीता। रूप राशि पति प्रेम पुनीता
चलन चहत बन जीवन नाथू। केहि सुकृत सन होइहि साथू
की तनु प्रान कि केवल प्राना। बिधि कर तब कछु जाइ न जाना
चारु चरन नख लेखति धरनी। नूपुर मुखर मधुर कवि बरनी
मनहुं प्रेम बस बिनती करहीं। हमहि सीय पद जनि परहरहीं
मंजु बिलोचन लोचति बारी। बोली देख राम महतारी॥
तात सुनहु सिय अति सुकुमारी। सास ससुर परिजनहि पियारी

दो॰ पिता जनक भूपाल मणि ससुर भानु कुल भानु
पति रवि कुल कैरव बिपिन बिधु गुन रूप निधानु

मैं पुनि पुत्र बधू प्रिय पाई। रूप राशि गुन शील सुहाई

टी॰ रा॰ अ॰ ३१

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नयन पुतरि करि प्रीति बढ़ाई। राखेउ प्रान जानकिहि लाई
कलप बेलि जिमि बहु बिधि लाली। सींच सनेह सलिल अति पाली
फूलत फलत भएउ बिधि बामा। जानि न जाइ काह परिनामा
पलंग पीठ तजि गोद हिंडोरा। सियन दीन्ह पद रज निकोरा
जिअनि मूरि जिमि जोगवत रहऊं। दीप बाति नहिं टारन कहऊं
सोइ सिय चलन कहति बन साथा। आयसु काह होइ रघुनाथा
चंद किरन रस रसिक चकोरी। रवि रुख नयन सकइ किमि जोरी

दो॰ करि केहरि निसिचर चरहिं दुष्ट जंतु बन भूरि
बिष बाटिका कि सोह सुत सुभग सजीवन मूरि

बन हित कोल किरात किसोरी। रची बिरंचि बिषय सुख भोरी
पाहन कृमि जिमि कठिन सुभाऊ। तिन्हहि कलेसु न कानन काऊ
कै तापस तिय कानन जोगू। जिन्ह तप हेतु तजा सब भोगू
सिय बन बसहिं तात केहि भांती। चित्र लिखित कपि देखि डेराती
सुर सर सुभग बनज बन चारी। डाबर जोगु कि हंस कुमारी
अस बिचारि जसु आयसु होई। मैं सिख देउं जानकिहि सोई
जो सिय भवन रहै कह अंबा। मोहि कहं होइ बहुत अवलंबा
सुनि रघुबीर मातु प्रिय बानी। सील सनेह सुधां जनु सानी

दो॰ कहि प्रिय बचन बिबेक मय कीन्ह मातु परितोष
लगे प्रबोधन जानकिहि प्रगट बिपिन गुन दोष

मातु समीप कहति सकुचाहीं। बोले समय समुझि मन माहीं
राज कुमारि सिखावनु सुनहू। आन भांति जिय जनि कछु गुनहू

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आपन मोर नीक जो चहहू। बचन हमार मान गृह रहहू
आयसु मोर सासु सेवकाई। सब बिधि भामिनि भवन भलाई
येहि ते अधिक धरम नहिं दूजा। सादर सासु ससुर पद पूजा
जब जब मातु करिहि सुध मोरी। होइहि प्रेम बिकल मति भोरी
तब तब तुम कहि कथा पुरानी। सुंदर समुझायेउ मृदु बानी
कहौं सुभाय सपथ शत मोही। सुमुखि मातु हित राखौं तोही
दो॰ गुरु श्रुति संमत धरम फल पाइय बिनहिं कलेश
हठि बस सब संकट सहे गालव नहुष नरेश ॥
मैं पुनि करि प्रमान पितु बानी। बेगि फिरब सुनु सुमुखि सयानी
दिवस जात नहिं लागहिं बारा। सुंदरि सिखवनु सुनहु हमारा
जो हठ करहु प्रेम बस बामा। तौ तुम दुख पाउब परिनामा
कानन कठिन भयंकर भारी। घोर घाम हिम बारि बयारी
कुस कंटक मग कांकर नाना। चलब पयादिहि बिनु पदत्राना
चरन कमल मृदु मंजु तुम्हारे। मारग अगम भूमि धर भारे
कंदर खोह नदी नद नारे। अगम अगाधि न जाहिं निहारे
भालु बाघ बृक केहरि नागा। करहिं नाद सुनि धीरज भागा
दो॰ भूमि सयन बल कल बसन असन कंद फल फूल
ते कि सदा सब दिन मिलहि समय समय अनुकूल
नर अहार रजनीचर करहीं। कपट बेष बिधि कोटिक फिरहीं
लागै अति पहार कर पानी। बिपिन बिपति नहिं जाइ बखानी
ब्याल कराल बिहंग बन घोरा। निशिचर निकर नारि नर चोरा

टी॰ रा॰ अ॰ ३३

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दुरपहिं धीर गहन सुधि आये। मृग लोचनि तुम भीरु सुनाये
हँसगमनि तुम नहिं बन जोगू। सुनि अपयस मोहि देइहि लोगू
मानस सलिल सुधा प्रतिपाली। जिअइ कि लवनि पयोधि मराली
नव रसाल बन बिहरन शीला। सोह कि कोकिल विपिन करीला
रहसु भवन अस हृदय बिचारी। चंद बदनि दुख कानन भारी
दो॰ सहज सुहृद गुरु स्वामि सिख जो न करइ सिर मानि
सो पछिताय अघाय उर अवसि होइ हित हानि॥
सुनि मृदु बचन मनोहर पियके। लोचन ललित भरे जल सियके
सीतल सिख दाहक भइ कैसे। चकइहि सरद चांदनी जैसे
उतर न आव बिकल बैदेही। तजन चहत शुचि स्वामि सनेही
बरबस रोकि बिलोचन बारी। धरि धीरज उर अवनि कुमारी
लागि सासु पग कह कर जोरी। छमबि देबि बड़ि अबिनय मोरी
दीन्ह प्रानपति मोहि सिख सोई। जेहि बिधि मोर परम हित होई
मैं पुनि दीख समुझि मन माहीं। पिय बियोग सम दुख जग नाहीं
दो॰ प्रान नाथ करुणायतन सुंदर सुखद सुजान
तुम बिनु रघुकुल कुमुद बिधु सुरपुर नरक समान
मातु पिता भगनी प्रिय भाई। प्रिय परिवार सुहृद समुदाई
सासु ससुर गुरु सुजन सहाई। सुत सुंदर सुशील सुखदाई
जहं लगि नाथ नेह अरु नाते। पिय बिनु तियहि तरनिहु ते ताते
तनु धनु धाम धरनि पुर राजू। पति बिहीन सबु शोक समाजू
भोग रोग सम भूषन भारू। जम जातना सरिस संसारू

दो॰ रा॰ अ॰ १४

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्राणनाथ तुम बिनु जग माहीं। मो कहं सुखद कतहु कोउ नाहीं
जिय बिनु देह नदी बिनु बारी। तैसहिं नाथ पुरुष बिनु नारी
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारे। सरद बिमल बिधु बदन निहारे

दो॰ खग मृग परिजन नगर बन बलकल बिमल दुकूल
नाथ साथ सुर सदन सम पर्ण शाल सुख मूल॥

बन देवी बन देव उदारा। करिहैं सासु ससुर सन सारा॥
कुश किशलय साथरी सुहाई। प्रभु संग मंजु मनोज तुराई
कंद मूल फल अमिय अहारू। अवध सौध शत सरस पहारू
क्षण क्षण प्रभु पद कमल बिलोकी। रहिहौं मुदित दिवस जिमि कोकी
बन दुख नाथ कहे बहुतेरे। भय बिखाद परिताप घनेरे॥
प्रिय वियोग लवलेश समाना। सब मिल होहि न कृपा निधाना
अस जिय जानि सुजान सिरोमनि। लेइय संग मोहि छांड़िय जनि
बिनती बहुत करौं का स्वामी। करुणा मय उर अंतर जामी

दो॰ राखिय अवध जो अवधि लगि रहत जानिये प्राण
दीन बंधु सुंदर सुखद शील सनेह निधान॥

मोहि मग चलत न होइहि हारी। क्षण क्षण चरण सरोज निहारी
सबहि भांति प्रिय सेवा करिहौं। मारग जनित सकल श्रम हरिहौं
पांव पखारि बैठि तरु छाहीं। करिहौं पवन मुदित मन माहीं
श्रम कण सहित श्याम तनु देखे। का दुख समय प्राण पति पेखे
सम महि तृण तरु पल्लव डासी। पाय पलोटिहि सब निसि दासी
बार बार मृदु मूरति जोही। लागिहि ताप बयार न मोही॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

को प्रभु संग मोहि चितवनिहारा। सिंहबधुहि जिमि ससक सिआरा
मैं सुकुमारि नाथ बन जोगू। तुमहिं उचित तप मोकहं भोगू
दो॰ ऐसे बचन कठोर सुनि जौं हृदय बिलगान ॥
तौ प्रभु बिषम बियोग दुख सहिहहिं पावरप्रान
अस कहि सीय बिकल भइ भारी। बचन बियोग न सकी सँभारी
देखि दसा रघुपति जिय जाना। हठ राखे नहिं राखिहि प्राना
कहेउ कृपाल भानुकुल नाथा। परिहर सोच चलहु बन साथा
नहिं बिषाद कर अवसर आजू। बेगि करहु बन गवन समाजू
कहि प्रिय बचन प्रिया समुझाई। लगे मातु पद आसिष पाई
बेगि प्रजा दुख मेटब आई। जननी निठुर बिसरि जनि जाई
दो॰ फिरहि दसा बिधि बहुरि कि मोरी। देखिहौं नयन मनोहर जोरी
सुदिन सुघरी तात कब होइहि। जननी जिअत बदन बिधु जोइहि
बहुरि बच्छ कहि लालु कहि रघुपति रघुबर तात
कबहिं बोलाइ लगाइ हिय हरषिब निरखिब गात
लखि सनेह कातर महतारी। बचनु न आव बिकल भइ भारी
राम प्रबोधु कीन्ह बिधि नाना। समय सनेहु न जाइ बखाना
तब जानकी सासु पद लागी। सुनिय माय मैं परम अभागी
सेवा समय दैअँ बनु दीन्हा। मोर मनोरथु सुफलु न कीन्हा
तजब छोभु जनि छाड़िय छोहू। करम कठिन कछु दोसु न मोहू
सुनि सिय बचन सासु अकुलानी। दसा कवन बिधि कहौं बखानी
बारहिं बार लाइ उर लीन्ही। धरि धीरजु सिख आसिष दीन्ही

दो॰ रा॰ अ॰ ३६

अचल होउ अहि बात तुम्हारा। जब लगि गंग जमुन जलधारा

दो॰ सीतहि सासु अशीश सिख दीन्ह अनेक प्रकार
चली नाइ पद पदुम शिर अति हित बारहि बार॥

समाचार जब लक्ष्मण पाए। व्याकुल बिलख बदन उठि धाए
कंप पुलकि तन नयन सनीरा। गहे चरण अति प्रेम अधीरा
कहि न सकत कछु चितवत ठाढ़े। मीन दीन जनु जल तें काढ़े
शोच हृदय विधि कहा बिचारा। सब सुख सुकृत सिरान हमारा
मो कहुं काहु कहब रघुनाथा। रखिहहिं भवन कि लेइहिं साथा
राम बिलोकि बंधु कर जोरें। देह गेह सब सन तृण तोरें॥
बोले बचन राम नय नागर। शील सनेह सरल सुख सागर
तात प्रेम बस जनि कदराहू। समुझि हृदय परिनाम उछाहू

दो॰ मातु पिता गुर स्वामि सिख सिर धरि करहिं सुभाय
लहेउ लाभ तिन्ह जन्म कर नतरु जन्म जग जाय

अस जिय जानि सुनहु सिख भाई। करहु मातु पितु पद सेवकाई
भवन भरत रिपुसूदन नाहीं। राउ वृद्ध मम दुख मन माहीं॥
मैं बन जाउं तुमहिं ले साथा। होइ सबहिं बिधि अवध अनाथा
गुरु पितु मातु प्रजा परिवारू। सब कहं परइ दुसह दुख भारू
रहहु करहु सब कर परितोषू। नतरु तात होइहि बड़ दोषू
जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी। सो नृप अवसि नरक अधिकारी
रहहु तात अस नीति बिचारी। सुनत लषण भये व्याकुल भारी
सियरे बचन सूखि गए कैसे। परसत तुहिन ताग रस जैसे

टी॰ रा॰ अ॰ ३७

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो॰ उनइन आवै प्रेम बस गहे चरण अकुलाइ
नाथ दास मैं स्वामि तुम नजदु तो कहा नसाइ
दीन्ह मोहि सिख नीकि गोसांई। लागि अगम अपनी कदराई
नरबर धीर धरम धुर धारी। निगम नीति कहुं ते अधिकारी
मैं सिशु प्रभु सनेह प्रतिपाला। मंदिर मेरु कि लेहिं मराला
गुरु पितु मातु न जानउ काहू। कहउं सुभाव नाथ पति आहू
जहं लगि जगत सनेह सगाई। प्रीति प्रतीति निगम निजु गाई
मोरे सबदु एक तुम स्वामी। दीनबंधु उर अंतर यामी॥
धरम नीति उपदेशिय ताही। कीरति भूति सुगति प्रिय जाही
मन क्रम बचन चरण रति होई। कृपा सिंधु परिहरिय कि सोई
दो॰ करुणा सिंधु सुबंधु के सुनि मृदु बचन बिनीत
समुझाए उर लाइ प्रभु जानि सनेह सभीत॥
मांगह बिदा मातु सन जाई। आवह बेगि चलह बन भाई
मुदित भये सुनि रघुबर बानी। भयेउ लाभ बड़ गई गलानी
हरषित हृदय मातु पहं आये। मनहं अंध फिर लोचन पाये
जाइ जननि पग नायउ माथा। मन रघुनंदन जानकि साथा
पूंछे मातु मलिन मन देखी। लखन कही सब कथा विशेषी
गई सहमि सुनि बचन कठोरा। मृगी देखि दव जनु चहुं ओरा
लखन लखेउ भा अनरथ आजू। जेहि सनेह बस करब अकाजू
मांगत बिदा सभय सकुचाहीं। जाइ संग बिधि कहहिं कि नाहीं
दो॰ समुझि सुमित्रा राम सिय रूप सुशील सुभाउ

टी॰ रा॰ रा॰ अ॰ ८

नृप सनेह लखि धुनेउ शिरु पापिनि दीन्ह कुदाउ
धीरज धरेउ कुअवसर जानी। सहज सुहृद बोली मृदु बानी
तात तुम्हार मातु वैदेही । पिता राम सब भांति सनेही ॥
अवध तहां जहं राम निवासू। तहंइ दिवस जहं भानु प्रकासू
जो पै सीय राम बन जाहीं। अवध तुम्हार काज कछु नाहीं
गुरु पितु मातु बंधु सुर साईं। सेइ अहि सकल प्रान की नाईं
राम प्रान प्रिय जीवन जीके। स्वारथ रहित सखा सबही के
पूजनीय प्रिय परम जहां ते। सब मानि यहि राम के नाते ॥
अस जिय जानि संग बन जाहू। लेहु तात जग जीवन लाहू ॥
दो॰ भूरि भाग भाजन भएउ मोहि समेत बल जाउं
जौ तुम्हरे मन छांड़ छल कीन्ह राम पद ठाउं
पुत्रवती युवती जग सोई । रघुपति भक्त जासु सुत होई
नतरु बांझ भलि बादि बिआनी। राम बिमुख सुत तें हित हानी
तुमरेहि भाग राम बन जाहीं। दूसर हेतु तात कछु नाहीं ॥
सकल सुकृत कर फल बड़ एहू। राम सीय पद सहज सनेहू
राग रोष इरषा मद मोहू । जनि सपनेहुं बस इन्ह के होहू
सकल प्रकार विकार बिहाई। मन क्रम बचन करेहु सेवकाई
सब कहं बन सब भांति सुपासू। संग पितु मातु राम सिय जासू
जेहि न राम बन लहहिं कलेशू। सुत सोइ करेहु इहै उपदेशू
छं॰ उपदेश एहु जेहि तात तुम्हरे राम सिय सुख पावहीं ॥
पितु मातु प्रिय परिवारु पुर सुख सुरन बन बिसरावहीं

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तुलसी प्रभुहि सुख देइ आयसु दीन्ह पुनि आशिष दई
रति होउ अविरल अमल सिय रघुबीर पद नित नित नई
सो॰ मातु चरण सिर नाइ चले तुरंत संकित हृदय ॥
बा गुर बिषम तोराइ मनहुं भागु भग भाग बस।
गए लषण जहं जानकि नाथू। भे मन मुदित पाइ प्रिय साथू
बंदि राम सिय चरण सोहाये। चले संग नृप मंदिर आये
कहहिं परस्पर पुर नर नारी। भलि बनाइ बिधि बात बिगारी
तन कृश मन दुख बदन मलीने। बिकल मनहुं माखी मधु छीने
कर मीजहिं सिरधुनि पछिताहीं। जनु बिनु पंख बिहंग अकुलाहीं
भइ बड़ भीर भूप दरबारा। बरनि न जाइ बिषाद अपारा
दो॰ रा॰ अ॰ ४०
सचिव उठाय राउ बैठारे। कहि प्रिय बचन राम पगु धारे
सीय सहित दोउ तनय निहारी। व्याकुल भये भूप अति भारी
सीय सहित सुत सुभग दोउ देखि देखि अकुलाइ
बारहिं बार सनेह बस राउ लेइ उर लाइ ॥ ॥
सकै न बोलि बिकल नर नारू। सोक जनित उर दारुण दारू
नाइ सीस पद अति अनुरागा। उठि रघुबीर बिदा तब मांगा
पितु असीस आयसु मोहि दीजे। हर्ष समय बिसमय कत कीजे
तात किये प्रिय प्रेम प्रमादू। जस जग जाइ होइ अपबादू
सुनि सनेह बस उठि नरनाहा। बैठारे रघुपति गहि बांहा
सुनहु तात तुम कहं मुनि कहहीं। राम चराचर नायक अहहीं
सुभ अरु अशुभ करम अनुहारी। ईश देइ फल हृदय बिचारी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

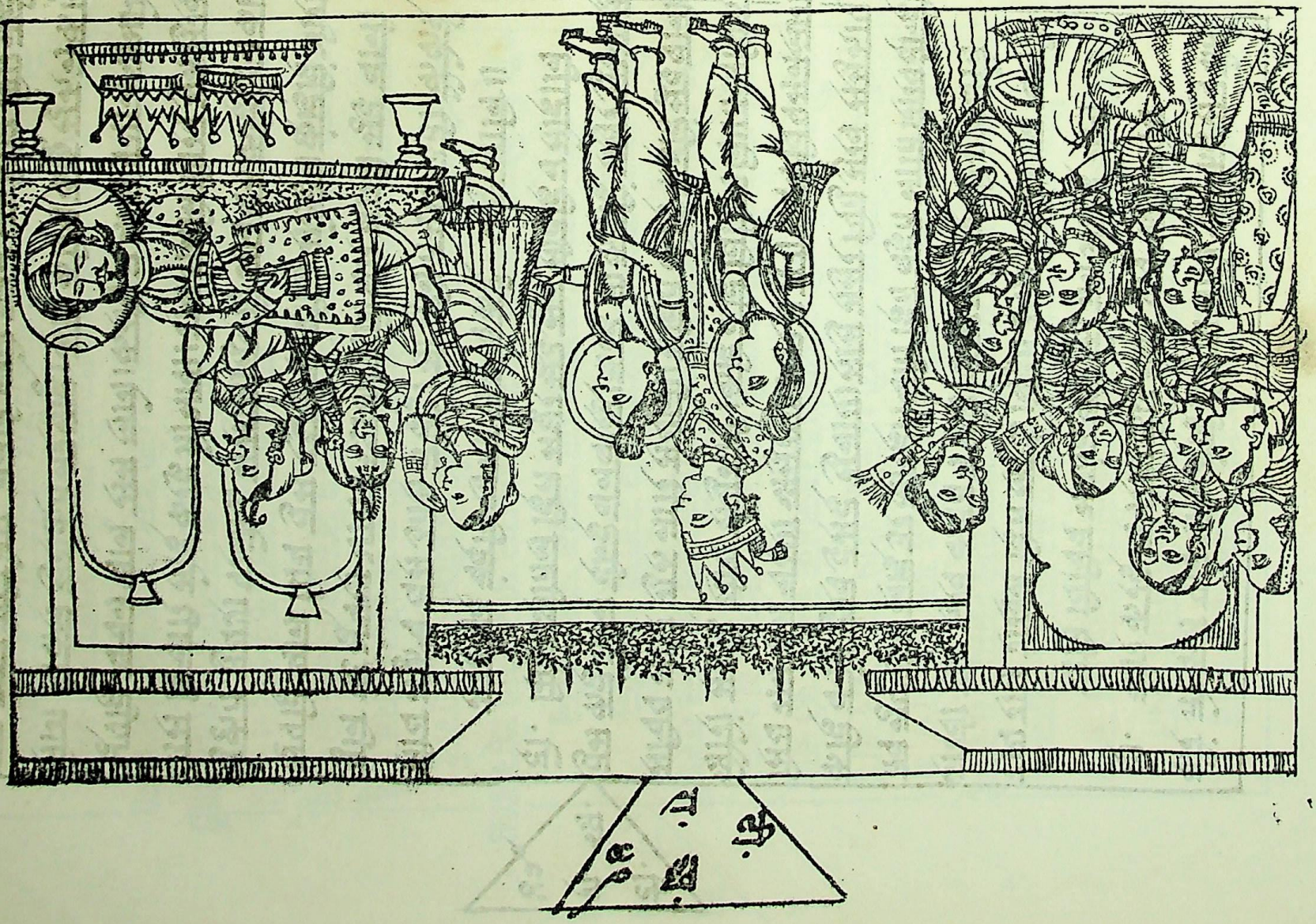

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करैं जो कर्म पाव फल सोई। निगम नीति अस कह सब कोई
दो. और करइ अपराध कोउ और पाव फल भोग
अति बिचित्र भगवंत गति को जग जानइ योग
राय राम रखन हित लागी। बहुत उपाय किये छल त्यागी
लखी राम रुख रहत न जाने। धरम धुरंधर धीर सयाने
तब नृप सीय लाइ उर लीन्ही। अति हित बहुत भांति सिख दीन्ही
कहि बनके दुख दुसह सुनाए। सासु ससुर पितु सुख समुझाए
सिय मन राम चरण अनुरागा। घर न सुगम बन बिषम न लागा
औरउ सबहि सीय समुझाई। कहि कहि बिपिन बिपति अधिकाई
सचिव नारि गुरु नारि सयानी। सहित सनेह कहहिं मृदु बानी
तुम कहं तो न दीन्ह बनबासू। करहु जो कहहिं ससुर गुरु सासू
दो. सिख सीतल हित मधुर मृदु सुन सीतहि न सोहानि
सरद चंद चंदनि लगत जनु चकई अकुलानि॥
सीय सकुच बस उतरु न देई। सो सुनि तमकि उठी कैकेई
मुनि पट भूषण भाजन आनी। आगे धरि बोली मृदु बानी
नृपहिं प्रान प्रिय तुम रघुबीरा। सील सनेह न छांड़हिं भीरा
सुकृत सुयश परलोक नसाऊ। तुमहि जान बन कहिहि न काऊ
अस बिचारि सोइ करहु जो भावा। राम जननि सिख सुनि सुख पावा
भूपहिं बचन बान सम लागे। करहिं न प्राण पयान अभागे
लोग बिकल मुरछित नर नाहू। काह करिय कछु सूझ न काहू
राम तुरत मुनि बेष बनाई। चले जनक जननिहि सिर नाई

दो. रा. अ. ४२

दो॰ सजि बन साजु समाज सब बनिता बंधु समेत
बंदि बिप्र गुरचरण प्रभु चले करि सबहि अचेत
निकस बशिष्ट द्वार भये ठाढ़े। देखे लोग बिरह दव बाढ़े
कहि प्रिय बचन सकल समुझाए। बिप्र बृंद रघुबीर बोलाए
गुरु सन कहि बरषासन दीन्हे। आदर दान बिनय बस कीन्हे
याचक दान मान संतोषे। मीत पुनीत प्रेम परितोषे॥
दासीदास बोलाइ बहोरी। गुरुहिं सौंपि बोले कर जोरी
सब कै सार संभारि गोसांई। करब जनक जननी की नांई
बारहिं बार जोरि युग पानी। कहत राम सब सन मृदु बानी
सोइ सब भांति मोर हितकारी। जेहि तें रहइ भुआल सुखारी
दो॰ मातु सकल मोरे बिरह जेहि न होंहिं दुख दीन
सोइ उपाय तुम करेहु सब पुरजन परम प्रबीन
एहि बिधि राम सबहिं समुझावा। गुरु पद पद्म हरषि शिर नावा
गनपति गौरि गिरीश मनाई। चले अशीश पाइ रघुराई
राम चलत अति भएउ बिखादू। सुनि न जाइ पुर आरत नादू
कुसगुन लंक अवध पति शोकू। हरष बिखाद बिबस सुर लोकू
गइ मुरछा तब भूपति जागे। बोल सुमंत कहन अस लागे
राम चले बन प्राण न जाहीं। केहि सुख लागि रहत तन माहीं
एहि ते कवन व्यथा बलवाना। जो दुख पाइ तजहिं तन प्राना
पुनि धर धीर कहै नर नाहू। ले रथ संग सखा तुम जाहू
दो॰ सुठि सुकुमार कुमार दोउ जनक सुता सुकुमारि

टी॰ रा॰ अ॰ ४३

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रथ चढ़ाइ देवरावइ बन फिरहु गये दिन चारि ॥
जौ नहिं फिरहिं धीर दोउ भाई। सत्य संध दृढ़ व्रत रघुराई
तौ तुम बिनय करेहु कर जोरी। फेरिय प्रभु मिथिलेश किसोरी
जब सिय कानन देखि डेराई। कहेउ मोरि सिख अवसर पाई
सासु ससुर अस कहेउ संदेसू। पुत्रि फिरिय बन बहुत कलेसू
पितु गृह कबहुं कबहुं ससुरारी। रहेउ जहां रुचि होइ तुम्हारी
एहि बिधि करेउ उपाय कदंबा। फिरइ त होइ प्रान अवलंबा
नाहित मोर मरन परिनामा। कछु न बसाइ भएं बिधि बामा
अस कहि सुरकि परा महि राऊ। रामु लखनु सिय आनि देखाऊ
दो. पाइ रजायसु नाइ सिर रथ अति बेग बनाइ ॥
गयउ जहां बाहिर नगर सीय सहित दोउ भाइ।
तब सुमंत नृप बचन सुनाये। करि बिनती रथ राम चढ़ाये ॥
चढ़ि रथ सीय सहित दोउ भाई। चले हृदय अवधहिं सिर नाई
चलत राम लखि अवध अनाथा। बिकल लोग सब लागे साथा
कृपासिंधु बहु बिधि समुझावहिं। फिरहिं प्रेम बस पुनि फिर आवहिं
लागति अवधि भयावन भारी। मानहुं काल रात अंधियारी
घोर जंतु सम पुर नर नारी। डरपहिं एकहिं एक निहारी
घर मसान परिजन जनु भूता। सुत हित मीत मनहुं जमदूता
बागन्ह बिटप बेलि कुम्हिलाहीं। सरित सरोवर देखन जाहीं
दो. हय गय कोटिन्ह केलि मृग पुर पशु चातक मोर
पिक रथांग शुक सारिका सारस हंस चकोर ॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपदेश तें भी लोग प्रेम बस न फिरे और प्रेम बात्सल्यन लागि लोक तहां रहे रात्रि को सुमंत तें श्री राम जू कह्यो खेज मारु रथ हांकवे को भात प्रभातना रथ हांके की भूमि पर बरोवर पहिया की लीकन पर वा युक्ति पहिया यों राकर बांध के तहां ते फेर वेरपुर गए तहां सुरसी भरंग और निषाद ते सविनय भेटभो सुमुकन आदर तेहि रात्रि तहां रीसो के वृक्ष तरे निवास और निषाद प्रति श्री लक्ष्मण उपदेश प्रातकृत क

राम वियोग विकल सब ठाढ़े। जहं तहं मनहुं चित्र लिख काढ़े
नगर सकल बन गहबर भारी। खग मृग विपुल सकल नर नारी
बिधि केकइहि किरातिनि कीन्ही। जेहि दव दुसह दसहु दिसि दीन्ही
सहि न सके रघुबर बिरहागी। चले लोग सब व्याकुल भागी॥
सबहिं बिचारु कीन्ह मन माहीं। राम लषण सिय बिनु सुख नाहीं
जहां राम तहं सबइ समाजू। बिनु रघुबीर अवधि नहिं काजू
चले साथ अस मंत्र दृढ़ाई। सुरदुर्लभ सुख सदन बिहाई॥
राम चरण पंकज प्रिय जिनहीं। बिषय भोग बस करहिं कि तिनही

दो॰ बालक बृद्ध बिहाय गृह लगे लोग सब साथ॥
तमसा तीर निवास किय प्रथम दिवस रघुनाथ

रघुपति प्रजा प्रेम बस देखी। सदय हृदय दुख भयेउ बिसेषी
करुणा मय रघुनाथ गोसांई। बेगि पाइअहि पीर पराई
कहि सप्रेम मृदु बचन सुहाये। बहु बिधि राम लोग समुझाये
किये धरम उपदेश घनेरे। लोग प्रेम बस फिरहिं न फेरे॥
सील सनेह छांड़ि नहिं जाई। असमंजस बस भे रघुराई॥
लोग सोग श्रम बस गए सोई। कछुक देव माया मति भोई॥
जबहिं जाम जुग जामिनि बीती। राम सचिव सन कहेउ सप्रीती
खोज मारि रथ हांकहु ताता। आन उपाय बनिहि नहिं बाता

दो॰ राम लषण सिय बान चढ़ि संभु चरण सिरु नाइ
सचिव चलाएउ तुरत रथ इत उत खोज दुराइ॥
जागे सकल लोग भए भोरू। गए रघुनाथ भयउ अति शोरू

रि मुनि वेष धरि सुमंत देख मोहत भयो॥ श्री रामचन्द्र महाराजजू शत्रुघ्न जू की ओर चा कही तहां श्री रघुनाथ जी धर्म कथा तें बोध करि सविनय और लषण के दु बचन कहवे को निवारन भो र सपथ और श्री जानकी जी के न फिरवे में भाव अभेद शक्ति जानी सुमंत को फेरो दो॰ ना॰ रा॰ ५५ नकी अकुलता रघुनन्दन तमसा तट गंगा पार जाइ निषादन को प्रेम बस्य और एक दिवस रहिके श्री राम राज मया ग आगमन आ हात्म्यवर्णन तहां तीरथ विधि कर अस्नान प्रातिभे ट और मिष्टा चार परस्पर संवाद करि बिदा भए फेरो र चार शिष्य सग लिये यमुना पार ने फेर लिये पा

र उतर स्नान करो आगि चलत भए तहां सब ग्रामवासी और पथिकन के प्रेम बात्सल्य वर्णन सो सुकृ मारता रूप में प्रगट्यो है और तापस वेश गुह लघु वेस के प्रभु तें प्रभुजी सर्वात्मत्व जनायो वा अग्नि देवता प्रसिद्ध र पते संग भद्वाज एवणा वध संकल्प तापस रूप ते जानी और एक निवास शोच करि श्री वाल्मीकि के आश्रम आए आदर पूर्वक मिले प्रभु रुख स्थान कहि चित्र कूट निवास कह्यो तहां श्रीराघव प्रसन्नता पूर्वक रहे और किरातन को प्रेम और मुनि आदिकन तें भट परस्पर और सर्व आनंद लाभ भए ॥२८१॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रथ कर खोज कतहुं नहिं पावहिं। राम राम कहि छहं दिशिधावहिं
मनहुं बारि निधि बूड़ जहाजू। भए बिकल जनु वणिक समाजू
एकहिं एक देहिं उपदेशू ॥ तजेहुं राम हम जानि कलेशू
निंदहिं आपु सराहहिं मीना। धृग जीवन रघुवीर बिहीना ॥
जो पे प्रिय बियोग बिधि कीन्हा। तौ कस मरण न मागे दीन्हा
इहि बिधि करत प्रलाप कलापा। आए अवध भरे परितापा
बिषम बियोग न जाइ बखाना। अवध आस सब राखहिं प्राना
दो॰ राम दरस हित नेम व्रत लगे करन नर नारि ॥
मनहुं कोक कोकी कमल दीन बिहीन तमारि
सीता सचिव सहित दोउ भाई। शृंगबेर पुर पहुंचे जाई ॥
उतरे राम देवसरि देखी। कीन्ह दंडवत हर्ष बिशेखी ॥
लषण सचिव सिय कीन्ह प्रणामा। सबहि सहित सुख पाएउ रामा
गंग सकल मुद मंगल मूला। सब सुख करणि हरणि सब शूला
कहि कहि कोटिक कथा प्रसंगा। राम बिलोकत गंग तरंगा
सचिवहि अनुजहिं प्रियहि सुनाई। बिबुध नदी महिमा अधिकाई
मज्जन कीन्ह पंथ श्रम गयेऊ। सुचि जल पियत मुदित मन भयऊ
सुमिरत जाहि मिटहिं भव भारू। तेहि श्रम यह लौकिक व्यवहारू
दो॰ शुद्ध सच्चिदानंद मय राम भानु कुल केतु ॥
चरित करत नर अनुहरत संसृति सागर सेतु
यह सुधि गुह निषाद जब पाई। मुदित लिये प्रिय बंधु बुलाई
ले फल मूल भेंट भरि भारा। मिलन चल्यो हिय हर्ष अपारा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करि दंडवत भेंट धरि आगे। प्रभुहि बिलोकत अति अनुरागे
सहज सनेह बिबस रघुराई। पूंछी कुशल निकट बैठाई॥
नाथ कुशल पद पंकज देखे। अब भागभाजन जन लेखे
देव धरनि धनु धाम तुम्हारा। मैं जन नीच सहित परिवारा
कृपा करिय पुर धारिय पाऊ। थापिय जन सब लोग सिहाऊ
कहेउ सत्य सब सखा सुजाना। मोहि दीन्ह पितु आयसु आना
दो. बरष चारि दश बासबन मुनि व्रत बेष आहार॥
ग्राम बास नहिं उचित सुनि गुहहि भयउ दुःख भार
राम लखण सिय रूप निहारी। कहहिं सप्रेम नगर नर नारी
ते पितु मात कहहु सखि कैसे। जिन्ह पठये बन बालक ऐसे॥
एक कहहिं भल भूपति कीन्हा। लोचन लाहु हमहिं जिन्ह दीन्हा
तब निषाद पति उर अनुमाना। तरु सिंसपा मनोहर जाना॥
लै रघुनाथहिं ठाउं देखावा। कहेउ राम सब भांति सुहावा॥
पुरजन कर जोहार घर आए। रघुबर संध्या करन सिधाए
गुह सवांरि साथरी डसाई। कुस किसलय मय मृदुल सुहाई
सुचि फल मूल मधुर मृदु जानी। दोना भरि भरि राखेसि पानी
दो. सिय सुमंत भ्राता सहित कंद मूल फल खाइ
सयन कीन्ह रघुबंसमणि पाय पलोटत भाइ
उठे लखण प्रभु सोवत जानी। कहि सचिवहि सोवन मृदु बानी
कछुक दूर सजि बान सरासन। जागन लगे बैठि बीरासन॥
गुह बोलाइ पाहरू प्रतीती। ठांव ठांव राखे अति प्रीती॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आपु लषण पहं बैठेउ जाई। कटि भाथा सर चाप चढ़ाई
सोवत प्रभुहि निहारि निषादू। भएउ प्रेम बस हृदय बिषादू
तन पुलकित जल लोचन बहई। बचन सप्रेम लषण सन कहई
भूपति भवन सुभाय सुहावा। सुरपति सदन न पटतर पावा
मणि मय रचित चारु चौबारे। जनु रति पति निज हाथ सवांरे
दो॰ सुचि सुबिचित्र सुभोगमय सुमन सुगंध सुबास
पलंग मंजु मणि दीपजहं सब विधि सकल सुपास
विविध भांति उपधान सुहाई। क्षीर फेन मृदु बिसद सुहाई
तहं सिय राम सयन निसि करहीं। निज छबि रति मनोज मदहरहीं
ते सिय राम साथरी सोए। श्रमित बसन बिनु जाहिन जोए
मात पिता परिजन पुरबासी। सखा सुसील दास अरु दासी
टी॰ गं॰ सं॰ ५८
युगवहिं जिन्हहिं प्रानकी नाईं। मही सोवत तेहि राम गोसाईं
पिता जनक जग बिदित प्रभाऊ। ससुर सुरेश सखा रघुराऊ
रामचंद्र पति सो बैदेही। सोवति महि बिधि बाम न कोही
सिय रघुबीर कि कानन योगू। करम प्रधान सत्य कह लोगू
दो॰ कैकय नंदनि मंदमति कठिन कुटिल पन कीन्ह
जेहि रघुनंदन जानकिहि सुख अवसर दुख दीन्ह
भइ दिनकर कुल बिटप कुठारी। कुमति कीन्ह सब बिस्व दुखारी
भएउ बिषाद निषादहिं भारी। राम सीय महि सयन निहारी
बोले लषण तबहिं मृदु बानी। ज्ञान बिराग भगति रस सानी
काहुन कोउ सुख दुख कर दाता। निज कृत करम भोग सब भ्राता
CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

योग बियोग भोग भल मंदा। हित अनहित मध्यम भ्रम फंदा
जनम मरण जहं लगि जग जालू। संपति बिपति कर्म अरु कालू
धरणि धाम धन पुर परिवारू। स्वरग नरक जहं लगि व्यवहारू
देखिय सुनिय गुनिय मन माहीं। मोह मूल परमारथ नाहीं॥
दो॰ सपने होइहि भिखारि नृप रंक नाक पति होइ॥
जागे हानि न लाभ कछु तिमि प्रपंच जिय जोइ
अस बिचारि नहिं कीजिय रोसू। बादि काहु नहिं दीजिय दोसू
मोह निसा सब सोवनि हारा। देखहिं स्वप्न अनेक प्रकारा
एहि जग यामिनि जागहि योगी। परमारथी प्रपंच बियोगी
जानिय तबहि जीव जग जागा। जब सब बिषय बिलास बिरागा
होइ बिबेक मोह भ्रम भागा। तब रघुबीर चरण अनुरागा
सखा परम परमारथ एहू। मन क्रम बचन राम पद नेहू
राम ब्रह्म परमारथ रूपा। अबिगत अलख अनादि अनूपा
सकल बिकार रहित गत भेदा। कहि नित नेति निरूपहिं बेदा
दो॰ भगति भूमि भूसुर सुरभि सुर हित लागि कृपालु
करत चरित धरि मनुज तन सुनत मिटे जग जालु
सखा समुझि अस परिहर मोहू। सिय रघुबीर चरण रत होहू
कहत राम गुण भा भिनुसारा। जागे जग मंगल दातारा॥
सकल सौच करि राम नहाए। सुचि सुजान बट छीर मंगाए
अनुज सहित सिर जटा बनाए। देखि सुमंत नयन जल छाए
हृदय दाह अति बदन मलीना। कह कर जोरि बचन अति दीना

दो॰ रा॰ अ॰ ४८

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नाथ कहेउ अस कोशल नाथा। लै रथ जाहु राम के साथा
बन दिखाइ सुरसरि अन्हवाई। आनेहु बेगि फेरि दोउ भाई
लषण राम सिय आनेहु फेरी। संशय सकल सकोच निवेरी
दो॰ नृप अस कहेउ गुसांइ जस कहिये करौं बलि सोइ
करि बिनती पायन परेउ दीन बाल जिमि रोइ ॥
तात कृपा करि कीजिय सोई। यातें अवध अनाथ न होई॥
मंत्रिहि राम उठाय प्रबोधा। तात धरम मत तुम सब सोधा
सिबि दधीच हरिचंद नरेशा। सहे धरम हित कोटि कलेशा
रन्ति देव बलि भूप सुजाना। धरम धरेउ सहि संकट नाना
धरमु न दूसर सत्य समाना। आगम निगम पुरान बखाना
मैं सोइ धरम सुफल कर पावा। तजे तिहूं पुर अपयस छावा
संभावित कहुं अपयस लाहू। मरण कोटि सम दारुण दाहू
तुम सन तात बहुत का कहऊं। दिये उतर फिर पातक लहऊं
दो॰ पितु पद गहि कहि कोटिन बिनय करब कर जोरि
चिंता कवनिहुं बात कै तात करिय जनि मोरि ॥
तुम पुनि पितु सम अति हित मोरे। बिनती करौं तात कर जोरे
सब बिधि सोइ करतब्य तुम्हारे। दुख न पाव पितु शोच हमारे
सुनि रघुनाथ सचिव संबादू। भयउ सपरिजन बिकल बिषादू
पुनि कछु लषण कही कटु बानी। प्रभु बरजेउ बड़ अनुचित जानी
सकुचि राम निज सपथ दिवाई। लषण संदेशा कहिय जिन जाई
कह सुमंत पुनि भूप संदेशू। सहि न सकहिं सिय बिपिन कलेशू

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जेहि बिधि अवध आव फिर सीया। सोइ रघुबरहि तुमहिं करणीया
नतरु निपट अवलंब विहीना। मैं न जिअब जिमि जल बिन मीना
दो॰ मइके ससुरे सकल सुख जबहिं जहां मन मान॥
तब तहं रहिहि सुखेन सिय जब लगि बिपति बिहान
बिनती भूप कीन्ह जेहि भांती। आरति प्रीति न सो कहि जाती
पितु संदेश सुनि कृपा निधाना। सियहि दीन्ह सिख कोटि बिधाना
सासु ससुर गुरु प्रिय परिवारू। फिरइ तो सब कर मिटै खभारू
सुनि पति बचन कहति बैदेही। सुनहु प्रान पति परम सनेही
प्रभु करुणा मय परम बिवेकी। तनु तजि रहति छांह किमि छेकी
प्रभा जाइ कहं भानु बिहाई। कहं चंद्रिका चंद्र तजि जाई
पतिहि प्रेम मय बिनय सुनाई। कहत सचिव सन गिरा सुहाई
तुम पितु ससुर सरिस हितकारी। उतरु देउं फिरि अनुचित भारी
दो॰ आरति बस सनमुख भयउं बिलग न मानहु तात
आरज सुत पद कमल बिनु बादि जहां लगि नात
पितु बैभव बिलास मैं डीठा। नृप मनि मुकुट मिलत पद पीठा
सुख निधान अस पितु गृह मोरे। पिय बिहीन मन भाव न भोरे
ससुर चक्कवै कोसल राऊ। भुवन चारि दस प्रगट प्रभाऊ
आगे होइ जेहि सुर पति लेई। अरध सिंहासन आसन देई
ससुर एतादृश अवध निवासू। प्रिय परिवार मातु सम सासू
बिनु रघुपति पद पदम परागा। मोहि सब सपनेहु सुखद न लागा
अगम पंथ बन भूमि पहारा। करि केहरि सर सरित अपारा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कोल किरात कुरंग बिहंगा। मोहि सब सुखद प्राण पति संगा
दो॰ सासु ससुर सन मोर हित बिनय करब परि पाय
मोर सोच जनि करिय कछु मैं बन सुखी सुभाय
प्रान नाथ प्रिय देवर साथा। धीर धुरीन धरे धनु भाथा
नहिं श्रम मग श्रम दुख मन मोरे। मोहि लगि सोच करिय जनि भोरे
सुचि सुबंत प्रिय सीतल बानी। भयउ बिकल जनु फनि मणि हानी
नयन सूल नहिं सुनइ न काना। कहि न सकै कछु अति अकुलाना
राम प्रबोध कीन्ह बहु भांती। तदपि होत नहिं सीतल छाती
यतन अनेक साथ हित कीन्हे। उचित उतर रघुनंदन दीन्हे
मिटि जाय नहिं राम रजाई। कठिन करम गति कछु न बसाई
रामलषण सिय पद सिरनाई। फिरउ बनिक जनु मूल गंवाई
दो॰ रथहांकेउ हय राय तब हेरि हेरि हिहि नाहिं ॥

टी॰ रा॰ अ॰ ५२

देखि निषाद बिषाद बस धुनहिं शीश पछुताहिं
जासु बियोग बिकल पशु ऐसे। प्रजा मातु पितु जीवहिं कैसे
बर बस राम सुमंत्र पठाये। सुरसरि तीर आप तब आये
मांगी नाव न केवट आना। कहइ तुम्हार मरम मैं जाना
चरन कमल रज कहुं सब कहई। मानुष करनि मूरि कछु अहई
छुवत सिला भइ नारि सुहाई। पाहन तें न काठ कठिनाई
तरनिउ मुनि घरनी होइ जाई। बाट परै मोरि नाव उड़ाई
एहि प्रति पालों सब परिवारू। नहिं जानों कछु और कबारू
जौ प्रभु पार अवशि गा चहहूं। मोहि पद पदुम पखारन कहहूं

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

छं. पद कमल धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं ॥
मोहि राम राउर आन दशरथ सपथ सब साची कहौं
बर तीर मारहुं लषण पै जब लगि न पाय पखारि हौं
तब लगि न तुलसी दास नाथ कृपाल पार उतारि हौं ॥
सो. सुनि केवट के बैन प्रेम लपेटे अटपटे ॥
बिहंसे करुणा ऐन चितइ जानकी लषण तन
कृपासिंधु बोले मुसकाई । सोइ करु जेहि तव नाव न जाई
बेगि आन जल पाय पखारू । होत बिलंब उतारहि पारू
जासु नाम सुमिरत एक बारा । उतरहिं नर भव सिंधु अपारा
सोइ कृपाल केवटहि निहोरा । जेहिं जग किय तिहुं पगु गोरा
पद नख निरखि देव सरि हरषी । सुनि प्रभु बचन मोह मति करषी
केवट राम रजायसु पावा । पानि कठवता भरि लेइ आवा
अति आनंद उमगि अनुरागा । चरन सरोज पखारन लागा
बरष सुमन सुर सकल सिहाहीं । एहि सम पुण्य पुंज कोउ नाहीं
दो. पद पखारि जल पान करि आपु सहित परिवार
पितरि पार करि प्रभुहि पुनि मुदित गयेउ लै पार
उतरि ठाढ़ भये सुरसरि रेता । सीय राम गुह लषण समेता
केवट उतरि दंडवत कीन्हा । प्रभुहि सकुच एहि कछु नहिं दीन्हा
पिय हिय की सिय जाननि हारी । मणि मुंदरी मन मुदित उतारी
कहेउ कृपाल लेहु उतराई । केवट चरन गहे अकुलाई ॥
नाथ आज मैं काह न पावा । मिटे दोष दुख दारिद दावा

टी. रा. अ. ५४

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बहुत काल मैं कीन्ह मजूरी। आजु दीन्ह बिधि बनि भलि भूरी
सब कछु नाथ न चाहिय मोरे। दीन दयाल अनुग्रह तोरे॥
फिरती बार मोहि जो देबा। सो प्रसाद मैं सिर धरि लेबा
दो॰ बहुत कीन्ह प्रभु लषण सिय नहिं कछु केवट लेइ
बिदा कीन्ह करुणायतन भगति बिमल बर देइ॥
तब मज्जन करि रघुकुल नाथा। पूजि पारथिव नायउ माथा
सिय सुरसरिहि कहेउ कर जोरी। मात मनोरथ पुरउब मोरी
पति देवर संग कुशल बहोरी। आइ करउं जेहि पूजा तोरी
सुनि सिय बिनय प्रेम रस सानी। भई तब बिमल बारिबर बानी
सुनि रघुबीर प्रिया बैदेही। तव प्रभाव जग बिदित न केही
लोकप होंहि बिलोकत तोरे। तोहि सेवहिं सब सिधि कर जोरे
तुम जो हमहिं बड़ि बिनय सुनाई। कृपा कीन्ह मोहि दीन्ह बड़ाई
तदपि देबि मैं देबि असीसा। सुफल होन हित निज बागीसा
दो॰ प्रान नाथ देवर सहित कुशल कोशला आइ
पूजिहि सब मन कामना सुयश रहहिं जग छाइ
गंग बचन सुनि मंगल मूला। मुदित सीय सुरसरि अनुकूला
तब प्रभु गुहहि कहेउ घर जाहू। सुनत सूख मुख भा उर दाहू
दीन बचन गुह कह कर जोरी। बिनय सुनहु रघुकुल मणि मोरी
नाथ साथ रहि पंथ देखाई। करि दिन चारि चरन सेवकाई
जेहि बन जाइ रहब रघुराई। परन कुटी मैं करब सुहाई
तब मोहि कहं जस देबि रजाई। सोई करि हौं रघुबीर दोहाई

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सहज सनेह राम लखि भ्रातू। संग लीन्ह गुह हृदय दुलातू
पुनि गुह ज्ञाति बोलि सब लीन्हे। करि परितोष बिदा सब कीन्हे
दो॰ तब गणपति शिव सुमिरि प्रभु नाय सुरसरिहि माथ
सखा अनुज सिय सहित बन गवन कीन्ह रघुनाथ
तेहि दिन भएउ बिटप तर बासू। लषण सखा सब कीन्ह सुपासू
प्रात प्रात कृत करि रघुराई। तीरथ राज दीख प्रभुजाई॥
सचिव सत्य श्रद्धा प्रिय नारी। माधव सरिस मीत हित कारी
चारि पदारथ भरा भंडारू। पुन्य प्रदेश देश अति चारू
क्षेत्र अगम गढ़ गाढ़ सुहावा। सपनेहु नहिं प्रति पक्षिन्ह पावा
सेन सकल तीरथ बर बीरा। कलुष अनीक दलन रन धीरा
संगम सिंहासन सुठि सोहा। छत्र अछैबट मुनि मन मोहा
चवर जमुन अरु गंग तरंगा। देखि होहिं दुख दारिद भंगा
दो॰ सबहिं सुकृती साध शुचि पावहिं सब मन काम
बंदी बेद पुरान गण कहहिं बिमल गुण ग्राम
को कहि सकै प्रयाग प्रभाऊ। कलुष पुंज कुंजर मृग राऊ
अस तीरथ पति देखि सुहावा। सुख सागर रघुबर सुख पावा
कहि सिय लषणहिं सबहिं सुनाई। श्री मुख तीरथ राज बड़ाई
करि प्रणाम देखत बन बागा। कहत महातम अति अनुरागा
एहि बिधि आइ बिलोकी बेनी। सुमिरत सकल सुमंगल देनी
मुदित नहाइ कीन्ह शिव सेवा। पूजि यथा बिधि तीरथ देवा
तब प्रभु भरद्वाज पहं आये। करत दंडवत मुनि उर लाये

टी॰ रा॰ अ॰ ५६

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

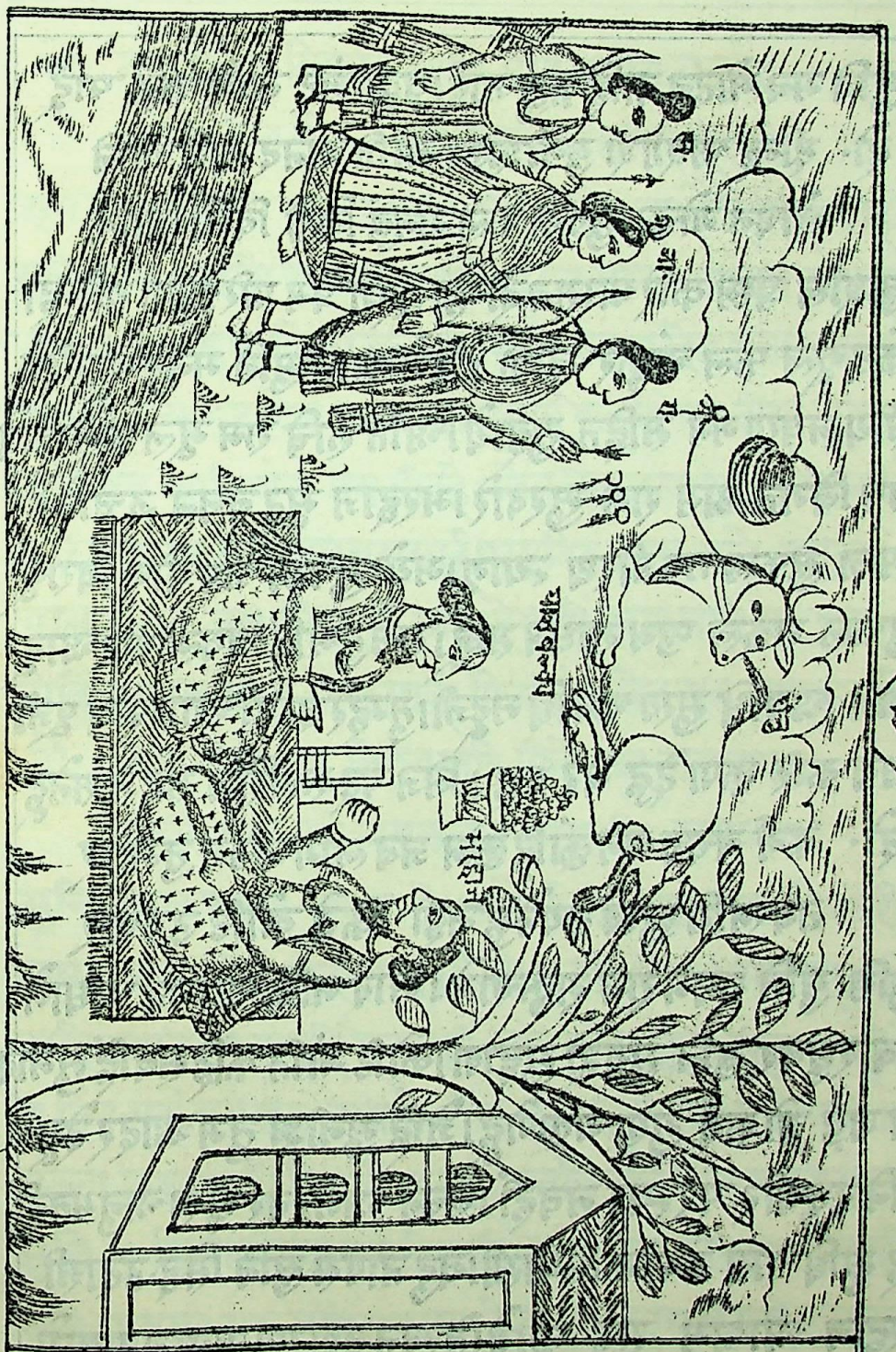

यह मूर्ति भरद्वाज याज्ञवल्क्य के पास राम लक्ष्मण सीता आये

सुनि मन मोदन कहि कछु जाई। ब्रह्मानंद राशि जनु पाई
दो॰ दीन्ह असीस मुनीश्वर अति अनंद अस जानि
लोचन गोचर सुकृत फल मनहुं किये बिधि आनि
कुशल प्रश्न करि आसन दीन्हा। पूजि प्रेम परिपूरण कीन्हा
कंद मूल फल अंकुर नीके। दिये आनि मुनि मनहु अमीके
सीयलषण सन सहित सुहाये। अति रुचि राम मूल फल खाये
भए बिगत श्रम राम सुखारे। भरद्वाज मृदु बचन उचारे॥
आज सुफल तप तीरथ त्यागू। भयो सुफल जप योग बिरागू
सुफल सकल सुभ साधन साजू। राम तुम्हहिं अवलोकत आजू
लाभ अवधि सुख अवधि न दूजी। तुम्हरे दरस आस सब पूजी
दो॰ अब करि कृपा देहु बर एहू। निज पद सरसिज सहज सनेहू
दो॰ कर्म बचन मन छांड़ि छल जब लगि जनम तुम्हार
तब लगि सुख सपनेहु नहीं किये कोटि उपचार
सुनि मुनि बचन राम सकुचाने। भाव भक्ति आनंद अघाने
तब रघुबर मुनि सुयश सुहावा। कोटि भांति कहि सबहिं सुनावा
सो बड़ सो सब गुण गण गेहू। जेहि मुनीश तुम आदर देहू
मुनि रघुबीर परस्पर नवहीं। बचन अगोचर सुख अनुभवहीं
यह सुधि पाय प्रयाग निवासी। बटु तापस मुनि सिद्ध उदासी
भरद्वाज आश्रम सब आये। देखन दशरथ सुअन सुहाये
राम प्रणाम कीन्ह सब काहू। मुदित भये लहि लोचन लाहू
देहिं असीस परम सुख पाई। फिरे सराहत सुंदर ताई॥

दो॰ रा॰ अ॰ ५८

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो॰ राम कीन्ह बिश्राम निसि प्रात प्रयाग नहाइ
चले सहित सिय लषण जन मुदित मुनिहि सिरनाइ
राम सप्रेम कहेउ मुनि पाहीं। नाथ कहिय हम केहि मग जाहीं
मुनि मुनि बिहंसि राम सन कहहीं। सुगम सकल मग तुम कहं अहहीं
साथ लागि मुनि शिष्य बुलाये। मुनि मन मुदित पचासक आये
सबहिं राम पद प्रेम अपारा। सबहिं कहहिं मग दीख हमारा
मुनि बटु चारि संग तब दीन्हे। जिन बहु जन्म सुकृत बड़ कीन्हे
करि प्रणाम मुनि आयसु पाई। प्रमुदित हृदय चले रघुराई
ग्राम निकट जब निसरहिं जाई। देखहिं दरश नारि नर धाई॥
होहिं सनाथ जन्म फल पाई। फिरहिं दुखित मन संग पठाई

दो॰ रा॰ अ॰ ५८

दो॰ बिदा किये बहु बिनय करि फिरे पाइ मन काम
उतरि नहाये यमुन जल जो शरीर सम श्याम
सुनि तीरथ बासी नर नारी। धाये निज निज काज बिसारी
लषण राम सिय सुंदरताई। देखि करहिं निज भाग्य बड़ाई
अति लालसा सबहिं मन माहीं। नांव गांव पूछत सकुचाहीं।
जे तिन महं बय बृद्ध सयाने। तिन करि युक्ति राम पहिचाने॥
सकल कथा कहि तिनहिं सुनाई। बनहिं चले पितु आयसु पाई
सुनि स बिषाद सकल पछिताहीं। रानी राय कीन्ह भल नाहीं
तेहि अवसर एक तापस आवा। तेज पुंज लघु बयस सुहावा
कवि अलख गति बेष बिरागी। मन क्रम बचन राम अनुरागी
दो॰ सजल नयन तन पुलकि निज इष्ट देव पहिचान

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परेउ दंड जिमि धरणि पर दशा न जाय बखान
राम सप्रेम पुलक उर कीन्हा। परम रंक जनु पारस पावा ॥
मनहुं प्रेम परमारथ दोऊ। मिलत धरे तन कह सब कोऊ
बहुरि लषण पायन सो लागा। लीन्ह उठाय उमग अनुरागा
पुनि सिय चरण धूरि धरि शीशा। जननि जानि शिशु दीन्ह अशीशा
कीन्ह निषाद दंडवत तेही। मिलेउ मुदित लखि राम सनेही
पियत नयन पुट रूप पियूषा। मुदित सुअसन पाइ जिमि भूखा
राम लषण सिय रूप निहारी। होच सनेह बिकल नर नारी
ते पितु मातु कहो सखि कैसे। जिन पठये बन बालक ऐसे

टी. रा. अ. ६०

दो. तब रघुबीर अनेक विधि सखहि सिखावन दीन्ह
राम रजायसु शीश धरि गवन अंवन तिन्ह कीन्ह
पुनि सिय राम लषण कर जोरी। यमुनहिं कीन्ह प्रणाम बहोरी
चले सीय सहित दोउ भाई। रवि तनया कर करत बड़ाई
पथिक अनेक मिलहिं मगजाता। कहहिं सप्रेम देखि दोउ भ्राता
राज लक्षन सब अंग तुम्हारे। देख शोच हिय होत हमारे
मारग चलहु पयादेहि पाये। ज्योतिष झूठ हमारे भाये ॥
अगम पंथ गिरि कानन भारी। तेहि महं साथ नारि सुकुमारी
करि केहरि बन जाइ न जोई। हम सग चलहिं जो आयसु होई
जाव जहां लगि तहं पहुंचाई। फिरब बहोरि तुमहि शिर नाई
दो. इहि विधि पूछहिं प्रेम बस पुलक गात जल नैन
कृपासिंधु फेरहिं तिन्हहिं कहि बिनती मृदु बैन

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जे पुर ग्राम बसहिं मग माहीं। तिन्हहिं नाग सुर नगर सिहाहीं
केहि सुकृती केहि घरी बसाए। धन्य पुण्य मय परम सुहाए
जहं तहं राम चरण चलि जाहीं। तिन्ह समान अमरावति नाहीं
पुण्य पुंज मग निकट निवासी। तिन्हहिं सराहहिं सुरपुर वासी
जे भरि नयन बिलोकहिं रामहिं। सीता लषण सहित घन श्यामहिं
जे सर सरित राम अव गाहहिं। तिन्हहिं देव सरि सरित सराहहिं
जेहि तरु तर प्रभु बैठहिं जाई। करहिं कल्प तरु तासु बड़ाई
परसि राम पद पदुम पराग। मानति भूमि भूरि निज भाग
दो॰ छांह करहिं घन बिबुध गन बरषहिं सुमन सिहाहिं
देखत गिरि बन बिहंग मृग राम चले बन जाहिं
सीता लषण सहित रघुराई। गांव निकट जब निकसहिं जाई
सुनि सब बाल वृद्ध नर नारी। चलहिं तुरत गृह काज बिसारी
राम लषण सिय रूप निहारी। पाइ नयन फल होहिं सुखारी
सजल बिलोचन पुलक शरीरा। सब भए मगन देखि दोउ बीरा
बरणि न जाइ दशा तिन्ह केरी। लहि जनु रंकन्हि सुर मणि ढेरी
एकन्ह एक बोलि सिख देहीं। लोचन लाह लेह छन एहीं
एक रामहिं देखें अनुरागे। चितवत चले जाहिं संग लागे
एक नयन मग छबि उर आनी। होहिं सिथल तन मन बर बानी
दो॰ एक देखि वट छांह भलि डासि मृदुल तृन पात
कहहिं गवांइ अछिनकु श्रम गवनब अबहि कि प्रात
एक कलश भरि आनहिं पानी। अंचइ अनाय कहहिं मृदु बानी

दी॰ रा॰ अ॰ ६२

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनि प्रिय बचन प्रीति अति देखी। राम कृपाल सुशील बिसेखी
जानी श्रमित सीय मन माहीं। घरिक बिलंब कीन्ह बट छाहीं
मुदित नारि नर देखहिं शोभा। रूप अनूप नयन मन लोभा
एकटक सब जोवहिं चहूं ओरा। रामचंद्र मुख चंद्र चकोरा
तरुन तमाल बरन तन सोहा। देखत कोटि मदन मन मोहा
दामिनि बरन लषण छुटि नीके। नख सिख सुभग भावते जीके
मुनि पट कटिन्ह कसें तूणीरा। सोहहिं कर कमलन्ह धनुतीरा
दो· जटा मुकुट शीशन सुभग उर भुज नयन बिशाल
सरद परब बिधु बदन बर लसत खेदकन जाल
टी· बरणि न जाइ मनोहर जोरी। शोभा बहुत मोरि मति थोरी
रा· श्र· ६२ राम लषण सिय सुंदर ताई। सब चितवहिं चित मन मति लाई
यके नारि नर प्रेम पियासे। मनहु मृगी मृग देखि दिआसे
सीय समीप ग्राम तिय जाहीं। पूंछत अति सनेह सकुचाहीं
बार बार सब लागहिं पाए। कहहिं बचन मृदु सरल सुभाए
राज कुमारि बिनय हम करहीं। तिय सुभाव कछु पूछत डरहीं
स्वामिनि अविनय छमिपि हमारी। बिलगु न मानि बिजानगवारी
राज कुंवर दोउ सहज सलोने। इन्ह ते लहिअति मरकत सोने
दो· श्यामल गौर किशोर बर सुंदर सुखमा ऐन
सरद सरबरी नाथ मुख सरद सरोरुह नैन
कोटि मनोज लजावन हारे। सुमुखि कहहु को अहहिं तुमारे
सुनि सनेह भय मंजुल बानी। सकुचि सीय मन महं मुसकानी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तिन्हहिं विलोकि विलोकति धरणी। दुहुं सकोच सकुचति बरबरणी
सकुचि सप्रेम बाल मृग नयनी। बोली बचन मधुर पिकबयनी
सहज सुभाय सुभग तन गोरे। नाम लषण लघु देवर मोरे॥
बहुरि बदन बिधु अंचल ढाँपी। पिय न चितइ भौंह करि बाँकी
खंजन मंजु तिरीछे नयननि। निज पति कहेउ तिन्हहिं सिय सयननि
भई मुदित सब ग्राम बधूटी। रंकन रतन राशि जनु लूटी।

दो॰ अति सप्रेम सिय पाय परि बहु बिधि देहिं असीस
सदा सुहागिनि होहु तुम्ह जब लगि महि गिरि सीस

पारबती सम पति प्रिय होहू। देबि न हम पर छाड़ब छोहू
पुनि पुनि बिनय करिअ कर जोरी। जौ एहि मारग फिरिय बहोरी
दरशन देब जानि निज दासी। लखी सीय सब प्रेम पिआसी
मधुर बचन कहि कहि परितोषी। जनु कुमुदिनी कौमुदी पोषी
तबहिं लषण रघुबर रुष जानी। पूछेउ मग लोगन्हि मृदु बानी
सुनत नारि नर भये दुखारी। पुलकित गात बिलोचन बारी
मिटा मोद मन भये मलीने। बिधि निधि दीन्ह लेत जनु छीने
समुझि करम गति धीरज कीन्हा। सोधि सुगम मग तिन्ह कर दीन्हा।

दो॰ लषण जानकी सहित तब गवन कीन्ह रघुनाथ
फेरे सब प्रिय बचन कहि लिये लाइ मन साथ

फिरत नारि नर अति पछिताहीं। दैअहिं दोष देहिं मन माहीं
सहित बिषाद परस्पर कहहीं। बिधि के करतब उलट निबहहीं
निपट निरंकुस निठुर निसंकू। जेहि शशि कीन्ह सरज सकलंकू

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रूख कल्पतरु सागर खारा। तेहि पठये बन राजकुमारा
जो पै इन्हहिं दीन्ह बन बासू। कीन्ह बादि बिधि भोग बिलासू
ए बिचरहिं मग बिनु पदत्राना। रचे बादि बिधि बाहन नाना
तरपहिं परहिं डासि कुस पाता। सुभग सेज कत सृजत बिधाता
तरु तर बास इन्हहिं बिधि दीन्हा। धवल धाम रचि रचि श्रमकीन्हा
दो. जो ए मुनिपट जटिलधर सुंदर सुठि सुकुमार
बिबिध भांति भूषन बसन बादि किये करतार ॥
जो ए कंदमूल फल खाहीं। बादि सुधादि असन जग माहीं
एक कहहिं ए सहज सुहाए। आपु प्रगट भए बिधि न बनाए
टी. ए. अ. ६४ जहं लगि बेद कही बिधि करणी। श्रवन नयन मन गोचर बरणी
देखहु खोजि भुवन दसचारी। कहं अस पुरुष कहां असनारी
कीन्ह बहुत श्रम एक न आये। तेहि इरषा बन आनि दुराये
इन्हहिं देखि बिधि मन अनुरागा। पटतर जोग बनावै लागा
एक कहहिं हम बहुत न जानहिं। आपहि परम धन्य करि मानहिं
ते मुनि पुण्य पुंज हम लेखे। जे देखहिं देखिहहिं जिन्ह देखे
दो. एहि बिधि कहि कहि बचन प्रिय लेहिं नयन भरि नीर
किमि चलिहहिं मारग अगम सुठि सुकुमार सरीर
नारि सनेह बिकल बस होहीं। चकई सांझ समय जनु सोही
मृदु पद कमल कठिन मगजानी। गह बरि हृदय कहहिं मृदु बानी
परसत चरण मृदुल अरुणारे। सकुचति महि जिमि हृदय हमारे
जो जगदीश इन्हहिं बन दीन्हा। कस न सुमन मय मारग कीन्हा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जो मांगे पाइय बिधि पाहीं। राखिय सखि इन आखिन माहीं
जे नर नारि न अवसर आये। ते सिय राम न देखन पाये ॥
सुनि सरूप पूछहिं अकुलाई। अब लगि गये कहां लगि भाई
समरथ धाइ बिलोकहिं जाई। प्रमुदित फिरहिं नयन फल पाई
दो॰ अबला बालक वृद्ध जन कर मीजहिं पछिताहिं
होहिं प्रेम बस लोग इमि राम जहां जहं जाहिं
गांव गांव अस होइ अनंदू। देखि भानु कुल कैरव चंदू ॥
जो कछु समाचार सुनि पावहिं। ते नृप रानिहि दोष लगावहिं
कहहिं एक अति भल नरनाहू। दीन्ह हमहिं जिन्ह लोचन लाहू
कहहिं परस्पर लोग लुगाई। बातें सरल सनेह सुहाई ॥
ते पित मात धन्य जे जाये। धन्य सो नगर जहां ते आये
धन्य सो रौल देश बन गाऊं। जहं जहं जाहिं धन्य सो ठाऊं
सुख पायो बिरंचि रचि तेही। ये जिन्ह के सब भांति सनेही ॥
राम लषण सिय कथा सुहाई। रही सकल मग कानन छाई
दो॰ इहि बिधि रघुकुल कमल रवि मग लोगन सुख देत
जाहिं चले देखत बिपिन सिय सौमित्र समेत
आगे राम लषण पुनि पाछे। तापस बेष बिराजत काछे ॥
उभय मध्य सिय शोभित कैसी। ब्रह्म जीव बिच माया जैसी
बहुरि कहौं छवि जस मन बसई। जनु मधु मदन मध्य रति लसई
उपमा बहुरि कहौं जिय जोही। जनु बुध बिधु बिच रोहणी सोही
प्रभु पद रेख बीच बिच नीता। धरहिं चरण मग चलहिं सभीता

टी॰ रा॰ अ॰ ६५

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सीय राम पद अंक बराये । लषण चलहिं मग दाहिन लाये
राम लषण सिय प्रीति सुहाई। बचन अगोचर किमि कहिजाई
खग मृग मगन देखि छबि होही। लिये राम चित चोर बटोही ॥
दो· जिन्ह जिन्ह देखे पथिक प्रिय सीय सहित दोउ भाइ
भव मग अगम अनंद तेइ बिन श्रम रहे सिराइ ॥
अजहुं जासु उर सपनेहुं काऊ। बसहिं लषण सिय राम बटाऊ
राम धाम पथ पाइहि सोई। जो पथि पावक कहु मुनि कोई
तब रघुबीर श्रमित सिय जानी। देखि निकट बड़ शीतल पानी
तहं बसि कंद मूल फल खाई। प्रात नहाइ चले रघुराई ॥
देखत बन सर शैल सुहाये। बालमीक आश्रम प्रभु आये
राम दीख मुनि बास सुहावन। सुंदर गिरि कानन जल पावन
सरनि सरोज बिटप बन फूले। गुंजत मंजु मधुप रस भूले
खग मृग बिपुल कोलाहल करहीं। बिरहित बैर मुदित मनचरहीं
दो· शुचि सुंदर आश्रम निरखि हरषे राजिव नयन
मुनि रघुबर आगमन सुनि आगे आये लयन
मुनि कहं राम दंडवत कीन्हा। आशिर्बाद बिप्रबर दीन्हा
देखि राम छबि नयन जुड़ाने। करि सनमान आश्रमहिं आने
मुनिबर अतिथि प्रान प्रिय पाए। कंद मूल फल मधुर मंगाए
सिय सौमित्रि राम फल खाये। तब मुनि आश्रम दिए सुहाए
बालमीक मन आनंद भारी। मंगल मूरति नयन निहारी
तब कर कमल जोरि रघुराई। बोले बचन श्रवण सुखदाई

टी· रा· अ· ६६

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तुम त्रिकाल दर्शी मुनि नाथा। बिश्व बदरि जिमि तुमरे हाथा
अस कहि प्रभु सब कथा बखानी। जेहि जेहि भांति दीन्ह बन रानी
दो॰ तात बचन पुनि मात हित भाइ भरत अस राउ
मो कहं दरश तुम्हार प्रभु सब मम पुण्य प्रभाउ
देखि पाय मुनि राय तुम्हारे। भए सुकृत सब सुफल हमारे
अब जहं राउर आयसु होई। मुनि उद बेग न पावै कोई॥
मुनि तापस जिन्ह तें दुख लहहीं। ते नरेश बिन पावक दहहीं
मंगल मूल बिप्र परितोषू। दहइ कोटि कुल भूसुर रोषू॥
अस जिय जानि कहिय सोइ ठाऊं। सिय सौमित्रि सहित जहं जाऊं
तहं रचि रुचिर परण तृण शाला। बास करहु कछु काल कृपाला
सहज सरल सुनि रघुबर बानी। साधु साधु बोले मुनि ज्ञानी
कसन कहहु अस रघुकुल केतू। तुम पालक संतत श्रुति सेतू
छं॰ श्रुति सेतु पालक राम तुम जगदीश माया जानकी
सो सृजति जग पालति हरति रुष पाइ कृपा निधानकी
जो सहस शीश अहीश महि धर लषण सचराचर धनी
सुर काज धरि नर राज तनु चले दलन खल निशिचर अनी
सो॰ राम सरूप तुम्हार बचन अगोचर बुद्धि पर॥
अविगत अकथ अपार नेति नेति नित निगम कह
जग पेखन तुम देखन हारे। बिधि हरि शंभु नचावन हारे
तेउ न जानहिं मरम तुम्हारा। और तुमहिं को जानन हारा
सोइ जानइ जेहि देहु जनाई। जानत तुमहिं तुमइ होइ जाई

टी॰ रा॰ अ॰ ६७

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

टी.
ए. अं.
६८

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तुमरी कृपा तुमहिं रघुनंदन। जानहिं भगत भगत उर चंदन
चिदानंद मय देह तुम्हारी। बिगत बिराग ज्ञान अधिकारी
नर तन धरेउ संत सुर काजा। कहहु करहु जस प्राकृत राजा
राम देखि सुनि चरित तुम्हारे। जड़ मोहहिं बुध होहिं सुखारे
तुम जो कहहु करहु सब साचा। जस काछिय तस चाहिय नाचा
दो॰ पूछेहु मोहि कि रहौं कहं मैं पूछत सकुचाउं ॥
जहं न होउ तहं देहु कहि तुमहिं देखावहुं ठाउं
सुनि मुनि बचन प्रेम रस साने। सकुचि राम मन महं मुसकाने
बालमीक हंसि कहहिं बहोरी। बानी मधुर अमिय रस बोरी
सुनहु राम अब कहौं निकेता। जहां बसहु सिय लषण समेता
जिन्हके श्रवण समुद्र समाना। कथा तुम्हारि सुभग सर नाना
भरहिं निरंतर होहिं न पूरे। तिनके हिय तुम कहुं गृह रूरे
लोचन चातक जिन करि राखे। रहहिं दरस जल धर अभिलाषे
निंदहिं सरित सिंधु सर भारी। रूप बिंदु जल होहिं दुखारी
तिनके हृदय सदन सुखदायक। बसहु बंधु सिय सह रघुनायक
दो॰ जस तुम्हार मानस बिमल हंसिनि जीहा जासु
मुकुता हल गुन गन चुनइ राम बसहु मन तासु
प्रभु प्रसाद सुचि सुभग सुबासा। सादर जासु लहइ नित नासा
तुमहिं निबेदित भोजन करहीं। प्रभु प्रसाद पट भूषण धरहीं
सीस नवहिं सुर गुर द्विज देखी। प्रीति सहित करि बिनय बिसेषी
करनित करहिं राम पद पूजा। राम भरोस हृदय नहिं दूजा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चरण राम बीरथ चलि जाहीं। राम बसहु तिन के मन माहीं
मंत्र राज नित जपहिं तुम्हारा। पूजहिं तुमहि सहित परिवारा
तरपन होम करहिं बिधि नाना। बिप्र जेंवाइ देहिं बहु दाना॥
तुम्ह ते अधिक गुरुहि जिय जानी। सकल भाय सेवहिं सनमानी
दो॰ सब कर मांगहि एक फल राम चरण रत होउ
तिन्ह के मन मंदिर बसहु सिय रघुनंदन दोउ॥
काम कोह मद मान न मोहा। लोभ न छोभ न राग न द्रोहा॥
जिन्ह के कपट दंभ नहि माया। तिन्ह के हृदय बसहु रघुराया
सब के प्रिय सब के हित कारी। दुख सुख सरिस प्रसंसा गारी
कहहिं सत्य प्रिय बचन बिचारी। जागत सोवत सरण तुम्हारी
तुमहिं छांड़ि गति दूसर नाहीं। राम बसहु तिन्ह के मन माहीं
जननी सम जानहिं पर नारी। धन पराव बिष ते बिष भारी
जे हरषाहि पर संपति देखी। दुखित होहिं पर बिपत बिसेखी
जिन्हहिं राम तुम प्रान पियारे। तिन्ह के मन सुभ सदन तुम्हारे
दो॰ स्वामि सखा पितु मातु गुरु जिन्ह के सब तुम तात
मन मंदिर तिन्ह के बसहु सीय सहित दोउ भ्रात॥
अवगुण तजि सब के गुण गहहीं। बिप्र धेनु हित संकट सहहीं
नीति निपुण जिन कर जग लीका। घर तुम्हार तिन्ह कर मनु नीका
गुण तुम्हार समुझइ निज दोसा। जेहि सब भांति तुम्हार भरोसा
राम भगति प्रिय लागहिं जेही। तेहि उर बसहु सहित बैदेही
जाति पांति धन धरम बड़ाई। प्रिय परिवार सदन सुखदाई
सब तजि तुमहिं रहइ लौ लाई। तेहि के हृदय रहहु रघुराई॥

दो॰ रा॰ अ॰ ७०

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्वर्ग नर्क अपवर्ग समाना। जहं तहं देख धरे धनु बाना
करम बचन मन राउर चेरा। राम करहु तिन के उर डेरा ॥
दो॰ जाहि न चाहिय कबहुं कछु तुम्ह सन सहज सनेह
बसहु निरंतर तासु मन सो राउर निज गेह ॥
एहि बिधि मुनिवर भवन देखाये। बचन सप्रेम राम मन भाये
कह मुनि सुनहु भानुकुल नायक। आश्रम कहहुं समय सुखदायक
चित्रकूट गिरि करहु निवासू। तहं तुम्हार सब भांति सुपासू
सैल सुहावन कानन चारू। करि केहरि मृग बिहग बिहारू
नदी पुनीत पुरान बखानी। अत्रि प्रिया निज तप बल आनी
सुरसरि धार नाम मंदाकिनि। जो सब पातक पोतक डाकिनि
अत्रि आदि मुनिबर बहु बसहीं। करहिं जोग जप तपतन कसहीं
चलहु सुफल श्रम सब कर हरहू। राम देहु गौरव गिरि बरहू
दो॰ चित्रकूट महिमा अमित कही महा मुनि गाइ
आइ नहाये सरित बर सिय समेत दोउ भाइ।
रघुबर कहेउ लषण भल घाटू। करहु कतहं अब ठाहर ठाटू
लषण दीख पय उतर करारा। चहुं दिशि फिरेउ धनुष जिमि नारा
नदी पनच सर सम दम दाना। सकल कलुष कलि साउज नाना
चित्रकूट जनु अचल अहेरी। चुकइ न घात मार मुठ भेरी
अस कहि लषण ठाउं देखरावा। थल बिलोकि रघुबर सुख पावा
एहि राम मन देवन जाना। चले सहित सुरपति प्रधाना
कोल किरात बेष सब आये। रचे परण तृण सदन सुहाये

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बरणि न जाइ मंजु दुइ शाला। एक ललित लघु एक बिशाला
दो. लषण जानकी सहित प्रभु राजत रुचिर निकेत
सोह मदन मुनि बेष जनु रति रितु राज समेत
सुमर नाग किन्नर दिशिपाला। चित्रकूट आए तिहि काला
राम प्रणाम कीन्ह सब काहू। मुदित देव लहि लोचन लाहू॥
बरष सुमन कह देव समाजू। नाथ सनाथ भए हम आजू॥
करि बिनती दुख दुसह सुनाये। हरषित निज निज सदन सिधाये
चित्रकूट रघुनंदन छाये। समाचार सुनि सुनि मुनि आये
आवत देखि मुदित मुनि बृंदा। कीन्ह दंडवत रघुकुल नंदा
मुनि रघुबरहिं लाइ उर लेहीं। सुफल होन हित आशिष देहीं
सिय सौमित्र राम छबि देखहिं। साधन सकल सुफल करि लेखहिं

दो. रा. अ. ७२

दो. यथा योग सनमान प्रभु बिदा किये मुनि बृंद
करहिं योग जप जाग तप निज आश्रमनि स्वछंद
यह सुधि कोल किरात न पाई। हरषे जनु नव निधि घर आई
कंद मूल फल भरि भरि दोना। चले रंक जनु लूटन सोना
तिन्ह महं जिन्ह देखे दोउ भ्राता। अपर तिन्हहिं पूछहिं भग जाता
कहत सुनत रघुबीर निकाई। आइ सबन देखे रघुराई॥
करहिं जुहार भेंट धरि आगे। प्रभुहि बिलोकहिं अति अनुरागे
चित्र लिखे जनु जहं तहं ठाढे। पुलक शरीर नयन जल बाढे
राम सनेह मगन सब जाने। कहि प्रिय बचन सकल सनमाने
प्रभुहि जोहारि बहोरि बहोरी। बचन बिनीत कहहिं कर जोरी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो॰ अब हम नाथ सनाथ सब भए देखि प्रभु पाय ॥
भाग हमारे आगमन राउर कोसल राय ॥
धन्य भूमि बन पंथ पहारा। जहँ जहँ नाथ पाँव तुम धारा॥
धन्य बिहंग मृग कानन चारी। सफल जन्म भए तुम्हहि निहारी॥
हम सब धन्य सहित परिवारा। दीख दरस भरि नयन तुम्हारा॥
कीन्ह बास भलि ठाँव बिचारी। इहाँ सकल ऋतु रहब सुखारी॥
हम सब भाँति करब सेवकाई। करि केहरि अहि बाघ बराई॥
बन बेहड़ गिरि कंदर खोहा। सब हमार प्रभु पग पग जोहा॥
जहँ तहँ तुम्हहि अहेर खेलाउब। सर निरझर जलठाउँ देखाउब॥
हम सेवक परिवार समेता। नाथ न सकुचब आयसु देता॥
दो॰ देब बचन सुनि मन अगम तै प्रभु करुणा ऐन
बचन किरातन्ह के सुनत जिमि पितु बालक बैन
रामहिं केवल प्रेम पिआरा। जानि लेउ जो जाननिहारा॥
राम सकल बनचर तब तोषे। कहि मृदु बचन प्रेम परिपोषे॥
बिदा किये सिरनाइ सिधाए। प्रभु गुन कहत सुनत घर आए॥
एहि बिधि सिय समेत दोउ भाई। बसहिं बिपिन सुर मुनि सुखदाई॥
जबतें आइ रहे रघुनायक। तबतें भयेउ बन मंगल दायक॥
फूलहिं फलहिं बिटप बिधि नाना। मंजु बलित बर बेलि बिताना॥
सुरतरु सरिस सुभाउ सुहाए। मनहुँ बिबुध बन परिहरि आए॥
गुंज मंजु तर मधुकर श्रेनी। त्रिबिध बयार बहै सुख देनी॥
दो॰ नीलकंठ कलकंठ सुक चातक चक्क चकोर

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भांति भांति बोलहिं बिहंग श्रवण सुखद चित चोर
करि केहरि कपि कोल कुरंगा। बिगत बैर बिचरहिं सब संगा
फिरत अहेर राम छबि देखी। होहिं मुदित मृग बृंद बिशेखी
बिबुध बिपन जहं लगि जग माहीं। देखि राम बन सकल सिहाहीं
सुरसरि सरिस इ दिन कर कन्या। मेकल सुता गोदावरि धन्या
सब सर सिंधु नदी नद नाना। मंदाकिनि कर करहिं बखाना
उदय अस्त गिरि अरु कैलासू। मंदर मेरु सकल सुर बासू
शैल हिमाचल आदिक जेते। चित्रकूट यश गावहिं ते ते
बिंधि मुदित मन सुख न समाई। श्रम बिन बिपुल बड़ाई पाई

दो॰ चित्रकूट के बिहंग मृग बेल बिटप तृण जाति
पुण्य पुंज सब धन्य अस कहहिं देव दिन राति

नयन वंत रघुबरहि बिलोकी। पाइ जनम फल होहिं बिशोकी
परसि चरण रज अचर सुखारी। भए परम पद के अधिकारी
सो बन शैल सुभाव सुहावन। मंगल मय अति पावन पावन
महिमा बरण कवन बिधि जासू। सुख सागर जहं कीन्ह निवासू
पय पयोधि तजि अवधि बिहाई। जहं सिय लषण राम रहे छाई
कहि न सकहिं सुख भा जस कानन। जो सत सहस होहिं सह सानन
सो मैं बरणि कहौं बिधि केही। डाबर कमल कि मंदर लेही॥
सेवहिं लषण करम मन बानी। जाइ न शील सनेह बखानी

दो॰ छिन छिन लखि सिय राम पद जानि आपु परनेह
करत न सपनेहुं लषण चित बंधु मातु पित गेह

टी॰ रा॰ अ॰ ७४

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राम संग सिय रहति सुखारी। पुर परिजन गृह सुरति बिसारी
छिन छिन पिय बिधु बदन निहारी। मुदित मनहुं चकोर कुमारी
नाह नेह निज बढ़त बिलोकी। हरषित रहति दिवस जिमि कोकी
सिय मन राम चरण अनुरागा। अवध सहस सम प्रिय लागा
परम कुदी प्रिय शीलम संगा। प्रिय परिवार कुरंग बिहंगा
सासु ससुर सम मुनि तिय मुनिवर। असन अमिय सम कंद मूल फर
नाथ साथ साथरी सुहाई। मयन सयन सम सम सुखदाई
लोकप होहिं बिलोकत जासू। तेहि कि मोह रक बिषय बिलासू

दो. सुमिरत रामहिं तजहिं जन तृण सम बिषय बिलास
राम प्रिया जग जननि सिय कछु न आचरज तास

सीय लषण जेहि बिधि सुख लहहीं। सोइ रघुनाथ करहिं सोइ कहहीं
कहहिं पुरातन कथा कहानी। सुनहिं लषण सिय अति सुख मानी
जब जब राम अवध सुधि करहीं। तब तब बारि बिलोचन भरहीं
सुमिरि मात पित परिजन भाई। भरत सनेह शील सेवकाई॥
कृपासिंधु प्रभु होहिं दुखारी। धीरज धरहिं कुसमय बिचारी
लषण सिय लषण बिकल होइ जाहीं। जिमि पुरुषहिं अनुसर परछाहीं
प्रिया बंधु गति लखि रघुनंदन। धीर कृपाल भगत उर चंदन
लगे कहन कछु कथा पुनीता। सुन सुख लहहिं लषण अरु सीता

दो. राम लषण सीता सहित सोहत परण निकेत
जिमि बासव बस अमरपुर सची जयंत समेत

जोगवहिं प्रभु सिय लषणहि कैसे। पलक बिलोचन गोलक जैसे

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सेवहिं लषण सीय रघुबीरहिं। जिमि अविवेकी पुरुष शरीरहिं
एहि बिधि प्रभु बन बसहिं सुरवारी। खग मृग सुर तापस हित कारी
कहेउं राम बन गवन सुहावा। सुनहु सुमंत्र अवध जिमि आवा
फिरेउ निषाद प्रभुहि पहुंचाई। सचिव सहित रथ देखवि आई
मंत्री बिकल बिलोकि निषादू। कहि न जाइ जस भएउ बिखादू
राम राम सिय लषण पुकारी। परेउ धरणि तल व्याकुल भारी
देखि दषन दिशि हयहिहि नाहीं। जनु बिनु पंख बिहंग अकुलाहीं

दो॰ नहिं तृण चरहिं न पियहिं जल मोचहिं लोचन बारि
व्याकुल भए निषाद सब रघुबर बाजि निहारि॥

धरि धीरज तब कहइ निषादू। अब सुमंत्र परि हरहु बिखादू
तुम पंडित परमारथ ज्ञाता। धरहु धीर लखि बाम बिधाता
बिबिध कथा कह कह मृदुबानी। रथ बैठारेउ सरबस आनी
शोक शिथल रथ सकै न हांकी। रघुबर बिरह पीर उर बांकी
तरफराहिं मग चलहिं न घोरे। बन मृग मनहुं आनि रथ जोरे
अटकि परहिं फिर हेरहिं पीछे। राम बियोग बिकल दुख तीछे
जो कह राम लषण बैदेहीं। हिकरहिं कर हित हेरहिं तेहीं
बाजि बिरह गति किमि कहि जाती। बिन मणि फनिक बिकल जेहि भाती

दो॰ भएउ निषाद बिखाद बस देखत सचिव तुरंग
बोलि सुसेवक चारि तब दिये सारथी संग॥

गुह सारथिहि फिरेउ पहुंचाई। बिरह बिखाद बरणि नहिं जाई
चले अवध लेइ रथहिं निषादा। होहिं छनहिं छन मगन बिखादा

शोक तम निवारण करि दूत पठाइ श्री भरतादि कौं

टी॰ रा॰ अ॰ ७६

बोलाइ भेज्यो ॥५६॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शोच सुमंत्र बिकल दुख दीना। धिक जीवन रघुबीर बिहीना
रहिहिं न प्रान कहिहि दुख भारी। परहिं न जीवन राम दुलारी
अन्न पानु रघुनाथ बिनु जीहा। पाप प्रान मम अस मत अहा
मोहि न लाज निज नेहु निहारी। राम सरिस सुत मैं महतारी
दरकि न हृदय दीख जग सोई। प्रेम पात्र कर पाप न कोई
सखा रामु सिय लखनु जहाँ। बसिहउँ बिपिन बिबुध पुर तहाँ
बंदउँ अवध भुआल सत्य प्रेम जेही राम पद
बिछुरत दीनदयाल प्रिय तनु तृन इव परिहरेउ
जरउ सो संपति सदन सुखु सुहृद मातु पितु भाइ
सनमुख होत जो राम पद करै न सहस सहाइ
घर घरनी सुत लोग नसाहीं। नरक सरिस दारुन सब माहीं
एहि तें मोर काह अब नीका। तेहि लगि जिऔं कहौं बिधि जीका
दो. संग सखा सुत तिय सकल तजेउँ परान पिऊ
कारन कवन अभागी सबु सहउँ मोहि मरन पर
मोहि न लाज निज नेहु निहारी। राम सरिस सुत मैं महतारी
जिऔं मरै भल भूपति जाना। मोर हृदय सत कुलिस समाना
कवन हेतु नहिं करत पयाना। देखि मोहबस सूत सयाना
सहित बिदेह कमल मुख मातू। सुखु पायउ सब एहि सम्पातू
बिधि बिधि करि कहि कैकइ बानी। सुनि सूलहिं सम लाग सुबानी
तोहि उचित तनय टीका। भरत राम सब सहित सुरीका
तात जाउँ बलि कीन्हेहु नीका। पितु आयसु सब धरम कर टीका
दो. राजु देन कहि दीन्ह बन मोर न सोच बिमात
आयसु दीन्ह न राम बन लखनु न सिय उपबास
अस बिचारि सोचहि मति माता। सो न टरइ जो रचइ बिधाता
जो कछु कीन्ह प्रातहीं काला। बिधि हाथ सब कर अहि आला
देखि देखि रघुनाथ सुभाऊ। सुमिरि सुमिरि उर सोचु न काऊ
जाइ न हृदय से गति जानी। काह करै अबला अति दीनी
लखन राम सिय कानन बसहीं। पराहीं भवन भरत यहि हसहीं
दो. पुरजन परिजन सकल निज हित संका बिसारि
सजल नयन कह जुगल कर बिधि सन बिनय हमारि
आरति मोर नाथ कर छोहू। दुहुँ कर मागउँ एहू
अवध जाम जम दारुन दुखू। खग मृग सब कहँ नाहिन सुखू
राम जननि हठ करबि कि कीन्हे। दुख सागर महँ सबहि अबगाहे
मुनिगन सुनि रघुबर बनबासू। सकल सुमंगल दायक जासू
सो. सरित सरोवर नाग सर बिबुध तरु गिरि खोह
राम लखन सिय लखि हरषि जाहिं सराहन सोह
सुनि मुनि बचन राम सिय आगे। मग हित भूषन पट पहिरागे
सजि बन साजु समाजु बनाई। संग मनोहर जोरी जाई
देखन बागु कुअँरु दुइ आए। बय किसोर सब भाँति सुहाए
जे भरि नयन बिलोकहिं रामहि। सीता लखन सहित घनस्यामहि
जहँ जहँ राम बास बिश्रामा। तहँ तहँ करहिं सप्रेम प्रनामा
एक देखि बट छाँह भलि डासि मृदुल तृन पात
कहहिं गवाँइअ छिनुक श्रमु गवनब अबहिं कि प्रात
एहि बिधि बासर बीते चारी। रामु निरखि नर नारि सुखारी
दुहु दिसि दुसह दीनता देखी। सहत कठोर बचन बैदेही
अति सुकुमार जानकी सीता। देखि दुखी मन दुखित सभीता
जीवन मूरि जिमि जोगवत रहउँ। दीप बाति नहिं टारन कहउँ
सोइ सिय चलन चहति बन साथा। आयसु काह होइ रघुनाथा
चंद किरन जस चंदमुखी। अवध तजे प्रिय करि बस सखी
दो. सिय मनु राम चरन अनुरागा। अवध सहस सम दारुन भागा
स्वारथु नाथ फिरें सबही का। किएँ रजाइ कोटि बिधि नीका
देह प्रान तें प्रिय कछु नाहीं। सोउ मुनि देउँ निमिष एक माहीं
सब प्रकार प्रभु मोहि पिआरी। मैं बनदेउँ तुम्ह पुर रखवारी
मोहि मग चलत न होइहि हारी। छमबि पाय लखि मृदुल सुकुमारी
दो. पाय पखारि बैठि तरु छाहीं। करिहउँ बाउ मुदित मन माहीं
श्रम कन सहित स्याम तनु देखें। कहँ दुख समउ प्रानपति पेखें
सम महि तृन तरुपल्लव डासी। पागनि सयन सकल सुख रासी
पति पद सेवा करि सुख लहऊँ। सोइ रसु अपर को जानै कहऊँ
सेवा समय दैअँ बनु दीन्हा। पितु सम्मान जो धरम बिचारी
हौं सठ सब सुख सुरतरु पाई। दुख दोषिनि कहँ जीउ बिसाई
दो. कठिन करम गति जान बिधि जान जीव जग जोनि
संग सखा सुत तिय सकल तजेउँ परान पिऊ
मोहि न लाज निज नेहु निहारी। राम सरिस सुत मैं महतारी
जिऔं मरै भल भूपति जाना। मोर हृदय सत कुलिस समाना
कवन हेतु नहिं करत पयाना। देखि मोहबस सूत सयाना
सहित बिदेह कमल मुख मातू। सुखु पायउ सब एहि सम्पातू
बिधि बिधि करि कहि कैकइ बानी। सुनि सूलहिं सम लाग सुबानी
तोहि उचित तनय टीका। भरत राम सब सहित सुरीका
तात जाउँ बलि कीन्हेहु नीका। पितु आयसु सब धरम कर टीका
दो. राजु देन कहि दीन्ह बन मोर न सोच बिमात
आयसु दीन्ह न राम बन लखनु न सिय उपबास
अस बिचारि सोचहि मति माता। सो न टरइ जो रचइ बिधाता
जो कछु कीन्ह प्रातहीं काला। बिधि हाथ सब कर अहि आला
देखि देखि रघुनाथ सुभाऊ। सुमिरि सुमिरि उर सोचु न काऊ
जाइ न हृदय से गति जानी। काह करै अबला अति दीनी
लखन राम सिय कानन बसहीं। पराहीं भवन भरत यहि हसहीं
दो. पुरजन परिजन सकल निज हित संका बिसारि
सजल नयन कह जुगल कर बिधि सन बिनय हमारि
आरति मोर नाथ कर छोहू। दुहुँ कर मागउँ एहू
अवध जाम जम दारुन दुखू। खग मृग सब कहँ नाहिन सुखू
राम जननि हठ करबि कि कीन्हे। दुख सागर महँ सबहि अबगाहे
मुनिगन सुनि रघुबर बनबासू। सकल सुमंगल दायक जासू
सो. सरित सरोवर नाग सर बिबुध तरु गिरि खोह
राम लखन सिय लखि हरषि जाहिं सराहन सोह
सुनि मुनि बचन राम सिय आगे। मग हित भूषन पट पहिरागे
सजि बन साजु समाजु बनाई। संग मनोहर जोरी जाई
देखन बागु कुअँरु दुइ आए। बय किसोर सब भाँति सुहाए
जे भरि नयन बिलोकहिं रामहि। सीता लखन सहित घनस्यामहि
जहँ जहँ राम बास बिश्रामा। तहँ तहँ करहिं सप्रेम प्रनामा
एक देखि बट छाँह भलि डासि मृदुल तृन पात
कहहिं गवाँइअ छिनुक श्रमु गवनब अबहिं कि प्रात
एहि बिधि बासर बीते चारी। रामु निरखि नर नारि सुखारी
दुहु दिसि दुसह दीनता देखी। सहत कठोर बचन बैदेही
अति सुकुमार जानकी सीता। देखि दुखी मन दुखित सभीता
जीवन मूरि जिमि जोगवत रहउँ। दीप बाति नहिं टारन कहउँ
सोइ सिय चलन चहति बन साथा। आयसु काह होइ रघुनाथा
चंद किरन जस चंदमुखी। अवध तजे प्रिय करि बस सखी
दो. सिय मनु राम चरन अनुरागा। अवध सहस सम दारुन भागा
स्वारथु नाथ फिरें सबही का। किएँ रजाइ कोटि बिधि नीका
देह प्रान तें प्रिय कछु नाहीं। सोउ मुनि देउँ निमिष एक माहीं
सब प्रकार प्रभु मोहि पिआरी। मैं बनदेउँ तुम्ह पुर रखवारी
मोहि मग चलत न होइहि हारी। छमबि पाय लखि मृदुल सुकुमारी
दो. पाय पखारि बैठि तरु छाहीं। करिहउँ बाउ मुदित मन माहीं
श्रम कन सहित स्याम तनु देखें। कहँ दुख समउ प्रानपति पेखें
सम महि तृन तरुपल्लव डासी। पागनि सयन सकल सुख रासी
पति पद सेवा करि सुख लहऊँ। सोइ रसु अपर को जानै कहऊँ
सेवा समय दैअँ बनु दीन्हा। पितु सम्मान जो धरम बिचारी
हौं सठ सब सुख सुरतरु पाई। दुख दोषिनि कहँ जीउ बिसाई
दो. कठिन करम गति जान बिधि जान जीव जग जोनि

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पूछब उतर देब मैं तेही । केवल राम लखण वैदेही ॥
जोइ पूछहि तेहि उत्तर देवा । जाइ अवध अब यह सुख लेवा
पूछिहि जबहि राउ दुख दीना । जिवन जासु रघुनाथ अधीना
देखें उतर कवन मुहं लाई । आएउं कुशल कुंअर दोउ भाई
सुनत लखण सिय राम संदेशू । तृण जिमि तनु परिहरिहि नरेशू
दो॰ हृदयन बिदरेउ पंक जिमि बिछुरत प्रीतम नीर
जानत हौं मोहि दीन्ह बिधि यह जातना शरीर
एहि बिधि करत पंथ पछितावा । तमसा तीर तुरत रथ आवा
बिदा किये कर बिनय निषादा । फिरे पाय परि बिकल बिषादा
पैठत नगर सचिव सकुचाई । जनु मारेसि गुरु बाम्हन गाई
बैठि बिटप तर दिवस गंवावा । सांझ समय तब अवसर पावा
अवध प्रवेश कीन्ह अंधियारे । पैठु भवन रथ राखु दुआरे
जिन्ह जिन्ह समाचार सुनि पाए । भूप द्वार रथ देखन आए
रथ पहिचान बिकल लखि घोरे । गरहिं गात जिमि आतप ओरे
नगर नारि नर व्याकुल कैसे । निघटत नीर मीन गन जैसे
दो॰ सचिव आगमन सुनत सब बिकल भयउ रनिवास
भवन भयंकर लाग तेहि मानहु प्रेत निवास ॥
अति आरत सब पूछहिं रानी । उतर न आव बिकल भइ बानी
सुनइ न श्रवण नयन नहिं सूझा । कहइ कहां नृप तेहि तेहि बूझा
दासिन्ह दीख सचिव बिकलाई । कौशिल्या गृह गईं लवाई
जाइ सुमंत दीख कस राजा । अमिय रहित जनु चंद बिराजा

दो॰ रा॰ अ॰ ७८

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ग्रासन शयन बिभूषण हीना। परेउ भूमि तल निपट मलीना
लेइ उसास शोच इहि भांती। सुर पुर तें जनु खसेउ जजाती
लेत शोच भरि छिन छिन छाती। जनु जरि पंख परेउ संपाती
राम राम कहि राम सनेही। पुनि कह राम लषण बैदेही
दो॰ देखि सचिव जय जीव कहि कीन्हे दंड प्रणाम
सुनत उठेउ व्याकुल नृपति कहु सुमंत्र कहं राम
भूप सुमंत्र लीन्ह उर लाई। बूड़त कछु अधार जन पाई
सहित सनेह निकट बैठारी। पूछत राउ नयन भरि बारी॥
राम कुशल कहु सखा सनेही। कहं रघुनाथ लषण बैदेही
आने फेर कि बनहिं सिधाए। सुनत सचिव लोचन जल छाए
शोच बिकल पुनि पूंछ नरेशू। कहु सिय राम लषण संदेशू
राम रूप गुण शील सुभाऊ। सुमिरि सुमिरि उर शोचत राऊ
राज सुनाय दीन्ह बनबासू। सुनि मन भयेउ न हरष हरासू
सो सुत बिछुरत गए न प्राना। को पापी बड़ मोहि समाना
दो॰ सखा राम सिय लषण जहं तहां मोहि पहुंचाउ
नाहित चाहत चलन अब प्राण कहौं सत भाउ
पुनि पुनि पूछत मंत्रिहि राऊ। प्रियतम सुवन संदेश सुनाऊ
करहि सखा सो बेग उपाऊ। राम लषण सिय नयन दिखाऊ
सचिव धीर धरि कहि मृदु बानी। महाराज तुम पंडित ज्ञानी
बीर सुधीर धुरंधर देवा। साधु समाज सदा तुम सेवा
जनम मरण सब दुख सुख भोगा। हानि लाभ प्रिय मिलन वियोगा

टी॰ रा॰ अ॰ ७९

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

काल करम बस होंहिं गोसाईं। बरबस राति दिवस की नाईं
सुख हरषहिं जड़ दुख बिलखाहीं। दोउ समधीर धरहिं मन माहीं
धीरज धरहिं बिबेक बिचारी। छांडिय शोच सकल हित कारी
दो॰ प्रथम बास तमसा भयउ दूसर सुरसरि तीर
न्हाय रहे जल पानकरि सिय समेत दोउ बीर
केवट कीन्ह बहुत सेवकाई। सो बामिनि सिगरौर गंवाई
होत प्रात बट क्षीर मंगाई। जटा मुकुट निज शीश बनाई
राम सरधा तब नाव मंगाई। प्रिया चढ़ाइ चढ़े रघुराई॥
लषण बान धनु धरे बनाई। आपु चढ़े प्रभु आयसु पाई
बिकल बिलोकि मोहिं रघुबीरा। बोले मधुर बचन धरि धीरा
तात प्रणाम तात सन कहेहू। बार बार पद पंकज गहेहू॥
करब पाय परि बिनय बहोरी। तात करिय जनि चिंता मोरी
बन मग मंगल कुशल हमारे। कृपा अनुग्रह पुण्य तुम्हारे
छं॰ तुम्हरे अनुग्रह तात कानन जात सब सुख पाइहौं॥
प्रतिपाल आयसु कुशल देखन पायपुनि फिरआइहौं
जननी सकल परितोष परि परिपाय करि बिनती घनी
तुलसी करेहु सोइ यतन जेहि कुशली रहहिं कोशलधनी
सो॰ गुरु सन कहेउ संदेश बार बार पद पदुम गहि
करब सोई उपदेश जेहि न शोच मोहि अवधपति
पुरजन परिजन सकल निहोरी। तात सुनायहु बिनती मोरी
सोइ सब भांति मोर हित कारी। जातें रह नर नाह सुखारी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कहब संदेश भरत के आये। नीति न तजिय राज पद पाये।
पालेहु प्रजहिं करम मन बानी। सेयहु मातु सकल सम मानी।
ओर निबाहेहु भायप भाई। करि पितु मातु सुजन सेवकाई।
तात चिंति तेहि करब उपाऊ। सोच मोर जेहि करै न काऊ।
लषण कहेउ कछु बचन कठोरा। बरजि राम पुनि मोहि निहोरा।
बार बार निज सपथ दिवाई। कह बिन तात लषण लरिकाई।
दो॰ करि प्रणाम कछु कहन लिय सिय भइ शिथिल सनेह।
थकित बचन लोचन सजल पुलक पल्लवित देह।
तेहि अवसर रघुबर रुख पाई। केवट पारहिं नाव चलाई।
रघुबर तिलक चले इहि भांती। देखेउं ठाढ़ कुलिश धरि छाती।
मैं आपन किमि कहउं कलेशू। जियत फिरेउं लै राम संदेशू।
अस कहि सचिव बचन रहे गएऊ। हानि गलानि सोच बस भएऊ।
सूत बचन सुनतहिं नर नाहू। परेउ धरणि उर दारुण दाहू।
तलफत बिषम मोह मन मापा। माजा मनहुं मीन कहुं व्यापा।
करि बिलाप सब रोवहिं रानी। महा बिपति किमि जाइ बखानी।
सुनि बिलाप दुखहू दुख लागा। धीरजहू कर धीरज भागा।
दो॰ भएउ कोलाहल अवध अति सुनि नृप राउर सोरु
बिपुल बिहंग बन परेउ निशि मानहुं कुलिश कठोरु
प्राण कंठ गत भएउ भुआलू। मणि बिहीन जनु व्याकुल व्यालू।
इंद्री सकल बिकल भईं भारी। जनु सर सरसिज बन बिनु बारी।
कौशिल्या नृप दीख मलाना। रविकुल रवि अथये जियजाना।

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उर धरि धीर राम महतारी । बोली बचन समय अनुहारी
नाथ सकुमि मन करिय बिचारू । राम बियोग पयोधि अपारू
करन धार तुम अवध जहाजू । बैठइ सकल प्रिय पथिक समाजू
धीरज धरि अत पाइ अपारू । नाहित बूड़हि सब परिवारू
जौ जिय धरि पिय अविनय मोरी । राम लषण सिय मिलहिं बहोरी
दो॰ प्रिया बचन मृदु सुनत नृप चितयउ आंखि उघारि
तलफत मीन मलीन जनु सींचेउ सीतल बारि ॥
धरि धीरज उठ बैठ भुआलू । कहु सुमंत कहं राम कृपालू
कहां लषण कहं राम सनेही । कहं प्रिय पुत्र बधू बैदेही ॥
बिलपत राउ बिकल बहु भांती । भइ जुग सरिस सिराति न राती
नापस अंध शाप सुधि आई । कौशिल्यहि सब कथा सुनाई
भएउ बिकल बरणत इतिहासा । राम रहित धिग जीवन आसा
सो बरु सारिब करब मैं काहा । जेहि न प्रेम पण मोर निबाहा
हा रघुनंदन प्रेम पिरीते । तुम बिनु जियत बहुत दिन बीते
हा जानकी लषण हा रघुबर । हा पितु हित चित चातक जलधर
दो॰ राम राम कहि राम कहि राम राम कहि राम
तनु परिहर रघुबर बिरह राउ गएउ सुरधाम
जिअन मरण फल दशरथ पावा । अंड अनेक अमल यश छावा
जिअत राम बिधु बदन निहारा । राम बिरह करि मरण संवारा
शोक बिकल सब रोवहिं रानी । रूप शील बल तेज बखानी
करहिं बिलाप अनेक प्रकारा । परहिं भूमितल बारहिं बारा

दो॰ ए॰ अ॰ ८२

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बिलपहिं बिकल दास अरु दासी। घर घर रुदन करहिं पुरबासी
अथयेउ आजु भानुकुलभानू। धरम अवधगुन रूप निधानू
गारी सकल कैकइहिं देहीं। नयन बिहीन कीन्ह जग जेही
यहि बिध बिलपत रैन बिहानी। आए सकल महामुनि ग्यानी
दो. तब बसिष्ठ मुनि समय सम कहि अलेक इतिहास
शोक निवारेउ सबहि कर निज बिग्यान प्रकास
तेल नावँरि नृप तन राखा। दूत बोलाइ बहुरि अस भाखा
धावहु बेगि भरत पहं जाहू। नृप सुधि कतहुं कहहु जनि काहू
इतनइ कहहु भरत सन जाई। गुरु बोलाइ पठये दोउ भाई
सुनि मुनि आयसु धावन धाये। चले बेगि बर बाजि लजाये
अनरथ अवध अरंभेउ जबहीं। कुसगुन होहिं भरत कहं तबहीं
देखहिं राति भयानक सपना। जागि करहिं कटु कोटि कलपना
बिप्र जेवाइ देहिं दिन दाना। सिव अभिषेक करहिं बिधिनाना
मांगहिं हृदय महेश मनाई। कुसल मातु पितु परजन भाई
दो. यहि बिधि सोचत भरत मन धावन पहुंचे जाइ
गुरु अनुशासन श्रवण सुनि चले गनेश मनाइ
चले समीर बेग हय हांके। नांघत शैल सरित बन बांके
हृदय सोच बड़ कछुन सोहाई। अस जानहिं जिय जाउं उड़ाई
एक निमेष बरष सम जाई। यहि बिध भरत नगर नियराई
असगुन होहिं नगर पैठारा। रटहिं कुभांति कुखेत करारा
खर सिआर बोलहिं प्रतिकूला। सुनि सुनि होइ भरत मन शूला

श्रीहत सर सरिता बन बागा। नगर विशेषि भयावन लागा
खग मृग हय गय जाहिन जोए। राम वियोग कुरोग बिगोए
नगर नारि नर निपट दुखारी। मनहुं सबन्ह सब संपति हारी
दो॰ पुरजन मिलहिं न कहहिं कछु गहिं जोहारहिं जाहिं
भरत कुशल पूछत सकहिं भय विषाद मन माहिं
हाट बाट नहिं जाइ निहारी। जनु पुरदह दिशि लागि दवारी
आवत सुत सुनि कैकय नंदिनि हरषी रविकुल जलरुह चंदनि
सजि आरती मुदित उठि धाई। द्वारेहिं भेंट भवन लेइ आई
भरत दरिद्र परिवार निहारा। मानहुं तुहिन वनज बन मारा
कैकेयी हरषत हिय भांती। मनहुं मुदित दवलाइ कि राती
सुतहि सशोच देख मन मारे। पूछति नैहर कुशल हमारे
सकल कुशल कहि भरत सुनाई। पूछी निज कुल कुशल भलाई
कहु कहं तात कहां सब माता। कहं सिय राम लषण प्रिय भ्राता
दो॰ सुत सुत बचन सनेह मय कपट नीर भरि नैन
भरत श्रवण मन शूल सम पापिन बोली बैन
तात बात मैं सकल संवारी। भइ मंथरा सहाय बिचारी
कछुक काज बिधि बीच बिगारेउ। भूपति सुरपति सरपगुधारेउ
सुनत भरत भए बिवस बिषादा। जनु सहमेउ करि केहरिनादा
तात तात हा तात पुकारी। परे भूमितल व्याकुल भारी
चलत न देखन पायेउं तोहीं। तात न रामहिं सौंपेउ मोहीं
बहुरि धीर धरि उठे संभारी। कह पितु मरण हेतु महतारी

दो॰ रा॰ अ॰ ८४

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनि सुत बचन कहति कैकेई। मरम पाछि जनु माहुर देई
आदिहु ते सब आपनि करणी। कुटिल कठोर मुदित मन बरणी
दो॰ भरतहि बिसरेउ पितु मरण सुनत राम बन गौन
हेतु अपन पुबि जानि जिय थकित रहे धरि मौन
बिकल बिलोकि सुतहि समुझावति। मनहुं जरे पर लोन लगावति
तात राउ नहिं शोचन योगू। बढ़ड़ सुकृत जसकीन्हेउ भोगू
जीवत सकल जनम फलपाये। अंत अमरपति सदन सिधाये
अस अनुमानि शोच परिहरहू। सहित समाज राज पुर करहू
सुनि सुदि सहमेउ राज कुमारू। पाके छत जनु लाग अंगारू
धरि धीरज मरि लेहिं उसांसा। पापिनि सबहिं भांति कुलनासा
जोपै कुरुचि रही अति तोही। जनमत काहेन मारेसि मोही
पेंड़ु काटि नैं पल्लव सींचा। मीन जियन हित बारि उलीचा
दो॰ हंस बंश दशरथ जनक राम लषण से भाइ
जननी तू जननी भई बिधि सन कछु न बसाइ
जनते कुमति कुमति जियअऊ। खंड खंड होइ हृदय न गयऊ
बर मांगत मन भई न पीरा। जरि न जीह मुह परेउ न कीरा
भूप प्रतीति तोरि किमि कीन्ही। मरण काल बिधि मतिहरि लीन्ही
बिधिहु न नारि हृदय गति जानी। सकल कपट अघ अवगुण खानी
सरल सुशील धर्म रति राऊ। सो किमि जानइ तीय सुभाऊ
अस को जीव जहहिं जग माहीं। जेहि रघुनाथ प्राण प्रिय नाहीं
भय अति अहित राम तेउ तोही। कोउ अहहि सत्य कहु मोही

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जो हसि सोहसि मुंह मसिलाई। आंख ओट उठि बैठहिं जाई
दो॰ राम बिरोधी हृदय तें प्रगट कीन्ह बिधि मोहिं
मो समान को पातकी बादि कहउं कछु तोहिं
सुनि शत्रुघन मातु कुटिलाई। जरहिं गात रिस कछु न बसाई
तेहि अवसर कुबरी तहं आई। बसन बिभूषण बिबिध बनाई
लखि रिस भरेउ लषण लघुभाई। बरत अनल घृत आहुति पाई
हुमगि लात तकि कूबरि मारा। परि मुंह भर महि करत पुकारा
कूबर टूटेउ फूट कपारू। दलित दसन मुख रुधिर प्रचारू
आह दैव मैं काह नसावा। करत नीक फल अनइस पावा
सुनि रिपुहन लखन सरिस सिख चोटी। लगे घसीटन धरि धरि झोटी
भरत दयानिधि दीन्ह छुड़ाई। कौशिल्या पहि गे दोउ भाई
दो॰ मलिन बसन बिबरन बिकल कृश शरीर दुख भारु
कनक कलप बर बेलि बन मानहु हनी तुषारु ॥
भरतहि देखि मातु उठि धाई। मुरछित अवनि परी झइ आई
देखत भरत बिकल भए भारी। परे चरण तन दशा बिसारी
मातु तात कहं देहि दिखाई। कहं सिय राम लषण दोउ भाई
कइ कइ कत जननी जग मांझा। जौं जनमत भइ काहे न बांझा
कुल कलंक जेहि जनमेउ मोही। अपजस भाजन प्रियजन द्रोही
को त्रिभुवन मोहि सरिस अभागी। गति अस तोर मात जेहि लागी
पितु सुरपुर बन रघुकुल केतू। मैं केवल सब अनरथ हेतू
धिग मोहि भएउ बेनु बन आगी। दुसह दाह दुख दूषण भागी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो॰ मातु भरत के बचन मृदु पुनि पुनि उठी सँभारि
लिये उठाइ लगाइ उर लोचन मोचति बारि॥
सरल सुभाय माय हिय लाए। अति हित मनहुं राम फिरि आए
भेटेउ बहुरि लषण लघु भाई। शोक सनेह न हृदय समाई
देखि सुभाव कहत सब कोई। राम मातु अस काहे न होई
माता भरत गोद बैठारे। आंसु पोंछ मृदु बचन उचारे
अजहुं बच्छ बलि धीरज धरहू। कुसमय समुझि शोक परिहरहू
जनि मानहु हिय हानि गलानी। काल करम गति अघटित जानी
काहुहि दोष देउ जनि ताता। आ मोहि सब बिध बाम बिधाता
जो एते दुख मोहि जिआवा। अजहुं को जाने का तेहि भावा
दो॰ पितु आयसु भूषण बसन तात तजे रघुबीर
बिसमय हर्ष न हृदय कछु पहिरे बलकल चीर
मुख प्रसन्न मन हरष न रोषू। सब कर सब बिधि करि परितोषू
चले बिपिन सुनि सिय संग लागी। रहइ न राम चरण अनुरागी
सुनतहिं लषण चले उठि साथा। रहैं न यतन किये रघुनाथा
तब रघुपति सबही सिर नाई। चले संग सिय अरु लघुभाई
राम लषण सिय बनहि सिधाए। गइउन संग न प्राण पठाये
येउ सब भाइन्ह आंखन आगे। उउ न तजा तन प्राण अभागे
मोहि न लाज निज नेहु निहारी। राम सरस सुत मैं महतारी
जिअइ मरइ भल भूपति जाना। मोर हृदय शत कुलिश समाना
दो॰ कौशिल्या के बचन सुनि भरत सहित रनिवास

टी॰ रा॰ अ॰ ८७

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

व्याकुल बिलपत राज गृह मानहुं शोक निवास
बिलखहिं बिकल भरत दोउ भाई। कौशिल्या लिये हृदय लगाई
भांति अनेक भरत समुझाए। कहि बिबेक मृदु बचन सुनाए
भरतहुं मातु सकल समुझाई। कहि पुराण श्रुति कथा सुहाई
छल बिहीन शुचि सरल सुबानी। बोले भरत जोरि युग पानी
जे अघ मात पिता सुत मारे। गाइ गोठ महि सुरपुर जारे
जे अघ तिय बालक बध कीन्हे। मीत महीपति माहुर दीन्हे
जे पातक उपपातक अहहीं। करम बचन मन भव कवि कहहीं
ते पातक मोहि होहु बिधाता। जो यह होय मोर मत माता

दो. जे परिहरि हरि हर चरण भजहिं भूत गण घोर
तिन्ह कइ गति मोहि देउ बिधि जो जननी मत मोर

बेचहिं बेद धरम दुहि लेहीं। पिशुन पराइ पाप कहि देहीं
कपटी कुटिल कलह प्रिय क्रोधी। बेद बिदूषक बिश्व बिरोधी
लोभी लंपट लोलुप चारा। जे ताकहिं परधन परदारा ॥
पाउव मैं तिन्ह कै गति घोरा। जो जननी यह सम्मत मोरा
जे नहिं साधु संग अनुरागे। परमारथ पथ बिमुख अभागे
जे न भजहिं हरि नर तनु पाई। जिन्हहि न हरि हर सुजस सोहाई
तजि श्रुति पंथ बाम पथ चलहीं। बंचक बिरचि बेष जग छलहीं
तिन्ह कै गति मोहि शंकर देऊ। जननी जौं एहि जानउ भेऊ

दो. मात भरत के बचन सुनि सांचे सरल सुभाय
कहति राम प्रिय तात तुम सदा बचन मन काय

टी. रा. रा. ८८

राम प्राण तें प्राण तुम्हारे। तुम रघुपतिहि प्राण ते प्यारे
बिधु बिष चुवइ श्रवइ हिम आगी। होइ वारिचर बारि बिरागी
भए ज्ञान बरु मिटइ न मोहू। तुम रामहिं प्रतिकूल न होहू
मत तुम्हार ये जो जग कहहीं। सो सपनेहु सुख सुगति न लहहीं
अस कहि मातु भरत हिय लाये। धन पय श्रवहिं नयन जल छाये
करत बिलाप बहुत एहि भांती। बैठेहिं बीत गई सब राती॥
बामदेव वशिष्ठ तब आए। सचिव महाजन सकल बुलाए
मुनि बहु भांति भरत उपदेशे। कहि परमारथ बचन सुदेशे

दो॰ तात हृदय धीरज धरहु करहु जो अवसर आज
उठे भरत गुरु बचन सुनि करन कहेउ सब काज

नृप तन बेद बिहित अन्हवावा। परम बिचित्र बिमान बनावा
गहि पद भरत मात सब राखीं। रही राम दरशन अभिलाखीं
चंदन अगर भार बहु आये। अमित अनेक सुगंध सुहाये
सरयु तीर रचि चिता बनाई। जनु सुरपुर सो पान सुहाई
एहि बिधि दाह क्रिया अस कीन्ही। बिधिवत न्हाय तिलांजुलि दीन्ही
सोधि सुमृति सब बेद पुराना। कीन्ह भरत दश गात्र बिधाना
जहं जस मुनिबर आयसु दीन्हा। तहं तस सहस भांति सब कीन्हा
भए बिशुद्ध दये सब दाना। धेनु बाजि गज बाहन नाना

दो॰ सिंहासन भूषण बसन अन्न धरणि धन धाम
दिये भरत लहि भूमि सुर भे परिपूरण काम॥

पित हित भरत कीन्ह जस करणी। सो मुख लाख जाइ नहिं बरणी

टी॰ रा॰ अ॰ ८९

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुदिन शोधि मुनिबर तब आए। सचिव महाजन सकल बुलाए
बैठे राज सभा सब जाई। पठये बोलि भरत दोउ भाई
भरत बशिष्ठ निकट बैठारे। नीति धरम मय बचन उचारे
प्रथम कथा सब मुनिबर बरणी। कइ कइ कुटिल कीन्ह जस करणी
भूप धर्म व्रत सत्य सराहा ॥ । जेहि तनु परिहरि प्रेम निबाहा
कहत राम गुण शील सुभाऊ। सजल नयन पुलकेउ मुनिराऊ
बहुरि लषण सिय प्रीति बखानी। शोक सनेह मगन मुनिज्ञानी
दो· सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनि नाथ
हानि लाभ जीवन मरण यश अपयश बिधि हाथ
दो. रा. अ. ८०
अस बिचारि केहि देइय दोषू। व्यर्थ काहि पर कीजिय रोषू ॥
तात बिचार करहु मन माहीं। शोच योग दशरथ नृपनाहीं
शोचिय बिप्र जो बेद बिहीना। तज निज धरम बिषय लवलीना
शोचिय नृपति जो नीति न जाना। जेहि न प्रजा प्रिय प्राण समाना
शोचिय बयस कृपिण धनवानू। जो न अतिथ शिव भगति सुजानू
शोचिय शूद्र बिप्र अपमानी। सुवर प्राण प्रिय ज्ञान गुमानी
शोचिय पुनि पति बंचक नारी। कुटिल कलह प्रिय इच्छाचारी
शोचिय बटु निज व्रत परिहरई। जो नहिं गुरु आयसु अनुसरई
दो· शोचिय गृही जो मोह बस करइ करम पथ त्याग
शोचिय यती प्रपंच रत बिगत बिबेक बिराग
बैषानस सोइ शोचन योगू। तप बिहाइ जेहि भावइ भोगू
शोचिय पिशुन अकारण क्रोधी। जननि जनक गुरु बंधु बिरोधी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सब बिधि सोचिय पर अपकारी। निजतन पोषक निर्दय भारी॥
सोचनीय सबही बिधि सोई। जो न छाँड़ि छल हरिजन होई
सोचनीय नहिं कोसल राऊ। भुवन चारिदस प्रगट प्रभाऊ
भयेउ न अहइ न अबहो निहारा। भरत भूप जस पिता तुम्हारा
बिधि हरिहर सुरपति दिसिनाथा। बरणहिं सब दसरथ गुण गाथा
दो॰ कहहु तात केहि भाँति कोउ करिहि बड़ाई तासु
राम लषण तुम रिपुहन सरिस सुअन सुचि जासु
सब प्रकार भूपति बड़ भागी। बाद बिषाद करिय तेहि लागी
एहु सुनि समुझि सोच परिहरहू। सिरधरि राज रजायसु करहू
राय राज पद तुमकहं दीन्हा। पिता बचन फुर चाहिय कीन्हा
तजे राम जेहि बचनहिं लागी। तनु परिहरेउ राम बिरहागी॥
नृपहिं बचन प्रिय नहिं प्रिय प्राणा। करहु तात पितु बचन प्रमाणा
करहु सीस धरि भूप रजाई। इहइ तुम्ह कहं सब भाँति भलाई
परशु राम पितु आज्ञा राखी। मारी मातु लोग सब साखी
तनय ययातिहि यो वन दयऊ। पितु आज्ञा अघ अजस न भयऊ
दो॰ अनुचित उचित बिचार तजि जे पालहिं पितु बैन
ते भाजन सुख सुयश के बसहिं अमरपति ऐन
अवश जेरा बचन फुर करहू। पालहु प्रजा शोक परिहरहू
सुरपुर नृप पाइहि परितोषू। तुम कहं सुकृत सुयश नहिं दोषू
बेद बिहित सम्मत सबहीका। जेहि पितु देइ सो पावहिं टीका
करहु राज परिहरहु गलानी। मानहु मोर बचन हित जानी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनि सुखलहब राम बैदेही। अनुचित कहब न पंडित केही
कौशिल्यादि सकल महतारी। तेउ प्रजा सुख होहिं सुखारी
भरत तुम्हार राज करि जानिहिं। सो सब बिधि तुम सनमुख मानहिं
सौंपेउ राज राम के आये। सेवा करेहु सनेह सुहाये ॥
दो॰ कीजिय गुर आयसु अवशि कहहिं सचिव कर जोरि
रघुबर आयेउ चित जस तस तब करब बहोरि ॥
कौशिल्या धरि धीरज कहई। पूत पथ्य गुरु आयसु अहई
सो आदरिय करिय हित मानी। तजिय बिषाद काल गति जानी
बन रघुपति सुरपुर नर नाहू। तुम एहि भांति तात कदराहू
परिजन प्रजा सचिव सब अंबा। तुमही सुत सब कहं अवलंबा
लखि बिधि बाम काल कठिनाई। धीरज धरहु मातु बलिजाई
सिर धरि गुरु आयसु अनुसरहू। प्रजा पाल परिजन दुख हरहू
गुरके बचन सचिव अभिनंदन। सुने भरत हिय हित जनु चंदन
सुनी बहोरि मातु मृदु बानी। शील सनेह सरल रस सानी
छं॰ सानी सरल रस मातु बानी सुनि भरत आकुल भये
लोचन सरोरुह स्रवत सींचत बिरह उर अंकुर नये
सो दशा देखत समय तेहि बिसरी सबहि सुधि देहकी
तुलसी सराहत सकल सादर सीव सहज सनेहकी
सो॰ भरत कमल कर जोरि धीर धुरंधर धीर धरि ॥
बचन अमिय जनु बोरि देत उचित उत्तर सबहिं
मोहि उपदेश दीन्ह गुरु नीका। प्रजा सचिव सम्मत सबहीका

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मातु उचित धरि आयसु दीन्हा। अवशि शीश धरि चाहौं कीन्हा
गुरु पित मात स्वामि हित बानी। सुनि मन मुदित करिय भल जानी
उचित कि अनुचित किये बिचारू। धरम जाइ शिर पातक भारू
तुम तो देहु सरल सिख सोई। जो आचरत मोर भल होई
यद्यपि यह समुझत हों नीके। तदपि होत परितोष न जीके
अब तुम मोरि बिनय सुन लेहू। मोहि अनुहरत सिखावन देहू
उत्तर देउं क्षमव अपराधू। दुखित दोष गुण गनहिन साधू

दो॰ पितु सुर पुर सिय राम बन करन कहहु मोहि राज
एहि तें जानहु मोर हित कै आपन बड़ काज ॥

हित हमार सिय पति सेवकाई। सोहर लीन्ह मातु कुटिलाई
मैं अनुमानि दीख मन माहीं। आन उपाय मोर हित नाहीं
शोक समाज राज केहि लेखे। लषण राम सिय पद बिन देखे
बाद बसन बिनु भूषण भारू। बादि बिरति बिन ब्रह्म बिचारू
सहज शरीर बादि बहु भोगा। बिनु हरि भगति जाय जप योगा
जाय जीव बिनु देह सुहाई। बादि मोरि सब बिनु रघुराई
जाउं राम पहं आयसु देहू। एकहि अंक मोर हित एहू ॥
मोहि नृप करि भल आपन चहहू। सोउ सनेह जड़ता बस कहहू

दो॰ कैकेइ सुअन कुटिल मति राम बिमुख गत लाज
तुम चाहत सुख मोह बस मोहि ते अधम के राज

कहौं सांच सब सुनि पतियाहू। चाहिय धरम शील नरनाहू
मोहि राज हठि देइहहु जबहीं। रसा रसातल जाइहि तबहीं

टी॰ रा॰ अ॰ ९३

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मोहि समान को पाप निवासू। जेहि लगि सीय राम बन बासू
राय राम कहं काजन दीन्हा। बिछुरत गमन अमर पुर कीन्हा
मैं सठ सब अनरथ कर हेतू। बैठ बात सब सुनउं सचेतू ॥
बिनु रघुबीर बिलोकिय बासू। रहे प्राण सहि जग उपहासू ॥
राम पुनीत बिषय रस रूखे। लोलुप भूमि भोग के भूखे ॥
कहं लगि कहौं हृदय कठिनाई। निदरि कुलिस जेहि लही बड़ाई
दो॰ कारण तें कारज कठिन होइ दोष नहिं मोर
कुलिश अस्थि तें उपल तें लोह कराल कठोर
कैकेई भव तनु अनुरागे। पावर प्राण अघाइ अभागे
जौ प्रिय बिरह प्राण प्रिय लागे। देखब सुनब बहुत अब आगे
लखण राम सिय कहं बन दीन्हा। पठइ अमर पुर पति हित कीन्हा
दो॰ ४८
लीन बिधव पन अपयश आपू। दीन्हेउ प्रजहिं शोक संतापू
मोहि दीन्ह सुख सुयश सुराजू। कीन्ह कैकई सब कर काजू
एहि तें मोर काह अब नीका। तेहि पर देन कहहु तुम टीका
कैकइ जठर जनमि जग माहीं। यह मोहि कहं कछु अनुचित नाहीं
मोरि बात सब बिधिहि बनाई। प्रजा पांच कत करहु सहाई
दो॰ गृह गृहीत पुनि बात बस तेहि पुनि बीछी मार
ताहि पियाइय बारुणी कहहु कवन उपचार
कैकइ सुवनि योग जग जोई। चतुर बिरंचि दीन्ह मोहि सोई
दशरथ तनय राम लघु भाई। दीन्ह मोहि बिधि बाद बनाई
तुम सब कहहु कढ़ावन टीका। गये राज सबही कहं नीका

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उतरु देउं केहि बिधि केहि केही। कहहु सुखेन यथा रुचि जेही
मोहि कुमात समेत बिहाई। कहहु कहिहि के कीन्ह भलाई॥
मो बिनु को सचराचर माहीं। जेहि सिय राम प्राण प्रिय नाहीं
परम हानि सब कहं बड़ लाहू। अदिन मोर नहिं दूषण काहू
संशय शील प्रेम बस अहहू। सबहु उचित सब जो कछु कहहू
हो॰ राम मातु सुठि सरल चित मोपर प्रेम बिशेषि
कहहु सुभाय सनेह बस मोरि दीनता देखि॥
गुर बिबेक सागर जग जाना। जिन्हहिं बिश्व करि बदर समाना
मोकहं तिलक साज सज सोई। भये बिधि बिमुख बिमुख सबकोई
परिहर राम सीय जग माहीं। कोउ तजकहिहि मोर मत नाहीं
सो मैं सुनब सहब सुखमानी। अंतहुं कीच तहां जहां पानी
डर न मोहि जग कहिहि किपेचू। परलोकहु कर नाहिन सोचू
एकइ उर बर दुसह दवारी। मोहि लगिभे सिय राम दुखारी
जीवन लाहु लषण सबपावा। सब तजि राम चरण मन लावा
मोर जनम रघुबर बन लागी। मूढ काह पछिताउं अभागी॥
हो॰ आपनि दारुण दीनता कहउं सबहिं शिरनाइ
देखे बिन रघुनाथ पद जिय कै जरनि न जाइ
आन उपाव मोहि नहिं सूझा। को जिय कै रघुबर बिनबूझा
एकहि आंकि इहै मन माहीं। प्रात काल चलिहौं प्रभु पाहीं
यद्यपि मैं अनभल अपराधी। अद मोहि कारण सकल उपाधी
तदपि सरण सन्मुख मोहि देखी। क्षमि सब करिहहिं कृपा बिशेषी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शील सकुच सुठि सरल सुभाऊ। कृपा सनेह सदन रघुराऊ॥
अरिहु क अनभल कीन्ह न रामा। मैं सिसु सेवक यद्यपि बामा
तुम्ह पै पांच मोर भल मानी। आयसु आशिष देहु सुबानी
जेहि सुनि बिनय मोहि जनु जानी। आवहिं बहुरि राम रज धानी
दो॰ यद्यपि जनम कुमात तें मैं सठ सदा सदोस।
आपन जानि न त्यागिहैं मोहि रघुबीर भरोस
भरत बचन सब कहं प्रिय लागे। राम सनेह सुधा जनु पागे॥
मात सचिव गुर पुर नर नारी। सकल सनेह बिकल भए भारी
भरतहिं कहहिं सराहि सराहीं। राम प्रेम मूरति तनु अहहीं
लोग बियोग बिषम बिष दागे। मंत्र सबीज सुनत जनु जागे
तात भरत अस काहे न कहहू। प्राण समान राम प्रिय अहहू
जो पांवर अपनी जड़ताई। तुमहिं सुगाय मातु कुटिलाई
सो सठ कोटिक पुरुष समेता। बसहिं कल्प सत नरक निकेता
अहि अघ अवगुण नहि मन गहई। हरइ गरल दुख दारिद दहई
दो॰ अवशि चलिय बन राम जहं भरत मंत्र भल कीन्ह
शोक सिंधु बूड़त सबहिं तुम अवलंबन दीन्ह
भा सब के मन मोद न थोरा। जनु घन धुनि सुन चातक मोरा
चलत प्रात लखि निरनउ नीके। भरत प्राण प्रिय भे सबही के
मुनिहि बंदि भरत यहिं शिरनाई। चले सकल घर बिदा कराई
धन्य भरत जीवन जग माहीं। शील सनेह सराहत जाहीं
कहहिं परस्पर भा बड़ काजू। सकल चलइ कर साजहिं साजू

टी॰ रा॰ अ॰ ९६

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जेहिं रारवहिं घर रुद रखवारी। सोइ जानइ जनु गरदन मारी॥
कोउ रह रहनि कहिय नहिं काहू। कोन चहइ जग जीवन लाहू
दो॰ जरउ सो संपति सदन सुखद हृदय मात पित भाइ
सनमुख होत जो राम पद करइ न सहज सहाइ
घर घर साजहिं बाहन नाना। हरष हृदय परभात पयाना
भरत जाइ घर कीन्ह बिचारू। नगर बाजि गज भवन भंडारू
संपति सब रघुपति कै आही। जो बिनु जतन चलउं तजि ताही
नो परिनाम न मोरि भलाई। पाप सिरोमनि साइ दोहाई
करइ स्वामि हित सेवक सोई। दूषन कोटि देइ किन कोई
अस बिचारि सुचि सेवक बोले। जे सपनेहु निज धरम न डोले
कहि सब मरम धरम भल भाखा। जो जेहि लायक सो तेहिं राखा
करि सब जतन राखि रखवारे। राम मातु पहिं भरत सिधारे॥
दो॰ आरत जननी जानि सब भरत सनेह सुजान
कहेउ बनावन पालकी सजन सुखासन जान
चक्क चकि जिमि पुरजन नारी। चहत प्रातउर आरत भारी॥
जागत सब निसि भएउ बिहाना। भरत बोलाए सचिव सुजाना
कहेउ लेहु सब तिलक समाजू। बनहिं देब मुनि रामहिं राजू॥
बेगि चलेहु सुनि सचिव जोहारे। तुरत तुरंग रथ नाग सँवारे
अरुंधती अरु अगिनि समाजू। रथ चढ़ि चले प्रथम मुनिराजू
बिप्र बृंद चढ़ि बाहन नाना। चले सकल तप तेज निधाना
नगर लोग सब सजि सजि जाना। चित्रकूट कहं कीन्ह पयाना

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शिविका सुभग न जाहिं बखानी। चढ़ि चढ़ि चलत भईं सब रानी
दो॰ सौंपि नगर सुचि सेवकन सादर सबहिं चलाइ
सुमिरि चरण सिय राम तब चले भरत दोउ भाइ
राम दरश बस सब नर नारी। जनु करि करिनि चले तकि बारी
बन सिय राम समुझ मन माहीं। सानुज भरत पयादेहिं जाहीं
देखि सनेह लोग अनुरागे। उतरि चले हय गय रथ त्यागे
जाइ समीप राखि निज डोली। राम मातु मृदु बानी बोली
तात चढ़हु रथ बलि महतारी। होइहि प्रिय परिवारु दुखारी
तुम्हरे चलत चलिहि सबु लोगू। सकल शोक कृश नहिं मगयोगू
सिर धरि बचन चरण सिर नाई। रथ चढ़ि चलत भए दोउ भाई
तमसा प्रथम दिवस करि बासू। दूसर गोमति तीर निवासू
दो॰ पय अहार फल असन एक निशि भोजन सबलोग
करत राम हित नेम ब्रत परिहर भूषण भोग ॥
सई तीर बसि चले बिहाने। शृंगबेर पुर सब नियराने ॥
समाचार सब सुने निषादा। हृदय बिचारि करैं सबिषादा
कारण कवन भरत बन जाहीं। है कछु कपट भाव मन माहीं
जौ पै जिय न होति कुटिलाई। तौ कत लीन्ह संग कटकाई
जानहिं सानुज रामहिं मारी। करौं अकंटक राज सुखारी
भरत न राज नीति उर आनी। तब कलंक अब जीवन हानी
सकल सुरासुर जुरहिं जुझारा। रामहिं समर न जीतनिहारा
का आचरज भरत अस करहीं। नहिं बिष बेलि अमिय फल फरहीं

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अस बिचारि गुरु ज्ञाति सन कहेउ सजग सब होहु
हथ बांसहु बोरहु तरणि कीजिय घाटा रोहु ॥
होहु संयोग लरौं कहु घाटा। ठाटहु सकल मरहु कै ठाटा
सनमुख लोहु भरत सन लेऊं। जिअत न सुरसरि उतरन देऊं
समर मरण पुनि सुरसरि तीरा। राज काज छिन भंग शरीरा
भरत भाइ नृप मैं जन नीचू। बड़े भाग अस पाइय मीचू
स्वामि काज करिहउं रण रारी। धरा धवलि हउं भुवन दश चारी
तजउं प्राण रघुनाथ निहोरे। दुहूं हाथ मुद मोदक मोरे ॥
साधु समाज न जाकर लेखा। राम भक्त महं जासु न रेखा
जाय जियत जग सो महि भारू। जननी जोबन बिटप कुठारू
दो॰ बिगत बिखाद निषाद पति सबहिं बढ़ाइ उछाहु
सुमिरि राम मांगेउ तुरत तरकस धनुष सनाहु
बेगहु भाइहु सजहु संजोऊ। सुनि रजाय कदराय न कोऊ
भलेहि नाथ सब कहहिं स हरषा। एकहि एक बढ़ावइं करषा
चले निषाद जोहारि जोहारी। सूर सकल रण सूचै रारी ॥
सुमिरि राम पद पंकज पनहीं। भाथा बांधि चढ़ायेन्हि धनुहीं
अंगुरी पहिरि कूंड शिर धरहीं। फरसा बांस सेल सम करहीं
एक कुशल अति ओड़न खांड़े। कूदहिं गगन मनहुं क्षिति छांड़े
निज निज साज समाज बनाई। गुह रावतहिं जुहारे जाई ॥
देखि सुभट सब लायक जाने। लइ लइ नाम सकल सन माने
दो॰ भाइहु लावहु धोख जनि आज काज बड़ मोहि

मिलकरि बिबेनी जू
जात भए मुंड नाहि
बिधि करि शिला सित
जल को भाव कि सा
स्वती को लाल जलग
प्र है तहां भरत जू नहा
य बेबेनी सों कहत हैं
कि निज धर्म को त्यागि
भीख मांगत हों ता
को भाव उत्तम सेवका
ई धर्म जो केवल
स्वामी के सेवन में सा
वधान रहे तीर्थादि

टी॰
रा॰ अ॰
९९

देवतें कहो प्रयोजन
अरु निज धर्म क्षत्री
को त्यागि कही ये तो
दोष आवतु है तीर्थ
नहाइ भरद्वाज जू
ते भेट संवाद सोमु
नि उक्ति है भरतनुम
को तो राम प्रेम
कलंक कही बावन
तोला पात रती सिद्ध
है पारा के सम है
परंतु हम सब को
राम भगति रस
सिद्ध हेतु पारा
मय गवेश करि
वे को उपदेश
भयो अरु तुम

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनि सरोष बोले सुभट बीर अधीर न होहि
राम प्रताप नाथ बल तोरे। करहिं कटक बिनु भट बिनु घोरे
जीवत पाव न पाछे धरहीं। रुंड मुंड मय मेदिनि करहीं
दीख निषाद नाथ भल टोलू। कहेउ बजाउ जुझाऊ ढोलू॥
इतना कहत छींक भइ बाएं। कहेउ सगुनिअन्ह खेत सुहाएं
बूढ़ एक कह सगुन बिचारी। भरतहि मिलिअ न होइहि रारी
रामहिं भरत मनावन जाहीं। सगुन कहइ अस बिग्रहु नाहीं
सुनि गुह कहइ नीक कह बूढ़ा। सहसा करि पछिताय बिमूढ़ा
भरत सुभाउ सील बिनु बूझे। बड़ि हित हानि जानि बिनु जूझे

दो॰ गहहु घाट भट सिमटि सब लेहु परम मिलि जाहु
बूझ मित्र अरि मध्य गति तब तस करिहौं आहु

लखब सनेह सुभाय सुहाए। बैरु प्रीति नहिं दुरइ दुराए
अस कहि भेंट संजोवन लागे। कंदमूल फल खग मृग मांगे
मीन पीन पाठीन पुराने। भरि भरि भार कहारन्ह आने
मिलन साज सजि मिलन सिधाए। मंगल मूल सगुन सुभ पाए
देखि दूरतें कह निज नामू। कीन्ह मुनीसहिं दंड प्रनामू
जानि राम प्रिय दीन्ह असीसा। भरतहि कहेउ बुझाइ मुनीसा
राम सखा सुनि स्यंदन त्यागा। चले उतरि उमगत अनुरागा
गांव जाति गुरु नांव सुनाई। कीन्ह जोहार माथ महि लाई

दो॰ करत दंडवत देखि तेहि भरत लीन्ह उर लाइ
मनहुं लखन मन भेंटभइ प्रेम न हृदय समाइ

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भेटत भरत ताहि अति प्रीती। लोग सिहाहिं प्रेम के रीती ॥
धन्य धन्य धुनि मंगल मूला। सुर सराहि तेहि बरषहिं फूला
लोक बेद सब भांतिहि नीचा। जासु छांह छुइ लेइ असींचा
तेहि भरि अंक राम लघु भ्राता। मिलत पुलक परिपूरित गाता
राम राम कहि जे जंब हाहीं। तिनहिं न पाप पुंज समुहाहीं
यहि तो राम लाइ उर लीन्हा। कुल समेत जग पावन कीन्हा
करम नास जल सुरसरि परई। तेहि को कहहु शीश नहिं धरई
उलटा नाम जपत जग जाना। बाल मीक भए ब्रह्म समाना

दो॰ स्वपच सबरषस जमन जड़ पांवर कोल किरात
कहत राम पावन परम होत भवन बिख्यात।

नहिं अचरज युग युग चलिआई। केहि न दीन्ह रघुबीर बड़ाई
राम नाम महिमा सुर कहहीं। सुनि सुनि अवध लोक सुख लहहीं
राम सखहिं मिल भरत सप्रेमा। पूंछी कुशल सुमंगल क्षेमा
देखि भरत कर शील सनेहू। भा निषाद तेहि समय बिदेहू
सकुच सनेह मोद मन बाढ़ा। भरतहिं चितवत एक टक ठाढ़ा
धरि धीरज पद बंदि बहोरी। बिनय सप्रेम करत कर जोरी
कुशल मूल पद पंकज देखी। मैं तिहुं काल कुशल निज पेखी
अब प्रभु परम अनुग्रह तोरे। सहित कोटि कुल मंगल मोरे

दो॰ समुझि मोरि करतूति कुल प्रभु महिमा जिय जोइ
जो न भजइ रघुबीरपद जग बिधि बंचित सोइ ॥

कपटी कायर कुमति कुजाती। लोक बेद बाहर सब भांती

टी॰ रा॰ अ॰ १०१

बंशनाशक कलह कुकाठ भेल बाब हेड़ा ताको उन्माद नतंत्र बनायो जातें बिरोध हेतु है ता को ग्राम वा घर में गाड़ देतु है तातें शत्रु मूरति अपने वाएं पदतरे दबी रहत सो यंत्र अवध में गाड़ति रात्रि को गाढ़े को कुमंत्र मंथरा तें राम बन गवन की ह्वै संमत अरुत पस्वी रूप तें श्री रामचंद्र नूकोब न निकरि वो ए हि अवध में कुम न गड़ि वो है सोब ढ़ई ने हमारे सुख हेतु यह प्रयोग कियो ताको फल सब जग में बारह बाट पल्यौ मोह दैन्य २ भय ३ हास ४ हानि ५ गलानि ६ क्षुधा ७ तृषा ८ क्षोभ ९ मृत्यु १० व्यथा ११ अकीर्ति १२ या बारह बा टको उदाहरन

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राम कीन्ह आपन जबहीं ते। भये भुवन भूषन तबहीं ते॥
देखि प्रीति सुनि बिनय सुहाई। मिलेउ बहोरि भरत लघुभाई॥
कहि निषाद निज नाम सुबानी। सादर सकल जोहारी रानी॥
जानि लषण सब दीन्हि असीसा। जिअहु सुखी सय लाख बरीसा॥
निरखि निषाद नगर नर नारी। भये सुखी जनु लषण निहारी॥
कहहिं लहेउ एहि जीवन लाहू। भेंटेउ राम भरि बाहु॥
सुनि निषाद निज भाग्य बड़ाई। प्रमुदित मन लै चलेउ लेवाई॥

दो॰ सनकारे सेवक सकल चले स्वामि रुख पाइ।
घर तरु तर सर बाग बन बास बनाये न्हि जाइ॥

शृंगबेर पुर भरत दीख जबहीं। भे सनेह सब अंग शिथिल तबहीं॥
सोहत दिये निषादहु लागू। जनु तनु धरे बिनय अनुरागू॥
एहि बिधि भरत सेन सब संगा। दीख जाइ जग पावनि गंगा॥
राम घाट कहं कीन्ह प्रणामू। भा मन मगन मिले जनु रामू॥
करहिं प्रणाम नगर नर नारी। मुदित ब्रह्म मय बारि निहारी॥
करि मज्जन मांगहिं कर जोरी। रामचंद्र पद प्रीति न थोरी॥
भरत कहेउ सुरसरि तव रेनू। सकल सुखद सेवक सुर धेनू॥
जोरि पाणि बर मांगउं एहू। सीय राम पद सहज सनेहू॥

दो॰ एहि बिधि मज्जन भरत करि गुरु अनुशासन पाइ।
मातु नहानी जानि सब डेरा चले लिवाइ॥

जहं तहं लोगन्ह डेरा कीन्हा। भरत शोध सबही कर लीन्हा॥
गुरु सेवा करि आयसु पाई। राम मातु पहं गे दोउ भाई॥

चरण चापि कहि कहि मृदुबानी। जननी सकल भरत सनमानी
भाइहि सौंपि मातु सेवकाई। आपु निषादहिं लीन्ह बुलाई
चले सखा कर सों कर जोरे। सिथल सरीर सनेह न थोरे
पूंछत सखहिं सो ठाउं देखाऊं। नेकु नयन मन जरनि जुड़ाऊं
जहं सिय राम लषण निश सोए। कहत भरे जल लोचन कोए
भरत बचन सुनि भयउ बिषादू। दुख तहां लै गयउ निषादू
दो. जहं सिंसुपा पुनीत तरु रघुबर किय बिश्राम
अति सनेह सादर भरत कीन्हे दंडु प्रणाम ॥
कुश साथरी निहारि सुहाई। कीन्ह प्रणाम प्रदक्षिन जाई
चरण रेख रज आंखिन लाई। बनइ न कहत प्रीति आधिकाई
कनक बिंदु दुइ चारक देखे। राखे शीश सीय सम लेखे
सजल बिलोचन हृदय गलानी। कहत सखा सन बचन सुबानी
श्रीहत सीय बिरह दुति दीना। यथा अवध नर नारि मलीना
पिता जनक देउं पटतर केही। करतल भोग योग जग जेही
ससुर भानुकुल भानु भुआलू। जेहि सिहात अमरावतिपालू
प्राणनाथ रघुनाथ गोसांई। जो बड़ होत सो राम बड़ाई
दो. पति देवता सुतीय मणि सीय साथरी देख
बिहरत हृदय न हहरि हरि पबिते कठिन बिशेख
लालन योग लषण लघु लोने। भे न भाय अस अहहिं न होने
पुरजन प्रिय पितु मातु दुलारे। सिय रघुबीरहि प्राण पियारे
मृदु मूरति सुकुमार सुभाऊ। तात बाउ तन लागन काऊ

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ते बन बसहिं बिपत सब भांती। निदरे कोटि कुलिश एहि छाती
राम जनमि जग कीन्ह उजागर। रूप शील सुख सब गुण सागर
पुरजन परिजन गुरु पितु माता। राम सुभाव सबहिं सुख दाता
बैरिउ राम बड़ाई करहीं। बोलन मिलन बिनय मन हरहीं
सारद कोटि कोटि शत शेषा। करि न सकहिं प्रभु गुण गन लेखा
दो॰ सुख सरूप रघुबंश मणि मंगल मोद निधान।
ते सोवत कुश डास महि बिधि गत अति बलवान
राम सुना दुख कानन काऊ। जीवन तरु जिमि जुगवइ राऊ
पलक नयन फणि मणि जेहि भांती। जुगवहिं जननि सकल दिन राती
ते अब फिरत बिपिन पदचारी। कंद मूल फल फूल अहारी
धिक कैकई अमंगल मूला। भइसि प्राण प्रियतम प्रतिकूला
मैं धिक धिक अघ उदधि अभागी। सब उतपात भयउ जेहि लागी
कुल कलंक करि सृजेउ बिधाता। साद द्रोह मोहि कीन्ह कुमाता
सुनि सप्रेम समुझाव निषादू। नाथ करिय कत बाद बिषादू
राम तुमहिं प्रिय तुमहिं प्रिय रामहिं। यह निरदोष दोष बिधि बामहिं
छं॰ बिधि बाम की करणी कठिन जेहि मात कीन्ही बावरी
तेहि रात पुनि पुनि करहिं प्रभु सादर सराहन रावरी
तुलसी न तुम सो राम प्रीतम कहत हौं सोहैं किये
परिनाम मंगल जानि अपने आनिये धीरज हिये
सो॰ अंतर जामी राम सकुच सप्रेम कृपायतन॥
चलिय करिय बिश्राम यह बिचार दृढ़ आनि मन

टी॰ रा॰ अ॰ २०४

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सखा बचन सुनि उर धरि धीरा। बास चले सुमिरत रघुबीरा
यह सुधि पाइ नगर नर नारी। चले बिलोकन आरत भारी
पर दक्षिन करि करहिं प्रणामा। देहिं कैकइहि खोरिनि कामा
भरि भरि बारि बिलोचन लेहीं। बाम बिधातहिं दूषन देहीं
एक सराहहिं भरत सनेहू। कोउ कह नृपति निबाहेउ नेहू
निंदहि आप सराहि निषादहिं। को कहि सकहि बिमोह बिखादहिं
एहि बिधि राति लोग सब जागा। भा भिनुसार गुदारा लागा
गुरहिं सुनाव चढ़ाइ सुहाई। नई नाव सब मातु चढ़ाई
दंड चारि महं भा सब पारा। उतरि भरत तब सबहिं संभारा

दो॰ प्रात क्रिया करि मातु सब बंदि गुरुहिं शिर नाइ
आगे किये निषाद गण दीन्हेउ कटक चढ़ाइ॥

कियेउ निषाद नाथ अगुवाई। मातु पालकी सकल चलाई
साथ बुलाइ भाइ लघु दीन्हा। बिप्रन सहित गवन गुर कीन्हा
आपु सुरसरिहि कीन्ह प्रणामू। सुमरे सहित लषण सियरामू
गवने भरत पयादेहिं धाये। कोतल संग जाइ डोरि आयें
कहहिं सुसेवक बारहिं बारा। होइअ नाथ अ[illegible]असवारा
राम पयादेहि पाउं सिधाये। हम कहं रथ गज बाजि बनाये
शिर भर जाउं उचित असमोरा। सब तें सेवक धरम कठोरा॥
देखि भरत गति सुनि मृदु बानी। सब सेवक गण गरहिं ग लानी

दो॰ भरत तीसरे पहर कहं कीन्ह प्रवेश प्रयाग
कहत राम सिय राम सिय उमगि उमगि अनुराग

टी॰ रा॰ अ॰ १०५

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कलका कलकत पायन कैसे। पंकज कोश ओसकन जैसे
भरत पयोदेहि आये आजू। भयउ दरिद सुनि सकल समाजू
खबर लीन्ह सब लोग नहाये। कीन्ह प्रणाम त्रिवेनी आये
सबिधि सिता सित नीर नहाने। दिये दान महिसुर सनमाने
देखत स्यामल धवल हिलोरे। पुलक शरीर भरत कर जोरे
सकल काम प्रद तीरथ राऊ। बेद बिदित जग प्रगट प्रभाऊ
मागउं भीख त्याग निज धरमू। आरत काह न करइ कुकरमू
अस जिय जानि सुदान सुदानी। सफल करहिं जग याचक जानी
दो० अरथ न धरम न काम रुचि गति न चहउं निरवान
जनम जनम रति राम पद यह वरदान न आन
जानहु राम कुटिल कर मोही। लोग कहउ गुरु साहिब द्रोही
सीता राम चरण रत मोरे। अनुदिन बढ़उ अनुग्रह तोरे
जलद जनम भरि सुरत बिसारउ। जाचत जल पबि पाहन डारउ
चातक रटनि घटे घट जाई। बढ़े प्रेम सब भांति भलाई
कनकहि बान चढ़इ जिमि दाहें। तिमि प्रियतम पद नेम निबाहें
भरत बचन सुनि मांझ त्रिवेनी। भइ मृदु बानि सुमंगल देनी
तात भरत तुम सब बिधि साधू। राम चरण अनुराग अगाधू
बादि गलानि करहु मन माहीं। तुम सम रामहिं प्रिय कोउ नाहीं
दो० तनु पुलकउ हिय हरषि सुनि बेनि बचन अनुकूल
भरत धन्य कहि धन्य सुर हरषित बरषहिं फूल
प्रमुदित तीरथ राज निवासी। बैषानस बटु गृही उदासी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कहहिं परस्पर मिलि दस पांचा। भल सनेह सीलु सुठि सांचा
सुनत राम गुन ग्राम सुहाये। भरद्वाज मुनिवर पहं आये॥
दंड प्रनाम करत मुनि देखे। मूरति मंत भाग्य निज लेखे
धाइ उठाइ लाइ उर लीन्हे। दीन्ह असीस कृतारथ कीन्हे
आसन दीन्ह नाइ सिरु बैठे। चहत सकुच गृह जनु भजि पैठे
मुनि पूछब कछु यह बड़ सोचू। बोले रिषिबरु सीलु सकोचू
सुनहु भरत हम सब सुधि पाई। बिधि करतब पर किछु न बसाई
दो. तुम्ह गलानि जियं जनि करहु समुझि मातु करतूति
तात कैकइहि दोसु नहिं गई गिरा मति धूति॥
यहउ कहत भल कहिहि न कोऊ। लोक बेद बुध संमत दोऊ
तात तुम्हार बिमल जसु गाई। पाइहि लोकहु बेद बड़ाई
लोक बेद संमत सब कहई। जेहि पितु देइ राजु सो लहई
राज सत्यव्रत तुम्हहिं बोलाई। देत राजु सुखु धरमु बड़ाई
राम गवनु बन अनरथ मूला। जो सुनि सकल बिस्व भइ सूला
सो भावी बस रानि अयानी। करि कुचालि अनहित पछितानी
तहउं तुम्हार अलप अपराधू। कहइ सो अधम अयान असाधू
करतेहु राजु त्यागि तुम्हहि न दोषू। रामहिं होत सुनत संतोषू
दो. अब अति कीन्हेउ भरत भल तुम्हहिं उचित मत एहु
सकल सुमंगल मूल जग रघुबर चरन सनेहु॥
सो तुम्हार धन जीवन प्राना। भूरि भाग को तुम्हहि समाना
यह तुम्हार आचरजु न ताता। दसरथ सुअन राम प्रिय भ्राता

दो. रा. अ. १७

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनहु भरत रघुपति मन माहीं। प्रेम पात्र तुम सम कोउ नाहीं
लषण राम सीतहि अति प्रीती। निसि सब तुम्हहिं सराहत बीती
जाना परम नहात प्रयागा। भगत होहिं तुम्हरे अनुरागा
तुम पर अस सनेह रघुबरके। सुख जीवन जग यश जड़ करके
यह न अधिक रघुबीर बड़ाई। प्रणत पाल कुदंब रघुराई
तुम्ह तउ भरत मोर मत एहू। धरे देह जनु राम सनेहू॥
दो॰ तुम कहं भरत कलंक यह हम सब कहं उपदेश
राम भगति रस सिद्धि हित भा यह समय गणेश
नव बिधु बिमल तात यश तोरा। रघुबर किंकर कुमुद चकोरा
उदित सदा अथइहि कबहूना। घटिहि न जग नभ दिन दिनदूना
कोक तिलोक प्रीति अति करिहीं। प्रभु प्रताप रवि छबिहि न हरिहीं
निशि दिन सुखद सदा सब काहू। ग्रसिहि न कैकेइ करतब राहू
पूरण राम सुप्रेम पियूषा। गुरु अपमान दोष नहिं दूषा
राम भगत अब अमिअ अघाहू। कीन्हेउ सुलभ सुधा बसुधाहू
भूप भगीरथ सुरसरि आनी। सुमिरत सकल सुमंगल खानी
दशरथ गुन गण बरणि न जाहीं। अधिक कहा जेहि सम जग नाहीं
दो॰ जासु सनेह सकोच बस राम प्रगट भये आइ
जे हर हिय नयन कबहुं निरखे नहीं अघाइ
कीरति बिधु तुम कीन्ह अनूपा। जहं बस राम प्रेम मृग रूपा
तात गलानि करहु जिय जाए। डरहु दरिद्रहिं पारस पाए
सुनहु भरत हम झूठ न कहहीं। उदासीन तापस बन रहहीं

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सब साधन कर सुफल सोहावा। लषण राम सिय दरशन पावा
तेहि फल कर फल दरश तुम्हारा। सहित प्रयाग सुभाग हमारा
भरत धन्य तुम जग यश लयऊ। कहि अस प्रेम मगन मुनि भयऊ
सुनि मुनि बचन सभा सदहरषे। साधु सराहि सुमन सुर बरषे
धन्य धन्य पुनि गगन प्रयागा। सुनि सुनि भरत मगन अनुरागा

दो॰ पुलक गात हिय राम सिय सजल सरोरुह नैन
करि प्रणाम मुनि मंडलिहि बोले गद गद बैन

मुनि समाज अरु तीरथ राजू। सांचिहु शपथ अघाइ अकाजू
एहि थल जो कछु कहिय बनाई। एहि सम अधिक न अघ अधमाई
तुम सरवज्ञ कहौं सत भाऊ। उर अंतर जामी रघुराऊ॥
मोहि न मात कर तब कर शोचू। नहिं दुख जिय जग जानिहि पोचू
नाहिन डर बिगरिहि परलोकू। पितहि मरण कर मोहि न शोचू
सुकृत सुयश भरि भुवन सुहाये। लक्षमण राम सरिस सुत पाये
राम बिरह तजि तनु छन भंगू। भूप शोच कर कवन प्रसंगू
राम लषण सिय बिनु पग पनहीं। करि मुनि बेष फिरहिं बनबनहीं

दो॰ अजिन बसन फल असन महि सयन डास कुश पात
बसि तरु तर नित सहत हिम आतप बरषा बात॥

एहि दुख दाह दहइ दिन छाती। भूषण बासर नींद न राती
एहि कुरोग कर औषध नाहीं। शोधेउं सकल बिश्व मन माहीं
मात कुमति बढ़ई अघ मूला। तेहि हमार हित कीन्ह बसूला
कलि कुकाठ करि कीन्ह कुजंत्रू। गाड़ि अवध पढ़ि कठिन कुमंत्रू

टी॰ रा॰ अ॰ १०६

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मोहि लगु यह कुठाट जेहि ठाटा। घालेसि सब जग बारहि बाटा
मिटइ कुयोग राम फिरि आए। बसइ अवध नहिं आन उपाए
भरत बचन सुनि मुनि सुख पाई। सबहिं कीन्ह बहु भाँति बड़ाई
तात करहु जनि सोच बिसेषी। सब दुख मिटहिं राम पग देखी
दो॰ करि प्रबोध मुनिबर कहेउ अतिथि प्रेम प्रिय होहु
कंदमूल फल फूल हम देहिं लेहु करि छोहु॥
सुनि मुनि बचन भरत हिय सोचू। भयउ कुअवसर कठिन सकोचू
जानि गुरुइ गुरु गिरा बहोरी। चरन बंदि बोले कर जोरी
सिर धरि आयसु करिय तुम्हारा। परम धरम यह नाथ हमारा
भरत बचन मुनिबर मन भाए। मुनि सेवक सिष निकट बुलाए
चाहिय कीन्ह भरत पहुनाई। कंदमूल फल आनहु जाई॥
भलेहि नाथ कहि तिन्ह सिर नाए। प्रमुदित निज निज काम सिधाए
मुनिहिं सोच पाहुन बड़ नेवता। तस पूजा चाहिय जस देवता
सुनि रिधि सिधि अनिमादिक आईं। आयसु होइ सो करहिं गोसाईं
दो॰ राम बिरह ब्याकुल भरत सानुज सहित समाज
पहुनाई करि हरहु श्रम कहा मुदित मुनि राज
रिधि सिधि सिर धरि मुनिबर बानी। बड़ भागिनि आपुहि अनुमानी
कहहिं परस्पर सिधि समुदाई। अतुलित अतिथि राम लघु भाई
मुनि पद बंदि करिय सोइ आजू। होहि सुखी सब राज समाजू
अस कहि रचेउ रुचिर गृह नाना। जे बिलोकि बिलखाहिं बिमाना
भोग बिभूति भूरि भरि राखे। देखत जिन्हहिं अमर अभिलाषे

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दासी दास साज सब लीन्हे। जोगवत रहहिं मनहिं मन दीन्हे
सब समाज सब बिधि पल माहीं। जे सुख सुर पुर सपनेहुं नाहीं
प्रथमहिं बास दिये सब केही। सुंदर सुखद यथा रुचि जेही
दो॰ बहुरि सपरिजन भरतकहुं ऋषि अस आयसु दीन्ह
बिधि बिसमय दायक बिभव मुनिबर तप बल कीन्ह
मुनि प्रभाउ जब भरत बिलोका। सब लघु लगे लोक पति लोका
सुख समाज नहिं जाइ बखानी। देखत बिरति बिसारहिं ग्यानी
आसन सयन सुबसन बिताना। बन बाटिका बिहंग मृग नाना
सुरभि फूल फल अमिय समाना। बिमल जलासय बिबिध बिधाना
असन पान सुचि अमित अमीसे। देखि लोग सकुचाहिं जमीसे
सुर सुरभी सुरतरु सबही के। लखि अभिलाष सुरेस सचीके
रितु बसंत बह त्रिबिध बयारी। सब कहं सुलभ पदारथ चारी
सरग चंदन बनिता दिक भोगा। देखि हरषि बिसमय सब लोगा
दो॰ संपति चकई भरत चक मुनि आयसु खेलवार
तेहि निसि आश्रम पिंजरां राखे भा भिनुसार
कीन्ह निमज्जन तीरथ राजा। नाइ मुनिहिं सिर सहित समाजा
रिषि आयसु असीस सिर राखी। करि दंडवत बिनय बहु भाखी
पथिगत कुसल साथ सब लीन्हे। चले चित्रकूटहिं चित दीन्हे
राम सखा कर दीन्हे लागू। चलत देह धरि जनु अनुरागू
नहिं पद त्राण सीस नहिं छाया। प्रेम नेम ब्रत धरम अमाया
लषण राम सिय पंथ कहानी। पूंछत सखहिं कहत मृदु बानी

राम बास थल बिटप बिलोके। उर अनुराग रहत नहिं रोके
देखि दसा सुर बरषहिं फूला। भइ मृदु महि मगु मंगल मूला
दो॰ किये जाहिं छाया जलद सुखद बहइ बर बात ॥
तस मग भयउ न राम कहं जस भा भरतहि जात
जड़ चेतन मग जीव घनेरे। जे चितये प्रभु जिन्ह प्रभु हेरे
ते सब भये परम पद जोगू। भरत दरस मेटा सब रोगू ॥
यह बड़ि बात भरत कै नाहीं। सुमरत जिन्हहिं राम मन माहीं
बारेक राम कहत जग जेऊ। होत तरण तारण नर तेऊ ॥
भरत राम प्रिय पुनि लघु भ्राता। कस न होइ मग मंगल दाता
सिद्ध साध मुनिबर अस कहहीं। भरतहि निरखि हरष हियं लहहीं
देखि प्रभाव सुरेसहि सोचू। जगभल भलेहि पोच कहं पोचू
गुरु सन कहेउ करिय प्रभु सोई। रामहिं भरतहिं भेंट न होई ॥
दो॰ राम सकोची प्रेम बस भरत सु प्रेम पयोधि ॥
बनी बात बिगरन चहत करिय यतन छल शोधि
बचन सुनत सुरगुरु मुसकाने। सहस नयन बिन लोचन जाने
कह गुरु बादि छोभ छल छाड़ू। इहां कपट कर होइ अभाड़ू
मायापति सेवक सन माया। करियत उलटि परइ सुरराया
तब कछु कीन्ह राम रुख जानी। अब कुचालि करि होइहि हानी
सुन सुरेस रघुनाथ सुभाऊ। निज अपराध रिसाहिं न काऊ
जो अपराध भगत करि करई। राम रोष पावक सो जरई
लोकहुं बेद बिदित इतिहासा। यह महिमा जानहिं दुरबासा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भरत सरिस को राम सनेही। जग जपु राम राम जप जेही ॥
दो॰ मन्द्रु न आनिय अमर पति रघुबर भक्त अकाज
अयश लोक परलोक दुख दिन दिन सोक समाज
सुन सुरेश उपदेश हमारा। रामहि सेवक परम पियारा ॥
मानत सुख सेवक सेवकाई। सेवक बैर बैर अधिकाई ॥
यद्यपि सम नहिं राग न रोषू। गहहि न पाप पुण्य गुण दोषू
करम प्रधान बिश्व करि राखा। जो जस करै सो तस फल चाखा
तदपि करहिं सम बिषम बिहारा। भक्त अभक्त हृदय अनुसारा
अगुण अलेख अमान एकरस। राम सगुण भए प्रेम भक्त बस
राम सदा सेवक रुचि राखी। बेद पुराण साधु सुर साखी
अस जिय जानि तजहु कुटिलाई। करहु भरत पद प्रीति सुहाई
दो॰ राम भक्त पर हित निरत पर दुख दुखी दयाल
भक्त शिरोमणि भरत तें जनि डरपहु सुरपाल
सत्यसिंधु प्रभु सुर हित कारी। भरत राम आयसु अनुहारी
स्वारथ बिबस बिकल तुम होहू। भरत दोष नहिं राउर मोहू
सुनि सुरबर सुरगुरु हित बानी। भा प्रबोध जनु मिटी गलानी
बरषि प्रसून हर्षि सुर राजा। लगे सराहन भरत समाजा
इहि बिधि भरत चले मग माहीं। दसा देखि मुनि सिद्ध सिहाहीं
जबहिं राम कहि लेहिं उसासा। उमगत प्रेम मनहुं चहु पासा
द्रवहिं बचन सुनि कुलिश पषाना। पुरजन प्रेम न जाइ बखाना
बीच बास करि जमुनहिं आए। निरखि नीर लोचन जल छाए

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो॰ रघुबर बर्ण बिलोकि बर बारि समेत समाज
होत बिरह बारिध मगन चढ़े बिबेक जहाज
यमुन तीर तेहि दिन कर बासू। भयउ समय सब सबहिं सुपासू
रातिहि घाट घाट की तरणी। आईं अगणित जाइ न बरणी
प्रात पार भे एकहि खेवा ॥। तोषे राम सखा करि सेवा
चले अन्हाय नदिहि शिर नाई। साथ निषाद नाथ लघु भाई
आगे मुनिबर बाहन आछे। राज समाज जाय सब पाछे॥
तेहि पाछे सब बंधु पयादे। भूषण बसन बेष सुठि सादे
सेवक सुहृद सचिव सब साथा। सुमिरत लषण सीय रघुनाथा
जहं जहं राम बास बिश्रामा। तहं तहं करहिं सप्रेम प्रणामा
दो॰ मगु बासी नर नारि सुन धाम काज तजि धाय
देखि स्वरूप सनेह बस मुदित जन्म फल पाय
कहहिं सप्रेम एक इक पाहीं। राम लषण सखि होहिं कि नाहीं
बय बपु बरण रूप सोइ आली। शील सनेह सरस सम चाली
बेष न से सखि सीय न संगा। आगे अनी चली चतुरंगा
नहिं प्रसन्न मुख मानस खेदा। सखि संदेह होत इहि भेदा
तासु तर्क तिय गण मन मानी। कहहिं सकल तोहि सम न सयानी
तेहि सराहि बाणी फुर पूजी। बोली मधुर बचन तिय दूजी
कहि सप्रेम सब कथा प्रसंगू। जेहि बिधि राम राज रस भंगू
भरतहि बहुरि सराहन लागी। शील सनेह सुभाव सुभागी
दो॰ चलत पयादे खात फल पिता दीन्ह तजि राज

टी॰ रा॰ अ॰ १२४

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जात मनावन रघुबरहिं भरत सरिस को आज
भायप भक्ति भरत आचरए। कहत सुनत दुख दूषण हरए
जो कछु कहिय थोरि सरिसोई। राम बंधु अस काहेन होई
हम सब सानुज भरतहिं देखे। भये धन्य जुवती जन लेखे
सुनि गुण देखि दसा पछिताहीं। कैकइ जननि जोग सुत नाहीं
कोउ कह दूषण रानिउ नाहिन। बिधि सब भांति हमहिं जो दाहिन
कहं हम लोक बेद बिधि हीना। लघु कुल तिय करतूति मलीना
बसहिं कुदेश कुगांव कुठामा। कहं यह दरस पुण्य परिणामा
अस आनंद अचरज प्रति ग्रामा। जनु मरु भूमि कल्प तरु जामा
दो॰ भरत दरस देखत खुले मग लोगन्ह कर भाग ॥
जनु सिंघल कासिन अवध बिधि बस सुरसरि प्राग
निज गुण सहित राम गुण ग्रामा। सुनत जाहिं सुमिरत रघुनाथा
तीरथ मुनि आश्रम सुरधामा। निरखत निमज्जहिं करहिं प्रणामा
मनहीं मन मांगहिं बर एहू। सीय राम पद पदुम सनेहू ॥
मिलहिं किरात कोल बनवासी। बैखानस बटु गृही उदासी
करि प्रणाम पूछहिं जेहि तेही। केहि बन लखन रामु बैदेही
ते प्रभु समाचार सब कहहीं। भरतहि देखि जनम फल लहहीं
जे जन कहहिं कुशल हम देखे। ते प्रिय राम लखन सम पेखे
इहि बिधि बूझत सबहिं सुबानी। सुनत राम बन बास कहानी
दो॰ तेहि बासर बस प्रातहीं चले सुमिरि रघुनाथ
राम दरस की लालसा भरत सरिस सब साथ

टी ए॰ अ ११५

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मंगल सगुण होहिं सब काहू। फरकहिं सुखद बिलोचन बाहू
भरतहिं सहित समाज उछाहू। मिलिहहिं राम मिटहिं दुखदाहू
करत मनोरथ जस जिय जाके। जाहिं सनेह सुरा सब छाके
शिथिल अंग पग मग डग डोलहिं। बिह्वल बचन प्रेम बस बोलहिं
राम सखा तेहि समय देखावा। सैल शिरोमणि सहज सुहावा
जासु समीप सरित पय नीरा। सीय समेत बसहिं दोउ बीरा
देखि करहिं सब दंड प्रणामा। कहि जिय जानकी जीवन रामा
प्रेम मगन अस राज समाजू। जनि फिर चले अवध रघुराजू

दो॰ भरत प्रेम तेहि समय जस तस कहि सकइ न शेस
कविहि अगम जिमि ब्रह्म सुख अरु मम मलिन जनेस

टी॰ रा॰ अ॰ ११६

सकल सनेह शिथिल रघुबरके। गए कोस दुइ दिन कर ढरके
जल थल देखि बसे निशि बीते। कीन्ह गवन रघुनाथ पिरीते
उहां राम रजनी अवशेषा। जागे सीय सपन अस देषा
सहित समाज भरत जनु आये। नाथ बियोग ताप तन ताये
सकल मलिन मन दीख दुखारी। देखीं सासु आन अनहारी
सुनि सिय सपन भरे जल लोचन। भए शोच बस शोच बिमोचन
लषण सपन यह नीक न होई। कठिन कुचाह सुनाइहि कोई
अस कह बंधु समेत नहाने। पूजि पुरारि साधु सन माने
छं॰ सनमानि सुरमुनि पूजि बैठे उतर दिशि देखत भये॥
नभ धूरि खग मृग भूरि भागे बिकल प्रभु आश्रम गये
तुलसी उठे अवलोकि कारण काह चित चाकत रहे

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सब समाचार किरात कोल्हन आदु नेहि अवसर कहे
सो. सुनत सुमंगल बैन मन प्रमोद तन पुलक भर
सरद सरोरुह नैन तुलसी भरे सनेह जल ॥
बहुरि सोच बस भये सिय रमनु। कारन कवन भरत आगमनु ॥
एक आइ अस कहा बहोरी। सेन संग चतुरंग न थोरी ॥
सो सुनि रामहिं आति सोचू। इत पितु बच उत बंधु संकोचू
भरत सुभाउ समुझि मन माहीं। प्रभु चित हित थित पावत नाहीं
समाधान तब भा यह जाने। भरत कहे महुं साधु सयाने
लखन लखेउ प्रभु हृदय खभारू। कहत समय सम नीति बिचारू
बिनु पूछे कछु कहउं गोसांई। सेवक समयं न ढीठ ढिठाई
तुम सर्बज्ञ सिरोमनि स्वामी। आपुनि समुझि कहौं अनुगामी
दो. नाथ सुहृद सुठि सरल चित सील सनेह निधान
सब पर प्रीति प्रतीति जियं जानिअ आपु समान
बिषयी जीव पाइ प्रभुताई। मूढ़ मोह बस होहिं जनाई ॥
भरत नीति रत साधु सुजाना। प्रभु पद प्रेम सकल जग जाना
तेऊ आज राज पद पाई ॥ चले धरम मरजाद मिटाई ॥
कुटिल कुबंधु कुअवसर ताकी। जानि रामबन बास एकाकी ॥
करि कुमंत्र मन साजि समाजू। आए करै अकंटक राजू ॥
कोटि प्रकार कलपि कुटिलाई। आए दल बटोरि दोउ भाई ॥
जौ जिय होति न कपट कुचाली। केहि सोहाति रथ बाजि गजाली
भरतहिं दोष देय को जाए। जग बौराइ राज पद पाए

टी. रा. अ. २७

दो॰ शशि गुरु तिय गामी नहुष चढ़ेउ भूमि सुर जान
लोक वेद तें बिमुख भा अधम न वेण समान ॥

सहस बाहु सुर नाथ त्रिसंकू। केहि न राज मद दीन्ह कलंकू ॥
भरत कीन्ह यह उचित उपाऊ। रिपु रण रंचक करब काऊ
एक कीन्ह नहिं भरत भलाई। निदरे राम जान अस काई ॥
समुझि परिहि सो आजु बिसेषी। समर सरोष राम मुख पेखी
एतना कहत नीति रस भूला। रण रस बिटप पुलकि मिस फूला
प्रभु पद बंदि सीस रज राखी। बोले सत्य सहज बल भाखी
अनुचित नाथ न मानब मोरा। भरत हमहिं उपचार न थोरा
कहं लगि सहिय रहिय मन मारे। नाथ साथ धनु हाथ हमारे

दो॰ छत्रि जाति रघुकुल जनम राम अनुज जग जान
लातहुं मारे चढ़त सिर नीच को धूरि समान ॥

उठ कर जोरि रजायसु मांगा। मनहुं बीर रस सोवत जागा।
बांधि जटा सिर कस कटि भाथा। साजि सरासन सायक हाथा
आजु राम सेवक जस लेऊं। भरतहिं समर सिखावन देऊं
राम निरादर कर फल पाई। सोवइ समर सेज दोउ भाई ॥
आइ बना भल सकल समाजू। प्रगट करौं रिस पाछिल आजू
जिमि करि निकर दलइ मृग राजू। लेइ लपेटि लवा जिमि बाजू ॥
तैसहिं भरतहिं सेन समेता। सानुज निपातउं खेता
जौ सहाय कर संकर आई। तौ मारौं रण राम दोहाई ॥

दो॰ अति सरोष माखे लषन लखि सुनि सपथ प्रमान

दी॰ रा॰ अ॰ ११८

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

समय लोक सब लोक पति चाहत भभरि भगान ॥
जग भय मगन गगन भइ बानी। लषण बाहु बल बिपुल बखानी
मान प्रताप प्रभाव तुम्हारा। को कहि सकइ को जानन हारा
अनुचित उचित काजु कछु होऊ। समुझि करिय भल कह सब कोऊ
सहसा करि पाछे पछिताहीं। कहहिं बेद बुध ते बुध नाहीं ॥
सुनि सुर बचन लषण सकुचाने। राम सीय सादर सन माने
कही तात तुम नीति सुहाई। सबतें कठिन राज मद भाई ॥
जो अंचवत नृप मातहि तेई। नाहिन साधु सभा जेहि सेई ॥
सुनहु लषण भल भरत सरीसा। बिधि प्रपंच महं सुना न दीसा

दो. भरतहिं होइ न राज मद बिधि हरि हर पद पाय
कबहुं कि कांजी सीकरनि छीर सिंधु बिनसाय

तिमिर तरुण तरणिहि मकु गिलई। गगन मगन मकु मेघहि मिलई
गोपद जल बूडहिं घट जोनी। सहज क्षमा बरु छाड़ै छोनी
मसक फूंक मकु मेरु उड़ाई। होइ न नृप मद भरतहिं भाई
लषण तुम्हार सपथ पितु आना। सुचि सुबंधु नहिं भरत समाना
सगुण खीरु अवगुण जलपाना। करइ परिपंच बिधाता
भरत हंस रवि बंश तड़ागा। जनमि कीन्ह गुण दोष बिभागा
गहि गुण पय तजि अवगुण बारी। निज यश जगत कीन्ह उजियारी
कहत भरत गुण शील सभाऊ। प्रेम पयोधि मगन रघुराऊ।

दो. सुनि रघुबर बाणी बिबुध देखि भरत पर हेत
सकल सराहत राम सो प्रभु को कृपा निकेत

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जो न होत जग जग जनम भरतको। सकल धरम धुरिधरणिधरतको
कवि कुल अगम भरत गुण गाथा। को जानइ तुम बिन रघुनाथा
लषण राम सिय सुनि सुर बानी। अति सुख लहेउ न जाइ बखानी
इहां भरत सब सहित सहाए। मंदाकिनी पुनीत नहाए॥
सरित समीप राख सब लोगा। मांगि मातु गुरु सचिव नियोगा
चले भरत जहं सिय रघुराई। साथ निषाद नाथ लघु भाई
समुझि मातु करतब सकुचाहीं। करत कुतर्क कोटि मन माहीं
राम लषण सिय सुनि मम नाऊं। उठि जनि अनित जाहिं तजि ठाऊं

दो॰ मातु मते यह मानि मोहि जो कछु करहिं सो थोर
अघ अवगुण छपि आदरहिं समुझ आपनी ओर

जौ परि हरहिं मलिन मन जानी। तो सनमानहिं सेवक मानी
मोरे सरन राम की पनहीं। राम सु स्वामि दोष सब जनहीं
जग जस भाजन चातक मीना। नेम प्रेम निज निपुण नबीना
अस मन गुनत चले मग जाता। सकुच सनेह शिथिल सब गाता
फेरति मनहिं मातु कृत खोरी। चलत मगत बल धीरज धोरी
जब समुझत रघुनाथ सुभाऊ। तब पथ परत उताइल पाऊ
भरत दशा तेहि अवसर कैसी। जल प्रवाह जल अलिगत जैसी
देखि भरत कर शोच सनेहू। भा निषाद तेहि समय बिदेहू

दो॰ लगे होन मंगल सगुण सुनि गुणि कहत निषाद
मिटिहि शोच होइहि हरष पुनि परिणाम बिखाद

सेवक वचन सत्य सब जाने। आश्रम निकट जाइ नियराने

टी॰ रा॰ अ॰ १२०

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भरत दीख बन सैल समाजू। मुदित सुधित जनु पाइ सुराजू
देखि भीति जनु प्रजा दुखारी। त्रिबिध ताप पीड़ित गृह भारी॥
जाइ सुराज सुदेश सुखारी। होहि भरत गति तेहि अनुहारी
राम बास बन संपति भ्राजा। सुखी प्रजा जनु पाइ सुराजा
सचिव बिरागु बिबेकु नरेसू। बिपिन सुहावन पावन देसू॥
भट जिमि नियम सैल रजधानी। सांति सुमति सुचि सुंदर रानी
सकल अंग संपन्न सुराऊ। राम चरण आश्रित चित चाऊ

दो॰ नीति मोह महिपाल दल सहित बिबेक अुआल
करत अकंटक राज्य पुर सुख संपदा सुकाल

बन प्रदेस मुनि बास घनेरे। जनु पुर नगर गाउं गन खेरे
बिपुल बिचित्र बिहंग मृग नाना। प्रजा समाज न जाइ बखाना
खर हा करिहारि बाघ बराहा। देखि महिष वृष साजु सराहा
बयरु बिहाइ चरहिं इक संगा। जहं तहं मनहुं सेन चतुरंगा
झरना झरहिं मत्त गज गाजहिं। मनहुं निसान बिबिध बिध बाजहिं
चक चकोर चातक सुक पिक गन। कूजत मंजु मराल मुदित मन
अलि गण गावत नाचत मोरा। जनु सुराज मंगल चहु ओरा
बेलि बिटप तृण सकल सफूला। सब समाजु मुद मंगल मूला

दो॰ राम सैल सोभा निरखि भरत हृदय अति प्रेम
तापस तप फल पाइ जिमि सुखी सिराने नेम

तब केवट ऊंचे चढ़ि जाई। कहेउ भरत सन भुजा अुठाई
नाथ देखु यह बिटप बिसाला। पाकरि जंबु रसाल तमाला

दी॰ रा॰ अ॰ १२१

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तिन्ह तरु तरन्ह मध्य बट सोहा। मंजु बिसाल देखि मन मोहा
नील सघन पल्लव फल लाला। अबिचल छाह सुखद सब काला
मानहुं तिमिर अरुण मय रासी। बिरची बिधि सकेलि सुषमा सी
एतरु सरित समीप गोसांई। रघुबर परण कुटी जहं छाई
तुलसी तरुवर बिबिध सुहाए। कहुं कहुं सिय कहुं लषण लगाए
बट छाया वेदिका बनाई। सिय निज पाणि सरोज सुहाई
दो॰ जहां बैठि मुनि गण सहित नित सिय राम सुजान
सुनहिं कथा इतिहास सब आगम निगम पुरान
सखा बचन सुनि बिटप निहारी। उमगे भरत बिलोचन बारी॥
करत प्रणाम चले दोउ भाई। कहत प्रीति सारद सकुचाई
हरषहिं निरख राम पद अंका। मानहुं पारस पायउ रंका॥
रज शिर धरि हिय नयन लगावहिं। रघुबर मिलन सरस सुख पावहिं
देखि भरत गति अकथ अतीवा। प्रेम मगन मृग खग जड़ जीवा
सखहि सनेह बिवस मग भूला। कहि सुपंथ सुर बरषहिं फूला
निरख सिद्ध साधक अनुरागे। सहज सनेह सराहन लागे॥
होत न भूतल भाव भरत को। अचर सचर चर अचर करत को
दो॰ प्रेम अमिय मंदर बिरह भरत पयोधि गंभीर॥
मथि प्रगटेउ सुर साधु हित कृपासिंधु रघुबीर
सखा सनेह मनोहर जोटा। लखेउ न लषण सघन बन ओटा
भरत दीख प्रभु आश्रम पावन। सकल सुमंगल सदन सुहावन
करत प्रवेश मिटे दुख दावा। जनु योगी परमारथ पावा॥

टी॰ ए॰ ग्र॰ १२२

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

देखे भरत लषण प्रभु आगे। पूंछे बचन कहत अनुरागे॥
शीश जटा कटि मुनि पट बांधे। तूण कसे करशर धनु कांधे
बेदी पर मुनि साधु समाजू। सीय सहित राजत रघुराजू
बल कल बसन जटिल तनु श्यामा। जनु मुनि वेष कीन्ह रति कामा
कर कमलन धनु सायक फेरत। हिय की जरनिह रति हंसि हेरत
दो॰ लसत मंजु मुनि मंडली मध्य सीय रघुनंद॥
ज्ञान सभा जनु तनु धरे भगत सच्चिदा नंद॥
सानुज सखा समेत मगन मन। बिसरे हरष शोक सुखदुखगन
पाहि नाथ कहि पाहि गोसांई। भूतल परे लकुट की नांई॥
बचन सप्रेम लषण पहिचाने। करत प्रणाम भरत जिय जाने
बंधु सनेह सरस एहि ओरा। इत साहेब सेवा बर जोरा॥
मिलि न जाइ नहिं गुदरत बनई। सुकबि लषण मनकी गति भनई
रहे राखि सेवा परिवारू। चढ़ी चंग जनु खैंच खिलारू
कहत सप्रेम नाइ महि माथा। भरत प्रणाम करत रघुनाथा
उठे राम सुनि प्रेम अधीरा। कहुं पट कहुं निषंग धनु तीरा
दो॰ बरबस लिये उठाइ उर लाए कृपा निधान॥
भरत राम की मिलन लखि बिसरे सबहि अपान
मिलन प्रीति कछु जाइ बखानी। कबि कुल अगम करम मन बानी
परम प्रेम पूरण दोउ भाई। मन बुधि चित अहमिति बिसराई
कहहु सुप्रेम प्रगट को करई। केहि छाया कवि मति अनुसरई
कविहि अरथ आखर खलु सांचा। अनु हरिताल गतिहि नट नांचा

टी॰ रा॰ अ॰ १२३

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अगम सनेह भरत रघुबर को। जहं न जाइ मन बिधि हरि हर को
सो मैं कुमति कहौं केहि भांती। बाज सुराग कि गाँडर ताती
मिलनि बिलोकि भरत रघुबर की। तुरगण सभय धकधकी धर की
समुझाए सुरगुरु जड़ जागे। बरषि प्रसून प्रसंसन लागे॥
दो॰ मिलि सप्रेम रिपुसूदनहिं केवट भेंटेउ राम॥
भूरि भाग भेंटेउ भरत लछिमण करत प्रणाम।
भेंटेउ लषण ललकि लघुभाई। बहुरि निषाद लीन्ह उर लाई
पुनि मुनि गण दुहुं भाइन्ह बंदे। अभिमत आशिष पाइ अनंदे
सानुज भरत उमगि अनुरागा। धरि शिर सिय पद पदुम परागा
पुनि पुनि करत प्रणाम उठाए। शिर कर कमल परसि बैठाए
सीय असीश दीन्ह मन माहीं। मगन सनेह देह सुधि नाहीं
सब बिधि सानुकूल लखि सीता। भे निशोच उर अपडर बीता
कोउ किछु कहइ न कोउ किछु पूंछा। प्रेम भरा मन निज गति छूंछा
तेहि अवसर केवट धीरज धरि। जोरि पाणि बिनवत प्रणाम करि
दो॰ नाथ साथ मुनि नाथके मातु सकल पुर लोग
सेवक सेनप सचिव सब आए बिकल बियोग
शील सिंधु सुनि गुर आगमनू। सिय समीप राखे रिपुदमनू
चले सबेग राम तेहि काला। धीर धरम धुर दीन दयाला
गुरुहिं देखि सानुज अनुरागे। दंड प्रणाम करन सब लागे
मुनिवर धाइ लिये उर लाई। प्रेम उमगि भेंटे दोउ भाई॥
प्रेम पुलकि केवट कहि नामू। कीन्ह दूरिहें दंड प्रणामू

टी॰ ए॰ अ॰ १२४

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राम सरूप भरपि सरबस भेंटा । जनु महि लुटत सनेह समेटा
रघुपति भगति सुमंगल मूला । नभ सराहि सुर बरषहिं फूला
एहि सम निपट नीच कोउ नाहीं । बड़ बसिष्ठ सम को जग माहीं
दो॰ जेहि लखि लखनहुं ते अधिक मिले मुदित मुनिराउ
सो सीलसिंधु भजन को प्रगट प्रताप प्रभाउ ॥
आरत लोग राम सब जाना । करुणाकर सुजान भगवाना
जो जेहि भाय रहा अभिलाषी । तेहि तेहि कै तसि तसि रुचि राखी
सानुज मिलि पल महुं सब काहू । कीन्ह दूरदुख दारुण दाहू ॥
यह बड़ि बात राम कै नाहीं । जिमि घट कोटि एक रवि छाहीं
मिलन केवटहि उमगि अनुरागा । पुरजन सकल सराहहिं भागा
देखी राम दुखित महतारी । जनु सुबेलि अवली हिम मारी
प्रथम राम भेंटी कैकेई । सरल सुभाय भगति मति भेई
पग परि कीन्ह प्रबोध बहोरी । काल करम बिधि सिर धरि खोरी
दो॰ भेटी रघुबर मातु सब करि प्रबोध परि तोष
अब दुख आपन जग काहुन देइय दोष
गुरु तिय पद बंदे दोउ भाई । सहित बिप्र तिय जे संग आई
गंग गौरि सम सब सनमानी । देहिं असीस मुदित मृदु बानी
गहि पद लगे सुमित्रा अंका । जनु भेंटी संपति अति रंका
पुनि जननी चरणन दोउ भ्राता । परे प्रेम व्याकुल सब गाता
अति अनुराग अंब उर लाए । नयन सनेह सलिल अन्हवाए
तेहि अवसर कर हरष बिसादू । किमि कबि कहइ मूक जिमि स्वादू

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मिल जननिहि सानुज रघुराऊ। गुरु सन कहेउ कि धारिय पाऊ
पुरजन पाइ मुनीसहि योगू। जल थल तकि तकि उतरे लोगू
दो॰ महि सुर मंत्री मातु गुर गने लोग लिए साथ।
पावन आश्रम गमन किय भरत लषण रघुनाथ
सीय आइ मुनिबर पग लागी। उचित असीस लही मन मांगी
गुरपतिनिहि मुनितियन समेता। मिली प्रेम कहि जाइ न जेता
बंदि बंदि पग सिय सबही के। आसिर बचन लहे प्रिय जीके
सासु सकल जब सीय निहारी। मूदे नयन सहमि सुकुमारी॥
परी बधिक बस मनहुं मराली। काह कीन्ह करतार कुचाली
तिन्ह सिय निरखि निपटदुखपावा। सो सब सहिय जो दैव सहावा
जनक सुता तब उर धरि धीरा। नील नलिन लोचन भरि नीरा
मिली सकल सासुन सिय जाई। तेहि अवसर करुणा महिछाई
दो॰ लागि लागि सिय सबनि पग भेटति अति अनुराग
हृदय असीसहिं प्रेम बस रहिअहु भरी सुहाग।
बिकल सनेह सीय सब रानी। बैठन कहेउ सबहिं गुर ज्ञानी
कहि जग गति मायिक मुनिनाथा। कहे कछुक परमारथ गाथा
नृप कर सुरपुर गवन सुनावा। सुनि रघुनाथ दुसह दुख पावा
मरण हेतु निज नेह बिचारी। भे अति बिकल धीर धुर धारी
कुलिश कठोर सुनत कटु बानी। बिलपत लषण सीय सब रानी
शोक बिकल अति सकल समाजू। मानहुं राज अकाजेउ आजू
मुनिवर बहुरि राम समुझाए। सहित समाज सुरसरि न्हाए

टी॰ रा॰ अ॰ १२६

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

व्रत निरंबु तेहि दिन प्रभु कीन्हा। मुनिहु कहे जल काहु न लीन्हा

दो॰ भोर भए रघुनंदनहिं जो मुनि आयसु दीन्ह
श्रद्धा भगत समेत प्रभु सो सब सादर कीन्ह

कर पितु क्रिया बेद जस बरणी। भे पुनीत पातक तम तरणी
जासु नाम पावक अघ तूला। सुमिरत सकल सुमंगल मूला
सिद्ध सो भएउ साध सम्मत अस। तीरथ आवाहन सुरसुरि जस
शुद्ध भए दुइ बासर बीते ॥ ॥ बोले गुरु सन राम पिरीते ॥
नाथ लोग सब निपट दुखारी। कंद मूल फल अंबु अहारी
सानुज भरत सचिव सब माता। देखि मोहि पल जिमि युग जाता
सब समेत पुर धारिय पाऊ। आपु इहां अमरावति राऊ
बहुत कहेउं सब कियेउ ढिठाई। उचित होइ तस करिय गोसांई

दो॰ धरम सेतु करुणायतन कसन कहहु अस राम
लोग दुखित दिन दुइ दरश देखि लहहु बिश्राम

राम बचन सुनि सभय समाजू। जनु जल निधि महं बिकल जहाजू
सुनि गुरु गिरा सुमंगल मूला। भयेउ मनहुं मारुत अनुकूला
पावनि पय तिहुंकाल नहाहीं। जो बिलोकि अघ ओघ नसाहीं
मंगल मूरति लोचन भरि भरि। निरषहिं हरष दंडवत करि करि
राम शैल बन देखन जाहीं। जहं सुख सकल सकल दुख नाहीं
झरना झरहिं सुधा सम बारी। त्रिबिध ताप हर त्रिबिध बयारी
बिटप बेलि तृण अगणित जाती। फल प्रसून पल्लव बहु भांती
सुंदर शिला सुखद तरु छाहीं। जाइ बरणि बन छबि केहि पाहीं

पंक्ति २४ सो॰ ५७६ छं॰ ३ सो॰ ३ दो॰ ३१९ सो॰ ३ राम बचन सुनि अ हगुरु गुरु तियप सकल चित्रकूट पर बन झरना इत्यादि देखि पय स्विनी स्नान करि भिल्ला दिकन ते स्नेह पूर्वक कंद मूला दि भोजन कर बि हरत रहे अरु जा नकी जू निजमा या तें साधुन प्रति वेष धरि सेवाक रि बस कियो तहां कैकेई को पछ ताव भरत जू को सोक कि रघुनाथ कैसे फिरि हैं यह बिचार में प्रान भयो हूलकरि तहां वशिष्ठ मुनि जू बोलाइ भेज्यो अरु सभा करत भए तहां मुनिन धर्म नीति पूर्व के कहत भए तहां भरत ठाकि

टी॰ रा॰ अ॰ १२७

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो॰ सरनि सरोरुह जल बिहंग कूजत गुंजत भृंग
बैर बिगत बिहरत बिपिन मृग बिहंग बहु रंग

कोल किरात भिल्ल बन बासी। मधु सुचि सुंदर स्वाद सुधा सी
भरि भरि परन पुटीं रचि रूरी। कंद मूल फल अंकुर जूरी ॥
सबहिं देहिं करि बिनय प्रनामा। कहि कहि स्वाद भेद गुन नामा
देहिं लोग बहु मोल न लेहीं। फेरत राम दोहाई देहीं ॥
कहहिं सनेह मगन मृदु बानी। जानत साधु प्रेम पहिचानी
तुम सुकृती हम नीच निषादा। पावा दरसन राम प्रसादा ॥
हमहिं अगम अति दरसनु तुम्हारा। जस मरु धरनि देव धुनि धारा
राम कृपाल निषाद निवाजा। परिजन प्रजु चहिय जस राजा

दो॰ यह जिय जानि सकोच तजि करिअ छोह लखि नेह
हमहिं कृतारथ करनि लग फल तृन अंकुर लेह

तुम प्रिय पाहुन बन पगु धारे। सेवा जोगु न भाग हमारे ॥
देब काह हम तुमहिं गोसाँई। ईंधन पात किरात मिताई ॥
यह हमारि अति बड़ि सेवकाई। लेहिं न बासन बसन चुराई
हम जड़ जीव जीव गन घाती। कुटिल कुचाली कुमति कुजाती
पाप करत निसि बासर जाहीं। नहिं पट कटि नहिं पेट अघाहीं
सपनेहुं धरम बुद्धि कस काऊ। यह रघुनंदन दरस प्रभाऊ
जब तें प्रभु पद पदुम निहारे। मिटे दुसह दुख दोष हमारे
बचन सुनत पुरजन अनुरागे। तिन्ह के भाग सराहन लागे

छं॰ लागे सराहन भाग सब अनुराग बचन सुनावहीं

बोलनि मिलन सिय राम चरण सनेह लखि सुख पावहीं
नर नारि निदरहिं नेह निज सुनि कोल भिल्लन की गिरा
तुलसी कृपा रघुवंश मणि की लोह लै नौका तरी ॥

सो बिहरहिं बन चहुं ओर प्रति दिन प्रमुदित लोग सब
जल ज्यों दादुर मोर भये पीन पावस प्रथम ॥

पुर नर नारि मगन अति प्रीती। बासर जाहिं पलक सम बीती
सीय सासु प्रति बेष बनाई। सादर करइ सरिस सेवकाई
लखा न मरम राम बिन काहू। माया सब सिय माया नाहू ॥
सीय सासु सेवा बस कीन्ही। तिन्ह लह सुख सिख आसिष दीन्ही
लखि सिय सहित सरल दोउ भाई। कुटिल रानि पछितानि अघाई
अवनि जमहि जाचति कैकेई। महि न बीच बिधि मीचु न देई
लोकहुं बेद बिदित कबि कहई। राम बिमुख थलु नरक न लहई
यह संसय सब के मन माहीं। राम गवन बिधि अवध कि नाहीं

दो· निसि न नींद नहिं भूख दिन भरत बिकल सुचि सोच
नीच कीच बिच मगन जस मीनहिं सलिल संकोच

कीन्ह मातु मिस काल कुचाली। ईति भीति जस पातक साली
केहि बिधि होइ राम अभिषेकू। मोहि अवकलत उपाय न एकू
अवधि फिरहिं गुरु आयसु मानी। पुनि पुनि कहब राम रुचि जानी
भानु कहे बढ़रहिं रघुराऊ। राम जननि हठ करिय कि काऊ
मोहि अनुचर कर केतिक बाता। केहि महं कुसमय बाम बिधाता
जौं हठि करौं त निपट कुकरमू। है गिरते गुरु सेवक धरमू ॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एकहि युक्त न मन ठहरानी। सोचत भरतहिं रैन सिरानी॥
प्रात नहाइ प्रभुहि सिर नाई। बैठत पठये ऋषय बोलाई॥
दो॰ गुरु पद कमल प्रणाम करि बैठे आयसु पाइ
बिप्र महाजन सचिव सब जुरे सभा सद आइ
बोले मुनिबर समय समाना। सुनहु सभा सद भरत सुजाना
धरम धुरीण भान कुल भानू। राजा राम स्वबश भगवानू
सत्य संध पावक श्रुति सेतू। राम जनम जग मंगल हेतू
गुरु पितु मात बचन अनुसारी। खल दल दलन देव हित कारी
नीति प्रीति परमारथ स्वारथ। कोउ न राम सम जान यथारथ
बिधि हरि हर शशि रवि दिशपाला। माया जीव करम कालिकाला
अहिप महिप जहं लगि प्रभुताई। योग सिद्धि निगमागम गाई
करि बिचार जिय देखहु नीके। राम रजाय शीश सबही के॥
दो॰ राखे राम रजाय रुख हम सब कर हित होइ
समुझ सयाने करहु अब अस मिल संमत सोइ
सब कहं सुखद राम अभिषेकू। मंगल मूल मोद मग एकू॥
कहि बिधि अवध चलहिं रघुराऊ। कहहु समुझि सोइ करिय उपाऊ
सब सादर सुनि मुनिबर बानी। भइ परमारथ स्वारथ सानी
उतर न आव लोग भये भोरे। तब सिरनाइ भरत कर जोरे
भानुबंश भये भूप घनेरे। अधिक एकतें एक बडेरे॥
जनम हेतु सब कहं पित माता। करम सुभा सुभ देइ बिधाता
दलिदुख दोष सकल कल्याना। अस अशीश राउर जग जाना

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सोइ गोसाइ बिधि गति जेहि छेकी। सकइ को टारि टेक जो टेकी
दो॰ बूझिय मोहि उपाउ अब सो सब मोर अभाग
सुन सनेह मय बचन गुरु उर उमगा अनुराग
तात बात फुरि राम कृपाहीं। राम बिमुख सिधि सपनेहु नाहीं
सकुचउं तात कहत एक बाता। अरध तजहिं बुध सरबस जाता
तुम्ह कानन गवनहु दोउ भाई। फेरहिं लखन सीय रघुराई
सुनि सुबचन हरषे दोउ भ्राता। प्रेम मोद परिपूरन गाता
मन प्रसन्न तन तेज बिराजा। जनु जिये उदराम भये राजा
बहुत लाभ लोगन्ह लघु हानी। सम दुख सुख सब रोवहिं रानी
कहहिं भरत मुनि कहा सो कीन्हे। फल जग जीवन अमिअ दीन्हे
कानन करउं जनम भरि बासू। एहि ते अधिक न मोर सुपासू
दो॰ अंतरजामी राम सिय तुम्ह सर्बज्ञ सुजान
जो फुर कहहु त नाथ निज कीजिय बचन प्रमान
भरत बचन सुनि देख सनेहू। सभा सहित मुनि भये बिदेहू
भरत महा महिमा जल रासी। मुनि मति ठाढ़ि तीर अबला सी
गा चह पार जतन हिय हेरा। पावत नाव न बोहित बेरा
बोर करिहि को भरत बड़ाई। सर सीपी कि सिंधु समाई
भरत मुनिहि भर भीतर भाए। सहित समाज राम पहिं आए
प्रभु प्रनाम करि दीन्ह सुआसन। बैठे सब सुनि मुनि अनुसासन
बोले मुनिबर बचन बिचारी। देसकाल अवसर अनुहारी
सुनहु राम सर्बज्ञ सुजाना। धरम नीति गुन ग्यान निधाना

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो· सब के उर अंतर बसहु जानउ भाउ कुभाउ
पुरजन जननी भरत हित होइ सोइ कहिअ उपाउ

आरत कहहिं बिचार न काऊ। सूझ जुआरिहि आपन दाऊ
सुचि सुबंधु कहत रघुराऊ। नाथ तुम्हारेहि हाथ उपाऊ
सब कर हित रुख राउर राखे। आयसु किये मुदित फुर भाखे
प्रथम जो आयसु मो कहं होई। माथे मानि करौं सिख सोई
पुनि जेहि कहं जस कहब गोसाईं। सो सब भांति करिहि सेवकाई
कह मुनि राम सत्य तुम भाखा। भरत सनेहु बिचारु न राखा
नहिं तर कहब बहोरि बहोरी। भरत भगत बस भइ मति भोरी
मोरे जान भरत रुख राखी। जो कीजिय सो सुभ सिव साखी

दो· भरत बिनय सादर सुनिय करिय बिचारि बहोरि
करब साधु मत लोक मत नृप नय निगम निचोरि

गुर अनुराग भरत पर देखी। राम हृदय आनंद बिसेखी॥
भरतहिं धरम धुरंधर जानी। निज सेवक तन मानस बानी
बोले गुरु आयसु अनुकूला। बचन मंजु मृदु मंजुल मूला
नाथ सपथ पितु चरण दुहाई। भयउ न भरत सकल सम भाई
जो गुरु पद अंबुज अनुरागी। ते लोकहुं बेदहुं बड़ भागी
राउर जापर अस अनुरागू। को कहि सकै भरत कर भागू
लखि लघु बंधु बुद्धि सकुचाई। करत बदन पर भरत बड़ाई
भरत कहहिं सो किये भलाई। अस कहि राम रहे अरगाई
दो· तब मुनि बोले भरत सन सब सकोच तजि नीत

कृपासिंधु प्रियबंधु सन कहहु हृदय की बात ॥
सुनि मुनि बचन राम रुख पाई। गुर साहिब अनुकूल अघाई
लखि अपने सिर सबछर भारू। कहि न सकहिं कछु करहिं बिचारू
पुलक शरीर सभा भए ठाढ़े। नीरज नयन नेह जल बाढ़े॥
कहब मोर मुनि नाथ निबाहा। एहि तें अधिक कहौं मैं काहा
मैं जानउं निज नाथ सुभाऊ। अपराधिहु पर कोह न काऊ
मोपर कृपा सनेह बिशेखी। खेलत खुनिस न कबहुं देखी
शिशु पन तें परि हरेउं न संगू। कबहुं न कीन्ह मोर चित भंगू
मैं प्रभु कृपा रीति जिय जोही। हारेहु खेल जितावहिं मोही
दो. मनहुं सनेह सकोच बस सन्मुख कहे न बैन
दरशन तृपित न आजु लगि प्रेम पियासे नैन
बिधि न सकेउ सहि मोर दुलारा। नीच बीच जननी मिसु पारा
यहउ कहत मोहि आजन शोभा। अपनी समुझि साधु शुचि कोभा
मातु मंद मैं साधु सुचाली। उर अस आनत कोटि कुचाली
फरइ कि कोदव बालि सुसाली। मुकता प्रसव कि संबुक ताली
सपनेहु दोष कलेश न काहू। मोर अभाग उदधि अवगाहू
बिन समझे निज अघ परिपाकू। जारिउं जाइ जननि कहं काकू
हृदय हेरि हारेउं सब ओरा। एकहिं भांति भलहिं भल मोरा
गुर गुसांइ साहिब सिय रामू। लागत मोहि नीक परिणामू
दो. साधु सभा गुर प्रभु निकट कहउं सुथल सति भाउ
प्रेम प्रपंच कि झूठ फुर जानहिं मुनि रघुराउ ॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भूपति मरण पेम पनु राखी। जननी कुमति जगत सब साखी
देखि न जाहिं बिकल महतारी। जरहिं दुसह जर पुर नर नारी
महीं सकल अनरथ कर मूला। सो सुनि समुझि सहेउं सब सूला
सुनि बन गवन कीन्ह रघुनाथा। करि मुनि बेष लषण सिय साथा
बिनु पनही पयादेहिं पायें। संकर साखि रहेउं एहि घायें
बहुरि निहारि निषाद सनेहू। कुलिश कठिन उर भयउ न बेहू
अब सब आंखिन्ह देखेउं आई। जिअत जीव जड़ सबइ सहाई
जिन्हहिं निरखि मग सांपिनि बीछी। तजहिं बिषम बिष तामस तीछी
दो॰ तेइ रघुनंदन लषण सिय अनहित लागे जाहि
तासु तनय तजि दुसह दुख दैव सहावै काहि
सुनि अति बिकल भरतबर बानी। आरति प्रीति बिनय मय सानी
सोक बिकल सब सभा खभारू। मनहुं कमल बन पेउ तुषारू
कहि अनेक बिधि कथा पुरानी। भरत प्रबोधि कीन्ह मुनि ग्यानी
बोलेउ चितव बचन रघुनंदू। दिनकर कुल कैरव बन चंदू॥
तात जाय जनि करहु गलानी। ईस अधीन जीव गति जानी
तीनि काल त्रिभुवन मत मोरे। पुण्य सलोक तात तन तोरे
उर आनत तुम्ह पर कुटिलाई। जाइ लोक परलोक नसाई
दोष देहिं जननिहिं जड़ तेई। जिन्ह गुर साधु सभा नहिं सेई
दो॰ मिटिहहिं पाप प्रपञ्च सब अखिल अमंगल भार
लोक सुयश परलोक सुख सुमिरत नामु तुम्हार
कहउं सुभाउ सत्य सिव साखी। भरत भूमि रह राउरि राखी॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नात कुतर्क करइ जनि जाए। बैर प्रेम नहिं दुरै दुराए ॥
सुनि गण निकट बिहंग मृग जाहीं। बाधक बधिक बिलोकि पराहीं
हित अनहित पसु पंछिउ जाना। मानुष तनु गुण ज्ञान निधाना
नाथ तुमहि मैं जानउं नीके। करइं काह असमंजस जीके
राखेउ राउ सत्य मोहि त्यागी। तनु परिहरेउ प्रेम पण लागी
तासु बचन मेटत मन सोचू। तेहिं अधिक तुम्हार संकोचू
तापर गुरु मोहि आयसु दीन्हा। अवसि जो कहइ चहइं सोइ कीन्हा
दो॰ मन प्रसन्न करि सकुच तजि कहइ करइं सो आज
सत्यसंध रघुबर बचन सुनि भा सुरबी समाज ॥
सुरगण सहित सभय सुरराजू। सोचहिं चाहत होन अकाजू
करत उपाव बनत कछु नाहीं। राम शरण सब गे मन माहीं
बहुरि बिचारि परस्पर कहहीं। रघुपति भगति भगति उर अहहीं
सुधि कर अंबरीष दुर्वासा। भे सुर सुरपति निपट निरासा
सहे सुरन्ह बहुकाल बिषादा। नरहरि किये प्रगट प्रहलादा
लगि लगि कान कहहिं धुनि माथा। अब सुरकाज भरत के हाथा
आन उपाउ न देखिय देवा। मानत राम सुसेवक सेवा ॥
हिय सप्रेम सुमिरहु सब भरतहिं। निज गुण शील रामबस करतहिं
दो॰ सुनि सुरपति सुरगुर कहेउ भल तुम्हार बड़ भाग
सकल सुमंगल मूल जग भरत चरण अनुराग।
सीतापति सेवक सेवकाई। कामधेनु सय सरिस सुहाई
भरत भगति तुम्हरे मन आई। तजहु शोच बिधि बात बनाई

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

देखि देव पति भरत सुभाऊ। सहज सुभाय बिबस रघुराऊ
मन थिर करहु देव डर नाहीं। भरतहिं जान राम परिछाहीं
सुनि सुरगुरु सुर सम्मत सोचू। अंतरजामी प्रभुहिं सकोचू
निज सिर भारु भरत जिय जाना। करत कोटि बिधि उर अनुमाना
करु बिचारु मन दीन्ही टीका। राम रजायसु आपन नीका
निज पन तजि राखेउ पन मोरा। छोह सनेह कीन्ह नहिं थोरा
दो॰ कीन्ह अनुग्रह अमित अति सब बिधि सीतानाथ
करि प्रनाम बोले भरत जोरि जलज जुग हाथ
कहउं कहावउं का अब स्वामी। कृपा अंबु निधि अंतरजामी
गुर प्रसन्न साहब अनुकूला। मिटी मलिन मन कलपित भूला
अपडर डरेउं न सोच समूने। रबिहि न दोष देव दिसि भूले
मोर अभाग मातु कुटिलाई। बिधि गति बिषम काल कठिनाई
पाउं रोपि सब मिलि मोहि घाला। प्रनत पाल पन आपन पाला
यह नइ रीति न राउर होई। लोकहुं बेद बिदित नहिं गोई
जग अनभल भल एक गोसाईं। कहिय होय भल कासु भलाई
देव देव तरु सरिस सुभाऊ। सनमुख बिमुख न काहुहिं काऊ
दो॰ जाय निकट पहिचान तरु छांह समनि सब शोच
मांगत अभिमत पाव जग राउर रंक भल पोच ॥
लखि सब बिधि गुर स्वामि सनेहू। मिटेउ छोभ नहिं मन संदेहू॥
अब करुणानिधि कीजिय सोई। जनहित प्रभु चित छोभ न होई
जो सेवक साहिब सेवकाई। करइ सकल सुख लोभ बिहाई
जो सेवक साहिबहि संकोची। निज हित चहै तास मति पोची

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्वारथ नाथ फिरे सबही का। किए रजाइ कोटि बिधि नीका
यह स्वारथ परमारथ सारू। सकल सुकृत फल सुगति सिंगारू
देव एक बिनती सुन मोरी। उचित होइ तस करब बहोरी॥
तिलक समाज साजि सब आना। करिय सुफल प्रभु जो मन माना

दो॰ सानुज पठइय मोहि बन कीजिय सबहि सनाथ
नतरु फेरिये बंधु दोउ नाथ चलौं मइ साथ॥

नतरु जाहिं बन तीनउं भाई। बहुरिय सीय सहित रघुराई
जेहि बिधि प्रभु प्रसन्न मन होई। करुणा सागर कीजिय सोई
देव दीन्ह सब मोहि शिर भारू। मोरे नीति न धरम बिचारू
कहउं बचन सब स्वारथ हेतू। रहत न आरत के चित चेतू
उतर देइ सुनि स्वामि रजाई। सो सेवक लखि लाज लजाई
अस मइ अवगुण उदधि अगाधू। स्वामि सनेह सराहत साधू
अब कृपाल मोहि सो मत भावा। सकुच स्वामि मन जाहि न पावा
प्रभु पद शपथ कहउं सत भाऊ। जग मंगल हित एक उपाऊ॥

दो॰ प्रभु प्रसन्न मन सकुच तज जो जेहि आयसु देव
सो शिर धरि धरि करहिं सब मिटहि अनट अवरेव

भरत बचन सुचि सुनि सुर हरषे। साधु सराहि सुमन बहु बरषे
अस मंजस बस अवध निवासी। प्रमुदित मन तापस बन बासी
चुपहिं रहे रघुनाथ संकोची। प्रभु गति देखि सभा सब शोची
जनक दूत तेहि अवसर आए। मुनि वशिष्ठ सुनि बेग बुलाए
करि प्रणाम तिन्ह राम निहारे। भेष देखि भये निपट दुखारे

टी॰ रा॰ अ॰ [illegible]

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दूतन्ह मुनिबर पूछी बाता। कहहु बिदेह भूप कुशलाता।
सुनि सकुचाइ नाइ महि माथा। बोले चर बर जोरे हाथा।
बूझब राउर सादर साँई। कुशल हेतु सो भयउ गोसाँई।
दो॰ नाहित कोशल नाथ के साथ कुशल गइ नाथ
मिथला अवध बिशेष तें जग सब भयउ अनाथ
कोशलपति गति सुनिजन कौरा। भे सब लोग शोच बस बौरा।
जेहि देखे तेहि समय बिदेहू। नाम सत्य अस लागत केहू।
रानि कुचालि सुनत नरपालहिं। सूझ न कछु जस मनि बिनु मालहिं।
भरत राज रघुबर बन बासू। भा मिथलेशहि हृदय हरासू।
टी॰ ग॰ अ॰ १३८
नृप पूछे बुध सचिव समाजू। कहहु बिचार उचित का आजू।
समुझि अवध असमंजस दोऊ। चलिय कि सहिय कि कछु कहि कोऊ।
नृपहिं धीर धरि हृदय बिचारी। पठये अवध चतुर चर चारी।
बूझि भरत सत भाव कुभाऊ। आएउ बेगि न होइ लखाऊ।
दो॰ गये अवधचर भरत गति बूझि देखि करतूति
चले चित्रकूटहि भरत चार चले तिरहूति ॥
दूतन आइ भरत की करणी। जनक समाज यथा बिधि बरणी
सुनि गुरु परिजन सचिव महीपति। भे सब शोच सनेह विकलअति
धरि धीरज करि भरत बड़ाई। लिये सुभट साहनी बोलाई
घर पुर देश राख रखवारे। हय गय रथ बहु यान सँवारे।
दुघरी साधि चले ततकाला। किये बिश्राम न मग महिपाला।
भोरहिं आजु नहाइ प्रयागा। चले यमुन उतरन सबलागा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

खबर लेन हम पठये नाथा। तिन्ह कहि अस महि नाएउ माथा
सात किरात छसातक दीन्हें। मुनिबर तुरत बिदा चर कीन्हें
दो॰ सुनत जनक आगमन सब हरषे अवध समाज
रघुनंदनहि सकोच बड़ शोच बिबस सुर राज
गरल गलानि कुटिल कैकेई। काह कहइ को दूषण देई॥
अस मन आनि मुदित नर नारी। भए बहोरि रहब दिन चारी
येहि प्रकार गति बासर सोऊ। प्रात नहान लाग सब कोऊ
करि मज्जन पूजहिं नर नारी। गणपति गौरि पुरारि तमारी
रमा रमन पद बंदि बहोरी। बिनवहिं अंजलि अंचल जोरी
राजा राम जानकी रानी। आनंद अवधि अवध रज धानी
सुबस बसहु फिर सहित समाजा। भरतहिं राम कहहु जुव राजा
एहि सुख सुधा सींच सबकाहू। देव देहु जग जीवन लाहू
दो॰ गुरु समाज भाइन्ह सहित राम राज पुर होउ
अछत राम राजा अवध मरिय मांगु सब कोउ
सुन सनेह मय पुर जन बानी। निंदहिं योग बिरति मुनि ज्ञानी
एहि बिधि नित्य करम कर पुरजन। रामहिं करहिं प्रणाम पुलकतन
ऊंच नीच मध्यम नर नारी। लहहिं दरश निज निज अनुहारी
सावधान सबहीं सनमानहिं। सकल सराहत कृपा निधानहिं
लरिकाई ते रघुबर बानी। पालत नीति प्रीति पहिचानी
शील सकोच सिंधु रघुराऊ। सुमुख सुलोचन सरल सुभाऊ
कहत राम गुण गण अनुरागे। सब निज भाग सराहन लागे

टी॰ रा॰ अ॰ ३८

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हम सम पुण्य पुंज जग थोरे। जिनहिं राम जानत कर मोरे

दो॰ प्रेम मगन तेहि समय सब सुनि आवत मिथिलेश
सहित सभा संभ्रम उठे रविकुल कमल दिनेश ॥

भाइ सचिव गुर पुरजन साथा। आगे गवन कीन्ह रघुनाथा
गिरिबर दीख जनकपति जबहीं। करि प्रणाम रथ त्यागेउ तबहीं
राम दरश लालसा उछाहू। पथ श्रम लेश कलेश न काऊ
मन तहं जहं रघुबर बैदेही। बिनु मन तन दुख सुख सुध केही
आवत जनक चले इहि भांती। सहित समाज प्रेम मति मांती
आए निकट देख अनुरागे। सादर मिलन परस्पर लागे।
लगे जनक मुनि जन पद बंदन। बटुबिन प्रणाम कीन्ह रघुनंदन
भाइन सहित राम मिल राजहिं। चले लिवाइ समेत समाजहिं

दो॰ आश्रम सागर सांत रस पूरण पावन पाथ
सेन मनहु करुणा सरित लिये जात रघुनाथ

बोरत ज्ञान बिराग करारे। बचन सशोक मिलत नद नारे
सोचउ सांस समीर तरंगा। धीरज तट तरु बर कर भंगा
बिषम बिषाद तोरावति धारा। भय भ्रम भ्रमर अवर्त अपारा
केवट बुध बिद्या बड़ि नावा। सकहि न खेइ एक नहिं आवा
बनचर कोल किरात बिचारे। थके बिलोकि पथिक हियहारे
आश्रम उदधि मिली जब जाई। मनहुं उठे अंबुधि अकुलाई
शोक बिकल दोउ राज समाजा। रहा न ज्ञान न धीरज लाजा
भूप रूप गुण शील सराही। रोवहिं शोक सिंधु अवगाही

टी॰ रा॰ अ॰ १४०

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

छं॰ अवगाहि शोक समुद्र शोचहिं नारिनर व्याकुल महा
दै दोष सकल सरोष बोलहिं बाम बिधि कीन्हो कहा
सुर सिद्ध तापस योगि जन मुनि देखि दशा बिदेह की
तुलसी न समरथ कोउ जो तरि सकै सरित सनेह की
सो॰ किये अमित उपदेश जहं तहं लोगन्ह मुनिबरन्ह
धीरज धरिय नरेश कहेउ बशिष्ठ बिदेह सन
जासु ज्ञान रवि भव निशि नासा। बचन किरण मुनि कमल बिकासा
तेहि कि मोह ममता नियराई। यह सिय राम सनेह बड़ाई
बिषयी साधक सिद्ध सयाने। त्रिबिध जीव जग बेद बखाने
राम सनेह सरस मन जासू। साधु सभा बड़ आदर तासू
सोह न राम प्रेम बिनु ज्ञानू। करण धार बिनु जिमि जलजानू
पुनि बहु बिधि बिदेह समुझाए। राम घाट सब लोग नहाए
सकल शोक संकुल नरनारी। सो बासर बीतेउ बिनु बारी॥
पशु खग मृगन्हन कीन्ह अहारू। प्रिय परिजन कर कौन बिचारू

टी॰ ए॰ अ॰ २४१

दो॰ दोउ समाज निमि राज रघु राजन्हाने प्रात
बैठे सब बट बिटप तर मन मलीन कृश गात
जे महि सुर दशरथ पुर बासी। जे मिथलापति नगर निवासी
हंस बंश गुरु जनक पुरोधा। जिन्ह जग मग परमारथ शोधा
लगे कहन उपदेश अनेका। सहित धरम नय बिरति बिवेका
कौशिक कहि कहि कथा पुरानी। समझाई सब सभा सुबानी
तब रघुनाथ कौशिकहि कहेऊ। नाथ कालि जल बिनु सब रहेऊ

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मुनि कहं उचित कहत रघुराई। गएउ बीत दिन पहर अढ़ाई
ऋषि रुख लखि कह तिरहुत राजा। इहां उचित नहिं असन अनाजा
कहा भूप भल सबहिं सोहाना। पाइ रजायसु चले नहाना ॥
दो॰ तेहि अवसर फल फूल दल मूल अनेक प्रकार
लेइ आए बनचर बिपुल भरि भरि कांवरि भार
कामद भे गिरि राज प्रसादा। अवलोकत अपहरत बिषादा
सर सरिता बन भूमि बिभागा। जनु उमगत आनंद अनुरागा
बेलि बिटप सब सफल सफूला। बोलत खग मृग अलिकुल कूला
तेहि अवसर बन अधिक उछाहू। त्रिबिध समीर सुखद सबकाहू
जाइ न बरणि मनोहर ताई। जनु महि करति जनक पहुनाई
तब सब लोग नहाइ नहाई। राम जनक मुनि आयसु पाई
देखि देखि तरुबर अनुरागे। जहं तहं पुरजन उतरन लागे
दल फल मूल कंद बिधि नाना। पावन सुंदर सुधा समाना
दो॰ सादर सब कहं रामगुरु पठये भरि भरि भार
पूजि पितर सुर अतिथ गुरु लगे करन फलहार
एहि बिधि बासर बीते चारी। राम निरखि नर नारि सुखारी
दुहुं समाज अस रुचि मनमाहीं। बिनु सिय राम फिरब भल नाहीं
सीता राम संग बनबासू। कोटि अमरपुर सरिस सुपासू
परिहर राम लषण बैदेही। जेहि घर भाव बाम बिधि तेही
दाहिन दैव होइ जब सबही। राम समीप बसिय बन तबहीं
मंदाकिनि मज्जन तिहुं काला। राम दरस मुद मंगल माला

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अटनु राम गिरिबन तापसथल। असन अमिय सम कंदमूल फल
सुख समेत संबत दुइ साता। पल सम होहिं न जनिअहिं जाता
दो॰ एहि सुख जोग न लोग सब कहहिं कहां अस भाग
सहज सुभाउ समाज दुहुं राम चरण अनुराग॥
एहि बिधि सकल मनोरथ करहीं। बचन सप्रेम सुनत मन हरहीं
सीय मातु तेहि समय पठाई। दासी देख सुअवसर आई॥
सावकास सुनि सब सिय सासू। आयउ जनक राज रनिवासू
कौशिल्या सादर सनमानी। आसन दिये समय सम आनी
शील सनेह सकल दुहुं ओरा। द्रवहिं देखि सुनि कुलिश कठोरा
पुलक शिथिल तन बारि बिलोचन। महि नख लिखन लगी सब शोचन
सब सिय राम प्रीति कि मूरति। जनु करुणा बहु बेष बिसूरति
सीय मातु कह बिधि बुध बांकी। जो पय फेनु फोर पवि टांकी
दो॰ सुनिय सुधा देखिय गरल सब करतूति कराल
जहं तहं काक उलूक बक मानस सकृत मराल
सुनि सशोच कह देवि सुमित्रा। बिधि गति बड़ि बिपरीत बिचित्रा
सो सृज पालइ हरइ बहोरी। बालकेलि सम बिधि मतिभोरी
कौशिल्या कह दोष न काहू। करम बिबस दुख सुख छति लाहू
कठिन करम गति जान बिधाता। जो शुभ अशुभ सकल फलदाता
ईश रजाय शीश सबही के। उतपति थिति लय बिषहु अमी के
देबि शोच बस शोचिय बादी। बिधि प्रपंच अस अचल अनादी
भूपति जिअब मरब उर आनी। शोचिय सखि लखि निज हित हानी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सीय मातु कह सत्य सुबानी। सुकृती अवधि अवध पतिरानी

दो॰ लषण राम सिय जाहु बन भल परिणाम न पोच
गह बरि हिय कह कौशिला मोहि भरत कर शोच

ईश प्रसाद अशीश तुम्हारी। सुत सुत बधू देव सर बारी॥
राम शपथ मैं कीन्ह न काऊ। सो करि कहौं सखी सत भाऊ
भरत शील गुण बिनय बड़ाई। भायप भगति भरोस भलाई
कहत सारदहु कर मति हीचे। सागर सीपि कि जाइ उलीचे
जानउं सदा भरत कुल दीपा। बार बार मोहि कहेउ महीपा
कसे कनक मणि पारस पाये। पुरुख परख अहिं समय सुभाये
अनुचित आजु कहब अस मोरा। शोक सनेह सयानप थोरा।
सुनि सुरसरि सम पावन बानी। भई सनेह बिकल सब रानी

दो॰ कौशिल्या कह धीर धरि सुनहु देवि मिथिलेशि
को बिबेक निधि बल्लभहि तुमहिं सकै उपदेशि

रानि राय सन अवसर पाई। अपनी भांति कहेउ समुझाई
राखहिं लषण भरत गवनहिं बन। जो यह मत मानै महीपमन
तौ भल यतन करब सुबिचारी। मोरे शोच भरत कर भारी
गूढ़ सनेह भरत मन माहीं। रहे नीक मोहि लागत नाहीं
लखि सुभाव सुनि सरल सुबानी। सब भई मगन करुण रस रानी
नभ प्रसून झरि धन्य धन्य धुनि। सिथिल सनेह सिद्ध योगी मुनि
सब रनिवास बिथकि लखि रहेऊ। तब धरि धीर सुमित्रा कहेऊ
देवि दंड युग यामिनि बीती। राम मातु मुनि उठी सप्रीती

टी॰ रा॰ अ॰ १४४

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो॰ वेग पाइ धारिय थलहिं कह सनेह सत भाइ
हमरे तो अब ईश गति कै मिथिलेश सहाइ
लखि सनेह सुनि बचन सभीता। जनक प्रिया गहि पांव पुनीता
देवि उचित अस विनय तुम्हारी। दशरथ घरनि राम महतारी॥
प्रभु अपने नीचहिं आदरहीं। अग्नि धूम गिरि शिर तृण धरहीं
सेवक राउ कर्म मन बानी। सदा सहाय महेश भवानी॥
रौरे अंग योग जग कोहै। दीप सहाय कि दिन कर सोहै
राम जाइ बन करि सुर काजू। अचल अवध पुर करिहहिं राजू
अमर नाग नर राम बाहु बल। सुख बसिहहिं अपने अपने अल
यह सब याज्ञवल्क्य कह राखा। देवि न होइ सुधा मुनि भाखा
दो॰ अस कहि पग पर प्रेम अति सिय हित बिनय सुनाय
सिय समेत सिय मातु तब चली सुआयसु पाय॥
प्रिय परिजनहिं मिली बैदेही। जो जेहि योग भांत तस तेही
तापस बेष जानकिहि देखी। भे सब बिकल बिषाद बिशेखी
जनक राम गुरु आयसु पाई। चले थलहिं सिय देखी आई
लीन्ह लाइ उर जनक जानकी। पाहुनि पावनि प्रेम प्राणकी
उर उमगेउ अंबुधि अनुरागू। भयउ भूप मन मनहु प्रयागू
सिय सनेह बट बाढ़त जोहा। तापस राम प्रेम शिशु सोहा
चिरंजीवि मुनि ज्ञान बिकलजनु। बूझत लहेउ बाल अवलंबनु
मोह मगन मति नहिं विदेहकी। महिमा सिय रघुबर सनेहकी
दो॰ सिय पितु मातु सनेह बस निकल न सकी संभारि

टी॰
रा॰ अ॰
२४५

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

धरनि सुता धीरज धरेउ समय सुधरम बिचारि
तापस बेष जनक सिय देखी। भए मेन परितोष बिशेखी
पुत्रि पवित्र किये कुल दोऊ। सुयश धवल जग कहइ सब कोऊ
जिमि सुरसरि कीरति सरि तोरी। कवनु कीन्ह बिधि अंड करोरी
गंग अवनि थल तीन बडेरे। येहि किय साधु समाज घनेरे
पितु कह सत्य सनेह सुहानी। सीय सकुचि महि मनहु समानी
पुनि पित मात लीन्ह उर लाई। सिय आशिष हित दीन्ह सुहाई
कहति न सीय सकुच मन माहीं। दुहं बसव रजनी भल नाहीं
लखि रुख रानि जनायेउ राऊ। हृदय सराहत शील सुभाऊ

दो· बार बार मिलि भेंटि सिय बिदा कीन्ह सनमानि
कही समय सिर भरत गति रानि सुबानि सयानि

टी. ए. अ. १४६

सुनि भूपाल भरत व्यवहारू। सोन सुगंध सुधा शशि सारू
मूदे सजल नयन पुलके तन। सुयश सराहन लगे मुदित मन
सावधान सुनु सुमुखि सुलोचनि। भरत कथा भवबंध बिमोचनि
धर्मराज नय ब्रह्म बिचारू। यहां यथा मति मोर प्रचारू
सोमति मोरि भरत महिमाही। कहइ काह छल छुअति नछाही
बिधि गणपति अहिपति शिवसारद। कवि कोविद बुध बुद्धि बिशारद
भरत चरित कीरति करतूती। धरम शील गुण बिमल बिभूती
समुझत सुनत सुखद सब काहू। सुचि सुरसरि रुचि निदरि सुधाहू

दो· निरवधि गुण निरुपम पुरुष भरत भरत सम जानि

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कहिय सुमेरु कि सेर सम कविकुल मति सकुचानि
अगम सबहि बरणत बरबरणी। जिमि जलहीन मीन गण धरणी
भरत अमित महिमा सुन रानी। जानहिं राम न सकहिं बखानी
बरणि सप्रेम भरत अनुभाऊ। तिय जिय की रुचि लखि कह एऊ
बहुरहिं भरत लखण बन जाहीं। सब कर भल सब के मन माहीं
देवि परंतु भरत रघुबर की। प्रीति प्रतीति जाइ नहिं तरकी
भरत अवधि सनेह ममता की। यद्यपि राम सीव समता की
परमारथ स्वारथ सुख सारे। भरत न सपनेहुं मनहुं निहारे
साधन सिद्ध राम पग नेहू। मोहि लखि परत भरत मत एहू

दो. भोरेहुं भरत न पेलहिं मनसहुं राम रजाइ
करिय न सोच सनेह बस कहेउ भूप बिलखाइ

दी. रा. अ. १४७

राम भरत गुण गनत सप्रीती। निसि दंपतिहि पलक सम बीती
राम समाज प्रात युग जागे। न्हाइ न्हाइ सुर पूजन लागे
गे न्हाइ गुरुपहं रघुराई। बंदि चरण बोले रुख पाई
नाथ भरत पुरजन महतारी। शोक बिकल बनवास दुखारी
सहित समाज राज मिथिलेशू। बहुत दिवस भे सहित कलेशू
उचित होइ सो कीजिय नाथा। हित सबही कर रौरे हाथा
अस कहि अति सकुचे रघुराऊ। मुनि पुलके लखि शील सुभाऊ
तुम बिन राम सकल सुख साजा। नरक सरिस दुहुं राज समाजा

दो. प्राण प्राण के जीव के जिय सुख के सुख राम
तुम तजि तात सुहात गृह जिन्हहिं तिन्हहिं बिधि बाम

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सो सुख धरम करम जरि जाऊ। जहं न राम पद पंकज भाऊ
योग कुयोग ज्ञान अज्ञानू। जहं नहिं राम प्रेम परिधानू
तुम बिन दुखी सुखी तुम तेही। तुम जानहु जिय जो जेहि केही
राउर आयसु सिर सबही के। बिदित कृपालहि गति सबही के
आपु आश्रमहिं धारिय पाऊ। भएउ सनेह सिथल मुनि राऊ
करि प्रणाम तब राम सिधाये। ऋषि धरि धीर जनक पहं आये
राम बचन गुरु नृपहिं सुनाए। सील सनेह सुभाय सुहाए
महाराज अब कीजिय सोई। सब कर धरम सहित हित होई

दो॰ ज्ञान निधान सुजान सुचि धरम धीर नरपाल।
तुम बिन असमंजस समन को समरथ एहि काल

दो॰ अ॰ १४९

सुनि मुनि बचन जनक अनुरागे। लखि गति ज्ञान बिरग बिरागे
सिथल सनेह सुनत मन माहीं। आए इहां कीन्ह भल नाहीं
रामहिं राय कहेउ बन जाना। कीन्ह आय प्रिय प्रेम प्रवाना
हम अब बन तें बनहिं पठाई। प्रमुदित फिरब बिबेक बड़ाई
तापस मुनि महि सुरगति देबी। भए प्रेम बस बिकल बिसेषी
समय समुझि धरि धीरज राजा। चले भरत पहिं सहित समाजा
भरत आइ आगे भइ लीन्हे। अवसर सरस सुआसन दीन्हे
तात भरत कह तिरहुति राऊ। तुमहिं बिदित रघुबीर सुभाऊ

दो॰ राम सत्यव्रत धरमरत सब कर सील सनेह
संकट सहत सकोच बस कहिय जो आयसु देह

सुनि तन पुलक नयन भरि बारी। बोले भरत धीर धरि भारी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रभु प्रिय पूज्य पिता सम आपू। कुल गुर सम हित माय न बापू
कौशिकादि मुनि सचिव समाजू। ज्ञान अंबुनिधि आपुन आजू
मु सेवक आयसु अनुगामी। जानि मोहि सिख देइअ स्वामी
एहि समाज थल बूझब राउर। मौन मलीन मैं बोलब बाउर
छोटे बदन कहौं बड़ि बाता। छमब तात लखि बाम बिधाता
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना। सेवक धरम कठिन जग जाना
स्वामि धरम स्वारथहि बिरोधू। बैरु अंध प्रेमहि न प्रबोधू ॥
दो. राखि राम रुख धरम ब्रत पराधीन मोहि जान
सबके संमत सर्ब हित करिय प्रेम पहिचान ॥
भरत बचन सुनि देख सुभाऊ। सहित समाज सराहत राऊ ॥
सुगम अगम मृदु मंजु कठोरे। अरथ अमित अति आखर थोरे
ज्यों मुख मुकर मुकर निज पानी। गहि न जाइ अस अद्भुत बानी
भूप भरत मुनि साधु समाजू। गे जहँ बिबुध कुमुद द्विज राजू
सुनत सुधि सोच बिकल सब लोगा। मनहुं मीन गन नव जल जोगा
देवँ प्रथम कुल गुर गति देखी। निरखि बिदेह सनेह बिसेखी
राम भगति मय भरत निहारे। सुर स्वारथी हहरि हिय हारे
सब कोउ राम प्रेम मय पेखा। भए अलेख सोच बस लेखा
दो. राम सनेह सकोच बस कह सशोच सुर राज
रचहु प्रपंचहि पंच मिलि नाहित भयउ अकाज
सुरन्ह सुमिरि शारदा सराही। देवि देव शरणागत पाही ॥
फेरि भरत मति करि निज माया। पालि बिबुध कुल करि छल छाया

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बिबुध बिनय सुनि देवि सयानी। बोली सुर स्वारथ जड़ जानी
मोसन कहत भरत मति फेरू। लोचन सहस न सूझ सुमेरू
बिधि हरि हर माया बड़ि भारी। सोउ न भरत मति सकइ निहारी
सो मति मोहि कहत करु भोरी। चंदन करु कि चंदु करि चोरी
भरत हृदय सिय राम निवासू। तहँ कि तिमिर जहँ तरणि प्रकासू
अस कहि सारद गइ बिधिलोका। बिबुध बिकल निसि मानहुँ कोका

दो. सुर स्वारथी मलीन मन कीन्ह कुमंत्र कुठाटु
रचि प्रपंच माया प्रबल भय भ्रम अरति उचाटु

करि कुचालि सोचत सुर राजू। भरत हाथ सब काज अकाजू
गये जनक रघुनाथ समीपा। सनमाने सब रघुकुल दीपा
समय समाज धर्म अबिरोधा। बोले तब रघुबंश पुरोधा
जनक भरत संबाद सुनाई। भरत कहावत कही सुहाई
तात राम जस आयसु देहू। सो सब करइ मोर मति एहू॥
सुनि रघुनाथ जोरि जुग पानी। बोले सत्य सरल मृदु बानी
बिद्यमान आपुन मिथिलेसू। मोर कहब सब भाँति भदेसू
राउर राय रजायसु होई। राउरि सपथ सही सिर सोई

दो. राम सपथ सुनि मुनि जनकु सकुचे सभा समेत
सकल बिलोकत भरत मुख बनइ न उतर देत

सभा सकुचि बस भरत निहारी। राम बंधु धरि धीरज भारी
कुसमय देखि सनेहु सँभारा। बढ़त बिंधि जिमि घटजनिवारा
सोक कनकलोचन मति छोनी। हरी बिमल गुणगण जगजोनी

टी. ए. अ. १५०

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भरत बिबेक बराह बिसाला। अनायास उधरी तेहि काला
करि प्रणाम सब कहं कर जोरे। रामु राउ गुरु साधु निहोरे॥
छमब आजु अति अनुचित मोरा। कहउं बदन मृदु बचन कठोरा
हियं सुमिरि सारदा सुहाई। मानस तें मुख पंकज आई
बिमल बिबेक धरम नय साली। भरत भारती मंजु मराली॥
दो. निरखि बिबेक बिलोचननि सिथिल सनेह समाज
करि प्रणाम बोले भरतु सुमिरि सीय रघुराज॥
प्रभु पितु मातु सुहृद गुरु स्वामी। पूज्य परम हित अंतरजामी
सरल सुसाहिब सील निधानू। प्रनतपाल सबग्य सुजानू
समरथ सरनागत हितकारी। गुनगाहक अवगुन अघहारी
स्वामि गोसांइहि सरिस गोसांई। मोहि समान मैं साइं दोहाई
प्रभु पितु बचन मोह बस पेली। आएउं इहां समाज सकेली
जग भल पोच ऊंच अरु नीचू। अमिअ अमरपद माहुर मीचू
राम रजाइ मेटि मन माहीं। देखा सुना कतहुं कोउ नाहीं
सो मैं सब बिधि कीन्ह ढिठाई। प्रभु मानी सनेह सेवकाई
दो. कृपा भलाई आपनी नाथ कीन्ह भल मोर
दूषणभे भूषण सरिस सुयश चारु चहुं ओर
राउरि रीति सुबानि बड़ाई। जगत बिदित निगमागम गाई
कूर कुटिल खल कुमति कलंकी। नीच निसील निरीस निसंकी
तउ सुनि सरण सामुहें आयो। सुकृत प्रणाम किये अपनायो
देखि दोष कबहूं उर आने। सुनि गुन साधु समाज बखाने

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

को साहब सेवकहिं निवाजी। आपु समाज साज सब साजी
निज करतूति न समुझिय सपने। सेवक सकुच सोच उर अपने
सो गोसाइं नहिं दूसर कोपी। भुजा उठाय कहौं पन रोपी॥
जस नाचत शुक पाठ प्रवीना। गुण गति नट पाटक आधीना

दो॰ यों सुधारि सनमानिजन किये साधु शिर मोर
को कृपाल बिनु पालहैं बिरदा बलि बर जोर

शोक सनेह कि बाल सुभायें। आएउं लाइ रजायसु बायें
तबहुं कृपाल हेरि निज ओरा। सबहिं भांति भल मानेउ मोरा
देखेउं पाय सुमंगल मूला। जानेउं स्वामि सहज अनुकूला
बड़े समाज बिलोकेउं भागू। बड़ी चूक साहिब अनुरागू
कृपा अनुग्रह अंग अघाई। कीन्ह कृपानिधि सब अधिकाई
राखा मोर दुलार गोसांई। अपने शील सुभाय भलाई
नाथ निपट मैं कीन्ह ढिठाई। स्वामि समाज सकोच बिहाई
अविनय बिनय यथा रुचि बानी। छमिहि देव अति आरत जानी

दो॰ सुहृद सुजान सुसाहिबहिं बहुत कहत बड़ खोरि
आयसु देइ अदेव अब सबइ सुधारी मोरि॥

प्रभु पद पदम पराग दोहाई। सत्य सुकृत सुख सींव सुहाई
सो करि कहौं हिये अपने की। रुचि जागत सोवत सपने की
सहज सनेह स्वामि सेवकाई। स्वारथ छल फल चारि बिहाई
अग्या सम न सुसाहिब सेवा। सो प्रसाद जन पावइ देवा॥
अस कहि प्रेम बिवस भए भारी। पुलक शरीर बिलोचन बारी

अ॰ टी॰ रा॰ अ॰ २५३

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रभु पद कमल गहे अकुलाई। समय सनेह न सो कहि जाई
कृपासिंधु सनमानि सुबानी। बैठाये समीप गहि पानी ॥
भरत बिनय सुनि देखि सुभाऊ। शिथल सनेह सभा रघुराऊ
छं॰ रघुराउ शिथल सनेह साधु समाज मुनि मिथला धनी
मनमहं सराहत भरत भायप भगत की महिमा घनी
भरतहिं प्रशंसित बिबुध वरषत सुमन मानसमलिनसे
तुलसी बिकल सब लोग सुनि सकुचे निसागम नलिन से
सो॰ देखि दुखारी दीन दुहुं समाज नर नारि सब
मघवा महा मलीन मुयेहु मार मंगल चहत
कपट कुचालि सींव सुर राजू। पर अकाज प्रिय आपन काजू
काक समान पाक रिपु रीती। छली मलीन कतहुं न प्रतीती
प्रथम कुमति करि कपट सकेला। सोइ उचाट सब के शिर मेला
सुर माया सब लोग बिमोहे। राम प्रेम अति सेन बिछोहे
भएउचाट बस मन थिर नाहीं। छण बन रुचि छण सदन सुहाहीं
दुबिध मनोगत प्रजा दुखारी। सरित सिंधु संगम जनु बारी
दुचित कतहुं परितोष न लहहीं। एकु एकु सन मरम न कहहीं
लखि हिय हंसि कह कृपा निधानू। सरिस स्वान मघवान जवानू
दो॰ भरत जनक मुनि गण सचिव साधु सचेत बिहाइ
लगी देव माया सबहिं यथा योग जन पाइ ॥
कृपा सिंधु लखि लोग दुखारे। निज सनेह सुरपति छल भारे
सभा राउ गुरु महि सुर मंत्री। भरत भगति सब के मति जंत्री

टी॰ रा॰ अ॰ २५४

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रामहिं चितवत चित्र लिखे से। सकुचत बोलत बचन सिखे से
भरत प्रीति नति बिनय बड़ाई। सुनत सुखद बरणत कठिनाई
जासु बिलोकि भगति लवलेशू। प्रेम मगन मुनिगण मिथलेशू
महिमा तासु कहइ किमि तुलसी। भगति सुभाव सुमति हिय हुलसी
आपछोट महिमा बड़ जानी। कविकुल कानि मानि सकुचानी
कहि न सकहिं गुण रुचि अधिकाई। मति गति बालबचन की नाई

दो. भरत बिमल यश बिमल बिधु सुमति चकोरकुमारि
उदित बिमल जनु हृदय नभ एकटक रही निहारि

भरत सुभाउन सुगम निगमहूं। लघु मति चापलता कविछमहूं
कहत सुनत सति भाउ भरतको। सीय राम पदहोइ न रतको
सुमिरत भरतहिं प्रेम रामको। जेहि न सुलभ तेहि सरस बामको
देखि दयाल दया सबही की। राम सुजान जानजन जीकी
धरम धुरीण धीर नय नागर। सत्य सनेह शील सुख सागर
देश काल लखि समय समाजू। नीति प्रीति पालक रघुराजू
बोले बचन बानि सर बसुसे। हित परिणाम सुनत शशिरससे
तात भरत तुम धरम धुरीणा। लोक बेद बिद प्रेम प्रवीणा

दो. करम बचन मानस बिमल तुम समान तुम तात
गुरु समाज लघुबंधु गुण कुसमय किमि कहिजात

जानहु तात तरणि कुल रीती। सत्य संध पितु कीरति प्रीती
समय समाज लाज गुरुजनकी। उदासीन हित अनहित मनकी
तुमहिं बिदित सबही कर करमू। आपन मोर परम हित धरमू

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मोहि सब भांति भरोस तुम्हारा। तदपि कहों अवसर अनुसारा
तात तात बिनु बात हमारी। केवल गुरकुल कृपा संभारी
नतरु प्रजा पुरजन परिवारू। हमहि सहित सब होत खुवारू
जो बिनु अवसर अथव दिनेषू। जग केहि कहहु न होइ कलेषू
तस उतपात तात बिधि कीन्हा। सुनि सिथलेश राउ सब लीन्हा

दो॰ राज काज सब लाज पति धरम धरणि धन धाम
गुरु प्रभाव पालिहि सबहि भल होइहि परिणाम

सहित समाज तुमार हमारा। घर बन गुरप्रसाद रखवारा
मात पिता गुरु स्वामिनि देषू। सकल धरम धरणीधर सेषू
सो तुम करहु करावहु मोहू। तात तरणि कुल पालक होहू
साधक एक सकल सिधदेनी। कीरति सुगति भूति मय बेनी
सो बिचारि सह संकट भारी। करहु प्रजा परिवारु सुखारी
बांटी बिपति सबहि मोहि भाई। तुमहि अवधभरि बड़ि कठिनाई
जानि तुमहिं मृदु कहउं कठोरा। कुसमय तात न अनुचित मोरा
होहिं कुठाय सुबंधु सुहाये। ओड़ियहि हाथ असनिहु के घाये

दो॰ सेवक पद कर नयन से मुख से साहिब होइ
तुलसी प्रीति की रीति सुनि सुकविसराहहिं सोइ

सकल सभा सुनि रघुबर बानी। प्रेम पयोधि अमिय जनु सानी
सिथल समाज सनेह समाधी। देखि दशा चुप सारद साधी
भरतहिं भएउ परम संतोषू। सनमुख स्वामि बिमुख दुखदोषू
मुख प्रसन्न मन मिटा बिखादू। भा जनु गूगहिं गिरा प्रसादू

टी. रा॰ अ॰ २५६

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कीन्हस प्रेम प्रणाम बहोरी। बोले पाणि पंकरुह जोरी॥
नाथ भएउ सुख साथ गएको। लहेउ लाहु जग जनम भएको
अब कृपाल जस आयसु होई। करउं शीश धरि सादर सोई
सो अवलंब देव मोहि देई। अवधि पार पावउं जेहि सेई
दो. देव देव अभिषेक हित गुरु अनुशासन पाइ
आनेउं सब तीरथ सलिल तेहि कहं कहा रजाइ
एक मनोरथ बड़ मन माहीं। सभय सकोच जात कहि नाहीं
कहउं तात प्रभु आयसु पाई। बोले बाणि सनेह सुहाई॥
चित्रकूट मुनि थल तीरथ बन। खग मृग सरिसर निर्झर गिरिगन
प्रभु पद अंकित अवनि बिशेषी। आयसु होइ तो आवउं देखी
अवशि अत्रि आयसु शिरधरहू। तात बिगत भय कानन चरहू
मुनि प्रसाद बन मंगल दाता। पावन परम सुहावन भ्राता
ऋषि नायक जहं आयसु देहीं। राखेउ तीरथ जल थल तेहीं
सुनि प्रभु बचन भरत सुख पावा। मुनि पद कमल मुदित शिरनावा
दो. राम भरत संवाद सुनि सकल सुमंगल मूल
सुर स्वारथी सराहिं कुल बरषहिं सुरतरु फूल
धन्य भरत जस राम गोसांई। कहत देव हरषत बरिआंई॥
मुनि मिथलेश सभा सब काहू। भरत बचन सुनि भयेउ उछाहू
भरत राम गुण ग्राम सनेहू। पुलकि प्रशंसित राउ बिदेहू
सेवक स्वामि सुभाव सुहावन। नेम प्रेम अति पावन पावन
मति अनुसार सराहन लागे। सचिव सभा सद सब अनुरागे

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनि सुनि राम भरत संबादू । दुहुं समाज हिय हरष बिषादू
राम मातु सुख दुख समझानी । कहि गुण दोष प्रबोधी रानी
एक कहहिं रघुबीर बड़ाई । एक सराहत भरत भलाई ।

दो॰ अत्रि कहेउ तब भरत सन शैल समीप सुकूप
राखिय तीरथ तोय तहं पावन अमित अनूप

भरत अत्रि अनुशासन पाई । जल भाजन सब दिये चलाई
सानुज आप अत्रि मुनि साधू । सहित गए जहं कूप अगाधू
पावन पाथ पुण्य थल राखा । प्रमुदित प्रेम अत्रि अस भाखा
तात अनादि सिद्ध थल एहू । लोपेउ काल बिदित नहिं केहू
तब सेवकन सरस थल देखा । कीन्ह सुजल हित कूप बिशेखा
बिधि बस भएउ बिश्व उपकारू । सुगम अगम अति धरम बिचारू
भरत कूप अब कहिहहिं लोगा । अति पावन तीरथ जलयोगा
प्रेम सनेम निमज्जत प्रानी । होइहहिं बिमल करम मन बानी

दो॰ कहत कूप महिमा सकल गए जहां रघुराउ ॥
अत्रि सुनायउ रघुबरहिं तीरथ पुण्य प्रभाउ

कहत धरम इतिहास सप्रीती । भएउ भोर निशि सो सुख बीती
नित्य निबाह भरत दोउ भाई । राम अत्रि गुरु आयसु पाई
सहित समाज साज सब सादे । चले राम बन अटन पयादे
कोमल चरण चलत बिनु पनहीं । भइ मृदु भूमि सकुचमन मनहीं
कुस कंटक काकुरी कुराई । कटुक कठोर कुबस्तु दुराई
महि मंजुल मृदु मारग कीन्हे । बहत समीर त्रिबिध सुख लीन्हे

दो॰ रा॰ अ॰ २५८

सुमन बरषि सुर घन करि छाहीं। बिटप फूल फल तृण मृदु ताही
मृग बिलोकि खग बोलि सुबानी। सेवहिं सकल राम प्रिय जानी
दो॰ सुलभ सिद्धि सब प्राकृतहु राम कहत जमुहात
राम प्रान प्रिय भरत कहुं यह न होहि बड़ि बात
एहि बिधि भरत फिरत बन माहीं। नेम प्रेम लखि मुनि सकुचाहीं
पुण्य जलाश्रय भूमि बिभागा। खग मृग तरु तृण गिरि बन बागा
चारु बिचित्र पवित्र बिसेषी। बूझत भरत दिव्य सब देखी
सुनि मन मुदित कहत ऋषिराऊ। हेतु नाम गुण पुण्य प्रभाऊ
कतहुं निमज्जन कतहुं प्रनामा। कतहुं बिलोकत मन अभिरामा
कतहुं बैठि मुनि आयसु पाई। सुमिरत सीय सहित दोउ भाई
देखि सुभाउ सनेहु सुसेवा। देहिं असीस मुदित बन देवा
फिरहिं गए दिन पहर अढ़ाई। प्रभु पद कमल बिलोकहिं जाई
दो॰ देखे थल तीरथ सकल भरत पांच दिन मांझ
कहत सुनत हरि हर सुयश गयउ दिवस भइ सांझ
भोर न्हाइ सब जुरा समाजू। भरत भूमि सुर तिरहुति राजू
भल दिन आजु जानि मन माहीं। राम कृपाल कहत सकुचाहीं
गुरु नृप भरत सभा अवलोकी। सकुचि राम फिरि अवनि बिलोकी
सील सराहि सभा सब सोची। कहुं न राम सम स्वामि सकोची
भरत सुजान राम रुख देखी। उठि सप्रेम धरि धीर बिसेषी
करि दंडवत कहत कर जोरी। राखी नाथ सकल रुचि मोरी
मोहि लगि सबहिं कीन्ह दुखु भारी। बहुत भांति दुख पावा आपू

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अब गोसाइं मोहि देउ रजाई । सेवउं अवध अवधि भर जाई
दो· जेहि उपाय पुनि पाय जनु देखइ दीन दयाल ।
सो सिख देइय अवधि लगि कोशलपालकृपाल
पुरजन परिजन प्रजा गोसाईं । सब सुचि सरस सनेह सगाईं
राउर बदि भलि भव दुख दाहू । प्रभु बिनु बादि परम पद लाहू
स्वामि सुजानु जान सबही की । रुचि लालसा रहनि जन जी की
प्रणतपाल पालहिं सब काहू । देव दुहूं दिशि ओर निबाहू ॥
अस मोहि सब बिधि भूर भरोसो । किये बिचारुन सोचु दरोसो
आरति मोरि नाथ करि छोहू । दुहुं मिलकीन्ह ढीठ अति मोहू
यह बड़ दोष दूर कर स्वामी । नतिन सकोच सिखइय अनुगामी
भरत बिनय सुनि सबहि प्रशंसी । खीर नीर बिबरण गति हंसी
दो· दीनबंधु सुन बंधु के बचन दीन छल हीन
देश काल अवसर सरस बोले राम प्रबीन
तात तुम्हारि मोरि परजन की । चिंता गुरहिं नृपहिं घर बन की
माथे पर गुर मुनि मिथलेशू । हमहि तुमहिं सपनेहुं न कलेशू
मोर तुम्हार परम पुरुषारथ । स्वारथ सुयश धरम परमारथ
पितु आयसु पालिय दुहुं भाई । लोक बेद भल भूप भलाई ॥
गुरु पितु मातु स्वामि सिख पाले । चलहुं कुमगु पग परहिं न धाले
अस बिचार सब शोच बिहाई । पालहु अवध अवधि लग जाई
देश कोश पुरजन परिवारू । गुरु पद रजहिं लाग छर भारू
तुम मुनि मातु सचिव सिख मानी । पालेहु पुहमि प्रजा रजधानी

टी. रा. अ. १६०

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो· मुखिया मुख सो चाहिये खान पान कहुं एक
पालइ पोषहिं सकल अंग तुलसी सहित विवेक
राज धरम सर्बस इतनोई । जिमि मन माहिं मनोरथ गोई
बंधु प्रबोध कीन्ह बहु भांती । बिनु अधार मन तोष न साती
भरत शील गुरु सचिव समाजू । सकुच सनेह बिबस रघुराजू
प्रभु करि कृपा पावरी दीन्ही । सादर भरत शीश धरि लीन्ही
चरण पीठ करुणा निधान के । युग युग जामिक प्रजा प्रान के
संपुट भरत सनेह रतन के । आखर युग युग जीव जतन के
कुल कपाट कर कुशल करम के । बिमल नयन सेवा सुधरम के
भरत मुदित अवलंब लहे तें । अस सुख जस सिय राम रहे तें
दो· मांगेउ बिदा प्रणाम करि राम लिये उर लाइ
लोग उचाटे अमर पति कुटिल कुअवसर पाइ
सो कुचालि सब कहं भइ नीकी । अवधि आस सब जीवन जीकी
नतरु लषण सिय राम बियोगा । हहरि भरत सब लोग कुरोगा
राम कृपा अवरेब सुधारी । बिबुध धार भइ गुणद गोहारी
भेटत भुज भरि भाइ भरत सौं । राम प्रेम रस कहि न परत सौं
तन मन बचन उमग अनुरागा । धीर धुरंधर धीरज त्यागा
बारिज लोचन मोचत बारी । देखि दशा सुर सभा दुखारी
मुनि गण गुर धुर धीरजन कसे । ज्ञान अमल मन कसे कनकसे
जे बिरंचि निरलेप उपाये । पदम पत्र जिमि जग जल जाये
दो· तेउ बिलोकि रघुबर भरत प्रीति अनूप अपार

टी· रा· अ· २६२

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भये मगन मन तन बचन सहित बिराग बिचार
जहां जनक गुरु गति मति भोरी। प्राकृत प्रीति कहत बड़ि खोरी
बरणत रघुबर भरत बियोगू। सुनि कठोर कबि जानहिं लोगू
सो सकोच रस अकथ कहानी। समय सनेह सुमिरि सकुचानी
भेंटि भरत रघुबर समुझाये। पुनि रिपुदवन हरषि उर लाये
सेवक सचिव भरत रुख पाई। निज निज काज लगे सब जाई
सुनि दारुण दुख दुहूं समाजा। लगे चलन के साजन साजा
प्रभु पद पदम बंदि दोउ भाई। चले सीस धरि राम रजाई
मुनि महिसुर बन देव निहोरी। चले सनमानि बहोरि बहोरी

दो. लषणहिं भेंट प्रणाम करि। सिर धरि सियपद धूरि
चले सप्रेम असीस सुनि सकल सुमंगल मूरि

सानुज राम नृपहिं सिर नाई। कीन्ह बहुत बिध बिनय बड़ाई
देव दया बस बड़ दुख पायेउ। सहित समाज काननहिं आएउ
पुर पग धारिय देइ असीसा। कीन्ह धीर धरि गवन महीसा
मुनि महिदेव साधु सनमाने। बिदा किये हरि हर सम जाने
सासु समीप गये दोउ भाई। फिरे बंदि पग आसिष पाई
कौसिक बामदेव जाबाली। पुरजन परिजन सचिव सुचाली
यथा योग करि बिनय प्रणामा। बिदा किये सब सानुज रामा
नारि गुरुष लघु मध्य बड़ेरे। सब सनमानि कृपानिधि फेरे

दो. भरत मातु पद बंदि प्रभु सुचि सनेम मिलि भेंटि
बिदा कीन्ह सजि पालकी सकुच सोच सब मेंटि

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परिजन मातु पितहि मिलि सीता। फिरी प्राण प्रिय प्रेम पुनीता
करि प्रणाम भेंटी सब सासू। प्रीति कहत कवि हिय न हुलासू
सुनि सिख अभिमत आसिष पाई। रही सीय दुहुं प्रीति समाई
रघुपति पटु पालकी मंगाई। करि प्रबोध सब मातु चढ़ाई
बार बार हिल मिल दोउ भाई। सम सनेह जननी पहुंचाई
साजि बाजि गज बाहन नाना। भूप भरत दल कीन्ह पयाना
हृदय राम सिय लषण समेता। चले जाहिं सब लोग अचेता
बसह बाजि गज पसु हियहारे। चले जाहिं परबस मन मारे

दो गुर गुरु तिय पद बंदि प्रभु सीता लषण समेत
फिरे हरष बिसमय सहित आए परण निकेत

बिदा कीन्ह सनमानि निषादू। चले हृदय बड़ बिरह बिषादू
कोल किरात भिल्ल बन चारी। फेरे फिरे जोहारि जोहारी
प्रभु सिय लषण बैठि बट छाहीं। प्रिय परिजन बियोग बिलखाहीं
भरत सनेह सुभाउ सुबानी। प्रिया अनुज सन कहत बखानी
प्रीति प्रतीति बचन मन करणी। श्रीमुख राम प्रेम बस बरणी
तेहि अवसर रग मृग जल मीना। सिव कृत चर अचर मलीना
बिबुध बिलोकि दसा रघुबर की। बरषि सुमन कहि गति घर घर की
प्रभु प्रणाम करि दीन्ह भरोसो। चले मुदित मन डर नरवरोसो

दो सानुज सीय समेत प्रभु राजत परण कुटीर
भक्ति ज्ञान बैराग जनु सोहत धरे सरीर ॥

मुनि महि सुर गुर भरत भलाई। राम बिरह सब साज बेहाई

प्रभु गुण ग्राम गुणत मनभाहीं। सब चुपचाप चले मगजाहीं
यमुना उतरि पारु सबभयऊ। सो बासर बिनु भोजन गयेऊ
उतरि देवसरि दूसर वासू। राम सखा सब कीन्ह सुपासू
सई उतरि गोमती नहाये। चौथे दिवस अवधपुर आये
जनक रहे पुरबासर चारी। राज काज सब साज संवारी
सौंपि सचिव गुर भरतहि राजू। तिलक कीन्ह सब साजू
नगर नारि नर गुर सिख मानी। बसे सुखेन राम रजधानी
दो॰ राम दरस लगि लोग सब करत नेम उपवास।
तजि तजि भूषण भोग सुख जिअत अवध की आस॥

सचिव सुसेवक भरत प्रबोधे। निज निज काज पाइ सिख ओधे
पुनि सिख दीन्ह बोलि लघुभाई। सौंपी सकल मातु सेवकाई
भूसुर बोलि भरत कर जोरे। करि प्रणाम बर बिनय निहोरे
ऊंच नीच कारज भल पोचू। आयसु देब न करब संकोचू
परिजन पुरजन प्रजा बोलाये। सावधान करि सुबस बसाये
सानुज गे गुर गेह बहोरी। करि दंडवत कहत कर जोरी
आयसु होइ त रहउं सनेमा। बोले मुनि तन पुलकि सपेमा
समुझब कहब करब तुम्ह जोई। धरम सार जग होइहि सोई
दो॰ सुनि सिख पाइ असीस बड़ि गनक बोलि दिनसाधि।
सिंहासन प्रभु पाउकां बैठारे निरुपाधि॥

राम मातु गुरु पद सिर नाई। प्रभु पद पीठि रजायसु पाई
नंदि गांउ कुस परन कुटीरा। कीन्ह निवास धरम धुर धीरा

जटाजूट शिर मुनि पट धारी। महिषन कुश साथरी संवारी
असन बसन बासन ब्रत नेमा। करत कठिन ऋषि धरम सप्रेमा
भूषण बसन भोग सुख भूरी। मन तन बचन तजे तृण तूरी
अवध राज सुर राज सिहाहीं। दशरथ धन सुनि धनद लजाहीं
तेहि पुर बसत भरत अनुरागा। चंचरीक जनु चंपक बागा॥
रमा बिलास राम अनुरागी। तजत बसन जिमि जन बड़भागी

दो॰ राम प्रेम भाजन भरत बड़े न एहि करतूति
चातक हंस सराहियत टेक बिवेक बिभूति

देह दिनहिं दिन दूबर होई। घटन तेज बल मुख छबि सोई
नित नव राम प्रेम पण पीना। बढ़त धरम दल मनन मलीना
जिमि जल निघटत सरद प्रकाशे। बिलसत बेत सब निज बकाशे
सम दम संजम नेम उपासा। नखत भरत हिय बिमल अकासा
ध्रुव बिश्वास अवधि राकाशी। स्वामि सुरत सुर बीथि बिकाशी
राम प्रेम बिधु अचल अदोषा। सहित समाज सोह नित चोषा
भरत रहनि समुझनि करतूती। भक्ति बिरति गुण बिमल बिभूती
बरणत सकल सुकवि सकुचाहीं। शेष गणेश गिरा गमनाहीं

दो॰ नित पूजत प्रभु पांवरी प्रीति न हृदय समाति
मांगि मांगि आयसु करत राज काज बहु भांति:

पुलक गात हिय सिय रघुबीरू। जोह नाम जपु लोचन नीरू
लषण राम सिय कानन बसहीं। भरत भवन बसि तप तनु करहीं
दोउ दिशि समुझि कहत सब लोगू। सब बिधि भरत सराहन योगू

आश्रय शोभित
भा० ३२५ इति
मानसदीपिका

टी॰
रा॰ अ॰
१६५

टीकायां
योध्या कांड प्र
संग अंग समा
प्त

चौपाई छंद दोहा दि को टीका

श्लोक	चौपाइ	छंद	सोरठा	दोहा
३	२६१६	१३	१३	३२५

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनि ब्रतनेम साधु सकुचाहीं। देखि दशा मुनि राज लजाहीं
परम पुनीत भरत आचरण। मधुर मंजु मुद मंगल करण
हरण कलिन कलि कलुष कलेशू। महा मोह निसि दलन दिनेशू
पाप पुंज कुंजर मृग राजू। समन सकल संताप समाजू
जन रंजन भंजन भव भारू। राम सनेह सुधा कर सारू
॥ सिय राम प्रेम पियूष पूरण होत जनम न भरत को
मुनि मन अगम जम नियम शम दम विषम व्रत आचरत को
दुख दाह दारिद दंभ दूषण सुजश मिस अपहरत को
कलि काल तुलसी से सठहिं हठि राम सनमुख करत को
सो॰ भरत चरित करि नेम तुलसी जो सादर सुनहि
सीय राम पद प्रेम अवशि होइ भव रस बिरति
इति श्रीराम चरित मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने निर्मल वैराग्य संपादनो नाम द्वितीयः सोपानः
हस्ताक्षरहरसोहन लाल

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

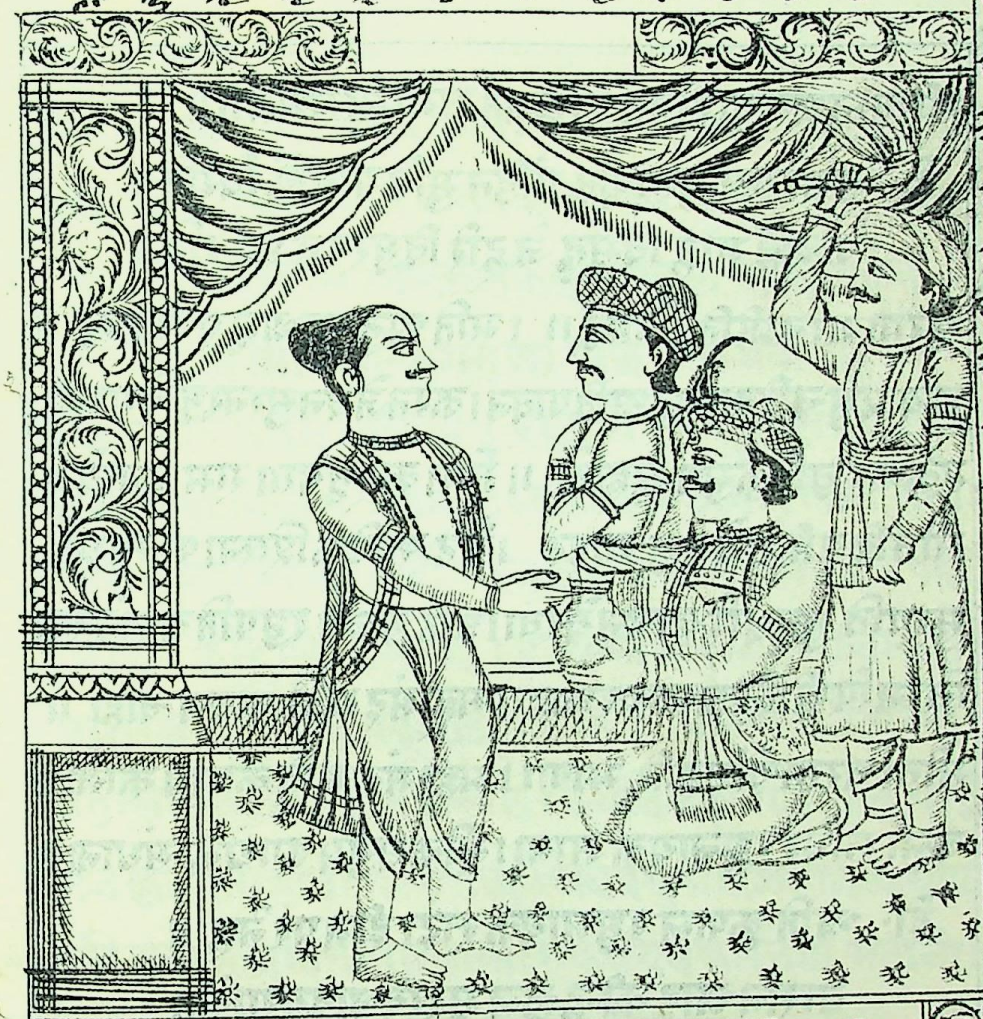

अथ आरण्यकाण्डः ३

श्रीगणेशायनमः ॥ श्लोक ॥ मूलंधर्मतरोर्विवेकजलधेः पू-
र्णेन्दुमानंददम् वैराग्याम्बुजभास्करं अघहरं ध्वांतापहंता-
पहं मोहांभोधरपूगपाटनविधौ स्वःसंभवं शंकरं वन्दे ब्र-
ह्मकुलं कलंकशमनं श्रीरामभूपप्रियं १ सान्द्रानंदपयोद
सौभगतनुं पीतांबरंसुंदरं पाणौबाणशरासनं कटिलसत्
तूणीरभारंवरं राजीवायतलोचनंधृतजटाजूटेन संशोभितं ॥

सीता लक्ष्मण संयुतं पथिगतं रामाभिरामंभजे ॥

दो॰ उमा राम गुण गूढ़ पंडित मुनि पावहिं बिरति ॥
पावहिं मोह बिमूढ़ जे हरि बिमुख न धर्म रति ॥

पूरण भरत प्रीति मैं गाई ॥ । मति अनुरूप अनूप सोहाई ॥
अब प्रभु चरित सुनहु अति पावन । करत जे बन सुर नर मुनि भावन
एकबार चुनि कुसुम सुहाये ॥ निज कर भूषण राम बनाये ॥
सीतहि पहिराये प्रभु सादर । बैठे फटिक शिला पर माधर
सुरपति सुत धरि बायस बेषा । सठ चाहत रघुपति बल देखा
जिमि पिपीलिका सागर थाहा । महामंद मति पावन चाहा ॥
सीता चरण चोंच हति भागा । महा मंद मति कारण कागा ॥
चला रुधिर रघुनायक जाना । सींक धनुष शायक संधाना ॥

दो॰ अति कृपाल रघुनायक सदा दीन पर नेह ॥
तासन आइ कीन्ह छल मूरख अवगुण गेह

बिन अपराध प्रभुहते न काहू । भ्रौंसर परे गरसै शशि राहू ॥ ॥
जब प्रभु लीन्ह धनुष सिकवाना । क्रोध जानि भा अनल समाना
प्रेरित मंत्र ब्रह्म शर धावा ॥ ॥ चला भाजि बायस भय पावा
धरि निज रूप गयउ पितु पाहीं । राम बिमुख राखा तेहि नाहीं
भा निरास उपजा मन त्रासा । यथा चक्र भय ऋषि दुर्वासा ॥
ब्रह्म धाम शिवपुर सब लोका । फिरा श्रमित व्याकुल भय शोका
काहू बैठन कहा न मोही ॥ ॥ रारि को सकै राम कर द्रोही
मातु मृत्यु पितु समन समाना । सुधा होइ बिष सुनहु हरि याना

मित्र करै शत रिपु कै करणी । ताकहँ विबुध न दीवै तरणी ॥
सब जगताहि अनलते ताता । जो रघुबीर बिमुख सुनु भ्राता ।

दो॰ जिमि जिमि भाजत शक्रसुत व्याकुल अति दुखदीन
तिमि तिमि धावत राम शर पाछे परम प्रवीन ॥ ॥

बचै उरग बरु गुसै खगेशा । रघुपति सर छुटे बचव अँदेशा
नारद देखा बिकल जयंता । लागि दया कोमल चित संता ॥
पठया तुरत राम पहँ ताहीं ॥ कहेसि पुकारि प्रणत हित पाहीं
दूरिहि ते कहि प्रभु प्रभुताई । हृदय माँझ चरणनि चितलाई
आतुर सभय गहेसि पद जाई । त्राहि त्राहि दयाल रघुराई ॥
अतुलित बल अतुलित प्रभुताई । मैं मति मंद जान नहिं पाई
निज कृत कर्म जनित फल पाएउँ । अब प्रभु पाहि शरणत कि आएउँ
सुनि कृपाल अति आरत बानी । एक नयन करि तजा भवानी ॥

सो॰ कीन्ह मोह बस द्रोह यद्यपि तेहि कर बध उचित
प्रभु छाँडेउ करि छोह को कृपाल रघुबीर सम

रघुबर चित्रकूट बसि नाना । चरित किये श्रुति सुधा समाना
बहुरि राम असमन अनुमाना । होइहि भीर सबहि मोहि जाना
सकल मुनिन सन बिदा कराई । सीता सहित चले द्वौ भाई ॥
अत्रि के आश्रम जब प्रभु गएऊ । सुनत महामुनि हर्षित भएऊ
पुलकित गात अत्रि उठि धाए । देखि राम आतुर चलि आए
करत दंडवत मुनि उर लाए । प्रेम वारि द्वौ जन अन्हवाए
देखि राम छबि नैन जुड़ाने । सादर निज आश्रम तब आने ॥

अरु भरतजू को प्रेम कहि अब श्री रामजी को वनचरित्र वर्णन करतु हैं एक समय सीता को शृंगार फूल में भूषणादि कर फटिक शिला पर बिराजतु भये तहां काल कागको भाव इंद्रहू का कप्रमान काक

टी॰ रा॰ आ॰ ३

समान पाक रिपु राती वाका पुत्र जयंत वाही भेष तें सीताजू के चरण चोंच सेछत कर भाग्यो वाकी गति दुर्वासा ऋषि के समान सुदर्शन चक्र के भय तें नाना लोक घूम निरास भये यह कथा बिचार सहित ना गवत के नवम स्कंध में है पुनः नारद उपदेश तें प्रभु शरण आयो तब शरणागत पाल क प्रभु ने वाको उपद्रव काम रव्य कारण पाय कै एक नैन फोरि कै तज्यो अरु चित्रकूट में बहुत चरित्र करी बहुजन समागम तें

करि पूजा कहि बचन सुहाये ॥ । दिये मूल फल प्रभु मन भाये ॥

सो॰ प्रभु आसन आसीन भरि लोचन शोभा निरखि
मुनिवर परम प्रवीन जोरि पाणि अस्तुति करत

छं॰ नमामि भक्त वत्सलं कृपाल शील कोमलम्
भजामि ते पदांबुजं अकामिनां स्वधामदम् ॥
निकाम श्याम सुंदरं भवांबु नाथ मंदिरं ॥ ॥
प्रफुल्ल कंज लोचनं मदादि दोष मोचनं ॥ ॥
प्रलंब बाहु विक्रमं प्रभो अमेय वैभवम् ॥ ॥
निषंग चाप शायकं धरे त्रि लोक नायकम् ॥
दिनेश वंश मंडनं महेश चाप खंडनम् ॥ ॥ ॥
मुनींद्र संत रंजनं सुरारि वृंद भंजनम् ॥ ॥
मनोज वैरि वंदितं अजादि देव सेवितम् ॥ ॥
विशुद्ध बोध विग्रहं समस्त दूषणा पहम् ॥
नमामि इंदिरापतिं सुखाकरं सतांगतिम् ॥
भजेस शक्ति सानुजं शचीपतेः प्रियानुजम् ॥
त्वदंघ्रि मूल जे नराः भजंति हीन मत्सराः ॥ ॥
पतंति नो भवार्णवे वितर्क वीचि संकुले ॥
विविक्त वासना सदा भजंति मुक्तये मुदा ॥ ॥
निरस्य इंद्रियादिकं प्रयांति ते गतिं स्वकं ॥
तमेक मद्भुतं प्रभुं निरीह मीश्वरं विभुम् ॥ ॥
जगद्गुरुं च शाश्वतं तुरीय मेव केवलम् ॥ ॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भजामि भाव वल्लभं कुयोगिनां सुदुर्लभम्
स्वभक्त कल्प पादपं समस्त सेव्य मन्वहम्
अनूप रूप भूपतिं नतोहं मुर्विजा पतिम् ॥
प्रसीद मे नमामिते पदाब्ज भक्ति देहि मे ॥
पठंति ये स्तवं मिदं नगादरेण ते पदम् ॥ ॥
व्रजंति नात्र संशयः त्वदीय भक्त संयुता ॥

दो॰ बिनती करि मुनि नाय शिर कह कर जोरि बहोरि
चरण शरोरुह नाथ जनि कबहुं तजै मति मोरि

देखि राम मुनि विनय प्रणामा। विबिध भांति पायउ बिश्रामा
जन्म जन्म प्रभु पद तव कंजा। बढ़ो प्रेम चकोर जिमि चंदा
अनुसुइया के पद गहि सीता। मिली बहोरि सुशील बिनीता
जे सिय सकल लोक सुखदाता। अखिल कोटि ब्रह्मांड की माता
तेऊ पाइ मुनिवर मुनिभामिनि। सुखी भईं कुमुदिनि जिमि यामिनि
ऋषि पत्नी मन सुख अधिकाई। आशीष देइ निकट बैठाई॥
दिव्य वसन भूषण पहिराये। जे नित नूतन अमल सुहाये॥
जाहि निरखि विदुख दूर पराहीं। गरुड़ जानि जिमि पन्नग जाहीं

दो॰ ऐसे वसन विचित्र सुठि दिये सीय कहं आनि ॥
मनमानी प्रिय वचन कहि प्रीति न जाइ बखानि

कह मुनि बधू सरल मृदु बानी॥ नारि धर्म कछु व्याज बखानी
मात पिता भ्राता हित कारी॥ मित प्रद सब सुनु राज कुमारी
अमित दान भर्ता बैदेही ॥ । अधम सो नारि जो सेवत तेही

धीरज धरम मित्र अरु नारी । आपद काल परिखिये चारी ॥
वृद्ध रोग बस जड़ धन हीना । अंध बधिर कोढ़ी अति दीना ॥
एसेहु पति कर किये अपमाना । नारि पाव यमपुर दुख नाना ॥
एकै धर्म एक व्रत नेमा ॥ ॥ ॥ काय बचन मन पति पद प्रेमा
जग पतिव्रता चारि विधि अहहीं । बेद पुराण संत सब कहहीं ॥

दो॰ उत्तम मध्यम नीच लघु सकल कहौं समुझाइ
आगे सुनहिं ते भव तरहिं सुनहु उमा मन लाइ

उत्तम के अस बस मन माहीं । सपनेहुँ आन पुरुष जग नाहीं
मध्यम परपति देखैं कैसे ॥ ॥ भ्राता पिता पुत्र निज जैसे ॥
धर्म बिचारि समुझि कुल रहहीं । सो निकृष्ट त्रिय श्रुति अस कहहीं
बिन अवसर भय ते रह जोई । जानेहु अधम नारि जग सोई
पति बंचक परपति रति करई । रौरव नर्क कल्प शत परई ॥
छन सुख लागि जन्म शत कोटी । दुख न समुझ तेहि सम को खोटी
बिन श्रम नारि परम गति लहई । पतिव्रत धर्म छाँडि छल गहई
पति बंचक जन्मै जहँ जाई ॥ ॥ विधवा होइ पाइ तरुणाई ॥

सो॰ सहज अपावन नारि पति सेवत शुभ गति लहै
जस गावहिं श्रुति चारि अजहुँ तुलसिका हरिहि प्रिय
सुनि सीता तव नाम सुमिरि पतिव्रत करिहि ॥
तोहि प्राण प्रिय राम कहेउँ कथा संसार हित
सुनि जानकी परम सुख पावा । सादर तासु चरण सिर नावा
तब मुनि सन कह कृपा निधाना । आयसु होइ जाउँ बन आना

टी॰ रा॰ आ॰ ई

संतन मोपर कृपा करेहू ॥ ॥ सेवक जानि तजहु जनि नेहू ॥
धर्म धुरंधर प्रभु कै बानी ॥ ॥ सुनिसप्रेम बोले मुनि ज्ञानी ॥
जासु कृपा अज शिव सनकादी । चहत सकल परमारथ वादी
ते तुम्हराम अकाम पियारे । दीनबंधु मृदु बचन उचारे ॥ ॥
अब जानी मैं श्री चतुराई । भजिय तुमहिं सब देव बिहाई
जेहि समान अतिशय नहिं कोई । ता कर शील कस न अस होई
केहि विधि कहौं जाहु अब स्वामी । कहहु नाथ तुम अंतर यामी ॥
अस कहि प्रभु विलोकि मुनिधीरा । लोचन जलबहु पुलक शरीरा
छं॰ तनपुलक निर्भर प्रेम पूरण नयन पंकज मन दिये ॥ ॥
मन ज्ञान गुण गोतीत प्रभु मैं दीख जप तप का किये
जप योग धर्म समूह ते नर भक्ति अनुपम पावहीं ।
रघुबीर चरित पुनीत निशि दिन दास तुलसी गावहीं
दो॰ कलिमल समन दमन मन राम सुयश सुख मूल
सादर सुनहिं जे तिन्ह पर राम रहहिं अनुकूल
सो॰ कठिन कालमल कोस धर्म न ज्ञान न योग जप
परि हरि सकल भरोस रामहिं भजहिं ते चतुर नर
दो॰ मुनिहु के अस्तुति कीन्ह प्रभु दीन्ह सुभग बरदान
सुमन वृष्टि नभ संकुल भय भय कृपा निधान।
मुनि पद कमल नाइ करि शीशा । चले बनहि सुर नर मुनि ईशा
आगे राम अनुज पुनि पाछे । मुनिबर बेष बने अति काछे
उभय बीच सिय सोहत कैसी । ब्रह्म जीव बिच माया जैसी ॥

सरिता बन गिरि अवघट घारा ॥ प्रभु पहिचानि देहि वर बाटा ॥
जहँ जहँ जाहिं देव रघुराया । करहिं मेघ तहँ तहँ नभ छाया ।
आश्रम बिपुल देखि मग माहीं । बिप्र सदन तेहि पटतर नाहीं ॥ ॥
दिव्य बिटप फल बहु बिधि सोहा । देखत सुनत सकल मन मोहा
पंछि अनेकन बन बहु रंगा ॥ ॥ कूजहिं कलरव करहिं बिहंगा ।
बहु तडाग सुंदर अबराई ॥ । भाँति भाँति सब मुनिन्ह लगाई ॥
दो॰ निज निज आश्रम बेदिका तेहि पर तुलसि बिराज
अनुज जानकी सहित प्रभु राजत भये रघुराज ॥
आनि सुआसन मुदित मन पूजि पहुनई कीन्हि ।
कन्दमूल फल अमिय सम आनि राम कहँ दीन्हि ।
अनुज सीय सह भोजन कीन्हा । जो जेहि भाय सुभग बर दीन्हा
होत प्रभात सबनि सिर नाई । आशीर्बाद मुनिन्ह सन पाई ॥
तेहि दिन प्रभु तहँ कीन्ह निवासा । सकल मुनिन्ह मिलि कीन्ह सुपासा
प्रातकाल उठि रघुकुल देवा । मज्जन कीन्ह पारथी सेवा ॥
बहुरि मुनिन्ह सन आयसु पाई । सीता सहित चले दोउ भाई ॥
सुमिरि उमापति गौरि गणेशा पुनि प्रभु चले मनहु उरेशा
बन अनेक सुंदर गिरि नाना ॥ नाघत चले जाहिं भगवाना
मिला असुर बिराध मग जाता । गर्जत घोर कठोर रिसाता ॥
रूप भयंकर मानहुँ काला ॥ ॥ बेगवंत धायउ जनु व्याला ॥
गहि पाणि त्रिशूल अति घोरा । कहरि मारि बेधसि चहुँ ओरा
तुरतहि सो सीतहि लै गयेऊ । राम हृदय अति विस्मय भयऊ

टी॰ रा॰ आ॰ ८

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

समुरी हृदय कैकेई करणी। कहा अनन सब बहु बिधबरणी
बहुरि लषण रघुवरहिं प्रबोधा। पांच बाण छांड़े करि क्रोधा
छं॰ भयो क्रोध लषण संधानि धनुसर मारि तेहि व्याकुल कियो
पुनि उठि निशाचर राखि सीतहि लै बिमूल छांड़त भयो
जनु काल दंड कराल धावत बिकल सब सुर गण भयो
धनु तानि श्री रघुवंश मणि काटि तेहि रज सम कियो
दो॰ बहुरि एक सर मारा पर धरणि धुनि माथ
उठि बहोरि सो गर्जा चलेउ जहां रघुनाथ
ऐसेहु कहत निशाचर धावा। अब नहिं बचहु तुमहिं मैं खावा
आवा प्रबल यही बिधि भूधर। होहहि काह कहहिं व्याकुल सुर
तासु तेज अति मरुत समाना। दूटत तरु बहु डार परवाना
जीव जंतु जहं लगि रहे जेते। व्याकुल भाजि चले सब तेते
उरग समान जोरि सर साता। आवत ही रघुबीर निपाता
तुरतहि रुचिर रूप तेहि पावा। दुखी देखि निजधाम पठावा
तासु अस्ति गाड़े प्रभु धरनी। देवन्ह दुंदुभि दीन्ही घनी
सीता आइ चरण लपटानी। अनुज सहित प्रभु चले भवानी
दूरहिं सुरेस सकल सुर संगा। गयउ रहहिं जहं मुनि सरभंगा
गयेउ कहन प्रभु देन सिखावन। दक्षिण दिशा बसत जहं रावन
दो॰ सुरपति संशय तम सम रघुपति तेज दिनेश
रावण जीवन निशि सम बीते छुटहिं कलेश
सुना सीर प्रभु तेहि क्षण देखा तेज निधान सुभ आति बेखा

तुरंग चारु बल मरुत समाना। रथ रवि समनहिं जाइ बखाना
क्षिति न परस अंतर हित रहई। स्वेत छत्र चामर शिर ढरई
तुरत चारु रथ देखिय कैसे। वेगवंत ऊरग अरि जैसे॥
देवन्ह सहित बिराज सुराजा। स्वेत छत्र शिर ऊपर छाजा
उपमा सरद इंदु सम तूलहिं। नखत मनहु मुकुताहिल झूलहिं
कनक दंड गहि चमर डोलावहिं। तनु रवि किरिणि रेख सम आवहिं
यहि बिधि प्रभु सुरेश कहं देखा। भये मगन सुख पाइ बिशेखा
बहुरि सुरेश देख श्री रामा। कीन्ह प्रणाम गये निज धामा
अनुजहि प्रियहि कहा समुझाई। सुरपति महिमा गुण प्रभुताई
जेहि कारण बासव तहं आये। सो कछु बचन कहै नहिं पाये
बीचहि सुनि आयसु प्रभु केरा। कहि सारथिहि तुरत रथ फेरा
दूरिहि ते करि प्रभुहि प्रणामा। हरषि सुरेस गये निज धामा
पुनि आये जहं मुनि सर भंगा। सुंदर अनुज जानकी संगा

दो॰ देखि राम मुख पंकज मुनिवर लोचन भृंग
सादर पान करत अति धन्य धन्य सर भंग।

कह मुनि सुनि रघुबीर कृपाला। शंकर मानस राज मराला
जात रहेउं बिरंचि के धामा। सुनेउं श्रवण बन ऐहहिं रामा
चितवत पंथ रहेउं दिन राती। अब प्रभु देखि जुड़ानी छाती
नाथ सकल साधन मैं हीना। कीन्ही कृपा जानि जन दीना
सो कछु देवन मोहि निहोरा। निज प्रण राखेउ जन मन चोरा
तब लगि रहहु दीन हित लागी। जब लगि मिलौं तुमहि तनु त्यागी

टी॰ रा॰ आ॰ २०

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

योग यज्ञ जप तप व्रत कीन्हा। प्रभु कहं देइ भक्ति बर दीन्हा।
एहि बिधि सर रचि सुनि सरभंगा। बैठे हृदय छांड़ि सब संगा

दो॰ सीता अनुज समेत प्रभु नील जलद तन श्याम
मम हिय बसहु निरंतर सगुण रूप श्रीराम ॥

अस कहि योग अग्नि तनु जारा। राम कृपा बैकुंठ सिधारा ॥
ताते मुनि हरि लीन न भयेऊ। प्रथमहि भेद भक्ति उर लयेऊ
ऋषिन काय मुनिबर गति देखी। सुखी भये निज हृदय बिशेखी
अस्तुति करहिं सकल मुनि वृंदा। जयति प्रणत हित करुणा कंदा
पुनि रघुनाथ चले वन आगे। मुनिवर वृंद बिपुल सब लागे
अस्थि समूह देखि रघुराया। पूंछा मुनिन्ह लागि अति दाया
जानतहूं पूंछिय कस स्वामी। सब दरशी तुम्ह अंतर यामी
निशिचर निकर सकल मुनि खाये। सुनि रघुबीर नयन जल छाये

दो॰ निशिचर हीन करौं महि भुज उठाइ प्रण कीन्ह
सकल मुनिन्ह के आश्रम जाइ जाइ सुख दीन्ह

मुनि अगस्ति करि शिष्य समाना। नाम सुतीछन रत भगवाना
मन क्रम वचन राम कर सेवक। सपनेहु आन भरोसन देवक
प्रभु आगमन श्रवण सुनि पावा। करत मनोरथ आतुर धावा
हे बिधि दीनबंधु रघुराया। मोसे शठ पर करिहहिं दाया
सहित अनुज मोहि राम गोसांई। मिलिहहिं निज सेवक की नांई
मोरे जिय भरोस दृढ़ नाहीं। भक्ति विरति न ज्ञान मन माहीं
नहिं सत संग योग जप जागा। नहिं दृढ़ चरण कमल अनुरागा

एक बानि करुणा निधान की। सो प्रिय जाके गति न आन की
छं॰ सो प्रिय स्मृति पाल की जिन्ह कबहु प्रभु सुमिरण कर्यो
तेइ आजु मैं निज नयन देखि हौं दूरि पुलकित हिय भर्यो
जे पद सरोज अनेक मुनि करि ध्यान कबहु कि पावहीं
ते राम श्री रघुवंश मणि प्रभु प्रेम ते उर आवहीं
दो॰ पन्नगारि सुनु प्रेम सम भजन न दूसर आन
यह विचारि मुनि पुनि पुनि करत राम गुण गान
होइहि सुफल आजु मम लोचन। देखि बदन पंकज भव मोचन
निर्भर प्रेम मगन मुनि ग्यानी। कहि न जाइ सो दसा भवानी
दिसि अरु विदिसि पंथ नहिं सूझा। को मैं चलेउ कहां नहिं बूझा
कबहुक फिरि पाछे मुनि जाई। कबहुक नृत्य करै गुण गाई
अविरल प्रेम भक्ति उर छाई। प्रभु देखैं तरु ओट लुकाई
अति सय प्रीति देखि रघुबीरा। प्रगटे हृदय हरण भव भीरा
मुनि मग मांझ अचल होइ बैसा। पुलक शरीर पनस फल जैसा
तब रघुनाथ निकट चलि आए। देखि दसा निज जन मन भाए
दो॰ राम सुसाहेब संत प्रिय सेवक दुख दारिद दमन
मुनि सन कह प्रभु आख आहउ द्विज मम प्राण धन
सुनिहि राम बहु भांति जगावा। जागत ध्यान जनित सुख पावा
भूप रूप तब राम दुरावा। हृदय चतुर्भुज रूप देखावा
मुनि अकुलाइ उठा तब कैसे। बिकल हीन मणि फणि वर जैसे
आगे देखि राम तन श्यामा। सीता अनुज सहित सुख धामा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परेउ लकुट इव चरणनिलागी। प्रेम मगन मुनिवर बड़ भागी
भुज बिशाल गहि लिए उठाई। परम प्रीति राखेउ उर लाई
मुनिहि मिलत अस सोह कृपाला। कनक तरुहि जनु भेटत माला
राम बदन बिलोकि मुनि ठाढ़ा। मानहुं चित्र मांझ लिख काढ़ा
दो॰ तब मुनि हृदय धीर धरि गहि पद बारहि बार ॥
निज आश्रम प्रभु आनि करि पूजा विविध प्रकार
कह मुनि सुनु प्रभु बिनती मोरी। अस्तुति करौं कवन बिधि तोरी
महिमा अमित मोरि मति थोरी। रवि सन्मुख खद्वैत अजोरी
श्याम ताम रस दाम शरीरं। जटा मुकुट परिधन मुनिचीरं
पाणि चाप सर कटि तूणीरं। नौमि निरंतर श्री रघुबीरं।
मोह विपिन घन दहन कृशानुं। संत सरोरुह कानन भानुं
निशिचर करि बरूथ मृगराजं। त्रातु सदा नो भव खगबाजं
अरुण नयन राजीव सुवेसं। सीता नयन चकोर निशेसं
हर हृद मानस बाल मरालं। नौमि राम उर बाहु बिशालं
संशय सर्प ग्रसन उर गादं। समन सुकर्क सनर्क बिखादं
भय भंजन रंजन सुर यूथं। त्रातु सदा नो कृपा वरूथं ॥
निर्गुण सगुण बिषम सम रूपं। ज्ञान गिरा गोतीत मनूपं
अमल अखिल मन बुद्धि मपारं। नौमि राम भंजन महिभारं
भक्त कल्प पादप आरामं। तर्जन क्रोध लोभ मद कामं
अति नागर भव सागर सेतुं। त्रातु सदा दिनकर कुल केतुं
अतुलित भुज प्रताप बल धामं। कलि मल विपुल बिभंजन

टी
रा॰ आ
२३

धर्म पर्म नर्मद गुण ग्रामं । संतत संत होतु मम रामं ॥
यद्यपि बिस्व व्यापक अबिनासी। सब के हृदय निरंतर बासी
तदपि अनुज सिय सहित खरारी। बसहु मनसि मम कानन चारी
जे जानहिं ते जानहु स्वामी। सगुण अगुण उर अंतरजामी
जन कोसलपति राजिव नैना। करौ सो राम हृदय मम ऐना
सो॰ माया बस सब जीव रहहि बिसर संतत भगन
तिमि लागहु मोहि पीय करुणाकर सुंदर सुखद
अस अभिमान जाइ जनि भोरे। मैं सेवक रघुपति पति मोरे
राम अछत तजि चहउ कल्याना। सो नर अधम सिआर समाना
सुनि मुनि बचन राम मन भाए। बहुरि हरषि मुनिबर उर लाए
परम प्रसन्न जान मुनि मोही। जो बर मांग देउं सो तोही
मुनि कह मैं बर कबहु न जांचा। समुझि न परै झूँठ का सांचा
तुमहिं नीक लागै रघुराई। सो मोहि देहु दास सुखदाई
अबिरल भगति बिरति बिग्याना। होहु सकल गुण ग्यान निधाना
प्रभु जो दीन्ह सो बर मैं पावा। अब सो देहु मोहि जो भावा
सो॰ अनुज जानकी सहित प्रभु चाप बाण धर राम
मम हिय गगन इंदु इव बसहु सदा निः काम
एवमस्तु कहि रमा निवासा। हरषि चले कुंभज ऋषि पासा
पुनि प्रणाम करि कह कर जोरी। सुनहु नाथ कछु बिनती मोरी
बहुत दिवस गुरु दरशन पाए। भये मोहि यहि आश्रम आए
अब प्रभु संग जाउं गुरु पाहीं। तुम्ह कहं नाथ निहोरा नाहीं

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चले जात मग तव पद कंजा। देखिहौं जो बिराध मद गंजा
देखि कृपानिधि मुनि चतुराई। लिये संग बिहंसे दोउ भाई
पंथ कहत निज भक्ति अनूपा। मुनि आश्रम पहुंचे सुरभूपा
आश्रम देखि महा शुचि सुंदर। सरित सरोवर हरषित भूधर
बनचर जलचर जीव जहींते। बयरु न करहिं प्रीति सबहींते

दो॰ तरु बहु बिबिध बिहंग मय बोलत बिबिध प्रकार
बसहिं सिद्ध मुनि तप करहिं महिमा गुण आगार

तुरत सुतीछन गुर पहं गएऊ। करि दंडवत कहत अस भएऊ
नाथ कोशलाधीश कुमारा। आए मिलन जगत आधारा
राम अनुज समेत बैदेही। निशि दिन देव जपत हहु जेही
सुनत अगस्ति तुरत उठि धाये। प्रभु बिलोकि लोचन जल छाये
मुनि पद कमल परे दोउ भाई। ऋषि अति प्रीति लिए उर लाई
आसन पर बैठारे आनी। सादर कुशल पूंछि मुनि ज्ञानी
पुनि करि बहु प्रकार प्रभु पूजा। मोहि सम भाग्यवंत नहिं दूजा
जहं लगि रहे अपर मुनि वृंदा। हरषे सब बिलोकि सुख कंदा

दो॰ मुनि समूह बैठे प्रभु सनमुख सब की ओर
सरद इंदु तन चितवत मानहुं निकर चकोर

पाइ सुथल जल हरषित मीना। पारस पाइ सुखी जिमि दीना
प्रभुहि निरखि सुख भा यहि भांती। चातिक जिमि पाई जल स्वाती
तब रघुबीर कहा मुनि पाहीं। तुम सम प्रभु दुराव कछु नाहीं
तुम्ह जानउ जेहि कारण आएउं। तातें तात न कहि समुझाएउं

अब सो मंत्र देहु प्रभु मोही । जेहि प्रकार मारौं सुर द्रोही
द्विज द्रोही न बचै मुनि राई । जिमि पंकज बन हि मऋतु आई
मुनि मुसुकानें सुनि प्रभु बानी । पूंछेउ नाथ मोहि का जानी
तुम्हरे भजन प्रभाव खरारी । जानौं महिमा कछुक तुम्हारी

दो॰ भृकुटी निरखत नाथ तव रहत सदा पद कमरतर
जिन्ह डारे निज उदर महं बिबुध बिधाता सिद्धहर

अति कराल सब परजग जाना । औरौ कहौं सुनहु भगवाना
ऊमरि तरु बिशाल तव माया । फल ब्रह्मांड अनेक निकाया
जीव चराचर जंतु समाना । भीतर बसहिं न जानत आना
ते फल भक्षक कठिन कराला । तव भय डरत सदा सोउ काला
ते तुम्ह सकल लोकपति सांई । पूछेहु मोहि मनुज की नांई
यह बर मांगौ कृपा निकेता । बसहु हृदय सिय अनुज समेता
अविरल भक्ति विरति सत संगा । चरण सरोरुह प्रीति अभंगा
यद्यपि ब्रह्म अखंड अनंता । जनु भव गम्य भजहिं जेहि संता
अस तव रूप बखानौ जानौ । फिरि फिरि सगुण ब्रह्म रति मानौ

दो॰ जाहि जीव पर माया रहत तुमहि संतत सुबस
तिनकी महिमा जान नहि सेवक तुम कहं प्राण अस

संतत दासन्ह देहु बड़ाई । ताते मोहि पूछेहु रघुराई
हे प्रभु परम मनोहर ठाऊं । पावन पंचबटी तेहि नाऊं
गोदावरी नदी तहं बहई । चारिहु युग प्रसिद्ध सो अहई
दंडक बन पुनीत प्रभु करहू । उग्र श्राप मुनिबर कर हरहू

टी॰ रा॰ आ॰ ६

वास करहु तहं रघुकुल राया। कीजै सकल मुनिन्ह परदाया
चले राम मुनि आयसु पाई। तुरतहि पंचबटी नियराई ॥
दिव्य लता तरु प्रभु मन भाये। निरखि राम तेउ भये सुहाये
लषण राम सिय चरण निहारी। कानन अघ उमगा दुखभारी

दो॰ गीधराज सों भेंट भइ बहु बिधि प्रीति बढ़ाइ
गोदावरी निकट प्रभु रहे परण गृह छाइ ॥

जब तें राम कीन्ह तहं वासा। सुखी भये मुनि बीती त्रासा
गिरि बन नदी ताल छबि छाये। दिन दिन प्रति अति होहिं सुहाये
खग मृग वृंद अनंदित रहहीं। मधुप मधुर गुंजत छवि लहहीं
सो वन बरणि न सकै अहिराजा। जहां प्रगट रघुबीर बिराजा
एकवार प्रभु सुख आसीना। लक्ष्मण बचन कहे छलहीना
सुर नर मुनि सचराचर सांई। मैं पूछौं निज प्रभु की नांई।
मोहि समुझाइ कहहु सो देवा। सब तजि करौं चरणरज सेवा
कहहु ज्ञान बिराग अरु माया। कहहु सो भक्ति करहु जेहि दाया

दो॰ ईश्वर जीव भेद प्रभु सकल कहहु समुझाइ
जाते होई चरण रति शोक मोह भ्रम जाइ

थोरे महं सब कहौं बुझाई। सुनहु तात मन मति चित लाई
मैं अरु मोर तोर तें माया। जेहि वस कीन्हे जीव निकाया
गो गोचर जहं लगि मन जाई। सो सब माया जानेहु भाई
तिहि कर भेद सुनहु तु सोऊ बिद्या अपर अविद्या दोऊ
एक दुष्ट अति सय दुख रूपा। जा बस जीव परा भवकूपा

टी॰ रा॰ आ॰ २७

एक रचै जग गुण बस जाके। प्रभु प्रेरित नहिं निजबल ताके
ज्ञान मान जहं एकौ नाहीं। देख ब्रह्म समान सब माहीं
कहिय तात सो परम बिरागी। त्रिण सम सिद्ध तीन गुण त्यागी

दो॰ माया ईस न आपु कहं जानि कहिय सो जीव
बंध मोक्ष प्रद सब पर माया प्रेरक सीव ॥

धर्म ते बिरति योग ते ज्ञाना। ज्ञान मोक्ष प्रद बेद बखाना
जाते वेगि द्रवौं मैं माई। सो मम भक्ति भक्त सुखदाई ॥
सो स्वतंत्र अवलंब न आना। तेहि आधीन ज्ञान बिज्ञाना
भक्ति तात अनुपम सुख मूला। मिलहिं जो संत होहिं अनुकूला
भक्ति कि साधन कहौं बखानी। सुगम पंथ मोहि पावहिं प्रानी
प्रथमहिं बिप्र चरण अति प्रीती। निज निज धर्म निरत श्रुति नीती
यहि कर फल पुनि बिषय बिरागा। तब मम धर्म चरण अनुरागा
श्रवणादिक नव भक्ति दृढ़ाई। मम लीला रत अति मन भाई
संत चरण पंकज अति प्रेमा। मन क्रम बचन भजन दृढ़ नेमा
गुरु पित मात बंधु प्रभु देवा। सम मोहि कहं जानै दृढ़ सेवा
मम गुण गावत पुलक शरीरा। गद गद गिरा नयन बहै नीरा
काम आदि मद दंभ न जाके। तात निरंतर बस मैं ताके

दो॰ बचन कर्म मन मोरि गति भजन करिहि निष्काम
तिन्ह के हृदय कमल महं करौं सदा बिश्राम ॥

भक्ति योग सुनि अति सुख पावा। लछिमण प्रभु चरण निशिर नावा
नाथ सुने गत मम संदेहा। गयेउ ज्ञान उपजेउ नव नेहा

कछु काल पाछे रावण की भगनी वेषान्तर ते आई मम निकट कपट नाहीं

टी॰ रा॰ आ॰ १८

रहत प्रगट होत होतही लक्ष्मण जू नाक काट रावण इत्यादिको ज्ञान कियो ४०

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनुज बचन सुनि प्रभु मन भाए। हरषि राम निज हृदय लगाए
एहि विधि गये कछुक दिन बीती। कहत बिराग ज्ञान गुण नीती
सूर्प नखा रावण कै बहिनी। दुष्ट हृदय दारुण जसि अहिनी
पंचवटी सो गइ एक बारा। देखि बिकल भइ युगल कुमारा
भ्राता पिता पुत्र उर गारी। पुरुष मनोहर निरखत नारी
होइ बिकल सक मनहि न रोकी। जिमि रवि मणि द्रवै रविहि बिलोकी

दो॰ अधम निशाचरि कुटिल मति चली करन उपहास
सुनु खगेश भावी प्रबल भा चहै निशिचर नास

रुचिर रूप धरि प्रभु पहं आई। बोली बचन मधुर मुसुकाई
तुम सम पुरुष न मोसम नारी। यह संयोग बिधि रवा संवारी
मम अनुरूप पुरुष जग माही। देखेउं खोजि लोक तिहुं नाहीं
ताते अब लगि रहिउं कुमारी। मन माना कछु तुमहिं निहारी
सीतइ चितइ कही प्रभु बाता। अहै कुमार मोर लघु भ्राता
गइ लक्षिमण रिपु भगिनी जानी। प्रभु बिलोकि बोले मृदु बानी
सुंदरि सुनु मैं उन कर दासा। पराधीन नहिं तोर सुपासा
प्रभु समरथ कौशलपुर राजा। जो कछु करहिं उनहिं सब छाजा

दो॰ केहरि सम नहिं करिवर लवा कि बाज समान
प्रभु सेवक इमि जानहु मानहु बचन प्रमान

सेवक सुख चहै मान भिखारी। बिसनी धन सुभगति बिभचारी
लोभी यश चहै प्रेम गुमानी। नभ दुहि दूध चहत जड़ प्रानी
पुनि फिरि राम निकट सो आई। प्रभु लक्षिमण पहं बहुरि पताई

टी॰ रा॰ आ॰ १९

लक्षिमण कहा तोहि सो बरई। जो तृण तोरि लाज परिहरई
तब खिसियानि राम पहं गई। रूप भयंकर प्रगटत भई ॥
बिथुरे कच दसननि बिकराला। भृकुटी कुटिल करन लगि गाला
सीतहि सभय देखि रघुराई। कहा अनुज सन सैन बुझाई
अनुज राम मनकी गति जानी। उठि रिसाइ तब सुनहु भवानी

दो॰ लक्षिमण अति लाघव सो नाक कान बिनु कीन्हि
ताके कर रावण कहं मनहुं चुनौती दीन्हि

नाक कान बिन भए बिकरारा जनु श्रवै शैल गेरु कै धारा
श्याम घटा देखत घन केरी। तहं वासव घन मनहुं उजेरी
खरदूषण पहं गई बिलखाता। धृग् धृग् तब बल पौरुष भ्राता
तेहि पूंछा सब कहेसि बुझाई। यातुधान सुनि सैन बोलाई
चौदह सहस सैन संग लीन्हे। जिन्ह सपनेहुं रण पीठि न दीन्हे
धाए निशिचर निकर बरूथा। जनु सपक्ष कज्जल गिरि यूथा
नाना बाहन नाना कारा। नानायुध धर घोर अपारा
सूर्प नखा आगे करि लीन्ही। असुभ रूप श्रुति नासाहीनी

दो॰ निज निज बल सब मिलि कहहिं एकहि एक सुनाइ
बाजन बजे जुझाउ हरष न हृदय समाइ ॥

असगुन अमित होहिं भयकारी। गनहिं न मृत्यु बिवस सब भारी
गर्जहिं तर्जहिं गगन उड़ाहीं। देखि कटक भट अति हरषाहीं
कोउ कह जियत धरहु दोउ भाई। धरि मारहु त्रिय लेहु छुड़ाई
कोउ कह सुनहु सत्य हम कहहीं। कानन फिरहिं बीर कोउ अहहीं

टी॰ रा॰ आ॰ २०

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रामचंद्रसे वरदूषणका युद्ध की मूर्ति

एकै कहहिं मरट दोउ रहहू । खर के आगे अस नहिं कहहू
वह सिधि कहहिं वचन रणधीरा । आए सकल जहां रघुवीरा
धूरि पूरि नभ मंडल रही । राम बोलाइ अनुज सन कही
लै जानकिहि जाहु गिरि कंदर । आवा निशिचर कटक भयंकर
रहेहु सजग सुनि प्रभु कै बानी । चले सहित सिय सर धनुपानी
देखि राम रिपुदल चलि आवा । विहंसि कठिन कोदंड चढ़ावा
छं० कोदंड कठिन चढ़ाइ सिर जट जूट बांधत सोह क्यों
मरकत शैल पर लसत दामिनि कोटि सोंजुग भुजग ज्यों
कटि कस निषंग बिशाल भुज गहि चाप बिसिख सुधारिकै
चितवत मनहुं मृगराज प्रभु गजराज घटा निहारि कै ॥
सो० आइ गये वगमेल धरहु धरहु आवत सुभट
यथा विलोकि अकेल बाल रविहि घेरत दनुज
घेरि रहे निशिचर समुदाई । दंडक खग मृग चले पराई
प्रभु बिलोकि सर सकहिं न डारी । थकित भये रजनीचर धारी
सचिव बोले बोले खरदूषण । यह कोउ नृप बालक नर भूषण
नाग असुर सुर नर मुनि जेते । देखे जिते हते हम तेते ॥
हम भरि जन्म सुनहु सबभाई । देखी नहिं असि सुंदरताई
यद्यपि भगिनी कीन्ह कुरूपा । बधलायक नहिं पुरुष अनूपा
देहु तुरत निज नारि दुराई । जीअत भवन जाहु दोउ भाई
मोर कहा तुम ताहि सुनावहु । तासु बचन सुनि आतुर आवहु
दो० भये काल बस मूढ सब जानहिं नहिं रघुवीर

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मसक फूंक किमि मेरुहर सुनहु गरुड अति धीर
दूतन्ह कहा राम सन जाई। सुनत राम बोले मुसुकाई
आजु भये बड़ भाग हमारे। तुम्हरे प्रभुअस कीन्ह बिचारे
हम छत्री मृगया बन करहीं। तुम्हसे खल मृग खोजत फिरहीं
रिपु बलवंत देखि नहिं डरहीं। एक बार कालहु सन लरहीं।
यद्यपि मनुज दनुज कुल घालक। मुनि पालक खल सालक बालक
जो न होइ बल गृह फिरि जाहू। समर बिमुख मैं हतौं न काहू
रण चढ़ि करिय कपट चतुराई। रिपु पर कृपा परम कदराई
दूतन्ह जाइ तुरत सब कहेऊ। सुनि बरूथ उर अति दहेऊ
छं॰ उर दहेउ कहेउ कि धरह धावह बिकट भट जनि नीचए
सर चाप तोमर शक्ति शूल कृपाण परिघ परशु धए
प्रभु कीन्ह धनुष टकोर प्रथम कठोर घोर भयावहा
भये बधिर व्याकुल जातुधान न ज्ञान तेहि अवसरहा
दो॰ सावधान होइ धाए जानि सबल आराति
लागे बरषण राम पर अस्त्र शस्त्र बहु भांति
तिन्ह के आयुध तिल सम करि काटे रघुबीर
तानि सरासन श्रवण लगि पुनि छाड़े निज तीर
छं॰ तीर। तब चले बाण कराल फुंकरत जनु बहु व्याल
कोपेउ समर श्रीराम चले बिसिख निसित निकाम
अवलोकि खरतर तीर मुरि चले निशिचर बीर
एक एक कोउ न संभारि करि गहि भ्रात पुकार

कोउ कहै पर कह कीन्ह जो युद्ध इन सन लीन्ह
जाके बाण अनिहि कराल। ग्रसे अनिहि मानो काल
भए क्रुद्ध तीनिउ भाइ। जो भागि रण ते जाइ
तेहि बध इन्ह निज पानि। फिरे मरण मन महं ठानि
दो॰ उमा एक निज प्रभु बस पुनि उन्ह के बड़े भाग
नरन चहहिं निज सरलगे बिना योग जप याग
छं॰ नोमर आयुध अनेक प्रकार। सन्मुख ते करहिं प्रहार
रिपु परम कोपे जानि। प्रभु धनुष सर संधानि
छाड़े बिपुल नाराच। लगे कटन बिकट पिशाच
उर शीश भुज कर चरन। जहं तहं लगे महि परन
टी॰ चिकरत लागत बान। धर परत कुधर समान।
रा॰ भा॰ भट कटत तन सत खंड। पुनि उठत करि पाखंड
२५ नभ उड़त बहु भुज मुंड। बिन मौलि धावत रुंड
लग कंक काक सृगाल। कट कटहिं कठिन कराल
छं॰ कट कटहिं जंबुक भूत प्रेत पिशाच खप्पर संचही
बेताल बीर कपाल ताल बजाइ योगिनि नंचही
रघुबीर बाण प्रचंड खंडहिं भटन के भुज उर शिरा
जहं तहं परहिं उठि उठि लरहिं धरु धरु करहिं भयकरा
अंतावली गहि उड़त गीध पिशाच कर गहि धावहीं
संग्राम पुर बासी मनहुं बहु बाल गुड़ी उड़ावहीं
मारे पछारे उर विदारे बिपुल भट कहरत परे।

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ची.
रा. ग्रं.
२५

अवलोकि निजदल बिकल भट त्रिसरादि खरदूषण फिरे
सर शक्ति तोमर परशु शूल कृपाण एकहि बारहीं ॥
करि कोप श्री रघुबीर पर अगणित निशाचर डारहीं
प्रभु निमिष महं रिपु सर निवारि प्रचार डारे सायका।
दश दश बिसिख उर मांझ मारे सकल निशिचर नायका
महि परत उठ भट भिरत मरत न करत माया अति घनी
सुर डरत चौदह सहस प्रेत विलोकि एक अवध धनी
सुर मुनि सभय प्रभु देख माया नाथ अस कौतुक कियो
देखहिं परस्पर रामकरि संग्राम रिपुदल लरि मर्यो।

दो॰ राम राम कहि तनु तजहिं पावहिं पद निर्बान
करि उपाय रिपु मारे क्षण महं कृपानिधान
हरषित बरषहिं सुमन सुरबाजहिं गगन निसान
अस्तुति करि करि सब चले शोभित बिबिध बिमान

जब रघुनाथ समर रिपु जीते। सुर नर मुनि सबके भय बीते
तब लक्षिमण सीतहि लै आए। प्रभु पद परत हरषि उर लाए
सीता चितव श्याम मृदु गाता। परम प्रेम लोचन न अघाता
पंचबटी बस श्रीरघुनायक। करत चरित सुरमुनि सुखदायक
मरण देखि खरदूषण केरा। जाइ सूर्पनखा रावण प्रेरा
बोली बचन क्रोध करि भारी। देश कोश कै सुरत बिसारी
करसि पान सोवसि दिन राती। सुधि नहिं तव सिरपर आराती
राजनीति बिनु धन बिन धर्मा। हरिहि समर्पे बिनु सत कर्मा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बिद्या बिन बिबेक उपजाये। श्रम फल पढ़े किए अरु गाये
संग ते जती कुमंत्र ते राजा। मन ते ज्ञान ज्ञान ते लाजा
प्रीति प्रनय बिनु मदते गुनी। नासहि बेगि नीति अस सुनी

सो॰ रिपु रुज पावक पाप प्रभु अहि गनियन छोटकरि
अस कहि बिबिध बिलाप करि लागी रोदन करन

दो॰ सभा माझ परि ब्याकुल बहु प्रकार कहि रोइ
तोहि जिअत दशकंधर मोरि कि अस गति होइ

सुनत सभा सब उठे अकुलाई। समरुाई गहि बाहं उठाई
कह लंकेश कहसि किन बाता केहि तव नासा कान निपाता
अवध नृपति दशरथके जाए। पुरुष सिंह बन खेलन आए
समुझि परी मोहि उन के करणी। रहित निशाचर करिहहिं धरणी
जिन्ह कर भुजबल पाइ दशानन। अभय भये बिचरत मुनि कानन
देखत बालक काल समाना। परम धीर धन्वी गुण नाना
अतुलित बल प्रताप दोउ भ्राता। खल बधरत सुर मुनि सुखदाता
शोभाधाम राम अस नामा। तिन्ह के संग नारि एक श्यामा

सो॰ अति सुकुमारि पियारि पट तर योगन अहि कोउ
मैं मन दीख बिचारि जहां रहै तेहि समन कोउ

अजहुं जाइ देखव जब तुमहीं। होइहहु बिकल तासु बस तबहीं
जीवन मुक्त लोक बस ताके। दश मुख सुन सुंदरी अस जाके
रूप राशि बिधि नारि सवारी। रति शत कोटि तासु बलिहारी
तासु अनुज काटे श्रुति नासा। सुनि तव भगनी करि परिहासा

बिन अपराध असि दए हमारी। अपराधी किमि बचें सुरारी
खरदूषण सुनि लगे पुकारा। क्षण महं सकल कटक उन्ह मारा
खरदूषण त्रिसिरा कर घाता। सुनि दशशीश जरे सब गाता
भयउ शोच मन नहिं बिश्रामा। बीतहिं पल कल्प सत यामा
दो. सूर्पनखहि समुझाइ कर बल बोलेसि बहु भांति
गयउ भवन अति शोच बस नींद परी नहिं राति
सुर नर असुर नाग खग माहीं। मोरे अनुचर कहं कोउ नाहीं
खरदूषण मोहि सम बलवंता। तिनहिं को मारै बिन भगवंता
सुर रंजन भंजन महि भारा। जौं भगवंत लीन्ह अवतारा
तौ मैं जाइ बयर हठि करिहौं। प्रभु सर लगे प्राण भव तरिहौं
होइ भजन नहिं तामस देहा। मन क्रम बचन मंत्र दृढ़ येहा
जौ नर रूप भूप सुत कोऊ। हरिहौं नारि जीति रण दोऊ
चला अकेल जान चढ़ि तहवां। बस मारीच सिंधु तट जहवां
रय अनूप जोरि सि खर चारी। बेगवंत द्रुमि जिमि उरगारी
छं. उरगारि सम अति बेग बरणत जाइ नहिं उपमा कही
शिर छत्र चामर सोह अति घन श्याम तन बिराजही
यहि भांति नांघत सरित शैल अनेक बापी सोहहीं
बन बाग उपवन वाटिका सुचि नगर मुनि मन मोहहीं
दो. बहु तड़ाग शुचि बिहंग मृग बोलन बिबिध प्रकार
एहि बिधि आएउ सिंधु तट शत योजन बिस्तार।
सुंदर जीव बिबिध बहु जाती। करहिं कलाहल दिन अरु राती

कूदहिं ते गरजहिं घहनाई। कनक बाल सुंदर सुखदाई
बैठहिं सकल जंतु तहं जाई। महाबली ते बरणि न जाई
तेहि पर दिव्य लता द्रुम लागे। जेहि देखत मुनि मन अनुरागे
गुहा बिबिधि बिधि रहे बनाई। बरणत सारद मन सकुचाई
चाहिय जहां [illegible] न कर बासा। तहां निशाचर करहिं निवासा
दशमुख देखि सकल सकुचाने। जे जड़ जीव सजीव पराने
इहां राम जसि जुगुति बनाई। सुनहु उमा सो कथा सुहाई

दो॰ लक्षिमण गये बनहि जब लेन मूल फल कंद
जनक सुता सन बोले बिहंसि कृपा सुखकंद

सुनहु प्रिया व्रत रुचिर सुशीला। मैं कछु करब ललित नरलीला
तुम्ह पावक महं करहु निवासा। जौ लगि करौं निशाचर नासा
जबहिं राम सब कहा बखानी। प्रभुपद हिय धरि अनल समानी
निज प्रति बिंब राखि तहं सीता। तैसिय शील रूप सुपुनीता
लक्षिमण हूं यह मरम न जाना। जो कछु चरित रचे भगवाना
दशगुख गयउ जहां मारीचा। नाइ माथ स्वारथ रत नीचा
नवनि नीच कै अति दुखदाई। जिमि अंकुस धनु उरग बिलाई
भय दायक खल कै प्रियबानी। जिमि अकाल के सुमन भवानी

दो॰ करि पूजा मारीच तब सादर पूंछी बात ॥
कवन हेत मन बिलग अति एक सर आएहु तात

दशमुख सकल कथा तेहि आगे। कही सहित अभिमान अभागे
होहु कपट मृग तुम छलकारी। जेहि बिधि हरि आनौ नृपनारी

लषण ते कहे
वाको बिस्तार
बालमीक आ
रण्यकांड में
इहां अकेली जा
नि सीय को हरी ले
चल्यो तहां उय
यू सग्राम सीता
हेतु जूझत भयो
हलक्षमण को

टी॰
रा॰ आ॰
२८

देखि प्रभु व्य
ग हो आश्रम सी
ता हीन देखि पा
कृत मर इव बि
कल है चलत
भये जटायु को
मूर्छित देखि नि
ज धाम देइ वाको
कर्म निज करते क
रि बिस्तार बिनो

तेहि पुनि कहा सुनहु दशशीशा। ते नर रूप चराचर ईशा ॥
तासों तात बयर नहिं कीजै। मारे मरिय जियाए जीजै
मुनि मख राखन गये कुमारा। बिन फर सर रघुपति मोहि मारा
शत योजन आएउं छणमाहीं। तिन्ह सन बयर किये भलनाहीं
भृकुटि कीट भृंग की नाई। जहं तहं मैं देखौं दोउ भाई
जौ नर तात तदपि अति शूरा। तिनहि बिरोध न आइहि पूरा
दो. जेहि ताडका सुबाहु हति खंडेउ हरको दंड।
खरदूषण त्रिसिरा बधेउ मनुज कि अस बर बंड
राम सर नाम सुनत दशकंधर। रहत प्राण नहिं मन अन्तर
जाहु भवन कुल कुशल बिचारी। सुनत जरा दीन्हेसि बहु गारी
गुरुजिमि मूढ करसि मम बोधा। कहु जग मोसमान कोयोधा
तव मारीच हृदय अनुमाना। नवहिं बिरोधे नहिं कल्याना
सस्त्री मर्मी प्रभु शठ धनी। बैद बंदि कवि मानस गुनी
उभय भांति देखा निज मरणा। तव ताकिसि रघुनायक शरणा
उतर देत मोहि बधब अभागे। कसन मरों रघुपति सर लागे
अस जिय जानि दशानन संगा। चला राम पद प्रेम अभंगा
मन अति हरष जनाव न तेही। आजु देखिहौं परम सनेही
छं. निज परम प्रीतम देखि लोचन सकल कीर सुख पाइहौं।
श्रीसहित अनुज समेत कृपा निकेत पद मन लाइहौं।
निर्वाण दायक क्रोध जाकर भक्ति अवसहिबस करी।
निज पानि सर संधानि सो मोहि बधिहि सुखसागर हरी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो॰ मम पाछे धर धावत धरे शरासन बान ॥

फिरि फिरि प्रभुहि बिलोकिहौं धन्य न मो सम आन

सीता लषण सहित रघुराई। जे बन बसहिं मुनिन्ह सुखदाई

तेहि बन निकट दशानन गएऊ। तब मारीच कपट मृग भयऊ

अति बिचित्र कछु बरणि न जाई। कनक देह मणि रचित बनाई

सीता परम रुचिर मृग देखा। अंग अंग सो मनोहर बेखा

सुनहु देव रघुबीर कृपाला। यहि मृग कर अति सुंदर छाला

सत्य संध प्रभु बधि करि येही। आनहु चर्म कहत बैदेही

तब रघुपति जानत सब कारन। उठे हरषि सुर काज सवारन

मृग बिलोकि कटि परि कर बांधा। करतल चाप रुचिर सर सांधा

प्रभु लक्षि मणहि कहा समुझाई। फिरत बिपिन निशिचर बहु भाई

सीता केरि करेहु रखवारी। बुधि बिबेक बल समय बिचारी

दो॰ अस कहि चल तहां प्रभु जहां कपट मृग नीच

देव हरष बिसमय बिबस जिमि चातक बर्षा बीच

प्रभुहि बिलोकि चला मृग भाजी। धाए राम सरासन साजी

निगम नेति शिव पार न पावा। माया मृग पाछे सो धावा

कबहु निकट पुनि दूरि पराई। कबहु क प्रगटै कबहु दुराई ॥

प्रगटत दुरत करत छल भूरी। यहि बिधि प्रभुहि गयउ लै दूरी

तब तकि राम कठिन शर मारा। धरनि परेउ करि घोर पुकारा

लक्षि मण को प्रथमहि लै नामा। पाछे सुमिरेसि मन महं रामा

प्राण तजत प्रगटेसि निज देही। सुमिरिसि राम सहित बैदेही

अंतर प्रेम तासु पहिचाना । मुनि दुर्लभ गति दीन्ह सुजाना

दो॰ बिपुल सुमन सुर बरषहिं गावहिं प्रभु गुण गाथ
निज पद दीन्ह असुर कहं दीन बंधु रघुनाथ ॥

खल बध तुरत फिरे रघुबीरा । सोह चाप कर कटि तूणीरा
आरत गिरा सुनी जब सीता । कह लक्षिमण सन परम सभीता
जाहु बेगि संकट अति भ्राता । लक्षिमण बिहसि कहा सुनु माता
भृकुटि बिलास सृष्टि लय होई । सपनेहुं संकट परै कि सोई
सौंपि गये मोहि रघुवर थाती । जों तजि जाउ तोष नहिं छाती
यह जिय जानि सुनहु मम भ्राता । पुछव कहव कवनि मैं बाता
मरम बचन तब सीता बोली । हार प्रेरित लक्षिमण मन डोली
चहुं दिशि रेख खचाइ अहीशा । बार बार नाएउ पद शीशा
बन दिशि देव सौंपि सब काहू । चले जहां रावण शशि राहू
चितवहिं लषण सीयहि फिरि कैसें । तजत बच्छ निज मातहिं जैसें

दो॰ यक डर डरपत राम के दूसरि सीय अकेलि
लषण तेज तन हत भये जिमि डड़िदवा सुवेलि

सून बीच दशकंधर देखा । आवा निकट येती के भेखा
जाके डर सुर असुर डेराहीं । निशि न नींद दिन अन्न न खाहीं
सो दशशीश स्वान की नाई । इत उत चितइ चला भड़िहाई
इमि कुपंथ पग देत खगेशा । रह न तेज तन बुध लवलेशा
करि अनेक बिधि छल चतुराई । मागेउ भीख दशानन जाई
अतिथ जानि सिय कंद मूल फल । देन लागि तेहि कीन्ह बहुरि छल

टी॰ रा॰ आ॰ ३२

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

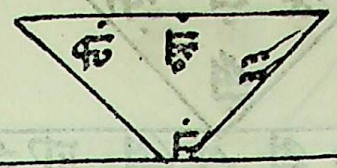

यह मूर्ति जटायू रावण से युद्ध की है

कह दशमुख सुनु सुंदरि बानी। बांधी भीख न लेउं सयानी
बिधि गति वाम काल कठिनाई। रेख नांघि सिय बाहेर आई
दो· विश्व भरनि अघ दल निकर करनि सकल सुर काज
जाना नहिं तेहि समय महं दश शिर कपट के साज
नाना विधि कहि कथा सुहाई। राजनीति भय प्रीति देखाई
कह सीता सुनु यती गोसांई। बोलेउ बचन दुष्ट की नांई ॥
तव रावण निज रूप देखावा। भई सभय जब नाम सुनावा
कह सीता धरि धीरज गाढ़ा। आइ गएउ प्रभु खल रहु ठाढ़ा
जिमि हरि बुधहि छुद्र सम चाहा। भयेसि काल बस निशिचर नाहा
सुनत वचन दशशीष लजाना। मन महं चरण वंदि सुख माना
वायस करि चह खगपति समिता। सिंधु समान होइ किमि सरिता
खर कि होइ सुर धेनु समाना। जाहि भवन निज सुनु अग्याना
दो· क्रोधवंत तव रावण लीन्हेसि रथ बैठाइ ॥
चला गगन पथ आतुर भय रथ हांकि न जाइ
हा जग देव बीर रघुराया। केहि अपराध बिसारेहु दाया
आरत हरण शरण सुखदायक। हा रघुकुल सरोज दिन नायक
हा लक्षिमण तुम्हार नहिं दोसा। सो फल पाएउं कीन्हेउं रोसा
विविधि बिलाप करत बैदेही। भूरि कृपा प्रभु दूरि सनेही ॥
विपति मोरि को प्रभुहि सुनावा। पुरो डास चह रास भ खावा
सीता कै बिलाप सुनि भारी। भये चराचर जीव दुखारी ॥
कैकेई मन जो कछु रहेऊ। सो बिधि आजु मोहिं दुख दयेऊ

टी· रा· आ· ३४

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पंचवटी के खग मृग जाती। दुखित भये जलचर बहु भांती
दो॰ बहु बिधि करत बिलाप नभ लिए जात दशशीश
दुरतन खल बल पाइ वर जो दीन्हे अज दूश
गीधराज सुनि आरत बानी। रघुकुल तिलक नारि पहिचानी
अधम निशाचर लीन्हे जाई। जनु मलेच्छ बस कपिला गाई
अहइ प्रथम तन मम बलनाहीं। तदपि जाइ करिहौं बल ताही
सीता पुनि करसि जनि त्राशा। करिहौं यातुधान कर नाशा
धावा क्रोधवंत खग कैसे। छूटै पवि पर्वत कहं जैसे॥
रे रे दुष्ट ठाढ़ किन होही। निर्भय चलेसि न जानेसि मोही
आवत देखि कृतांत समाना। फिरि दशकंधर करै अनुमाना
की मैनाक कि खगपति होई। मम बल जानि सहित पति सोई
जाना जेउर जटाइउ येहा। मम कर तीर पछाड़िहि देहा
दो॰ मम भुज बल नहिं जानत आवत तपन्ह सहाइ
समर चढ़े नो यहि हतौं जियत न निज थल जाइ
सुनत गीध क्रोधातुर धावा। कह सुनु रावण मोर सिखावा
तजि जानकिहि कुशल गृह जाहू। नाहित अस होइहि बहु बाहू
राम रोष पावक अति घोरा। होइहि सलभ सकल कुल तोरा
उतरु न देत दशानन योधा। तबहि गीध धावा करि क्रोधा
धरि कच बिरथ कीन्ह महि गिरा। सीतहि राखि गीध पुनि फिरा
दशमुख उठि रथ सर संधाना। गीध आइ काटे धनु बाना
चोचन्ह मारि बिदारेसि देही। दंड एक भइ मुर्छा तेही॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो॰ जिहि रावण निज बस किये नर मुनि सिद्ध सुरेस
तेहि रावण सन समर अति धीर बीर गिद्धेस ॥

सुरत भयो सो पुनि उठि धावा। मारै गीध न सनमुख आवा
कीन्हेसि जब बहु युद्ध खगेशा। थकित भयो तब जठर गिधेशा
तब सक्रोध निशिचर खिसियाना। काढ़ेसि परम कराल कृपाना
काटेसि पंख परा खग धरणी। सुमिरि राम कै अद्भुत करणी
सीतहि जान चढ़ाइ बहोरी। चला उताहिल त्रास न थोरी
करत बिलाप जात नभ सीता। व्याध बिवस जस मृगी सभीता
गिरि पर बैठे कपिन्ह निहारी। कहि हरि नाम दीन्ह पटडारी
एहि बिधि सीतहि लै सो गएऊ। बन अशोक महं राखत भएऊ

दो॰ हारि परा खल बहु बिधि भय अरु प्रीति देखाइ
तब अशोक पादप तर राखेसि यतन कराइ ॥

उहां बिधाता मन अनुमाना। सुरपति बोलि मंत्र अस ठाना
तात जनक तनया पहं जाहू। सुधि न पाव जिमि निशिचर नाहू
अस कहि बिधि सुंदर हबिआनी। सौंपि बहुरि बोले मृदु बानी
इहि भक्षन कृत क्षुधा न प्यासा। बरष सहस यह शंसय नासा
सो प्रसाद लै आएसु पाई। चलेउ हृदय सुमिरत रघुराई
कछु वासव माया निज मोई। रक्षक रहे गये तहं सोई ॥
तदपि डरत सीता पहं आएउ। करि प्रणाम निज नाम सुनाएउ
निश्चै जान सुरेस सुजाना। पिता जनक दशरथ सम जाना
करि परितोष दूरि करि शोका। हव्य खवाइ गयेउ निज लोका

टी॰ ए॰ आ॰ ३६

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो॰ जेहि विधि कपट कुरंग संग धाइ चले श्रीराम
सो छवि सीता राखि उर रटत रहत हरि नाम

रघुपति अनुजहि आवत देखी। मन महं चिंता कीन्ह विशेखी
जनक सुता परि हरेउ अकेली। आएउ तातबचन मम पेली
निशिचर निकर फिरहिं बनमाहीं। मम मन सीता आश्रम नाहीं
अहह तात कीन्हेउ भल नाहीं। सीय बिना मम जीवन नाहीं
यहि ते कवनि विपति बड़ि भाई। खोएउ सीय काननहि आई
गहि पद कमल अनुज कर जोरी। कहेउ नाथ कछु मोहि न खोरी
अनुज समेत गये प्रभु तहवां। गोदावरि तट आश्रम जहवां
आश्रम देखि जानकी हीना। भये बिकल जस प्राकृत दीना

दो॰ कानन रहेउ नड़ाग दुइ चक चकई सिय राम
रावन निशि बिछुरत भयउ दुख दिते चारिजाम

पर दुख हरण शोक दुख नाही। आ बिखाद तिनहू मन माही
हा गुण खानि जानकी सीता। रूप शील व्रत नेम पुनीता॥
लक्षिमण समुझाये बहु भांती। पूछत चले लता तरु पाती॥
हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी। तुम देखी सीता मृग नैनी॥
खंजन सुक कपोत मृग मीना। मधुप निकर कोकिला प्रवीना
कुंदकली दाड़िम दामिनी। कमल शरद शशि अहिभामिनी
वरुण पास मनोज जनुहंसा। गजकेहरि निज सुनत प्रशंसा
श्रीफल कनक कदलि हरषाहीं। नेकु न शंक सकुच मन माहीं
सुनु जानकी तोहि बिनु आजू। हरषे सकल पाइ जनु राजू

रा॰ दी॰ मा॰ ५७

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

किमि सहि जात अनख तोहि पाहीं। प्रिया बेग प्रगटसि कस नाहीं
दो॰ फणि मणि हीन मीन जनु त्यागे शीतल वारि
तिमि व्याकुल भये लषण तहं रघुवर दशा निहारि ६५
धरि उर धीर बुझावहि रामहि। तजहिं न शोच अधिक सुख धामहि
इहि विधि खोजत बिलपत स्वामी। मनहु महा विरही अति कामी
पूरण काम राम सुख रासी। मनुज चरित कर अज अविनाशी
सरवर अमित नदी गिरि खोहा। बहु विधि लषण राम तहं जोहा
शोच हृदय कछु कहि नहिं आवा। टूट धनुष सर आगे पावा
कहुं कहुं शोणित देखिय कैसे। सावन रज भादों जल जैसे
कहत राम लक्षिमणहि बुझाई। काहू कीन्ह युद्ध यहि ठाई
आगे परा गीधपति देखा। सुमिरत राम चरण की रेखा
दो॰ कर सरोज शिर परसेउ कृपासिंधु रघुबीर
निरखि राम छबि धाम मुख बिगत भई सब पीर
तब कह गीध बचन धरि धीरा। सुनहु राम भंजन भव भीरा
नाथ दशानन यह गति कीन्ही। तेहि खल जनक सुता हरि लीन्ही
लै दक्षिण दिशि गयउ गोसांई। बिलपति अति कुररी की नांई
दरश लागि प्रभु राखेउं प्राना। चलन चहत अब कृपा निधाना
राम कहा तनु राखउ ताता। मुख मुसकाइ कही तेहि बाता
जा कर नाम मरत मुख आवा। अधमो मुकुति होइ श्रुति गावा
सो मम लोचन गोचर आगे। राखौं देह नाथ केहि खागे
जल भरि नयन कहहि रघुराई। तात कर्म निज ते गति पाई

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

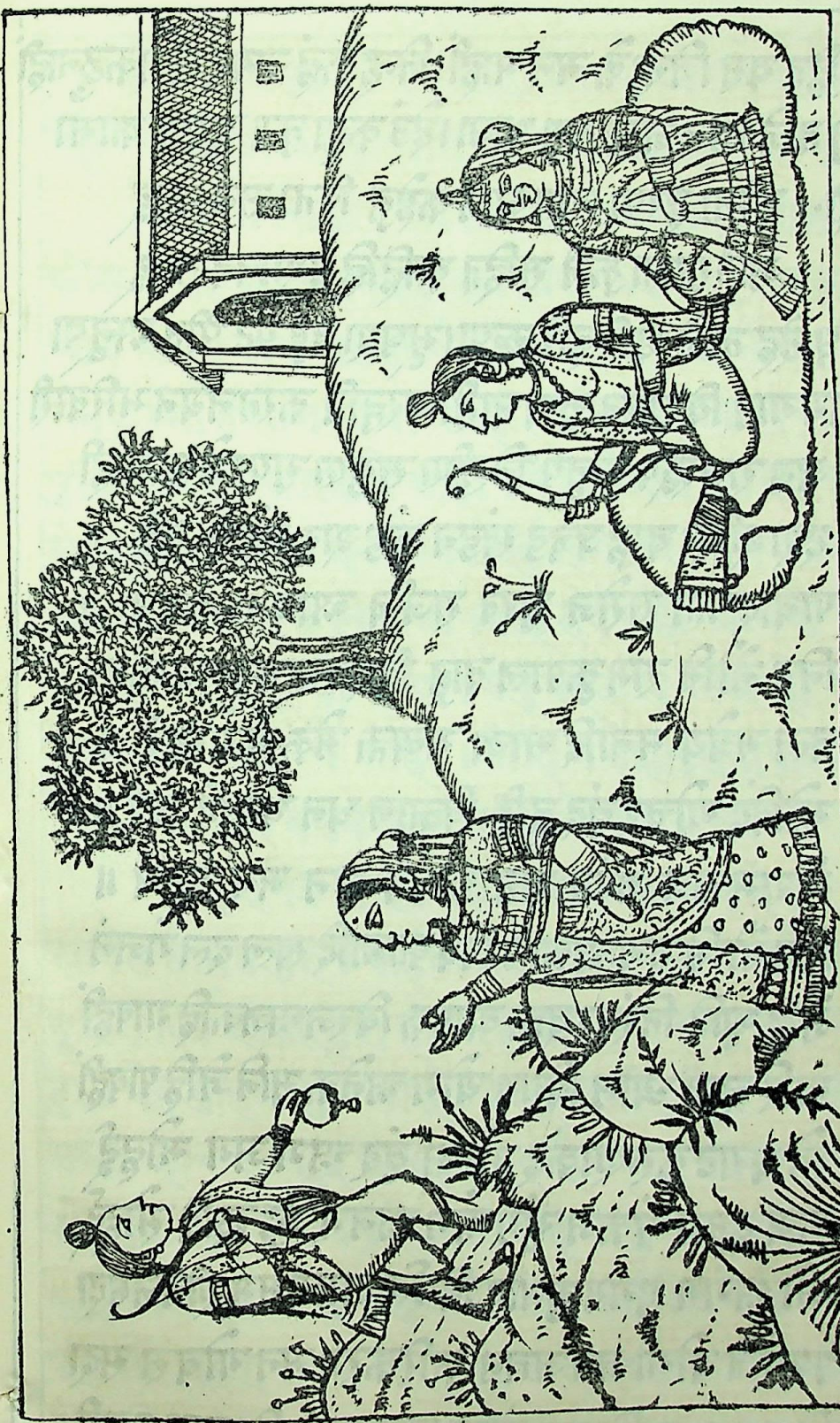

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परहित बस जिन्ह के मन माहीं। तिन्ह कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं
तनु तजि तात जाहु मम धामा। देउं काह तुम पूरन कामा
दो॰ सीता हरण तात जनि कहेहु पिता सन जाइ
जौं मैं राम त कुल सहित कहिहि दसानन आइ
गीध देह तजि धरि हरि रूपा। भूषन बहु पट पीत अनूपा
स्यामगात बिसाल भुज चारी। अस्तुति करत नयन भरि बारी
छं॰ जय राम रूप अनूप निर्गुण सगुण गुन प्रेरक सही
दससीस बाहु प्रचंड खंडन चंड सर मंडन मही ॥
पाथोदगात सरोज मुख राजीव आयत लोचनं ॥
नित नौमि राम कृपाल बाहु बिसाल भव भय मोचनं
बल मप्रमेय मनादि माया मयुक्त मेक मतर्क्य गोचरं ॥
गोबिंद गोचर द्वंद हरि बिज्ञान घन धरणी धरं ॥
जे राम मंत्र जपंत संत अनंत जन मन रंजनं ॥
नित नौमि राम अकाम प्रिय कामादि खल दल गंजनं
जेहि श्रुति निरंतर ब्रह्म व्यापक बिरज अजकहि गावहीं
करि ज्ञान ध्यान बिराग जोग अनेक मुनि जेहि पावहीं
सो प्रगट करुणाकंद सोभा बृंद अग जग मोहई
मम हृदय पंकज भृंग अंग अनंग बहु छबि सोहई
जो अगम सुगम सुभाव निर्मल असम सम सीतल सदा
पस्यंति योगी जतन करि करत मन गो बस सदा
सो राम रमा निवास संतत दास बस त्रिभुवन धनी

टी॰ ए॰ आ॰ ४०

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मम उर बसउ सो मन संसृति जासु कीरति पावनी

दो॰ अविरल भक्ति मागि बर गीध गएउ हरि धाम
तेहि की क्रिया यथोचित निज कर कीन्ही राम

कोमल चित अति दीन दयाला। कारण बिन रघुनाथ कृपाला
गीध अधम खग आमिष भोगी। गति दीन्ही जो जाचत योगी
मनहु उमा ते लोग अभागी। हरि तजि होहिं बिषय अनुरागी
पुनि सीतहि खोजत द्वौ भाई। चले बिलोकत बन बहु ताई
संकुल लता बिटप घन कानन। बहु खग मृग तहं गज पंचानन
आवत पंथ कबंध निपाता। तेहि सब कही आयकै बाता
दुर्बासा मोहि दीन्ही श्रापा। प्रभु पद देखि मिटा सो पापा
सुन गंधर्व कहौं मैं तोही। मोहि न सोहाइ ब्रह्म कुल द्रोही

दो॰ मनक्रम बचन कपट तजि जो कर भूसुर सेव
मोहि समेत बिरंचि शिव बस ताके सब देव

स्रापत ताड़त पुरुष कहंता। विप्र पूज्य अस गावहिं संता
पूजिय विप्र शील गुण हीना। शूद्र न गुण गण ज्ञान प्रवीना
दुष्टौ धेनु दुहिय सुन भाई। साधू रस्नी दुहिय न साई॥
बयन ज्ञान रत शूद्र कपाली। गहहि न तासु बचन मन साली
जो जुठा रह बिष्वान की कागा। तेहि पर बुधन करहि अनुरागा
कहि निज धर्म ताहि समुझावा। निज पद प्रीति देखि मन भावा
रघुपति चरण कमल शिर नाई। गएउ गगन आपनि गति पाई
[illegible]हि देइ गति राम उदारा। सेवरी के आश्रम पग धारा॥

टी॰
रा॰ आ॰
४१

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शबरी देखि राम गृह आये । मुनि के बचन समुझि जिय भाये
सरसिज लोचन बाहु बिशाला । जटा मुकुट शिर उर बन माला
श्याम गौर सुंदर दोउ भाई । शबरी परी चरण लपटाई ॥
प्रेम मगन मुख बचन न आवा । पुनि पुनि पद सरोज शिर नावा
सादर जल लै चरण पखारे । पुनि सुंदर आसन बैठारे ॥
दो॰ कंदमूल फल सरस अति दिये राम कहं आनि
प्रेम सहित प्रभु खाये बारहिबार बखानि ॥
पाणि जोरि आगे भइ ठाढ़ी । प्रभुहि बिलोकि प्रीति अति बाढ़ी
केहि बिधि अस्तुति करौं तुम्हारी । अधम जाति मैं जड़मति भारी
अधम ते अधम अधम अति नारी । तिनमहं मैं अति मंद गंवारी
कह रघुपति सुनु भामिनि बाता । मानौ एक भक्ति कर नाता
जाति पांति कुल धर्म बड़ाई । धनबल परिजन गुण चतुराई
भक्ति हीन नर सोहत कैसा । बिन जल बारिद देखिय जैसा
नवधा भक्ति कहौं तोहि पाहीं । सावधान सुनु धरु मन माहीं
प्रथम भक्ति संतन कर संगा । दूसरि रत मम कथा प्रसंगा
दो॰ गुरुपद पंकज सेवा तीसरि भक्ति अमान ॥
चौथि भक्ति मम गुण गण करइ कपट तजि गान
मंत्र जाप मम दृढ़ बिस्वासा । पंचम भजन सो बेद प्रकासा
छठ दम सील बिरति बहु कर्मा । निरत निरंतर सज्जन धर्मा
सातव सम मोहि मय जग देखा । मोते संत अधिक कर लेखा
आठव यथालाभ संतोषा । सपनेहु नहिं देखै पर दोषा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नवम सरल सब सन छल हीना। मम भरोस हिय हरषन दीना
नवमहं एकउ जिन्ह के होई। नारि पुरुष सचराचर कोई॥
सोइ अतिशय भामिनि प्रिय मोरे। सकल प्रकार भक्ति दृढ़ तोरे
योगि बृंद दुर्लभ गति जोई। तो कहं आजु सुलभ सब सोई
मम दरशन फल परम अनूपा। जीव पाव निज सहज सरूपा

दो॰ सब प्रकार तव भाग बड़ मम चरणन अनुराग
तव महिमा जेहि उर बसै तासु परम बड़ भाग।

बचन सुनत शबरी हरषानी। अति अनुराग गहे पद पानी॥
सुनि प्रभु बचन हरष कहं पाई। पुनि बोले प्रभु गिरा सुहाई॥
जनक सुता कै सुधि भामिनी। जानहि कहं करिबर गामिनी
पंपासरहि जाहु रघुराई। मुनिवर बिपुल रहे तहं छाई
ऋषि मतंग महिमा गुणभारी। जीवचराचर रहत सुखारी
बैरन कर काहू सन कोई। जासन बैर प्रीति करै सोई
सिखर सुहावन कानन फूले। खग मृग जीवजंतु अनुकूले
कहु सुफल श्रम सबकर जाई। तहं होइहि सुग्रीव मिताई।
सो सब कहिहि देव रघुबीरा। जानत हू पूछहु मति धीरा॥
बार बार प्रभु पद शिर नाई। प्रेम सहित सब कथा सुनाई

छं॰ कहि कथा सकल बिलोकि हरि मुखहृदय पद पंकज धरे
तजि योग पावक देह हरि पद लीन भे जहं नहिं फिरे
नर बिबिध कर्म अधर्म बहु मत शोक प्रद सबत्यागहू
बिश्वास करि कह दास तुलसी राम पद अनुरागहू।

आरण्य चौपाई दोहा छंद सोरठा की टीका

श्लोक	चौपाई	छंद	सोरठा	दोहा
२	६६१	९५	६	२६

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो॰ जाति हीन अघ जन्म महि मुक्त कीन्हि असि नारि
महामंद मन सुख चहसि ऐसे प्रभुहि बिसारि ॥
चले राम त्यागा बन सोऊ। अतुलित बल नर केहरि दोऊ
बिरही इव प्रभु करत बिषादा। कहत कथा अनेक संबादा ॥
लछिमण देखु बिपिन कै शोभा। देखत केहि कर मन नहिं क्षोभा
नारि सहित सब खग मृग बृंदा। मानहु मोरि करत हहिं निंदा
हमहिं देख मृग निकर पराहीं। मृगी कहहिं तुम कहं भयनाहीं
तुम आनंद करहु मृग जाए। कंचन मृग खोजन ए आए
संग लाइ करनी करि लेहीं। मानहुं मोहिं सिखावनु देहीं
शास्त्र सुचिंतत पुनि पुनि देखिय। भूप सुसेवित बस नहि लेखिय
राखिय नारि जदपि उर माहीं। युवती शास्त्र नृपति बस नाहीं
देखहु तात बसंत सुहावा। प्रिया हीन मोहिं भय उपजावा
दो॰ बिरह बिकल बलहीन मोहिं जानेसि निपट अकेल
सहित बिपिन मधुकर खगन मदन कीन्ह बग मेल
देखि गएउ भ्राता सहित तासु दूत सुनि बात ॥
डेरा कीन्हे मनहुं तब कटकु हटकि नहिं जात
बिटप बिशाल लता उरझानी। बिबिध बितान दिये जनु तानी
कदलि ताल बर धजा पताका। देखि न मोहि धीर मन जाका
बिबिध भांति फूले तरु नाना। जनु बानैत बने बहु बाना
कहुं कहुं सुंदर बिटप सुहाये। जनु भट बिलग बिलग होइ छाये
कूजत पिक मानहुं गज माते। ढेक महोख ऊंट बिसराते

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मोर चकोर कीर बर बाजी। पारावत मराल सब ताजी
तीतर लावक पद चर यूथा। बरणि न जाइ मनोज बरूथा
रथ गिरि शिला दुंदुभी झरना। चातक बंदी गुण गन बरना
मधुकर मुखर भेरि सहनाई। त्रिविध बयारि बसीठी आई
चतुरंगिनी सेन संग लीन्हे। बिचरति सबहि चुनौती दीन्हे
लछिमण देखत काम अनीकहि। रहहिं धीर तिन्ह कै जग लीका
एहि के एक परम बल नारी। तेहि तें उबर सुभट सोइ भारी
दो॰ तात तीन अति प्रबल खल काम क्रोध अरु लोभ
मुनि बिग्यान धाम मन करहिं निमिष महं छोभ
लोभ के इच्छा दंभ बल काम के केवल नारि
क्रोध के परुष बचन बल मुनिबर करहिं बिचारि।
गुनातीत सचराचर स्वामी। राम उमा सब अंतर जामी।
कामिन कै दीनता दिखाई। धीरन्ह के मन बिरति दृढ़ाई।
क्रोध मनोज लोभ मद माया। छूटहिं सकल राम की दाया
सो नर इंद्रजाल नहिं भूला। जापर होइ सो नट अनुकूला
उमा कहौं मैं अनुभव अपना। सत हरि भजनु जगत सब सपना
पुनि प्रभु गए सरोवर तीरा। पंपा नाम सुभग गंभीरा
संत हृदय जस निर्मल बारी। बांधे घाट मनोहर चारी॥
जहं तहं पियहिं बिबिध मृग नीरा। जनु उदार गृह जाचक भीरा
दो॰ पुरइनि सघन ओट जल बेगि न पाइय मर्म
माया छन्न न देखिये जैसे निर्गुण ब्रह्म

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो॰ सुखी मीन सब एक रस अति अगाध जल माहिं
यथा धर्म शीलन्ह के दिन सुख संयुत जाहिं

बिकसे सरसिज नाना रंगा। मधुर मुखर गुंजत बहु भृंगा
बोलत जल कुक्कुट कल हंसा। प्रभु बिलोकि जनु करत प्रसंसा
चक्र बाक बक खग समुदाई। देखत बनइ बरणि नहिं जाई
सुंदर खग गण गिरा सुहाई। जात पथिक जनु लेत बुलाई
ताल समीप मुनिन्ह गृह छाये। चहुं दिशि कानन बिटप सुहाये
चंपक बकुल कदंब तमाला। पाटल पनस परास रसाला
नव पल्लव कुसुमित तरु नाना। चंचरीक पटली कर गाना
शीतल मंद सुगंध सुभाऊ। संतत बहै मनोहर बाऊ॥

दो॰ ए॰ श्रा॰ ४६

कुहू कुहू कोकिल धुनि करहीं। सुनि रव सरस ध्यान मुनि टरहीं

दो॰ फल भर नम्र बिटप सब रहे भूमि निय राइ
परउपकारी पुरुष जिमि नवहिं सुसंपति पाइ

देखि राम अति रुचिर तलावा। मज्जन कीन्ह परम सुख पावा
देखि सुंदर तरु बर छाया। बैठे अनुज सहित रघुराया
तहं पुनि सकल देव मुनि आए। अस्तुति करि निज धाम सिधाए
बैठे परम प्रसन्न कृपाला। कहत अनुज सन कथा रसाला
बिरह बंत भगवंतहि देखी। नारद मन भा शोच बिशेखी
मोर शाप करि अंगी कारा। सहत राम नाना दुख भारा
ऐसे प्रभुहिं बिलोकों जाई। पुनि न बनिहि अस अवसर आई
यह बिचार नारद कर बीना। गये जहां प्रभु सुख आसीना

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गावत राम चरित मृदु बानी। प्रेम सहित बहु भांति बखानी
करत दंडवत लिये उठाई । राखे बहुत बार उर लाई ॥
स्वागत पूंछि निकट बैठारे। लक्ष्मण सादर चरण पखारे

दो॰ नाना बिधि बिनती करि प्रभु प्रसन्न जियजानि
नारद बोले बचन तब जोरि सरोरुह पानि ॥

सुनहु उदार परम रघुनायक। सुंदर अगम सुगम बरदायक
देहु एक बर मांगो स्वामी। यद्यपि जानत अंतर जामी
जानहु मुनि तुम्ह मोर सुभाऊ। जन सन कबहुं कि करौं दुराऊ
कवन बस्तु अस प्रिय मोहिं लागी। जो मुनिबर न सकहु तुम मांगी
जनकहु कछु अदेय नहिं मोरे। अस विश्वास तजहु जनि भोरे
तब नारद बोले हरषाई । असबर मांगौं करौं ढिठाई ।
यद्यपि प्रभु के नाम अनेका। श्रुति कहं अधिक एक ते एका
राम सकल नामन ते अधिका। होउ नाथ अघ खग गण बधिका

दो॰ राका रजनी भक्ति तब राम नाम सोइ सोम
अपर नाम उडु गण बिमल बसहु भक्ति उर व्योम
एवमस्तु मुनि सन कह्यौ कृपासिंधु रघुनाथ
तब नारद मन हरषि अति प्रभु पद नाएउ माथ

अति प्रसन्न रघुनाथहि जानी। पुनि नारद बोले मृदु बानी
राम जबहि प्रेरेहु निज माया। मोहेहु मोहिं सुनहु रघुराया
तब विवाह मैं चाहउं कीन्हा। प्रभु केहि कारण करै न दीन्हा
सुनि मुनि तोहिं कहौं सहरोसा। भजहिं जे मोहिं तजि सकल भ

टी॰
रा॰ आ॰
४७

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करौं सदा तिन्ह कै रखवारी। जिमि बालकहि राख महतारी
गहि शिशु बच्छ अनल अहिधाई। तहं राखै जननी अरुगाई
प्रौढ़ भए तेहि सुत पर माता। प्रीति करै नहिं पाछिल बाता
मोरे प्रौढ़ तनय सम ज्ञानी। बालक सुत सम दास अमानी
जनहिं मोर बल निजबल ताही। दुहुं कह काम क्रोध रिपु आही
यह बिचार पंडित मोहिं भजहीं। पायेहु ज्ञान भक्ति नहिं तजहीं

दो॰ काम क्रोध लोभादि मद प्रबल मोह कै धारि
तिन्ह महं अति दारुण दुखद माया रूपी नारि

सुनु मुनि कह पुराण श्रुति संता। मोह बिपिन कहं नारि बसंता
जप तप नेम जलाश्रय झारी। होइ ग्रीष्म सोखै सब नारी
काम क्रोध मद मत्सर भेका। इन्हहि हरष प्रद बरषा एका
दुर्बासना कुमुद समुदाई। तिन्ह कह सरद सदा सुखदाई
धर्म सकल सरसीरुह बृंदा। होइ हिम तिन्हैं दहै सुख मंदा
पुनि ममता जवास बहुताई। पलुहइ नारि शिशिर रितु पाई
पाप उलूक निकर सुखकारी। नारि निबिड रजनी अंधियारी
बुधि बल शील सत्य सब मीना। बनसी सम त्रिय कहहिं प्रबीना

दो॰ अवगुण मूल शूल प्रद प्रमदा सब दुख खानि
तातें कीन्ह निवारण मुनि मैं यह जिय जानि

सुनि रघुपति के बचन सुहाए। सुनि तन पुलक नयन भरि आए
कहहु कवन प्रभु कै अस रीती। सेवक पर ममता अरु प्रीती
जे न भजहिं अस प्रभु भ्रम त्यागी। ज्ञान रंक नर मंद अभागी

टी॰ रा॰ आ॰ ४८

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुनि सादर बोले मुनि नारद। सुनहु राम विज्ञान विशारद
संतन के लक्षण रघुबीरा। कहहु नाथ भव भंजन भीरा
सुनि मुनि संतन के गुण गाऊं। जिन्ह तें मैं उनके बस रहऊं
षट बिकार जित अनघ अकामा। अचल अकिंचन सुचि सुखधामा
अमित बोध अनीह मित भोगी। सत्य सार कवि कोविद योगी
सावधान मानद मद हीना। धीर धर्म गति परम प्रवीना
दो॰ गुणागार संसार दुख रहित बिगत संदेह
तजि मम चरण सरोज प्रिय तिन्ह कहुं देह न गेह
निज गुण श्रवण सुनत सकुचाहीं। परगुण सुनत अधिक हरषाहीं
सम शीतल नहिं त्यागहिं नीती। सरल सुभाउ सबहि सन प्रीती
जप तप व्रत दम संयम नेमा। गुरु गोविंद बिप्र पद प्रेमा॥
श्रद्धा क्षमा मयत्री दाया। मुदिता मम पद प्रीति अमाया
बिरति विवेक बिनै बिज्ञाना। बोध यथारथ बेद पुराना
दंभ मान मद करहिं न काऊ। भूलि न देहिं कुमारग पाऊ
गावहिं सुनहिं सदा मम लीला। हेतु रहित परहित रत शीला
सुनि सुभ साधन के गुण जेते। कहि न सकैं सादर श्रुति तेते
छं॰ कहि सक न शारद शेष नारद सुनत पद पंकज गहे
अस दीनबंधु कृपाल अपने भक्त गुण निज मुख कहे
शिर नाइ बारहिं बार चरणन्हि ब्रह्म पुर नारद गए
ते धन्य तुलसीदास आस बिहाइ जे हरि रंग रए
दो॰ रावणारि यश पावन गावहिं सुनहिं जो लोग

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राम भक्ति दृढ़ पावहिं बिनु बिराग जप योग ।
दीप शिखा सम युवति तन मनजनि होसि पतंग
भजहिं राम तजि काम मद करहिं सदा सत संग
इति श्री राम चरित मानसे सकल कलि कलुष विध्वं-
सने विमल वैराग्य संपादनो नाम तृतीयः सोपानः
हस्ताक्षर हर मोहन दास

टी.
ए. आ.
५०

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यह मूर्त्ति वाराह अवतार की

अथ किष्किन्धाकाण्ड ४

श्रीगणेशाय नमः श्लोकः कुन्देन्दी बर सुंदरावतिवलौ वि
ज्ञान धामावुभौ शोभाढ्यौ बर धन्विनौ श्रुति नुतौ गोवि
प्र वृंदप्रियौ माया मानुष रूपिणौ रघुवरौ सद्धर्मवन्तौ हितौ सी
तान्वेषण तत्परौ पथि गतौ भक्तिप्रदौ तौहिनः २ ब्रह्माभोषिस
मुद्भवं कलि मलप्रध्वसन चाव्ययं श्रीभच्छम्भुमुखेन्दु सुंदरवरेस
शोभितं सर्वदा संसारामय भेषजं सुमधुरं श्रीजानकी जीवनम्

धन्यास्ते कृतिनः पिबंति सततं श्रीराम नामामृतं ॥२॥

सो. सुनि जन्म महि जानि ज्ञान खानि अघहानिकर
जहं बस संभु भवानि सो कासी सेइय कस न
जरत सकल सुरवृंद बिषम गरल जेहिं पान किय
तेहि न भजसि मन मंद को कृपाल संकर सरिस

आगे चले बहुरि रघुराया । ऋष्यमूक पर्वत नियराया ॥
तहं रह सचिव सहित सुग्रीवा । आवत देखि अतुलबल सींवा
अति सभीत कह सुन हनुमाना । पुरुष युगल बन रूप निधाना
धरि बटु रूप देखु तैं जाई । कहेसु जानाय जिय सैन बुझाई
पठये बालि होहि मन मैला । भागौं तुरत तजौं यह सैला
बिप्र रूप धरि कपि तहं गएऊ । माथ नाइ पूछत अस भएऊ
को तुम स्यामल गौर सरीरा । छत्री रूप फिरहु बन बीरा ॥
कठिन भूमि कोमल पद गामी । कवन हेतु बिचरहु बन स्वामी
मृदुल मनोहर सुंदर गाता । सहत दुसह बन आतप बाता
की तुम तीन देव महं कोऊ । नर नारायण की तुम दोऊ

दो. जग कारण तारण भव भंजन धरणी भार ॥
की तुम अखिल भुवन पति लीन्ह मनुज अवतार

कोसलेस दसरथ के जाए । हम पितु बचन मानि बन आए
नाम राम लछमण दोउ भाई । संग नारि सुकुमारि सुहाई
इहां हरी निसिचर बैदेही । बिप्र फिरहिं हम खोजत तेही
आपन चरित कहा हम गाई । कहहु बिप्र निज कथा बुझाई

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रभु पहिचान परेउ गहि चरणा। सो सुख उमा जाइ नहिं बरणा
पुलकित तनु मुख आव न बचना। देखत रुचिर बेष कै रचना
पुनि धीरजधरि अस्तुति कीन्हा। हरष हृदय निज नाथहि चीन्हा
मोर न्याय मैं पूछा साईं। तुम पूछहु कस नर की नाईं।
तव माया बस फिरौं भुलाना। ताते मैं नहिं प्रभु पहिचाना
दो. एक मंद मैं मोह बस कुटिल हृदय अज्ञान
पुनि प्रभु मोहि बिसारेउ दीनबंधु भगवान
यद्यपि नाथ बहु औगुण मोरे। सेवक प्रभुहि परै नहिं भोरे
नाथ जीव तव माया मोहा। सो निस्तरै तुम्हारेहि छोहा।
तापर मैं रघुबीर दोहाई। जानौं नहिं कछु भजन उपाई
सेवक सुत पितु मातु भरोसे। रहै अशोच बनै प्रभु पोसे॥
अस कहि परेउ चरण अकुलाई। निज तन प्रगट प्रीति उरछाई
तब रघुपति उठाय उर लावा। निज लोचन जल सींच जुड़ावा
सुनु कपि जिय मानसि जनि ऊना। तैं मम प्रिय लछिमण ते दूना
समदरशी मोहि कह सब कोऊ। सेवक प्रिय अनन्य गति सोऊ
दो. सो अनन्य जाके असि मति न टरै हनुमंत
मैं सेवक सचराचर रूप राशि भगवंत॥
देखि पवन सुत पति अनुकूला। हृदय हर्ष बीती सब शूला
नाथ शैल पर कपिपति रहई। सो सुग्रीव दास तव अहई
तेहि सन नाथ मयत्री कीजै। दीन जानि तेहि अभय करीजै
सो सीता कर खोज कराइहि। जहं तहं मरकट कोटि पठाइहि

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एहि बिधि सकल कथा समुझाई। लिये दुऔ जन पीठ चढ़ाई
जब सुग्रीव राम कहं देखा। अति सय जन्म सुफल करि लेखा
सादर मिलेउ नाइ पद माथा। भेंटेउ अनुज सहित रघुनाथा
कपि कर मन बिचार यह नीती। करिहहिं बिधि मोरन ये प्रीती

दो॰ तब हनुमंत उभय दिसि की सब कथा समुझाइ
पावक साखी देइ करि जोरी प्रीति दृढ़ाइ॥

कीन्ह प्रीति कछु बीच न राखा। लछमन राम चरित सब भाखा
कह सुग्रीव नयन भरि बारी। मिलिहि नाथ मिथिलेसकुमारी
मंत्रिन्ह सहित इहां इक बारा। बैठ रहेउं मैं करत बिचारा
गगन पंथ देखी मैं जाता। परबस परी बहुत बिलखाता
राम राम हा राम पुकारी। हमहिं देखि दीन्हेउ पट डारी
मांग राम तुरत तेहि दीन्हा। पट उर लाइ सोच अति कीन्हा
कह सुग्रीव सुनहु रघुबीरा। तजहु सोच मन आनहु धीरा
सब प्रकार करिहौं सेवकाई। जेहि बिधि मिलहिं जानकी आई

दो॰ सखा बचन सुन हरषे कृपासिंधु बल सीव
कारन कवन बसहु बन मोहि कहहु सुग्रीव

नाथ बालि अरु मैं दोउ भाई। प्रीति रही कछु बरनि न जाई
मय सुत मायावी तेहि नाऊं। आवा सो प्रभु हमरे गाऊं॥
अर्द्ध रात पुर द्वार पुकारा। बाली रिपु बल सहै न पारा
धावा बालि देखि सो भागा। मैं पुनि गयउं बंधु संग लागा
गिरिबर गुहा पैठ सो जाई। तब बाली मोहि कहा बुझाई

परवेसु मोहिं एक परवारा। नहिं आवउं तव जानेहु मारा
मास दिवस तहं रहेउं खरारी। निसरी रुधिर धार तहं भारी
बालि हतेसि मोहिं मारि हिआई। सिला देइ तहं चलेउं पराई
मंत्रिन्ह पुर देखा बिन साईं। दीन्हेउ राजु मोहिं बरिआईं
बाली ताहि मारि गृह आवा। दीन्हि मोहिं सिय भेद बढ़ावा
रिपु सम मोहिं मारेसि अति भारी। हरी लीन्हेसि सर्बसु अरु नारी
ताके भय रघुबीर कृपाला। सकल भुवन मैं फिरेउं बिहाला
इहां आएं बस आवत नाहीं। तदपि सभीत रहौं मन माहीं
सुन सेवक दुख दीन दयाला। फरकि उठी दोउ भुजा बिसाला

दो॰ सुन सुग्रीव अब मारिहौं बालिहि एकहि बाण
ब्रह्म रुद्र सरणागतहु गये न उबरहिं प्राण

जेन मित्र दुख होहिं दुखारी। तिनहिं बिलोकत पातक भारी
निज दुख गिरि सम रज करि जाना। मित्र के दुख रज मेरु समाना
जिन्ह के असमति सहज न आई। ते सठ हठ कत करत मिताई
कुपथ निवारि सुपंथ चलावा। गुण प्रगटै अवगुण हि दुरावा
देत लेत मन शंक न धरई। बल अनुमान सदा हित करई
बिपति काल कर शत गुण नेहा। श्रुति कह संत मित्र गुण एहा
आगे कह मृदु बचन बनाई। पाछे अनहित मन कुटिलाई
जाकर चित अहिगत सम भाई। अस कुमित्र परिहरेहि भलाई
सेवक शठ नृप कृपण कुनारी। कपटी मित्र शूल सम चारी
सखा शोच त्यागहु बल मोरे। सब विधि घटब काज मैं तोरे

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कह सुग्रीव सुनहु रघुबीरा। बालि महाबल अति रणधीरा
दुंदुभि अस्थि ताल देखराए। बिनु प्रयास रघुनाथ ढहाए
देखि अमित बल बाढ़ी प्रीती। बालि बधन कर भै परतीती
बार बार नावइ पद शीशा। प्रभुहि जान मन हर्ष कपीशा
उपजा ज्ञान बचन तब बोला। नाथ कृपा मन भएउ अडोला
सुख संपति परिवार बड़ाई। सब परिहर करिहौं सेवकाई
ए सब राम भक्ति के बाधक। कहहिं संत तव पद आराधक
शत्रु मित्र दुख सुख जग माहीं। मायाकृत परमारथ नाहीं
बालि परम हित जासु प्रसादा। मिलेउ राम तुम समन बिषादा
सपने जेहि सिर होइ लराई। जागे समुझत मन सकुचाई
अब प्रभु कृपा करहु एहि भांती। सब तजि भजन करौं दिन राती
सुनि बिराग संयुत कपि बाणी। बोले बिहंसि राम धनु पाणी
जो कछु कहेउ सत्य सब सोई। सखा बचन मम मृषा न होई
नट मर्कट इव सबहिं नचावत। राम खगेश बेद अस गावत
लै सुग्रीव संग रघुनाथा। चले चाप शायक गहि हाथा
तब रघुपति सुग्रीव पठावा। गर्जेसि जाइ निकट बल पावा
सुनत बालि क्रोधातुर धावा। गहि कर चरण नारि समुझावा
सुनपति जिन्हहिं मिलेउ सुग्रीवा। ते दोउ बंधु तेज बल सींवा
कोशलेश सुत लक्ष्मण रामा। कालहु जीति सकै संग्रामा

दो॰ कहा बालि सुनु भीरु प्रिय समदरशी रघुनाथ
जो कदापि मोहिं मारहैं तो पुनि होउ सनाथ

दो॰ का॰ कि॰ ६

अस कहि चला महा अभिमानी। तृण समान सुग्रीवहि जानी
भिरेउभौ बाली अति तर्जा। मुष्टिक मारि महा धुनि गर्जा
तब सुग्रीव बिकल ह्वै भागा। मुष्टि प्रहार बज्र सम लागा
मैं जो कहा रघुबीर कृपाला। बंधु न होइ मोर यह काला
एक रूप तुम भ्राता दोऊ। तेहि भ्रम ते नहिं मारेउं सोऊ
कर परसा सुग्रीव सरीरा। तनभा कुलिस गई सब पीरा
मेली कंठ सुमन कै माला। पठवा पुनि बल देइ बिसाला
पुनि नाना बिधि भई लराई। बिटप ओट देखहिं रघुराई॥

दो॰ बहु छल बल सुग्रीव कर हिय हारा भय मानि
मारा बाली राम तब हृदय माझ सर तानि॥

दी॰ ए॰ कि॰ ७

परा बिकल महि सर के लागे। पुनि उठि बैठ देखि प्रभु आगे
श्याम गात सिर जटा बनाए। अरुण नयन सर चाप चढ़ाए
पुनि पुनि चितै चरण चित दीन्हा। सुफल जन्म जानाप्रभु चीन्हा
हृदय प्रीति मुख बचन कठोरा। बोला चितै राम की ओरा॥
धर्म हेतु अवतरेउ गोसांई। मारेहु मोहि ब्याध की नांई
मैं बैरी सुग्रीव पियारा। अवगुण कवन नाथ मोहि मारा
अनुज बधू भगिनी सुत नारी। सुन सठ एकन्या सम चारी
इन्हहिं कुदृष्टि बिलोकै जोई। ताहि बधे कछु पाप न होई
मूढ़ तोहि अतिशय अभिमाना। नारि सिखावन करसि न काना
मम भुज बल आश्रित तेहि जानी। मारा चहसि अधम अभिमानी
दो॰ सुनहु राम स्वामी सुगम चलन चातुरी मोरि

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रभु अजहूं मैं पातकी अंतकाल गति मोरि
सुनत राम अति कोमल बानी। बालि सीस परसा निज पानी
अचल करौं तनु राखहु प्राना। बालि कहा सुनु कृपा निधाना
जन्म जन्म मुनि जतन करहीं। अंत राम कहि आवत नाहीं
जासु नाम बल संकर काशी। देत सबहिं सम गति अविनाशी
मम लोचन गोचर सोइ आवा। बहुरि कि प्रभु अस बनहिं बनावा
छं॰ सो नयन गोचर जासु गुण नित नेति कहि श्रुति गावहीं
जिमि पवन मन गो निरसि करि मुनि ध्यान कबहुक पावहीं
मोहि जानि अति अभिमान बस प्रभु कहेउ राखु शरीरहीं
अस कवन सठ हठि काटि सुरतरु बारि करिहि करीरहीं
अब नाथ करि करुणा बिलोकहु देहु जो बर मांगऊं।
जेहि योनि जन्मौं कर्म बस तहं राम पद अनुरागऊं
यह तनय मम सम बिनय बल कल्याण प्रद प्रभु दीजिए
गहि बांह सुर नर नाह आपन दास अंगद कीजिए
दो॰ राम चरण दृढ़ प्रीति करि बालि कीन्ह तनु त्याग
सुमन माल जिमि कंठते गिरत न जानै नाग
राम बालि निज धाम पठावा। नगर लोग सब व्याकुल धावा
नाना बिधि बिलाप कर नारा। छूटे केश न देह संभारा ॥
तारा बिकल देखि रघुराया। दीन्ह ज्ञान हरि लीन्ही माया
छिति जल पावक गगन समीरा। पंच रचित अति अधम शरीरा
प्रगट सो तनु तव आगे सोवा। जीव नित्य केहि लगि तुम रोवा

उपजा ज्ञान चरण तब लागी। लीन्हेसि परम भक्ति बर मांगी
उमा दारु योषित की नांई। सबहिं नचावत राम गोसांई
तब सुग्रीवहिं आयसु दीन्हा। मृतक कर्म बिधिवत सब कीन्हा
राम कहा अनुजहिं समुझाई। राज देहु सुग्रीवहिं जाई ॥
रघुपति चरण नाइ कर माथा। चले सकल प्रेरित रघुनाथा
दो॰ लक्ष्मण तुरत बुलाए पुरजन बिप्र समाज
राज दीन्ह सुग्रीव कहं अंगद कहं युवराज ॥
उमा राम सम हित जग माहीं। गुरु पितु मातु बंधु कोउ नाहीं
सुर नर मुनि सब की यह रीती। स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती
बालि त्रास व्याकुल दिन राती। तन बहु व्रण चिंता जरजाती
सोइ सुग्रीव कीन्ह कपि राऊ। अति कृपाल रघुबीर सुभाऊ
जानत हूं अस प्रभु परिहरही। काहे न बिपत जाल नर परही
पुनि सुग्रीवहिं लीन्ह बुलाई। बहु प्रकार नृपनीति सिखाई
कह प्रभु सुन सुग्रीव हरीसा। पुर न जाउं दस चारि बरीसा
गत ग्रीषम बरषा ऋतु आई। रहिहौं निकट सैल पर छाई
अंगद सहित करहु तुम राजू। संतत हृदय धरेहु मम काजू
जब सुग्रीव भवन फिरि आए। राम प्रवर्षण गिरि पर छाए
दो॰ प्रथमहिं देवन गिरि गुहा रुचिर बनाइ
राम कृपानिधि कछु दिन बास करहिंगे आइ
सुंदर बन कुसुमित अति शोभा। गुंजत मधुप निकर मधु लोभा
कंद मूल फल पत्र सोहाए। भए बहुत जबतें प्रभु आए

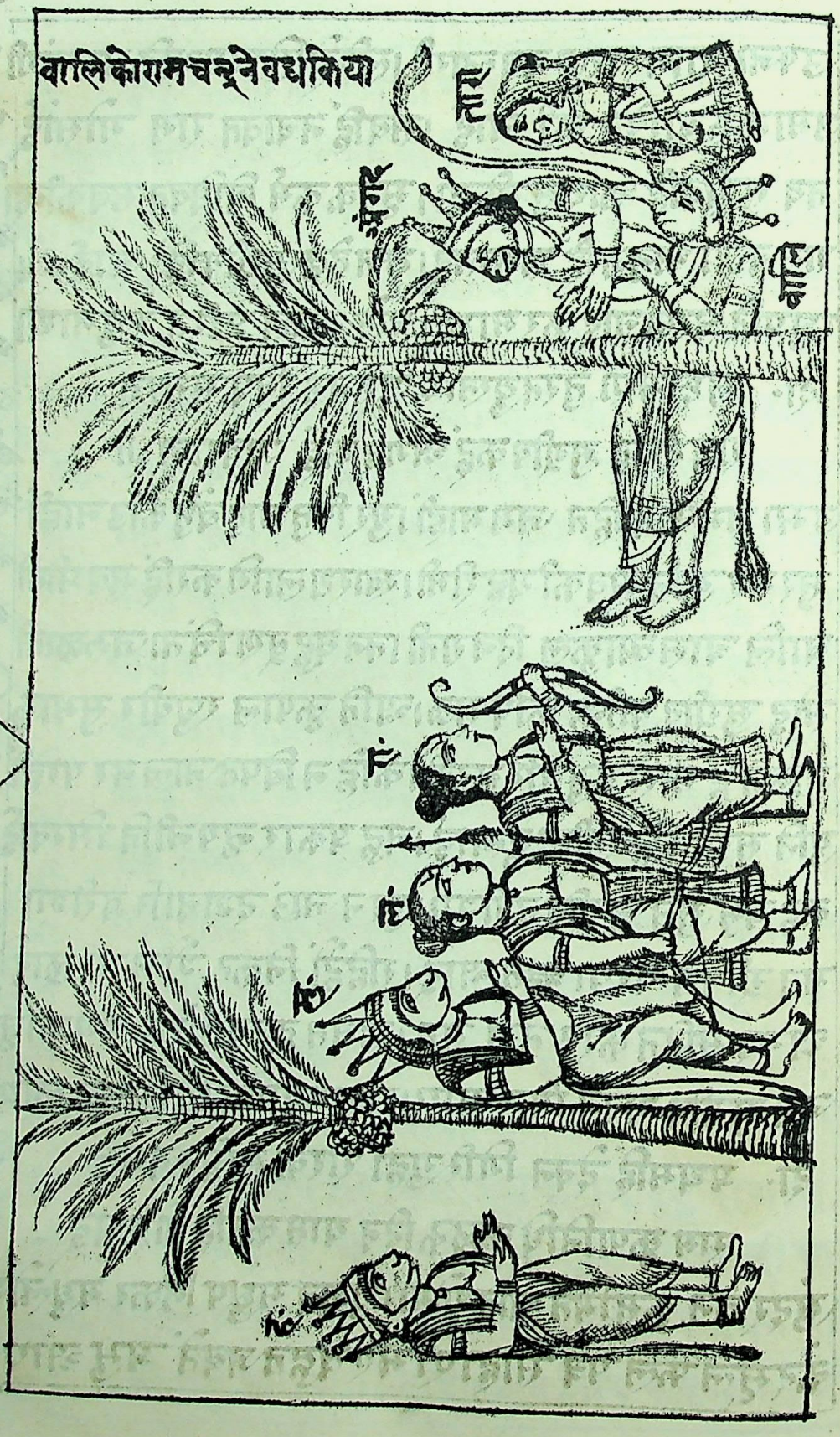

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

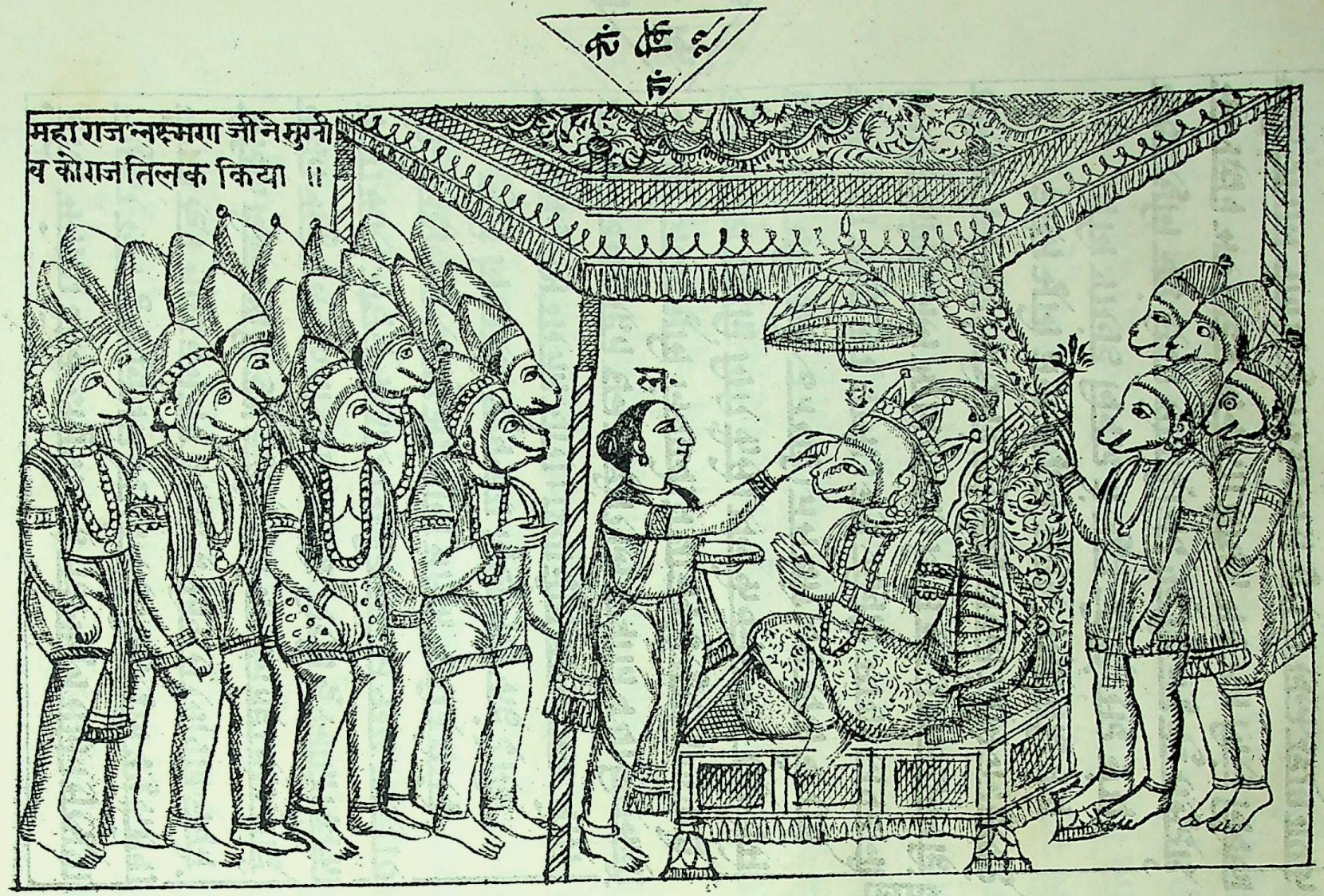

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

देखि मनोहर सैल अनूपा। रहे तहं अनुज सहित सुरभूपा
मधुकर खग मृग तनु धरि देवा। करहिं सिद्ध मुनि प्रभु कै सेवा
मंगल रूप भएउ बन तबतें। कीन्ह निवास रमापति जबतें
फटिक शिला अति सुभ्र सुहाई। सुख आसीन तहां दोउ भाई
कहत अनुज सन कथा अनेका। भक्ति बिरति नृपनीति बिबेका
बरषा काल मेघ नभ छाए। गर्जत लागत परम सोहाए
दो॰ लक्षमण देखहु मोर गण नाचत बारिद पेखि
गृही बिरत रति हरष जस बिष्णु भक्त कहं देखि
घन घमंड नभ गरजत घोरा। प्रिया हीन डरपत मन मोरा
दामिनि दमक रहत घन माहीं। खल कै प्रीति यथा थिर नाहीं
बरषहिं जलद भूमि नियराये। यथा नवहिं बुध बिद्या पाये
बुंद अघात सहहिं गिरि कैसे। खल के बचन संत सह जैसे
छुद्र नदी भरि चलि उतराई। जस थोरे धन खल बौराई
भूमि परत भा ढाबर पानी। जनु जीवहिं माया लपटानी
सिमिटि सिमिटि जल भरहिं तलावा। जिमि सदगुण सज्जन पहिं आवा
सरिता जल जल निधि महं जाई। होइ अचल जिमि जिव हरिपाई
दो॰ हरित भूमि तृण संकुल समुझ परहि नहिं पंथ
जिमि पाखंड बिवाद तें गुप्त होहिं सद ग्रंथ
दादुर धुनि चहुं दिशा सोहाई। बेद पढ़हिं जनु बटु समुदाई
नव पल्लव भए बिटप अनेका। साधक मन जस मिले बिबेका
अर्क जवास पात बिनु भयऊ। जस सुराज्य खल उद्यम गयऊ

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

खोजत कतहुं मिलै नहिं धूरी। करै कोष जिमि धर्महिं दूरी
शशि संपन्न सोह महि कैसी। उपकारी कै संपति जैसी
निशि तम घन खद्योत बिराजा। जनु दंभिन्ह कर मिला समाजा
महा वृष्टि चलि फूट कियारी। जिमि स्वतंत्र भए बिगरहिं नारी
कृषी निरावहिं चतुर किसाना। जिमि बुध तजहिं मोह मद माना
देखिय चक्रवाक खग नाहीं। कलिहि पाइ जिमि धर्म पाहीं
ऊसर बरषहि तृण नहिं जामा। जिमि हरजन हिय उपजन कामा
बिबिध जंतु संकुल महि भ्राजा। प्रजा बाढ़ जिमि पाइ सुराजा
जहं तहं रहे पथिक थकि नाना। जिमि इंद्रिय गण उपजे ज्ञाना

दो॰ कबहुं प्रबल बह मारुत जहं तहं मेघ बिलाहिं
जिमि कपूत के ऊपजे सम्पति धर्म नसाहिं ॥

टी॰ कि॰ १३

बरषा बिगत सरद ऋतु आई। लक्षमण देखहु परम सोहाई
फूले कास सकल महि छाई। जनु बरषा कृत प्रगट बुढ़ाई
उदित अगस्त पंथ जल सोखा। जिमि लोभहि सोखै संतोषा
सरिता सर निर्मल जल सोहा। संत हृदय जस गत मद मोहा
रस रस सूखि सरित सरपानी। ममता त्यागि करहिं जिमि ज्ञानी
जानि सरदऋतु खंजन आए। पाइ समय जिमि सुकृत सुहाए
पंकज रेणु सोह अस धरणी। नीति निपुण नृप कै जसि करणी
जल संकोच बिकल भइ मीना। अबुध कुटुंबी जिमि धनहीना
बिनु घन निर्मल सोह अकाशा। हरिजन इव परिहरि सबआशा
कहुं कहुं वृष्टि सारदी थोरी। कोउ एक पाव भगति जिमि मोरी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो॰ चले हरषि तजि नगर नृप तापस बनिक भिखारि
जिमि हरि भक्ति पाइ जन तजहिं आश्रमी चारि ॥

सुखी मीन जहं नीर अगाधा । जिमि हरि शरण न एकौ बाधा
फूले कमल सोह सर कैसे । निर्गुण ब्रह्म सगुण भए जैसे
गुंजत मधुकर निकर अनूपा । सुंदर खग रव नाना रूपा ॥
चक्र वाक मन दुख निशि पेखी । जिमि दुर्जन पर संपति देखी
चातक रटत तृषा अति ओही । जिमि सुख लहै न शंकर द्रोही
शरद तप निशि शशि अपहरहीं । संत दरश जिमि पातक टरहीं
देखि इंदु चकोर समुदाई । चितवहिं जिमि हरि जन हरि पाई
मसक दंश बीते हिम त्रासा । जिमि द्विज द्रोह किये कुल नासा

दो॰ भूमि जीव संकुल रहे गए शरद ऋतु पाइ
सद्गुरु मिलें जाहिं जिमि संशय भ्रम समुदाइ

बरषा गत निर्मल ऋतु आई । सुधि न तात सीता के पाई ॥
एकबार कैसेहु सुधि पावौं । कपटहु जीति बिलंब न लावौं
कतहुं रहौ जौ जीवत होई । तात यतन करि आनौं सोई
सुग्रीवहु सुधि मोरि बिसारी । पावा राज कोश पुर नारी ॥
जेहि शायक मारा मैं बाली । तेहि शर हतउं मूढ़ कहं काली
जासु कृपा छूटहिं मद मोहा । ता कहं उमा कि सपनेहु कोहा
जानहिं यह चरित्र मुनि ज्ञानी । जिन रघुबीर चरण रति मानी
लक्षिमण क्रोधवंत प्रभु जाना । धनुष चढ़ाइ गहे कर बाना ॥

दो॰ तब अनुजहि समुझावा रघुपति करुणा सींव

भय देखाइ लै आवहु तात सखा सुग्रीव
इहां पवन सुत हृदय बिचारा। राम काज सुग्रीव बिसारा
निकट जाइ चरणन्ह शिर नावा। चारिउ बिधि तेहि कहि समुझावा
सुनि सुग्रीव परम भय माना। बिषय मोर हरलीन्हेउ ज्ञाना
अब मारुत सुत दूत समूहा। पठवहु जहं तहं बानर यूहा ॥
कहहु पाख महं आवन जोई। मोर कर ता कर बध होई ॥
तब हनुमंत बोलाए दूता । सब कर करि सनमान बहूता
भय अरु प्रीति नीति देखराई। चले सकल चरणन्ह शिर नाई
तेहि अवसर लक्ष्मण पुर आए। क्रोध देखि जहं तहं कपि धाए
दो· धनुष चढ़ाइ कहा तब जारि करौं पुर छार
आकुल नगर देखि तब आवा बालि कुमार
चरण नाइ शिर बिनती कीन्हा। लक्ष्मण अभय बांह तेहि दीन्हा
क्रोध वंत लक्ष्मण सुन काना। कह कपीश अति भय अकुलाना
सुन हनुमंत संग लै तारा । करि बिनती समुझाउ कुमारा
तारा सहित जाइ हनुमाना । चरण बंदि प्रभु सुयश बखाना
करि बिनती मंदिर लै आए। चरण पखारि पलंग बैठाए
तब कपीश चरणन्ह शिर नावा । गहि भुज लक्ष्मण कंठ लगावा
नाथ बिषय सम मद कछु नाहीं। मुनि मन मोह करै छण माहीं
सुनत बिनीत बचन सुख पावा। लक्ष्मण तेहि बहु बिधि समुझावा
पवन तनय सब कथा सुनाई। जेहि बिधि गए दूत समुदाई
दो· हरषि चले सुग्रीव तब अंगदादि कपि साथ

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रामानुज आगे करि आए जहं रघुनाथ
नाइ चरण सिर कह कर जोरी। नाथ मोरि कछु नाहिन खोरी
अतिसय प्रबल देव तव माया। छूटै राम करहु तुम दाया
बिषय बिबस सुर नरमुनि स्वामी। मैं पावर पसु कपि अतिकामी
नारि नयन सर जाहि न लागा। घोर क्रोध तम निसि सो जागा
लोभ पास जेहि गर न बंधाया। सो नर तुम समान रघुराया
यह गुण साधन तें नहिं होई। तुम्हरी कृपा पाव कोइ कोई
तब रघुपति बोले मुसकाई। तुम्ह प्रिय मोहि भरत जिमि भाई
अब सोइ यतन करहु मन लाई। जेहि बिधि सीता कै सुधि पाई
टी. रा. कि. १६
दो. एहि बिधि होतबत कही आए बानर यूथ
नाना बरण सकल दिसि देखिय कीस बरूथ
बानर कटक उमा मैं देखा। सो मूरख जो करन चह लेखा
आइ राम पद नावहिं माथा। निरखि बदन सब होहिं सनाथा
अस कपि एक न सेना माहीं। राम कुसल जेहि पूछी नाहीं
यह कछु नहिं प्रभु कै अधिकाई। बिस्वरूप व्यापक रघुराई॥
ठाढ़े जहं तहं आयसु पाई। कह सुग्रीव सबहिं समुझाई
राम काज अरु मोर निहोरा। बानर यूथ जाहु चहुं ओरा
जनक सुता कहं खोजहु जाई। मास दिवस महं आयहु भाई
अवधि मेटि जो बिनु सुधि पाए। आवइ बनइ सो मोहि मराए
दो. बचन सुनत सब बानर जहं तहं चले तुरंत
तब सुग्रीव बोलाये अंगदादि हनुमंत॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनहु नील अंगद हनुमाना। जामवंत मति धीर सुजाना
सकल सुभट मिलि दक्षिण जाहू। सीता सुधि पूछेहु सब काहू
मन क्रम बचन सो जतन बिचारेहु। रामचंद्र कै काज सँवारेहु
भानु पीठ सेइय उर आगी। स्वामिहि सेइय समर त्यागी
नाजि आस सेइय परलोका। मिटहिं सकल भव संभव सोका
देह धरे कर यह फल भाई। भजिय राम सब काम बिहाई
सोइ गुनज्ञ सोई बड़ भागी। जो रघुबीर चरण अनुरागी
आयसु मागि चरण सिर नाई। चले हरष सुमिरत रघुराई॥
पाछे पवन तनय सिर नावा। जानि काज प्रभु निकट बुलावा
परसा सीस सरोरुह पानी। कर मुद्रिका दीन्ह जन जानी
बहु प्रकार सीतहि समुझाएहु। कहि बलबीर बेगि तुम्ह आएहु
हनुमत जन्म सुफल करि माना। चलेउ हृदय धरि कृपा निधाना
यद्यपि प्रभु जानत सब बाता। राजनीति राखत सुर त्राता॥

दो॰ चले सकल बन खोजत सरिता सर गिरि खोह
राम काज लवलीन मन बिसरा तन कर छोह

कतहुं होइ निसिचर सन भेटा। प्रान लेहिं इक एक चपेटा
बहु प्रकार गिरि कानन हेरहिं। कोउ मुनि मिलहिं ताहि सब घेरहिं
लागि तृषा अतिशय अकुलाने। मिलै न जल घन गहन भुलाने
मन हनुमान कीन्ह अनुमाना। मरण चहत सब बिनु जल पाना
चढ़ि गिरि सिखर चहूं दिशि देखा। भूमि बिवर एक कौतुक पेखा
चक्रबाक बक हंस उड़ाहीं। बहुतक खग प्रविशहिं तेहि माहीं

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गिरि तें उतरि पवन सुत आवा। सब कहं लै सोइ बिबर देखावा
आगे करि हनुमंतहि लीन्हा। पैठे बिबर बिलंब न कीन्हा।

दो॰ दीख जाइ उपवन सर बिगसित बहु बिधि कंज
मंदिर एक रुचिर तहं बैठि नारि तप पुंज ॥

दूरते ताहि सबन शिर नावा। पूछेसि निज वृत्तांत सुनावा
तेहि तब कहा करहु जल पाना। खाहु सरस सुंदर फल नाना
मज्जन कीन्ह मधुर फल खाए। तासु निकट पुनि सब चलि आए
तेहि सब आपनि कथा सुनाई। मैं अब जाब जहां रघुराई
मूंदहु नयन बिबर तजि जाहू। पैहहु सीतहिं जनि पछिताहू
नयन मूंदि पुनि देखहिं बीरा। ठाढ़े सकल सिंधु के तीरा॥
सो सुनि गई जहां रघुनाथा। जाइ कमल पद नायसि माथा
नाना भांति बिनय तेहि कीन्ही। अनपायनी भक्ति प्रभु दीन्ही

दो॰ बदरी बन कहुं सो गई प्रभु आज्ञा धरि शीश
उर धरि राम चरण युग जे बंदत अज ईश ॥

इहां बिचारहिं कपि मन माहीं। बीती अवध काज कछु नाहीं
सब मिल करहिं परस्पर बाता। बिन सुधि लिये करब का भ्राता
कह अंगद लोचन भरि बारी। दुहुं प्रकार भइ मृत्यु हमारी
इहां न सुधि सीता कै पाई। उहां गए मारिहि कपिराई
पिता बधे परमारन मोही। राखा राम निहोरन ओही
पुनि पुनि अंगद कह सब पाहीं। मरण भएउ कछु संशय नाहीं
अंगद बचन सुनत कपि बीरा। बोलि न सकहिं नयन बह नीरा

टी॰ रा॰ कि॰ १८

चौपाई छंद दोहादि को टीका

श्लोक	चौपाई	छंद	सोरठा	दोहा
२	१	३	३१	

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्षण एक शोच मगन होइ गए। पुनि अस बचन कहत सब भए
हम सीता कै सुधि लिए बीना। नहिं जैहैं युवराज प्रबीना
अस कहि लवन सिंधु तट जाई। बैठे सब कपि दरभ डसाई
जामवंत अंगद दुख देखी। कही कथा उपदेश बिसेखी
तात राम कहं नर जनि जानहु। निर्गुण ब्रह्म अजित अजानहु
हम सब सेवक अति बड़ भागी। संतत सगुण ब्रह्म अनुरागी
दो. निज इच्छा प्रभु अवतरइ सुर द्विज गो हित लागि
सगुण उपासक संग तहं रहहिं मोक्ष सब त्यागि
एहि बिधि कथा कहहिं बहु भांती। गिरि कंदरा सुना संपाती
बाहिर होइ देख सब कीसा। मोहि अहार दीन्ह जगदीसा
आजु सबन कहं भक्षण करऊं। दिन बहु चलेउ अहार बिनु मरऊं
कबहुं न मिल भरि उदर अहारा। आजु दीन्ह बिधि एकहिं बारा
डरपे गीध बचन सुनि काना। अब भा मरण सत्य हम जाना
कपि सब उठे गीध कहं देखी। जामवंत मन शोच बिसेखी
कहं अंगद बिचार मन माहीं। धन्य जटायु सरिस कोउ नाहीं
राम काज कारण तन त्यागी। हरि पुर गएउ परम बड़ भागी
सुनि खग हरष शोक युत बानी। आवा निकट कपिन भय मानी
तिन्हहिं अभय करि पूछेसि जाई। कथा सकल तिन्ह ताहि सुनाई
सुनि संपाति बंधु कै करणी। रघुपति महिमा बहु बिधि बरणी
दो. मोहि ले जाहु सिंधु तट देउं तिलांजलि ताहि
बचन सहाइ करबि मैं पैहउ खोजहु जाहि॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनुज क्रिया करि सागर तीरा। कहि निज कथा सुनहु कपि बीरा
हम दोउ बंधु प्रथम तरुणाई। गगन गए रबि निकट उड़ाई
तेज न सहि सक सो फिर आवा। मैं अभिमानी रबि नियरावा
जरे पंख रबि तेज अपारा ॥ परेउ भूमि कर घोर चिकारा
मुनि एक नाम चंद्रमा ओही। लागी दया देखि कर मोही
बहु प्रकार तेहि ज्ञान सुनावा। देह जनित अभिमान छुड़ावा
त्रेता ब्रह्म मनुज तनु धरहीं। तासु नारि निसिचर पति हरहीं
तासु खोज पठइहि प्रभु दूता। तिन्हहिं मिले तें होब पुनीता
जमिहहिं पंख करसि जनि चिंता। तिन्हहिं देखाइ देहु तैं सीता
मुनि कह गिरा सत्य भइ आजू। सुनि मम बचन करहु प्रभु काजू
गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका। तहं रह रावन सहज असंका
तहां अशोक बाटिका अहई। सीता बैठि सोच रत अहई

टी० रा० कि० २०

दो० मैं देखहुं तुम नाहिन गीधहिं दृष्टि अपार
बूढ़ भएउं न तरतेउं कछुक सहाय तुम्हार

जो नांघइ शत योजन सागर। करै सो राम काज मति आगर
मोहि बिलोकि धरहु मन धीरा। राम कृपा कस भएउ शरीरा
पापिउ जाकर नाम सुमिरहीं। अति अपार भव सागर तरहीं
तासु दूत तुम तजि कदराई। राम हृदय धरि करहु उपाई
अस कहि गरुड़ गीध जब गएऊ। तिन्हके मन अति बिस्मय भएऊ
निज निज बल सब काहू भाखा। पार जाहु के संशय राखा
जरत भएउं अब कहेउ रिछेशा। नहिं तनु रहा प्रथम बललेशा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जबहिं त्रिबिक्रम भएउ खरारी। तब मैं तरुण रहेउं बल भारी
दो॰ बलि बांधत प्रभु बाढ़ेउ सो तनु बरणि न जाइ
उभय घरी महं दीन्ह मैं सात प्रदक्षिण धाइ
अंगद कहा जाउं मैं पारा। जिय संशय कछु फिरती बारा
जामवंत कह तुम सब लायक। पठइय किमि सबही कर नायक
कहइ रीछपति सुन हनुमाना। का चुप साधि रहेउ बलवाना
पवन तनय बल पवन समाना। बुध बिबेक विज्ञान निधाना
कवन सो काज कठिन जग माहीं। जो नहिं होइ तात तुम पाहीं
राम काज लगि तव अवतारा। सुनतहि भयउ पर्वताकारा॥
कनक बरण तन तेज बिराजा। मानहु अपर गिरिन्ह कर राजा
सिंहनाद करि बारहिं बारा। लीलहिं नाघउं जलनिधि खारा
सहित सहाय रावणहिं मारी। आनउं इहां त्रिकूट उपारी॥
जामवंत मैं पूछउं मोही। उचित सिखावन दीजे मोही॥
इतना करेहु तात तुम जाई। सीतहि देखि कहो सुधि आई
तब निज भुजबल राजिवनैना। कौतुक लागि संग कपि सेना
छं॰ कपिसेन संग संघार निशिचर राम सीतहिं आनिहैं
त्रैलोक पावन सुयश सुर मुनि नारदादि बखानिहैं
जो सुनत गावत कहत समुझत परम पद नर पावहीं
रघुबीर पद पाथोज मधुकर दास तुलसी गावहीं
दो॰ भव भेषज रघुनाथ यश सुनहिं जे नर अरु नारि
तिन्ह कर सकल मनोरथ सिद्ध करहिं त्रिपुरारि

दी॰ रा॰ कि॰ २१

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सोरठा

नीलोत्पल तन श्याम काम कोटि शोभा अधिक
सुनिय तासु गुण ग्राम जासु नाम अघ खग बधिक

इति श्रीराम चरित मानसे सकल कलि कलुष बिध्वंसने
बिशुद्ध संतोष संपादनो नाम चतुर्थः सोपानः समाप्त

लिपिकृत हर सोहन दास

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रघुसुन्दर काण्ड : ५

श्री गणेशाय नमः श्लोक शांतंशाश्वतमप्रमेय मनघं निर्वा
ण शांति प्रदं ब्रह्मा शंभु फणींद्र सेव्य मनिशं वेदांत वेद्यं
विभुं रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं माया मनुष्यंहरिं वंदेहं
करुणा करं रघुवरं भूपालचूड़ामणिं १ नान्यास्पृहा रघुपते
हृदयेस्म दीये सत्यं वदामिच भवान खिलांतरात्मा भक्तिंप्रय
छ रघुपुंगव निर्भरांमे कामादि दोष रहितं कुरुमानसंच २

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अतुलित बल धामं स्वर्ण शैला भदेहं दनुज वन कृशानुं ज्ञा
नि नाम ग्रगण्यं सकल गुण निधानं वानरणाम धीशं ।
रघुपति वरदूतं वात जातन्नमामि ॥ ३ ॥ श्रीरामचंद्र ॥

जामवंत के बचन सुहाए । सुनि हनुमंत हृदय अति भाए
तब लगि मोहि परेखहु भाई । सहि दुख कंद मूल फल खाई
जब लगि आवहुं सीतहि देखी । होइ काज मोहि हर्ष विशेखी
अस कहि नाइ सबन कहुं माथा । चलेउ हरषि हिय धरि रघुनाथा
सिंधुतीर एक सुंदर भूधर । कौतुक कूदि चढ़े ता ऊपर ॥
बार बार रघुबीर संभारी । तरके पवन तनय बल भारी
जेहि गिरि चरण देइ हनुमंता । चलेउ सो गा पाताल तुरंता
जिमि अमोघ रघुपति कर बाना । तेही भांति चला हनुमाना
जलनिधि रघुपति दूत बिचारी । तै मैनाक होहु श्रम हारी

दो० हनूमान तेहि परस कर पुनि पुनि कीन्ह पणाम
राम काज कीन्हे बिना मोहि कहां बिश्राम ।

जात पवन सुत देवन देखा । जाने कहं बल बुद्धि विशेखा
सुरसा नाम अहिन की माता । पठदान्हि पाइ कही तेहि बाता
आजु सुरन्ह मोहि दीन्ह अहारा । सुनत बचन कह पवनकुमारा
राम काज करि फिरि मैं आवौं । सीता कै सुधि प्रभुहि सुनावौं
तब तव बदन पैठि हौं आई । सत्य कहौं मोहि जानदे माई
कवनेहु यतन देइ नहिं जाना । ग्रसि न मोहि कहा हनुमाना
योजन भरि तेहि बदन पसारा । कपि तन कीन्ह दुगुण बिस्तारा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सोरह योजन मुख तेहि बएऊ। तुरत पवन सुत बत्तिस भएऊ
जस जस सुरसा बदन बढ़ावा। तासु दून कपि रूप दिखावा
सत योजन तेहि आनन कीन्हा। अति लघुरूप पवनसुत लीन्हा
बदन पैठि पुनि बाहेर आवा। मांगी बिदा ताहि सिर नावा
मोहि सुरन्ह जेहि लागि पठावा। बुधि बल मरम तोरमैं पावा
दो॰ राम काज सब करिहहु तुम बल बुद्धि निधान
आसिष दै सुरसा चली हरषि चले हनुमान
निशिचर एक सिंधु महं रहई। करि माया नभ के खग गहई
जीव जंतु जे गगन उड़ाहीं। एहि बिधि सदा गगन चर खाही
सोइ छल हनूमान कहं कीन्हा। तासु कपट कपि तुरतहिं चीन्हा
गहि छांह सक सो न उड़ाई। जल विलोकि तिन के परिछाई
ताहि मारि मारुत सुत बीरा। वारिधि पार गएउ मति धीरा
तहां जाइ देखी बन शोभा। गुंजत चंचरीक मधु लोभा
नाना तरु फल फूल सुहाए। खग मृग वृंद देखि मन भाए
सैल बिशाल देखि एक आगे। ता पर धाइ चढ़ेउ भय त्यागे
उमा न कछु कपि कै अधिकाई। प्रभु प्रताप जो कालहि खाई
गिरि पर चढ़ लंका तेहि देखी। कहि न जाय अति दुर्ग बिशेषी
अति उतंग जलनिधि चहुं पासा। कनक कोट कर परम प्रकासा
छं॰ कनक कोट बिचित्र मणि कृत सुंदरायत अति घना
चह हट्ट हट्ट सुबट्ट बीथी चारु पुर बहु बिधि बना
गज बाजि खच्चर निकर पदचर रथ बरूथन्हको गिनै

बहु रूप निशिचर यूथ अति बल सेन बरणत नहिं बने
बन बाग उपवन वाटिका सर कूप वापी सोहहीं ॥
नर नाग सुर गंधर्व कन्या रूप मुनि मन मोहहीं ॥
कहं मल्ल देह विशाल शैल समान अतिबल गर्जहीं
नाना अखारन्ह भिरहिं बहु विधि एक एकन तर्जहीं
कहिं महिष मानुष धेनु खर अज खल निशाचर भक्षहीं
एहि लागि तुलसी दास इन्ह की कथा संक्षेपहि कही
रघुबीर शरतीरथ शरीरन्ह त्यागि गति पैहहि सही
दो॰ पुर रखवारे देख बहु कपि मन कीन्ह बिचार
अति लघुरूप धरौं निशि नगर करौं पइसार
मसक समान रूप कपि धरी। लंका चलेउ सुमिरि नर हरी
नाम लंकिनी एक निशिचरी। सो कह चलेसि मोहि निंदरी
जानेहि नहीं मरम सठ मोरा। मोर अहार जहां लगि चोरा
मुष्टिक एक महा कपि हनी। रुधिर बमत धरणी ढन मनी
पुनि सु संभारि उठी सो लंका। जोरि पानि करि विनय ससंका
जब रावण ब्रह्मा बर दीन्हा। चलत बिरंचि कहा मोहि चीन्हा
बिकल होसि तब कपि के मारे। तब जानेसि निशिचर संहारे
तात मोर अति पुण्य बहूता। देखेउं नयन राम कर दूता
दो॰ तात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरिय तुला एक अंग
तुलहि न ताहि सकल मिलिजो सुख लव सतसंग
प्रबिस नगर कीजे सब काजा। हृदय राखि कोशल पुर राजा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गरल सुधा रिपु करै मिताई। गोपद सिंधु अनल सितलाई
गरुड़ सुमेरु रेणु सम ताही। राम कृपा करि चितवा जाही
अति लघु रूप धरेउ हनुमाना। पैठा नगर सुमिरि भगवाना
मंदिर मंदिर प्रति कर शोधा। देखे जहं तहं अगणित योधा
गयउ दशानन मंदिर माहीं। अति बिचित्र कहि जात सोनाहीं
सयन किये देखा कपि तेही। मंदिर महं न दीख बैदेही॥
भवन एक पुनि दीख सोहावा। हरि मंदिर तहं भिन्न बनावा

दो॰ राम नाम अंकित गृह शोभा बरणि न जाइ
नव तुलसी का वृंद तहं देखि हरषि कपिराइ

लंका निशिचर निकर निवासा। इहां कहां सज्जन कर वासा
मन महं तरक करै कपि लागा। तेही समय बिभीषण जागा
राम राम तेहि सुमिरण कीन्हा। हृदय हरषि कपि सज्जन चीन्हा
एहि सन हठि करिहौं पहिचानी। साधु ते होइ न कारज हानी
बिप्र रूप धरि वचन सुनाए। सुनत बिभीषण उठि तहं आए
करि प्रणाम पूछी कुशलाई। बिप्र कहहु निज कथा बुझाई
की तुम हरिदासन महं कोई। मेरे हृदय प्रीति अति होई
की तुम राम दीन अनुरागी। आयहु मोहि करन बड़भागी

दो॰ तब हनुमंत कही सब राम कथा निज नाम
सुनत युगल तन पुलकि मन मगन सुमिरि गुणग्राम

सुनहु पवन सुत रहनि हमारी। जिमि दशनन्ह महं जीभ बिचारी
तात कबहु मोहि जानि अनाथा। करिहहिं कृपा भानुकुलनाथा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नामस तन कछु साधन नाहीं। प्रीति न पद सरोज मन माहीं
अब मोहि भा भरोस हनुमंता। बिनु हरि कृपा मिलहिं नहिं संता
जो रघुबीर अनुग्रह कीन्हा। तौ तुम मोहिं दरश हठि दीन्हा
सुनहु बिभीषण प्रभु कइ रीती। करहिं सदा सेवक पर प्रीती
कहहु कवन मैं परम कुलीना। कपि चंचल सबही बिध हीना
प्रात लेइ जो नाम हमारा। तेहि दिन ताहि न मिलै अहारा

दो॰ अस मैं अधम सखा सुनु मोहू पर रघुबीर
कीन्ही कृपा सुमिरि गुण भरे बिलोचन नीर

जानत हूं अस स्वामि बिसारी। फिरहिं ते काहे न होहिं दुखारी
एहि बिध कहत राम गुणग्रामा। पावन अवण सुखद बिश्रामा
पुनि सब कथा बिभीषण कही। जिहि बिधि जनक सुता तहं रही
तब हनुमंत कहा सुन भ्राता। देखा चहौं जानकी माता
जुक्ति बिभीषण सकल सुनाई। चलेउ पवन सुत बिदा कराई
करि सोइ रूप गयउ पुनि तहवां। बन अशोक सीता रह जहवां
देखि मनहिं मन कीन्ह प्रणामा। बैठिहि बीत गई निशि यामा
कृश तनु शीश जटा एक बेनी। जपति हृदय रघुपति गुण श्रेनी

दो॰ निज पद नयन दिये मन राम चरण महं लीन
परम दुखी भा पवन सुत देखि जानकी दीन

तरु पल्लव महं रहा लुकाई। करै बिचार करौं का भाई
तेहि अवसर रावण तहं आवा। संग नारि बहु किये बनावा
बहु बिधि खल सीतहिं समुझावा। साम दाम अरु भेद देखावा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कह रावण सुनु सुमुखि सयानी। मंदोदरी आदि सब रानी ॥
तव अनुचरी करौं पण मोरा। एक बार बिलोक मम ओरा।
तृण धरि ओट कहति बैदेही। सुमिरि अवधपति परम सनेही
सुनु दशमुख खद्योत प्रकासा। कबहुं कि नलनी करै बिकासा
अस मन समुझु कहति जानकी। खल सुधि नहिं रघुबीर बाणकी
सठ सूने हर आनेसि मोही। अधम निलज्ज लाज नहिं तोही

दो॰ आपुहि सुनि खद्योत सम रामहिं भानु समान
परुष बचन सुनि काढ असि बोला अति खिसियान

सीता तैं मम कृत अपमाना। कटिहौं तव सिर कठिन कृपाना
नाहित सपदि मान मम बानी। सुमुखि होत नहिं जीवन हानी
स्याम सरोज दाम सम सुंदर। प्रभु भुज करि कर सम दशकंधर
सो भुज कंठ कि तव असि घोरा। सुनु सठ अस प्रवान पण मोरा
चंद्रहास हर मम परितापा। रघुपति बिरह अनल संतापा
सीतल निसि तव असि बर धारा। कह सीता हरु मम दुख भारा
सुनत बचन पुनि मारण धावा। मय तनया कहि नीति बुझावा
कहेसि सकल निसिचरिहि बुझाई। सीतहि बहु बिधि त्रासहु जाई
मास दिवस महं कहा न माना। तौ मैं मारब कठिन कृपाना

दो॰ भवन गयउ दशकंधर इहां पिसाचि बृंद ॥
सीतहिं त्रास दिखावहिं धरहिं रूप बहु मंद

त्रिजटा नाम राक्षसी एका। राम चरण रति निपुण बिबेका
सबन बुलाइ सुनाएसि सपना। सीतहि सेइ करहु हित अपना

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

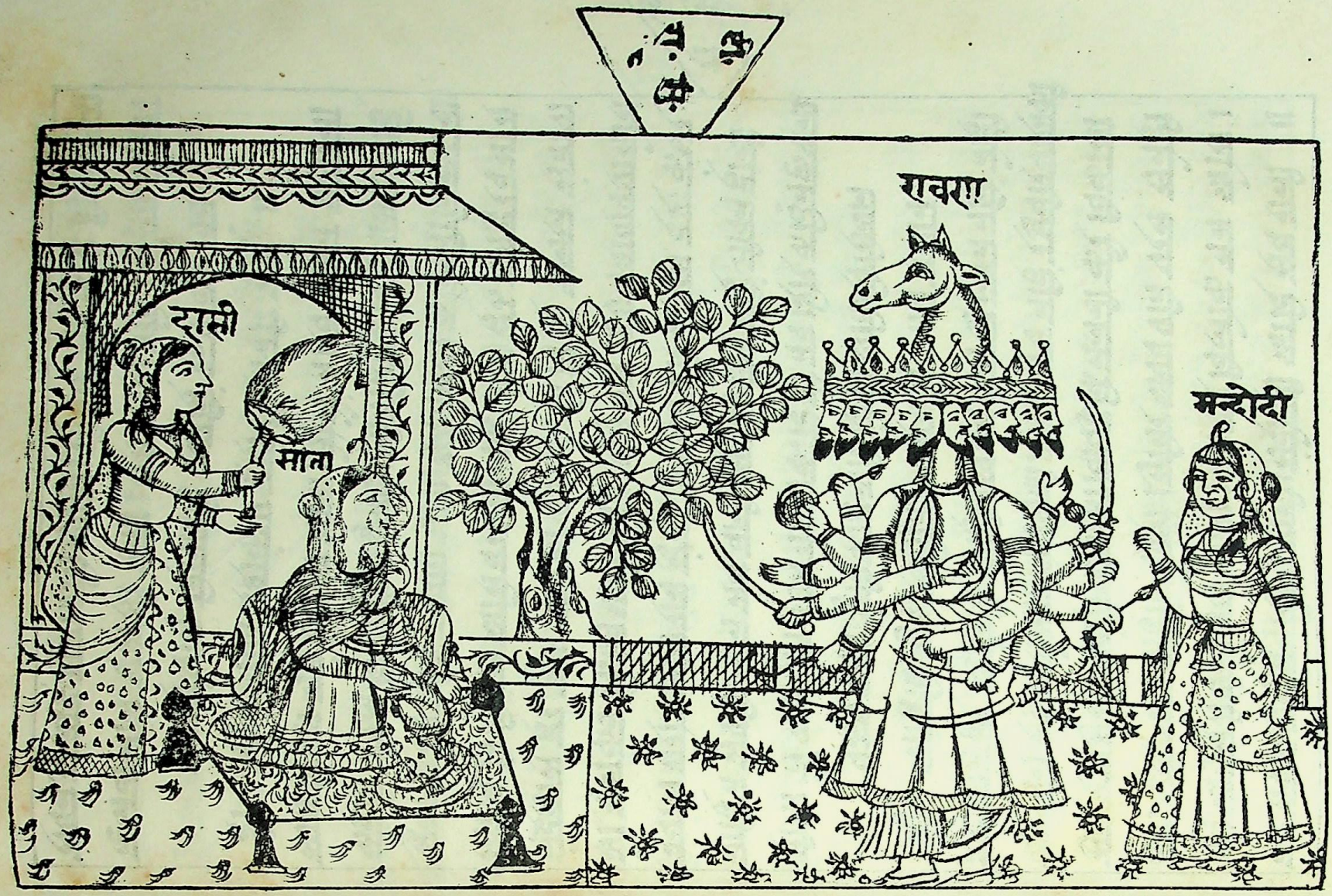

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सपने वानर लंका जारी । यातुधान सेना सब मारी ॥
खर आरूढ़ नगन दससीसा । मुंडित सिर खंडित भुज बीसा ।
ए बिधि सो दक्षिण दिसि जाई । लंका मनहुं बिभीषण पाई ।
नगर फिरी रघुबीर दोहाई । जब प्रभु सीता बोलि पठाई ।
यह सपना मैं कहौं पुकारी । होइहि सत्य गए दिन चारी ।
तासु बचन सुनि ते सब डरीं । जनकसुता के चरनन्हि परीं ।
दो० जहं तहं गईं सकल तब सीता कर मन सोच ॥
मास दिवस बीते मोहि मारिहि निसिचर पोच ।
त्रिजटा सन बोली कर जोरी । मातु बिपति संगिनि तैं मोरी ।
तजौं देह करु बेगि उपाई । दुसह बिरह अब सहा न जाई ।
आनि काठ रचि चिता बनाई । मातु अनल पुनि देहु लगाई ।
सत्य करहि मम प्रीति सयानी । सुनै को श्रवण सूल सम बानी ।
सुनत बचन पद गहि समुझावा । प्रभु प्रताप बल सुजस सुनावा ।
निसि न अनल मिल सुनु सुकुमारी । अस कहि सो निज भवन सिधारी ।
कह सीता बिधि भा प्रतिकूला । मिलहि न पावक मिटै न सूला ।
देखियत प्रगट गगन अंगारा । अवनि न आवत एकौ तारा ।
पावकमय ससि स्रवत न आगी । मानहुं मोहि जानि हतभागी ।
सुनहि बिनय मम बिटप असोका । सत्य नाम करु हरु मम सोका ।
नूतन किसलय अनल समाना । देहि अगिनि जनि करहि निदाना ।
देखि परम बिरहाकुल सीता । सो छन कपिहि कलप सम बीता ।
सो० कपि कर हृदय बिचार दीन्हि मुद्रिका डारि तब

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जनु अशोक अंगार लीन्ह हरषि उठिकर गहेउ
तब देखी मुद्रिका मनोहर । राम नाम अंकित अति सुंदर
चकित चित्त मुद्रिका पहिचानी। हरष विषाद हृदय अकुलानी
जीति को सके अजय रघुराई। माया तें असि रची न जाई
सीता मन विचार कर नाना। मधुर वचन बोले हनुमाना
रामचंद्र गुण बरणन लागे। सुनतहिं सीता के दुख भागे
लागी सुनै श्रवण मन लाई। आदिहि तें सब कथा सुनाई
श्रवणामृत जेहि कथा सुनाई। कहि सो प्रगट होत किन भाई
तब हनुमंत निकट चलि गएऊ। फिरि बैठी मन बिसय भएऊ
राम दूत मैं मातु जानकी। सत्य शपथ करुणा निधान की
यह मुद्रिका मातु मैं आनी। दीन्ह राम तुम कहं सहि दानी
नर बानरहि संग कहु कैसे। कही कथा संगति भइ जैसे

दो॰ कपि कर वचन सप्रेम सुनि उपजा मन बिस्वास
जाना मन क्रम वचन यह कृपा सिंधु कर दास।

हरिजन जानि प्रीति अतिबाढ़ी। सजल नयन पुलकावलि ठाढ़ी
बूड़त विरह जलधि हनुमाना। भयेहु तात मोकहं जलयाना
अब कहु कुशल जाउं बलिहारी। अनुज सहित सुख भवन खरारी
कोमल चित कृपाल रघुराई। कपि केहि हेतु धरी निठुराई
सहज बान सेवक सुख दायक। कबहुंक सुरति करत रघुनायक
कबहुं नयन मम शीतल ताता। होइहि निरखि श्याम मृदु गाता
बचन न आव नयन भरि बारी। अहो नाथ मोहि निपट बिसारी

देखि बिरह व्याकुल अति सीता। बोलेउ कपि मृदु बचन बिनीता
मातु कुशल प्रभु अनुज समेता। तव दुख दुखी सो कृपानिकेता
जननी जनि मानहु मन ऊना। तुम तें प्रेम राम कहं दूना ॥

दो॰ रघुपति के संदेश अब सुन जननी धरि धीर
अस कहि कपि गदगद भये भरे बिलोचन नीर

राम बियोग कहा सुन सीता। मो कहं सकल भयेउ बिपरीता
नूतन किशलय मनहुं कृशानू। काल निशा सम निशि शशिभानू
कुवलय बिपिन कुंत बन सरिसा। बारिद तप्त तेल जनु बरिसा
जेहि तरु रहौं करत सो पीरा। उरग श्वास सम त्रिविध समीरा
कहेतें नहिं दुख घटि कछु होई। काहि कहौं यह जानन कोई
तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा। जानति प्रिया एक मन मोरा
सो मन रहत सदा तोहि पाहीं। जानु प्रीति रस इतनेहिं मांहीं
प्रभु संदेश सुनत बैदेही। मगन प्रेम तन सुधि नहिं तेही
कह कपि हृदय धीर धरु माता। सुमिरि राम सेवक सुखदाता
उर आनहु रघुपति प्रभुताई। सुनि मम बचन तजहु बिकलाई

दो॰ निशिचर निकर पतंग सम रघुपति बाण कृशानु
जननि हृदय निज धीर धरु जरे निशाचर जानु

जो रघुबीर होत सुधि पाई। करते नहिं बिलंब रघुराई ॥
राम बाण रवि उदय जानकी। तम बरूथ कहं यातुधानकी
अबहिं मातु मैं जाउं लिवाई। प्रभु आयसु नहिं राम दुहाई
कछुक दिवस जननी धरु धीरा। कपिन्ह सहित ऐहैं रघुबीरा

टी॰ रा॰ सुं॰ ११

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

निशिचर मारि तुम्हहिं लै जैहैं। तिहं पुर नारदादि यश गैहैं
हैं सुत कपि सब तुम्हहिं समाना। यातुधान अति भट बलवाना
मोरे हृदय परम संदेहा। सुनि कपि प्रगट कीन्ह निज देहा
कनक भूधराकार शरीरा। समर भयंकर अतिबल बीरा
सीता मन भरोस तब भयेऊ। पुनि लघु रूप पवन सुत लयेऊ
दो॰ सुनमाता साखा मृगहिं नहिं बल बुद्धि बिशाल
प्रभु प्रताप तें गरुडहीं खाइ परम लघु व्याल ॥
मन संतोष सुनत कपि बानी। भगति प्रताप तेज बल सानी
आशिष दीन्ह राम प्रिय जानी। अजर अमर गुणनिधि सुत होऊ। करहुं सदा रघुनायक छोहू
करहिं कृपा प्रभु अस सुनिकाना। निर्भर प्रेम मगन हनुमाना
बारबार नावहिं पद शीसा। बोले बचन जोरि कर कीसा
अब कृतकृत्य भयउं मैं माता। आशिष तव अमोघ विख्याता
सुनिय मातु मोहि अतिशय भूखा। लागि देखि सुंदर फल रूखा
सुन सुत करहिं बिपिन रखवारी। परम सुभट रजनीचर भारी
तिन्ह कर भय माता मोहिं नाहीं। जो तुम सुख मानहु मन माहीं
दो॰ देखि बुद्धि बल निपुण कपि कहा जानकी जाहु
रघुपति चरण हृदय धरि तात मधुर फल खाहु
चलानाइ शिर पैठेउ बागा। फल खाये तरु तोरन लागा
रहे तहां बहु भट रखवारे। कछु मारे कछु जाइ पुकारे
नाथ एक आवा कपि भारी। तेहि अशोक वाटिका उजारी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

खाएसि फल अरु बिटप उपारे। जहं तहं पटकि पटकि कट मारे
सुनि रावण पठये भट नाना। तिन्हहि देखि गरजा हनुमाना
सब रजनीचर कपि संघारे। गये पुकारत कछु अधमारे
पुनि पठवा तेहि अक्षय कुमारा। चला संगलै सुभट अपारा
आवत देखि बिटप गहि तर्जा। ताहि निपाति महाधुनि गर्जा
दो॰ कछु मारेसि कछु मर्देसि कछु मिलयेसि धूरि
कछु पुनि जाइ पुकारे प्रभु मर्कट बल भूरि ॥
सुनि सुत बध लंकेस रिसाना। पठवा मेघनाद बलवाना
मारेसि जनि सुत बांधेसि ताही। देखौं कीस कहा कर आही
चला इंद्रजित अतुलित जोधा। बंधु बधन सुनि उपजा क्रोधा
कपि देखा दारुण भट आवा। कट कटाइ गर्जा अरु धावा
अति बिसाल तरु एक उपारा। बिरथ कीन्ह लंकेस कुमारा
रहे महा भट ताके संगा। गहि गहि कपि मर्दै निज अंगा
तिन्ह निपाति ताहि सन बाजा। भिरे जुगल मानहुं गजराजा
मुठिका मारि चढ़ा तरु जाई। ताहि एक छन मूर्छा आई
उठि बहोरि कीन्हेसि बहु माया। जीति न जाइ प्रभंजन जाया
दो॰ ब्रह्म अस्त्र तेहि साधा कपि मन कीन्ह बिचार
जौं न ब्रह्म सर मानऊं महिमा मिटै अपार
ब्रह्मबाण तेहि कपि कहं मारा। परतिहुं बार कटक संहारा
तेहि देखा कपि मूर्छित भयऊ। नागपास बांधेसि लै गयऊ
जासु नाम जपि सुनहु भवानी। भव बंधन काटहिं नर ग्यानी

दो॰ सं॰ २

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तासु दूत बंधन तर आवा। प्रभु कारज लगि आपु बंधावा।
कपि बंधन सुनि निशिचर धाये। कौतुक लागि सभा सब आये।
दशमुख सभा दीख कपि जाई। कहि न जाइ कछु अति प्रभुताई।
कर जोरे सुर दिशप बिनीता। भृकुटि बिलोकत सकल सभीता।
देखि प्रताप न कपि मन शंका। जिमि अहिगण महँ गरुड़ असंका।

दो॰ कपिहि बिलोकि दशानन बिहंसि कहेसि दुर्बाद
सुत बध सुरति कीन्ह पुनि उपजा हृदय बिषाद

कह लंकेश कवन तैं कीसा। केहि के बल घालेसि बन खीसा।
की धौं श्रवण सुनेसि नहिं मोही। देखौं अति असंक सठ तोही।
मारे सि निशिचर केहि अपराधा। कह शठ तोहि न प्राण कै साधा।
सुन रावण ब्रह्मांड निकाया। पाइ जासु बल बिरचित माया।
जाके बल बिरंचि हरि ईशा। पालत हरत सृजत दश शीशा।
जा बल शीश धरे सहसानन। अंडकोश समेत गिरि कानन।
धरे जो बिबिध देह सुर त्राता। तुम से शठन सिखावन दाता।
हर कोदंड कठिन जेहि भंजा। तोहि समेत नृप दल मद गंजा।
खर दूषण बिराध बध जाली। बधे सकल अतुलित बल शाली।

दो॰ जाके बल लवलेश तें जितेउ चराचर झारि
तासु दूत हौं जाहि कि हरि आनेहु प्रिय नारि

जानौं मैं तुम्हारि प्रभुताई। सहसबाहु सन परी लराई।
समर बालि सन करि यश पावा। सुनि कपि बचन बिहंसि बहलावा।
खायेउं फल प्रभु लागी भूखा। कपि सुभाव तें तोरेउं रूखा।

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सबके देह परम प्रिय स्वामी । मारहिं मोहि कुमारग गामी
जिन्ह मोहि मारा तेहि मैं मारा । तेहि पर बांधेउ तनय तुम्हारा
मोहि न कछु बांधे कर लाजा । कीन्ह चहौं निज प्रभु कर काजा
बिनती करौं जोरि कर रावन । सुनहु मान तजि मोर सिखावन
देखहु तुम निज हृदय बिचारी । भ्रम तजि भजहु भक्त भय हारी ।
जाके डर अति काल डराई ॥ जो सुर असुर चराचर खाई ।
तासों बैर कबहुं नहिं कीजे । मोरे कहे जानकी दीजे ॥

दो॰ प्रनतपाल रघुवंशमणि करुणासिंधु खरारि
गये शरण प्रभु राखिहैं तव अपराध बिसारि ॥

राम चरणपंकज उर धरहू । लंका अचल राज तुम करहू ।
ऋषि पुलस्तियश बिमल मयंका । तेहि कहं जनि होसि कलंका
राम नाम बिनु गिरा न सोहा । देखु बिचारि त्यागि मद मोहा
बसन हीन नहिं सोह सुरारी । सब भूषण भूषित बर नारी ।
राम बिमुख संपति प्रभुताई । जाइ रही पाई बिनु पाई ।
सजल मूल जिन्हि सरिता नाहीं । बरषि गये पुनि तबहिं सुखाहीं
सुनु दशकंठ कहौं पन रोपी । राम बिमुख बाता नहिं कोपी
शंकर सहस बिष्णु अज तोही । सकहिं न राखि राम कर द्रोही

दो॰ मोह मूल बहु शूलप्रद त्यागहु तात अभिमान
भजहु राम रघुनायकहि कृपासिंधु भगवान ॥

यद्यपि कही कपिअति हित बानी । भक्ति बिबेक बिरति नय सानी
बोला बिहंसि महा अभिमानी । मिला हमहिं कपि गुरु बड़ ज्ञानी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

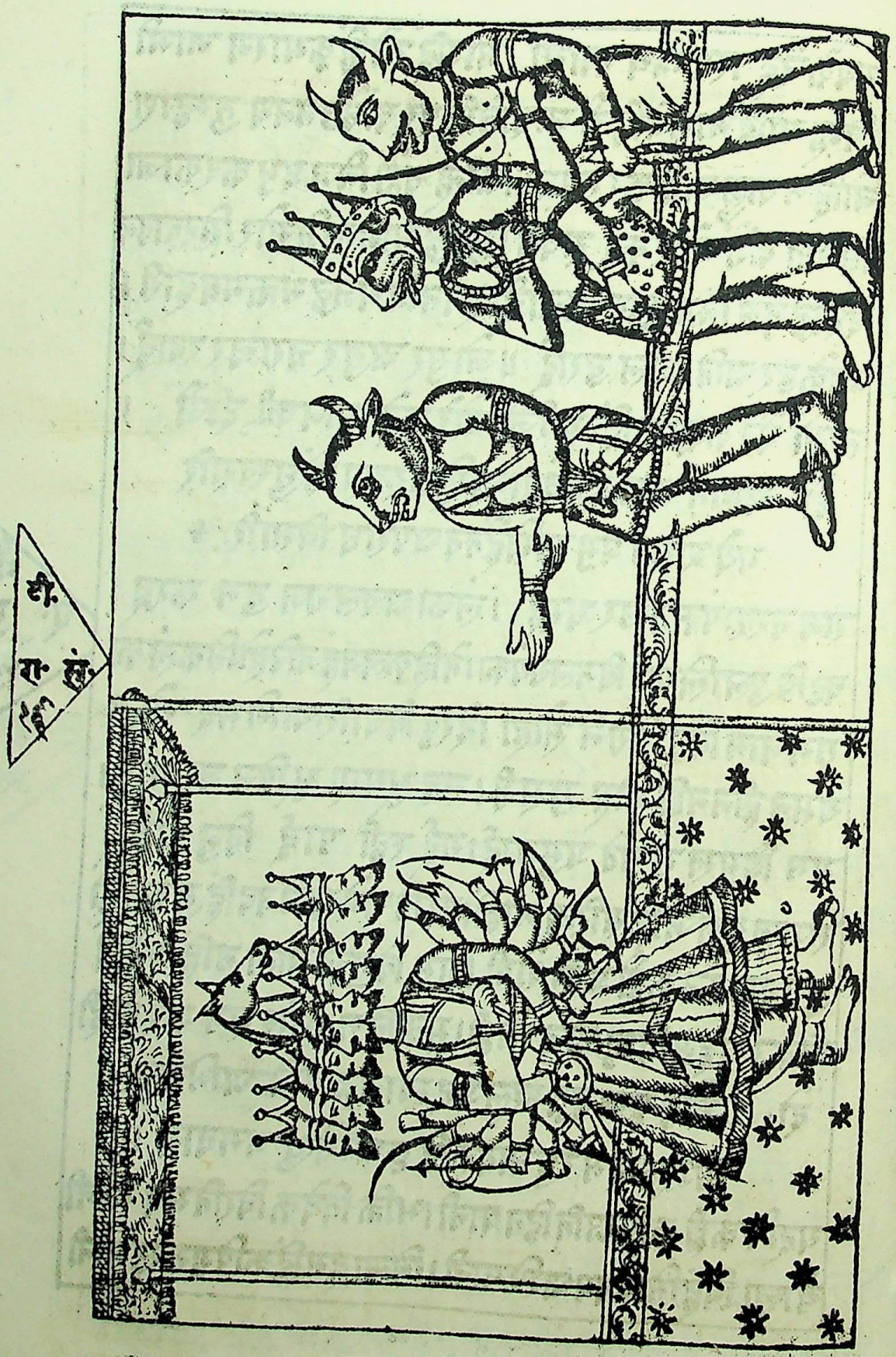

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मृत्यु निकट आई खल तोही। लागेसि अधम सिखावन मोही
उलटा होइ कहा हनुमाना। मति भ्रम तोरि प्रगट मैं जाना
सुनि कपि बचन बहुत खिसियाना। बेगि न हरहु मूढ़ कर प्राना
सुनत निशाचर मारन धाये। सचिवन्ह सहित विभीषण आये
नाइ शीश करि बिनय बहूता। नीति बिरोध न मारिय दूता
आनदंड कछु करिय गुसाईं। सबही कहा मंत्र भल भाई।
सुनत विहंसि बोला दशकंधर। अंग भंग करि पठवह बंदर।

दो॰ कपि कर ममता पूंछपर सबहिं कहा समुझाइ
तेल बोरि पट बांधि पुनि पावक देहु लगाइ

पूंछ हीन बंदर जब जाइहि। तब शठ निज नायहिं लेआइहि
जिन्हकी कीन्हेसि अमितबड़ाई। देखौं धौं तिन्हकी प्रभुताई।
बचन सुनत कपि मन मुसुकाना। भइ सहाय शारद मैं जाना
यातु धान सुनि रावण बचना। लागे रचन मूढ़ सोइ रचना
रहा न नगर बसन घृत तेला। बाढ़ी पूंछ कीन्ह कपि खेला
कौतुक कहं आये पुर बासी। मारहिं चरण करहिं बहु हांसी
बाजहिं ढोल देहिं सब तारी। नगर फेरि पुनि पूंछ प्रजारी
पावक जरत देख हनुमन्ता। भयउ परम लघुरूप तुरन्ता
निबुकि चढ़ेउ पुनि कनक अटारी। भई सभीत निशाचर नारी

दो॰ हरि प्रेरित तेहि अवसर चले मरुत उनचास
अट्टहास करि गर्जा कपि बढ़ि लाग अकास

देह बिशाल परम हरुआई। मंदिर तें मंदिर चढ़ि जाई

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जरे नगर भे लोग बिहाला । झपट लपट बहु कोट कराला
तात मातु सब करहिं पुकारा । इहि अवसर को हमहिं उबारा
हम जो कहा यह कपि नहिं होई । बानर रूप धरे सुर कोई ।
साधु अवज्ञा कर फल ऐसा । जरे नगर अनाथ कर जैसा
जारा जगर निमिषइक माहीं । एक बिभीषण कौ गृह नाहीं
जाकर भक्त अनल जेइ सिरजा । जरा न सो तेहि कारण गिरजा
उलटि पलटि लंका कपि जारी । कूदि परा तब सिंधु मंझारी ।

दो॰ पूंछ बुझाई खोइ श्रम धरि लघु रूप बहोरि
जनक सुता के आगे ठाढ़ भयउ कर जोरि ।

मातु मोहि दीजै कछु चीन्हा । जैसे रघुनायक मोहि दीन्हा
चूड़ामणि उतारि तब दयऊ । हर्ष समेत पवन सुत लयऊ
कहेहु तात अस मोर प्रणामा । सब प्रकार प्रभु पूरण कामा
दीन दयाल बिरद संभारी । हरहु नाथ मम संकट भारी
तात शक्र सुत कथा सुनायेहु । बाण प्रताप प्रभुहि समुझायेहु
मास दिवस महं नाथ न आये । तौ पुनि मोहि जियत नहिं पावे
कहु कपि केहि बिधि राखौं प्राना । तुमहूं तात कहत हहु जाना
तुमहि देखि शीतल भइ छाती । पुनि मोकहं सोइ दिन सोइ राती

दो॰ जनक सुतहिं समुझाय करि बहु बिधि धीरज दीन्ह
चरण कमल शिर नाइ करि गमन राम पहं कीन्ह

चलत महाधुनि गरजेउ भारी । गर्भ स्रवेउ सुनि निशिचर नारी
लांघि सिंधु इहि पारहिं आवा । शब्द किल किला कपिन्ह सुनावा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हरषे सब बिलोकि हनुमाना। नूतन जन्म कपिन तब जाना
मुख प्रसन्न तन तेज बिराजा। कीन्हेसि रामचंद्र कर काजा
मिले सकल अति भये सुखारी। तलफत मीन पाव जिमि बारी
चले हरषि रघुनायक पासा। पूछत कहत नवल इतिहासा
तब मधुबन भीतर सब आये। अंगद सहित मधुर फल खाये
रखवारे जब बरजन लागे। मुष्टि प्रहार हरत सब भागे

दो॰ जाइ पुकारे सकल तब बन उजार जुवराज
सुनि सुग्रीव हरषि कपि करि आये प्रभु काज

जो न होति सीता सुधि पाई। मधुबन के फल को सकि खाई
एहि बिधि मन बिचार करराजा। आइ गये कपि सहित समाजा
आइ सबन्हि नावा पद सीसा। मिलेउ सबन्हि अति प्रीति कपीसा
पूछेउ कुसल कुसल पद देखी। राम कृपा भा काज बिसेषी
नाथ काज कीन्हेउ हनुमाना। राखे सकल कपिन्ह के प्राना
सुनि सुग्रीव बहुरि तेहि मिलेऊ। कपिन्ह सहित रघुपति पहिं चलेऊ
राम कपिन्ह जब आवत देखा। किये काज मन हर्ष बिसेषा
फटिक सिला बैठे दोउ भाई। परे सकल कपि चरनन्हि जाई

दो॰ प्रीति सहित सब भेंटे रघुपति करुना पुंज
पूछी कुसल नाथ अब कुसल देखि पद कंज

जामवंत कह सुनु रघुराया। जा पर नाथ करहु तुम दाया॥
ताहि सदा सुभ कुसल निरंतर। सुर नर मुनि प्रसन्न ता ऊपर
सोइ बिजयी बिनयी गुन सागर। तासु सुजस त्रैलोक उजागर

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रभुकी कृपा भएउ सब काजू। जन्म हमार सुफल भा आजू
नाथ पवन सुत कीन्ह जो करणी। सहसमुखन सो जाइ न बरणी
पवन तनय के चरित सुहाये। जामवंत रघुपतिहि सुनाये॥
सुनत कृपानिधि मन अति भाये। पुनि हनुमान हरषि उर लाये
कहहु तात केहि भांति जानकी। रहति करति रक्षा सुप्राणकी

दो. नाम पाहरू दिवस निशि ध्यान तुम्हार कपाट
लोचन निज पद यंत्रिका जाहिं प्राण केहि वाट

चलत मोहि चूड़ा मणि दीन्ही। रघुपति हृदय लाइ सोइ लीन्ही
नाथ युगल लोचन भरि वारी। बचन कहे कछु जनक दुलारी
अनुज समेत गहेहु प्रभु चरणा। दीनबंधु प्रणतारति हरणा
मन क्रम बचन चरण अनुरागी। केहि अपराध नाथ मोहि त्यागी
अवगुण एक मोर मैं माना। बिछुरत प्राण न कीन्ह पयाना
नाथ सो नयनन्हि कर अपराधा। निसरत प्राण करहिं हठबाधा
बिरह अगिनि तनतूल समीरा। स्वास जरै छण माहिं शरीरा
नैन अवहिं जल निज हित लागी। जरै न पाँव देह बिरहागी॥
सीता के अति बिपति बिशाला। बिनहिं कहे भल दीनदयाला

दो. निमिष निमिष करुणायतन जाहि कलप सम बीत
बेगि चलिय प्रभु आनिये भुजबल खलदल जीत

सुनि सीता दुख प्रभु सुख अयना। भरि आये जल राजिव नयना॥
बचन कायमन मम गति जाही। सपने बादिय बिपति कि ताही
कह हनुमंत बिपति प्रभु सोई। जब तव सुमरण भजन न होई

ही. ए. सं. २०

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

केतिकबात प्रभु यातु धानकी। रिपुहि जीति आनिये जानकी
सुन कपि तोहि समान उपकारी। नहिं कोउ सुरनर मुनितनुधारी
प्रति उपकार करौं का तोरा। सन्मुख होइ न सकत मन मोरा
सुन सुत तोहि उरिण मैं नाहीं। देखेउं करि बिचार मन माहीं
पुनि पुनि कपिहि चितव सुरत्राता। लोचन नीर पुलक अति गाता

दो॰ सुन प्रभु बचन बिलोकि मुख गात हरषि हनुमंत
चरण परेउ प्रेमाकुल त्राहि त्राहि भगवंत

बार बार प्रभु चहै उठावा। प्रेम मगन तेहि उठब न भावा
प्रभु कर पंकज कपि के शीशा। सुमिरि सो दशा मगन गौरीशा
सावधान मन पुनि कर शंकर। लागे कहन कथा अति सुंदर
कपि उठाइ प्रभु हृदय लगावा। कर गहि परम निकट बैठावा
कह कपि रावण पालित लंका। केहि बिधि दहेउ दुर्ग अति बंका
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना। बोला बचन बिगत अभिमाना
साखा मृग कै बड़ि मनुसाई। साखा ते साखा पर जाई ॥
नाघि सिंधु हाटक पुर जारा। निशिचर गण बधि बिपिन उजारा
सो सब तव प्रताप रघुराई। नाथ न कछू मोरि प्रभुताई।

दो॰ ता कहं प्रभु कछु अगम नहिं जा पर तुम अनुकूल
तव प्रताप बड़वा नलहि जारि सकै खल तूल

नाथ भक्ति अति सुख दायनी। देहु कृपा करि अनपायनी
सुनि प्रभु परम सरल कपि बानी। एवमस्तु तब कहेउ भवानी
उमा राम सुभाव जेहि जाना। ताहि भजन तजि भाव न आना

टी॰ रा॰ सुं॰ २१

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यह संवाद जासु उर आवा। रघुपति चरण भक्ति सो पावा
सुनि प्रभु बचन कहहिं कपिबृंदा। जय जय जय कृपाल सुखकंदा
तब रघुपति कपिपतिहि बुलावा। कहा चलै कर करहु बनावा
अब बिलंब केहि कारण कीजै। तुरत कपिन्ह कहँ आयसु दीजै
कौतुक देखि सुमन बहु बरषी। नभ ते भवन चले सुर हरषी

दो॰ कपिपति बेगि बोलाए आए जूथप जूथ
नाना बरण अतुल बल बानर भालु बरूथ

प्रभु पद पंकज नावहिं सीसा। गर्जहिं भालु महाबल कीसा
देखी राम सकल कपि सेना। चितइ कृपा करि राजिव नैना
राम कृपा बल पाइ कपिंदा। भए पच्छयुत मनहुँ गिरिंदा
हरषि राम तब कीन्ह पयाना। सगुन भए सुंदर सुभ नाना
जासु सकल मंगलमय कीती। तासु पयान सगुन यह नीती
प्रभु पयान जाना बैदेही। फरकि बाम अंग जनु कहि देही
जोइ जोइ सगुन जानकिहि होई। असगुन भयउ रावणहिं सोई
चला कटक को बरणै पारा। गर्जहिं बानर भालु अपारा॥
नख आयुध गिरि पादपधारी। चले गगन महि इच्छाचारी
केहरिनाद भालु कपि करहीं। डगमगाहिं दिग्गज चिक्करहीं

छं॰ चिक्करहिं दिग्गज डोल महि गिरि लोल सागर खर भरे
मन हरष सभ गंधर्ब सुर मुनि नाग किन्नर दुख टरे॥
कटकटहिं मर्कट बिकट भट बहु कोटि कोटिन्ह धावहीं॥
जय राम प्रबल प्रताप कोसलनाथ गुण गन गावहीं॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कहि सकल भार उदार अहिपति बार बारहिं मोहई
गहि दसन पुनि पुनि कमठ पीठ कठोर सो किमि सोहई
रघुबीर रुचिर प्रयान प्रस्थिति जानि परम सुहावनी
जनु कमठ खर्पर सर्पराजसो लिखत अबिचल पावनी
दो॰ एहि बिधि जाइ कृपानिधि उतरे सागर तीर॥
जहं तहं लागे खान फल भालु बिपुल कपि बीर
उहां निसाचर रहहिं ससंका। जब ते जारि गयउ कपि लंका
निज निज गृह सब करहिं बिचारा। नहिं निसिचर कुल केर उबारा
जासु दूत बल बरणि न जाई। तेहि आएं पुर कवन भलाई।
दूतन्ह सन सुनि पुरजन बानी। मंदोदरी अधिक अकुलानी॥
रहसि जोरि कर पति पग लागी। बोली बचन नीति रस पागी
कंत करष हरि सन परिहरहू। मोर कहा अति हित हियं धरहू
समुझत जासु दूत कै करनी। स्रवहिं गर्भ रजनीचर घरनी
तासु नारि निज सचिव बोलाई। पठवहु कंत जो चहहु भलाई।
तव कुल कमल बिपिन दुखदाई। सीता सीत निसा सम आई
सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हे। हित न तुम्हार संभु अज कीन्हे
दो॰ राम बान अहि गण सरिस निकर निसाचर भेक
जब लगि ग्रसत न तब लगि जतन करहु तजि टेक
श्रवण सुनत शठता करि बानी। बिहंसा जगत बिदित अभिमानी
सभय सुभाव नारि कर साचा। मंगल महं भय मन अति कांचा
जो आवै मरकट कटकाई। जिअहिं बिचारे निसिचर खाई

कंपहिं लोकप जाके त्रासा ॥ जासु नारि सभीत बड़ हासा
अस कहि लाहि बिहंसि उरलाई। चलेउ सभा ममता अधिकाई
मंदोदरी हृदय कर चिंता ॥ भएउ कंत पर बिधि बिपरीता
बैठेउ सभा खबरि असि पाई। सिंधु पार सेना सब आई ॥
बूझेसि सचिव उचित मत कहहू। ते सब हसे मष्ट करि रहहू।
जितेउ सुरासुर तब श्रम नाहीं। नर बानरकेहि लेखे माहीं
दो. सचिव बैद गुर तीन जो प्रिय बोलहिं भय आस
राज धर्म तन तीनि कर होइ बेगही नास ॥
सोइ रावण कहं बनी सहाई। अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई
अवसर जानि बिभीषण आवा। भ्राता चरण सीस तेहि नावा
पुनि सिर नाइ बैठ निज आसन। बोला बचन पाइ अनुशासन
जो कृपाल पूछेहु मोहि बाता। मति अनुरूप कहौं हित ताता
जो आपन चाहहु कल्याना। सुयश सुमति शुभगति सुखनाना
सो परनारि लिलार गोसांई। तजै चौथि चंदा की नाईं ॥
चौदह भुवन एक पति होई। भूत द्रोह तिष्ठै नहिं सोई ॥
गुण सागर नागर नर जोऊ। अलप लोभ भल कहै न कोऊ
दो. काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक कर पंथ
सब परिहर रघुबीरहिं भजहु भजहिं जेहि संत
तात राम नहिं नर भूपाला। भुवनेश्वर कालहु कर काला
ब्रह्म अनामय अज भगवंता। व्यापक अजित अनादि अनंता
गो द्विज धेनु देव हित कारी। कृपासिंधु मानुष तनु धारी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जन रंजन भंजन खल व्राता । बेद धर्म रक्षक सुर भ्राता ।
ताहि बयरु तजि नाइय माथा । प्रणतारत भंजन रघुनाथा
देहु नाथ प्रभु कहं बैदेही । भजहु राम बिनु काम सनेही
सरण गए प्रभु ताहु न त्यागा । बिश्वद्रोह कृत अघ जेहि लागा
जासु नाम त्रय ताप नसावन । होइ प्रभु प्रगट समुझि जिय रावन

दो॰ बार बार पद लागउं बिनय करौं दशशीश ॥
परिहर सान मोह मद भजहु कौशला धीश ॥
मुनि पुलस्ति निज शिष्य सन कह पठई यह बात
तुरत सो मैं तुम सन कही पाइ सुअवसर तात

माल्यवंत अति सचिव सयाना । तासु बचन सुनि अति सुख माना
तात अनुज तव नीति बिभूषण । सो उर धरहु जो कहत बिभीषण
रिपु उत्कर्ष कहत शठ दोऊ । दूरि न करहु इहां ते कोऊ
माल्यवंत गृह गएउ वहोरी । कहइ बिभीषण पुनि कर जोरी
सुमति कुमति सब के उर रहई । नाथ पुराण निगम अस कहई
जहां सुमति तहं संपति नाना । जहां कुमति तहं बिपति निदाना
तव उर कुमति बसी बिपरीती । हित अनहित मानहु रिपु प्रीती
काल रात्रि निशिचर कुल केरी । तेहि सीता पर प्रीति घनेरी

दो॰ तात चरण गहि मांगौ राखहु मोर दुलार
सीता देहु राम कहं अति हित होइ तुम्हार

बुध पुराण श्रुति सम्मत बानी । कही बिभीषण नीति बखानी
सुनत दशानन उठा रिसाई । खल तोहि निकट मृत्यु अब आई

टी॰
रा॰ सु॰
२५

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जियसि सदा शठ मोर जियावा। रिपु कर पक्ष सदा तोहि भावा।
कहसि न खल अस को जग माहीं। भुजबल जेहि जीता मैं नाहीं
मम पुर बसि तपसिन्ह सन प्रीती। शठ मिलु जाइ तिन्हहिं कहु नीती
अस कह कीन्हेसि चरण प्रहारा। अनुज गहे पद बारहिं बारा
तुम पितु सरिस भले मोहि मारा। राम भजे हित होइ तुम्हारा
उमा संत कै यहइ बड़ाई। मंद करत जो करै भलाई॥
सचिव संग लै नभ पथ गयऊ। सबहि सुनाय कहत अस भयऊ
दो॰ राम सत्य सकल्प प्रभु सभा काल बस तोरि॥
मैं रघुबीर शरण अब जाउं देहु जनि खोरि
अस कहि चला बिभीषण जबहीं। आयु हीन भये निशिचर तबहीं
साधु अवज्ञा तुरत भवानी। कर कल्याण अखिल कर हानी
रावण जबहि बिभीषण त्यागा। भएउ बिभव बिनु तबहि अभागा
चलेउ हरषि रघुनायक पाहीं। करत मनोरथ बहु मन माहीं
देखिहौं जाइ चरण जलजाता। अरुण मृदुल सेवक सुखदाता
जे पद परसि तरी ऋषि नारी। दंडक कानन पावन कारी।
जे पद जनक सुता उर लाये। कपट कुरंग संग धर धाये
हर उर सर सरोज पद जोई। अहो भाग्य मैं देखब सोई॥
दो॰ जिन्ह पायन्ह की पादुका भरत रहे मन लाय
ते पद आज बिलोकिहौं इन्ह नयनन सों जाय
एहि बिधि करत सप्रेम बिचारा। आएउ सपदि सिंधु के पारा
कपिन्ह बिभीषण आवत देषा। जाना कोउ रिपु दूत बिशेषा

लंका का राज्य को तिलक अति न सुजान संकोच ते अधिक षोड़स उपचार आचरण किये तुरते

टी॰ रा॰ सुं॰ २६

राज तिलक दिये तहां बिभीषण उक्ति नीति मान समुद्र को सग रघुबन ते उतप त्रिजानि

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नाहि रावि कपीश पहं आये। समाचार सब नाहि सुनाये
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई। आवा मिलन दशानन भाई
कह प्रभु सखा बूझिये काहा। कहै कपीश सुनहु नरनाहा
जानि न जाइ निशाचर माया। कामरूप केहि कारण आया
भेद हमार लेन शठ आवा। राखिय बांधि मोहि अस भावा
सखा नीति तुम नीक बिचारी। मम प्रण शरणागत भयहारी
सुनि प्रभु वचन हरष हनुमाना। शरणागत बत्सल भगवाना
दो॰ शरणागत कह जे तजहिं निज अनहित अनुमानि
ते नर पावर पाप मय तिन्हहिं बिलोकत हानि ॥
कोटि बिप्र बध लागहिं जाहू। आये शरण तजहुं नहिं ताहू
सन्मुख होइ जीव मोहि जबहीं। जन्म कोटि अघ नाशहिं तबही
पापवंत कर सहज सुभाऊ। भजन मोर तेहि भाव न काऊ
जो पै दुष्ट हृदय सो होई। मोरे सन्मुख आव कि सोई
निर्मल मन जन सो मोहि पावा। मोहि कपट छल छिद्र न भावा
भेद लेन पठवा दश शीशा। तबहुं न कछु भय हानि कपीशा
जग महं सखा निशाचर जेते। लक्ष्मण हनहिं निमिष महं तेते
जो सभीत आवा शरणाई। रखिहौं ताहि प्राण की नाई
दो॰ उभय भांति तेहि आनहु हंसि कह कृपा निकेत
जय कृपाल कहि कपि चले अंगद हनू समेत
सादर तेहि आगे करि बानर। चले जहां रघुपति करुणाकर
दूरहि तें देखे दोउ भ्राता। नयनानंद दान के दाता ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बहुरि राम छबि धाम बिलोकी। रहे ठटुकि एकटक पल रोकी॥
भुज प्रलंब कंजारुण लोचन। स्यामल गात प्रणतभयमोचन
सिंहकंध आयत उर सोहा। आनन अमित मदन मन मोहा
नयन नीर पुलकित अति गाता। मन धरि धीर कही मृदु बाता
नाथ दशानन कर मैं भ्राता। निशिचर वंश जन्म सुरत्राता
सहज पाप प्रिय तामस देहा। यथा उलूकहि तम पर नेहा
दो॰ श्रवण सुयश सुनि आएउं प्रभु भंजन भव भीर
त्राहि त्राहि आरतिहरण शरण सुखद रघुबीर
अस कहि करत दंडवत देखा। तुरत उठे प्रभु हर्ष बिशेषा
दीन बचन सुनि मुनि मन भाता। भुज बिशाल गहि हृदय लगाता
अनुज सहित मिल ढिग बैठारी। बोले बचन भक्तिभय हारी।
कहु लंकेश सहित परिवारा। कुशल कुठाहर बास तुम्हारा
खल मंडली बसहु दिन राती। सखा धर्म निबहै केहि भांती
मैं जानौं तुम्हार सब रीती। अति नय निपुण न भाव अनीती
बरु भल बास नरक कर ताता। दुष्ट संग जनि देइ बिधाता
अब पद देखि कुशल रघुराया। जो तुम कीन्ह जानि जन दाया
दो॰ तब लगि कुशल न जीव कहं सपनेहु मन बिश्राम
जब लगि भजत न राम कहं शोक धाम तजि काम
तब लगि हृदय बसत खल नाना। लोभ मोह मच्छर मद माना
जब लगि उर न बसत रघुनाथा। धरे चाप शायक कटि भाथा
ममता तरुण तमिर अंधियारी। राग द्वेष उलूक सुखकारी

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जबलगि बसति जीव उर माहीं। जबलगि प्रभु प्रताप रवि नाहीं
अब मैं कुशल मिटे भय भारे। देखि राम पद कमल तुम्हारे॥
तुम कृपाल जा पर अनुकूला। ताहि न व्याप त्रिविध भव शूला
मैं निशिचर अति अधम सुभाऊ। सुभ आचरण कीन्ह नहिं काऊ
जासु रूप मुनि ध्यान न आवा। तेहि प्रभु हरषि हृदय मोहि लावा॥

दो॰ अहोभाग्य मम अमित अति रामकृपा सुख पुंज
देखेउं नयन विरंचि शिव सेव्य युगल पद कंज

सुनहु सखा निज कहउं सुभाऊ। जानुभुशुंडि शंभु गिरिजाऊ
जो नर होइ चराचर द्रोही। आवै शरण सभय तकि मोही
तजि मद मोह कपट छल नाना। करौं सद्य तेहि साधु समाना
जननी जनक बंधु सुत दारा। तनु धनु भवन सुहृद परिवारा
सबके ममता ताग बटोरी। मम पद मनहिं बांध बर डोरी
समदरशी कछु इच्छा नाहीं। हरष शोक भय नहिं मन माहीं
अस सज्जन मम उर बस कैसे। लोभी हृदय बसै धन जैसे॥
तुम सारिखे संत प्रिय मोरे। धरौं देह नहिं आन निहोरे॥

दो॰ सगुण उपासक परम हित निरत नीति दृढ़ नेम
ते नर प्राण समान मोहि जिन्ह के द्विज पद प्रेम

सुन लंकेश सकल गुण तोरे। ताते तुम्ह अति सय प्रिय मोरे
राम बचन सुन बानर यूथा। सकल कहहिं जय कृपा बरूथा
सुनत बिभीषण प्रभु के बानी। नहिं अघात श्रवणामृत जानी
पद अंबुज गहि बारहिं बारा। हृदय समात न प्रेम अपारा

बहुरि राम छबि धाम बिलोकी। रहे ठटुकि एक टक पल रोकी॥
भुज प्रलंब कंजारुण लोचन। श्यामल गात प्रणत भयमोचन
सिंहकंध आयत उर सोहा। आनन अमित मदन मन मोहा
नयन नीर पुलकित अतिगाता। मन धरि धीर कही मृदु बाता
नाथ दशानन कर मैं भ्राता। निशिचर वंश जन्म सुर त्राता
सहज पाप प्रिय तामस देहा। यथा उलूकहि तम पर नेहा
दो॰ श्रवण सुयश सुनि आएउं प्रभु भंजन भव भीर
त्राहि त्राहि आरतिहरण शरण सुखद रघुबीर
अस कहि करत दंडवत देषा। तुरत उठे प्रभु हर्ष बिशेषा
दीन बचन सुनि मुनि मन भावा। भुज बिशाल गहि हृदय लगावा
अनुज सहित मिल ढिग बैठारी। बोले बचन भक्ति भय हारी।
कहु लंकेश सहित परिवारा। कुशल कुठाहर बास तुम्हारा
खल मंडली बसहु दिन राती। सखा धर्म निबहै केहि भांती
मैं जानौं तुम्हार सब रीती। अतिसय निपुण न भाव अनीती
बरु भल बास नरक कर ताता। दुष्ट संग जनि देइ बिधाता
अब पद देखि कुशल रघुराया। जो तुम कीन्ह जानि जनदाया
दो॰ तब लगि कुशल न जीव कहं सपनेहु मन बिश्राम
जब लगि भजन न राम कहं शोक धाम तजि काम
तब लगि हृदय बसत खल नाना। लोभ मोह मत्सर मद माना
जब लगि उर न बसत रघुनाथा। धरे चाप शायक कटि भाथा
ममता तरुण तिमिर अंधियारी। राग द्वेष उलूक सुखकारी

निरादर तें रावण बाम हाथ में लिये अरु बाने कटक बानर को अधिक बरनन कियो अरु हनुमान प्रभु समीप दीनता

टी॰ रा॰ सुं॰ २८

में रहे हेतु सबतें लघु कह्यो अरु दंभ सभा नीति उपदेशे ताड़ित भये अगस्त्य शाप तें

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लवलगि वसति जीव उर माहीं। जबलगि प्रभु प्रताप रवि नाहीं
अब मैं कुशल मिटे भय भारे। देखि राम पद कमल तुम्हारे॥
तुम कृपाल जापर अनुकूला। तेहि न व्याप त्रिविध भव शूला
मैं निशिचर अति अधम सुभाऊ। शुभ आचरण कीन्ह नहिं काऊ
जासु रूप मुनि ध्यान न आवा। तेहि प्रभु हरषि हृदय मोहि लावा॥
दो॰ अहोभाग्य मम अमित अति रामकृपा सुख पुंज
देखेउं नयन विरंचि शिव सेव्य युगल पद कंज
सुनहु सखा निज कहउं सुभाऊ। जानुभुशुंडि शंभु गिरिजाऊ
जो नर होइ चराचर द्रोही। आवै शरण सभय तकि मोही
तजि मद मोह कपट छल नाना। करौं सद्य तेहि साधु समाना
जननी जनक बंधु सुत दारा। तनु धनु भवन सुहृद परिवारा
सबके ममता ताग बटोरी। मम पद मनहिं बांध बर डोरी
समदरशी कछु इच्छा नाहीं। हरष शोक भय नहिं मन माहीं
अस सज्जन मम उर बस कैसे। लोभी हृदय बसै धन जैसे॥
तुम सारिखे संत प्रिय मोरे। धरौं देह नहिं आन निहोरे॥
दो॰ सगुण उपासक परम हित निरत नीति दृढ़ नेम
ते नर प्राण समान मोहि जिन्ह के द्विज पद प्रेम
सुन लंकेश सकल गुण तोरे। ताते तुम्ह अति सय प्रिय मोरे
राम वचन सुन बानर यूथा। सकल कहहिं जय कृपा वरूथा
सुनत बिभीषण प्रभु के बानी। नहिं अघात श्रवणामृत जानी
पद अंबुज गहि बारहिं बारा। हृदय समात न प्रेम अपारा

सुनहु देव सचराचर स्वामी । प्रणतपाल उर अंतर यामी ॥
उरकछु प्रथम बासना रही । प्रभुपद प्रीति सरित सो बही ।
अब कृपाल निज भक्ति पावनी । देहु सदा शिव मन भावनी ॥
एवमस्तु कहि प्रभु रणधीरा । मांगा तुरत सिंधु कर नीरा ॥
यद्यपि सखा तव इच्छा नाहीं । मम दरशन अमोघ जग माहीं
अस कहि राम तिलक तेहि सारा । सुमन वृष्टि नभभई अपारा ॥

दो· रावण क्रोध अनल निज स्वास समीर प्रचंड ।
जरत बिभीषण राखेउ दीन्हेउ राज अखंड ।
जो संपति शिव रावणहिं दीन्ह दिये दशमाथ
सोइ संपदा बिभीषणहिं सकुच दीन्ह रघुनाथ

अस प्रभु छांड़ि भजहिंजे आना । ते नर पशु बिनु पूंछ बिषाना
निज जन जानि ताहि अपनावा । प्रभु सुभाव कपिकुल मन भावा
पुनि सर्वज्ञ सर्व उर बासी ॥ । सर्वरूप सब रहित उदासी
बोले बचन नीति प्रतिपालक । कारण मनुज दनुज कुल घालक
सुनु कपीश लंकापति बीरा । केहि बिधि तरिय जलधि गंभीरा
संकुल मकर उरग झष जाती । अति अगाध दुस्तर सब भांती
कह लंकेश सुनहु रघुनायक । कोटि सिंधु सोषक तव सायक
यद्यपि तदपि नीति अस गाई । बिनय करिय सागर पहं जाई

दो· प्रभु तुम्हार कुल गुरु जलधि कहिहि उपाय बिचारि
बिनु प्रयास सागर तरिहि सकल भालु कपि धारि

सखा कही तुम नीकि उपाई । करिय दैव जो होइ सहाई ॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मंत्र न यह लक्षमण मन भावा। राम बचन सुनि अति दुख पावा
नाथ दैव कर कवन भरोसा। सोषिय सिंधु करिय मन रोसा
कादर मनकर एक अधारा। दैव दैव आलसी पुकारा॥
सुनत विहंसि बोले रघुबीरा। ऐसइ करब धरहु मन धीरा॥
अस कहि प्रभु अनुजहिं समुझाई। सिंधु समीप गये रघुराई
प्रथम प्रणाम कीन्ह शिरनाई। बैठे पुनि तट दर्भ डसाई॥
जबहिं विभीषण प्रभुपहिं आये। पाछे रावण दूत पठाये॥

दो॰ सकल चरित तिन्ह देखे धरे कपट करि देह
प्रभु गुण हृदय सराहहिं शरणागत पर नेह

प्रगट बखानहिं राम सुभाऊ। अति सप्रेम गा बिसरि डराऊ
रिपु के दूत कपिन जब जाने। बांधि सकल कपीश पहं आने
कह सुग्रीव सुनहु सब बानर। अंग भंग करि पठवहु निशिचर
सुनि सुग्रीव बचन कपि धाये। बांधि कटक चहुं पास फिराये
बहु प्रकार मारण कपि लागे। दीन पुकारत तदपि न त्यागे।
जो हमार हर नासा काना। तेहि कौशिला धीश कै आना
सुनि लक्षमण सब निकट बुलाये। दयालागि हंसि तुरत छुड़ाये
रावण कर दीन्हेउ यह पाती। लक्षमण बचन बांच कुल घाती

दो॰ कहेहु मुखागर मूढ़ सन मम संदेश उदार॥
सीता देइ मिलउ नत आवा काल तुम्हार

तुरत नाइ लक्षमण पद माथा। चले दूत बरणत गुण गाथा
कहत रामयश लंका आए। रावण चरण शीश तिन्ह नाए

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बिहंसि दशानन पूछी बाता । कहसि न शुक आपन कुशलाता
पुनि कहु खबर बिभीषण केरी । जाहि मृत्यु आई अति नेरी ॥
करत राज लंका शठ त्यागा । होइहि जब कर कीट अभागा
पुनि कहु भालु कीश कटकाई । कठिन काल प्रेरित चलि आई
जिनके जीवन कर रखवारा । भयउ मृदुल चित सिंधु बिचारा
कहु तपसिन्ह कै बात बहोरी । जिन्ह के हृदय त्रास अति मोरी

दो· भई भेट की फिरि गये श्रवण सुयश सुनि मोर
कहसि न रिपु दल तेज बल बहुत चकित चित चोर

नाथ कृपा करि पूछेहु जैसें । मानहु क्रोध बचन तजि तैसें
मिला जाइ जब अनुज तुम्हारा । जातहि राम तिलक तेहि सारा
रावण दूत हमहिं सुन काना । कपिन्ह बांध दीन्हें दुख नाना
श्रवण नासिका काटन लागे । राम शपथ दीन्हेउ तब त्यागे
पूछेहु नाथ राम कटकाई । बदन कोटि शत बरणि न जाई
नाना बरण भालु कपि धारी । बिकटानन बिशाल भय कारी
जिन पुर दहेउ हतेउ सुत तोरा । सकल कपिन्ह महं तेहि बल थोरा
अमित नाम भट कठिन कराला । अमित नाग बल बिपुल बिशाला

दो· द्विबिद मयंद नील नल अंगदादि बिकटासि
दधि मुख केहरि कुमुद गय जामवंत बलरासि

एक कपि सब सुग्रीव समाना । इन सम कोटिन्ह गनै को जाना
राम कृपा अतुलित बल तिन्हहीं । तृण समान त्रैलोकहिं गिनहीं
अस मैं श्रवण सुना दशकंधर । पदम अठारह यूथप बंदर

दी. रा. सुं. ४२

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नाथ कटक महं सो कपि नाहीं। जो न तुम्हैं जीतै रण माहीं।
परम क्रोध मीजहिं सब हाथा। आयसु पै न देहिं रघुनाथा
सोखहिं सिंधु सहित झख व्याला। पूरहिं न तरु धरि कुधर विशाला
मर्दि गर्दि मिलवहिं दश शीशा। ऐसेइ बचन कहहिं सब कीशा
गर्जहिं तर्जहिं सहज अशंका। मानहुं ग्रसन चहतहहिं लंका

दो॰ सहज सूर कपि भालु सब पुनि शिर पर श्रीराम
रावण काल कोटि कहुं जीति सकहिं संग्राम

राम तेज बल बुधि बिपुलाई। शेष सहस शत सकहिं न गाई
सक सर एक सोषि शत सागर। तव भ्रातहि पूछेउ नय नागर
तासु बचन सुनि सागर पाहीं। मांगत पंथ कृपा मन माहीं
सुनत बचन बिहंसा दश शीशा। जौ असमति सहाय कृत कीशा
सहज भीरु कर बचन दिढ़ाई। सागर सन ठानी मचलाई॥
मूढ़ मृषा का करसि बड़ाई। रिपु बल बुद्धि थाह मैं पाई॥
सचिव सभीत बिभीषण जाके। बिजय बिभूति कहां लग ताके
सुनि खल बचन दूत रिस बाढ़ी। समय बिचार पत्रिका काढ़ी
राम अनुज दीन्ही यह पाती। नाथ बचाइ जुड़ावहु छाती॥
बिहंसि वाम करि लीन्हेसि रावन। सचिव बोलि शठ लाग बचावन

दो॰ बातन मनहिं रिझाय शठ जनि घालेसि कुल खीश
राम बिरोध न उबरहु शरण बिष्णु अजईश।
होउ अनुज इव मान तजि प्रभु पद पंकज भृंग॥
होइ राम शर अनल खल जनि कुल सहित पतंग

श्री॰ सु॰ रा॰

चौपाई छंद दोहादि की टीका

श्लोक॰	चौ॰	छंद	सो॰	दो॰
१	५८१	१	२	६२

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनत सभय मन मुख मुसकाई । कहत दशानन सबहि सुनाई ॥
भूमि पराकर गहत अकासा । लघु तापस कर बाग बिलासा ।
कह सुकनाथ सत्य सब बानी । समझहु छांड़ि प्रकृति अभिमानी
सुनहु वचन मम परिहर क्रोधा । नाथ राम सन तजहु बिरोधा ।
अति कोमल रघुबीर सुभाऊ । यद्यपि अखिल लोक कर राऊ ।
मिलत कृपा तुम्ह पर प्रभु करहीं । उर अपराध न एकौ धरहीं ॥
जनक सुता रघुनाथहिं दीजै । इतना कहा मोर प्रभु कीजै ॥
जब तेहि कहा देन बैदेही । चरण प्रहार कीन्ह शठ तेहीं
नाइ चरण शिर चला सो तहां । कृपा सिंधु रघुनायक जहां ॥
करि प्रणाम निज कथा सुनाई । राम कृपा आपनि गति पाई ॥
ऋषि अगस्त कर श्राप भवानी । राक्षस भएउ रहा मुनि ज्ञानी
बंदि राम पद बारहिं बारा । मुनि निज आश्रम कहं पग धारा

दो॰ बिनय न मानत जलधि जड़ गये तीन दिन बीति
बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति ॥

लक्ष्मण बाण सरासन आनू । सोखों बारिधि बिसिख कृशानू
शठ सन बिनय कुटिल सन प्रीती । सहज कृपिण सन सुंदर नीती
ममतारत सन ज्ञान कहानी । अति लोभी सन बिरति बखानी
क्रोधिहि सम कामिहि हरि कथा । ऊसर बीज बए फल यथा ॥
असकहि रघुपति बाण चढ़ावा । यह मत लक्ष्मण के मन भावा
संधानेउ प्रभु बिसिख कराला । उठी उदधि उर अंतर ज्वाला ।
मकर उरग झख गण अकुलाने । जरत जंतु जलनिधि जब जाने

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कनक थारि भरि मणि गण नाना। बिप्र रूप आयउ तजि माया
दो॰ काटे पै कदली फले कोटि यतन कोउ सींच ॥
बिनय न मान खगेश सुनु डाटे पयज नीच ॥
समय सिंधु गहि प्रभु पद केरे। छमहु नाथ सब अवगुण मोरे
गगन समीर अनल जल धरणी। इन्ह कइ नाथ सहज जड़ करणी
तव प्रेरित माया उपजाये। सृष्टि हेतु सब ग्रंथन गाये ॥
प्रभु आयसु जेहि कहं जस अहई। सो तेहि भांति रहे सुख लहई
प्रभु भल कीन्ह मोहि सिख दीन्ही। मर्यादा तुम्हारि सब कीन्ही
ढोल गंवार शूद्र पशु नारी। सकल ताड़ना के अधिकारी
प्रभु प्रताप मैं जाब सुखाई। उतरिहि कटकु न मोरि बड़ाई
प्रभु अज्ञा अपेल श्रुति गाई। करौं सो बेगि जोनु मोहि सुहाई
दो॰ सुनत बचन बिनीत अति कह कृपाल मुसुकाय
जेहि बिधि उतरै कपि कटक तात सो कहहु उपाय
नाथ नील नल कपि दोउ भाई। लरिकाई ऋषि आशिष पाई
तिन्ह के परस किये गिरि भारे। तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे
मैं पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई। करिहौं बल अनुमान सहाई
एहि बिधि नाथ पयोधि बंधाइय। जेहि यह सुयश लोक तिहुं गाइय
एहि सर मम उत्तर तट बासी। हतहु नाथ खल नर अघ रासी
सुनि कृपाल सागर मन पीरा। तुरतहि हरी राम रणधीरा ॥
देखि राम बल पौरुष भारी। हरषि पयोनिधि भयो सुखारी
सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा। चरण बंदि पाथोधि सिधावा।

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

छं· निज भवन गवनेउ सिंधु श्री रघुपति हि यह मति भायऊ
यह चरित कलि मल हरण जस मति दास तुलसी गायऊ
सुख भवन संशय दमन समन बिखाद रघुपति गुण गना
तजि सकल आस भरोस गावहिं सुनहिं संतत सुठ मना
दो· सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुण गान
सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिंधु बिना जल यान
इति श्री राम चरित मानसे सकल कलि कलुष बिध्वंस
ने ज्ञान बैराग्य संपादनो नाम पंचमः सोपानः सुंदर काण्ड समा
प्तः हस्ताक्षर हरसोहन दास खत्री

टी·
रा· सुं·
३६

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

श्रीगणेशायनमः
अथ लंका कांड
प्रसंग अंगलि
खिते ३ श्लो. १
दो. सो. २ राम
कामारि सेव्य
मिति अरुनाथ
नाम तव सेतु लौं
अर्थ लिखतु है
राजाधिराज
रूप निज इष्ट
देव रघुवीर
जू को मैं प्रणा
म करत हौं
कैसे हैं राम जू
काम के अरि
शिव जू तिन्ह
के सेइवे योग्य
हैं अरु संसार

टी.
रा. लं.
१

लङ्का काण्डः ६

श्रीगणेशायनमः श्रीमते रामानुजायनमः श्लोक
रामं कामारि सेव्यं भव भय हरणं कालमत्तेभ सिंहं यो
गीदं ज्ञानगम्यं गुणनिधिमजितं निर्गुणं निर्विकारं माया
तीतं सुरेशखलवध निरतं ब्रह्म वृंदैकदेवं वंदे कंदावदातं
सरसिजनयनंदेव मुर्वीशरूपं १ शंखे द्वाभमतीव सुंदरत
नुं शार्दूल चर्मांवरं कालव्याल कराल भूषणधरं गंगा
शशांकप्रियं काशी शंकलि कल्मषौघशमनं कल्या

भय के नासक
और सौत रूप
मतवारे हाथी के
मारिवे को सिंह है
योगिन्ह के स्वा
श्री ज्ञान करि जान
ने योग्य सकल
गुण निधान
अजय प्राकृत गु
ण रहित और नि
र्विकार हैं पुनः
मायातें अतीत
सुरन्ह के ईश
खलन के वध
में तत्परब्रा
ह्मण वृंद के
मुख्य पूजनी
य हैं नना मे
वचन निर्मल
अरु कमल
सम विशाल
सोवनहैं तिन्हके
२॥ मू. शंखे
द्वाभमिति॥

ए कल्पद्रुमं सौमीढ्यं गिरिजापतिं गुण निधिं ची
शंकरं कामहम् २ योददाति सतां शंभुः कैवल्य
मपि दुर्लभं खलानां दंड कृद्यो सौ शंकरः शंतनो
तुये ॥३॥

दो॰ लवनिमेष परमाणुयुग बरष कल्प सर चंड
भजहि न मन तेहि रामकहं कालजासुकोदंड

सो॰ सिंधु बचन सुनिराम सचिवबोलिप्रभु असकहेउ
अब बिलंबकेहि काम करहु सेतुउतरहि कटकु
सुनहु भानुकुलकेतु जामवंत करजोरि कह
नाथ नाम तव सेतु नरचढ़ि भव सागर तरहिं १

यह लघुजलधि तरत कतबारा। अस सुनिपुनि कह पवनकुमारा
प्रभु प्रताप बड़वानल भारी। सोखेउ प्रथम पयोनिधि बारी
तव रिपु नारि रुदन जल धारा। भरेउ बहोरि भयउ तेहि खारा
सुनि अति उकि पवनसुत केरी। हरषे कपि रघुपति तन हेरी ॥
जामवंत बोले दोउ भाई ॥ । नलनीलहि सब कथा सुनाई
राम प्रताप सुमिरि मन माहीं। करहु सेतु प्रयास कछु नाहीं
बोलि लिये कपि निकर बहोरी। सकल सुनहु बिनती कछु मोरी
राम चरण पंकज उर धरहू । कौतुक एक भालु कपि करहू
धावहु मरकट बिकट बरूथा। आनहु बिटप गिरिन्ह केयूथा
सुनि कपि भालु चले किरहूहा। जय रघुबीर प्रताप समूहा
दो॰ अति उतंग गिरि पादप लीलहिं लेहिं उठाइ

आनिदेहिं नलनीलहिं रचहिं ते सेतु बनाइ
शैल बिशाल आनकपिदेहीं। कंदुकइव नलनील ते लेहीं
देखि सेतु अति सुंदर रचना। बिहंसि कृपानिधि बोले बचना
परम रम्य उत्तम यह धरणी। महिमा अमित जाइ नहिं बरणी
करौं यहां शंभु थापना । मोरे हृदय परम कलपना ॥
सुनि कपीश बहु दूत पठाये। मुनिवर सकल बोलि लै आये
लिंग थापि विधिवत करिपूजा। शिवसमान प्रिय मोहिं न दूजा
शिव द्रोही मम भक्त कहावा। सोनर सपनेहु मोहिं न भावा
शंकर बिमुख भक्ति चह मोरी। सो नर मूढ़ मंद मति थोरी
दो· शंकर प्रिय मम द्रोही शिव द्रोही मम दास ॥
ते नर करहिं कल्प भरि घोर नरक महं वास
जो रामेश्वर दरशन करिहैं। ते तनतजि ममलोक सिधरिहैं
जो गंगाजल आनि चढ़ाइहि। सो सायुज्य मुक्ति नर पाइहि
होइ अकाम जो छलतजिसेइहि। भक्ति मोरि तेहि शंकर देइहि
मम कृत सेतु जो दरशन करिहैं। सो बिनु श्रम भवसागर तरिहैं
राम बचन सबके मन भाये । मुनिबर निज२ आश्रम आये
गिरिजा रघुपति के यह रीती। संतत करहिं पणत पर प्रीती
बांध्यो सेतु नील नल नागर। राम कृपा यश भयउ उजागर
बूड़हिं आनहिं बोरहिं जेही। भये उपल बोहित सम तेही
महिमा यह जल निधि कै बरणी। पाहन गुण न कपिन्ह कै करणी
दो· श्री रघुबीर प्रताप तें सिंधु तरे पाषाण

अहचांग्योत्तम निधि। प्रभु ह ज्ञाते जानव तत्वबद्दल स्मरण करवाह नलनीलांते हेतु कहीं यह वानर तत्व पण पाषाणविषय शिवाद्रोह नील के हेतु म्हणोनि समुद्र

रा. ची. लं. ७

लघु भेद पाषाण नर दृष्टांत ऋक्ष वानरोल्लेख नारि कविजाति मानव ऋक्षी वज्र कोंकलण्या समर्थ देवता जाति रा. रणविजय भ्र विधिवत् या पत्र वरील पार सेतुकेला

सेनाधिक्य तें
बहुते गगन पं
थ अरु चरण
जल पर पार
जातु भए नहीं
डेराकरि कपि
न को फल
इत्यादि भक्षन

टी. ए. लं. ४

की आज्ञा दई
अरु जो निशि
चर मिले ताको
बहुत नाड़ना
करते जाय रावण
त समाचार कहें
तहाँ याकुलका
न दशोमुख ते
दशानाके कनि
धि आदिलंतुम
ना॥ ५॥

तेहि मति मन्द जो राम तजि भजहिं जाइ प्रभु त्रान
बाँधि सेतु अति सुदृढ़ बनावा । देखि कृपानिधि के मन भावा
चली सेन कछु बरणि न जाई । गर्जहिं मर्कट भट समुदाई ।
सेतुबंध ढिग चढ़ि रघुराई । चितव कृपाल सिंधु बहुताई
देखन कहँ प्रभु करुणाकन्दा । प्रगट भये सब जलचर बृन्दा
मकर नक्र नाना झष ब्याला । शत योजन तन परम विशाला
ऐसेहि एक तिन्हे जे खाहीं । एकन के डर एक डराहीं ।
प्रभुहिं बिलोकहिं टरहिं न टारे । मन हर्षित सब भये सुखारे
तिन की ओट न देखिय बारी । मगन भये हरि रूप निहारी
चला कटक प्रभु आयसु पाई । को कहि सक कपि दल बिपुलाई

दो० सेतुबंध भइ भीर अति कपि नभ पन्थ उड़ाहिं
अपर जलचरन्ह ऊपर चढ़ि पारहिं जाहिं ॥

अस कौतुक बिलोकि द्वौ भाई । बिहँसि चले कृपाल रघुराई
सेन सहित उतरे रघुबीरा । कहि न जाइ कपि जूथप भीरा
सिंधु पार प्रभु डेरा कीन्हा । सकल कपिन कहँ आयसु दीन्हा
खाहु जाइ फल मूल सुहाये । सुनत भालु कपि जहँ तहँ धाये
सब तरु फरे राम हित लागी । ऋतु अनऋतु हि काल गति त्यागी
खाँहिं मधुर फल बिटप हलावहिं । लंका सन्मुख शिखर चलावहिं
जहँ कहुँ फिरत निसाचर पावहिं । घेरि सकल बहु नाच नचावहिं
दसनन्ह काटि नासिका काना । कहि प्रभु सुयश पठइहिं न बजाना
जिन्ह कर नासा कान निपाता । तिन्ह रावनहि कही सब बाता

सुनत सभय वारिधि बन्धाना । दशमुख बोलि उठा अकुलाना ।
दो० बाँध्योजलनिधि नीर निधिजलधि सिंधु वारीश ॥
सत्य तोयनिधि पंकनिधिउदधि पयोधि नदीश ॥
व्याकुलतानिज समुझ बहोरी । विहँसि गयउ गृह करिभय मोरी
मन्दोदरी सुना प्रभु आये । । कौतुकही पाथोधि बंधाये ॥
करगहि पतिहि भवन निजआनी । बोली परम मनोहर बानी ॥
चरण नाइ सिर अंचल रोपा । सुनहु बचन पिय परिहरि कोपा
नाथ बैर कीजे ताही सों । । बुधिबल जीति सकिय जाही सों
तुम्हहिं रघुपतिहि अन्तर कैसा । खल खद्योत दिवाकर जैसा ।
अति बल मधुकैटभ जिन मारे । महाबीर दिति सुत संहारे । ।
जेहि बलि बाँधि सहसभुज मारा । सोइ अवतरेउ हरण महिभारा
तासु विरोधन कीजिय नाथा । काल करम जिवजाके हाथा ।
दो० रामहिं सौंपिय जानकी नाइ कमल पद माथ ॥
सुत कहँ राज समर्पि बनजाइ भजिय रघुनाथ ।
नाथ दीन दयाल रघुराई । । बाघो सन्मुख गये न खाई ।
चाहिय करन सोसबकर बीते । तुम सुर असुर चराचर जीते ।
सन्त कहहिं अस नीति दशानन । चौथे पन जाइहि नृप कानन ।
तासु भजन कीजिय तहँ भर्त्ता । जोपालक कर्त्ता संहर्त्ता ।
सोइ रघुवीर प्रणत अनुरागी । भजहु नाथ ममता मद त्यागी
मुनिबर यत्न करहिंजेहि लागी । भूप राज तजि होंहिं विरागी ।
सोइ कोशला धीश रघुराया । आये करन तोहि पर दाया ।
जोपिय मानहुँ मोर सिखावन । सुयश होइ तिहुँपुर अति पावन

टी० रा० लं० ६

दो० अस कहि नैनन नीरभरि गहि पद कम्पित गात
नाथ भजहु रघुनाथहि अचल होइ अहि बात।

तब रावण मय सुता उठाई । कहहि लाग खल निज प्रभुताई
सुनतइं प्रिया वृथा भय माना । जग योधा को मोहिं समाना ।
बरुण कुबेर पवन यम काला । भुजबल जितेउं सकल दिगपाला
देव दनुज नर सब बस मोरे । कवन हेतु उपजा भय तोरे ।
नाना विधि तेहि कहेसि बुझाई । सभा बहोरि बैठ सो जाई । ।
सन्दोदरी हृदय अस जाना । काल बिबस उपजा अभिमाना
सभा आइ मंत्रिन्ह तेइ बूझा । करब कवन बिधि रिपु सैं जूझा
कहहिं सचिव सुनु निशिचर नाहा । बार बार प्रभु पूँछहु काहा
कहहु कवन भय करिय बिचारा । नर कपि भालु अहार हमारा ।

दो० सब के बचन श्रवण सुनि कह प्रहस्त कर जोरि
नीति बिरोध न करिय प्रभु मंत्रिन्ह मति अति थोरि

कहहिं सचिव सब ठकुर सुहाती । नाथ न पूर आव यहि भाँती
बारिधि नाँघि एक कपि आवा । तासु चरित मन महँ सब गावा
क्षुधा न रही तुमहिं तब काहू । जारत नगर कसन धरि खाहू ।
सुनत नीक आगे दुख पावा । सचिवन अस मति प्रभुहि सुनावा
जेहि बारीश बँधायेउ हेला । उतरे सैन समेत सुबेला । ।
सो जनु मनुज खाब हम भाई । बचन कहहिं सब गाल फुलाई
तात बचन मम सुनि अति आदर । जनि मन गुनहु मोंहिं कर कादर
प्रिय बानी जे सुनहिं जे कहहीं । ऐसे नर निकाय जग अहहीं ।

टी० स० लं० ७

बचन परमहित सुनत कठोरे। सुनहिं जे कहहिं ते तर प्रभु थोरे
प्रथम बसीठि पठव सुन नीती। सीता देइ करहु पुनि प्रीती ।

दो० नारि पाइ फिर जाहिं जो तौन बढ़ाइय रारि ।
नाहत सन्मुख समर महँ नाथ करिय हठ मारि

यह मत जो मानहु प्रभु मोरा। उभय प्रकार सुयश जग तोरा
सुत सन कह दश कंठ रिसाई। अस मति शठ केहि तोहिं सिखाई
अबहीं ते उर संशय होई । बेणु मूल सुत भए उघ मोई ।
सुनि पितु गिरा परुष अति घोरा। चला भवन कहि बचन कठोरा
हित मत तोहिन लागै कैसें । काल विवश कहं भेषज जैसे
संध्या समय जानि दश शीशा। भवन चले हरषत भुज बीशा
लङ्का शिखर रुचिर आगारा। अति विचित्र तहं होहिं अखारा
बैठ जाइ तिहिं मन्दिर रावन । लागे किन्नर गुण गण गावन
बाजहिं ताल पखावज वीणा। नृत्य करहिं अप्सरा प्रवीणा

दो० सुनासीर सत सरिस सों संतत करहिं बिलास
यदपि प्रबल रिपु शीश पर तदपि शोच नहिं त्रास

इहां सुबेल शैल रघुबीरा । उतरे सेन सहित अति भीरा ।
शिखर उतङ्ग एक अति देखी। परम रम्य सम शुभ्र विशेषी
तहं तरु किशलय सुमन सुहाये। लक्षमण रचि निज हाथ बनाये
तापर मृदुल रुचिर मृग छाला। तेहि आसन आसीन कृपाला
प्रभु कृत शीश कपीश उछंगा। बाम दहनि दिशि चाप निखंगा
दुहुं कर कमल सुधारत बाना। कह लंकेश मन्त्र लगि काना।

टी० ए० लं० ८

बड़ भागी अंगद हनुमाना। चरण कमल चापत विधिनाना
प्रभु पाछे लछमण बीरासन। कटि निषंग कर बाण सरासन

दो॰ एहि बिधि कृपारूप गुण धाम राम आसीन
धन्य ते नर एहि ध्यान जे रहत सदा लवलीन

पूरब दिशा बिलोकि प्रभु देखा उदित मयंक
कहत सबहि देखहु शशिहि मृगपति सरिस अशंक

पूरब दिशि गिरिगुहा निवासी। परम प्रचंड तेज बल रासी
मत्त नाग तम कुंभ बिदारी। शशि केशरी गगन बन चारी
बिथुरे नभ मुक्ताहल तारा। निशि सुंदरी केर शृंगारा॥
कह प्रभु शशि महं मेचकताई। कहहु कहा निज निज मति भाई
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई। शशि महं प्रगट भूमि के छाई
मारेहु राहु शशिहि कह कोई। उर महं परी श्यामता सोई
कोउ कह जब बिधि रति मुख कीन्हा। सार भाग शशि कर हर लीन्हा
छिद्र सो प्रगट इंदु उर माहीं। तेहि मग देखिय नभ परिछाहीं
प्रभु कह गरल बंधु शशि केरा। अति प्रिय निज उर दीन्ह बसेरा
बिष संयुत कर निकर पसारी। जारत बिरह वंत नर नारी॥

दो॰ कह हनुमंत सुनहु प्रभु शशि तुम्हार प्रिय दास
तव मूरति बिधु उर बसत सोई श्यामता भास

पवन तनय के बचन सुनि बिहंसे राम सुजान
दक्षिण दिशि अवलोकि प्रभु बोले कृपा निधान

देखि बिभीषण दक्षिण आशा घन घमंड दामिनी बिलासा

तब प्रभु सबहिं का
कौतुक किया
तहं रहा शशि के
सबको ज्ञान
गुण जान्यो
सबकी सेनकर
के की आशा पर
तबपुनः भगवान
हरि प्रभु प्रभु
दि बिभीषण के
हा नहिं संशय
नः जावत प्रभु

दो॰ रा॰ लं॰ ५

ना आश्चर्य जो
सब वानरों
अभिमान समझो
दु उपदेश को
कार अभ्यास
कार ख्यात को
काशवा दास उ
देशरहित न
ही काय तबो
जड़ चेतन सबो
गैरहैशान हंतु
ज्ञानव ६६

मधुरमधुरगरजै घन घोरा । होइ वृष्टि जनु उपल कठोरा
कहत बिभीषण सुनहु कृपाला । तड़ित न होइ न वारिद माला
लंका शिखर रुचिर आगारा । तहं दश कंधर देख अखारा
छत्र मेघडंबर शिर धारी । सोइ जनु जलद घटा अति कारी
मंदोदरी श्रवण ताटंका । सोइ प्रभुजनु दामिनी दमंका
बाजहिं ताल मृदंग अनूपा । सोइ रव मधुर सुनहु सुरभूपा
प्रभु मुसकान समुझि अभिमाना । चाप चढ़ाइ बाण संधाना
दो· छत्र मुकुट ताटंक तब हते एकही बान ॥
सब के देखत महि गिरे मरम न काहू जान
अस कौतुक करि राम सर प्रविसेउ आइ निषंग
रावण सभा ससंक सब देखि महा रस भंग
कंपन भूमि न मरुत बिशेषा । अस्त्र सस्त्र कछु नयन न देखा
सोचहिं सब निज हृदय विचारी । अस गुण अवध भयंकर भारी
दशमुख देखि सभा भय पाई । बिहंसि बचन कह युक्ति बनाई
शिरो गिरे संतत शुभ जाही । मुकुट परे कस असगुण ताही
सैन करहु निज २ गृह जाही । गवने भवन सकल शिर नाई
मंदोदरी सोच उर बसेऊ । जबते श्रवण पूर महि खसेऊ
सजल नयन कह युग कर जोरी । सुनहु प्राणपति बिनती मोरी
कंत राम बिरोध परिहरहू । जानि मनुज जनि हठ मन धरहू
दो· बिश्व रूप रघुबंश मणि करहु बचन बिश्वास
लोक कल्पना बेद कर अंग अंग प्रति जास

टी. रा. लं. १५

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पद पाताल शीश अजधामा। अपर लोक अंग अंग विश्रामा
भृकुटि बिलास भयंकर काला। नयन दिवाकर कच घन माला
जासु नास अश्वनीकुमारा। निसि अरु दिवस निमेष अपारा
श्रवण दिशा दस वेद बखानी। मारुत स्वास निगम निज बानी
अधर लोभ यम दसन कराला। माया हास बाह दिग पाला
आनन अमित अंबुपति जीहा। उतपति पालन प्रलय समीहा
रोम राजि अष्टादस भारा। अस्थि सैल सरिता नस जारा
उदर उदधि अधि गो जातना। जगमय प्रभु की बहु कल्पना

दो॰ अहंकार सिव बुद्धि अज मन ससि चित्त महान
मनुज बास सचराचर रूप राम भगवान ॥

अस बिचारि सुनु प्राणपति प्रभु सन बैर बिहाइ
प्रीति करहु रघुबीर पद मम अहि गति अजाइ

बिहंसा नारि बचन सुनि काना। अहो मोह महिमा बलवाना
नारि सुभाउ सत्य कबि कहहीं। अवगुन आठ सदा उर रहहीं
साहस अनृत चपलता माया। भय अबिबेक असौच अदाया
रिपु कर रूप सकल तैं गावा। अति बिसाल भय मोहि सुनावा
सो सब प्रिया सहज बस मोरे। समुझि परा प्रसाद अब तोरे
जानेउं प्रिया तोरि चतुराई। एहि बिधि कहेउ मोरि प्रभुताई
तब बत कही गृद्ध मृदु लोचनि। सुमुखि सुखद मुनि भय मोचनि
मंदोदरि मन महं अस ठयऊ। पियहि काल बस मतिभ्रम भयऊ

दो॰ एहि बिधि करत बिनोद बहु प्रात प्रगट दस कंध

सहज असंक लंकपति सभा गयउ मति अंध

सो॰ फूलै फलै न बेत यदपि सुधा बरषहिं जलद
मूरख हृदय न चेत जो गुरु मिलहिं बिरंचि शिव

इहां प्रात जागे रघुराई । पूछा मत सब सचिव बुलाई
कहहु बेगि का करिय उपाई । जामवंत कह पद शिर नाई
सुन सर्बज्ञ सकल उर बासी । बुधि बल तेज धर्म गुण रासी
मंत्र कहौं निज मति अनुसारा । दूत पठाइय बालि कुमारा
नीक मंत्र सबके उर माना । अंगद सन कह कृपा निधाना
बालि तनय बुधि बल गुण धामा । लंका जाहु तात मम कामा
बहुत बुझाय तुमहिं का कहऊं । परम चतुर मैं जानत अहऊं
काज हमार तासु हित होई । रिपु सन करेहु बत कही सोई

सो॰ प्रभु आज्ञा धरि शीश चरण बंदि अंगद कहेउ
सोइ गुण सागर ईश राम कृपा जापर करहु
स्वयं सिद्ध सब काज नाथ मोहि आदर दयउ
अस बिचारि युवराज तन पुलकित हरषित भयउ

बंदि चरण उर धरि प्रभुताई । अंगद चलेउ सबहि शिर नाई
प्रभु प्रताप उर सहज अशंका । रण बाकुरा बालिसुत बंका
पुर पैठत रावण कर बेटा । खेलत रहा सो होइ गई भेटा
बातहि बात कर्ष बढ़ि आई । युगल अतुल बल पुनि तरुणाई
तेहि अंगद कहं लात उठाई । गहि पद पटकेउ भूमि भंवाई
निशिचर निकर देखि भट भारी । जहं तहं चले न सकहिं पुकारी

टी॰ रा॰ लं॰ १२

इहां प्रात जागे रघुराई अरु पर न चतुरता श्रवण मुनि लौं॰ मंत्र करि बालि के पुत्र को दूत भेज्यो तहां संवाद में यह अंगद कहा देखी नयन दूत रखवारी अंगद के सभा में गये पीछे उबेर के दूत को रावण बध किये तातें यह व्यंग कहा अरु बाल के कांख में रावण रहा यह कथा बिख्यात है अरु प्रभु के प्रभाव तें अंगद प्रण करे में संदेह न करब अरु व्यंग सब उक्ति कहरा ना को पुत्र मारि सभा जीत चा हौं धर्म राजन के मुकुट आश्रय ॥

पंक्ति ४ चौ॰ २१३ सो॰ ४ दो॰ ३१

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एक एक सन मरम न कहहीं । समुझ तासु बध चुपकर रहहीं
भयउ कोलाहल नगर मंझारी । आवा कपि लंका जेहिं जारी
अब धौं काह करिय करतारा । सब भीत सब करहिं बिचारा
बिनु पूछे मग देहिं दिखाई । जेहि बिलोकि सोइ जाइ सुखाई

दो॰ गयउ सभा दरबार तब सुमिरि राम पद कंज ॥
सिंह ठवनि इत उत चितै धीर बीर बल पुंज ॥

तुरत निसाचर एक पठावा । समाचार रावनहिं जनावा ॥
सुनत बिहंसि बोला दससीसा । आनहु बोलि कहां कर कीसा
आयसु पाइ दूत बहु धाये । कपि कुंजरहि बोलि लै आये
अंगद दीख दसानन बैसा । सहित प्राण कज्जल गिरि जैसा
भुजा बिटप सिर सृंग समाना । रोमावली लता तरु नाना ॥
मुख नासिका नयन अरु काना । गिरि कंदरा खोह अनुमाना
गयउ सभा मन नेकु न मुरा । बालि तनय अति बल बांकुरा
उठे सभासद कपि कहं देखी । रावन उर भा क्रोध बिसेषी ॥

दो॰ जथा मत्त गज जूथ महं पंचानन चलि जाइ ॥
राम प्रताप सुमिरि मन बैठ सभा सिर नाइ ॥

कह दसकंठ कवन तैं बंदर । मैं रघुबीर दूत दसकंधर ॥
मम जनकहि तोहि रही मिताई । तव हित कारन आयउं भाई
उत्तम कुल पुलस्त्य कर नाती । सिव बिरंचि पूजेहु बहु भांती
बर पायहु कीन्हेहु सब काजा । जीतेहु लोकपाल सब राजा
नृप अभिमान मोहबस किंवा । हरि आनेहु सीता जगदंबा

बलाई प्रभु
वट आवत
प अरु उहां
रावण मंदिर
गयो नहां मंदो
दरी कलु मला
पलें बढ़न स
मुखायो परंतु
दंभी को नीति
टीं॰ लं॰
ए॰ ल॰
कव लोहाइ स
भा भाइ देखे
अधिक बढ़ाइ
बैठत भयो
डों श्री अंगद
बानी सक्षेप व
व दसानन नीति
पूर्वक कही
॥ २८ ॥

अब सुख कहा सुनहु तुम मोरा। सब अपराध क्षमहिं प्रभु तोरा
दशन गहहु तृण कंठ कुठारी। परिजन सहित संग निज नारी
सादर जनक सुता करि आगे। यहि बिधि चलहु सकल भय त्यागे
दो॰ प्रणतपाल रघुबंशमणि त्राहि त्राहि अब मोहि
आरत गिरा सुनत प्रभु अभय करहिं गे तोहि
रे कपि यों तन बोल सँभारी। मूढ़ न जानेहि मोहि सुरारी
कहु निज नाम जनक कर भाई। केहि नाते मानिये मिताई॥
अंगद नाम बालि कर बेटा। तोसों कबहुं भई हो भेटा॥
अंगद बचन सुनत सकुचाना। रहा बालि बानर मैं जाना
अंगद तुहीं बालि कर बालक। उपजेहु बंश अनल कुल घालक
गर्भ न गयउ व्यर्थ तुम जायहु। निज मुख तापस दूत कहायहु
अब कहु कुशल बालि कहं अहई। बिहंसि बचन तब अंगद कहई
दिन दश गये बालि पहं जाई। बूझेउ कुशल सखा उर लाई
राम बिरोध कुशल जस होई। सो सब तोहि सुनाइहि सोई
सुन सठ भेद होइ मन ताके। श्री रघुबीर हृदय नहिं जाके
दो॰ हम कुल घालक सत्य तुम कुल पालक दशशीश
अंधौ बधिर अस कहहिं नयन कान तव बीस
शिव बिरंचि सुर मुनि समुदाई। चाहत जासु चरण सेवकाई
तासु दूत कै हम कुल बोरा। ऐसिहि मति उर बिहरु न तोरा
सुनि कठोर बानी कपि केरी। कहत दशानन नयन तरेरी
खल तव बचन कठिन सब सहहूं। नीति धर्म सब जानत अहहूं

टी॰ रा॰ लं॰ २५

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कह कपि धर्म शीलता तोरी। हमहु सुनी कृत पर त्रिय चोरी
देखी नयन दूत रखवारी । बूडि न मरहु धर्म व्रत धारी
कानन्हाक बिनु भगिनि निहारी। क्षमा कीन्ह तुम धर्म बिचारी
धर्म शीलता तव जग जागी। पावा दरश हमहु बड़ भागी

दो· जनि जल्पसि जड़ जंतु कपि सठ बिलोकु मम बाहु
लोकपाल बल बिपुल शशि ग्रसन हेतु सबराहु
पुनि नभ सर मम कर निकर कमलन्हि पर करवास
शोभित भयउ मराल इव शंभु सहित कैलास ॥

तुम्हरे कटक माझ सुन अनुज। मोसन लरहि कवन योधाबद
तव प्रभु नारि बिरह बल हीना। अनुज तासु दुख दुखी मलीना
तुम सुग्रीव कूलद्रुम दोऊ । अनुज हमार भीरु अति सोऊ
जामवंत मंत्री अति बूढ़ा । सो किमि होइ समर आरूढ़ा
सिल्पि कर्म जानहिं नल नीला। है कपि एक महा बल शीला
आवा प्रथम नगर जेहिं जारा। सुनत बचन कह बालिकुमारा
सत्य बचन कह निशिचर नाहा। साखेहु कीस कीन्ह पुर दाहा
रावण नगर अल्प कपि दहई। सुनि अस बचन सत्यको कहई
जो अति सुभट सराहेहु रावन। सो सुग्रीव केर लघु धावन
चले बहुत सो बीर न होई। पठवा खबर लेन हम सोई

दो· सत्य नगर कपि जारेउ बिनु प्रभु आयसु पाइ
फिर न गयउ सुग्रीव पहं तेहि भय रहा लुकाइ
सत्य कहेउ दशकंठ सब मोहि न सुने कछु कोह

कोउ न हमरे कटक अस तो सन लरत जो सोह
प्रीति बिरोध समान सन करिय नीति अस मोहि
जौ मृगपति बध मेडुकन्हि भल कि कहै कोउ ताहि
यद्यपि लघुता रामकहं तोहि बधे बड़ दोष ॥
तदपि कठिन दशकंठ सुन छत्रि जात कर रोष ॥
बक्र उक्ति धनु बचन सर हृदय दहेउ रिपु कीश।
प्रति उत्तर सड सिन मनहुं काटत भट दशशीश
हंसि बोलेउ दशशीश तव कपिकर बड़ गुण एक
जो प्रति पालै तासु हित करै उपाय अनेक ॥

टी॰ रा॰ लं॰ १६

धन्य कीश जो निज प्रभु काजा। जहं तहं नाचै परि हरि लाजा
नाच कूद करि लोग रिझाई। पति हित करै धरम निपुणाई
अंगद स्वामिभक्त तव जाती। प्रभु गुण कस न कहसु एहि भांती
मैं गुण गाहक परम सुजाना। तव कटु रटनि करौं नहिं काना
कह कपि तव गुण गाहकताई। सत्य पवनसुत मोहि सुनाई
वन बिधंसि सुत बधपर जारा। तदपि न तेहि कछु कृत अपकारा
सोइ बिचारि तव प्रकृति सुहाई। दशकंधर मैं कीन्ह ढिठाई
देखेउं आइ जो कछु कपि भाखा। तुम्हरे लाज न रोष न माखा
जौ अस मति पितु खायेउ कीशा। कहि अस बचन हंसा दशशीशा
पितहि खाइ खातेउं पुनि तोही। अबहीं समुझ परा कछु मोही
बालि बिमल जस भाजन जानी। हतौं न तोहि अधम अभिमानी
कह रावण रावण जग केते। मैं निज श्रवण सुने सुन जेते

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बलिहि जितन एक गएउ पताला। राखेउ बांधि सिशुन हय शाला
खेलहिं बालक मारहिं जाई। दया लागि बलि दीन्ह छुड़ाई।
एक बहोरि सहस भुज देखा। धाइ धरा जिमि यंतु बिशेखा
कौतुक लागि भवन लै आवा। सो पुलस्त्य मुनि जाइ छुड़ावा
दो॰ एक कहत मोहि सकुच अति रहा बालि की कांख
दून्ह महं रावण तैं कवन सत्य बदहि तजि माख।
सुनु सठ सोइ रावण बलशीला। हरि गिरिजानजासु भुजलीला
जानु उमापति जासु सुराई। पूजेह जेहि शिर सुमन चढ़ाई
शिर सरोज निज करन्हि उतारी। पूजेउं अमित वार त्रिपुरारी
भुज बिक्रम जानहिं दिगपाला। सठ जिन्हके अजहूं उर शाला
जानहिं दिग्गज उर कठिनाई। जबजब भिरउं जाइ बरिआई
जिनके दशन कराल न फूटे। उर लागत मूलक इव टूटे ॥
जासु चलितडोलति इमि धरणी। चढ़त मत्त गज जिमि लघु तरणी
सोइ रावण जग बिदित प्रतापी। सुनेहि न श्रवण अलीक पलापी
दो॰ तेहि रावण कहं लघु कहसि नर कर करसि बखान
रे कपि बर्बर खर्ब खल अब जाना तव ज्ञान ॥
सुनि संगद सकोप कहि बानी। बोल संहारि अधम अभिमानी
सहस बाहु भुज गहन अपारा। दहन अनल सम जासु कुठारा
जासु परशु सागर खर धारा। बूड़े नृप अगणित बहु बारा
तासु गर्व तेहि देखत भागा। सो नर क्यों दशशीश अभागा
राम अनुज कस रे शठ बंगा। धन्वी काम नदी पुनि गंगा

पशु सुरधेनु कल्प तरु रूरवा। अन्नदान अरु रस पीयूषा ॥
बैन तेय खग अहि सहसानन। चिंतामणि पुनि उपलदशानन
सुनि मति मंद लोक बैकुंठा। लाभ कि रघुपति भक्ति अकुंठा
दो॰ सेन सहित तव मान मथि बन उजारि पुर जारि
कस रे शठ हनुमान कपि गयउ जो तव सुत मारि
सुनु रावण परिहरि चतुराई। भजसि न कृपा सिंधु रघुराई
जौ खल भयसि राम कर द्रोही। ब्रह्म रुद्र सक राखि न तोही
मूढ़ वृथा जनि मारसि गाला। राम बयर अस होइहि हाला
तव शिर निकर कपिन्ह के आगे। परिहहिं धरणि राम सर लागे
ते तव शिर कंदुक इव नाना। खेलिहहिं भालु कीश चौगाना
जबहिं समर कोपहि रघुनायक। छुटिहहिं अति कराल बहु सायक
तव कुचलिहि अस गाल तुम्हारा। अस बिचार भजु राम उदारा
सुनत बचन रावण परजरा। जरत महानल घृत जनु परा
दो॰ कुंभ करण अस बंधु मम सुत प्रसिद्ध सकारि
मोर पराक्रम नहिं सुनेहि जितेउं चराचर झारि
सठ सारवा मृग जोरि सहाई। बांधा सिंधु इहै प्रभुताई
नाघहिं खग अनेक बारीशा। सूर न होहिं ते सुनशठ कीशा
मम भुज सागर बल जल पूरा। जहं बूड़े बहु सुरनर सूरा ॥
बीस पयोधि अगाध अपारा। को अस बीर जो पाइहि पारा
दिग पालन मैं नीर भरावा। भूप सुयश खल मोहि सुनावा
जौपै समर सुभट तव नाथा। पुनि पुनि कहसि जासु गुण गाथा

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तौ वसीठपठवत केहि काजा। रिपुसन प्रीति करत नहिं लाजा
हरिगिरि मथन निरषु मम बाहू। पुनि शठ कपि निज प्रभुहि सराहू
दो॰ सूर कवन रावण सरिस स्वकर काटि जेहि शीश
हुने अनल अति हरष बहु बारि साधि गौरीश
जरत बिलोकेउं जबहिं कपाला। बिधिके लिखे अंक निजभाला
नरके कर आपन बध बांची। हंसेउं जानि बिधि गिरा असांची
सोउ मन समुझि त्रासु नहिं मोरे। लिखा बिरंचि जरठ मति भोरे
आन बीर बल शठ मम आगे। पुनि पुनि कहसि लाज पति त्यागे
कह अंगद सलज्ज जग माहीं। रावण तोहि समान कोउ नाहीं
लाजवंत तव सहज सुभाऊ। निज मुख निज गुण कहसि न काऊ
शिर अरु शैल कथा चित रही। ताते बार बीस तैं कही ॥
सो भुज बल राखेउ उर घाली। जीतेहु सहस बाहु बल बाली
सुनु मति मंद देहि अब पूरा। काटे शीश किमि कहसि अधूरा
इंद्रजालि कहु कहिय न बीरा। काटइ निज कर सकल शरीरा
दो॰ जरहिं पतंग मोहबस भार बहहिं खर बृंद
ते नहिं सूर कहावहिं समुझि देखु मति मंद
अब जनि बतबढ़ावु खल करही। सुनु मम बचन मान परिहरही
दशमुख मैं न बसीठी आयउं। अस बिचारि रघुबीर पठायउं
बार बार अस कहहिं कृपाला। नहिं गजारि यश बधे सृगाला
मन महं समुझि बचन प्रभु केरे। सहेउं कठोर बचन शठ तेरे
नाहित कर मुख भंजन तोरा। लै जातेउं सीतहिं बरजोरा

जाने तव बल अधम सुरारी । सूने हरि आनेसि परनारी ॥
तैं निशिचर पति गर्व बहूता । मैं रघुपति सेवक कर दूता ॥
जौ न राम अपमानहिं डरऊं । तोहि देखत अस कौतुक करहूं

दो॰ तोहि पटकि महि सेन हति चौपट करि तव गाउं
तव युवतीन्ह समेत सठ जनक सुतहिं लै जाउं

जौ अस करौं तदपि न बड़ाई । मुएं बधें नहिं कछु मनुसाई
कौल काम बस कृपिन बिमूढ़ा । अति दरिद्र अजसी अति बूढ़ा
सदा रोगबस संतत क्रोधी । बिष्नु बिमुख श्रुति संत बिरोधी
तनु पोषक निंदक अघ खानी । जीवत सव सम चौदह प्रानी
अस बिचार खल बधौं न तोही । अब जनि रिस उपजावसि मोही

दी॰ ए॰ लं॰ ९०

सुनि सकोप कह निशिचर नाथा । अधर दसन डसि मीजत हाथा
रे कपि अधम मरण अब चहसी । छोटे बदन बात बड़ि कहसी
कटु जल्पसि जड़ कपि बल जाके । बल प्रताप बुधि तेज न ताके

दो॰ अगुण अमान जानतेहि दीन पिता बनबास
सो दुख अरु युवती बिरह पुनि निशि दिन मम त्रास

जिनके बल कर गर्व तोहि ऐसे मनुज अनेक ॥
खाहिं निशाचर दिवस निशि मूढ़ समुझ तजि टेक

जब तेहि कीन्ह राम कर निंदा । क्रोधवंत अति भयउ कपिंदा
हरि हर निंदा सुनहिं जे काना । होइ पाप गोघात समाना
कटकटान कपिकुंजर भारी । दुहुं भुजदंड तमकि महि मारी
डोलति धरणि सभा सद बसे । चले भाज भय मारुत ग्रसे

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गिरत संभार उठा दश कंधर। भूतल परे मुकुट अति सुंदर
कछु तेहि लै निज सिरन्ह संवारे। कछु अंगद प्रभु पास पचारे
आवत मुकुट देखि कपि भागे। दिन हूं लूक परन बिधि लागे
की रावण करि कोप चलाये। कुलिश चारि आवत अति धाये
कह प्रभु हंसि जनि हृदय डेराहू। लूकनि असनि केतु नहिं राहू
ए किरीट दश कंधर केरे॥ आवत बालि तनय के पेरे
दो० तरकि पवन सुत कर गहेउ। आनि धरे प्रभु पास।
कौतुक देखहिं भालु कपि। दिनकर सरिस अकास
उहां सकोप दशानन सब सन कहत रिसाय।
धरहु कपिहि धरि मारहु सुनि अंगद सुसुकाय॥

दो॰ ल॰ २१

बहि विधि वेगि सुभट सब धावहु। सब्हु भालकपि जहं तहं पावहु
मरकट हीन करहु महि जाई। जिअत धरहु तापसी दोउ भाई
पुनि सकोप बोलेउ युवराजा। गाल बजावत तोहि न लाजा
मरु गर काटि निलज कुलघाती। बल बिलोकि बिहरति नहिं छाती
रे बिटप चोर कुमारग गामी। खल मल राशि मंदगति कामी
सन्निपात जल्पसि दुर्बादा। भयसि काल बस खल मनुजादा
याको फल पावहु गे आगे। बानर भालु चपेटन्ह लागे
राम मनुज बोलसि असबानी। गिरहि न तव रसना अभिमानी
गिरिहहिं रसना संशय नाहीं। सिरन्हि समेत समर महि माहीं
सो० सो नर क्यों दश कंध बालि बध्यो जेहि एक सर॥
बीसहु लोचन अंध धिक तव जन्म कुजाति जड़॥

सो॰ तव शोणित की प्यास तृषित यह सायक निकर
तजौं तोहि तेहि त्रास कटु जल्पसि निसिचर अधम

मैं तव दरशन लोचन चेला। आयसु मोहि न दीन्ह रघुनाथा
अस रिस होत दसौ मुख तोरौं। लंका गहि समुद्र महं बोरौं।
गूलर फल समान तव लंका। बसहु मध्य तुम जंतु असंका
मैं वानर फल खात न बारा। आयसु दीन्ह न राम उदारा
युगति सुनत रावण मुसुकाई। मूढ़ सीख कहं बहुत कुठाई
बालि न कबहुं गाल अस मारा। मिलत तोहि तेहि भयउ सँघारा
सठ साखामृग जोरि सहाई। बाँधा सिंधु इहइ प्रभुताई
नाघहिं खग अनेक बारीसा। सूर न होहिं ताकि सतधीसा
मम भुज सागर बल जल पूरा। जहं बूड़े बहु सुर नर सूरा
बीस पयोधि अगाध अपारा। को अस बीर जो पाइहि पारा
दिगपालन्ह मैं नीर भरावा। भानु पासही कर न उठावा
पुनि पुनि सत कह जानकी नाथा। लछिमन तोर बधब हम भ्राता
तव सहाय कपि भालु बिसाला। मोहि बध सुनि अति उपजी ज्वाला
मारे निसिचर कपिन्ह अपारा। अनुज गहे पद बारहिं बारा
अस कहि गरजि बीस भुज कोपा। सभा माझ पन करि पद रोपा
जो मम चरन सकसि सठ टारी। फिरहिं राम सीता मैं हारी
सुनहु सुभट सब कह दससीसा। पद गहि धरनि पछारहु कीसा
इंद्रजीत आदिक बल धामा। हरषि उठे जहं तहं भट नामा
कटकटहिं कर बल बिपुल उपारहिं। पदन टरहिं बैठहिं सिर नाई
पुनि उठ झपटहिं सुर आराती। टरहिं न कीस चरन एहि भाँती
पुरुष कुजोगी जिमि उरगारी। मोह बिटप नहिं सकहिं उपारी
सो॰ कोटिन्ह मेघनाद सम सुभट उठे हरषाइ
झपटहिं टरै न कपि चरन पुनि बैठहिं सिर नाइ

भूमि न छाड़त कपि चरन देखत रिपु मद भाग
कोटि बिघ्न ते संत कर मन जिमि नीति न त्याग

कपि बल देखि सकल हियं हारे। उठा आपु कपि कें परचारे

गहत चरण कह बालि कुमारा। मम पद गहे न तोरे उबारा
गहसि न राम चरण सठ जाई। सुनत फिरा मन अति सकुचाई
भयेउ तेज हत श्री सब गई। मध्य दिवस निमि शशि सोहई
सिंहासन बैठेउ शिर नाई। मानहुं संपति सकल गंवाई
जगदातमा प्राण पति रामा। तासु विमुख किमि लह विश्रामा
उमा राम की भृकुटि विलासा। होइ विश्व पुनि पावहि नासा
तृण ते कुलिश कुलिश तृण करई। तासु दूत पण कहु किमि टरई
पुनि कपि कही नीति विधि नाना। मानत नाहिं काल नियराना
रिपु मद मथ प्रभु सुयश सुनायो। यह कहि चल्यो बालि नृप जायो
हतौ न खेत खेलाइ खेलाई। तोहि अबही का करौं बड़ाई।
प्रथम हि तासु तनय कपि मारा। सो सुनि रावण भयउ दुखारा
यातु धान अंगद प्रण देषी। भय प्याफुल सब दृढ़ विशेषी

दो॰ रिपु बल धरषि हरषि कपि बालि तनय बल पुंज॥
पुलक शरीर नयन जल गहे राम पद कंज॥
सांझ जानि दश कंधर भवन गयेउ बिलखाइ॥
मंदोदरी रावण हिं बहुरि कहा समुझाइ॥॥

कंत समुझ मन तजहु कुमति ही। सोह न समर तुमहिं रघुपति ही
रामानुज लघु रेख खिचाई। सोउ नहिं नाघेउ असि मनुसाई
पिय तुम ताहि जितब संग्रामा। जाके दूतन के अस कामा॥
कौतुक सिंधु नांघि तव लंका। आयेउ कपि केहरी निशंका
रखवारे हति विपिन उजारा। देखत तोहि अक्षै जेहि मारा।

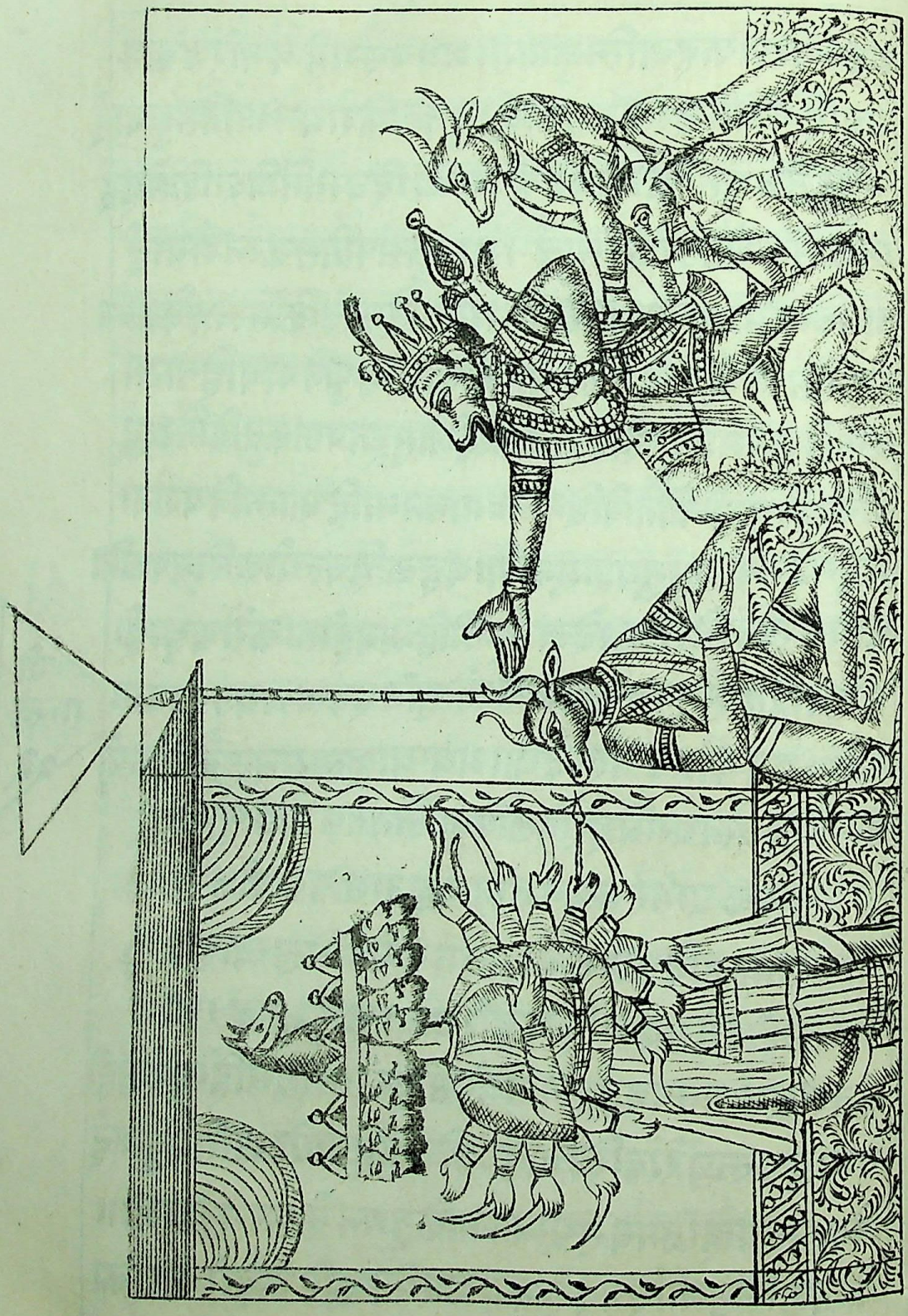

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जारि सकल पुर कीन्हेसि छारा। कहां रहा बल गर्ब तुम्हारा ॥
अब पति मृषा गाल जनि मारहु। मोर कहा कछु हृदय बिचारहु
प्रभु रघुपतिहि नृपति जनि मानहु। अगजगनाथ अतुल बल जानहु
बाण प्रताप जान मारीचा। तासु कहा नहिं मानेहु नीचा
जनक भवन अगणित भूपाला। रहे तुम्हौं बल गर्ब बिशाला।
भंजि धनुष जानकी बिवाही। तब संग्राम जितेउ किन नाहीं
सुरपति सुत जानै बल थोरा। राखा जियत आंख गहि फोरा
सूर्प नखा कै गति तुम्ह देषी। तदपि हृदय नहिं लाज बिशेषी
दो॰ बध बिराध खर दूषणहिं लीला हत्यौ कबंध ॥
बालि एक सर मार्‍यौ तेहि जानहु दशकंध ॥
जेहि जलनाथ बंधायउ हेला। उतरे प्रभु दल सहित सुबेला ॥
कारुणीक दिन कर कुल केतू। दूत पठायो तव हित हेतू ॥
सभा मांझ तेहि तव बल मथा। करि बरूथ महं मृगपति यथा
अंगद हनुमत अनुचर जाके। रण बांकुरे बीर अति बाके ॥
तेहि कहं पिय पुनि२ नर कहहू। मुधा मान ममता मद बहहू
अहह कंत कृत राम बिरोधा। काल बिवस मन उपजन बोधा
काल दंड गहि काहु न मारा। हरै धर्म बल बुद्धि बिचारा ॥
निकट काल जेहिं आवत सांई। तेहि भ्रम होइ तुम्हारिहि नाईं
दो॰ दुइ सुत मारे दहेउ पुर अजहुं पूर पिय देहु ॥
कृपा सिंधु रघुनाथ भजि नाथ बिमल यश लेहु
नारि बचन सुनि बिसिष समाना। सभा गयउ उठि होत बिहाना

बैठउ जादु सिंहासन फूली। अति अभिमान त्रास सब भूली
तहां राम अंगदहिं बोलावा। आइ चरण पंकज सिर नावा
अति आदर समीप बैठारी। बोले बिहंसि कृपाल खरारी
बालि तनय अति कौतुकमोही। तात सत्य कहु पूछउं तोही
रावण यातुधान कुल टीका। भुज बल अतुल जासु जग लीका
तासु मुकुट तुम चारि चलाये। कहहु तात कवनी विधि पाये
सुनि सर्बज्ञ प्रणत सुखकारी। मुकुट न होहिं भूप गुण चारी
साम दाम अरु दंड बिभेदा। नृपउर बसहिं नाथ कह बेदा
नीति धर्म के चरण सोहाये। अस जिय जानि नाथ पहं आये

दो॰ धर्महीन प्रभु पद बिमुख काल बिबस दसशीश
तेहि परि हरि गुण आये सुनहु कोशला धीश।
परम चतुरता श्रवण सुनि बिहंसे राम उदार ॥
समाचार पुनि सब कहे गढ़ के बालि कुमार ॥

रिपुके समाचार जब पाये। राम सचिव सब निकट बुलाये
लंका बांके चारि दुआरा। केहि विधि लागिय करहु बिचारा
तब कपीश रिच्छेस बिभीषण। सुमिर हृदय दिनकर कुलभूषण
करि बिचार तिन्ह मंत्र दृढ़ावा। चारि अनी कपि कटक बनावा
यथा योग सेनापति कीन्हे। यूथप सकल बोलि तब लीन्हे
प्रभु प्रताप कहि सब समुझाये। सुनि कपि सिंहनाद करि धाये
हरषित राम चरण शिर नावहिं। गहि गिरि शिखर बीर सब धावहिं
गर्जहिं तर्जहिं भालु कपीशा। जय रघुबीर कोशला धीशा।

जानत परम दुर्ग अति लंका। प्रभु प्रताप कपि चले अशंका
घटा टोप करि चहुं दिशि घेरी। मुखहिं निशान बजावहिं भेरी
दो॰ जयति राम जय लक्ष्मन जय कपीश सुग्रीव
गर्जहिं सिंह नाद कपि भालु महा बल सीव
लंका भयउ कोलाहल भारी। सुना दशानन अति हंकारी
देखउ बनरन केरि ढिठाई। बिहंसि निशाचर सेन बुलाई
आये कीश काल के प्रेरे। क्षुधावंत सब निशिचर मेरे।
अस कहि अट्टहास सठ कीन्हा। गृह बैठे अहार बिधि दीन्हा
सुभट सकल चारिहु दिशि जाहू। धरि धरि भालु कीश सब खाहू
उमा रावणहिं अस अभिमाना। जिमि टिट्टिभ खग सूत उताना
चले निशाचर आयसु मांगी। गहि कर भिंदपाल बर सांगी
तोमर मुद्गर परशु प्रचंडा। सूल कृपाण परिघ गिरिखंडा
जिमि अरुणोपल निकर निहारी। धावहिं सठ खग मांस अहारी
चोंच भंग दुख तिन्हहिं न सूझा। तिमि धाए मनुजाद अबूझा
दो॰ नाना युध सर चाप धरि यातु धान बल बीर
कोटि कंगूरन्ह चढ़ि गये कोटि कोटि रणधीर
कोट कंगूरन्ह सोहहिं कैसे। मेरु के शृंगन जनु घन जैसे
बाजहिं ढोल निशान जुझाऊ। सुनि धुनि हरष भटन्ह मन बाऊ
बाजहिं भेरि नफीरि अपारा। सुनि कादर उर होहिं दरारा
देखि न जाइ कपिन के ठट्टा। अति बिशाल तन भालु सुभट्टा
धावहिं गनहिं न अवघट घाटा। पर्वत फोरि करहिं गहि बाटा

कट कटाहिं कोटिन्ह भट गर्जहिं। दसन ओठ काटहिं अति तर्जहिं
उत रावण इत राम दोहाई। जयति जयति जय परी लराई
निशिचर शिखर समूह ढहावहिं। कूदि धरहिं कपि फेरि चलावहिं
छं॰ धरि कुधर खंड प्रचंड मर्कट भालु गढ़ पर डारहीं ॥
लिपटहिं चरण गहि पटक महि भजि चलत बहुरि प्रचारहीं
अति तरल तरुण प्रताप तर्जहिं तमकि गढ़ पर चढ़ गये
कपि भालु चढ़ि मंदिरन जहं तहं राम यश गावत भये ॥
दो॰ एक एक गहि निशिचर पुनि कपि चले पराइ ॥
ऊपर आपु हठ भट गिरहिं धरणि पर आइ ॥

दो॰ ग॰ लं॰ २८

राम प्रताप प्रबल कपि यूथा। मर्दहिं निशिचर सुभट बरूथा
चढ़े दुर्ग पुनि जहं तहं बानर। जय रघुबीर प्रताप दिवाकर
चले निशाचर निकर पराई। प्रबल पवन जिमि घन समुदाई
हाहाकार भयउ पुर भारी। रोवहिं बालक आतुर नारी
सब मिलि देहिं रावणहिं गारी। राज करत एहि मृत्यु हंकारी
निज दल विकल सुनी तेहि काना। फेरि सुभट लंकेश रिसाना
जोरेसि बिसुख फिरा मैं जाना। सो मैं हतब कराल कृपाना
सर्व सरबाइ भोग करि नाना। समर भूमि भये बल्लभ प्राना
उग्र वचन सुनि सकल डेराने। चले क्रोध करि सुभट लजाने
मन्मुख मरण बीर कै शोभा। तब तिन्ह तजा प्राण कर लोभा
दो॰ बहु आयुध धरि सुभट सब भिरहिं प्रचार प्रचार
व्याकुल कीन्हे भालु कपि परिघ त्रिशूलन मार

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भयभानुर कपि भागन लागे। यद्यपि उमा जीतिहहिं आगे।
कोउ कह कहं अंगद हनुमंता। कहं नल नील दुविद बलवंता
निज दल बिकल सुना हनुमाना। पश्चिम द्वार रहा बल बाना॥
मेघनाद तहं करै लराई। टूटन द्वार परम कठिनाई॥
पवनतनय मन भा अति कोधा। गर्जेउ प्रबल काल सम योधा
कूदि लंक गढ़ ऊपर आवा। गहि गिरि मेघ नाद पर धावा
भंजेउ रथ सारथी निपाता। ताहि हृदय महं मारेसि लाता
दुसरे सूत बिकल तेहि जाना। स्यंदन घालि तुरत गृह आना
दो॰ अंगद सुना पवन सुत गढ़ पर गयउ अकेल
रण बांकुरा बालिसुत तरकि चढेउ कपि खेल
युद्ध बिरुद्ध कुद्ध दोउ बंदर। राम प्रताप सुमिर उर अंतर
रावण भवन चढ़े दोउ धाई। करहिं कोशला धीश दोहाई
कलश सहित गहि भवन ढहावा। देखि निशाचर पति भय पावा॥
नारि बृंद कर पीटहिं छाती। अब दुइ कपि आये उतपाती
कपि लीला करि तिन्हहिं डेरावहिं। रामचंद्र कर सुयश सुनावहिं
पुनि कर गहि कंचन के खंभा। कहेन्हि करिय उत पात अरंभा
गर्जि परे रिपु कटक मझारी। लागे मर्दय भुज बल भारी॥
काहुहि लात चपेटन्ह केहू। भजेहु न रामहिं सो फल लेहू।
दो॰ एक एक सों मर्दहिं तोर चलावहिं मुंड॥
रावण आगे परहिं ते जनु फूटहिं दधि कुंड
महा महा मुखिया जे पावहिं। पद गहि प्रभु पास चलावहिं

कहहिं बिभीषण तिन्ह के नामा। देहिं राम तिन्हहूं निज धामा
खल मलुजाद हिजामिष भोगी। पावहिं गति जो याचत योगी
उमा राम मृदु चित करुणा कर। बयर भाव सुमिरत मोहि निसिचर
देहिं परम गति सो जिय जानी। अस कृपाल को कहहु भवानी
अस प्रभु सुनन भजहिं भ्रम त्यागी। नर मति मंदते परम अभागी
अंगद अरु हनुमंत प्रवेशा। कीन्ह दुर्ग अस कह अवधेशा
लंका दोउ कपि सोहहिं कैसे। मथहिं सिंधु दुइ मंदर जैसे

दो॰ भुज बल रिपुदल दलमलि देखि दिवस कर अंत
कूदे युगल बिगत श्रम आये जहं भगवंत ॥

प्रभु पद कमल शीश तिन्ह नाये। देखि सुभट रघुपति मन भाये
राम कृपा करि युगल निहारे। भये बिगत श्रम परम सुखारे
गये जानि अंगद हनुमाना। फिरे भालु मर्कट भट नाना
यातुधान प्रदोष बल पाई। धाये करि दससीस दोहाई
निसिचर अनी देखि कपि फिरे। जहं तहं कटकटाइ भट भिरे
दोउ दल प्रबल प्रचारि प्रचारी। लरत सुभट नहिं मानहिं हारी
महाबीर निसिचर सब कारे। नाना बरण बली बिरुदारे
सबल युगल दल समबल जोधा। कौतुक करत लरत करि क्रोधा
प्रबिट सरद पयोद घनेरे। लरत मनहुं मारुत के प्रेरे ॥
अनिय अकंपन अरु अतिकाया। बिचलत सेन कीन्ह इन्ह माया
भयउ निमिष महं अति अंधियारा। बृष्टि होइ रुधिरोपल छारा

दो॰ देख निबिड तम दसहुं दिसि कपिदल भयउ खभार

एकन एक हिं देखइं जहं तहं करहिं पुकार

सकल मरम रघुनायक जाना। लिये बोलि अंगद हनुमाना
समाचार सबकहि समुझाये। सुनत कोपि कपि कुंजर धाये
पुनि कृपाल हंसि चाप चढ़ावा। पावक शायक सपदि चलावा
भयउ प्रकास कतहुं तम नाहीं। ज्ञान उदय जिमि संशय जांहीं
भाल बली मुख पाइ प्रकासा। धाये हरषि बिगत श्रम त्रासा
हनूमान अंगद रण गाजे। हांक सुनत रजनीचर भाजे
भागत भट पटकहिं धरि धरिणी। करहिं भालु कपि अद्भुत करणी
गहि पद डारहिं सागर माहीं। मकर उरग झख धरि २ खाहीं

दो॰ कछु मारे कछु घायल कछु गढ़ चढ़े पराइ ॥
गर्जहिं भालु बली मुख रिपु दलबल बिचलाइ

निशा जानि कपि चारिउ अनी। आये जहां कोशला धनी
राम कृपा करि चितवा सबहीं। भये बिगत श्रम बानर तबहीं
उहां दशानन सचिव हंकारे। सब सन कहेसि सुभट जे मारे
आधा कटक कपिन संहारा। कहहु बेगि का करिय बिचारा
माल्यवंत अति जरठ निशाचर। रावण मातु पिता मंत्री बर
बोला बचन नीति अति पावन। सुनहु तात कछु मोर सिखावन
जबतें तुम सीता हरि आनी। असगुण होइ न जाइ बखानी
बेद पुराण जासु यश गायो। राम बिमुख काहु न सुख पायो

दो॰ हिरण्याक्ष भ्राता सहित मधु कैटभ बलवान
जेइ मारे सोइ अवतरेउ कृपासिंधु भगवान

ते मंत्र तहां माल
वंत धर्म नीति पूर्व
क कह्यो रावण
ताको निरादर
किये तहां मेघ
नाद को निज पु
रुषारथ सुनि आ
नंद भयो पुनः आ
तहां तचाये अ
नीक गढ़ छेंके
लरन लागे मेघ
नाद वानन तें
व्याकुल
भाया किये ता
को प्रभु निवारि

टी॰
रा॰ लं॰
३२

तब लक्ष्मण गी
क्रोध युत जाइ
मेघनाद आ
दि कों मारि के
प्राण अवशेष
कर्यो तब घनना
द प्रान जात जा
नि शक्ति मारी
लक्ष्मण के मू
र्छित दे खिनिक
ट जाइ न उठाय
सक्यो खिसि
आइ गयो तब

काल रूप खल वन दहन गुनागार घन बोध ॥
शिव विरंचि जेहि सेवहिं तासों कवन विरोध ॥

परिहर वैर देहु बैदेही । भजहु कृपानिधि परम सनेही
ताके वचन बाण सम लागे । करिया मुख कर जाहि अभागे
बूढ़ भयसि नहिं मरतेउं तोहीं । अब जनि बरत दिखावसि मोहीं
तेहि अपने मन अस अनुमाना । वध्यो चहत यहि कृपा निधाना
सो उठ गयउ कहत दुर्बादा । तब सकोप बोलेउ घननादा ॥
कौतुक प्रात देखि तोहि मोरा । करिहौं बहुत कहौं का थोरा
सुन सुत वचन भरोसा आवा । प्रीति समेत निकट बैठावा ॥
करत विचार भयउ भिनुसारा । लागे कपि पुनि चहूं दुआरा
कोपि कपिन दुर्घट गढ़ घेरा । नगर कोलाहल भयउ घनेरा
बिबिधायुध धरि निसिचर धाये । गढ़ते पर्वत शिखर ढहाये ।

छं० ढाहे महीधर शिखर कोटिन्ह बिबिधि बिधि गोला चले
घहरात जिमि पबि पात गर्जत जनु प्रलय के बादले
मर्कट बिकट भट जुटत कटत न लटत तन जर्जर भये
गहि शैल तेहि गढ़ पर चलावहिं जहं सो तहं निसिचर हये

दो० मेघनाद सुन श्रवण अस गढ़ पुनि छेका आइ
उतर दुर्ग तें बीर बर सन्मुख चलेउ बजाइ ॥

कहं कोशला धीश दोउ भ्राता । धन्वी सकल लोक बिख्याता ।
कहं नल नील दुविद सुग्रीवा । अंगद हनूमंत बल सीवा ॥
कहां बिभीषण भ्राता द्रोही । आजु सबहि हठ मारौं ओही

अस कहि कठिन बाण संधाने। अतिशय क्रोध श्रवण लगि ताने
सरसमूह सो छाड़ै लागा । जनु सपक्ष धावहिं बहु नागा
जहं तहं परत देखि अति बानर। सन्मुख होइ न सकै तेहि अवसर
जहं तहं भागि चले कपि रिच्छा। बिसरी सबहिं युद्ध की इच्छा
सो कपि भालु न रण मैं देखा। कीन्हेसि जेहि न प्राण अवशेखा

दो॰ दश दश शर सब मारेसि परे भूमि कपि बीर
सिंह नाद करि गर्जेउ मेघ नाद बल धीर ॥

देखि पवनसुत कटक बिहाला। क्रोधवंत जनु धायउ काला
महा शैल एक तुरत उपारा। अति रिस मेघ नाद परडारा
आवत देखि गयउ नभ सोई। रथ सारथी तुरंग सब खोई
बार २ प्रचार हनुमाना । निकट न आव भरस सो जाना
रघुपति निकट गयउ घननादा। नाना भांति कहै दुर्बादा ॥
अस्त्र शस्त्र आयुध सब डारे। कौतुक ही प्रभु काट निवारे
देखि प्रताप मूढ़ खिसियाना। करै लाग माया विधि नाना
जिमि कोउ करै गरुड़ से खेला। डर पावै गहि स्वल्प सपेला

दो॰ जासु प्रबल माया विवस शिव बिरंचि बड़ छोट
ताहि दिखावै निशिचर निज माया मति खोट

नभ चढ़ि बरष विपुल अंगारा। महि तें प्रगट होहिं जलधारा
नाना भांति पिशाच पिशाची। मारु काटु धुनि बोलहिं नाची
विष्टा पूप रुधिर कच हाड़ा। बरषै कबहु उपल बहु छाड़ा
बरषि धूरि कीन्हेसि अंधियारा। सूझ न आपन हाथ पसारा

पुनः कहि ना
रद बचन स्म
रण हेतु ना
रद जू गये रहे
कि छः मास के
अंतर जेहि
दिन जगि हौ
ताही दिन मृत्यु

टी॰
रा॰ लं॰
३३

होयगी अरु रा
म रूप गुण स्म
र्छ करि मगन भ
यो तब रावण म
टा मिष कोहिन्ह
घट खवाइ ताकी
मति बौराय दई
॥ ६ ॥

कपि अकुलाने माया देखे ॥ सबकर मरण बना यहि लेखे
कौतुक देखि राम मुसकाने ॥ ॥ भये सभीत सकल कपि जाने ।
एक बाण काटी सब माया ॥ ॥ जिमि दिनकर हर तिमिर निकाया
कृपादृष्टि कपि भालु विलोके ॥ भये प्रबल रण रहहिं न रोके ॥ ॥

दो॰ आयसु मागी राम पहँ अंगदादि कपि साथ
लछिमण चले कुद्ध रघुनाथ सरासन हाथ ॥

जलज नयन उर बाहु विशाला । हिमगिरि निभ तनु कछु इक लाला
इहाँ दशानन सुभट पठाये ॥ ॥ अस्त्र शस्त्र नाना गहि धाये ॥
भूधर नख विटपायुध धारी ॥ । धाये कपि जय राम पुकारी ॥ ॥
भिरे सकल जोरिहि सन जोरी । इतउत जय इच्छा नहिं थोरी
मुठिकन्ह लातन दाँतन मारहिं । कपि जय शील मारि पुनि डारहिं
मारु मारु धरु धरु धरु मारू । शीश तोरि गहि भुजा उपारू
अति रव पूरि रही नभ रूडा । धावहिं जहँ तहँ रुंड प्रचंडा ॥
देखहिं कौतुक नभ सुर वृन्दा । कबहुँक विस्मय कबहुँ अनन्दा

दो॰ रुधिर गाड़ भरि भरि जम्यो ऊपर धूरि उड़ाय
जनु अंगार राशि तन्ह पर मृतक धूम रह्यो छाय

घाइल वीर विराजत कैसे ॥ ॥ कुसुमित किंसुक केतु जैसे
लछिमण मेघनाद दोउ योधा । भिरहिं परस्पर करि अति क्रोधा
एकहि एक सकै नहिं जीती । निशिचर छल बल कीन्ह अनीती
क्रोधवंत तब भयउ अनंता ॥ भंजेउ रथ सारथी तुरंता ॥ ॥
नाना विधि प्रहार कर शेषा ॥ राक्षस भयो प्राण अवशेषा ॥

रावण सुत निज मन अनुमाना ॥ शंकर भयउ हरिहि मम प्राना ॥
बीर घातिनी छाँडसि साँगी ॥ ॥ तेज पुंज लक्ष्मण उर लागी ॥ ॥ ॥
मूरछा भई शक्ति के लागे ॥ ॥ तब चलि गयो निकट भय त्यागे ॥
दो॰ मेघनाद सम कोटि शत योधा रहे उठाइ ॥ ॥ ॥
जगदाधार अनंत किमि उहैं चलें खिसि आइ
सुनु गिरिजा क्रोधानल जासू । जारै भुवन चारि दश आसू ॥ ॥
सक संग्राम जीति को ताही । सेवहिं सुर नर अग जग जाही ॥
यह कौतूहल जानै सोई ॥ ॥ ॥ जा पर कृपा राम कै होई ॥ ॥ ॥
सन्ध्या भई फिरी दोउ अनी ॥ लगे सँभारन निज निज धनी
व्यापक ब्रह्म अजित भुवनेश्वर । लक्ष्मण कहाँ बूझ करुणाकर
तब लगि लै आयेउ हनुमाना । अनुज देखि प्रभु अति दुख माना
जामवंत कह बैद सुखेना ॥ ॥ लंकहि को पठइय लेना ॥ ॥
धरि लघु रूप गयो हनुमंता ॥ ॥ आनेउ भवन समेत तुरंता ॥ ॥ ॥
दो॰ राम पदारबिंद शिर नायो आइ सुखेन ॥ ॥ ॥
कहा नाम गिरि औषधी जाहु पवन सुत लेन
राम चरण सरसिज उर राखी । चला प्रभंजन सुत बल भाषी
उहाँ दूत एक मरम जनावा ॥ रावण कालनेमि गृह आवा ॥
दशमुख कहा मरमतेहि सुना । पुनि २ कालनेमि सिर धुना ॥
देखत तुहि नगर जेहि जारा । तासु पंथ को रोकन हारा ॥ ॥
भजि रघुपतिहिं करहि हित अपना । छाडहु नाथ वृथा कल्पना
नील कंज तनु सुन्दर श्यामा । हृदय राखि लोचन अभिरामा

लक्ष्मण जीका युद्ध मेघनादसे

मैं तैं मोर मूढ़ता त्यागू ॥ । महामोह निशि सोवत जागू
काल व्याल कर भक्षक जोई । सपनेहु समर कि जीतिय सोई
दो॰ सुनि दशकंध रिसान अति तेहि मन कीन्ह विचार
राम दूत कर मरौं बरु यह खल रत मल भार ॥
अस कहि चला रचिसि मग माया । सर मंदिर बर बाग बनाया
मारुत सुत देखा शुभ आश्रम । मुनिहि बूझ जल पिअउ जाइ श्रम
राक्षस कपट बेष तहं सोहा । माया पति दूतहि चह मोहा
जाइ पवन सुत नायउ माथा । लाग सो कहै राम गुण गाथा
होत महा रण रावण रामहिं । जितिहहिं राम न संशय यामहिं
इहां भए मैं देखौं भाई । ज्ञान दृष्टि बल मोहि अधिकाई
मागा जल तेहि दीन्ह कमंडल । कह कपि नहिं अघाउं थोरे जल
सर मज्जन करि आतुर आवहु । दीक्षा देउं ज्ञान जेहि पावहु
दो॰ सर पैठत कपि पद गहा मकरी तब अकुलान
मारी सो धर दिव्य तन चली गगन चढ़ यान
कपि तब दरश भयउ निष्पापा । मिटा तात मुनिवर कर सापा
मुनि न होइ यह निशिचर घोरा । मानहु सत्य वचन कपि मोरा
अस कहि गई अपसरा जबहीं । निशिचर निकट गयउ कपि तबहीं
कह कपि मुनि गुर दक्षिना लेहू । पाछे हमहिं मंत्र तुम्ह देहू ॥
शिर लगूर लपेटि पछारा । निज तन प्रगटेसि मरती बारा
राम राम कहि छाडेसि प्राना । सुनि मन हरषि चले हनुमाना
देखा शैल न औषधि चीन्हा । सहसा गिरि उपारि कपि लीन्हा

टी॰ रा॰ लं॰ ३७

गहि गिरि निशि नभ धावत भयऊ। अवधपुरी ऊपर कपि गयऊ

दो॰ देखा भरत बिशाल अति निशिचर मन अनुमानि

बिनु फर शायक मारेउ चाप श्रवण लगि तानि

परेउ मुरछि महि लागत शायक। सुमिरत राम राम रघुनायक

सुनि प्रिय बचन भरत तब धाये। कपि समीप अति आतुर आये

बिकल बिलोकि कीश उर लावा। जागत नहिं बहु भाँति जगावा

मुख मलीन मन भयउ दुखारी। कहत बचन भरि लोचन बारी

जेहि बिधि राम बिमुख मोहि कीन्हा। तेहि पुनि यह दारुण दुख दीन्हा

जो मोरे मन बच अरु काया॥ प्रीति राम पद कमल अमाया

तौ कपि होउ बिगत श्रम शूला। जो मोपर रघुपति अनुकूला

सुनत बचन उठि बैठ कपीशा। कहि जय जयति कौशलाधीशा

सो॰ लीन्ह कपिहि उर लाय पुलकित तन लोचन सजल

प्रीति न हृदय समाय सुमिर राम रघुकुल तिलक

तात कुशल कह सुखनिधान की। सहित अनुज अरु मात जानकी

कपि सब चरित समास बखाने। भये दुखी मन महुँ पछिताने

अहह दैव मैं कत जग जायउँ। प्रभु के एकौ काज न आयउँ

जानि कुअवसर मन धरि धीरा। पुनि कपि सन बोले बरबीरा

तात गहर होइहि तोहि जाता। काज न साइहि होत प्रभाता

चढ़ु मम शायक शैल समेता। पठवहुँ तोहि जहँ कृपा निकेता

सुनि कपि मन उपजा अभिमाना। मोरे भार चलिहि किमि बाना

राम प्रभाव बिचारि बहोरी॥ बंदि चरण कपि कहकर जोरी

टी॰ रा॰ लं॰ ३८

दो॰ तब प्रताप उर राखि प्रभु जैहौं नाथ तुरंत ॥ ॥
अस कहि आयसु पाइ पद बंदि चले हनुमंत
भरत बाहु बल शील गुण प्रभु पद प्रीति अपार
मनमहुँ जात सराहत पुनि पुनि पवन कुमार ॥
उहाँ राम लक्ष्मणहिं निहारी। बोल बचन मनुज अनुहारी॥
अर्द्ध राति गइ कपि नहिं आयो। राम उठाय अनुज उर लायो।
सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ। बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ
मम हित लागि तजेउ पितु माता। सहेउ विपिन हिम आतप बाता
सो अनुराग कहाँ अब भाई॥। उठहु न सुनि मम बच बिकलाई
जौ जनितेउँ बन बंधु बिछोहू। पिता बचन मन तेउँ नहिं तोहू
सुत बित नारि भवन परिवारा। होंहि जाहिं जग बारहिं बारा
अस बिचार जिय जागहु ताता। मिलै न जगत सहोदर भ्राता।
यथा पंख बिनु खग अति दीना। मणि बिनु फणि करि वर कर हीना
अस मम जिवन बंधु बिनु तोहीं। जो जड़ दैव जिआवै मोहीं॥॥
जैहौं अवध कवन मुँह लाई॥। नारि हेतु प्रिय बंधु नाँवाई॥
वरु अपयश सहतेउँ जग माहीं। नारि हानि बिशेष क्षति नाहीं
अब अवलोक शोक सुत तोरा। सहहिं निठुर कठोर उर मोरा
निज जननी के एक कुमारा॥ तात तासु तुम प्राण अधारा
सौंपेहु मोहि तुमहि गहि पानी। सब विधि सुखद परम हित जानी
उतरु काह देहौं तोहि जाई॥। उठि किन मोहिं सिखावहु भाई
बहु विधि शोचत शोच विमोचन। स्रवत सलिल राजिव दल लोचन

टी॰
रा॰ लं॰
३९

सुखेनवैद्य
लक्ष्मणजीको मूरछाभई
शक्तिके लगनेसे

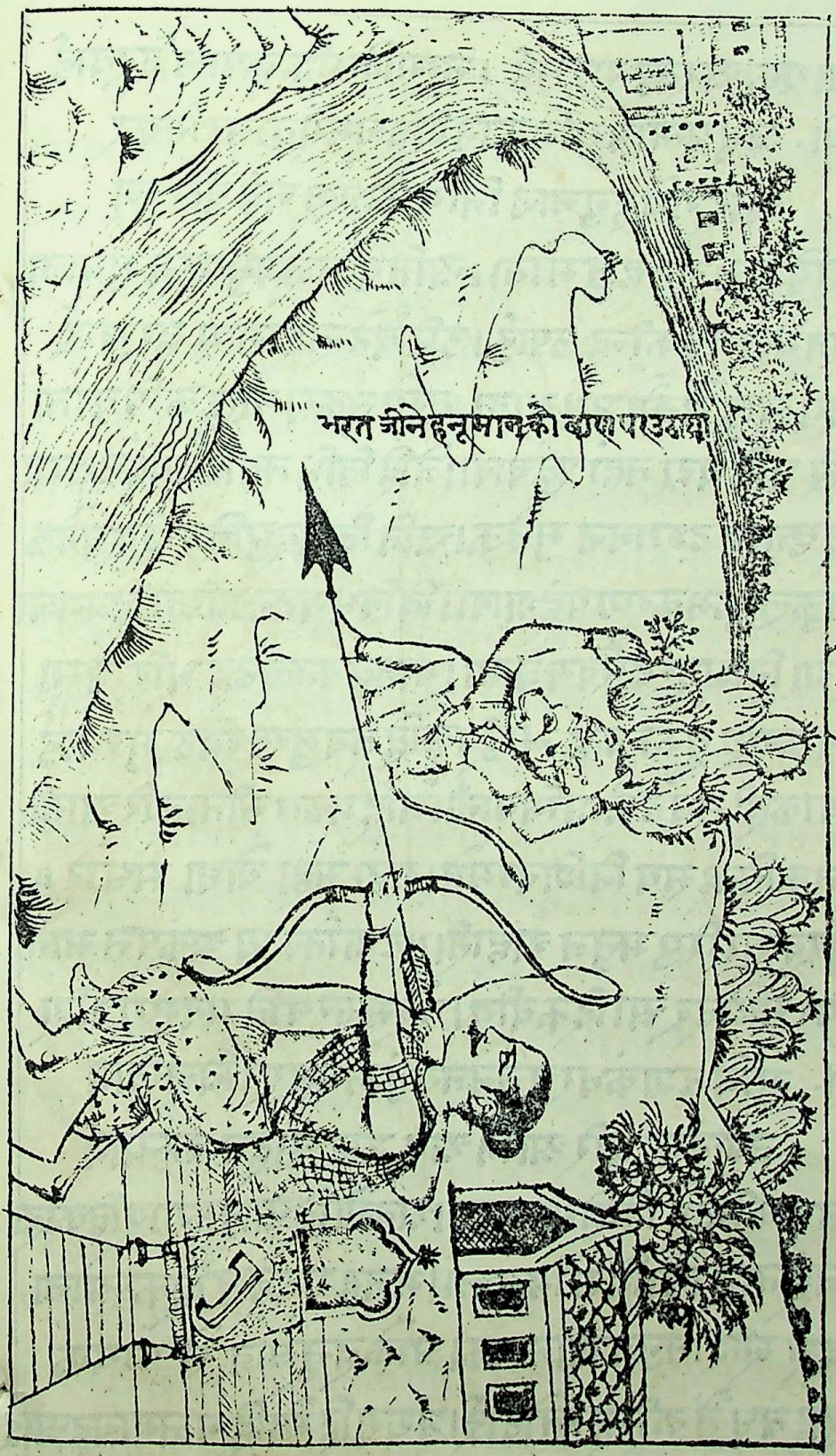
भरत जीने हनूमान को बाण पर उठाया

टी. रा. सं. ५२

उमा एक अखंड रघुराई । नरगति भक्ति कृपाल देखाई

सो. प्रभु प्रलाप सुनि कान बिकल भये बानर निकर
आइ गये हनुमान जिमि करुणा महं वीर रस

हरषि राम भेंटे हनुमाना । अति कृतज्ञ प्रभु परम सुजाना
तुरत वैद्य तब कीन्ह उपाई । उठि बैठे लक्षमण हरषाई
हृदय लाइ भेट्यो प्रभु भ्राता । हरषे सकल भालु कपि व्राता
कपि पुनि वैद्य तहां पहुंचावा । जेहि विधि तबहिं ताहि ले आवा
यह वृत्तांत दशानन सुनेऊ । अति विषाद पुनि शशि रघुनेऊ
व्याकुल कुंभकरण पहं आवा । विविध यतन करि ताहि जगावा
जागा निशिचर देखिय कैसा । मानहु काल देह धरि बैसा
कुंभकरण बूझा कह भाई । काहे तव मुख रहेउ सुखाई
कथा कही सब तेहि अभिमानी । जेहि प्रकार सीता हरि आनी
तात कपिन्ह सब निशिचर मारे । महा महा योधा संघारे ॥
दुर्मुख सुररिपु मनुज अहारी । भट अतिकाय अकंपन भारी
अपर महोदर आदिक वीरा । परे समर महि सबरण धीरा

दो. सुनि दशकंधर बचन तब कुंभकरण बिलखान
जगदंबा हरि आनि अब शठ चाहत कल्यान

भल न कीन्ह तैं निशिचर नाहा । अब मोहि आइ जगाएहि काहा
अजहूं तात त्यागि अभिमाना । भजहु राम होइहि कल्याना
है दश शीश मनुज रघुनायक । जाके हनूमान से पायक
अहह बंधु तैं कीन्ह खोटाई । प्रथम हि मोहि न जगायहु आई

टी. रा. लं. ४२

कीन्हेउ प्रभु विरोध तेहि देवक। शिव विरंचि सुरजाके सेवक
नारद मुनि मोहि ज्ञान जो कहा। कहतेउं तोहि समय निरवहा
अब भरि अंक भेटु मोहि भाई। लोचन सुफल करौं मैं जाई
श्यामगात सरसीरुह लोचन। देखौं जाय ताप त्रय मोचन
दो. राम रूप गुण सुमिरत मगन भयउ क्षण एक
रावण मागेउ कोटि घट मद अरु महिष अनेक
महिष खाइ अरु मदिरा पाना। गर्जा वज्राघात समाना।
कुंभकरण दुर्मद रण रंगा। चला दुर्ग तजि सेन न संगा
देखि विभीषण आगे आयउ। परेउ चरण निज नाम सुनायउ
अनुज उठाइ हृदय तेहि लायो। रघुपति भक्ति जान मन भायो
तात लात रावण मोहि मारा। कहत परम हित मंत्र विचारा
तेहि गलानि रघुपति पहं आयउं। देखि दीन प्रभु के मन भायउं
सुनुत भयउ कालबस रक्षा। सो कि मान अब परम सिखावन
धन्य धन्य तैं धन्य विभीषण। भयउ तात निशिचर कुल भूषण
बंधु बंश तैं कीन्ह उजागर। भजेउ राम शोभा सुख सागर
दो. बचन कर्म मन कपट तजि भजेहु राम रण धीर
जाहु न निज पुर सरुमोहि भयउ कालबस बीर
बंधु बचन सुनि चला विभीषण। आयउ जहं त्रैलोक विभूषण
नाथ भूधराकार शरीरा। कुंभकरण आवत रणधीरा
एतना कपिन सुना जब काना। किल किलाइ धाये बलवाना
लिये उठाइ बिटप अरु भूधर। कट कटाइ डारहिं ता ऊपर

कोटिकोटि गिरि शिखर प्रहारा। करहिं भालु कपि एक२ वारा
मुरयो न मनतनु टरयो न टारयो। जिमि गजअर्क फलन को मार्यो
तब मारुतसुत मुठिका हन्यो। पर्यो धरणि व्याकुल सिर धुन्यो
पुनि तेहि उरि मारेउ हनुमंता। घूर्मित भूतल परेउ तुरंता॥
पुनि नलनीलहि अवनि पछारेसि। जहंजहं पटकि२ भट मारेसि
चली बली मुरत मन पराई। अतिभय त्रसित न कोउ समुहाई
दो॰ अंगदादि कपि मूर्छित करि समेत सुग्रीव॥
कांखि दाबि कपिराज कहं चला अमित बलसींव
उमाकरत रघुपति नरलीला। खेलगरुड़ जिमि अहिगण मीना
मृकरि भंग कालहि जो खाई। ताहि कि सोहै ऐसि लराई
जगपावन कीरति बिस्तरहहिं। गाइगाइ भवनिधि नर तरहहिं
मूर्छा गइ मारुत सुत जागा। सुग्रीवहिं तब खोजन लागा
सुग्रीवहु के मूर्छा बीती। निबुकगयउ तेहि मृतक प्रतीती
काटेसि दसन नासिका काना। गर्जि अकास चलेउ तेहि जाना
गहेउ चरण गहि भूमि पछारा। अति लाघवं उठि पुनि तेहि मारा
पुनि आयउ प्रभु पहं बलवाना। जयति जयति जय कृपानिधाना
नाक कान काटे जिय जानी। फिरा क्रोध करि भै मन ग्लानी
सहज भीम पुनि बिनु मुनि नासा। देखत कपि दल उपजी त्रासा
दो॰ जय जय जय रघुबंश मणि धाये कपि करि हूह
एकहि बार ताहि पर डारेन्हि गिरि तरु जूह
कुंभकरण रण रंग बिरुद्धा। सन्मुख चला काल जनु क्रुद्धा

दी॰ ए॰ ले॰ ४६

कोटि कोटि कपि धरि २ खाई। जनु टीड़ी गिरि गुहा समाई ॥
कोटिन्ह गहि शरीर मन मर्दा। कोटिन्ह मीजि मिलावहि गर्दा
मुख नासा श्रवणन की वाटा। निसर पराहिं भालु कपि ठाटा
रण मद मत्त निशाचर दर्पा। विश्व ग्रसिहि जनु यहि विधि अर्पा
मुरे सुभट सब फिरहिं न फेरे। सूरु न नयन सुनहिं नहिं टेरे
कुंभ करण कपि फौज बिडारी। सुन धाई रजनीचर झारी ॥
देखी राम कटक बिकलाई। रिपु अनीक नाना विधि आई
दो॰ सुनु सुग्रीव विभीषण अनुज मम्हारेउ सैन
मैं देखों खल बल दलहि बोले राजिव नैन
करि सारंग साजि कटि भाथा। अरि दल दलन चले रघुनाथा
प्रथम कीन्ह प्रभु धनुष टंकोरा। रिपु दल बधिर भयउ सुनि सोरा
सत्य संध छाड़े सर लक्षा। काल सर्प जनु चले सपक्षा ॥
जहं तहं चले विपुल नाराचा। लगे कटन भट विकट पिशाचा
कटहिं चरण उर शिर भुज दंडा। बहुतक बीर होहिं गत खंडा
घुर्मि घुर्मि घायल महि परहीं। उठैं संभारि सुभट फिरि लरहीं
लागत बाण जलद जिमि गाजहिं। बहुतक देखि कठिन सर भाजहिं
रुंड प्रचंड मुंड बिनु धावहिं। धरु धरु मारु मारु पुनि गावहिं
दो॰ क्षण में प्रभु के सायकहि काटे विकट पिशाच
पुनि रघुबीर निखंग महिं प्रविसे सब नाराच
कुंभ करण मन दीख विचारी। हति क्षण गांह निशाचर धारी
भा अति क्रुद्ध महा बल बीरा। कियो मृगनायक नाद गंभीरा

टी॰ रा॰ लं॰ ५५

कोपि महीधर लेइ उपारी। डारै जहं मर्कट भट भारी ॥
आवत देखि शैल प्रभु भारे। सरन्हि काट रज सम कर डारे
पुनि धनु तानि कोपि रघुनायक। छाड़े अति कराल बहु सायक
तन महं प्रविस निसर सर जाहीं। जिमि दामिनि घन मांझ समाहीं
सोणित श्रवत सोह तन कारे। जनु कज्जल गिरि गेरु पनारे
बिकल बिलोकि भालु कपि धाये। बिहसा जबहिं निकट कपि आये
दो॰ महानाद करि गर्जा कोटि कोटि गहि कीश
महि पटके गज राज इव शपथ करै दशशीश
भागे भालु बली मुख यूथा। वृक्ष बिलोकि जिमि मेष बरूथा
चले भाग कपि भालु भवानी। बिकल पुकारत आरत बानी
यह निशिचर दुकाल सम अहई। कपि कुल देस परन अब चहई
कृपा बारिधर राम खरारी। पाहि पाहि प्रणतारति हारी
सकरुण बचन सुनत भगवाना। चले सुधारि सरासन बाना
राम सेन निज पाछे घाली। चले सकोप महा बल साली
खैंच धनुष सर शत संधाने। छूटे तीर शरीर समाने ॥
लागत सर धावा रिस भरा। कुधर डगमगत डोलत धरा
लीन्ह एक तेहि शैल उपाटी। रघुकुल तिलक भुजा सोइ काटी
धावा बाम बाहु गिरि धारी। प्रभु सोउ भुजा काटि महि पारी
काटे भुजा सोइ खल कैसा। पक्षहीन मंदर गिरि जैसा
उग्र बिलोकन प्रभुहि बिलोका। ग्रसन चहत मानहु त्रयलोका
दो॰ करि चिक्कार घोर अति धावा बदन पसारि

टी॰ रा॰ ल॰ ४६

गगन सिद्ध सुर त्रासित तहं हा हा कार पुकारि

सभय देव करुणा निधि जान्यौ। श्रवण प्रजंत सरासन तान्यौ

बिशिष निकर निशिचर मुख भेऊ। तदपि महाबल भूमि न पेऊ

सरन्हि भरा मुख सन्मुख धावा। काल त्रोण सजीव जनु आवा

तब प्रभु कोपि तीव्र सर लीन्हा। धरते भिन्न तासु शिर कीन्हा

सो शिर परेउ दशानन आगे। बिकल भयउ जिमि फणि मणि त्यागे

धरणि धसै धर धाव प्रचंडा। तब प्रभु काटि कीन्ह युग खंडा

परे भूमि जिमि नभते भूधर। हिटि दाव कपि भालु निशाचर

तासु तेज प्रभु बदन समाना। सुर मुनि सबहि अचंभौ माना

सुर दुंदुभी बजावहिं हरषहिं। अस्तुति करहिं सुमन बहु बरषहिं

करि बिनती सुर सकल सिधाए। रुचिर वीर रस प्रभु मन भाए

गगनो परि हरि गुण गण गाये। तेही समय देव ऋषि आये

वेगि हनहु खल कहि मुनि गये। राम समर महिं शोभित भये

छं॰ संग्राम भूमि बिराज रघुपति अतुल बल कौशल धनी

श्रम बिंदु मुख राजीव लोचन अरुण तन सोणित कनी

भुज युगल फेरत सर सरासन भालु कपि चहुं दिशि बने

कह दास तुलसी कहन सक छबि शेष जेहि आनन घने

दो॰ निशिचर अधम मलाय तन ताहि दीन्ह निज धाम

गिरिजा ते नर मंद मति जे न भजहिं श्रीराम

दिन के अंत फिरी दोउ अनी। समर भई सुभटन्ह श्रम धनी

राम कृपा कपि दल बल बाढ़ा। जिमि तृण पाइ लाग अति डाढ़ा

टी॰ रा॰ लं॰ ४७

छीजहिं निशिचर दिन अरु रैनी। जिमि मुख कहे मुकृत जेहि भानी
बहु बिलाप दशकंधर करई। बंधु शीश पुनि२ शिर धरई
रोवहिं नारि हृदय हति पानी। तासु तेज बल बिपुल बखानी
मेघनाद तेहि अवसर आयो। कहि बहु कथा पिता समुझायो
देखहु कालि मोरि मनु साई। अबहि बहुत का करौं बड़ाई
इष्टदेव सों बल रथ पायेउं। सो बल तात न तोहि देखायेउं
बहि बिधि जल्पत भयउ बिहाना। चहुंदुवार लागे कपि नाना
इत कपि भालु काल समबीरा। उत रजनीचर अति रणधीरा
लरहीं भट निज निज जय हेतू। बरणि न जाइ समर खगकेतू
दो॰ मेघनाद माया मय रथ चढ़ि गयउ अकास
गर्जेउ अट्टहास करि भइ कपि कटक हिं त्रास

शक्ति शूल तरवार कृपाना। अस्त्र शस्त्र कुलिशायुध नाना
डारैं परघ परिघ पाषाणा। लागेउ वृष्टि करै बहु बाणा
दश दिशि रहे बाण नभ छाई। मानहु मघा मेघ झरि लाई
धरु धरु मारु सुनिय धुनि काना। जो मारतेहि कोउ न जाना
गहि गिरि तरु अकास कपि धावहिं। देखहिं तेन्हि चितइ फिर आवहिं
अवघट घाट बाट गिरि कंदर। माया बल कीन्हेसि सर पंजर
जांहि कहां व्याकुल भये बंदर। सुरपति बंदि परेउ जनु मंदर
मारुत सुत अंगद नल नीला। कीन्हेसि बिकल सकल कलशीला
पुनि सुग्रीव बिभीषण लक्ष्मन। सरन्ह मारि कीन्हेसि जर्जर तन
पुनि रघुपति सैं जूझै लागा। सर छाड़ै होइ लाग हिं नागा

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कुंभकरण का युद्ध रामलक्ष्मण से
अंगद

व्याल पास बस भयउ खरारी। स्वबस अनंत एक अबिकारी
नट इव कपट चरित कर नाना। सदा स्वतंत्र एक भगवाना॥
रण शोभा लगि प्रभुहि बंधायो। नाग पास देवन दुख पायो

दो॰ गिरिजा जासु नाम जपि मुनि काटहिं भव पास
सो कि बंधतर आवे व्यापक विश्व निवास॥

चरित राम के सगुण भवानी। तरक न जांइ बुद्धि बल बानी
अस बिचारि जे तग्य बिरागी। रामहिं भजहिं तर्क सब त्यागी
व्याकुल कटक कीन्ह घननादा। पुनि भा प्रगट कहे दुर्वादा
जामवंत कह खल रहु ठाढ़ा। सुनकर ताहि क्रोध अति बाढ़ा
बूढ़ जानि सठ छांड़उं तोही। लागेसि अधम पचारे मोही
अस कहि तरल त्रिशूल चलायो। जामवंत कर गहि सोइ धायो
मारेसि मेघ नाद के छाती। परा भूमि घुर्मित सुर घाती
पुनि रिसान गहि चरण फिरायो। महि पछारि निज बल देखरायो

दो॰ ख॰ लं॰ ५०

वर प्रसाद सो मरै न मारा। तब गहि पद लंका पर डारा
इहां देव ऋषि गरुड़ पठायो। राम समीप सपदि सो आयो

दो॰ खगपति सब धर खाये माया नाग बरूथ
माया बिगत भये सब हरषे बानर यूथ॥
गहि गिरि पादप उपल नख धाये कीस रिसाय
चले तमीचर बिकल तर गढ़ पर चढ़े पराय

मेघनाद के सुरछा जागी। पितहि बिलोकि लाज अति लागी
तुरत गयउ गिरिवर कंदरा। करौं अजय मख अस मन धरा

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इहां बिभीषण मंत्र बिचारा। सुनहु नाथ बल अतुल उदारा
मेघनाद मख करै अपावन। रचल मायावी देव सतावन
जो प्रभु सिद्ध होइ सो पाइहि। नाथ बेगि पुनि जीति न जाइहि
सुनि रघुपति अति सयसुख माना। बोले अंगदादि कपि नाना
लक्ष्मण संग जाहु सब भाई। करहु बिध्वंस जज्ञ कर जाई
तुम्ह लक्ष्मण रण मोरहु ओही। देखि सभय सुर दुख अति मोही
मारेहु तेहि बल बुद्धि उपाई। जेहि छीजै निसिचर सुनु भाई
जामवंत सुग्रीव बिभीषण। सेन समेत रहहु तीनो जन
जब रघुबीर दीन्ह अनुसासन। कटि निषंग कसि साज सरासन
प्रभु प्रताप उर धरि रण धीरा। बोले घनइव गिरा गंभीरा
जौ तेहि आज बधे बिनु आवौं। तो रघुपति सेवक न कहावौं
जौ सत शकर करहिं सहाई। तदपि हतौं रघुबीर दोहाई

ए. सं. दी. ५२

दो. रघुपति चरण नाइ शिर चलेउ तुरंत अनंत
अंगद नील मयंद नल संग सुसट हनुमंत।

जाइ कपिन्ह सो देखा कैसा। आहुति देत रुधिर अरु भैसा
कीन्ह कपिन्ह सब जज्ञ बिध्वंसा। जब न उठै तब करहिं प्रशंसा
तदपि न उठै धरहिं कच जाई। लातन हति २ चलें पराई
लै त्रिशूल धावा कपि भागे। आये जहं रामानुज आगे ॥
आवा परम क्रोध कर मारा। गर्जे घोर रव बारहिं बारा ॥
कोपि मरुत सुत अंगद धाये। हति त्रिशूल उर धरणि गिराये
प्रभु कहं छांड़ि त्रिशूल प्रचंडा। सर कृति कृत अनंत युग खंडा

उठि बहोरि मारुत युवराजा। हतहिं कोपि तेहि घावन बाजा
फिरे बीर रिपु मरै न मारा। तब धावा करि घोर चिकारा
लक्षमण मत अस मंत्र दृढ़ावा। यहि पापिहि मैं बहुत खेलावा
आवत देखि क्रुद्ध जनु काला। लक्षमण छाड़े बिसिख कराला
देखेसि आवत पवि समधाना। तुरत भयउ खल अंतर ध्याना
बिबिध बेष धरि करै लराई। कबहुंक प्रगट कबहुं दुरि जाई
देखि अजय रिपु डरपे कीशा। परम क्रुद्ध तब भये अहीशा
सुमिरि कौशलाधीश प्रतापा। सर संधान कीन्ह करि दापा
छाड़ा बाण मांझ उर लागा। मरती बार कपट सब त्यागा

टी. रा. लं. ५२

दो. रामानुज कहि राम कहि अस कह छाड़ेसि प्रान
धन्य शक्र जित मात तव कहि अंगद हनुमान

बिनु प्रयास हनुमान उठायो। लंका द्वार राखि पुनि आयो
तासु मरण सुन सुर गंधर्वा। चढ़ि बिमान आये सुर सर्वा
बरषि सुमन दुंदुभी बजावहिं। श्री रघुनाथ बिमल यश गावहिं
जय अनंत जय जगदाधारा। तुम प्रभु सब देवन्ह निस्तारा

क्षेपक

अस्तुति करि सुर सिद्ध सिधाये। लछिमण कृपा सिंधु पहं आये
प्रभुहि बिलोकि शीश पद नावा। अनुज उठाय हरष उर लावा
कृपा दृष्टि करि अनुजहिं हेरा। बिगत भयो श्रम जब कर फेरा
बाण बेधि तन देखियत कैसे। कनक तृण सर पूरित जैसे॥
मुख प्रसन्न ता देखि छके सब। रिपु बध कहेउ बिभीषण ही तब
धरेउ शीश आनि प्रभु आगे। बानर भालु बिलोकन लागे
प्रभु कौतुकी निरखि सो शीशा। राखन कहेउ कोशलाधीशा

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो॰ प्रभु आयसु सुनि कीस पति राखेउ यतन कराइ
कटक सहित रघुबंश मणि शोभित अति दोउ भाइ
कृपा दृष्टि सब कटक निहारे। भए श्रम रहित राम बैठारे ॥
सुनहुं उमा इहि बिधि रिपु मारे। सुर गंधर्व मुनि भए सुखारे
अब सो सुनहु भुजा तेहि केरी। खग जिमि गई लंक शर प्रेरी
मेघनाद आंगन मैं परी। बाण बेधि श्रोणित सन भरी
देखति तहां सुलोचनि कैसी। रतितें रुचिर रूप गुण जैसी
नाग सुता दशकंध पतोहू। बासव रिपु तिय छबि मय जोहू
हेम सिंहासन सोहत बाला। सेवत विद्याधर त्रय माला
पूजत विविध बिनय करताही। सुख प्रमोद को सकत सराही
तहं पति भुजा परी इहि भांती। मनहुं सकल सुख तरु की कांती
दो॰ तब निज दासिन्ह देखि तहं श्रोणि श्रवत भुजदंड
भयउ समर आश्चर्य मय मनहुं अखंडन खंड
सुनकर सकल सखी मुख बैना। तजि सिंहासन उठी सुनैना
प्रेम सुभाव धुकधुकी धरकी। सूचक अशुभ दहनि भुज फरकी
होत महारण रावण रामहिं। बीर धुरीण मोर पिय तामहिं
सकल सुरासुर सकहिं न जूझी बिधि बामता परत नहिं बूझी
इतना कहत गई चलि आपू। पति भुज लखि करि कोटि कलापू
कंचन मणिगण भूषण सोई। महा बिटप सम आनन होई
देखत मनहि न आवत तेही। जासु प्रभाव सुनहुं किन लेही
नींद नारि भोजन परिहरही। बारह बरष तासु कर मरही

टी॰ रा॰ लं॰ ५३

दो॰ करि बिचार मन टेकदै मैं पति देवत नारि ॥
भुज लिख मेटहु दुचितई सुन कर दीन पसारि
लखि रुष तासु सखी उठि धाई। सो तिहि खोज खरी लै आई
दीन्ह हाथ मणि मय अंगनाई। लिखन लषण कीरति रुचिराई
नींद नारि भोजन शत कोटी। तजत तासु महिमा अति छोटी
अक्षय अखंड अलख अविनाशी। अतुल अमित घट के वासी
प्रगटहिं पालहिं पुन संहरई। त्रिगुण रूप त्रय मूरति धरई
जो कालहु कर काल भयंकर। बरणत शेष शारदा शंकर ॥
लीला तनु सुर सेवक हेतू। जासु नाम भव सागर सेतू ॥
मुनि मन पुंडरीक जाके घर। बचन बिबेक बिचार बुद्धि बर

दो॰ कोटि कल्प बरणत निगम अगम जासु गुण गाथ
तम शरीर जड़ जीव बिनु किमि बरणत लिखि हाथ
मम शिर गयो दरश रघुराई। तव प्रतीति लगि भुजा पठाई
इहि विधि लिखेउ सकल भुज बाता। परी भूमि तब अति बिकलाता
बांच सकल भुज लिखत यथारथ। लक्ष्मण राम नाम पर मारथ
त्रिया सुभाव तदपि बहु भांती। बिलपत सकल सखिन कर पांती
गुण गण साहस शील नाहको। कहि रोवत बल बिपुल बांहको
जेहि भुज बल सुरनाथ बिगोवा। सो प्रभु आजु समर महि सोवा
मणि गण भूषण बसन बिसारत। महि लोटत कर तल शिर मारत
मगन बिपत निज तन सुध नाहीं। दारुण बिपति कहिन केहि पाहीं
छिनक प्रबोध सखी कोउ करही। बहुर शोक दावानल जरही

छिन छिन उठत परत धरणी तल। पुनि पुनि सब सराह पति कोवन

दो॰ तिनमें सखी सयान इक कहि समुझावत बैन ॥

शोक छाड़ पति देवता सुमति करौ मति ऐन ॥

सुनकर सहसानन तन जाता। सत्य कहत तुम सखी सुमाता

विधि निर्मित दुख मो कहं लाहू। सुख परिपूर भवन सब काहू

विजय राम लक्ष्मण कहं आवा। सुयश सकल मर्कट कुल पावा

कुल कलंक बड़ लहेउ विभीषन। कुल कुठार अस सुनेउ न दीखन

छूट बंदि अस सुरगण केरी। निज निज पुर न दोहाई फेरी

मुनि पुलस्त्य कर भा कुलनाशा। अब रवि शशि सुख करहिं प्रकाशा

तेजवंत पावक परि हरि दुख। बहब समीर आजु अपने सुख

सलिल गंग निर्मल जल आजू। स्ववस बसहिं सुर नायक राजू

दो॰ यम कुबेर दिगपाल सब प्रमुदित सुर नर नाग

खाय अघाय बिहाय दुख पाइ सुयज्ञ विभाग

इतना कह मंदिर महं आई। देखत मणिगण धन बहुताई

सुरपति भवन सुपटतर नाहीं। जहं रिध सिध तन धरे क माहीं

देखत विनयन मन अनुरागा। पति पद प्रेम निपुण मन लागा

देत दान मणि भूषण चीरा। धेनु बसन मन हाटक हीरा।

मणिमय शिविका रुचिर सुहाई। भुज चढ़ाइ पहिराइ बनाई

आपन चढ़त भई पुनि आई। सुर दुर्लभ सुख सदन बिहाई

बीत राग जिमि तजत विषयगन। तेहि तस भांति दियो पति पद मन

सुक सारिका सुलोचन जाये। कनक पिंजरन राखि पढ़ाये

टी॰ रा॰ लं॰ ५५

व्याकुल कहं कहं जात सुनैना। सुन धीरज परिहरत सबैना
भए बिकल खग मृग इहि भांती। अपर दशा कैसे कहि जाती
प्रजा लोग गृह तजि संग लागे। प्रेम उमगि लोचन जल पागे
दो॰ बाजन लगे निसान बहु ढोल दुंदुभी भेरि ॥
पुरजन परिजन संग सब चले पालकी घेरि
देखि भीर दश कंधर द्वारे। सजक भये सब बीर प्रचारे
जानेउ कटक रिपुन कर आवा। अस्त्र शस्त्र कर गहि कर धावा
धनु चढ़ाय कटि तरकस बांधे। कोउ असि चर्म सरासन साधे
तोमर परशु प्रचंड गदा गहि। रोषन चोपे शूल शक्ति गहि
मारु मारु धरु धरु कहि धाये। प्रगट दशानन बिजय सुनाये
गर्जत तर्जत गिरा गंभीरा। समर भयंकर निशिचर बीरा
निकटहि निकट पालकी आई। चीन्ह सकल भट रहे लजाई
देखि जुहार नागपति कन्या। सती शिरोमणि त्रिभुवन धन्या
दो॰ द्वारपाल दशकंध बहु खबर जनाई जाय ॥
भयउ रजायसु बेगि तब बचन कहत बिलखाय
तुमहि अछत अस दशा हमारी। सुख तजि भई शोक अधिकारी
नभ पथ ह्वै भुज मम गृह परी। बाण बेधि श्रोणित तन भरी
देखि भुजा मन मैं अस डरी। संशय जानि दीन्ह कर खरी
लिखी राम लछिमण मुहि मारिन। क्रम क्रम सो सब कथा कही तिन
ठगि सी रही बांच गुण गाथा। जरिहों संग जो पाऊं माथा
रणक बंध भुज मम गृह आई। शिरतहं गयउ जहां रघुराई

टी॰ रा॰ लं॰ ५६

करहु सो यतन मिलहि मोहि शीशा। तुम सामर्थ निशाचर ईशा
सुनत कुलिश सम गिरा बधू की। जीवन आस दशानन मूकी
तदपि धीर धरि कर सिप्रबोधा। कहि कोइ मोहि समान जग योधा
दो॰ राम लषण सुग्रीव नल नील द्विविद हनुमंत
माथ बिभीषण रिषभ कर आनव मारि तुरंत
अब लगि रहेउ भरोसा भारी। कुंभकरण घन नाद सुरारी
सुनहु आज लगि कीन्ह न जूझा। इन सब कर पुरुषारथ बूझा
मरेउ सो नर बानर के मारे। बात सुनत अति लाज हमारे
गिनती कवन बीर मैं तिनकी। अति दुरदशा कीन्ह कपि जिनकी
तजहु शोक फुल बधू पतोहू। उन समान जिन जानसि मोहू
पुत्रि बिलंब करौ घटि चारी। देखहु मोर भयंकर भारी ॥
आनव शीश तव शत्रुन केरा। बिन प्रयास नहिं लावौं बेरा
भोगत जंतु पुराकृत भोगा। नतु किन निश्चर बनचर योगा
दो॰ मेरु उखारणहार जे धरा धरत कर बीच ॥
ते भट खाये मशक शिशु काल कुटिल तानीच
क्रोधावेष प्रगल्भहि बोली। हृदय शोक तन अचल न डोली
समाधान नहि मानत सोई। सुनि प्रलाप परितोष न होई
नर बानर पुरुषारथ देखत। बड़ो प्रभाव छोटकर लेखत
कूदि सिंधु लंका जेहि जारी। लघु कर मानत ताहि सुरारी
कुंभ करण अतिकाय महोदर। मम पति गिरेउ समेत सहोदर
ते रिपु चहत दशानन जीती। देखहु महा मोह कर रीती

टी॰ रा॰ लं॰ ५७

उतरु देहुं तौ पातक होई। कह बिवाद करि सर्बस खोई
फिरहि राज कछु मोहि न काजू। बिन पिय सकल नरक कर साजू
दो॰ तुरतहि उठी सुलोचना गइ मय तनयापास
पद गहि रोवत सकल कह प्रगट शोक इतिहास
आदिहि ते सब कथा बखानी। सुन सुन रोवत रावण रानी
कह निजपति भुज लिखत बहोरी। रामलषण महिमा नहिं थोरी
कह्यौ बहुरि दशकंधर क्रोधा। मुए बिडंबन कीन्ह सिबोधा
सुन निज पुत्र बधू की बानी। बोली दुखित मंदोदरि रानी
कहत सो मानहु सत्य सयानी। सुनी जो नारद मुनि की बानी
पाछिलि बात भई सब सांची। अनुभव कीन्ह न एकहु बांची
देवि न होइ मृषा रिष भाषत। अपने महा मोह मन राखत
अगली कथा समास समेता। सुन पुत्री ऋष बरणेउ जेता
बैरि भाव दशकंधर जूझव। प्राणहु गये नीत नहि बूझव
सिया शोक संकट तें छूटहिं। बानर भालु राज घर लूटहिं
सुरमुनि भूषण बसन बिमाना। भोग करहिं बनचर कुल नाना
दो॰ राज बिभीषण पाइहैं अमर कल्प निरबाह
भावी बस दुख सुख जगत उपदेशिय कहु काह
मुनिबर बचन मोहि परतीती। अनुभव दोउ हार अरु जीती
अब पुत्री पर हरि सब शोका। पति संग बेगि साध परलोका
जाहु राम पहं पति शिर लागी। तज संकोच आन किन मांगी
आज न होइ लाज कर भूषण। समैं हीन गुण गणिय न दूषण

टी॰ रा॰ लं॰ ५८

है पुनि ससुर बिभीषण तोरा। बालि तनय बालक सम मोरा
एक नारि ब्रत रघुबर केरा। लषण सुयश तुम सुनेउ घनेरा
जामवंत मंत्री सुग्रीवा ॥ । द्विबिद मयंद महा बल सीवा
जानहु ब्रह्मचर्य हनुमंता ॥ । शिव स्वरूप भवहर भगवंता
सदा नीति रत राम नरेशा। तहां जात कहु कवन कलेशा

दो॰ बिदित तोर पति भुज लिखत लक्ष्मण राम प्रभाव
हमहूं ऋषि भाषित कहेउ अब बिलंब जिन लाव

सुनत सासु मुख कर हित बानी। जाहुं राम पहं अस जिय जानी
बार बार चरणन शिर नाई। चली जहां लक्ष्मण रघुराई ॥
देखत कटक भालु कपि केरा। सिंधु सुबेल महीधर घेरा ॥
उमगेउ मनो महोदधि दूसर। हरित पीत कपि धूमर धूसर
व्योम लाल भाषत अनुहेरी। मनहु लेत बड़वानल घेरी।
गिरितरु धर भुज सहस भयंकर। जहं तहं प्रगट होइ जनु जलधर
लक्ष्मण शेष सु अंक शीश धर। कटक जलधि सोवत राघव बर
अखवट जहं तहं बैठि बिभीषण। अस सुकृती कहुं सुनेन दीषन

दो॰ देखत डरत सुलोचना धीरज धरत बहोरि
महाराज रघुबीर कहुं बिनय सुनावो मोरि

बानर सकल उठे अस बोली। अरि पुरतें आवत इक डोली
जानि परत रावण अब बूझा। भइ मति मेघनाद तब जूझा
हठ तजि सीतहि दीन पठाई। तजहु शोच अब मिटी लराई
जिह लगि प्रगट कीन्ह पुर आगी। बांधेउ सेतु हेतु जिहिं लागी

टी॰
रा॰ लं॰
५९

सोइ सीता अब बिन श्रम पाई। जानहु बिधि अनुकूल सहाई
बिजय राम सुग्रीवहि आवा। सुयश बीर बानर कुल पावा
बिरह राम लक्ष्मण कर छूटा। बिन कलेश लंका गढ़ लूटा
युग युग की रति चलब हमारी। कहं राक्षस कहं लघु बनचारी
दो॰ इहि बिधि चारु बिचारु करि निश्चै धरि मन माह
भयउ काज रघुराज कर बात दूसरी नाह ॥ ॥
पैठत कटक अतिहि सकुचाई। मान बिचारि जनु पर घर आई
आगेहि जाइ देखि रघुबीरा। छबि मय श्यामल गौर शरीरा
मरकत कनक छबिहि जनु निंदा। धन्य सो जन महिमा ते बिंदत
मत्त गयंद शुंड भुज दंडा। धनुष बाण असिधर पर चंडा
उर बिशाल अति उन्नत कंधर। कंबु कंठ रेखा त्रय सुंदर ॥
दसन पांति की कांत कहे को। लावत मन पट तरहि लहे को
देखत अधरन की अरुणाई। बिंबा फल बंधूक लजाई
शुक तुंडल नासिका लजाई। थाकेउ कवि पटतर नहि पाई
दो॰ छबि मय गुण मय तेज मय राम उदधि अवगाह
जहां न पावत पाव सुर किमि बरनौ कवि थाह
भृकुटी ललित कपोल सुहाये। शीश जटा कर मुकुट बनाये
भाल बिशाल तिलक युत सोहै। ध्यान समय मुनि मान समोहै
कल बल बसन तूण कटि बांधे। कर सर सुभग सरासन कांधे
बीरासन आसीन कृपाला। नव पल्लव प्रसून कर माला
चरण सरोज बरणि नहिं जाई। जहं मुनि मधुकर रहे लुभाई

टी॰ रा॰ लं॰ ६०

प्रगट भई जेहि थलते गंगा। श्रुति पुराण कह कथा प्रसंगा
नवत महेश बिरंचि जाहि को। लोचन गोचर होत काहि को
जल भारत भंजन जो कोई। भव सागर तारत के सोई ॥

दो॰ प्रणतपाल बिरदावली जिन चरणान की बान
शोक हरण संशय दलन करन सु मंगल खान

कर जोरे अंगद हनुमाना। द्विविद मयंद कुमुद बल बाना
जामवंत कपिपति बल शीला। ऋषभ सुषेन सहित नल नीला
महाबीर बानर सब राजत। लषण बिभीषण दोउ दिशि भ्राजत
मित भारत प्रभु चरण सुसेका। चितवत रुष रघुनंदन देवक
सभा मध्य सोहत अघ मोचन। कीन्हेउ सुफल निरखि निज लोचन
करत दंडवत शिर धर धरणी। तिहि कल चरित बिभीषण बरणी
पुत्र बधू दशकंधर केरी ॥ बड़ि पतिव्रता जानि प्रभु हेरी
मेघनाद की नारि सुशीला। असगति तव बिराध करलीला

दो॰ मुये जान पति भुजहि तव लिख समुझाई सोहि
महाराज रघुबंश मणि जाचत आई तोहि ॥

करत प्रणाम प्रेम नहिं थोरे। करुणा वचन कहत कर जोरे

छं॰ परसे चरण कर प्रेम पूरण प्रणत पाल रघरारि के
जिहि नमत शंकर शेष सुरमुनि धरणि भंजन भारके
प्रभु जानि सो विनती सुलोचनि करति कहि बिनती घनी
जय शोक हरण कृपाल जय जय जयत जय रघुकुलमनी
प्रभु ब्रह्म रूप सुभाव शीतल अतुल बल त्रिभुवनधनी

टी॰ ल॰ ६१

जय हरण धरणी भार बाहु बिशाल खंडन खल अची
तब दीन बंधु दयाल अपरम पार सब गुण आकरे ॥
करुणा निधान सुजान शील सनेह रूप उजागरे ॥
षट अष्ट लोक जो रचत पालत प्रलय सो मायासुरी
केहि भांति बरणौ नाथ गुण गण नारि जड़ मति बावरी
जेइ चरण ईश महेश सारद श्रुति निरंतर ध्यावहीं
हौं भूरि भाग सरोज पद सोइ हर्ष शिरु सु लगावहीं
छं॰ गह कर बाणी सारंग पाणी सब गुण खानी रामबली
सुर सुरभी रक्षक राक्षस भक्षक भक्त हि रक्षक मानव ली
मैं रिपु सुत नारी जान अघारी अधिकारी नहिं दुख भारी
हर बिरह दवारी अति भय कारी सह बहु बारी दुख कारी
तव सरणन आई जन सुख दाई रघुराई करुणा सागर
पति मस्तक पाऊं जर संग जाऊं शिर पाऊं शोभा आगर
पति मम तन त्यागी अति बड़ भागी अनुरागी जो मुक्त लई
ममता किम तासू बरणू आसू जासु अचल जग पांति रही
यह बिधि पद पंकज सेव्य रमा अज शिर नायउ दोउ कर जोर रही
सुन पंकज लोचन बचन सुलोचन लोचन मैं जल धार बही
दो॰ अस प्रभु दीन बंधु हरि कारण रहित दयाल
तुलसिदास शठ ताहि भज छाड़ कपट जंजाल
तुम अंतरजामी भगवाना । नहि तोहि आदि मध्य अवसाना
करुणा बचन सुनत रघुबीरा । पुलक रोम भयो शिथिल शरीरा

टी॰ रा॰ ल॰ ६२

देहुं जिवाय तोर पति आजू। करहु लंक कलप शत राजू॥
छाड़ शोच अब मन हरषाहू। तुरत भवन अपने फिर जाहू
सुन अस सत्य सिंधु कर बानी। मनमैं बनचर अति भयमानी
कहि न सकत कछु प्रभु रुषदेषी। कहा करब करतार बिशेषी॥
सब देवन कर शोच न जाई। जो कर कृपा राम इह जाई
दो॰ राज बिभीषण लंक कर केहि बिधि करिहहिं जाइ
समुझ बैर घननाद जब गहत सरासन धाइ॥
मुख रुख देखि कपिन भयमाना। प्रणत पाल भगवंत सुजाना
देखि बहुत रघुबर कर छोहू। बिनय करत दशकंध पतोहू॥
तुम उदार सब देवे लायक। करुणामय देखे रघुनायक
हमहु बिचारि दीख मन माहीं। जीवन ते अस मरण सराहीं
भुज बल जीत लोक बस कीन्हे। चौदह भुवन भोग कर लीन्हे
रण तीरथ जाचक बड़ चीन्हा। प्राण सुधन लक्ष्मण कर दीन्हा
अब न उचित पति दै उपहारा। तेहि पर अधिक सोदरश तुम्हारा
हमहू जाइ मरब सत साधी। मिलब तुमहिं जस मिलत समाधी
दो॰ निर्मल गति अवसर भयउ सुनहुं सत्य रघुबीर
तुमहिं मिलत नहिं होय भव यथा सिंधु गत नीर
मनकी जानन हार सुदेवा। भव सागर तारहु यह खेवा॥
लीनेउ राम कपीश बुलाई। मेघनाद शिर दीन्ह मंगाई॥
पाय कृतारथ मानेउ आपू। मिटा बिरह संभव परितापू॥
अंचल पोंछत मुख की धूरी। कहि मम प्राण सजीवन मूरी

टी॰
रा॰ लं॰
६३

देख संदेह कहत सुग्रीवा ॥ भुज गहि लिखत जीह बिनग्रीवा
हंसिहहि बदन तौ तियहै सांची। नातरु निशिचर माया जांची
कित अस ज्ञान मृतक भुज गावैं। जो मुनिवर साधन नहिं पावैं
प्रभु अस कहेउ हंसव यह शीशा। करत कुतर्क न उचित कपीशा

दो. सिरसों कहत सुलोचना हसहु बेगि मम नाथ
नातरु सत्य न मानिहैं लिखा जो तुमरे हाथ

छिनक बिलंब कीन्ह नहिं बोला। मृतक बदन मूंदत नहिं खोला
पुनि पुनि कहत सो नागकुमारी। श्रमित भयउ रणमें करि भारी
लगे लषण सर क्षोभ बढ़ावा। प्रभु समीप करि मोह लजावा
जो मन बचन करम यह देही। पति देवता न आन सनेही ॥
तौ प्रभु सभा बीच शिर बोलै। रहहि छाय यश सुयश अमोलै
जो जानत तव यह गति सांई। बोल पठावति पितहि सहाई
सुन तिय बचन हंसेउ तब शीशा। चौंके चकित भालु भट कीशा
हंसेउ ठठाय बदन सब देखा। बिस्मय भयउ सकल जिहि पेखा
कुलिश समान सुना नहिं जाई। रहेउ सो बदन बहुर अरगाई
सकुच कपीशहि तोषेउ नारी। बड़ आश्चर्य भयो बन चारी
पूछत कपि पति पद शिर नांई। कारण कवन हंसा शिर सांई
प्रभु कहं सुन सुग्रीव हरीशा। शीश हंसे कहं सुनहु अदीशा
मन क्रम बचन पतिहि शिव काई। तिय हित इहि सम आन उपाई
अस जिय जानि करहिं पति सेवा। तेहि पर सानुकूल मुनि देवा
यह मतवति अहि राजकुमारी। तेहि मत ते हंसो शीश सुरारी

टी. ग. सं. ६४

सुनि प्रभु यचन कपिन सुख माना। पुनि पुनि चरण गहे हनुमाना।
सुनु गिरिजा अस प्रभु प्रभुताई। केवल भक्तहि देत बड़ाई ॥
जासु दृष्टि जग उपजत नासा। अस कौतुक करके तिक आसा।
दो॰ शाश पाइ प्रभु चरण गहि बहु बिधि बिनय सुनाय
आज को दिन रण परि हरहु मम हित कौशल राय
बहुरि बिभीषण पगन परी सो। रघुपति चरण दियो मन पुनि सो
तुम पितु सम दशकंधर भाई। इहि कुल की तोहि लाज बड़ाई
मुनि पुलस्त्य परिवार कदीपा। पायउ फल रघुबीर समीपा
महा मोह बस अनभल माना। ज्ञान भयो तव गुण पहिचाना
युग युग करहु अकंटक राजू। सहित सुकीरति सुकृत समाजू
सुमिरत तुमहि सुजन गत पावा। रघुपति चरित संग कर गावा
सुनत बिभीषण मन करुणाकर। प्रगट न कहत सभय बिरहाकर
काल कर्म गति कह समझाई। चली तुरत गुरु आयसु पाई
दो॰ बाहर करि कपि कटक तें फिरेउ बिभीषण आप
बिसरेउ दशमुख बैरही हृदय अधिक संताप
शिर चढ़ाय पालकी चढ़ी सो। रघुपति कृपा प्रभाव बढ़ी सो
हृदय राखि मूरति घनश्यामा। रसना रटत निरंतर नामा
सरित सिंधु संगम जहं पावन। अस सुधि पाय गयो तहं रावन
संग मंदोदरि सब रनिवासू। मनो शोक रवि कीन्ह प्रकासू
पाय रजायसु सेवक धाये। चंदन अगर भार बहु लाये
रचि दृढ़ दारुण चिता बनाई। जिनु सुरलोक नसेनी लाई ॥

टी॰ रा॰ लं॰ ६५

करिप्रणाम सबजन परितोषी। धीरज धरसि तासु मतिपोषी
शिर भुज धरि बैठी करि आसन। भइ जनु योग सिद्ध कर भाजन
दो॰ देत अनल ज्वाला बढ़ी लपट गगन लगि आय
लखीन काहू जात तेहि सुरपुर पहुंची जाय

इति सुलोचना कथा

टी॰ रा॰ लं॰ ६६

सुत बध सुनाद आनन जबहीं। मूर्छित भयउ परेउ महि तबहीं
मंदोदरी रुदन करि भारी। उर ताड़न बहु भांति पुकारी
नगर लोग सब व्याकुल शोचा। सकल कहहिं दशकंधर पोचा

दो॰ तब दशकंधर विविध विध समुझाई सब नारि
नस्वर रूप जगत सब देखहु हृदय बिचारि ॥

तिन्हहिं ज्ञान उपदेश रावन। आपुन मंद कथा शुभ पावन
पर उपदेश कुशल बहु तेरे। जे आचरहिं ते नरन घनेरे ॥
निसा सिरानि भयउ भिनुसारा। लगे भालु कपि चारिहु द्वारा
सुभट बोलाइ दशानन बोला। रण सन्मुख जाकर मन डोला
सो अबहीं घर जाउ पराई। संयुग बिमुख भये न भलाई
निज भुज बल मैं बैर बढ़ावा। देहौं उतरु जो रिपु चढ़ि आवा
अस कहि मरुत बेगि रथ साजा। बाजे सकल जुझाऊ बाजा
चले बीर सब अतुलित बली। जनु कज्जल कै आंधी चली
असगुण अमित होहिं तेहि काला। गनै न भुज बल गर्व बिशाला

छं॰ अति गर्व गिनै न सगुण असगुण अवहिं आयुध हाथ ते
भट भिरत रथ तें बाजि गज चिक्करत भाजत साथ तें
गो मायु गीध कराल खर रव स्वान बोलहिं अति घने
जनु काल दूत उलूक बोलहिं बचन परम भयावने

दोहा

ताहि कि संपति सगुण शुभ सपनेहुं मन बिश्राम
भूत द्रोह बस मोह रत राम बिमुख रत काम।

टी॰ रा॰ लं॰ ६०

चलेउनिशाचर कटक अपारा। चतुरंगिनी अनी बहु धारा
विविध भांति बाहन रथ याना। बिपुल बरण पताक ध्वज नाना
चले गजन गन जूथ बनेरे ॥ । प्रावृट जलद मरुत जनु प्रेरे
बरण बरण बिरदैत निकाया। समर सूर जानहि बहु माया
अति बिचित्र बाहिनी बिराजी। बीर बसंत सेन जनु साजी ॥
चलत कटकदिग सिंदुर दगहीं। छुभित पयोधि कुधर डगमगहीं
उठीं रेणु रबि गयउ छिपाई। भरुत थकित बसुधा अकुलाई
पणव निसान घोर रव बाजहिं। प्रलय समय के घन जनु गाजहिं
भेरि नफीरि बाज सहनाई। मारू राग सुभट सुखदाई ॥
केहरि नाद बीर सब करहीं। निज निज बल पौरुष उच्चरहीं
कहै दशानन सुनहु सुभटा। मर्दहु भालु कपिन के ठटा ॥
हौं मारिहौं भूप दोउ भाई। अस कहि सन्मुख फौज बलाई
यह सुनि सकल कपिन जय पाई। धाये करि रघुबीर दोहाई ॥

छं॰ धाये बिशाल कराल मर्कट भालु काल समान ते
मानहु सपक्ष उडाहिं भूधर बृंद नाना बाण ते
नख दसन शैल महाद्रु आयुध सबल संकन मानहीं
जय राम रावण मत्तगज मृगराज सुयश बखानहीं

दो॰ दुहुं दिशि जय जय कार करि निज निज जोरी जान
भिरे बीर बल राम हित उन रावणहिं बखान।

रावण रथी बिरथ रघुबीरा। देख बिभीषण भयउ अधीरा
अधिक प्रीति मन भा संदेहा। बंदि चरण कह सहित सनेहा

नाथ नरेस नहिं तवपद त्राना। केहि बिधि जितब बीरबलवाना
सुनहु सखा कह कृपानिधाना। जेहि जय होय सो स्यंदन आना
सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य शील दृढ़ ध्वजा पताका
बल बिबेक दम परहित घोरे। छमा कृपा समता रजु जोरे
ईस भजन सारथी सुजाना। बिरति चर्म संतोष कृपाना॥
दान परसु बुधि शक्ति प्रचंडा। बर बिज्ञान कठिन को दंडा॥
अमल अचल मन त्रोण समाना। सम जम नियम सिली मुख नाना
कवच अभेद बिप्र गुरु पूजा। एहि सम बिजय उपाय न दूजा
सखा धर्ममय अस रथ जाके। जीतन कहन कतहुं रिपु ताके
दो॰ महा अजय संसार रिपु जीत सकै सो बीर
जाके अस रथ होइ दृढ़ सुनहुं सखा मतिधीर
सुनि प्रभु बचन बिभीषण हरषि गहे पद कंज।
एहि बिधि मोहि उपदेसेउ रामकृपा सुखपुंज
उत पचार दसकंधर सुत अंगद हनुमान॥
लरत निसाचर भालु कपि करि निज निज प्रभु आन
सुर ब्रह्मादि सिद्ध मुनि नाना। देखत रण नभ चढ़े बिमाना
हमहुं उमा रहे तेहि संगा। देखत राम चरित रण रंगा
सुभट समर रस दुहुं दिसमाते। कपि जय शील राम बल ताते
एक एक सन भिरहिं पचारहिं। एकन एक मर्दि महि पारहिं
मारहिं काटहिं धरहिं पछारहिं। सीस तोरि सीस सन मारहिं
उर बिदारहिं भुजा उपारहिं। गहि पद अवनि पटकि भट मारहिं

निशिचर भट महि गाड़हिं भालू। ऊपर डारिदेहिं बड़ बालू
बीर बली सुरवर जुद्ध बिरुद्धे। देखियत बिपुल काल जनु क्रुद्धे
छं॰ क्रुद्ध कृतांत समान कपि तन श्रवित सोणित राजहीं
मर्दहिं निशाचर कट भट बलवंत घन जिमि गाजहीं
मारहिं चपेटन्हि डाटि दांतन काटि लातन मीजहीं
चिक्करहिं मर्कट भालु छल बल करहिं जेहि खल छीजहीं
धरि गालु फारहिं उर बिदारहिं गल अंतावरि मेलहीं
प्रहलाद पति जनु बिबिध तनु धरि समर अंगन खेलहीं
धरु मारु काटु पछारु घोर गिरा गगन महं भर रही॥
जय राम जो तृण ते कुलिश कर कुलिश ते कर तृण सही
टी॰ ए॰ लं॰ ७१
दो॰ निज दल बिचलत देखेसि बीस भुजा दस चाप
रथ चढ़ चलेउ दशानन फिरहु फिरहु कर दाप॥
धायउ परम क्रुद्ध दश कंधर। सन्मुख चले हूह कर बंदर
गहि कर पादप उपल पहारा। डारन्हि ता पर एकहि बारा
लागहिं शैल बज्र तन तासू। खंड खंड होइ फूट हि आसू
चला न अचल रहा रथ रोपी। रण दुर्मद रावण अति कोपी
इत उत झपटि दपटि कपि जोधा। मरदै लागि भयउ अति क्रोधा
चले पराइ भालु कपि नाना। त्राहि त्राहि अंगद हनुमाना
पाहि पाहि रघुबीर गोसांई। यह खल खाय काल की नांई
तेहि देखे कपि सकल पराने। दसहु चाप सायक संधाने
छं॰ संधान धनु सर निकर छाड़े सि उरग जिमि उड़ि लागहीं

रहे पूर सर धरणी गगन दिशि विदिशि कहं कपि भागहीं
भयो अति कोलाहल विकल कपिदल भालु बोलहिं आतुर
रघुबीर करुणा सिंधु आरत बंधु जन रक्षक हरे ॥
दो. निज दल बिकल देखि कपि कसि निषंग धनु हाथ
लक्ष्मण चले सक्रुद्ध होइ नाइ राम पद माथ ॥
रे खल कामारसि कपि भालू। मोहि बिलोकु तोरमैं कालू
खोजत रहेउं तोहि सुतघाती। आजु निपाति जुड़ावौं छाती
अस कहि छाड़ेसि बाण प्रचंडा। लक्ष्मण किये सकल सत खंडा
कोटिन्ह आयुध रावण डारे। तिल प्रमाण करि काटि निवारे
पुनि निज बाणन कीन्ह प्रहारा। स्यंदन भंजि सारथी मारा
सत सत सर मारे दस भाला। गिरि शृंगन्ह जनु प्रविशहिं व्याला
पुनि सत सर मारे उर माहीं। परेउ धरणितल सुधि कछु नाहीं
उठा प्रबल पुनि मूर्छा जागी। छाड़ेसि ब्रह्म दीन्ह जो सांगी
छं. जो ब्रह्मदत्त प्रचंड शक्ति अनंत उर लागी सही ॥
परयो बीर बिकल उठायदशमुख अतुलबल महिमा रही
ब्रह्मांड भुवन बिराज जाके एक शिर जिमि रज कनी
तेहि चह उठावन मूढ़ रावण जान नहिं त्रिभुवन धनी
दो. देखि पवनसुत धायउ बोलत बचन कठोर
आवत कपिहि हनेउ तेहि मुष्टि प्रहार प्रघोर
जानु टेकि कपि भूमि न परा। उठा संभारि बहुत रिसभरा
मुठिका एक ताहि कपि मारा। परेउ शैल जनु बज्र प्रहारा ॥

दी. ग. लं. ७१

मुरछा गई बहोरि सो जागा। कपिबल बिपुल सराहन लागा।
धिक् धिक् तन पौरुष धिग मोही। जौ तैं जियत रहेसि सुर द्रोही
अस कहि लक्ष्मण कहं कपि लायो। देख दशानन बिस्मय पायो।
कह रघुबीर समुझ जिय भ्राता। तुम कृतांत भक्षक सुर त्राता।
सुनत बचन उठि बैठे कृपाला। गई गगन सो शक्ति कराला।
पुनि को दंड बाण गहि धाये। रिपु सन्मुख अति आतुर आये
छं· आतुर बहोरि बिभंजि स्यंदन सूत हति व्याकुल कियो
गिर्यौ धरनि दशकंधर बिकल तन बाण सत बेध्यो हियो
सारथी दूसर घालि रथ तेहि तुरत लंका लै गयो ॥ ॥
रघुबीर बंधु प्रताप पुंज बहोरि प्रभु चरणन नयो ॥
दो· उहां दशानन जागि कर करै लाग कछु यज्ञ
राम बिरोधी जय चहै शठ हठ बस अति अज्ञ
इहां बिभीषण सब सुधि पाई। सपदि जाय रघुपतिहिं सुनाई
नाथ करै रावण एक यागा। सिद्धि लय नहिं मरहि अभागा।
पठवहु नाथ वेगि भट बंदर। करहिं बिधंस आव दशकंधर
प्रात होत प्रभु सुभट पठाये। हनुमदादि अंगद सब धाये
कौतुक कूरि चढ़े सब लंका। पैठे रावण भवन अशंका।
यज्ञ करत जब ही सो देषा। सकल कपिन भा क्रोध बिशेषा
गाते निल जभ[illegible] गृह आवा। इहां आइ बक ध्यान लगावा
अस कहि अंगद मारी लाता। चितव न शठ स्वारथ मन राता
छं· नहिं चितव जब करि कोप कपि गहि दशन लातन मारहीं

टी. रा. लं. ७२

धरि केश नारि निकारि बाहेर तेति दीन पुकारहीं ॥
तब उठे क्रुद्ध कृतांत सम गहि चरण बानर डारहीं ॥
एहि बीच कपिन विधंस कृत मख देख मनमहं हारहीं

दो॰ यज्ञ विध्वंसि कुशल कपि आये रघुपति पास
चलेउ निशाचर क्रुद्ध ह्वै त्यागि जिवन कै आस

चलत होहिं अति अशुभ भयंकर। बैठहिं गीध उडाहिं शिरन्ह पर
भयउ काल वश काहु न माना। कहेसि बजावहु युद्ध निशाना
चली तमीचर अनी अपारा। बहु गजरथ पदाति असवारा
प्रभु सन्मुख धाये खल कैसे। सलभ समूह अनल कहं जैसे
इहां देवतन्ह अस्तुति कीन्ही। दारुण विपति हमहिं एहि दीन्ही
देव बचन सुनि प्रभु मुसकाना। उठि रघुबीर सुधारे बाना ॥
अब जनि राम खेलावहु एही। अतिसय दुखित होत बैदेही
जटा जूट दृढ़ बांधे माथे। सोहहिं सुमन बीच बिच गांथे
अरुण नयन वारिद तन श्यामा। अखिल लोक लोचन अभिरामा
कटि तट परि कर कस्यो निषंगा। कर को दंड कठिन सारंगा

छं॰ सारंग कर सुंदर निषंग। शिली मुखाकर करि कस्यो
भुज दंड पीन मनोहरायत उर धरा सुरपद लस्यो।
कह दास तुलसी जबहिं प्रभु सर चाप कर फेरन लगे
ब्रह्मांड दिग्गज कमठ अहि महि सिंधु भूधर डगमगे

दो॰ शोभा देखि हरखि सुर बरषहिं सुमन अपार
जय जय जय करुणा निधि छबि बल गुण आगार

७२ पृष्ठ को
२३ पंक्ति से यः
हटीका प्रारंभ
हुई १३४ चौ॰
२४ छं॰ १४
दो॰ इहां विभी
षण सब अरु
मूर्छा बिगत
भालु कपिलौं
बिभीषण शी
घ्रही जाइ प्रभु
तें रावण को

दो॰
रा॰ लं॰
७३

यज्ञ करबो कहे
तब प्रात रघु
नाथ कपिन
को आज्ञा द
ई यज्ञ विध्वं
सि देखि प्रभु
अस गुण भय
द्वारि सेन संवा
रि चल्यौ तब दे
व विव्य मुनि श्री
रघुनाथ धनुषबा
ण ते सजग है
तहां संग्राम व
श्री रूप कवर्ण
न श्री रामचंद्र
जू को प्यादे दे
खि इंद्र आप
नो रथ भेजत
भये हेतु भय
अब नहीं रह्यौ
बानरादिकन
को मोहित दे
खि तब प्रभु
इंद्र युद्ध करी
शीश भुजा
छेदन तें ॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri

एही बीच निसाचर अनी। कस मसात आई अनि घनी
देखि चले सन्मुख कपि भट्टा। प्रलय काल के जनु घन घट्टा
बहु कृपान तलवार चमक्कहिं। जनु दहु दिसि दामिनी दमक्कहिं
गज रथ तुरग चिकार कठोरा। गर्जहिं मनहुं बलाहक घोरा
कपि लंगूल विपुल नभ छाये। मनहुं इंद्र धनु उगे सुहाये॥
उठे धूरि मानहुं जल धारा। बाण बुंद भइ वृष्टि अपारा।
दुहूं दिसि पर्वत करहिं प्रहारा। वज्र पात जनु बारहिं बारा
रघुपति कोपि बाण झरि लाई। घायल भै निसिचर सनुदाई
लागत बाण वीर चिक्करहीं। घुर्मि घुर्मि जहं तहं महि परहीं
स्रवहिं शैल जनु निर्झर भारी। शोणित सरि कादर भय कारी
छं॰ कादर भयंकर रुधिर सरिता चली परम अपावनी॥
कोउ कूल दल रथ रेन चक्र अवर्ति बहति भयावनी।
जल अंतु गज पद चतुर गरवर विविध वाहन को गनै।
शर शक्ति तोमर सर्प चाप तरंग चरम कमठ घने॥
दो॰ वीर परहिं जनु तीर तरु मज्जा बहु बह फेन॥
कादर देखि डरहिं तहं सुभटन के मन चैन॥
मज्जहिं भूत पिशाच बैताला। प्रथम महा झोटिंक करालां
काक कंक लै भुजा उड़ाहीं। एक ते छीन एक लै खाहीं
एक कहहिं ऐसिउ सौंधाई। मठहु तुम्हार दरिद्र न जाई।
कहरत भट घायल तट गिरे। जहं तहं मनहुं अर्द्ध जल परे
खैंचहिं गीध आंत तट भये। जनु बंसी खेलहिं चित दये।

नमामि इंदु भंय
पुनर्हनुमानादि
लक्ष्मण मुतयत
मोहितहेरिवतव
प्रभुयुद्धे स्मरतेमा-
पनिवारिपुनःवि
भीषण औसब
तीरनमें स्थपको
स्थपकुंडकारि

व्याकुलकिये तं
हां जामवंत के
पायेते मूर्छित
छहु गति जानि
वाको भूतरथप
लंहजात भयो
हहिं निशाचर
मनमें भवित
६७॥
रहो

बहु भट बहहिं चढ़े खग जाहीं। जनु नावरि खेलहिं मरिमाहीं
योगिनि भरि भरि खप्पर गाजहिं। भूत पिशाच बधू नभ नाचहिं
भट कपाल करताल बजावहिं। चामुंडा नाना विधि गावहिं
जंबुक निकर कटक्कट कट्टहिं। खाहिं हु आहिं अघाइ दपट्टहिं
शीश परे महि जय जय बोलहिं। कोटिन रुण्ड मुण्ड बिनु डोलहिं

छं० बोलहिं जो जय जय रुंड मुंड प्रचंड शिर बिनु धावहीं।
खप्परन्ह खग्ग अलूझि जूझहिं सुभट भटन्ह ढहावहीं।
वानर निशाचर निकर मर्दहिं राम बल दर्वित भये।
संग्राम अंगन सुभट सोहहिं राम सर निकरन्हि हये॥

दो० रावण हृदय विचारा भा निशिचर संहार॥
मैं अकेल कपि भालु बहु माया करौं अपार॥

देवन प्रभुहिं पयादे देषा॥। उपजा उर अति क्षोभ विशेषा
सुरपति निज रथ तुरत पठावा। हरष सहित मातलि लै आवा
तेज पुंज रथ दिव्य अनूपा। हरषि चढ़े कोशल पुर भूपा
चंचल तुरंग मनोहर चारी। अजर अमर मन सम गतिकारी
रथारूढ़ रघुनाथहिं देषी। धाये कपि बल पाइ विशेषी
सही न जाइ कपिन कै मारी। तब रावण माया विस्तारी
सो माया रघुवीरहिं बांची। लक्ष्मण कपिन्ह सो मानी सांची
देखी कपिन्ह निशाचर अनी। अनुज सहित बहु कोशल धनी

छं० बहु राम लक्ष्मण देखि मर्कट भालु मन अति अपडरे॥
जनु चित्र निखिल समेत लक्ष्मण जहं सो तहं चित वहिं खरे

टी॰ रा॰ लं॰ ७५

CC-0. In Public Domain Digitized By Siddhanta eGangotri

निजसेन चकित विलोकि हंसि शिरचापसन्धिकोशलधनी
माया हरी हरि निमिष महं हरषी सकल मर्कट अनी
दो॰ बहुरि राम सब तन चितै बोले बचन गंभीर
द्वंद्वयुद्ध देखहु सबै अमितभये अति बीर
अस कहि रथ रघुनाथ चलावा। विप्रचरण पंकज शिर नावा॥
तब लंकेश क्रोध उर छावा। गर्जत तर्जत सन्मुख धावा॥
जीतेहु जे भट संयुग माहीं। सुनु तापस मैं तिन्ह सम नाहीं
रावण नाम जगत यश जाना। लोकप जाके बंदी खाना॥
खरदूषण विराध तुम मारा। वधेउ व्याध इव बालि बिचारा
निशिचर निकर सुभट संहारेहु। कुंभकरण घननादहिं मारेहु
आज बयर सब लेउं निवाही। जो रण भूमि भाजि नहिं जाही
आज करौं खल काल हवाले। परेहु कठिन रावण के पाले
सुनि दुर्वचन काल वस जाना। विहंसि वचन कह कृपानिधाना
सत्य सत्य सब तव प्रभुताई। जल्पसि जनि देखाउ मनुसाई
छं॰ जनि जल्पना करि सुयश नासहि नीति सुनहिं करहिं क्षमा
संसार महं पुरुष त्रिविधि पाटल रसाल पनस समा
एक सुमन प्रद एक सुमन फल एक फलैकेवल लागहीं
एक कहहिं कहहिं करहिं अपर एक करहिं कहत न बागहीं
दो॰ राम वचन सुनि विहंसा मोहिं सिखावत ज्ञान
बयर करत नहिं तब डर अब लागे प्रिय प्रान
कहि दुर्वचन क्रुद्ध दश कंधर। कुलिश समान लाग छांड़ेशर

नाना कार सिली मुख धाये । दिसि अरु विदिसि गगन महि छाये
पावक सर छाड़े रघुबीरा । छन महं जरे निसाचर तीरा ॥
छाड़ेसि तीव्र सक्ति खिसि आई । बान संग प्रभु फेरि चलाई ॥
कोटिन्ह चक्र त्रिसूल पवारहिं । बिनु मयास प्रभु काटि निवारहिं
निफल होहिं रावण सर कैसे । खल के सकल मनोरथ जैसे ॥
तब सत बान सारथी मारेसि । परेउ भूमि जय राम पुकारेसि ।
राम कृपा करि सूत उठावा । तब प्रभु परम क्रोध कहं पावा
छं० भये क्रुद्ध जुद्ध बिरुद्ध रघुपति बान सायक कसमसे
कोदंड धुनि अति चंड सुनि मनुजाद सब मारुत ग्रसे
मंदोदरी उर कंप कंपति कमठ भू भूधर त्रसे ॥ ६ ॥
चिक्करहिं दिग्गज दसन गहि महि देखि कौतुक सुरहंसे
दो० तानेउ चाप श्रवण लगि छाड़े बिसिख कराल
राम बान नभ मग चले लहलहात जनु ब्याल
चले बान सपच्छ जनु उरगा । प्रथमहिं हत्यो सारथी तुरगा
रथ बिभंजि हति केतु पताका । गर्जो अति अंतर बल थाका ॥
तुरत आन रथ चढ़ि खिसियाना । अस्त्र सस्त्र छाड़ेसि बिधि नाना
निफल होहिं सब उद्यम ताके । जिमि परद्रोह निरत मन साके ॥
जब रावण दस सूल चलावा । बाजि चार महि मारि गिरावा ॥
तुरग उठाइ कोपि रघुनायक । खैंच सरासन छाड़े सायक ॥
रावण सिर सरोज बन चारी । चली रघुबीर सिली मुख धारी
दस दस बान भाल दस मारे । निसरि गये चले रुधिर पनारे

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eG

श्रवत रुधिर धाये बलवाना। प्रभु पुनि कृत धनु सर सं धाना।
तीस तीर रघुबीर पवारे।। भुजन्हि समेत शीश महि पारे
राम बहोरि भुजा शिर छीने। काटत ही पुनि भये नवीने।
प्रभु बहु बार बाहु शिर हये।। कटत झटित पुनि नूतन भये
पुनि पुनि प्रभु काटत भुज शीशा। अति कौतुकी कोशलाधीशा
रहे छाइ नभ शिर अरु बाहू। मानहुं अमित केतु अरु राहू।
छं० जनु राहु केतु अनेक नभ पथ श्रवत श्रोणित धावहीं।।
रघुबीर तीर प्रचंड लागहिं भूमि गिरन न पावहीं।।
एक एक सर शिर निकर छेदे नभ उड़त इमि सोहहीं।
जनु कोपि दिनकर निकर जहं तहं विधंतुद कहं मोहहीं
दो० जिमि जिमि प्रभु हत तासु शिर तिमि तिमि होहिं अपार
सेवत विषय विवर्द्ध जिमि नित नित नूतन मार।।
दश मुख देखि शिरन्ह के बाढ़ी। बिसरा मरण भई रिस गाढ़ी
गर्जेउ मूढ़ महा अभिमानी। धायउ दशौ सरासन तानी।
समर भूमि दश कंधर कोप्यो। बरषि बाण रघुपति रथ तोप्यो
दंड एक रथ देखन परेऊ। जनु निहारमहुं दिनकर दुरेऊ
हाहा कार सुरन्ह जब कीन्हा। तब प्रभु कोपि सरासन लीन्हा
सर निवारि रिपु के शिर काटे। ते दिश विदिश गगन महि पाटे
काटे शिर नभ मारग धावहिं। जय जय धुनि करि भय उपजावहिं
कहं लक्ष्मण सुग्रीव कपीशा। कहं रघुबीर कौशलाधीशा।।
छं० कहं राम कहि सिर निकर धावहिं देखि मर्कट भजि चले

टी. रा. लं. ७८

संधानि धनु रघुबंश मणि हंसि सरन्ह शिर बेधे भले ॥
शिर मालिका कर कालिका गहि वृंद वृंदहि बहु मिलीं
करि रुधिर सर मज्जन मनहुं संग्राम बट पूजन चलीं ॥

दो० पुनि दशकंठ क्रुद्ध ह्वै छाँड़ी शक्ति प्रचंड ॥
चली विभीषण सन्मुख मनहुं काल कर दंड ॥

आवत देखि शक्ति सो घोरा। प्रण तारत भंजन पण मोरा
तुरत विभीषण पाछे मेला। सन्मुख राम सहेउ सो शेला
लागि शक्ति मुरछा सो भई। प्रभु कृत खेल सुरन्ह बिकलई
देखि विभीषण प्रभु श्रम पायो। गहि कर गदा क्रुद्ध ह्वै धायो।
रे कुभाग्य शठ मंद कुबुद्धे। तैं सुर नर मुनि नाग विरुद्धे।
सादर शिव कहँ शीश चढ़ाये। एक एक के कोटिन्ह पाये॥
तेहि कारण खल अब लग बाच्यो। अब तव काल शीश पर नाच्यो
राम विमुख शठ चह संपदा॥ अस कहि हनेसि मांझ उरगदा

छं० उर मांझ गदा प्रहार घोर कठोर लागत महि पर्यो॥
दश वदन श्रोणित श्रवत पुनि संभारि धायो रिस भर्यो
दोउ भिरे अति बल मल्ल युद्ध विरुद्ध एकहि एक हने
रघुवीर बल दर्पित विभीषण घालनहिं ताकह गने

दो० उमा विभीषण रावणहिं सन्मुख चितव कि काउ
सो अब भिरत काल ज्यों श्री रघुवीर प्रभाउ ॥

देखा श्रमित विभीषण भारी। धायउ हनूमान गिरि धारी।
रथ तुरंग सारथी निपाता॥ हृदय मांझ तेहि मारि सिलाता

टी. रा. लं. ७९

ठाढ़ रहा अति कंपित गाता। गयो बिभीषण जहं जनत्राता
पुनि रावण कपि हतेउ प्रचारी। चलेउ गगन कपि पूंछ पसारी
गहेसि पूंछ कपि सहित उड़ाना। पुनि फिरि भिरेउ प्रबल हनुमाना
लरत अकाश युगल सम योधा। एकहि एक हनत करि क्रोधा
सोहहिं नभ छल बल बहु करहीं। कज्जल गिरि सुमेरु जनु लरहीं
बुधि बल निशिचर परै न पार्यो। तब मारुत सुत प्रभु संभार्यो
छं॰ संभारि श्रीरघुबीर धीर प्रचारि कपि रावण हन्यो
महि परत पुनि उठि लरत देवन्ह युगल कहं जय भय्यो
हनुमंत संकट देखि मर्कट भालु क्रोधातुर चले॥
रणमत्त रावण सकल सुभट प्रचंड भुज बल दल मले
दो॰ तब रघुबीर पुकारे धाये कीस प्रचंड॥ ९॥

सी॰ स॰ सं॰ ८०

कपि बल प्रबल देखि तेहि कीन्ह प्रगट पाखंड
अंतर्धान भयउ छण एका। पुनि प्रगटे बलरूप अनेका
रघुपति कटक भालु कपि जेते। जहं तहं प्रगट दशानन तेते।
देखे कपिन्ह अमित दश शीशा। जहं तहं भजे भालु अरु कीशा
भागे वानर धरहिं न धीरा। त्राहि त्राहि लक्ष्मण रघुबीरा
दश दिशि धावहिं कोपि न्ह रावण। गर्जहिं घोर कठोर भयावन
डरे सकल सुर चले पराई। जय कै आस तजहु अब भाई
सब सुर जिते एक दश कंधर। अब बहु भये तकहु गिरि कंदर
रहे बिरंचि शंभु मुनि ज्ञानी। जिन्ह जिन्ह प्रभु महिमा कछु जानी
छं॰ जाना प्रताप ते रहे निर्भय कपिन्ह रिपु माने फुरे

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चले बिकल मर्कट भालु सकल कृपालपाहि भयातुरे
हनुमंत अंगद नील नल अति बल लरत रण बांकुरे
मर्दहिं दशानन कोटि कोटिन्ह कपट भूधर डंकुरे।

दो॰ सुर बानर देखे बिकल हंस्यो कोशलाधीश
सजि सारंग एक शरहते सकल दशशीश

प्रभु क्षणमहं माया सब काटी। जिमि रविउये जाहिं तम फाटी
रावण एक देख सुर हरषे। फिरे सुमन बहु प्रभु पर बरषे
भुज उठाइ रघुपति कपि फेरे। फिरे एक एकन्ह तब टेरे॥
प्रभु बल पाइ भालु कपि धाये। तरल तमकि संजुग महं पाये
अस्तुति करत देवतेहि देखे। भयउ एक मैं इन के लेखे॥
बहु सदा तुम्हार सरण ललं। अस कहि कोप गगन पथ धायल
हाहा कार करत सुर भागे। खलहु जाहु कहं मोरे आगे
देखि बिकल सुर अंगद धायो। कूदि चरण गहि भूमि गिरायो
छं॰ गहि भूमि पार्यो लात मार्यो बालिसुत प्रभु पहिं गयो
संभारि उठ दशकंठ घोर कठोर रव गर्जत भयो॥
करिदाप चाप चढ़ाय दश संधान सर बहु बर्षई
किये सकल भट घायल भयाकुल देखि निजबल हर्षई

दो॰ तब रघुपति रावण के शीश भुजा शर चाप
काटे बहुत बढ़े पुनि जिमि तीरथ कर पाप

शिर भुज बाढ़िदेखि कपि केरी। भालु कपिन्ह रिस भई घनेरी
मरत न मूढ़ कटेउ भुज शीशा। धाये भालु कपि भट कीशा

CC-0. In Public Domain. Digitized by

बालितनय मारुत नल नीला। बानर राज दिबिद बल सीला
बिटप महीधर करहिं प्रहारा। सोइ गिरि तरु गहि कपिन्ह सो मारा
एक नखन रिपु बपुष बिदारी। भागि चलहिं एक लातन्ह मारी
तब नल नील शिरन्ह चढ़ गयऊ। नख न्ह लिलार बिदारत भयऊ
रुधिर देखि बिषाद अति भारी। तिन्हहिं धरन कहं भुजा पसारी
गहे न जाहिं कर न्ह पर फिरहीं। जनु युग मधुप कमल बन चरहीं
कोपि कूदि द्वौ धरे सि बहोरी। महि पटकत भजे भुजा मरोरी
पुनि सकोप दस धनु कर लीन्हे। सर न्ह मार घायल कपि कीन्हे
हनुमदादि मूर्छित कर बंदर। पाइ प्रदोष हरष दस कंधर
मुर्छित देख सकल कपि बीरा। जामवंत धायउ रण धीरा।
संग भालु भूधर तरु धारी। मारण लगे पचारि पचारी
भयउ क्रुद्ध रावण बलवाना। गहि पद महि पटकै भट नाना
देखि भालु पति निजदल घाता। कोपि मारु उर मोरसि लाता
छं॰ उरलात घात प्रचंड लागत बिकल रथ तें महि परा ॥
गहि भालु बीसहु कर मनहु कमलनि बसे निसि मधुकरा
मूर्छित बिलोकि बहोरि पदहति भालु पति प्रभु पहं गयो
निसि जानि स्यंदन घालि तेहि तब सूत यतन करत भयो
दो॰ मुरछा बिगत भालु कपि सब आये प्रभु पास
निसिचर सकल रावणहिं घेरि रहे अति त्रास
तेहि निसि सीता पहं तब जाई। त्रिजटा कहि सब कथा सुनाई
सिर भुज बाढ़ि सुनत रिपु केरी। सीता उर भइ त्रास घनेरी

टी॰ रा॰ लं॰ ८

मुख मलीन उपजी मन चिंता। त्रिजटा सन बोली तब सीता
होइहि कहा कहसि किन माता। केहि बिधि मरिहि बिश्व दुखदाता
रघुपति सर शिर कटेहुं न मरई। बिधि बिपरीत चरित सब करई
मोर अभाग्य जिआवत ओही। जेहि हों हरि पद कमल बिछोही
जेहि कृत कनक कपट मृग झूठा। अजहुं सो देव मोहि पर रूठा
जेहि बिधि मोहि दुख दुसह सहाये। लक्ष्मण कहुं कटु बचन कहाये
रघुबर बिरह सबिष सर मारी। तकि तकि मार बार बहु भारी
ऐसेहु दुख जो राख मम प्राना। सोइ बिधि ताहि जिआवन आना
बहु बिधि करत बिलाप जानकी। करि करि सुरत कृपा निधानकी
कह त्रिजटा सुनु राजकुमारी। उर सर लागत मरै सुरारी ॥
प्रभु तातें उर हते न तेही। एहि के हृदय बसति बैदेही

छं॰ एहि के हृदय बस जानकी उर जानकी मम बास है
मम उदर भुवन अनेक लागत बाण सब कर नास है
सुनि बचन हरष बिखाद मन अति देख पुन त्रिजटा कहा
अब मरिहि रिपु एहि बिधि सुनहिं सुंदरि तजहिं संशय महा

दो॰ काटत शिर होइहि बिकल छूट जाय तब ध्यान
तब रावणहिं हृदय महं मरिहहिं राम सुजान

अस कहि बहुत भांति समुझाई। पुनि त्रिजटा निज भवन सिधाई
राम सुभाव सुमिरि बैदेही। उपजी बिरह व्यथा अति तेही
निशिहि शशिहि निंदति बहु भांती। युग सम भई न राति सिराती
करति बिलाप मनहिं मन भारी। राम बिरह जानकी दुखारी

तहां पूरण शो भादेखि देवादि स्तुति अरु मं दोदरी बिलाप शोच यथा मति संतोष कह्यो अ रु बिभीषण को परिलो ष शुद्ध करि पुनः

टी॰ रा॰ लं॰ ८३

निज प्रणतें लक्ष्मण तें लक्ष्मण सुग्री वादि को राज देने की आज्ञा दई त हां जाय यथा वि धि राज देइ प्रभु समीप आइ सब शोभित अरु अ स्तुति योग हेतु भयो १०५॥

CC-0. In Public Domain Digitized By Siddh...

जब उरभयउ बिरह उर दाहू । फरकेउ बाम नयन अरु बाहू
सगुण बिचारि धरी मन धीरा । अब मिलिहहिं कृपाल रघुबीरा
इहां अर्द्ध निशि रावण जागा । निज सारथी सों खीजन लागा
सठ रण भूमि छड़ाइसि मोही । धिग धिग अधम मंदमति तोही
तेहि पद गहि बहु बिधि समुझावा । भोर भयें रथ चढ़ि पुनि आवा
सुनि आगमन दशानन केरा । कपिदल खरभर भयउ घनेरा ॥
जहं तहं भूधर बिटप उपारी । धाये कटकटाइ भट भारी
छं० धाये जो मर्कट बिकट भालु कराल कर भूधर धरा ।
अति कोप करहिं प्रहार मारत भजि चले रजनीचरा
बिचलाइ दल बलवंत कीसन्ह घेरि पुनि रावणु लियो
चहुं दिशि चपेटन्ह मारि नख दन्ह बिदारि तनु व्याकुल कियो

टी० रा० लं० ८५

दो० देखि महा मर्कट प्रबल रावण कीन्ह बिचार
अंतर हित होइ निमिष महं कृत माया बिस्तार

तोमरछंद

जब कीन्ह तेहि पाखंड । भये प्रगट जंतु प्रचंड ॥
बेताल भूत पिशाच । कर धरे धनु नाराच ॥
योगिनि गहे कर बाल । एक हाथ मनुज कपाल
करि सद्य शोणित पान । नाचहिं करहिं बहु गान
धरु मारु बोलहिं घोर । रही पूरि धुनि चहुं ओर
मुख बाय धावहिं खान । तब लगे कीस परान ।
जहं जाहिं मर्कट भागि । तहं बरत देखहिं आगि
भये बिकल बानर भालु । पुनि लागि बरषे बालु

जहं तहं थकित करकीश। गर्जउ बज्रि दशशीश
लक्ष्मण कपीश समेत। अये सकल बीर अचेत।
हा राम हा रघुनाथ। कहि सुभट मीजहिं हाथ
यहि बिधि सकल बल तोरि। तेहि कीन्ह कपट बहोरि
प्रगटेसि बिपुल हनुमान। धाये गहे पाषान ॥
तिन्ह राम घेरे जाइ। चहुं दिशि बरूथ बनाइ
मारहु धरहु जनि जाइ। कट करहिं पूंछ उठाइ
दहुं दिशि लंगूर बिराज। तेहि मध्य कोशल राज
छं॰ तेहि मध्य कोशलराज सुंदर श्याम तनशोभालही
जनु इंद्र धनुष अनेक की बरबारि तुंग तमालही
प्रभुदेख हरष बिषाद उर सुर बदतजयजयजयकरी
रघुबीर एकहि तीर कोपि निमेष महुं माया हरी।
माया बिगत कपि भालु हरषे बिटप गिरि गहि सब फिरे
सर निकर छांड़े राम रावण बाहु शिर पुनि महि गिरे
श्री राम रावण समर चरित अनेक कल्प जो गावहीं
सत शेष सारद निगम कहि तेउ तदपि पारन पावहीं
दो॰ तांके गुण गण कछु कहे जड़ मति तुलसीदास
निज निज बल अनुरूप तें मांछी उड़े अकास ॥
कोटे शिर भुज बार बहु मरत न भट लंकेश ॥
प्रभु क्रीड़त सुर सिद्ध मुनि व्याकुल देख कलेश
कोटे शिर पुनि होहिं अपारा। भागकरत जिमि बाढ़हि मारा

CC-0. In Public Domain Digitized by

मरद्न रिपुश्रमभयउ बिशेषा। राम बिभीषण तन तबदेखा
उमाकाल मरु जाकी दृच्छा। सो प्रभु जनकर प्रीति परिच्छा
पुनि सर्बज्ञ चराचर नायक। प्रणत पाल सुर सुनि सुखदायक
नाभिकुंड पियूष बस याके। नाथ जिअत रावण बल ताके
सुनत बिभीषण बचन कृपाला। हरषि गहे कर बाण कराला
असुभ होन लागे तब नाना। रोवहिं खर शृगाल बृकस्वाना
बोलहिं खग जग आरति हेतू। प्रगट भये नभ जहं तहं केतू
दस दिशि दाह होन अति लागा। भयउ परब बिनु रबि उपरागा
मंदोदरि उर कंपति भारी। प्रतिमा स्रवहिं नयन मग वारी
छं॰ प्रतिमा रुदहिं पबि पातन भ्रमहिं बात बह डोलति मही
बरषहिं बलाह रुधिर कच रज असुभ अति सक कोकही
उतपात अमित बिलोकि नभ सुर बिकल बोलहिं जय जये
सुर सभय जानि कृपाल रघुपति चाप सर जोरत भये।
दो॰ खैंच सरासन श्रवण लगि छाड़े शर इकतीस
रघुनायक शायक चले मानहुं काल फणीश
सायक एक नाभि सर सोषा। अपर लगे भुज शिर करि तोषा
लै शिर बाहु चले नाराचा। शिर भुज हीन रुंड महि नाचा
धरणि धसै धर धाव प्रचंडा। तब सर हति प्रभु कृत शत खंडा
गर्जेउ मरत घोर रव भारी। कहां राम रण हतौं प्रचारी॥
डोली भूमि गिरत दश कंधर। छुभित सिंधु सरि दिग्गज भूधर
धरणि परेउ दोउ खंड बढ़ाई। चापि भालु मर्कट समुदाई

टी॰ ए॰ लं॰ ६६

मंदोदरि आगे भुज सीसा। धरि सर चले जहां जगदीसा
प्रबिसे सब निषंग महं जाई। देखि सुरन्ह दुंदुभी बजाई ॥
तासु तेज समान प्रभु आनन। हरषे देख संभु चतुरानन
जय जय धुनि पूरी ब्रह्मंडा। जय रघुबीर प्रबल भुजदंडा ॥
बरषहिं सुमन देव मुनि बृंदा। जय कृपाल जय जयति मुकुंदा
छं॰ जय कृपाकंद मुकुंद द्वंद हरण सरण सुखदप्रभो ॥
खल दल बिदारण परम कारण कारुणीक सदा बिभो
सुर सुमन बरषहिं हरष संकुल बाज दुंदुभि गह गहीं
संग्राम अंगन राम अंग अनंग बहु शोभा लहीं ॥
शिर जटा मुकुट प्रसून बिच बिच अति मनोहर राजहीं
जनु नील गिरि पर तड़ित पटल समेत उडुगन भ्राजहीं
भुजदंड सर कोदंड फेरत रुधिर तन कन अति बने
जनु रायमुनी तमाल पर बैठी बिपुल सुख आपने
दो॰ कृपा दृष्टि करि वृष्टि प्रभु अभय किये सुर बृंद
भालु कीस सब हरषे जय सुख धाम मुकुंद
पति शिर देखि जबहिं मंदोदरी। मुरछित बिकल धरणि खसपरी
युवति बृंद रोवति उठि धाईं। तेहि उठाय रावण पहिं आईं
पति गति देखि सो करहिं पुकारा। छूटे कच नहिं बपुष संभारा
उर ताड़ना करहिं बिधि नाना। रोवत करहिं प्रताप बखाना
तव बल नाथ डोल नित धरणी। तेज हीन पावक शशि तरणी
शेष सहस सहि सकै न भारा। सो तनु भूमि परेउ जनु छारा

CC-0. In Public Domain Digitized by

श्रीरामचन्द्रके हाथसे रावण
का मारा जाना

वरुण कुबेर सुरेस समीरा। रण सन्मुख धर काहु न धीरा।
भुजबल जितेहु काल जम आई। आजु परेउ अनाथ की नांई
जगत विदित तुम्हरी प्रभुताई। सुत परिजन बल बरणि न जाई
राम बिमुख असहाल तुम्हारा। रहा न कुल कोउ रोवन हारा
तव बस बिधि प्रपंच सब नाथा। सभय दिसिप नित नावहिं माथा
अब तव सिर भुज जंबुक खाहीं। राम बिमुख यह अनुचित नाहीं
काल बिबस पति कहा न माना। अग जग नाथ मनुज करि जाना
छं॰ जानेउ मनुज करि दनुज कानन दहन पावक हरि स्वयं
जेहि नवत शिव ब्रह्मादि सुरपिय भजेहु नहिं करुणामयं
आजन्म तें परद्रोह रत पापौघ मय तव तनु अयम्
तुमहूं दियो निज धाम राम नमामि ब्रह्म निरामयम्
दो॰ अहह नाथ रघुनाथ सम कृपा सिंधु नहिं आन
योगि वृंद दुर्लभ सुगति तोहि दीन्ह भगवान

मंदोदरी बचन सुनि काना। सुर मुनि सिद्ध सबन्ह सुखमाना
अज महेश नारद सनकादी। जे मुनिवर परमारथ वादी
भरि लोचन रघुपति हि निहारी। प्रेम मगन सब भयउ सुखारी
रुदन करत देखीं सब नारी। गयउ बिभीषण मन दुख भारी
बंधु दशा बिलोकि दुख कीन्हा। तब प्रभु अनुजहिं आयसु दीन्हा
लक्षिमण तेहि बहु बिधि समुझायो। बहुरि बिभीषण प्रभु पहं आयो
कृपादृष्टि प्रभु ताहि बिलोका। करह क्रिया परिहर सब शोका
कीन्ह क्रिया प्रभु आयसु मानी। बिधिवत देश काल जिय जानी

CC-0. In Public Domain. Digitized by

दो॰ मंदोदरी आदि सब देइं तिलांजलि ताहि ॥
भवन गईं रघुपति गुण गण वरणत मन मांहि
आइ बिभीषण पुनि शिर नायो। कृपासिंधु तब अनुज बुलायो
तुम कपीश अंगद नल नीला। जामवंत मारुत नय शीला ॥
सब मिल जाहु बिभीषण साथा। सारेउ तिलक कहेउ रघुनाथा
पिता बचन मैं नगर न आवौं। आपु सरिस कपि अनुज पठावौं
तुरत चले कपि सुनि प्रभु बचना। कीन्ही जाइ तिलक की रचना
सादर सिंहासन बैठारी ॥ । तिलक सारि अस्तुति अनुसारी
जोरि पाणि सबही शिर नाये। सहित बिभीषण प्रभु पहं आये
तब रघुबीर बोलि कपि लीन्हे। कहि प्रिय बचन सुखी सब कीन्हे
छं॰ किए सुखी कहि बाणी सुधा सम बल तुम्हारे रिपु हत्यो
पायो बिभीषण राज तिहुं पुर यश तुम्हारो नित नयो ॥
मोहि सहित शुभ कीरति तुम्हारी परम प्रीति जो गाइ हैं
संसार सिंधु अपार पार प्रयास बिनु नर जाइ हैं ॥
दो॰ प्रभु के बचन श्रवण सुनि नहिं अघाहिं कपि पुंज
बार बार शिर नावहिं गहहिं सकल पद कंज
सुनि प्रभु बोलि लियो हनुमाना। लंका जाहु कहेउ भगवाना
समाचार जानकिहि सुनावहु। तासु कुशल लै तुम चलि आवहु
तब हनुमंत नगर महं आये। सुनि निशिचरी निशाचर धाये
बहु प्रकार तिन्ह पूजा कीन्ही। जनक सुता दिखाइ पुनि दीन्ही
दूरहिं ते प्रणाम कपि कीन्हा। रघुपति दूत जानकी चीन्हा

पंक्ति १७
चौ॰ १२६
छं॰ ६ दो॰ २६
पुनि प्रभु बोलि लिये हनुमाना
अरु यह कलि काल मलाय तन १२० लौ॰
श्री रघुनाथ

टी॰ रा॰ लं॰ ९०

जू हनुमान को जानकी जू के कुशल हेतु भे ज्यो तहां निशिचर निशाचरी पूर्व बल स्मर्ण करि पूजत भये ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कहहु तात प्रभु कृपा निकेता। कुशल अनुज कपि सेन समेता
सब बिधि कुशल कोशलाधीशा। मातु समर जीतेउ दश शीशा
अविचल राज बिभीषण पायो। सुनि कपि बचन हरष उर छायो

छं॰ अति हरष मन तन पुलक लोचन सकल कह पुन पुन रमा
का देउं तोहि त्रैलोक महुं कपि कि भपि नहिं बाणी समा
सुनु मात मैं पायों अखिल जग राज आजु न संशयम्
रण जीति रिपु दल बंधु युत पश्यामि राम नमामयम्

दो॰ सुनु सुत सद गुण सकल तव हृदय बसहु हनुमंत
सानुकूल कोशलपति रहहु समेत अनंत ॥

अब सोइ यतन करहु तुम ताता। देखौं नयन श्याम मृदु गाता
तब हनुमान राम पहं जाई। जनक सुता के कुशल सुनाई
सुनि संदेस भानुकुल भूषण। बोल लिये युवराज बिभीषण
मारुत सुत के संग सिधावहु। सादर जनक सुतहि लै आवहु
तुरतहिं सकल गये तहं सीता। सेवति सब निशिचरी बिनीता
बेगि बिभीषण तिन्हहिं सिखायो। तिन्ह बहु बिधि मज्जन करवायो
बहु प्रकार भूषण पहिराये। शिविका रुचिर साजि पुन ल्याये
ता पर हरषि चढ़ी बैदेही। सुमिरि राम सुख धाम सनेही
बेत पाणि रक्षक चहुं पासा। चले सकल मन परम हुलासा
देखन की सभालु सब आये। रक्षक कोपि निवारण धाये
कह रघुबीर कहा मम मानहु। सीतहि सखा पयादे आनहु
देखहिं कपि जननी की नाईं। बिहंसि कहा रघुनाथ गोसाईं

अरु प्रभु पहं
आइ समाचार
कहे तब बिभी
षण सुग्रीवा
दि जाइ के बि
भीषण सिखा
वनतें अस्नान

टी॰
रा॰ लं॰
६२

भूषणादि प
हिराय शिवि
का चढ़ाइ ने
चले वानर
अवलोकना
र्थ प्रभु आज्ञा
तें पयादे

CC-0. In Public Domain Digitized By Siddhanta

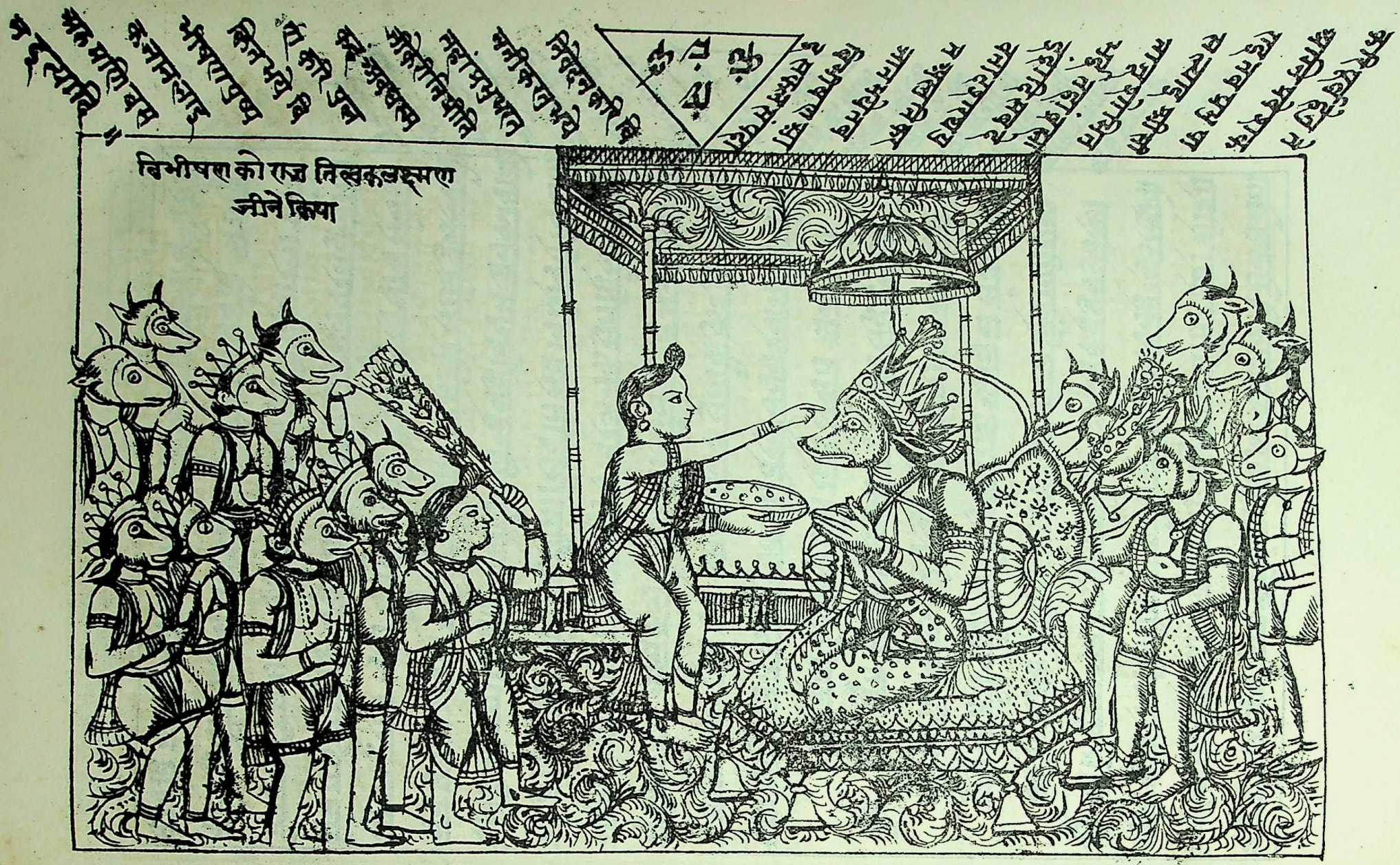

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनि प्रभु बचन भालु कपि हरषे । नभ ते सुर सुमनवृष्टि बरषे
सीता प्रथम अनल महुं राखी । प्रगट कीन्ह चह अंतर साखी
दो॰ तिहि कारण करुणा निधि कहेउ कछुक दुर्बाद
सुनत यातुधानी सब लागी करै बिषाद ॥ ॥
प्रभु के बचन सीस धरि सीता । बोली मन क्रम बचन पुनीता
लछमण होहु धरम के नेगी । पावक प्रगट करहु तुम बेगी
सुनि लछमण सीता के बानी । बिरह बिबेक धरम नय सानी
लोचन सजल जोरि कर दोऊ । प्रभु सन कछु कहि सकत न ओऊ
देखि राम रुख लछमण धाये । पावक प्रगटि काठ बहु लाये
पावक प्रबल देखि बैदेही । हृदय हरष नहिं भय कछु तेही
जो मन बच क्रम मम उर माहीं । तजि रघुबीर आन गति नाहीं
तौ कृशानु सब के गति जाना । मोकहुं होहु श्रीखंड समाना
छं॰ श्रीखंड सम पावक प्रवेश कियो सुमिरि प्रभु मैथिली
जय कोशलेश महेश बंदित चरण रति अति निर्मली
प्रतिबिंब अरु लौकिक प्रचंड कलंक पावक महुं जरे
प्रभु चरित काहु न लखे नभ सुर सिद्ध मुनि देखहिं खरे
धरि रूप पावक पाणि गहि श्रीसत्य श्रुति जग बिदित जो
जिमि क्षीरसागर इंदिरा रामहिं समर्पी आनि सो
सो राम बाम बिभाग राजित रुचिर अति शोभा भली
नव नील नीरज निकट मानहु कनक पंकज की कली
दो॰ बरषहिं सुमन हरष सुर बाजहिं गगन निसान

बर्षिबान सो
नभसुं बिद
होतु भई सब
पुथकासीनहि
बिभीषण सो
श्रीहनुमान
अंगदादि वीर
नयनसीताजू
कीरता भूमि

दो॰ रा॰ लं॰ ८७

दिखाइ अरु उ
निजते भेंटत भी
रघुराज आये
नहीं भरद्वाजपहिं
जाइ हनुमानको
अरज निकट पठ
बनु नहीं औ
नमस्कारु रामा
औ पठई

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

गावहिं किन्नर सुरबधू नांचहिं चढ़ी बिमान ॥ ।
जनक सुता समेत प्रभु शोभा अमित अपार ॥
देखि भालु कपि हरषेउ जय रघुपति सुखसार

तव रघुपति अनुशासन पाई। मातलि चलेउ चरण शिर नाई
आये देव सदा स्वारथी ॥ । बचन कहहिं जनु परमारथी
दीनबंधु दयाल रघुराया । देव कीन्ह देवन्ह पर दाया ॥
बिश्व द्रोह रत यह खलकामी। निज अघ गयो कुमारग गामी
तुम सब रूप ब्रह्म अविनाशी। सदा एक रस सहज उदासी
अकल अगुण अज अनघ अनामय। अजित अमोघ शक्ति करुणामय
मीन कमठ सूकर नर हरी। बामन परशुराम बपु धरी
जब जब नाथ सुरन्ह दुख पायो। नाना तनु धरि तुम हि नसायो
यह खल मलिन सदा सुरद्रोही। काम लोभ मद रत अति कोही
अधम शिरोमणि तव पद पावा। यह हमरे मन बिस्मय आवा
हम देवता परम अधिकारी। स्वारथ रत प्रभु भक्ति बिसारी
भव प्रवाह संतत हम परे। अब प्रभु पाहि शरण अनुसरे
दो॰ करि बिनती सुर सिद्ध सब रंह जहं तहं कर जोरि
अति सप्रेम तन पुलकि बिधि अस्तुति करत बहोरि

छंद

जय राम सदा सुखधाम हरे। रघुनायक सायक चाप धरे
भव बारण दारण सिंह प्रभो। गुण सागर नागर नाथ बिभो
तन काम अनेक अनूप छबी। गुण गावत सिद्ध मुनींद्र कबी
जस पावन रावण नाग महा। खग नाथ यथा करि कोप महा

निषाद को संग लेइ श्री अवध आये १२० इति लंकाकांड प्रथम अंग: ६

टी॰ रा॰ लं॰ ६५

चौपाई छंद दोहादि कोटीका

श्लोक	चौपाई	छंद	सोरठा	दोहा
३	२१२०	३७	९	१५०

CC-0. In Public Domain Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जन रंजन भंजन शोक भयं। गत क्रोध सदा प्रभु बोध मयं
अवतार उदार अपार गुनं। महि भार बिभंजन ज्ञान घनं
अज व्यापक एक मनादि सदा। करुणा कर रामन मामि मुदा
रघुबंश बिभूषण दूषण हा। कृत भूप बिभीषण दीन रहा
गुण ज्ञान निधान अमान अजं। नित राम नमामि बिभुं बिरजं
भुज दंड प्रचंड प्रताप बलं। खल बृंद निकंद महा कुशलं
बिनु कारण दीन दयाल हितं। छबि धाम नमामि रमा सहितं
भव तारण कारण काज परं। मन संभव दारुण दोष हरं
सर चाप मनोहर त्रोण धरं। जल जारुण लोचन भूप बरं
सुख मंदिर सुंदर श्रीरमनं। मद मार मुधा ममता शमनं
अनवद्य अखंडन गोचर गो। सब रूप सदा सब होइ न गो
इति बेद बदंति न दंतकथा। रवि आतप भिन्न न भिन्न यथा
कृत कृत्य प्रभो सब बानरये। निरवंति त बानन सादरये
धिग जीवन देव शरीर धरे। तव भक्ति बिना भव भूलि परे
अब दीन दयाल दया करिये। दुख सो सुख मानि सुखी चरिये
जेहि ते बिपरीत कृपा करिये। मति मोर बिभेद कर हरिये
खल खंडन मंडन रम्य क्षमा। पद पंकज सेवित शंभु उमा
नृप नायक दे बरदान मिदं। चरणांबुज प्रेम सदा सुभदं

दो॰ बिनय कीन्ह चतुरानन प्रेम पुलक अति गात
शोभा सिंधु बिलोकत लोचन नहीं अघात

तेहि अवसर दशरथ तहँ आये। तनय बिलोकि नयन जल छाये

CC-0. In Public Domain. P...

अनुज सहित प्रभु बंदन कीन्हा। आसिर्बाद पिता तब दीन्हा।
तात सकल तव पुण्य प्रभाऊ। जीत्यौ अजय निसाचर राऊ।
सुनि सुत बचन प्रीति अति बाढ़ी। नयन सलिल रोमावलि ठाढ़ी।
रघुपति प्रथम प्रेम अनुमाना। चितै पितहि दीन्हेउ दृढ़ ज्ञाना।
ताते उमा मोक्ष नहिं पायो। दशरथ भेद भक्ति मन लायो।
सगुण उपासक मोक्ष न लेहीं। तिन कहुं राम भक्ति निज देहीं।
बार बार करि प्रभुहिं प्रणामा। दशरथ हरष गये सुरधामा।

दो॰ अनुज जानकी सहित प्रभु कुशल कोशलाधीश
शोभा देखि हरष मन अस्तुति कर सुर ईश ॥

तोमरछं॰

जय राम शोभा धाम। दायक प्रणत बिश्राम
धृत तोण वर सर चाप। भुज दंड प्रबल प्रताप
जय दूषणारि खरारि। मर्दन निशाचर धारि
यह दुष्ट मार्यो नाथ। भय देव सकल सनाथ
जय हरण धरणी भार। महि राउदार अपार
जय रावणारि कृपाल। किये यातु धान बिहाल
लंकेश अति बल गर्व। किये बस्य सुर गंधर्व।
मुनि सिद्ध नर खग नाग। हठि पंथ सबके लाग।
परद्रोह रत अति दुष्ट। पायो सो फल पापिष्ट
अब सुनहु दीन दयाल। राजीव नयन बिशाल
मोहि रहा अति अभिमान। नहिं कोउ मोहिं समान
अब देखि प्रभु पद कंज। गत मान प्रभु पद पुंज

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कोउ ब्रह्म निर्गुण ध्याव। अव्यक्त जेहि श्रुति गाव
मोहि भाव कोशल रूप। श्रीराम सगुण स्वरूप
वैदेहि अनुज समेत। मम हृदय करहु निकेत
मोहि जानिये निज दास। दे भक्ति रमा निवास
छं॰ दे भक्ति रमा निवास त्रास हरण शरण सुखदायकं
सुखधाम राम नमामि काम अनेक छवि रघुनायकं
सुर वृंद रंजन द्वंद भंजन मनुज तनु अतुलित बलं
ब्रह्मादि शंकर सेव्य राम नमामि करुणा कोमलम्
दो॰ अब करि कृपा विलोकि मोहि आयसु देहु कृपाल
कहा करौं सुन प्रिय वचन बोले दीन दयाल॥
सुन सुरपति कपि भालु हमारे। परे भूमि निशिचरन्ह के मारे
मम हित लागि तजे इन प्राना। सकल जियाउ सुरेस सुजाना
सुन खगेश प्रभु की यह बानी। अति अगाध जानहि मुनि ज्ञानी
प्रभु चह त्रिभुवन मार जिवाई। केवल शक्रहि दीन्ह बड़ाई
सुधा बरषि कपि भालु जिवाये। हरषि उठे सब प्रभु पहं आये
सुधा वृष्टि भइ दुहुं दल ऊपर। जिये भालु कपि नहिं रजनीचर
रामाकार भये तिन्ह के मन। मुक्त भये छूटे भव बंधन
सुर अंसिक सब कपि अरु रिच्छा। जिये सकल रघुपति की इच्छा
राम सरिस न दीन हित कारी। कीन्हे मुक्त निशाचर झारी
खल मल धाम काम रत रावन। गति पाई जो मुनिवर पावन
दो॰ सुमन बरषि सब सुर चले चढ़ि चढ़ि रुचिर विमान

टी॰ रा॰ लं॰ ९७

देखि सुअवसर प्रभु पहिं आये संभु सुजान ॥
परम प्रीति कर जोरि युग नलिन नयन भरि बारि
पुलकित तन गद्गद गिरा बिनय करत त्रिपुरारि
मानसि रक्षय रघुकुल नायक ॥
धृत सर चाप रुचिर कर सायक ॥
मोह महा घन पटल प्रभंजन ॥ ॥
संसय बिपिन अनल जन रंजन ॥
गुण सगुण गुण मंदिर सुंदर
भ्रम तम प्रबल प्रताप दिवाकर
काम कोध मद गज पंचानन ॥
बसहु निरंतर जन मन कानन ॥
बिषय मनोरथ पुंज कंज बन ॥
प्रबल तुषार उदार पार मन ॥ ॥
भव बारिधि मंदिर पर मंदर ॥
बारय तारय संसृति दुस्तर ॥ ॥
स्याम गात राजीव बिलोचन ॥
दीनबंधु प्रणतारत मोचन ॥
अनुज जानकी सहित निरंतर ॥
बसहु राम नृप मम उर अंतर ॥
मुनि रंजन महि मंडल मंडन ॥
तुलसिदास प्रभु त्रास बिखंडन

दी. ए. ल. ६८

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो॰ नाथ जबहिं कोसलपुरी होइहि तिलक तुम्हार
कृपासिंधु मैं आउब देखन चरित उदार ॥

करि बिनती जब संभु सिधाये। तब प्रभु निकट बिभीषण आये
नाइ चरण सिर कह मृदु बानी। बिनय सुनहु प्रभु सारंगपानी
सकल सदल प्रभु रावण मार्‌यो। पावन यश त्रिभुवन बिस्तार्‌यो
दीन मलीन हीन मति जाती। मोपर कृपा कीन्ह बहु भांती
अब जन गृह पुनीत प्रभु कीजे। मज्जन करिय समर श्रम छीजे
देखि कोस मंदिर संपदा। देहु कृपाल कपिन्ह कहं मुदा
सब बिधि नाथ मोहि अपनाइय। पुनि मोहि सहित अवध पुर जाइय
सुनत बचन प्रभु दीनदयाला। सजल भये दोउ नयन बिशाला

दो॰ तोर कोस गृह मोर सब सत्य बचन सुन तात
भरत दशा सुमिरत मोहि निमिष कल्प सम जात
तापस भेष शरीर कृश जपत निरंतर मोहि ॥
देखौं बेगि सो जतन करि सखा निहारौं तोहि
जो जैहौं बीते अवध जिअत न पावौं बीर ॥
सुमिरत प्रीति अनुज प्रभु पुनि पुनि पुलक शरीर
कहेहु कल्प भरि राजु तुम मोहि सुमिरहु मन माहिं
पुनि मम धाम सिधावहु जहां संत सब जाहिं

सुनत बिभीषण बचन राम के। हरषि गहे पद कृपा धाम के
बानर भालु सकल हरषाने। गहि प्रभु पदगण बिमल बखाने
बहुरि बिभीषण भवन सिधाये। मणिगण बसन बिमान भराये

लै पुष्पक प्रभु आगे राखा। हंसि कर कृपा सिंधु तव भाखा
चढ़ि बिमान सुन सखा बिभीषण। गगन जाइ बरषहु पट भूषण
नभ पर जाइ बिभीषण तबहीं। बरष दिये मणि अंबर तबहीं
जोइ जोइ मन भावै सो लेहीं। मणि मुख मेलि डारि कपि देहीं
हसे राम श्री अनुज समेता। परम कौतुकी कृपा निकेता
दो॰ मुनिजे ध्यान न पावहिं नेति नेति कह बेद ॥ ॥
कृपासिंधु सोइ कपिन्ह सन करत अनेक बिनोद
उमा योग जप दान तप नाना व्रत मख नेम ॥
राम कृपा नहिं करहिं तस जस निष्केवल प्रेम
भालु कपिन्ह पट भूषण पाये। पहिर पहिर रघुपति पहं आये
नाना जिनस देख सब कीशा। पुनि २ हंसत कोशलाधीशा
चितै सबन्ह पर कीन्ही दाया। बोले मृदुल बचन रघुराया
तुम्हरे बल मैं रावण मार्यौ। तिलक बिभीषण कहं पुनि सार्यौ
निज निज गृह अब तुम सब जाहू। सुमिरेहु मोहि डरपहु जनि काहू
सुनत बचन प्रेमाकुल बानर। जोरि पाणि बोले सब सादर
प्रभु जोइ कहहु तुमइ सब सोहा। हमरे होत बचन सुनि मोहा
दीन जानि कपि किये सनाथा। तुम त्रैलोक ईश रघुनाथा
सुनि प्रभु बचन लाज हम मरहीं। मसक कहूं खगपति हित करहीं
देखि राम रुष बानर रीछा। प्रेम मगन नहिं गृह कै ईछा
दो॰ प्रभु प्रेरित कपि भालु सब रामरूप उर राखि ॥
हरष बिषाद सहित चले बिनय बिबिध बिधभाखि

टी॰ रा॰ ल॰ १००

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कपिपति नील रीछ पति अंगद नल हनुमान ॥
सहित बिभीषण अपरजे यूथप कपि बलवान
कहि न सकहिं कछु प्रेम बस भरि भरि लोचन बारि
सन्मुख चितवहिं राम तन नयन निमेष निवारि
अति सय प्रीति देख रघुराई । लीन्हे सकल बिमान चढ़ाई
मन महं बिप्र चरण शिर नायो । उत्तर दिशिहि बिमान चलायो
चलत बिमान कुलाहल होई । जय रघुबीर कहैं सब कोई
सिंहासन अति उच्च मनोहर । श्री समेत प्रभु बैठे ता पर
राजत राम सहित भामिनी । मेरु शृंग जनु घन दामिनी ।
रुचिर बिमान चलेउ अति आतुर । कीन्ही सुमन बृष्टि हरषे सुर ।
परम सुखद चलि त्रिबिध बयारी । सागर सुरसरि निर्मल बारी ।
सगुण होहिं सुंदर चहुं पासा । मन प्रसन्न निर्मल नभ आसा
कह रघुबीर देख रण सीता । लक्षमण इहां हत्यौ इंद्रजीता
हनूमान अंगद के मारे । रण महि परे निशाचर भारे
कुंभकरण रावण दोउ भाई । इहां हते सुर मुनि दुख दाई ।
दो. देखो सुंदर सेतु यह थाप्यौ शिव सुख धाम ।
सीता सहित कृपा निधि शंभुहि कीन्ह प्रणाम
जहं जहं कृपासिंधु बन कीन्ह बास बिश्राम
सकल दिखाये जानकिहि कहे सबन के नाम
तुरत बिमान तहां चलि आवा । दंडकबन जहं परम सुहावा
कुंभजादि मुनि नायक नाना । गये राम सब के अस्थाना

टी. रा. लं. १०१

सकल ऋषीनसनपाइ ऋषीगा। चित्रकूट आये जगदीशा।
तहं की मुनिन्ह के रसंतोषा । चला बिमान तहां ते चोषा।
बहुरि राम जानकिहि दिषाई। जमुना कलिमल हरणा सुहाई
पुनि देखी सुरसरी पुनीता । एम कहा प्रणाम कर सीता।
तीरथपति पुनि देख प्रयागा। निरवत जन्म कोटि अघभागा
देखु परम पावन अति बेनी । हरणि शोक हरि लोक निसेनी
देखी अवधपुरी अति पावनि। त्रिविध ताप भवरोग नसावनि
दो- सीता सहित अवधपुरी कीन्ह कृपानि प्रणाम।
सजल नयन तन पुलकित पुनि पुनि हरषित राम
बहुरि बिबेणी आय प्रभु हरषित मज्जन कीन्ह
कपिन्ह सहित निपनकहं दान विविध जिमि दीन्ह
प्रभु हनुमंतहि कहा बुझाई । धरि बटु रूप अवध पुर जाई।
भरतहि कुशल हमारि सुनायउ। समाचार लैतुम चलि आयउ
तुरत पवनसुत गवनत भयऊ। तब प्रभु भरद्वाज पहं गयऊ
माना विधि मुनि पूजा कीन्ही। अस्तुति करि पुनि आशिष दीन्ही
मुनि पद वंदि युगल कर जोरी। चढ़ि विमान प्रभु चले बहोरी
इहां निषाद सुना प्रभु आये। नाव नाव कहि लोग बुलाये
सुरसरि बांधि जानतब आयो। उतरेउ तट प्रभु आय सुपायो
तब सीता पूजी सुरसरी । बहु प्रकार मुनि करणीन्ह परी।
दीन्ह असीस हरष मन गंगा। सुंदरि तव अहि बात अभंगा
सुनत गुहा धायो प्रेमाकुल। आये निकट परम सुख संकुल

दो. रा. लं. १०२

प्रभुहि सहित विलोकि वैदेही । परेउ अवनितन सुधि नहिं तेही
प्रीति परम विलोकि रघुराई । हरषि उठाय लिये उरलाई ।

छं॰ लियो हृदय लाइ कृपानिधान सुजान राम रमापती
बैठारि परम समीप बूझी कुशल सो कर बीनती ।
अब कुशल पद पंकज विलोकि विरंचि शंकर सेव्यजे
सुख धाम पूरण काम राम नमामि राम नमामि ते
सब भांति अधम निषाद सो हरि भरत ज्यौं उरलाइयो
मति मंद तुलसीदास सो प्रभु मोह बस बिसराइयो
यह रावणारि चरित्र पावन राम पद रति प्रद सदा ।
कामादि हरि विज्ञान कर सर सिद्धि मुनि गावहिं मुदा

दो॰ समर विजय रघुवीर के चरित जे सुनहिं सुजान ॥
विजय विभूति विवेक नित तिन्हहिं देहिं भगवान
वह कलि काल मलायतन मन कर देखु विचार
श्री रघुनायक नाम तजि नाहिन आन अधार

इति श्रीराम चरित मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसिने
विमल विज्ञान संपादनो नाम षष्ठः सोपानः समाप्तः

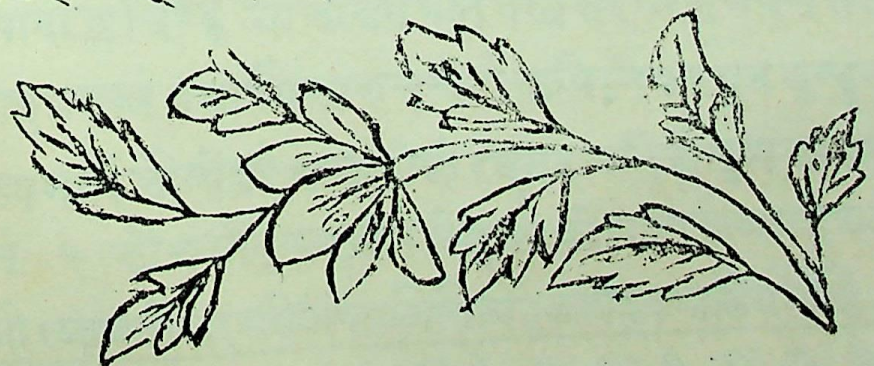

टी॰
रा॰ लं॰
१०३

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

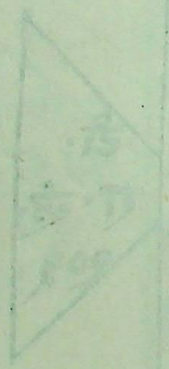

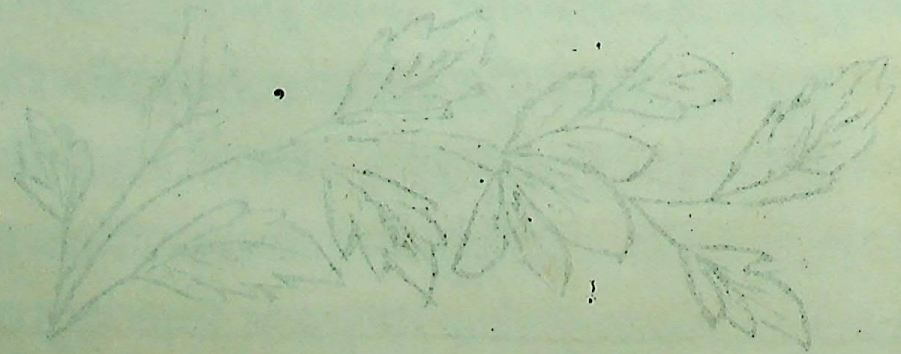

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ उत्तरकाण्डः ७

श्रीगणेशायनमः श्लोक केकी कंठाभनीलं सुरवर विलसद्विप्र पादाब्जचिन्हं शोभाढ्यं पीत वस्त्रं सरसिज नयनं सर्वदा सुप्रसन्नं ॥ पाणौ नाराचचापं कपिनिकर युतं बन्धुना सेव्यमानं नौमीड्यं जानकीशं रघुवर मनिशं पुष्पकारूढ रामं १ कौशलेंद्र पदकंज मंजुलो कोमलाब्जमहेशवंदितौ । जानकीकर सरोज लालितौचित्तकस्यहृदयालिसंगिनौ २

कुंद इंदु दर गौर सुंदरं अम्बिका पति मभीष्ट सिद्धिदं ॥ कारुणीक कर कंज लोचनं नौमि शंकर मनंग मोचनं ॥ ३ ॥

दो० रहा एक दिन अवधि कर अति आरत पुर लोग
जहं तहं शोचहिं नारि नर कृस तन राम वियोग
सगुन होहिं सुंदर सकल मन प्रसन्न सब केर
प्रभु आगमन जनाव जनु नगर रम्य चहुं फेर
कौशिल्यादिक मात सब मन अनंद अस होइ
आये प्रभु सिय अनुज युत कहन चहत अब कोइ
भरत नयन भुज दक्षिण फरकत बारहि बार ॥
जानु सगुन मन हर्ष अति लागे करण विचार

रहा एक दिन अवधि अधारा । समुझत मन दुख भयउ अपारा
कारण कवन नाथ नहिं आये । जानि कुटिल प्रभु मोहिं बिसराये
अहह धन्य लक्ष्मण बड़ भागी । राम पदारविन्द अनुरागी ॥
कपटी कुटिल मोहिं प्रभु चीन्हा । तातें नाथ संग नहिं लीन्हा ॥
जौं करणी समुझै प्रभु मोरी । नहिं निस्तार कल्प शत कोरी
जन अवगुण प्रभु मान न काऊ । दीन बन्धु प्रभु मृदुल सुभाऊ
मोरे जिय भरोस दृढ़ सोई ॥ मिलिहहिं राम सगुण शुभ होई
बीते अवध रहहिं जो प्राना ॥ अधम कौन जग मोहिं समाना

दो० राम विरह सागर महं भरत मगन मन होत ॥
विप्र रूप धरि पवन सुत आइ गये जनु पोत ॥
बैठे देखि कुशासन जटा मुकुट कृश गात ॥

राम नाम रघुपति जपत श्रवत नयन जल जात ॥

देखत हनूमान अति हरषे । पुलकि गात लोचन जल बरषे
मन महं बहुत भांति सुख मानी । बोलेउ श्रवण सुधा सम बानी
जासु बिरह शोचहु दिन राती । रहहु निरंतर गुण गण पाती
रघुकुल तिलक सुजन सुख दाता । आये देव कुशल मुनि त्राता ।
रिपु रण जीति सुयश सुर गावत । सीता सहित अनुज प्रभु आवत
सुनत वचन बिसरे सब दूषा । त्रिषावंत जिमि पाइ पियूषा
को तुम तात कहां ते आये । मोहि परम प्रिय वचन सुनाये
मारुत सुत मैं कपि हनुमाना । नाम मोर सुनु कृपा निधाना ।
दीन बंधु रघुपति कर किंकर ॥ सुनत भरत भेटेउ अति सादर
मिलत प्रेम नहिं हृदय समाता । नयन श्रवत जल पुलकित गाता
कपि तव दरश सकल दुख बीते । मिले आजु मोहिं राम पिरीते ।
बार बार बूझी कुशलाता ॥ तो कहं देउं कहा सुन भ्राता ॥
यह संदेश सरिस जग माहीं । करि विचार देखेउं कछु नाहीं
नाहिन तात उरिण मैं तोही । अब प्रभु चरित सुना बहु मोही
तब हनुमंत नाइ पद माथा । कहे सकल रघुपति गुण गाथा
कहु कपि कबहुं कृपाल गोसाईं । सुमिरत मोहिं दास की नाईं ।

छं० निज दास ज्यौं रघुबंश भूषण कबहुं मम सुमिरण कर्यो
सुनि भरत वचन विनीत अति कपि पुलकि तन चरणन पर्यो
रघुवीर निज मुख जासु गुण गण कहत अग जग नाथ जो
काहे न होहु विनीत परम पुनीत सद गुण सिंधु सो ॥

अयोध्या आदि श्री
वशिष्ठ जू ते कहि
रनिवास में जना
यो अरु आगम
न सुन पुरवासी
सब मंगल द्रव्य
लेइ धावत भये
अरु भरत जू गु
रु मंत्री विप्र संग
लेइ चले तहां श्री
रघुनाथ बाल ली
ला हेतु वैकुंठ तें
अयोध्या महात्म
अधिक निज मु
ख वरणत नगर
निकट पहुंच पुष्प
क विमान कोवि
दा कियो तब व
शिष्ठ पद बंदि भर
त तें शृंगार अरु
प्रेम रूप तें भेटत
भये या सुख
वचन मन ते परें
जाको मिले सोई
जानें शत्रुहन आ
दि अरु जावत पुर
वासिन ते प्रभु
ता पूर्वक अनेक
रूप तें मिलन
भये अरु प्रवेश
समय प्रेम पूर्व
क मातन तें श
रु छो भनिवा
णार्थ कै कर्द्ध
तें पुनः पुनः

टी
रा. उ.

दो० राम प्राण प्रिय नाथ तुम सत्य वचन ममतात
पुनि पुनि मिल तहि भरत मन प्रेम न हृदय समात

सो० भरत चरण शिर नाइ तुरत गयो कपि राम पहं
कही कुशल सब जाइ हरषि चले प्रभु यान चढ़ि

हरष भरत कोशल पुर आये। समाचार सब गुरुहि सुनाये॥
पुनि मंदिर मंह बात जनाई। आवत कुशल नगर रघुराई।
सुनत सकल जननी उठि धांई। कहि प्रभु सकल भरत समुझाई॥
समाचार पुर वासिन पाये।। नर अरु नारि हरष सब धाये
दधि रोचन दूर्वा फल फूला। नव तुलसी दल मंगल मूला
भरि भरि हेम थाल भामिनी। गावत चलीं सिंधर गामिनी
जे जैसेहि तैसेहि उठि धावहिं। बाल वृद्ध कहं संग न लावहिं
एक एक सन बूझहिं धाई। तुम देखे दयाल रघुराई॥
अवध पुरी प्रभु आवत जानी। भई सकल शोभा कै खानी।
बहै सुहावनि त्रिविध समीरा। भइ सरयू अति निर्मल नीरा।

दो० हरषित गुरु परिजन अनुज भूसुर वृंद समेत॥
चले भरत मन प्रेम अति सन्मुख कृपा निकेत
बहुतक चढ़ी अटारिन्ह निरखहिं गगन विमान
देखि मधुर सुर हरषित करहिं सुमंगल गान॥
राका शशि रघुपति पुरी सिंधु देखि हरषान॥
बढ़ेउ कोलाहल करत जनु नारि तरंग समान

इहां भानु कुल कमल दिवाकर। कपिन्ह दिखावत नगर मनोहर

अरु श्री सीता जू सब सासन तें प्रेम पूर्वक भेंटि व रानिन जावत

टी० रा० उ० ४

व्यवहार नंगल रीति कर बात्स ल्य पूर्वक आनंदित होत भई ३

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनु कपीश अंगद लंकेशा। पावन पुरी रुचिर मम देशा।
यद्यपि सब बैकुंठ बखाना। बेद पुराण विदित जग जाना
अवध पुरी मम प्रिय नहिं सोऊ। यह प्रसंग जानै कोउ कोऊ
जन्म भूमि मम पुरी सुहावनि। उत्तर दिशि वह सरयू पावनि
जा मज्जन तें बिनहिं प्रयासा। मम समीप पावहिं नर बासा।
अति प्रिय मोहिं इहाँ के बासी। मम धामदा पुरी सुख रासी॥
हरषे सब कपि सुनि प्रभु बानी। धन्य अवध जो राम बखानी।
दो० आवत देखे लोग सब कृपा सिंधु भगवान ॥
नगर निकट प्रभु प्रेरेउ उतरे भूमि बिमान ॥
उतरि कहेउ प्रभु पुष्प कहिं तुम कुबेर पहं जाहु
प्रेरित राम चलेउ सो हरषि बिरह अति ताहु ॥
आये भरत संग सब लोगा।। कृशतन श्री रघुबीर बियोगा
वाम देव बशिष्ठ मुनि नायक। देखे प्रभु महि धरि धनु सायक
धाइ धरे गुरु चरण सरोरुह।। अनुज सहित अति पुलकित नोरुह
भेटि कुशल पूछी मुनि राया। हमरे कुशल तुम्हारिहि दाया।
सकल द्विजन मिल नायउ माथा। धरम धुरंधर रघुकुल नाथा॥
गहे भरत पुनि प्रभु पद पंकज। नमत जिन्हहिं सुर मुनि शंकर अज
परे भूमि नहिं उठत उठाये। बल करि कृपा सिंधु उर लाये
श्यामल गात रोम भए ठाढ़े। नव राजीव नयन जल बाढ़े।
छं० राजीव लोचन स्रवत जल तन ललित पुलकावलि बनी
अति प्रेम हृदय लगाय अनुजहि मिले प्रभु त्रिभुवन धनी

टी. रा. उ. ५

CC-0. In Public Domain Digitized By Siddh...

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रभु मिलत अनुजहिं सोह मोपहिं जात नहिं उपमा कही
जनु प्रेम अरु सिंगार तनु धरि मिले वर परमा लही॥
बूझत कृपानिधि कुसल भरतहिं वचन बेगि न आवही
सुनि सिवा सो सुख वचन मन तें भिन्न जान जो पावही
अब कुसल कौसल नाथ आरत जानि जन दरसन दियो
बूडत बिरह बारिधि कृपानिधि काढ़ि मोहिं कर गहि लियो
दो० पुनि प्रभु हरषित सत्रुहन भेंटे हृदय लगाय॥
लछमन भरत मिले तब परम प्रेम दोउ भाय
भरतानुज लछमन पुनि भेंटे। दुसह बिरह संभव दुख मेटे।
सीता चरन भरत सिर नावा। अनुज समेत परम सुख पावा
प्रभु बिलोकि हरषे पुर बासी। जनित बियोग बिपति सब नासी
प्रेमातुर सब लोग निहारी॥ कौतुक कीन्ह कृपाल खरारी
अमित रूप प्रगटे तेहि काला। जथा जोग मिले सबहि कृपाला
कृपा दृष्टि रघुबीर बिलोकी। किये सकल नर नारि बिसोकी
छन महं सबहिं मिले भगवाना। उमा मरम यह काहु न जाना
एहि बिधि सबहि सुखी करिरामा। आगे चले सील गुन धामा
कौसल्यादि मातु सब धाईं। निरखि बच्छ जनु धेनु लवाईं
छं० जनु धेनु बालक बच्छ तजि गृह चरन बन परबस गईं।
दिन अंत पुर रुख श्रवत थन हुंकार करि धावत भईं॥
अति प्रेम प्रभु सब मातु भेटी बचन मृदु बहु बिधि कहे
गइ बिषम बिपति बियोग भवतिन्ह हरष सुख अगनित लहे

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

दो० भेटेउ तनय सुमित्रा राम चरन रति जानि ॥
राम हि मिलत केकई हृदय बहुत सकुचानि ।
लखन सीय सब मातन्ह मिले हरषि आसिष पाइ
कैकई कहु पुनि मिले मन कर छोभ न जाइ ॥

सासु सबन मिली बैदेही ॥ चरणन्ह लागि हरषि अति तेही
देहिं असीस बूझि कुसलाता । होउ कुसल तुम्हरि कहि बाता
सब रघुपति मुख कमल बिलोकहिं । मंगल जानि नयन जल रोकहिं
कनक थार आरती उतारहिं । बार बार प्रभु गात निहारहिं ॥
नाना भांति निछावरि करहीं । परमानंद हरष उर भरहीं ॥
हृदय बिचारति बारहिं बारा । कवन भांति लंका पति मारा
कौसिल्या पुनि पुनि रघुबीरहि । चितवत कृपासिंधु रनधीरहि
अति सुकुमार युगल मम बारे । निसिचर सुभट महाबल भारे

दो० लखन सीय अरु सीता सहित प्रभुहि बिलोकति मात
परमानंद मगन मन पुनि पुनि पुलकित गात ॥

लंकापति कपीस नल नीला । जामवंत अंगद सुभ सीला ॥
हनुमदादि सब बानर बीरा । धरे मनोहर मनुज सरीरा ॥
भरत सनेह सील ब्रत नेमा । सादर सब बरनहिं अति प्रेमा
देखि नगर बासिन्ह कै रीती । सकल सरा हहिं प्रभु पद प्रीती
पुनि रघुपति सब सखा बुलाये । मुनि पद लागहु सकल सिखाये
गुरु बसिष्ठ कुल पूज्य हमारे । इन्ह की कृपा दनुज रन मारे ।
ए सब सखा सुनहु मुनि मेरे ॥ भये समर सागर कहं बेरे ॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मम हित लागि जन्म इन्ह हारे। भरतहुँ तेंमोहिं अधिक पियारे॥
सुनि प्रभु बचन मगन सब भये। निमिष निमिषि उपजत सुख नये॥

दो॰ कौसिल्या के चरनन्ह पुनि तिन्ह नाय उमाय॥
आसिष दीन्हे उहरषि उर प्रिय जिमि मम रघुनाथ
सुमन बृष्टि नभ संकुल भवन चले सुख कंद॥
चढ़ी अटारिन्ह देखहिं नगर नारि नर बृंद॥

कंचन कलस बिचित्र संवारे॥ सबन्हि धरे सजि निज निज द्वारे
बंदन बार पताका केतू॥ सबन्हि बनाये मंगल हेतू॥
बीथी सकल सुगंध सिंचाई। गज मनि रचि बहु चौक पुराई
नाना भांति सुमंगल साजे॥ हरषि नगर निसान बहु बाजे
जहं तहं नारि निछावरि करहीं। देहिं असीस हरष उर भरहीं
कंचन थार आरती नाना॥ जुवती सजे करहिं सुभ गाना
करहिं आरती आरति हर के। रघुकुल कमल बिपिन दिनकर के
पुर सोभा संपति कल्याना॥ निगम सेष सारदा बखाना॥
तेउ यह चरित देखि ठगि रहहीं। उमा तासु गुन नर किमि कहहीं

दो॰ नारि कुमुदिनी अवध सर रघुपति बिरह दिनेस
अस्त भये बिकसित भईं निरखि राम राकेस॥
होहिं सगुन सुभ बिबिध बिधि बाजहिं गगन निसान
पुर नर नारि सनाथ करि भवन चले भगवान॥

प्रभु जानी कैकेई लजानी॥ प्रथम तासु गृह गये भवानी॥
ताहि प्रबोधि बहुत सुख दीन्हा॥ पुनि निज भवन गवन हरि कीन्हा॥

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

कृपासिंधु तब मंदिर गये ।। पुरनर नारि सुखी सब भये।
गुरु वसिष्ठ द्विज लिये बुलाई। आजु सुघरी सुदिन सुभदाई
सब द्विज देहु हरषि अनुसासन। राम बंदु बैठहिं सिंघासन।
मुनि वसिष्ठ के बचन सुहाये। सुनत सकल बिप्रन्ह अति भाये
कहहिं बचन मृदु बिप्र अनेका। जग अभिराम राम अभिषेका
अब मुनिबर बिलंब नहिं कीजै। महाराज कहं तिलक करीजै

दो० तब मुनि कहेउ सुमंत्र सन सुनत चलेउ हरषाइ
रथ अनेक बहु बाजि गज तुरत सँवारे उ जाइ।
जहं तहं धावन पठे पुनि मंगल द्रव्य मंगाय।
हरष समेत बसिष्ठ पद मुनि सिर नायउ आय

टी० रा० उ० १०

अवध पुरी अति रुचिर बनाई। देवन सुमन बृष्टि झरि लाई
राम कृपा सेवकन्ह बुलाई। प्रथम सखन्ह न्हवाव बहुजाई
सुनत बचन जहं तहं जन धाये। सुग्रीवादि तुरत न्हवाये
पुनि करुनानिधि भरत हंकारे। निज कर राम जटा निरवारे
न्हवाये प्रभु तीनउ भाई। भक्त बछल कृपाल रघुराई।
भरत भाग्य प्रभु कोमलताई। सेष कोटि सत सकहि न गाई
पुनि निज जटा राम बिय रचे। गुरु अनुसासन मांगि नहाये
करि मज्जन प्रभु भूषण साजे। अंग अनंग कोटि छबि लाजे

दो० सादर सासु सकल जानकिहि मज्जन सुरत कराइ
दिव्य बसन बर भूषण अंग अंग सजे बनाइ
राम बाम दिसि सोभित रमा रूप गुण खानि

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

देखि मातु सब हरषीं जन्म सुफल निज जानि ॥
सुनखगेश तेहि अवसर ब्रह्मा शिव मुनि वृंद ॥
चढ़ि विमान आये सब सुर देखन सुख कंद ॥
प्रभु बिलोकि मुनि मन अनुरागा। तुरतहिं दिव्य सिंहासन मांगा॥
रवि सम तेज सो बरणि न जाई॥ बैठे राम द्विजन्ह शिर नाई॥
जनक सुता समेत रघुराई॥ देखि प्रहर्षे मुनि समुदाई॥
वेद मंत्र जब द्विजन उचारे॥ नभ सुर मुनि जय जयति पुकारे
प्रथम तिलक वशिष्ठ मुनि कीन्हा। पुनि सब विप्रन आयसु दीन्हा।
सुत बिलोकि हरषीं महतारी॥ बार बार आरती उतारी॥
विप्रन दान विविध विध दीन्हे॥ याचक सकल अयाचक कीन्हे।
सिंहासन पर त्रिभुवन सांई॥ देखि सुरन्ह दुन्दुभी बजाई।
छं० नभ दुंदुभी बाजहिं विपुल गंधर्व किन्नर गावहीं॥
नाचहिं अपसरा वृंद परमानंद सुर मुनि पावहीं॥
भरतादि अनुज विभीषणांगद हनुमतादि समेत जे
गहि छत्र चामर व्यजन धनु असि चर्म शक्ति विराजते
श्री सहित दिनकर वंश भूषण काम बहु छवि सोहई
नव अंबुधर वर गात अंबर पीत मुनि मन मोहई॥
मुकुटांगदादि विचित्र भूषण अंग अंग न प्रति सजे
अंभोज नयन विशाल उर भुज धन्य नर निरखंति जे
दो० वह शोभा समाज सुख कहत न बनै खगेश॥
बरणै शारद शेष श्रुति सो रस जान महेश॥

टी. रा. कु. ११

भिन्न भिन्न अस्तुति करि गये सुर निज निज धाम
बंदी बेष बेद तहं आये जहं श्री राम ॥ ॥
प्रभु सर्बज्ञ कीन्ह अति आदर कृपा निधान ॥
लगे करन सब राम गुन गान
छं० जय सगुण निर्गुण रूप राम अनूप भूप सिरोमनी ॥
दसकंधरादि प्रचंड निसिचर प्रबल खल भुज बल हने
अवतार नर संसार भार बिभंजि दारुण दुख दहे ॥
जय प्रनत पाल दयालु प्रभु संजुक्त सक्ति नमामिहे
तव बिषम माया बस सुरासुर नाग नर अग जग हरे
भव पंथ भ्रमत अमित दिवस निसि काल कर्म गुणन भरे
जो नाथ करि करुणा बिलोकहु बिबिध दुख ते निर्बहे ॥
भव खेद छेदन दक्ष हम कहं रक्ष राम नमामिहे ॥
जे ग्यान मान बिमत्त तव भव हरनि भक्ति न आदरी
ते पाद सुर दुर्लभ पदा दपि परत हम देखत हरी ॥
बिस्वास करि सब आस परिहरि दास तव जे होइ रहे
जपि नाम तव बिनु श्रम तरहिं भव नाथ सो समरामहे
जे चरण सिव अज पूज्य रज सुभ परसि मुनि पत्नी तरी
नख निर्गता मुनि बंदिता त्रैलोक पावन सुर सरी ॥
ध्वज कुलिस अंकुस कंज जुत बन फिरत कंटक किन लहे
पद कंज द्वंद मुकुंद राम रमेस नित्य भजामहे ॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अव्यक्त मूल मनादि तरु त्वच चारि निगमागम भने
षट कंध शाखा पंच बिंश अनेक पर्ण सुमन घने ॥
फल युगल बिधि कटु मधुर बेलि अकेलि जेहि आश्रित रहे
पल्लवित फूलत नवल नित संसार बिटप नमामहे ॥
ते ब्रह्म अजमद्वैत मनुभव गम्य मन पर ध्यावहीं ॥
ते कहहु जानहु नाथ हम तव सगुण यश निति गावहीं
करुणायतन प्रभु सदगुणाकर देव यह बर मांगहीं ॥
मन कर्म बचन बिकार तजि तव चरण हम अनुरागहीं

दो० सब के देखत बेदन्ह बिनती कीन्ह उदार ॥
अंतर ध्यान भये पुनि गये ब्रह्म आगार ॥
बैन तेय सुन शंभु तब आये जहं रघुबीर ॥
बिनय करत गदगद गिरा पूरित पुलक शरीर ॥

छं० जय राम रमा रमणं शमनं। भय ताप भया कुल पाहि जनं
अवधेश रमेश सुरेश बिभो। शरणागत मांगत पाहि प्रभो
दशशीश बिनाशन बीस भुजा। कृत दूर महा महि भूरि रुजा
रजनीचर वृंद पतंग रहे ॥ शर पावक तेज प्रचंड दहे।
महि मंडल मंडन चारु तरं। धृत शायक चाप निषंग वरं।
मद मोह महा ममता रजनी। तम पुंज दिवाकर तेज अनी
मनुजाद किरात निपात किये। मृग लोग कुभोग सरे न हिये
हित नाथ अनाथन्ह पाहि हरे। बिषया बन पांवर भूलि परे
बहु रोग बियोगन्ह लोग हये। भव दंघ्रि निरादर के फलये

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

भवसिंधु अगाध परे नरते। पद पंकज प्रेम न जे करते॥
अति दीन मलीन दुखी नितहीं। जिन्ह के पद पंकज प्रीति नहीं
अवलंब भवंत कथा जिनके। प्रिय संत अनंत सदा तिनके
नहिं राग न लोभ न मान मुदा तिन के सम वैभव वादि पदा
एहि ते तव सेवक होत मुदा। मुनि त्याग न योग भरोस सदा
करि प्रेम निरंतर ने गम लिये। पद पंकज सेवत शुद्ध हिये॥
सम मान निरादर आदर ही। सब संत सुखी विचरंत मही
मुनि मानस पंकज भृङ्ग भजै। रघुवीर महा रण धीर अजै।
तव नाम जपामि नमामि हरी। भव रोग महा मद मान अरी।
गुण शील कृपा परमाय तनं। प्रणमामि निरंतर श्री रमनं।
रघुनंद निकंदन वृंद घनं। महि पाल विलोकिय दीन जनं

टी॰ रा॰ उ॰ ७५

दो॰ बार बार वर मांगौं हरषि देहु श्री रंग॥।
पद सरोज अनपायनी भक्ति सदा सत संग॥
बरणि उमा पति राम गुण हरषि गये कैलास।
तब प्रभु कपिन्ह दिवाये सब विधि सुख प्रद वास

सुन खग पति यह कथा पावनी। त्रिविध ताप भव भय दावनी।
राम राज कर शुभ अभि षेका। सुनत लहहिं नर विरति विवेका
जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं। सुख संपति नाना विधि पावहिं
सुर दुर्लभ सुख करि जग माहीं। अंत काल रघुपति पुर जाहीं।
सुनहिं विमुक्त विरत अरु विषई। लहहिं भक्ति गति संपति नई
विरति विवेक भगति दृढ करणी। मोह नदी कहं सुन्दर तरणी॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नित नव मंगल कोसल पुरी । हरषित रहहिं लोग सब कुरी ।
नित नइ प्रीति राम पद पंकज । सबहि जिन्हहि नमत सिव मुनि अज ।
मंगल बहु प्रकार पहिराये । द्विजन दान नाना बिधि पाये ॥
दो० ब्रह्मानंद मगन कपि सब के प्रभु पद प्रीति ॥
जानत जहाँ दिवस तिन्ह गये मास षट बीति
बिसरे गृह सपनेहु सुधि नाहीं । जिमि परद्रोह संत मन माहीं ॥
तब रघुपति सब सखा बुलाये । आदर सहित निकट बैठाये ।
परम प्रीति समीप बैठारे ॥ भक्त सुखद मृदु बचन उचारे
तुम्ह अति कीन्ह मोरि सेवकाई । मुख पर केहि बिधि करौं बड़ाई
ताते मोहि तुम अति प्रिय लागे । मम हित लागि भवन सुख त्यागे
अनुज राज संपति बैदेही ॥ । देह गेह परिवार सनेही ॥
कोउ मोहि प्रिय न हिंतुमहिं समाना । मृषा न कहौं मोर यह बाना ॥
सब के प्रिय सेवक यह नीती ॥ । मोरे अधिक दास पर प्रीती ॥
दो० सब गृह जाहु सखा सब भजेहु मोहिं दृढ़ नेम
सदा सर्वगत सर्वहित जानि करेहु अति प्रेम ॥
सुनि प्रभु बचन मगन सब भये । को हम कहां बिसर तन गये ॥
एक टक रहे जोरि कर आगे । सकहिं न कछु कहि अति अनुरागे
परम प्रेम तिन्ह कर प्रभु देखा । कहा बिबिध बिध ज्ञान बिसेषा
प्रभु सन्तुस कछु कहन न पारहिं । पुनि पुनि चरण सरोज निहारहिं
तब प्रभु भूषण बसन मंगाये । नाना रंग अनूप सुहाये ॥ ॥
सुग्रीवादि प्रथम पहिराये । बसन भरत निज हाथ बनाये ॥

CC-0. In Public Domain Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

प्रभु प्रेरित लछमन पहिराये। लंकापति रघुपति मन भाये ॥
अंगद बैठ रहा नहिं डोला। प्रीति देखि प्रभु नाहिं न बोला
दो० जामवंत नीलादि सब पहिराये रघुनाथ ॥
हिय धरि राम रूप सब चले नाइ पद माथ ॥
तब अंगद उठि नाइ सिर सजल नयन कर जोरि
अति बिनीत बोलेउ बचन मनहुं प्रेम रस बोरि
सुनु सर्बज्ञ कृपा सुख सिंधो। दीन दया कर आरत बंधो ॥
मरती बार नाथ मोहि बाली। गयो तुम्हारेहि कोछे घाली ॥
अस्तुति करि न जाइ भय मारी। मोहि जनि तजहु भक्त हितकारी
मोरे तुम प्रभु गुरु पितु माता ॥ जाउं कहां तजि पद जल जाता ॥
तुम्हहिं बिचारि कहहु नरनाहा। प्रभु तजि भवन काज मम काहा।
बालक ज्ञान बुद्धि बल हीना। राखहु सरन जानि जन दीना ॥
नीच टहल गृह के सब करिहूं। पद पंकज बिलोकि भव तरिहूं ॥
अस कहि चरन परेउ प्रभु पाही। अब जनि नाथ कहहु गृह जाही
दो० अंगद बचन बिनीत सुनि रघुपति करुणा सींव
प्रभु उठाय उर लायउ सजल नयन राजीव ॥
निज उर माल बसन मनि बालि तनय पहिराय
बिदा कीन्ह भगवान तब बहु प्रकार समुझाय ॥
भरत अनुज सौमित्र समेता। पठवन चले भक्त कृत चेता ॥
अंगद हृदय प्रेम नहिं थोरा। फिरि फिरि चितव राम की ओरा ॥
बार बार करि दंड प्रणामा ॥ मन अस रहन कहहिं मोहि रामा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

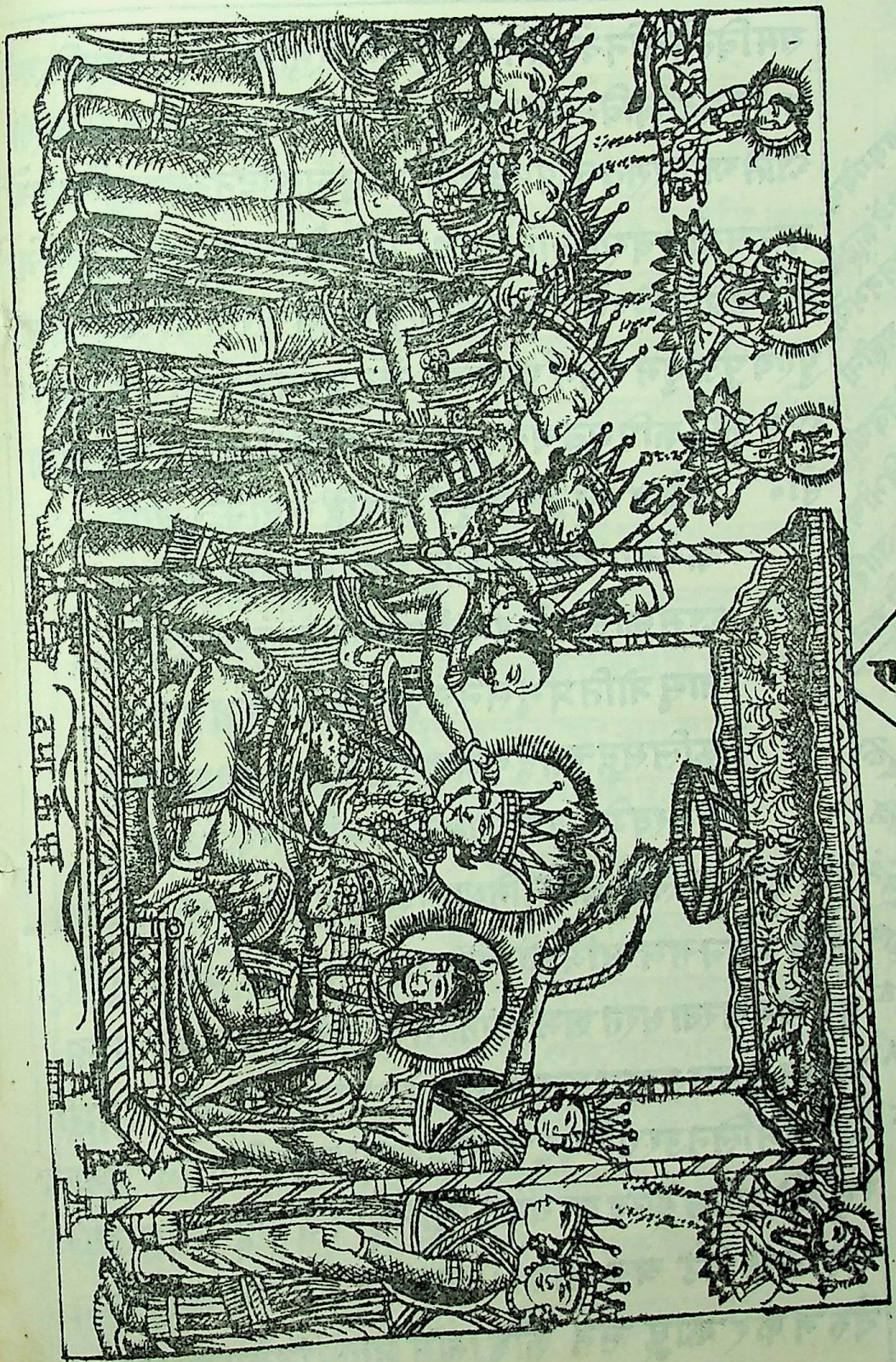

CC-0. In Public Domain Digitized By Siddhanta

राम विलोकनि बोलनि चलनी। सुमिरि सुमिरि शोचत हंस मिलनी
प्रभु रुष देखि बिनय बहु भाखी। चलेउ हृदय पद पंकज राखी
अति आदर सब कपि पहुंचाये। भाइन्ह सहित भरत पुनि आये
तब सुग्रीव चरण गहि नाना। भांति बिनय कीन्ही हनुमाना
दिन दश करि रघुपति पद सेवा। पुनि तव चरण देखिहौं देवा
पुण्य पुंज तुम पवन कुमारा। सेवहु जाइ कृपा आगारा।
अस कहि कपि सब चले तुरंता। अंगद कहैं सुनहु हनुमंता

दो० कहेउ दंडवत प्रभु सैं तुमहिं कहौं कर जोरि
बार बार रघुनाथ कहिं सुरत करायहु मोरि॥
अस कहि चलेउ बालि सुत फिर आयउ हनुमंत
तासु प्रीति प्रभु सन कही मगन भये भगवंत।
कुलिसहु चाहि कठोर अति कोमल कुसुमहु चाहि
चित खगेश अस राम कर समुझि परै कहु काहि।

पुनि कृपाल लियो बोलि निषादा। दीन्हे भूषण बसन प्रसादा
जाहु भवन मम सुमिरण करेहु मन क्रम वचन धर्म अनुसरेहु
तुम मम सखा भरत सम भ्राता। सदा रहेउ पुर आवत जाता
वचन सुनत उपजा दुख भारी। परेउ चरण भरि लोचन बारी
चरण नलिन उर धरि गृह आवा। प्रभु सुभाव परिजनन सुनावा
रघुपति चरित देखि पुरवासी। पुनि पुनि कहहिं धन्य सुखरासी
राम राज बैठे त्रय लोका। हरषित भये गये सुर लोका
बैरु न कर काहू सन कोई। राम प्रताप बिषमता खोई॥

निज धाम गये या आनंद में काहू को कछु मान न भयो अरु छः महीना बीत गये तब श्री रघुनाथ विभीषण सुग्रीव आदि कपिन को सन मानि अंगद को अधिक जानि भरत भाइन तें आदर कर बाद विदा कियो तहां हनूमान रहे पुनः निषाद

टी० रा० उ० १८

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो॰ बरुण श्रमनिजनिज धरमनिरत बेदपथलोग
चलहिं सदापावहिं सुरव नहिं भयशोकनरोग
दैहिकदैविक भौतिक तापा । रामराज नहिं काहुहिं व्यापा ॥
सब नरकरहिं परस्पर प्रीती । चलहिं स्वधर्मनिरत श्रुतिनीती
चारिउ चरण धर्म जग माहीं । पूरि रहा सपने हु श्रघ नाहीं
राम भक्त रत सब नर नारी । सकल परमगति के श्रधिकारी
श्रल्प मृत्यु नहिं कवनिउपीरा । सब सुन्दर सब निरुज शरीरा
नहिं दरिद्र कोउ दुखीन दीना । नहिं कोउ श्रबुधनलक्षणहीना
सब निर्दंभ धरम रत पुनी । नर श्ररु नारि चतुर सब गुनी
सब गुणज्ञ सब पंडित ज्ञानी । सब कृतज्ञनहिं कपटसयानी
दो॰ रामराज नभगेश सुन सचराचर जग माहिं ॥
काल कर्म सुभाव गुण कृत दुख काहुहि नाहिं ॥
भूमि सप्त सागर मेखला । एक भूप रघुपति कोसला ॥
भुवन श्रनेक रोम प्रति जासू । यह प्रभुता कछु बहुत न तासू
सो महिमा समुझत प्रभु केरी । यह बरणत हीनता घनेरी ॥
सो महिमा खगेश जिन जानी । फिर एहि चरित तिन्हुं रतिमानी
सोउ जाने कर फल यह लीला । कहहिं महा मुनि बरद सुशीला
राम राज कर सुख संपदा । बरणि सकै फणीश शारदा
सब उदार सब पर उपकारी । बिप्र चरण सेवक नर नारी ।
एक नारि व्रत रत सब झारी । तेमन बचक्रम पति हित कारी
दो॰ दंडजतिन्ह कर भेदजहं नर्तक नृत्य समाज ॥

जीतहु मनहि सुनिय अस रामचंद्र के राज ॥

फूलहिं फलहिं सदा तरु कानन। रहहिं एक संग गज पंचानन
खग मृग सहज बैर बिसरादे। सबन्हि परस्पर प्रीति बढ़ादे
कुंजहिं खग मृग नाना बृंदा। अभय चरहिं बन करहिं अनंदा
सीतल सुरभि पवन बह मंदा। गुंजत अलि लै चलि मकरंदा
लता बिटप मागे मधु चुवहीं। मन भावतो धेनु पय स्रवहीं
ससि संपन्न सदा रह धरनी। त्रेता भइ कृत जुग कै करनी
प्रगटी गिरिन्ह बिबिधि मनि खानी। जगदात्मा भूप जग जानी
सरिता सकल बहहिं बर बारी। सीतल अमल स्वाद सुखकारी
सागर निज मरयादा रहहीं। डारहिं रत्न तटन्हि नर लहहीं
सरसिज संकुल सकल तड़ागा। अति प्रसन्न दस दिसा बिभागा

दो० बिधु महि पूर मयूखन्हि रबि तप जेतनेहि काज ॥
माँगे बारिद देहिं जल रामचंद्र के राज ॥ ॥

कोटिन्ह बाजिमेध प्रभु कीन्हे। दान अनेक द्विजन्ह कहँ दीन्हे
श्रुति पथ पालक धरम धुरंधर। गुनातीत अरु भोग पुरंदर ॥
पति अनुकूल सदा रह सीता। सोभा खानि सुसील बिनीता
जानति कृपा सिंधु प्रभुताई। सेवति चरन कमल मन लाई ॥
यद्यपि गृह सेवक सेवकनी। बिपुल सकल सेवा बिधि गुनी
निज कर गृह परिचरजा करई। रामचंद्र आयसु अनुसरई
जेहि बिधि कृपासिंधु सुख मानहिं। सोइ कर श्री सेवा बिधि जानहिं
कौसिल्यादि सासु गृह माहीं। सेवइ सबन्हि मान मद नाहीं

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उमा रमा ब्रह्माणि वंदिता ।। जगदंबा संतत म निंदिता ॥
दो० जासु कृपा कटाक्ष सुर चाहत चितवन सोइ
राम पदारबिंद रत करत सुभावहि खोइ ॥
सेवहिं सानुकूल सब भाई । राम चरण रति अति अधिकाई
प्रभु मुख कमल बिलोकत रहहीं । कबहुं कृपाल हमहिं कुछ कहहीं
राम करहिं भ्रातन्ह पर प्रीती । नाना भांति सिखावहिं नीती
हरषित रहहिं नगर के लोगा । करहिं सकल सुर दुर्लभ भोगा
अहनिसि बिधिहि मनावत रहहीं । श्री रघुबीर चरण रति चहहीं
दुइ सुत सुंदर सीता जाये । लव कुश वेद पुराणन्ह गाये ॥
दोउ बिजयी बिनयी गुणसागर । हरि प्रतिबिंब मनहुं अति सुंदर
दुइ दुइ सुत सब भ्रातन्ह केरे । भये रूप गुण शील घनेरे ॥
दो० ज्ञान गिरा गोतीत अज माया मन गुण पार
सोइ सच्चिदानंद घन कर नर चरित उदार ॥
प्रातकाल सरयू करि मज्जन । बैठहिं सभा संग द्विज सज्जन
बेद पुराण बशिष्ठ बखानहिं । सुनहिं राम यद्यपि सब जानहिं
अनुजन संयुत भोजन करहीं । देखि सकल जननी सुख भरहीं
भरत शत्रुहन दोनों भाई । सहित पवन सुत उपवन जाई
बूझहिं बैठि राम गुण गाहा । कह हनुमान सुमति अवगाहा
सुनत विमल गुण अति सुख पावहिं । बहुरि बहुरि करि विनय सुनावहिं
सबके गृह गृह होहिं पुराना । राम चरित पावन विधि नाना ।
नर अरु नारि राम गुण गावहिं । करहिं दिवस निशि जात न जानहिं

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

दो० अवध पुरी बासिन्ह कर सुख संपदा समाज ॥
सहस शेष नहिं कहि सकहिं जहँ नृप राम बिराज

नारदादि सन कादि मुनीशा। दरशन लागि कोशलाधीशा
दिन प्रति सकल अयोध्या आवहिं। देखि नगर बिराग बिसरावहिं
जात रूप मणि रचित अटारी। नाना रंग रुचिर गच ढारी ॥
पुर चहुं पास कोट अति सुंदर। रचे कंगूरा रंग रंग बर ॥
नव ग्रह निकर अनीक बनाई। जनु घेरी अमरावति आई।
महि बहु रंग रचित गच कांचा। जो बिलोकि मुनि वर मन नाचा।
धवल धाम ऊपर नभ चुंबत ॥ सकल मनहुं रवि शशि दुति निंदत
बहु मणि रचित झरोखा भ्राजहिं। गृह गृह प्रति मणि दीप बिराजहिं

छं. मणि दीप राजहिं भवन भ्राजहिं देहरी विद्रुम रची ॥
मणि खंभ भीति बिरंचि बिरची कनक मणि मरकत खची
सुंदर मनोहर मंदिरायत अजिर रुचिर फटिक रचे ॥ ॥
प्रति द्वार द्वार कपाट पुरट बनाइ बहु बज्रन खचे ॥

दो. चारु चित्र शाला गृह गृह प्रति लिखे बनाइ ॥
राम चरित जे निरखि मुनि ते मन लेहिं चुराइ

सुमन बाटिका सबहिं लगाई। विविध भांति करि यतन बनाई।
लता ललित बहु जाति सुहाई। फूलहिं सदा बसंत कि नाई ॥
गुंजत मधुकर मुखर मनोहर। मारुत त्रिविध सदा बह सुन्दर
नाना खग बालकन्हि जिआये। बोलत मधुर उड़ात सुहाये ॥
मोर हंस सारस पारावत ॥ भवनन्हि पर सोभा अति पावत

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जहं तहं देखहिं निज परछाहीं। बहु विधि कूजहिं नृत्य कराहीं
शुक सारिका पढ़ावहिं बालक। कहहु राम रघुपति जन पालक
राज दुआर सकल बिधि चारू। वीथी चौहट रुचिर बजारू॥

छं० बाज़ार रुचिरन बनै बरणत बस्तु बिथ गथु पाइये
जहं भूप रमा निवास तहं की संपदा किमि गाइये॥
बैठे बजाज सराफ बणिक अनेक मनहुं कुबेर से॥
सब सुखी सब सच्चरित सुंदर नारि नर शिशु जरठ से

दो० उत्तर दिशि सरयू बहै निर्मल जल गंभीर॥
बांधे घाट मनोहर स्वल्प पंक नहिं तीर

दूरि फराक रुचिर सो घाटा। जहं जल पिअहिं बाजि गज बाटा
पनघट परम मनोहर नाना। तहां न पुरुष करहिं अस्नाना
राज घाट सब बिधि सुंदर बर। मज्जहिं तहां बरण चारों नर
तीर तीर देवन के मंदिर।। चहुं दिशि तिन्ह के उपबन सुंदर
कहुं कहुं सरिता तीर उदासी। बसहिं ज्ञान रत मुनि संन्यासी
तीर तीर तुलसिका सुहाईं। वृन्द वृन्द बहु मुनिन्ह लगाईं।
पुर शोभा कछु बरणि न जाई। बाहिर नगर परम रुचि राई॥
देखत पुरी अखिल अघ भागा। बन उपबन बापिका तड़ागा

छं० बापी तड़ाग अनूप कूप मनोहरायत सोहहीं॥
सोपान सुंदर नीर निर्मल देखि सुर मन मोहहीं॥
बहु रंग कंज अनेक खग कूजहिं मधुप गुंजारहीं
आराम रम्य पिकादि खगरव जनु पथिक हंकारहीं

टी० रा० पु० ३३

दो० रमानाथ जहं राज कर सो पुर बरणि न जाइ ॥
अणिमादिक सुख संपदा रहीं अवध सब छाइ

जहं तहं नर रघुपति गुण गावहिं। बैठि परस्पर इहै सिखावहिं।
भजहु प्रणत प्रतिपालक रामहिं। शोभा शील राम गुण धामहिं
जलज बिलोचन श्यामल गातहिं। पलक नयन इव सेष कत्रातहिं
धृत सर रुचिर चाप तूणी रहिं। संत कंज बन रबि रण धीरहिं
काल कराल व्याल खगराजहिं। नमत राम अकाम मम ताजहिं
लोभ मोह मृग यूथ किरातहिं। मन सिज करि हरि जन सुखदातहिं
संशय शोक निविड तम भानुहिं। दनुज गहन घन दहन कृशानुहिं
जनक सुता समेत रघबीर हिं। कसन भजहु भंजन भवभीर हिं
बहु बासना मसक हिम रासिहिं। सदा एक रस अज अबिनासिहिं
मुनि रंजन भंजन महि भारहिं। तुलसि दास के प्रभुहि उदारहिं

दो० एहि विधि नगर नारि नर करहिं राम गुण गान ॥
सानुकूल सब पर रहहिं संतत कृपा निधान ॥

जब तें राम प्रताप खगेशा ।। उदित भयो अति प्रबल दिनेशा
पूरि प्रकाश रहेउ तिहुं लोका। बहु तेउ सुख बहु तेन्ह मन शोका
जिन्हहिं शोक ते कहौं बखानी। प्रथम अविद्या निसा नसानी
अघ उलूक जहं तहां लुकाने। काम क्रोध कैरव सकुचाने ॥
बिबिध कर्म गुण काल सुभाऊ। एच कोर सुख लहहिं न काऊ
मत्सर मान मोह मद चोरा। इन्ह कर सुख नहिं कवनिहु ओरा
धरम तड़ाग ज्ञान बिज्ञाना। ये पंकज बिकसे बिधि नाना।

दी. रा. उ. २४

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुख संतोष बिराग बिबेका। बिगत शोक एकोक अनेका।

दो० यह प्रताप रबि जाहिके उर जब करै प्रकाश।
पिछिले बाढ़हिं प्रथमजे कहेते पावहिं नाश

भ्रातन्ह सहित राम एक बारा। संग परम प्रिय पवन कुमारा॥
सुंदर उपबन देखन गये। सब तरु कुसुमित पल्लव नये
जानि समय सनकादिक आये। तेज पुंज गुण शील सुहाये।
ब्रह्मानंद सदा लय लीना। देखत बालक बहुकाल बीना
रूप धरे जनु चारिउ बेदा॥ समदर्शी मुनि बिगत बिभेदा
आशा बसन व्यसन यहतिन्हहीं। रघुपति चरित होय तहं सुनहीं
तहां रहे सनकादि भवानी। जहं घट संभव मुनिवर ज्ञानी
राम कथा मुनिवर बहु बरणी। ज्ञान योनि पावक जिमि अरणी

दो० देखि राम मुनि आवत हरषि दंडवत कीन्ह॥
स्वागत पूंछि पीत पट प्रभु बैठन कहं दीन्ह

कीन्ह दंडवत तीनिउं भाई। सहित पवन सुत सुख अधिकाई
मुनि रघुपति छबि अतुल विलोकी। भये मगन मन सकेन रोकी।
श्यामल गात सरो रुह लोचन। सुंदरता मंदर भव मोचन॥
एकटक रहे निमेष न लावहिं। प्रभु कर जोरे शीश नवावहिं॥
तिन्हके दशा देखि रघुबीरा। अवत नयन जल पुलक शरीरा
कर गहि प्रभु मुनिवर बैठारे। परम मनोहर वचन उचारे॥
आजु धन्य मैं सुनहुं मुनीशा। तुम्हरे दरश जाहिं अघ खीशा
बड़े भाग्य पाइय सत संगा। बिनहिं प्रयास होहिं भव भंगा

दो० संत संग अपवर्ग कर कामी भव कर पंथ ॥
कहहिं संत कवि कोविद श्रुति पुराण सद ग्रंथ

सुनि प्रभु वचन हरषि मुनि चारी। पुलकित तनु अस्तुति अनुसारी
जय भगवंत अनंत अनामय। अनघ अनेक एक करुणामय
जय निर्गुण जय जय गुण सागर। सुख मंदर सुंदर अति नागर।
जय इंदिरा रमण जय भूधर। अनुपम अज अनादि शोभाकर
ज्ञान निधान अमान मानप्रद। पावन सुयश पुराण वेद वद।
तज्ञ कृतज्ञ अज्ञता भंजन। नाम अनेक अनाम निरंजन
सर्व सर्व गत सर्व उरालय। बससि सदा हम कहुं परिपालय
द्वंद बिपति भव फंद बिभंजय। हृदि बस राम काम मद गंजय।

दो० परमानंद कृपाय तन मन परिपूरण काम ॥
प्रेम भक्ति अनुपायनी देहु हमहिं श्रीराम

देहु भक्ति रघुपति अति पावनि त्रिविध ताप भव दाप न सावनि
प्रणत काम सुर धेनु कल्प तरु। होइ प्रसन्न दीजे प्रभु यह वरु
भव वारिधि कुंभज रघुनायक। सेवत सुलभ सकल सुख दायक
भव संभव दारुण दुख दारय। दीन बंधु समता विस्तारय॥
आस त्रास इरषादि निवारक। विनय विवेक विनय विस्तारक
भूप मौलि मणि मंडन धरणी। देहि भक्ति संसृति सरतरणी।
मुनि मन मानस हंस निरंतर। चरण कमल बंदित अज शंकर
रघुकुल केतु सेतु श्रुति रक्षक। काल कर्म सुभाव गुण भक्षक
तारण तरण हरण सब दूषण। तुलसि दास प्रभु त्रिभुवन भूषण

लोक गए तब भरत जू को सं कोच देखि हनूमान प्रभु प्रति कह्यौ तातें भरत प्रति संता संत लक्षण प्रभु जू या भांति कहे सं त परोपकारी

टी० रा० उ० २६

पर सुख सुखी पर दुख तें दुखी असंत अपकारी इंद्रिय आदि पोष कपर सुख देखि दुखी अरु दुख देखि कै सुखी इत्यादि कही पुनः संत विवेकी करनी रखनी दूनी शुभ कर्म के फल को त्याग अरु सद चित आनंदाए तीनों ब्रह्म रूप हैं तिन्ह में सब हैं मुख्य ज्ञान साधन है अरु आनंद फल है

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो० बारबार अस्तुति करि प्रेम सहित सिरनाइ
ब्रह्मभवन सनकादि गे अति अभीष्ट बर पाइ

सनकादिक बिधि लोक सिधाये। भ्रातन्ह राम चरण सिर नाये
पूंछत प्रभु हिय कलस कुचाहीं। चितवहिं सब मारुत सुत पाहीं
सुना चहहिं प्रभु सुरसके बानी। जो सुनि होइ सकल भ्रम हानी
अंतरजामी प्रभु सब जाना। बूझत कहहु काह हनुमाना
जोरि पाणि कह तब हनुमंता। सुनहु दीन दयाल भगवंता।
नाथ भरत कछु पूंछन चहहीं। प्रश्न करत मन सकुचत अहहीं
तुम जानहु कपि मोर सुभाऊ। भरतहिं मोर न अंतर काऊ॥
सुनि प्रभु बचन भरत गहे चरणा। सुनहुं नाथ प्रणतारति हरणा

दो० नाथ मोहि संदेह कछु सपनेहु शोक न मोह
केवल कृपा तुम्हारि हि कृपा नंद संदोह ॥

करौं कृपा निधि एक ढिठाई। मैं सेवक तुम जन सुखदाई
संतन के महिमा रघुराई। बहु विधि वेद पुराणन गाई।
श्री मुख तुम्ह पुनि कीन्ह बड़ाई। तिन्ह पर प्रभुहिं प्रीति अधिकाई
सुना चहौं प्रभु तिन्ह करनी। कृपासिंधु गुण ज्ञान विचक्षण
संत असंत भेद बिलगाई। प्रणतपाल मोहिं कहहु बुझाई
संतन के लक्षण सुन भ्राता। अगणित श्रुति पुराण विख्याता
संत असंतन के असि करणी। जिमि कुठार चंदन आचरणी।
काटे परशु मलय सुनु भाई। निज गुण देइ सुगंध बसाई॥

सो० तातें सुर शीशन्ह चढ़त जग बल्लभ श्री खंड ॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri

अनिल दाह पीड़त घनहिं परशु बदन यह दंड

विषय अलंपट शील गुणाकर। परदुख दुख सुख सुख देखेउर

समअभूत रिपु विमद बिरागी। लोभामर्ष हर्ष भयत्यागी ॥

कोमल चित दीनन परदाया। मन क्रम बच मम भक्ति अमाया

सबहि मान प्रद आपु अमानी भरत प्राण सम ममते प्रानी ॥

विगत काम मम नाम परायन। सांति बिरति बिनती मुदितायन

शीतलता सरलता मयित्री। द्विज पद प्रीति धरम जनयित्री ॥

ए सब लक्षण बसहिं जासु उर। जानेहु तात संत संतत फुर ॥

सम दम नियम नीति नहिं डोलहिं। परुष बचन कबहूं नहिं बोलहिं

दो० निंदा अस्तुति उभय सम ममता मम पद कुंज ॥

ते सज्जन मम प्राण प्रिय गुण मंदिर सुख पुंज

सुनहुं असंतन केर सुभाऊ। भूलेहु संगति करिय न काऊ ॥

तिन कर संग सदा दुख दाई। जिमि कपिलहिं चालै हर हाई

खलन हृदय अति ताप विशेषी। जरहिं सदा पर संपति देखी ॥

जहं कहुं निंदा सुनहिं पराई। हरषहिं मनहुं परी निधि पाई।

काम क्रोध मद लोभ परायन। निर्दय कपटी कुटिल मलायन।

बयरु अकारण सब काहू सौं। जो कर हित अनहित ताहू सौं।

झूठहि लेना झूठहि देना ।। झूठइ भोजन झूठ चबेना ॥

बोलहिं मधुर बचन जिमि मोरा। खाहिं महा अहि हृदय कठोरा।

दो० पर द्रोही पर दार रत पर धन पर अपबाद

ते नर पावर पाप मय देह धरे मनु जाद ॥

दूनों में दूनों रहित हैं ऐसो जानि विवेकी दोनों पर दृष्टि नाहीं राखत हैं ऐसो बचन श्री मुखतें सुन आनंद ह्वै मंदिर को गये और या प्रकारतें नितन वीन चरित्र कर तरहैं तहां नारद सब चरित्र देखि ब्रह्मलोक में वरणत हैं तहां ब्रह्मीयुत सनकादि समाधित्या गश्रवण करतु हैं

टी० रा० उ० २८

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लोभद्वेषनिलोभदडासनि। शिश्नोदरपरयमपुरत्रासनि
काहू कीजो सुनहिं बडाई। सांस लेहिं जनु जूडी आई॥
जब काहू की देखहिं बिपती। सुखी भये मानहुं जग नृपती
स्वारथ रत परिवार बिरोधी। लंपट काम लोभ अति क्रोधी
मातु पिता गुरु बिप्र न मानहिं। आपु गये अरु घालहिं आनहिं॥
करहिं मोहबस द्रोह परावा। संत संग हरि कथा न भावा॥
अवगुण सिंधु मंद मति कामी। बेदविदूषक परधन स्वामी॥
बिप्र द्रोह परद्रोह बिशेषा। दंभ कपट तिय धरे सुबेषा॥
दो० ऐसे अधम मनुज्य खल कृतयुग त्रेता नाहिं॥
द्वापर कछुक वृंद बहु होइहहिं कलियुग माहिं
परहित सरिस धर्म नहिं भाई। परपीडा सम नहिं अधमाई॥
निर्णय सकल पुराण बेदकर। कहेउं तात जानहिं कोविदनर
नरशरीर धरिजे परपीरा॥ करहिं ते सहहिं महाभव पीरा
करहिं मोहबस नरअघनाना। स्वारथ रत परलोक नसाना
काल रूप तिन्ह कहं मैं भ्राता। शुभअरु अशुभ कर्म फलदाता
अस बिचारजे परम सयाने॥ भजहिं मोहिं संसृति दुख जाने
त्यागहिं कर्म शुभाशुभ दायक। भजहिं मोहिं सुरनर मुनि नायक
संतअसंतन के गुण भाखे। तेन परहिं भवजिन्ह लखिराखे
दो० सुनहु तात माया कृत गुण अरु दोष अनेक॥
गुण यह उभय न देखिय यहि देखिय सो अविवेक
श्री मुख बचन सुनत सब भाई। हरषे प्रेम न हृदय समाई॥

हेतु यह चरित्रहिं
यह ध्यान सजीव
होतहिं पुनः एक
बार मनुहिं हिं
पुर बासिन कहा
कृ परमारथ पथ
कहत भये मानुष
तन की प्रशंसार्थ
न तन दुर्लभ श्रुत
हृदय है श्रुत
क कर्णधारादिक
ए और नव
जीव को भाव
टी॰ उं॰
रा॰ नट

पंक्ति का सम्बन्ध
पवन तो बाध
के अनुग्रह के
से कहिये हेतु
यह जीव के
ऊपर की ओर
पीठ करके
जाने के समय है
लेके रहा है
नहीं अनुग्रह
पहिले ही जीव
को ईश्वर की ओर

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

करहिं बिनय अति बारहिं बारा। हनूमान हिय हरष अपारा।
पुनि रघुपति निज मंदिर गये। एहि बिधि चरित करत नित नये
बार बार नारद मुनि आवहिं। चरित पुनीत राम के गावहिं॥
नित नव चरित देखि मुनि जाहीं। ब्रह्म लोक सब कथा कहाहीं
सुनि बिरंचि अति सय सुख मानहिं। पुनि पुनि तात करहु गुन गानहिं
सनकादिक नारदहिं सराहहिं। यद्यपि ब्रह्म निरत मुनि आहहिं
सुन गुन गान समाधि बिसारी। सादर सुनहिं परम अधिकारी
दो० जीवन मुक्त ब्रह्म पर चरित सुनहिं तजि ध्यान॥
जे हरि कथा न करहिं रति तिन के हिय पाषान॥
एक बार रघुनाथ बुलाये। गुरु द्विज पुरबासी सब आये
बैठे गुरु मुनि अरु द्विज सज्जन। बोले बचन भक्त भव भंजन
सुनहु सकल पुरजन मम बानी। कहौं न कछु ममता उर आनी
नहिं अनीति नहिं कछु प्रभुताई। सुनहु करहु जो तुम्हहिं सुहाई
सोइ सेवक प्रियतम मम सोई। मम अनुसासन मानै जोई
जौ अनीति कछु भाषौं भाई। तौ मोहिं बरजहु भय बिसराई
बड़े भाग्य मानुष तन पावा। सुरदुर्लभ सब ग्रंथन्ह गावा
साधन धाम मोक्ष कर द्वारा। पाइ न जेहिं पर लोक सँवारा
दो० सो परत्र दुख पावहिं सिर धुनि धुनि पछिताय
कालहिं कर्महिं ईस्वरहिं मिथ्या दोष लगाय
एहि तन कर फल बिषय न भाई। स्वर्गउ स्वल्प अंत दुखदाई
नर तनु पाइ बिषय मन देहीं। पलटि सुधा ते बिष सठ लेहीं

ताहि कबहुं भल कहै न कोई। गुंजा गहै परस मनि खोई।
आकर चारि लक्ष चौरासी। योनि भ्रमत यह जिव अविनासी
फिरत सदा माया कर पेरा। काल कर्म सुभाव गुण घेरा।
कबहुंक करि करुणा नर देही। देत ईश बिनु हेत सनेही॥
नरतनु भव बारिधि कहुं बेरो। सन्मुख मरुत अनुग्रह मेरो।
करन धार सतगुरु दृढ़ नावा। दुर्लभ साज सुलभ करि पावा
दो० जो न तरै भव सागर नर समाज अस पाइ॥
सो कृत निंदक मंदमति आतम हन गति जाइ

जो परलोक इहां सुख चहहूं। सुनि मम वचन हृदय दृढ़ गहहूं
सुलभ सुखद मारग यह भाई। भक्ति मोरि पुराण श्रुति गाई
ज्ञान अगम प्रत्यूह अनेका। साधन कठिन न मन कहुं टेका
करत कष्ट बहु पावै कोई। भक्ति हीन मोहि प्रिय नहिं सोई
भक्ति स्वतंत्र सकल सुख खानी। बिनु सतसंग न पावहिं प्रानी
पुण्य पुंज बिनु मिलहिं न संता। सतसंगति संसृति कर अंता
पुण्य एक जग महुं नहिं दूजा। मन क्रम वचन बिप्र पद पूजा
सानुकूल तेहि पर मुनि देवा॥ जो तजि कपट करै द्विज सेवा
दो० औरउ एक गुप्त मति सबहिं कहौं कर जोरि॥
संकर भजन बिना नर भक्ति न पावै मोरि॥

कहहु भक्ति पथ कवन प्रयासा। योग न मख जप तप उपवासा
सरल सुभाव न मन कुटिलाई। यथा लाभ संतोष सदाई॥
मोर दास कहाइ नर आसा। करइ तो कहहु कहा विस्वासा

प्रेम भक्ति पद्म कमल को बर्नि सांति निज गेह
आवै औरो छंद में बेद कूपूर्व सो परधाम की यात्रा की प्रसंग जानो

दो० कु० ३१

प्रत्यक्ष सीतल ज्ञानराई को प्रसंग है दूसरो अर्थ भीतरगुप्त परधामयात्रा को है बहुरि कं को कल्पायतन कीन्ह जो अब रघु रामहि भव

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri G

बहुत कहौं का कथा बढ़ाई ॥ एहि आचरण बस्य मैं भाई।
बैरन बिग्रह आसन त्रासा। सुख मय ताहि सदा सब आसा
अनारंभ अनिकेत अमानी। अनघ अरोष दक्ष बिग्यानी।
प्रीति सदा सज्जन संसर्गा॥ तृण सम बिषय स्वर्ग अपवर्गा
भक्ति पक्ष हठ नहिं सठ ताई। दुष्ट तर्क सब दूर बहाई॥
दो० मम गुण ग्राम नाम रत गत ममता मद मोह॥
ता कर सुख सोइ जानै परानंद संदोह॥
सुनत सुधा सम बचन राम के। गहे सबन पद कृपा धाम के।
जननि जनक गुरु बंधु हमारे। कृपा निधान प्रानहुं ते प्यारे॥
तनु धन धाम राम हितकारी। सब बिधि तुम्ह प्रनतारति हारी
असि सिख तुम बिनु देइ न कोऊ। मातु पिता स्वारथ रत ओऊ
हेतु रहित जग युग उपकारी। तुम्ह तुम्हार सेवक असुरारी
स्वारथ मीत सकल जग माहीं। सपनेहुं प्रभु परमारथ नाहीं
सब के बचन प्रेम रस साने। सुनि रघुनाथ हृदय हरषाने
निज निज गृह गये आयसु पाई। बरणत प्रभु बतकही सुहाई
दो० उमा अवध बासी नर नारि कृतारथ रूप॥
ब्रह्म सच्चिदानंद घन रघुनायक जहं भूप।
एक बार बसिष्ठ मुनि आये। जहां राम सुख धाम सुहाये॥
अति आदर रघुनायक कीन्हा। पद पखारि पादोदक लीन्हा
राम सुनहु मुनि कह कर जोरी। कृपा सिंधु बिनती कछु मोरी
देखि देखि आचरण तुम्हारा। होत मोह मम हृदय अपारा।

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

महिमा अमित बेद नहिं जाना। मैं केहि भांति कहौं भगवाना॥
उपरोहिती करम अति मंदा। बेद पुराण सम्मृति कर निंदा
जब मलेउ मैं तब बिधि मोही॥ कहा लाभ आगे सुत होही
परमात्मा ब्रह्म नर रूपा॥ होइहहिं रघु कुल भूषण भूपा
दो० तब मैं हृदय बिचारा जोग यज्ञ ब्रत दान॥
जानहुं करिय सो पैहौं धर्म न एहि समान
जप तप नियम योग निज धर्मा। श्रुति संभव नाना शुभ कर्मा
ज्ञान दया दम तीरथ मज्जन। जहं लगि धर्म कहत श्रुति सज्जन
आगम निगम पुराण अनेका॥ पढ़े सुने कर प्रभु फल एका॥
तव पद पंकज प्रीति निरंतर॥ सावधान कर यह फल सुंदर॥
छूटै मल किम लहि के धोये। घृत कि पाव कोउ बारि बिलोये
प्रेम भक्ति जल बिनु रघु राई। अभि अंतर मल कबहुं न जाई
सोइ सर्बज्ञ तग्य सोइ पंडित। सोइ गुण ग्य बिज्ञान अखंडित
दक्ष सकल लक्षण युत सोई। जाके पद सरोज रति होई॥
दो० नाथ एक बर मांगौं राम कृपा करि देहु॥
जन्म जन्म प्रभु पद कमल कबहु घटै जनि नेहु
अस कहि मुनि बसिष्ठ गृह आये। कृपा सिंधु के मन अति भाये
हनूमान भरतादिक भ्राता। संग लिये सेवक सुख दाता।
पुनि कृपाल पुर बाहेर गये॥ गज रथ तुरंग मंगावत भये
देखि कृपा करि सकल सराहे। दिये उचित जिन्ह जिन्ह जे चाहे
भरत दीन निज बसन डसाई। बैठे प्रभु सेवहिं सब भाई॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मारुत सुत तव मारुत करई। पुलक वपुष लोचन जल भरई
हनूमान सम नहिं बड़ भागी। नहिं कोउ राम चरण अनुरागी
गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई। बार बार प्रभु निज मुख गाई।

दो० तेहि अवसर मुनि नारद आये करतल बीन
गावन लागे राम गुण कीरति सदा नवीन॥

भव भव लोकय पंकज लोचन। कृपा विलोक निशोच विमोचन
नील लाव रस श्याम काम अरि। हृदय कंज मकरंद मधुप हरि
यातु धान वरूथ बल भंजन। मुनि सज्जन रंजन अघ गंजन
भूसुर शशि नव वृंद बलाहक। अशरण शरण दीन जन गाहक
भुज बल विपुल भार महि खंडित। खर दूषण विराध बध पंडित
रावणारि सुख रूप भूप वर।। जय दशरथ कुल कुमुद सुधाकर
सुयश पुराण विदित निगमागम। गावत सुर मुनि संत समागम।
कारुणीक व्यलीक मद खंडन। सब विधि कुशल कोशला मंडन
कलि मल मथन नाम ममता हन। तुलसि दास प्रभु पाहि प्रणत जन

दो० प्रेम सहित मुनि नारद बरणि राम गुण ग्राम॥
सोभासिंधु हृदय धरि गये जहां विधि धाम॥

गिरिजा सुनहु विसद यह कथा। मैं सब कही मोरि मति यथा॥
राम चरित शत कोटि अपारा। श्रुति शारदा न बरणै पारा।
राम अनंत अनंत गुणानी।। जन्म कर्म अनंत नामानी॥
जलसीकर महि रजगणि जाहीं। रघुपति चरित न बरणि सिराहीं
विमल कथा हरि पद दायनी। भक्ति होइ मुनि अन पायनी।

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उमा कहेउं सब कथा सुहाई। जो भुसुंडि खगपतिहि सुनाई।
कछुक राम गुन कहेउं बखानी। अब का कहौं सो कहहु भवानी
सुनि सुभ कथा उमा हरषानी। बोली अति बिनीत मृदु बानी
धन्य धन्य मैं धन्य पुरारी। सुनेउं राम गुन भव भय हारी
दो० तुम्हरी कृपा कृपायतन अब कृतकृत्य न मोह
जानेउं राम प्रताप प्रभु चिदानंद संदोह ॥ ॥
नाथ तवानन ससि स्रवत कथा सुधा रघुबीर
स्रवन पुटन्हि मन पान करि नहिं अघात मतिधीर
राम चरित जे सुनत अघाहीं। रस बिसेष जाना तिन्ह नाहीं
जीवन मुक्त महा मुनि जेऊ। हरि गुन सुनहिं निरंतर तेऊ
भव सागर चह पार जो पावा। राम कथा ता कहं दृढ़ नावा
बिषयिन्ह कहं पुनि हरि गुन ग्रामा। स्रवन सुखद अरु मन अभिरामा
स्रवनवंत अस को जग माहीं। जाहि न रघुपति चरित सुहाहीं
तेजड़ जीव निजातम घाती। जिन्हहिं न रघुपति कथा सोहाती
हरिचरित्र मानस तुम गावा। सुनि मैं नाथ अमित सुख पावा
तुम्ह जो कही यह कथा सुहाई। कागभुसुंडि गरुड़ प्रति गाई
दो० बिरति ग्यान बिग्यान दृढ़ राम चरन अति नेह
बायस तन रघुपति भगति मोहि परम संदेह
नर सहस्र महं सुनहु पुरारी। कोउ एक होइ धर्म ब्रतधारी
धर्म सील कोटिन्ह महं कोई। बिषय बिमुख बिराग रत होई
कोटि बिरक्त मध्य श्रुति कहई। सम्यक ग्यान सकृत कोउ लहई

ज्ञानवंत कोटिन महं कोऊ ।। जीवन मुक्त सकृत जग सोऊ
तिन्ह सहस्र महं सब सुख खानी। दुर्लभ ब्रह्म लीन बिग्यानी
धर्मशील बिरक्त अरु ज्ञानी। जीवन मुक्त ब्रह्म पर प्रानी ।।
सब ते सो दुर्लभ सुर राया । राम भक्ति रत गत मद माया।
सो हरि भक्ति काक किमि पाई। बिश्वनाथ मोहिं कहहु बुझाई
दो० राम परायण ज्ञान रति गुण गार मति धीर ।।
नाथ कहहु केहि कारण पायउ काग शरीर ।।
यह प्रभु चरित पवित्र सोहावा। कहहु कृपाल काग किमि पावा
तुम केहि भांति सुना मद नारी। कहहु मोहिं अति कौतुक भारी
गरुड़ महा ज्ञानी गुण रासी। हरि सेवक अति निकट निवासी
तेहिं केहि हेतु काग सन जाई। सुनी कथा मुनि निकर बिहाई
कहहु कवन बिधि भा संवादा। दोउ हरि भक्त काग उरगादा
गौरि गिरा सुनि सरल सुहाई। बोले शिव सादर सुख पाई ।।
धन्य सती पावन मति तोरी । रघुपति चरण प्रीति नहिं थोरी
सुनहुं परम पुनीत इति हासा। सो सुनि सकल लोक भ्रम नासा
उपजे राम चरण विश्वासा । भव विधि तर नर बिनहिं प्रयासा
दो० ऐसिय प्रश्न बिहंग पति कीन्ह काग सन जाइ
सो सब सादर कहिहौं सुनहु उमा मन लाइ ।।
मैं जिमि कथा सुनी भव मोचनि। सो प्रसंग सुनि सुमुखि सुलोचनि
प्रथम रक्ष गृह तव अवतारा। सती नाम तव रहा तुम्हारा ।।
दक्ष यज्ञ तव भा अपमाना । तुम अति क्रोध तजे तव प्राना।

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मम अनुचरन कीन्ह मख भंगा। जानहुं सो तुम सकल प्रसंगा।
तब अति शोच भयो मन मोरे। दुखी भयउं बियोग प्रिय तोरे
सुंदर बन गिरि सरित तड़ागा। कौतुक देखत फिरौं बिभागा
गिरि सुमेरु उत्तर दिशि दूरी। नील शैल एक सुंदर भूरी॥
तासु कनक मय शिखर सुहाये। चारि चारु मोरे मन भाये॥
तिन पर एक एक बिटप बिशाला। बट पीपर पाकरी रसाला॥
शैलो परि सर सुंदर सोहा। मणि सोपान देखि मन मोहा

दो० शीतल अमल मधुर जल जलज बिपुल बहुरंग
कुंजत कल रव हंस गण गुंजत मंजुल भृंग॥

तेहि गिरि रुचिर बसै खग सोई। तासु नास कल्पांत न होई।
माया कृत गुण दोष अनेका। मोह मनोज आदि अबिवेका।
रहे व्यापि समस्त जग माहीं। तेहि गिरि निकट कबहुं नहिं जाहीं।
तहं बसि हरिहि भजइ जिमि कागा। सो सुनु उमा सहित अनुरागा।
पीपर तरु तर ध्यान सो धरई। जाप यज्ञ पाकर तर करई॥
आंब छांह करि मानस पूजा। तजि हरि भजन काज नहिं दूजा।
बर तर कह हरि कथा प्रसंगा। आवहिं सुनहिं अनेक बिहंगा।
राम चरित्र बिचित्र बिधाना॥ प्रेम सहित कर सादर गाना।
सुनहिं सकल मति विमल मराला। बसहिं निरंतर जे तेहि काला।
जब मैं जाइ सो कौतुक देखा॥ उर उपजा आनंद बिशेषा

दो० तब कछु काल मराल तनु धरि तहं कीन्ह निवास
सादर सुनि रघुपति गुण पुनि आएउ कैलास॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

गिरिजा कहेउं सो सब इतिहासा। मैं जेहि समै गयउं खग पासा।
अब सो कथा सुनहुं जेहि हेतू। गयउ काग पहं खग कुल केतू
जब रघुनाथ कीन्ह रन क्रीड़ा। समुझत चरित होत मोहि ब्रीड़ा।
इंद्रजीत कर आपु बंधायो॥ तब नारद मुनि गरुड़ पठायो
बंधन काटि गयो उरगादा॥ उपजा हृदय प्रचंड बिषादा
प्रभु बंधन समुझत बहु भांती। करत विचार उरग आराती
व्यापक ब्रह्म बिरज बागीसा। माया मोह पार परमीसा॥
सो अवतार सुनेउं जग माहीं। देखेउं सो प्रभाव कछु नाहीं।

दो॰ भव बंधन ते छूटहिं नर जपि जाकर नाम॥
खर्व निशाचर बांधेउ नाग फांस सोइ राम

नाना भांति मनहिं समुझावा। प्रगट न ज्ञान हृदय भ्रम छावा
खेद खिन्न मन तर्क बढ़ाई॥ भयो मोह बस तुमहि नाई
व्याकुल गयउ देव रिषि पाहीं। कहेसि जो संशय निज मन माहीं
सुनि नारदहि लागि अति दाया। सुनु खग प्रबल राम के माया।
जो ज्ञानिन्ह कर चित अपहरई। बरिआई बिमोह मन करई।
जेहि बहु बार नचावा मोही। सोइ व्यापी बिहंगपति तोही
महा मोह उपजा मन तोरे॥ मिटिहि न बेगि कहे खग मोरे
चतुरानन पहं जाहु खगेशा। सोइ करेहु जेहि होइ निदेशा।

दो॰ अस कहि चले देव ऋषि करत राम गुण गान
हरि माया बल बरणत पुनि पुनि परम सुजान

तब खगपति बिरंचि पहं गयेऊ। निज संदेह सुनावत भयऊ

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनि बिरंचि रामहिं सिरनावा। समुझि प्रताप प्रेम अति छावा
मन महं करै बिचार बिधाता।। माया बस कबि कोबिद ज्ञाता
हरि माया कर अमित प्रभावा। बिपुल बार जेहि मोहिं नचावा
अग जगमय जग मम उपराजा। नहिं आचरज मोहिं खगराजा
तब बोले बिधि गिरा सुहावा। जान महेस राम प्रभुतावा
बैनतेय संकर पहं जाहू। नात अनत पूछहु जनि काहू
तहं होइहि तव संसय हानी। चलेउ बिहंग सुनत बिधि बानी
दो० परमातुर बिहंग पति आयउ तब मोपास।
जात रहेउं कुबेर गृह रहेहु उमा कैलास।।
तेहि मम पद सादर सिरनावा। पुनि आपुन संदेह सुनावा।।
सुनि ताकरि बिनती मृदु बानी। प्रेम सहित मैं कहेउं भवानी।
मिलेहु गरुड़ मारग महं मोही। कवन भांति समुझावौं तोही
तब हिं होइ सब संसय भंगा। जब बहु काल करिय सतसंगा
सुनिय तहां हरि कथा सुहाई। नाना भांति मुनिन्ह जो गाई।।
तेहि महं आदि मध्य अवसाना। प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाना
नित हरि कथा होइ जहं भाई। पठवहुं तहां सुनहुं तुम जाई
जाहि सुनत सकल संदेहा। राम चरण होइहि अति नेहा।
दो० बिनु सतसंग न हरि कथा तेहि बिनु मोह न भाग
मोह गये बिनु राम पद होइ न दृढ़ अनुराग।।
मिलहिं न रघुपति बिनु अनुरागा। किये योग जप ज्ञान बिरागा
उत्तर दिसि सुंदर गिरि नीला। तहं रह काग भुसुंडि सुशीला

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

रामभक्ति पथ परम प्रवीना। ज्ञानी गुण गृह बहु काल लीना॥
राम कथा सो कहइ निरंतर। सादर सुनहिं विविध विहंगवर।
जाइ सुनइ तहं हरिगुण भूरी। होइहि मोह जनित दुख दूरी॥
मैं जबते हि सब कहा बुझाई। चलेउ हरषि मम पद सिर नाई।
ताते उमा न मैं समुझावा॥ रघुपति कृपा मरम मैं पावा।
होइहि कीन्ह कबहुं अभिमाना। सो खोवै चह कृपानिधाना।
कछु तेहि ते पुनि मैं नहिं राखा। समुझै खग खगही के भाषा।
प्रभु माया बलवंत भवानी। जाहि न मोह कवन अस ज्ञानी।

दो० ज्ञानी भक्त शिरोमणि त्रिभुवनपति कर ज्ञान
ताहि मोह माया नर पावर करहिं गुमान॥
शिव विरंचि कहं मोहइ को है बपुरा आन॥
अस जिय जानि भजहिं मुनि मायापति भगवान

गयउ गरुड़ जहं बसै भुसुंडी। मति अकुंठ हरि भक्ति अखंडी।
देखि शयल प्रसन्न मन भयेऊ। माया मोह शोच सब गयेऊ
करि तड़ाग मज्जन जल पाना। बट तर गयउ हृदय हरषाना।
बृद्ध बृद्ध बिहंग तहं आये। सुनैं राम के चरित सुहाये॥
कथा आरंभ करै सोइ चाहा। तेही समय गयउ खगनाहा।
आवत देखि सकल खगराजा। हर्षे उ बायस सहित समाजा।
अति आदर खगपति कर कीन्हा। स्वागत पूछि सुआसन दीन्हा
करि पूजा समेत अनुरागा॥ मधुर बचन बोले तब कागा।
दो० नाथ कृतारथ भयउं मैं तव दरशन खगराज॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आयसु देहु सो करउं अब प्रभु आयेउ केहि काज ॥
सदा कृतारथ रूप तुम कह मृदु बचन खगेस ॥
अस्तुति जिन्ह के सारद निज मुख कीन्हि महेस।
सुनहुं तात जेहि कारण आएउं सो सब भयउ दरस तव पाएउं ॥
देखि परम पावन यह आश्रम। गयउ मोह संशय नाना भ्रम
अब श्री राम कथा अति पावनि। सदा सुखद दुख पुंजन सावनि
सादर तात सुना बहु मोही। बार बार प्रणवौं प्रभु तोही ॥
सुनत गरुड़ के गिरा बिनीता। सरल सुप्रेम सुखद सुपुनीता।
भयउ तासु मन परम उछाहू। लाग कहै रघुपति गुण गाहू ॥
प्रथमहिं अति अनुराग भवानी। राम चरित सर कहेसि बखानी।
पुनि नारद कर मोह अपारा। कहेसि बहुरि रावण अवतारा
प्रभु अवतार कथा पुनि गाई। तब शिशु चरित कहेसि मन लाई

दो० बाल चरित कहि बिबिध बिधि मन महं परम उछाह
रघुपति आगमन कहेसि पुनि श्री रघुबीर बिबाह ॥

बहुरि राम अभिषेक प्रसंगा। पुनि नृप बचन राज रस भंगा।
पुर बासिन्ह कर बिरह बिषादा। कहेसि राम लक्ष्मण संबादा।
बिपिन गवन केवट अनुरागा। सुरसरि उतरि निवास प्रयागा
बालमीक प्रभु मिलन बखाना। चित्रकूट जिमि बसे भगवाना।
सचिव आगमन नगर नृप मरणा। भरत आगमन प्रेम बहु बरणा।
करि नृप क्रिया संग पुर बासी। भरत गये जहं प्रभु सुख रासी ॥
पुनि रघुपति बहु बिधि समुझाये। लै पादुका अवध पुर आये ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by ...

भरत रहनि सुरपति सुरकरणी। प्रभु अरु अत्रि भेंट पुनि बरणी
दो० कहि बिराध बध जेहि विधि देह तजी सरभंग ॥
बरणि सुतीक्ष्ण प्रीति पुनि प्रभु अगस्त्य सतसंग
कहि दंडक बन पावन तार्दू ॥ गीध मयत्री पुनि तेहि गार्दू ॥
पुनि प्रभु पंचबटी कर बासा ॥ भंजी सकल मुनिन्ह कै त्रासा ॥
पुनि लक्षमण उपदेश अनूपा ॥ सूर्पनखा जिमि कीन्ह कुरूपा ॥
खर दूषण बध बहुरि बखाना ॥ जिमि सब मरम दशानन जाना ॥
दशकंधर मारीच बत कही ॥ जेहि बिधि भई सो सब तेहि कही
पुनि माया सीता कर हरणा ॥ श्री रघुबीर बिरह कछु बरणा ॥
पुनि प्रभु गीध क्रिया जिमि कीन्ही ॥ बध कबंध सबरी गति दीन्ही
बहुरि बिरह वरणत रघुबीरा ॥ जेहि बिधि गये सरोवर तीरा ॥
दो० प्रभु नारद संबाद कहि मारुत मिलन प्रसंग ॥
पुनि सुग्रीव मिताई बालि प्राण कर भंग ॥*
कपिहि तिलक करि प्रभु कृत शैल प्रवरण बास
बरणन बरषा सरद अरु राम रोष कपि त्रास ॥
जेहि बिधि कपि पति कीश पठाये ॥ सीता खोज सकल दिशि धाये
बिबर प्रवेश कीन्ह जेहि भांती ॥ कपिन बहोरि मिला संपाती ॥
सुनि सब कथा समीर कुमारा ॥ नांघत भयो पयोधि अपारा ॥
लंका कपि प्रवेस जिमि कीन्हा ॥ पुनि सीतहि धीरज जिमि दीन्हा ॥
बन उजारि रावण हिं प्रबोधी ॥ पुर दहि नांघेउ बहुरि पयोधी ॥
आये कपि सब जहं रघुराई ॥ बैदेही की कुशल सुनाई ॥*

समर रावण बध मंदोदरी शोक विभीषण का राजश्री जान की मिलन देवन आगमन पुनः ॥

टी० रा० उ० ४२

जान कपिन मधु छत्तीसगढ़ यो आगमन राम अभिषेक

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सेन समेत यथा रघुबीरा । । उतरे जाइ वारिनिधि तीरा ॥
मिला बिभीषन जेहि बिधि आई । सागर निग्रह कथा सुनाई ॥

दो० सेतु बांधि कपि सेन जिमि उतरी सागर पार ॥
गयउ बसीठी वीरबर जेहि बिधि बालिकुमार ॥
निसिचर कीस लराई । बरनेसि बिबिध प्रकार ॥
कुंभकरन घननाद कर बल पौरुष संहार ॥
निसि चर निकर मरन बिधि नाना । रघुपति रावन समर बखाना ॥
रावन बध मंदोदरि सोका । राज बिभीषन देव अशोका ॥
सीता रघुपति मिलन बहोरी । सुरन्ह कीन्ह अस्तुति कर जोरी ॥
पुनि पुष्पक चढ़ि कपिन समेता । अवध चले प्रभु कृपा निकेता ॥
जेहि बिधि राम नगर निज आये । बायस बिसद चरित सब गाये ॥
कहेसि बहोरि राम अभिषेका । पुर बरनत नृप नीति अनेका ॥
कथा समस्त भुशुंडि बखानी । जो मैं तुम सन कही भवानी ॥
सुनि सब राम कथा खग नाहा । कहत बचन मन परम उछाहा ॥

सो० गयउ मोर संदेह सुनेउं सकल रघुपति चरित ॥
भयउ राम पद नेह तोहि प्रसाद बायस तिलक ॥
मोहि भयउ अति मोह प्रभु बंधन रण महिनिरषि ॥
चिदानंद संदोह राम बिकल कारण कवन ॥
देखि चरित अति नर अनुहारी । भयउ हृदय मम संशय भारी ॥
सोइ भ्रम अब हित कर मैं जाना । कीन्ह अनुग्रह कृपा निधाना ॥
जो अति आतप व्याकुल होई । तरु छाया सुख जानै सोई ॥

पुरबासिनि नृप नी
ति सुत सबसे कथ
कही जीवन की
हौं प्रभुनाथ कौं
बरगरुड़ काक
भुसुंडि को प्रयाति
निज मोह संदेह
गत हि भानंदभं
श्रीरघुवीरचरित
नानाप्रकार तें
वर्णन हात भयं
यह प्रसंग जो

दो. उ. ४३

संदेह न कर
नो दो० ६८ ॥
मोहि दो० ६९ को
दो० ७० दो० ७१
देखि चरित यह
तिमर अज्ञानिन्ह
रघुपति निजता
सकारि ७४ औं
नव गरुड़ मेवि
नय कहे भायासो
ने के प्रसंगते नु
होतो बरषन भ

CC-0. In Public Domain. Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan

जो नहिं होत मोह अति मोहीं। मिलते उं तात कवन बिधि तोहीं
सुनते उं किमि हरि कथा सुहाई। अति विचित्र बहु बिधि तुम गाई
निगमागम पुराण मत एहा।। कहहिं सिद्ध मुनि नहिं संदेहा।
संत बिशुद्ध मिलहिं परि तेही। चितवहिं राम कृपा करि जेही
राम कृपा तव दरशन भयऊ। तन प्रसाद सब संशय गयऊ।

दो० बाणी सुनि बिहंगपति सहित बिनय अनुराग॥
पुलक गात लोचन सजल मन हरषेउ अति काग
श्रोता सुमति सुशील शुचि कथा रसिक हरदास
पाइ उमा अति गोप्य मत सज्जन करहिं प्रकास॥

बोलेउ काग भुशुंडि बहोरी।। न भगनाथ पर प्रीति न थोरी॥
सब बिधि नाथ पूज्य तुम मेरे।। कृपा पात्र रघुनायक केरे॥
तुमहिं न संशय मोह न माया।। मो पर नाथ कीन्ह तुम दाया॥
पठै मोह मिस खगपति तोहीं। रघुपति दीन्ह बड़ाई मोहीं॥
तुम निज मोह कही खग सांई। सो नहिं कछु आश्चर्य गोसांई
नारद भव बिरंचि सनकादी।। जे मुनि नायक आतम बादी
मोह न अंध कीन्ह केहि केही। को जग काम न चावन जेही॥
तृस्ना केहि न कीन्ह बौराहा।। केहि कर हृदय क्रोध नहिं दाहा

दो० ज्ञानी तापस सूर कवि। कोबिद गुण आगार॥
केहि के लोभ बिडंबना कीन्हि न एहि संसार॥
श्री मद बक्र न कीन्ह केहि प्रभुता बधिर न काहि।
मृगलोचनि लोचन सर को अस लागन जाहि॥

सर्व व्यापक नर रूप तें नाट्य कियो यामों मोह को प्रसंग कदाचित नहीं करनो और निर्गुण रूप तें सगुण जानियो कठिन है अरु निर्वाह जन को मोहाभिमान प्रभु नाहीं राखत यातें अपने मोह प्रसंग को कथा कहत हैं॥७४॥

टी० रा० उ० ४४

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गुण कृत सन्निपात नहिं केही। कोउ न मान मद तजउ निबेही।
जोवन ज्वर केहि नहिं बल कावा। ममता केहि कर यशन न सावा।
मत्सर काहि कलंक न लावा। काहि न शोक समीर डोलावा॥
चिंता सांपिनि को नहिं खाया। को जग जाहि न व्यापी माया॥
कीट मनोरथ दारु शरीरा। केहि न लाग घुन को अस धीरा।
सुत वित नारि द्वेष ना नीनी। केहि कै मति इन्ह कृत नमस्नीनी
यह सब माया कर परिवारा। अमित प्रबल को बरणै पारा।
शिव चतुरानन जाहि डराहीं। अपर जीव केहि लेखे माहीं
दो० व्यापि रहेउ संसार महं। माया कपट प्रचंड॥
सेनापति कामादि भट दंभ कपट पाखंड॥
सो दासी रघुबीर कै समुझै मिथ्या सोपि॥
छूटन राम कृपा बिनु नाथ कहौं पद रोपि॥
जो माया सब जगहि न चावा। जासु चरित लखि काहु न पावा।
सोइ प्रभु भ्रू बिलास खग राजा। नाच नटी इव सहित समाजा।
सोइ सच्चिदानंद घन रामा। अज बिज्ञान रूप बल धामा।
व्यापक व्याप्य अखंड अनंता। अखिल अमोघ शक्ति भगवंता।
अगुण अदभ्र गिरा गो तीता। सब दरशी अनबद्य अजीता॥
निर्मल निराकार निर्मोहा। नित्य निरंजन मुख संदोहा।
प्रकृति बार प्रभु सब उर वासी। ब्रह्म निरीह बिरज अबिनाशी
इहां मोह कर कारण नाहीं। रवि सन्मुख तम कबहु कि जाहीं
दो० भक्त हेतु भगवान प्रभु राम धरेउ तनु भूप॥

टी० रा० उ० ४५

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri

किये चरित पावन परम प्राकृत नर अनुरूप
यथा अनेक बेष धरि नृत्य करै नट कोइ
सोइ सोइ भाव दिखावै आपुन होइ न सोई ॥

असि लीला रघुपति उर गारी। दनुज बिमोहन जन सुख कारी।
जे मति मलिन बिषय बस कामी। प्रभु पर मोह धरहिं इमि स्वामी।
नयन दोष जा कहं जब होइ ॥ पीत बरन शशि कहं कहु सोई
जब जेहि दिशि भ्रम होइ खगेशा। सो कह पश्चिम उगेउ दिनेशा
नौका रूढ़ चलत जग देखा। अचल मोह बस आपुहि लेखा
बालक भ्रमहिं न भ्रमहिं गृहादी। कहहिं परस्पर मिथ्या बादी
हरि बिषयक अस मोह बिहंगा। सपनेहु नहिं अज्ञान प्रसंगा
माया बस मति मंद अभागी। हृदय जवनिका बहु बिधि लागी
ते शठ हठ बस संशय करहीं। निज अज्ञान राम पर धरहीं

दो० काम क्रोध मद लोभ रत गृहासक्त दुख रूप
ते किमि जानहिं रघुपतिहिं मूढ़ परे तम कूप
निर्गुण रूप सुलभ अति सगुण न जानहिं कोय
सुगम अगम नाना चरित सुनि मुनि मन भ्रम होय

सुनु खगेश रघुपति प्रभुताई। कहौं यथा मति कथा सुहाई।
जेहि बिधि मोह भयउ भ्रम मोहीं। सोउ सब कथा सुनावौं तोहीं।
राम कृपा भाजन तुम ताता ॥ हरि गुण प्रीति मोहिं सुख दाता
तातें नहिं कछु तुमहिं दुरावौं। परम रहस्य मनोहर गावौं।
सुनहु राम कर सहज सुभाऊ। जन अभिमान न राखहिं काऊ

टी० रा० उ० ४६

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संसृति मूल सूल प्रद नाना। सकल शोक दायक अभिमाना
ताते करहिं कृपा निधि दूरी। सेवक पर ममता अति भूरी
जिमि शिशु तन ब्रण होइ गोसाईं। मातु चिराव कठिन की नाईं।
दो० यद्यपि प्रथम दुरव पावै रोवै बालक अधीर॥
व्याधि नास हित जननी गनति न सो शिशु पीर
तिमि रघुपति निज दास कर हरहिं मान हित लागि
तुलसि दास ऐसे प्रभुहि कस न भजहु भ्रम त्यागि
राम कृपा आपनि जड़ ताई। कहौं खगेश सुनहु मन लाई।
जब जब राम मनुज तनु धरहीं। भक्त हेतु लीला बहु करहीं।
तब तब अवध पुरी मैं जाऊं। बाल चरित बिलोकि हरषाऊं।
जन्म महोत्सव देखौं जाई। बरष पांच तहं रहौं लोभाई।
इष्ट देव मम बालक रामा॥ शोभा बपुष कोटि शत कामा।
निज प्रभु बदन निहारि निहारी। लोचन सफल करौं उर गारी।
लघु बायस बपु धरि हरि संगा। देखौं बाल चरित बहु रंगा।
दो० लरिकाई जहं जहं फिरहिं तहं तहं संग उड़ाउं॥
जूठनि परै अजिर महं सो उठाइ करि खाउं॥
एक बार अति सय सब चरित किये रघुबीर॥
सुमिरत प्रभु लीला सोइ पुलकित भयउ शरीर
कहै भुशुंडि सुनहु खग नायक। राम चरित सेवक सुख दायक।
नृप मंदिर सुंदर सब भांती॥ खचित कनक मणि नाना जाती
बरणि न जाइ रुचिर अंगनाई। जहं खेलहिं नित चारिउ भाई

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri

बाल बिनोद करत रघुराई। बिचरत अजिर जननि सुख दाई
मरकत मृदुल कलेवर स्यामा। अंग अंग प्रति छबि बहु कामा।
नव राजीव अरुण मृदु चरणा। पदज रुचिर नख ससि दुति हरणा
ललित अंक कुलिसादिक चारी। नूपुर चारु मधुर रव कारी ॥
चारु पुरट मनि रचित बनाई। कटि किंकिनि कल मुखर सुहाई
दो० रेखा त्रय सुंदर उदर नाभि रुचिर गंभीर ॥
उर आयत भ्राजत बिबिध बाल बिभूषण चीर
अरुण पाणि नख करज मनोहर। बाहु बिसाल बिभूषण सुंदर
कंध बाल केहरि दर ग्रीवा ॥ चारु चिबुक आनन छबि सींवा
कल बल बचन अधर अरुणारे। दुइ दुइ दसन बिसद बर बारे।
ललित कपोल मनोहर नासा। सकल सुखद ससि कर सम हासा
नील कंज लोचन भव मोचन। भ्राजत भाल तिलक गोरोचन
बिकट भृकुटि सम श्रवण सुहाये। कुंचित कच मेचक छबि छाये
पीत झीन झगुली तन सोही। किल कनि चित बनि भावति मोही
रूप रासि नृप अजिर बिहारी। नाचहिं निज प्रतिबिंब निहारी
मोहिं सन करहिं बिबिध बिधि क्रीडा। बरणत होहि मोहि अति ब्रीडा
किल कत मोहिं धरन जब धावहिं। चलौं भागि तब पूप देखावहिं
दो० आपत निकट हसहिं प्रभु भाजत रुदन कराहिं
जाउं समीप गहन पद फिर फिर चितै पराहिं ॥
प्राकृत सिसु इव लीला देखि भयउ मोहि मोह
कवन चरित्र करत प्रभु चिदानंद संदोह ॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एतना मन आनत खगराया। रघुपति प्रेरित व्यापी माया।
सो माया न दुखद मोहिं काहीं। आन जीव इव संसृति नाहीं
नाथ इहां कछु कारण आना। सुनहु सो सावधान हरिजाना
ज्ञान अखंड एक सीतावर। माया बश्य जीव सचराचर।
जो सब के रह ज्ञान एकरस। ईश्वर जीवहिं भेद कहहु कस
माया बश्य जीव अभिमानी। ईश बश्य माया गुण खानी।
परबस जीव स्वबस भगवंता। जीव अनेक एक श्रीकंता।
मुधा भेद यद्यपि कृत माया। बिनु हरिजाइ न कोटि उपाया
दो० रामचंद्र के भजनु बिनु जो चह पद निर्वान ॥
ज्ञान चंत अपि सो नर पशु बिनु पूंछ बखान ॥
एकापति षोड़श उगहिं तारागण समुदाय ॥
सकल गिरिन्ह दव लाइये बिनु रबि राति न जाय

दी० रा० उ० ४५

ऐसेहि हरि बिनु भजन खगेशा। मिटै न जीवन केर कलेशा ॥
हरि सेवकहि न व्याप अविद्या। प्रभु प्रेरित व्यापै तेहि विद्या।
तातें नाशु न होइ दास कर। भेद भक्ति बाढ़ै बिहंग बर॥
भ्रम तें चकित राम मोहिं देखा। बिहंसे सो सुनि चरित विशेषा
तेहि कौतुक कर मरम न काहू। जाना अनुज न मात पिता हू
जानु पाणि धाये मोहिं धरणा। श्यामल गात अरुणा कर चरणा
तब मैं भाग चलेउं उरगारी। । राम गहन कहं भुजा पसारी
जिमि जिमि दूर उड़ाउं अकासा। तहं भुज हरि देखौं निज पासा
दो० ब्रह्म लोक लगि गयउं मैं चितएउं पाछ उड़ात

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

युग अंगुल करि बीच सब राम भुजहि मोहिं ताल
सप्ताबरण बिभेद करि जहां लगे गति मोरि ॥ ॥
गयउं तहां तहं भुज निरखि ब्याकुल भयउ बहोरि
मूंदेउं नयन त्रसित जब भयऊं। पुनि चितवत कोशल पुर गयऊं
मोहिं बिलोकि राम मुसकाहीं। बिहंसत तुरत गयउं मुख माहीं
उदर मांझ सुन अंडज राया। देखेउं बहु ब्रह्मांड निकाया
अति बिचित्र तहं लोक अनेका। रचना अधिक एक तें एका॥
कोटिन्ह चतुरानन गौरीशा। अगणित उडुगन रवि रजनीशा
अगणित लोकपाल यम काला। अगणित भूधर भूमि बिशाला
सागर सरि सर बिपिन अपारा। नाना भांति सृष्टि बिस्तारा।
सुर मुनि सिद्ध नाग नर किन्नर। चारि प्रकार जीव सचराचर।
दो० जो नहिं देखा नहिं सुना जो मनहूं न समाइ ॥
सो सब अद्भुत देखेउं बरनि कवन बिधि जाइ
एक एक ब्रह्मांड महं रहौं बर्ष शत एक ॥
दूहि बिधि देखत फिरउं मैं अंडक टाह अनेक
लोक लोक प्रति भिन्न बिधाता। भिन्न बिष्णु शिव मनु दिशित्राता
नर गंधर्व भूत बैताला ॥ । किन्नर निशिचर पशु खगब्याला
देव दनुज गण नाना जाती ।। सकल जीव तहं आनहिं भांती
महि सरि सागर सर गिरि नाना। सब प्रपंच तहं आनहिं आना।
अंड कोश प्रति निज निज रूपा। देखेउं जिनस अनेक अनूपा
अवध पुरी प्रति भुवन निहारी ।। सरयू भिन्न भिन्न नर नारी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दशरथ कौशिल्या सुत ताता। विविध रूप भरतादिक भ्राता।
प्रति ब्रह्मांड राम अवतारा। देखेउं बाल बिनोद अपारा।

दो० भिन्न भिन्न मैं दीख सब अति बिचित्र हरिजान॥
अगिणित भवन फिरेउं प्रभु राम न देखा आन
सोइ शिशुपन सोइ शोभा सोइ कृपाल रघुबीर॥
भुवन भुवन देखत फिरौं प्रेरित मोह शरीर॥

भ्रमत फिरत ब्रह्मांड अनेका। बीते मनहुं कल्प शत एका॥
फिरत फिरत निज आश्रम आयउं। तहं पुनि रहि कछु काल गवायउं
निज प्रभु जन्म अवध सुनि पाएउं। निर्भर प्रेम हरषि उठि धाएउं॥
देखेउं जन्म महोत्सव जाई। जेहि विधि प्रथम कहा मैं गाई।
राम उदर देखेउं जग नाना। देखत बनै न जाइ बखाना॥
तहं पुनि देखेउं राम सुजाना। माया पति कृपाल भगवाना॥
करौं बिचार बहोरि बहोरी। मोह कलित व्यापित मति मोरी
उभै घरी मह मैं सब देखा। भयउं श्रमित मन मोह विशेषा

दो० देखि कृपाल बिकल मोहिं बिहंसे तब रघुबीर
बिहंसत ही मुख बाहिर आयउं सुनि अति धीर
सोइ लर काई मोसन करन लगे पुनि राम॥
कोटि भांति सम झायउं मन न लहै विश्राम॥

देख चरित यह सो प्रभुताई। समुझत देह दशा बिसराई॥
धरणि परेउं मुख आव न बाता। त्राहि त्राहि आरत जन त्राता
प्रेमाकुल प्रभु मोहिं बिलोकी। निज माया प्रभुता तब रोकी॥

भक्ति निज सर्वो
पर कही अरु या
तें अष्टांग योग
साधन सवित
र्क सबिचार आ
दि योग के भेद
अरु हरि चरि
त्र रहस्य इत्या
दि स्वतः प्राप्त
होंइगे अरु

टी.
रा. पु.
५०

माया छत व्या
धा नहीं व्यापै
गी अरु संतत
अवतार ब्रह्म
अनादि करजा
नहुंगे पुनः प्र
भु बाल चरित्र
करन लागे पुनः
मैं कछु काल

कर सरोज प्रभु मम सिर धरेऊ। दीन दयाल सकल दुख हरेऊ
कीन्ह राम मोहिं बिगत बिमोहा। सेवक सुखद कृपा संदोहा॥
प्रभुता प्रथम बिचारि बिचारी। मन महं होइ हरष अति भारी
भक्त बछलता प्रभु कै देखी। उपजी मम उर प्रीति बिसेखी
सजल नयन पुलकत कर जोरी। कीन्हेउं बहु बिधि बिनय बहोरी

दो॰ सुनि सप्रेम मम बानी देखि दीन निज दास॥
बचन सुखद गंभीर मृदु बोले रमा निवास॥
काक भुसुंडी मांगु बर अति प्रसन्न मोहिं जानि
अनिमादिक सिधि अपर रिधि मोक्ष सकल सुख खानि
ज्ञान बिबेक बिरति बिज्ञाना। सुर दुर्लभ गुन जे जग जाना॥
आजु देउं सब संसय नाहीं। मांगु जो तोहि भाव मन माहीं
सुनि प्रभु बचन अधिक अनुरागेउं। मन अनुमान करन तब लागेउं
प्रभु कह देन सकल सुख सही॥ भक्ति आपनी देन न कही॥
भक्ति हीन गुन सब सुख कैसे। लवन बिना बहु व्यंजन जैसे।
भजन हीन सुख कवने काजा। अस बिचारि बोलेउं खगराजा
जो प्रभु होइ प्रसन्न बर देहू। मोपर करहु कृपा अरु नेहू।
मन भावत बर मांगौं स्वामी॥ तुम उदार उर अंतरजामी।

दो॰ अबिरल भक्ति उदार तव श्रुति पुरान जो गाव॥
जेहि खोजत जोगीस मुनि प्रभु प्रसाद कोउ पाव
भक्ति कल्पतरु प्रनतहित कृपा सिंधु सुख धाम
सोइ निज भक्ति मोहिं प्रभु देहु दया करि राम

अयोध्यामें रहि के बाल कीन्हे
देखि जागे श्रीपि वेदू मम हैं अरु
प्रभुमें तें अभ होहैं अहनि
जाश्रम भायो तें बेतें माया नहीं
आपत जब तें सत भाव भाखो

दो॰ ग॰ उ॰ ५७

अब अपनो ल
नुभव कहत हैं
भवन तें दुखदू
होत हैं अरु
प्रभु कृपा तें प्र
भुताहू जान प
रत हैं तातें प्रती
त यानें प्रीतिता
तें दृढ़ भक्ति

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एव मस्तु कहि रघु कुल नायक। बोले उ बचन परम सुख दायक
सुनु बायस तैं सहज सयाना। काहेन मांगसि अस बर दाना
सब सुख खानि भक्ति तैं मांगी। नहिं जग कोउ तोहि सम बड भागी
जो मुनि कोटि यतन नहिं लहहीं। जे जप योग अनल तन दहहीं
रीझे उं देखि तोरि चतुराई।। मांगे उ भक्ति मोहिं अति भाई
सुनु बिहंग प्रसाद अब मोरे। तब शुभ गुण बसिहहिं उर तोरे
भक्ति ज्ञान बिज्ञान बिरागा। योग चरित्र रहस्य बिभागा।
जानव तैं सब ही कर भेदा। मम प्रसाद नहिं साधन खेदा।

दो० माया संभव भ्रम सकल अबन व्यापि हहिं तोहिं
जाने सु ब्रह्म अनादि अज अगुण गुणा कर मोहिं
मोहिं भक्ति प्रिय संतत अस बिचारि सुनु काग।।
काय बचन मन मम पद करेसु अचल अनु राग

अब सुनु परम बिमल मम बानी। सत्य सुगम निगमादि बखानी
निज सिद्धांत सुनावौं तोही।। सुनि मन धरु सब तजि भजु मोही
मम माया संभव संसारा।। जीव चराचर बिविध प्रकारा।
सब मम प्रिय सब मम उपजाये। सब तें अधिक मनुज मोहिं भाये
तिन्ह महं द्विज द्विज महं श्रुति धारी। तिन महं निगम धर्म अनुसारी
तिन्ह महं प्रिय बिरक्त मुनि ज्ञानी। ज्ञानिहुं तें अति प्रिय बिज्ञानी
तिन्ह तें पुनि मोहिं प्रिय निज दासा। जेहि गति मोरि न दूसर आसा
पुनि पुनि सत्य कहौं तोहि पाहीं। मोहिं सेवक सम प्रिय कोउ नाहीं
भक्ति हीन बिरंचि किन होई।। सब जीवन सम प्रिय मोहिं सोई

चातें बिश्राम तं-
व संतोष वातें का
म द्वत्यादि बाधा
रहित अरु वि-
ज्ञान तें समता
श्रद्धा धर्म को
मूल द्वत्यादि भ-
जन प्रभाव जो
देखो सो बिना
युक्ति कह्यो प्रभु

टी.
रा. उ.
५३

रूप प्रकाश तें
कोटि रवि तें अ
धिक अरु बल
वायु तें ऐश्व
र्य इंद्र आदि तें
कोटिन्ह गुण
अधिक यथा
मति मुनि वर्णा
न करतु है पारा
वार नहीं कोई
पाद सकतु नाम
भजन तें कछु म-
हिमा कहि सकतु
है अरु भाव वश्य

CC-0. In Public Domain Digitized By Siddhanta eGangotri

भक्ति वंत अति नीचो प्राणी। मोहिं प्राण प्रिय असमम बाणी
दो० श्रुचि सुशील सेवक सुमति प्रिय कहु काहि लाग
श्रुति पुराण कह नीति असि सावधान सुन काग
एक पिता के बिपुल कुमारा। होहिं पृथक गुण शील अचारा
कोउ पंडित कोउ तापस ज्ञाता। कोउ धनवंत शूर कोउ दाता।
कोउ सर्वज्ञ धर्म रत कोई। सब पर पितहिं प्रीति सम होई
कोउ पितु भक्त वचन मन कर्मा। सपनेहु जान न दूसर धर्मा॥
सो सुत प्रिय पितु प्राण समाना। यद्यपि सो सब भांति अयाना।
एहि बिधि जीव चराचर जेते। त्यजि सुर देव नर असुर समेते।
अखिल विश्व यह मोर उपाया। सब पर मोहिं बराबर दाया॥
तिन्ह महं जो परिहर मद माया। भजहिं मोहिं मन वच अरु काया
दो० पुरुष नपुंसक नारि वा जीव चराचर कोइ॥
सर्व भाव भजि कपट तजि मोहिं परम प्रिय सोइ॥
सो० सत्य कहौं खग तोहिं शुचि सेवक मम प्राण प्रिय।
अस विचारि भजु मोहिं परिहरि आस भरोस सब
कबहूं काल न व्यापिहि तोही। सुमरेहु भजेहु निरंतर मोही
प्रभु बचना श्रुत सुनि न अघाऊं। तन पुलकित मन अति हरषाऊं
सो सुख जानै मन अरु काना। नहिं रसना पहिं जाइ बखाना
प्रभु शोभा सुख जानै नयना। कहि किमि सकहिं तिन्हहिं बैना
बहु विधि मोहिं प्रबोधि सुख देई। लगी करण शिशु कौतुक तेई
सजल नयन कछु सुख करि रूखा। चितै मातु लागी अति भूखा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

देख मातु आतुर उठि धाई। कहि मृदु बचन लिये उर लाई
गोद राखि कराव पय पाना। रघुबर चरित ललित कर गाना
सो० जोहि सुख लागि पुरारि असुभ बेष कृत सिवसुख
अवध पुरी नर नारि तेहि सुख महं संतत मगन ॥
सोइ सुख लव लेस जिन्ह बारक सपनेहु लहेउ।
ते नहिं गनहिं खगेस ब्रह्म सुख सज्जन सुमति ॥
मैं पुनि अवध रहेउं कछु काला। देखेउं बालबिनोद रसाला॥
राम प्रसाद भगति बर पायउं। प्रभु पद बंदि निजाश्रम आयउं
तब तें मोहि न ब्यापी माया। जब तें रघुनायक अपनाया॥
यह सब गुप्त चरित मैं गावा॥ हरि माया जिमि मोहिं न चावा
निज अनुभव अब कहौं खगेसा। बिनु हरि भजन न जाहिं कलेसा
राम कृपा बिनु सुनु खगराई। जानि न जाइ राम प्रभुताई॥
जानें बिनु न होइ परतीती॥ बिनु परतीति होइ नहिं प्रीती
प्रीति बिना नहिं भगति दृढ़ाई। जिमि खगपति जल कै चिकनाई
सो० बिनु गुरु होइ कि ज्ञान ज्ञान कि होइ बिराग बिनु॥
गावहिं बेद पुरान सुख कि लहिअ हरि भगति बिनु
कोउ बिश्राम कि पाव तात सहज संतोष बिनु॥
चलै कि जल बिनु नाव कोटि जतन पचि पचि मरिअ
बिनु संतोष न काम न साहीं॥ काम अछत सुख सपनेहुं नाहीं
राम भजन बिनु मिटहिं कि कामा। थल बिहीन तरु कबहुं कि जामा
बिनु बिग्यान कि समता आवै॥ कोउ अवकास कि नभ बिनु पावै

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri

श्रद्धा बिना धर्म नहिं होई। बिनु महि गंध कि पावै कोई।
बिनु तप तेज कि करइ बिस्तारा। जल बिनु रस कि होइ संसारा
सील कि मिल बिनु बुध सेवकाई। जिमि बिनु तेज न रूप गोसाँई
निज सुख बिनु मन होइ कि पीरा। पर कि होइ बिहीन समीरा
कबनि सिद्धि कि बिनु बिस्वासा। बिनु हरि भजन न भव भय नासा
दो० बिनु बिस्वास भगति नहिं तेहि बिनु द्रवहिं न राम
राम कृपा बिनु सपनेहुँ जीव न लह बिश्राम ॥
सो० अस बिचारि मन धीर तजि कुतर्क संसय सकल
भजहु राम रघुबीर करुणा कर सुंदर सुखद ॥

दो० रा० उ० ५६

निज मति सरिस नाथ मैं गाई। प्रभु प्रताप महिमा खग खाई ॥
महिमा नाम रूप गुन गाथा। सकल अमित अनंत रघुनाथा
निज निज मति मुनि हरि गुन गावहिं। निगम सेष सिव पार न पावहिं
तुम्हहिं आदि खग मसक प्रजंता। नभ उड़ाहिं नहिं पावहिं अंता
तिमि रघुपति महिमा अवगाहा। तात कबहुँ कोउ पाव कि थाहा
राम काम सत कोटि सुभग तन। दुर्गा कोटि अमित अरि मर्दन
सक्र कोटि सत सरिस बिलासा। नभ सत कोटि अमित अवकासा
दो० मरुत कोटि सत बिपुल बल रबि सत कोटि प्रकास
ससि सत कोटि सुसीतल समन सकल भव त्रास
काल कोटि सत सरिस अति दुस्तर दुर्ग दुरंत ॥
धूमकेतु सत कोटि सम दुराधर्ष भगवंत ॥
प्रभु अगाध सत कोटि पताला। समन कोटि सत सरिस कराला

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एकरस, ना०वा०सं०पुं० जिसमें ई विकार अर्थात् १ काम २ क्रोध ३ लोभ ४ मोह ५ मद ६ मात्सर्य ए न हों

एकाकिन, ना०वा०सं०पुं० अकेला एकाकी

एकाकी, ना०वा०सं०पुं० अकेला

एतादृश, स०ना० ऐसा

एवमस्तु, अ०वा० ऐसा हो

ऐ

ऐक, ना०वा०सं०पुं० अटकल

ओ

ओघ, ना०वा०सं०पुं० समूह

ओदन, ना०वा०भा०पुं० चावल, पकाहुआ भात

ओधे, क्रि०वि० लगे

ओर, अव्यय, तर्फ, अन्त

ओरे, ना०वा०व०व०भा०पुं० ओरा के बहुवचन ओने

अं

अङ्क, ना०वा०सं०पुं० अक्षर, गोदी, निदान, गिनती

अङ्कित, क०वा०सं०पुं० चिह्नयुक्त

अंग, ना०वा०सं०पुं० शरीर, प्रिय, हस्त आदि राज्यके ७ अंग होते हैं १ स्वामी २ दीवान ३ मित्र ४ कोश ५ राज्य ६ किलअ ७ फ़ौज

अङ्गरी, ना०वा०भा०पुं० बखतर

अङ्गवन, क्रि०वा० सहना

अंचल, ना०वा०भा०पुं० आंचर

अम्ब, ना०वा०सं०स्त्री० माता, अम्बा, महतारी

अम्बक, ना०वा०पुं०सं० आंख

अम्बर, ना०वा०सं०नपुं० वस्त्र, कपड़ा

अम्बरीस, ना०वा०भा०पुं० अम्बरीष एक राजा का नाम है

अम्बु, ना०वा०सं०नपुं० जल, पानी

अम्बुधर, ना०वा०सं०पुं० मेघ, बादर

अम्बुधि, ना०वा०सं०पुं० समुद्र

अम्बपति, ना०वा०सं०पुं० वरुन, वरुण

अंभोज, ना०वा०सं०पुं० कमल

अंजि, क्रि०वि० अंजन लगा के, आंजकरके

अंगुलि, ना०वा०सं०नपुं० अंगुरी

अंड, ना०वा०सं०पुं० ब्रह्माण्ड

अन्तर, अव्यय, भीतर, भेर

अन्तरयामी, वि०सं०पुं० मनका जाननेवाला

अन्तरध्यान, क्रि०वा० छिपना

अन्तरहित, क्रि०वा० छिपे, गुप्त

अन्तावरि, ना०वा०भा०स्त्री० अन्तड़ी, आंत

अम्बा, ना०वा०भा०पुं० आंवा

क

कइकई, भा०वा०स्त्री०भा० कैकेई

कच, ना०वा०सं०पुं० बाल, केश

कच्छप, ना०वा० सं०पुं० कछुआ

कज्जलगिरि, ना०वा०सं०पुं० अंजनपर्वत

करक, ना०वा०सं०पुं० सेना, कड़ा

कराह, ना०वा०भा०पुं० कड़ाह

करि, ना०वा०सं०स्त्री० कमर

कटिसूत्र, ना०वा०सं०नपुं० करधनी, तागड़ी

कटु, ना०वा०सं०नपुं० कड़ुआ

कड़िहार, ना०वा०सं०पुं० कर्णधार, मलाह

कत, स० काहे, किसलिये

कति, स०नपुं० कितना

CC-0. In Public Domain Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

कथनीय, क०वा०सं०पुं० कहने योग्य
कदली, ना०धा०सं० स्त्री० केला, केरा
कदम्ब, ना०वा०सं०पुं० वृक्ष विशेष, सरह
कद्रू, ना०वा०सं०स्त्री० सांपों की माता
कनक कशिपु, ना०वा०सं०पुं० हिरण्यकशिपु एकदैत्य का नाम है
कनकलोचन, ना०वा०सं०पुं० हिरण्याक्ष
कनी, ना०वा०भा०स्त्री० कणिका
कपटभू, ना०वा०सं०स्त्री० माया भूमि
कपाट, ना०वा०सं०पुं० किवाड़
कपाल, ना०वा०सं०पुं० खोपरी
कपि, ना०वा०सं०पुं० वानर,
कपिकुंजर, ना०वा०सं०पुं० कपिश्रेष्ठ
कपिन्द्र, ना०वा०सं०पुं० कपीन्द्र, वानरों का राजा
कपिल, ना०वा०सं०पुं० एक मुनि का नाम है सांख्यशास्त्र का प्रवर्तक
कपोत, ना०वा०सं०पुं० कबूतर
कपोल, ना०वा०सं०पुं० गाल
कबाह्, ना०वा०भा०पुं० हुनर, गुण
कबुल, ना०वा०भा०पुं० कबूल, करायी पक्षी विशेष
कमठ, ना०वा०सं०पुं० कछुआ
कमनीय, ना०वा०सं०नपुं० सुन्दर
कमला, ना०वा०सं०स्त्री० लक्ष्मी जी
कर्म, ना०वा०सं०नपुं० काम, कार्य्य
कर, ना०वा०सं०पुं० किरण, हाथ, सूंड़, महसूल
करक, ना०वा०भा०पुं० पीड़ा, तकलीफ
करज, ना०वा०सं०पुं० अंगुली
करतल, ना०वा०सं०पुं० हाथपर
करतारी, ना०वा०भा०स्त्री० हाथ की ताली
करण, ना०वा०सं०नपुं० कान, इन्द्रिय, साधन कारण, करना
करनीया, कृ०सं० स्त्री० करने के योग्य
करबरे, ना०वा०भा० विपत
करष, ना०वा०भा०स्त्री० घृणा, वैर, रिस
करषि, क्रि०वि०भा० खेंचकरके, करषना, कर्षण
करार, ना०वा०भा०पुं० करार, भयंकर, किनारा, तट
करल, ना०वा०सं०पुं० कठोर, भयंकर
करि, ना०वा०सं०पुं० हाथी
करिणी, ना०वा०सं०स्त्री० हथिनी
करील, ना०वा०भा०पुं० वृक्ष विशेष जिसमें पत्ता नहीं
करुई, ना०धा०भा०स्त्री० कटु, कड़ुवाई
करुणा, ना०वा०सं०पुं० दया, करुणा
करुणा करनि, वि०भा०स्त्री० गुणानुवाद कहकर विलाप करनी
कर्तव्य, वि०सं०नपुं० करने योग्य
कर्णधार, ना०वा०सं०पुं० मल्लाह
कल, ना०वा०सं०पुं० सुन्दर, मीठा
कलकूंज, ना०वा०सं०पुं० कोइल
कल्प, ना०वा०सं०पुं० कल्प, ब्रह्मा जी का दिन, समर्थ, मनोर्थ, समर्थ, कल्पना, रचना
कल्पतरु, ना०वा०सं०पुं० कल्पवृक्ष
कल्पना, ना०वा०सं०स्त्री० तर्क, लालसा कष्ट, रचना
कलपि, क्रि०वि० झूठ करके बनालेना, झूठ बोलना
कल्पित, ना०वा०सं०पुं० झूठ तर्क, मानलिया

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कलबल, ना०वा०सं०पुं० स्पष्ट नहीं
कलभ, ना०वा०सं०पुं० हाथी का बच्चा
कलमले, वि०चंचल भये, चले हिले, कल मलाये
कलश, ना०वा०सं०पुं० कलस, घड़ा
कलहंस, ना०वा०सं०पुं० राज हंस
कला, ना०वा०सं०स्त्री० जल, चलना, १४ अंश भाग
कलाप, ना०वा०सं०पुं० समूह
कलि, ना०वा०सं०पुं० कलियुग, बखेड़ा कलह, बहेड़े का वृक्ष
कलिकवि, ना०वा०सं०पुं० कलियुग के कवि कालिदास आदि
कलित, वि०पहिरा, पहिना, बनाया सुंदर रचित
कलिमलहारि, ना०वा०भा०स्त्री० कर्मनाशा
कलिल, ना०वा०सं०नपुं० कीचड़, पंक
कलुष, ना०वा०सं०नपुं० पाप
कलेवर, ना०वा०सं०नपुं० शरीर, देह
कलेश, ना०वा०भा०पुं० क्लेश, दुःख, चन्द्रमा
कलंक, ना०वा०सं०पुं० निशान, चिन्ह, सिद्ध पारा
कल्लोलिनी, ना०वा०सं०स्त्री० लहराई, नदी
कवल, ना०वा०सं०नपुं० ग्रास, कवर
कवि, ना०वा०सं०पुं० काव्यकर्ता
कविता, ना०वा०भा०पुं० काव्य, कविता
कवन्ध, ना०वा०सं०पुं० दैत्य का नाम है, धड़
कश्यप, ना०वा०सं०पुं० ऋषि का नाम है
कसे, क्रि०वा०भा० कसना, कसौटी पर रगड़े
कहानी, ना०वा०भा०स्त्री० कथा

काऊ, कबहूं, कभी
काक, ना०वा०सं०पुं० कौवा, काक
काकपक्ष, ना०वा०भा०पुं० पट्टे
काकु, व्यङ्ग वचन
कांखासोती, ना०वा०भा०स्त्री० कंधों से कमर तक
काछे, वि०बनाये
कानन, ना०वा०सं०नपुं० वन
कानी, ना०वा०भा०स्त्री० संकोच, मर्यादा
काम, ना०वा०सं०भा०पुं० कामना, कामदेव विषय, धन्धा, सुन्दर
कामद, वि०वा०पुं० कामना देने वाला, मनोरथ देने वाला
कामदुगाई, वि०ना०भा०स्त्री० कामधेनु
कामना, ना०वा०सं०स्त्री० मनोरथ, चाह, वासना, इच्छा
कामरूप, ना०वा०सं०पुं० इच्छाचारी
कार्मुक, ना०वा०सं०पुं० धनुष
कारक, ना०वा०सं०पुं० करने वाला
कारज, ना०वा०भा०पुं० कार्य, १पृथ्वी २जल ३तेज ४वायु ५आकाश ५
कारन, ना०वा०भा०पुं० प्रयोजन, पिता, मित्र, माया, प्रकृत
कारनकरन, ना०वा०भा०पुं० महत्तादि के कारण
कारी, ना०गु०वा०भा०स्त्री० काली
काल, ना०वा०सं०पुं० समय, मृत्यु, नेम, मीच, यमराज, काला, श्याम
कालकूट, ना०वा०सं०पुं० विष, जहर
कालरात्रि, ना०वा०भा०स्त्री० प्रलय की रात

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कालिका, ना०वा०सं०स्त्री०देवी, भगवती
काली, ना०वा०सं०स्त्री०श्याम
कांजी, ना०वा०भा०स्त्री०सिरका, राईका खट्टापानी, मट्ठा
कांधी, क्रि०वि०अङ्गीकार करके
किन, ना०वा०भा०पुं०घाव, क्यों नहीं
किन्नर, ना०वा०सं०पुं०देव जाति विशेष
किमपि, स०ना०अ० कुछभी
किम्वा, स०ना०अ० अथवा
किरातिन, ना०वा०भा०स्त्री०भीलनी
किरिच, ना०वा०भा०पुं०टुकड़ा
किरीट, ना०वा०सं०पुं०मुकुट
किलकिला, ना०वा०सं०पुं० वानरों की चिल्लाहट
किसलय, ना०वा०भा०पुं० नया पत्ता, किशलय
किस, स०ना० किसको
किसोर, ना०वा०भा०पुं०किशोर, लड़का १६ वर्ष की अवस्था वाला
किङ्कर, ना०वा०सं०पुं०नौकर, दास
किङ्करी, ना०वा०सं०स्त्री०दासी, टहलनी
किङ्किनी, ना०वा०भा०स्त्री०क्षुद्रघंटिका करधनी, तागड़ी
किंसुक, ना०वा०भा०पुं०किंसुक, पलाश, ढाक फूल
कीर्ती, ना०वा०भा०स्त्री०कीर्ति, यश
कीर, ना०वा०भा०पुं० तोता, सूआ
कीर्ति, ना०वा०भा०पुं०कीर्ति, यश, जस
कील, ना०वा०भा०पुं० खरिका
कु, ना०वा०सं०स्त्री०भूमि, पृथ्वी, नीच, बुरा
कुचाह, ना०वा०भा०स्त्री० बुरा समाचार
कुण्डिल, वि०क्रि०भा० घुसरारे, टेढ़ा
कुञ्जर, ना०वा०सं०पुं० हाथी
कुजोगी, ना०वा०भा०पुं० कुयोगी, विषयी
कुटीर, ना०वा०भा०स्त्री० कुटी
कुठारी, ना०सं०स्त्री० टांगी
कुठाहर, ना०वा०भा०पुं० नीच जगह
कुतर्क, पु०वा०सं०पुं० नीच विचार
कुदृष्टि, पु०वा०सं०स्त्री०पाप दृष्टि
कुधातु, ना०सं०वा०पुं० लोहा
कुपथ, ना०वा०सं०नपुं०बुरीराह, कुमार्ग
कुपथ्य, ना०वा०सं०नपुं०बद्पर हेज़ी
कुबलय, ना०वा०सं०नपुं०कमल
कुविहग, ना०वा०भा०पुं० बाज, पक्षी
कुम्भज, वि०ना०सं०पुं० ऋषि विशेष, अगास्त्य
कुमार, ना०वा०सं०पुं० क्वारा बालक, विन ब्याहा
कुमारी, ना०वा०सं०स्त्री०कन्या, विनब्याही
कुमुद, वि०ना०सं०पुं० १कोई, २ बानर विशेष
कुमुदबन्धु, ना०वा०सं०पुं०कमलना०वा० चन्द्रमा
कुरी, ना०वा०सं०पुं० पक्षी, विशेष, कूंज
कुराई, ना०वा०भा०स्त्री०पांव फसने का बिल
कुरी, ना०वा०भा०पुं०सब जाति
कुरुचि, ना०वा०सं०स्त्री०नीच वासना
कुरंग, ना०वा०सं०पुं० हरिन, मृग
कुल, ना०वा०सं०नपुं०वंश, समूह, घर
कुलह, ना०वा०भा०स्त्री०टोपी, कुलाह

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कुलि, गु०भा०पुं० सब
कुलिस, ना०वा०भा०नपुं०कुलिश १वज्र २हीरा ३
कुशली, वि०सं०पुं० सुखी
कुशकेतु, वि०ना०पुं०जनकके भाईका नाम
कुसल, गु०वा०भा०पुं०कुशल, चतुर, कल्याण
कुसमय, गु०वा०भा०पुं०अनवसर, बुरासमय
कुसुमित, वि०सं०कृ०प्रफुल्लित, फूलाहुआ
कुम्हड़, ना०वा०भा०पुं० कोहड़ा फल
कुसुम, ना०वा०सं०पुं० केसरि, रोरी
कुभ, ना०वा०सं०नपुं०कुम्भ, घट, हाथी का माथा
कुंत, ना०वा०सं०पुं० भाला
कुंवर, ना०वा०भा०पुं० राजकुमार
कूंजहिं, क्रि०वा० कूजतेहैं, बोलतेहैं, कूजना
कूट, ना०वा०भा०पुं०१पहाड़ की चोटी २ निहाई
कूरी, गु०वा०सं०स्त्री० व्यंग वचन
कूप, ना०वा०सं०पुं० कूआं
कूर, ना०वा०सं०पुं०१कठोर २कपटी ३देड़ा
कूल, ना०वा०सं०नपुं० तट, किनारा
कूड़ि, ना०वा०भा०स्त्री० लोहे की टोपी
कृत, क०वा० किया, कर्म, करतूत
कृतकृत्य, वि०सं०पुं० कृतार्थ
कृतान्त, ना०वा०सं०पुं० यमराज
कृतनिन्दक, वि०सं०पुं० कृतघ्न
कृतज्ञ, वि०सं०पुं० उपकार माननेवाला
कृपानि, ना०वा०भा०पुं०कृपाण, तरवार
कृपिन, ना०वा०भा० पुं० कृपिण, सूम
कृमि, ना०वा०सं०पुं०कीड़ा, किरोना
कृस, ना०वा०भा०पुं०कृश, दुर्बल, इकहर
कृसानु, ना०वा०भा०पुं०कृशानु, आग, अग्नि
कृषी, ना०वा०सं०स्त्री० खेती
क्रियन्ह, १व्यवहार, क्रियाशब्द, कायकृत्य २यज्ञादि ३प्रीति ४भक्ति
कोकी, ना०वा०भा०पुं० मोर
केतु, ना०वा०सं०पुं०१बीचग्रह २ध्वजा
केर, का, प्र०सम्बन्धकारक का चिन्ह
केलि, ना०वा०सं०स्त्री० क्रीड़ा, खेल
केवट, ना०वा०भा०पुं० कैवर्त, मल्लाह
केवल, ना०वा०पुं०सं० सुख्य, एकही, अकेला
केसरी, ना०वा०भा०पुं०केशरी, १सिंह २हनुमानके पिता ३
केहरी, ना०वा०भा०पुं० केशरी, सिंह
कैकेय, ना०वा०सं०पुं०१राजा २देश विशेष
कौस्तभ, ना०वा०सं०पुं०रत्न विशेष
कौन, अ०सं० स्त्रि० कोई
कैवल्य, ना०वा०सं०पुं० मोक्ष, मुक्ति
कोका, ना०वा०सं०पुं० १चक्रवाई २चकवा
कोछे, ना०वा०भा०स्त्री० गोदी
कोदर, ना०वा०भा०पुं० खोदरा
कोरि, सं०वा०१करोड़ २पक्ष ३धनुषका छोर
कोदंड, ना०वा०सं०पुं०सं०स्त्री० धनुष
कोद्रव, ना०वा०पुं०भा०कोदो, अन्न विशेष
कोपर, ना०वा०भा०पुं० पात्र विशेष
कोधी, वि०सं०पुं०१कोई २क्रोधी
कोविद, ना०वा०सं०पुं० पंडित

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कोये, ना०वा०भा०पुं० आंख का सम्पूर्ण श्वेत ढेला
कोरि, क्रि०वा० खोद करके, कोरना, खुरचना
कोरी, सं०वा०भा०स्त्री० कड़ोड़
कोल, ना०वा०सं०पुं० शूकर, सुअर
कोस, ना०वा०भा०पुं० १ कमल का मध्य २ घर ३ खजाना
कोसल, ना०वा०भा०स्त्री० एकदेश का नाम
कोसला, ना०वा०सं०स्त्री० अयोध्या
कोशलपुरी, ना०वा०सं०स्त्री० अयोध्या
कोह, ना०वा०प्रा०पुं० क्रोध
कोहवर, ना०वा०पुं०भा० कौतुक, घर-व्याह का
कोहाव, गु०वा०पुं०भा० रूठना, कोहाना
कोही, वि०प्रा०पुं० क्रोधी
कौ, अ०वा०सं०स्त्री० पृथ्वी में
कौतुक, गु०वा०सं०पुं० १ तमाशा २ अनाथास
कौतूहल, गु०वा०सं०नपुं० कौतुक
कौमुदी, ना०वा०सं०स्त्री० चांदनी
कौल, वि०सं०पुं० वाममार्गी
कौशिक, वि०ना०सं०पुं० विश्वामित्र
कंक, ना०वा०सं०पुं० कुही
कंकन, ना०वा०भा०पुं० कड़ा, ककना
कंचन, ना०वा०सं०नपुं० सोना, सुवर्ण
कंज, ना०वा०सं०नपुं० कमल
कंटक, ना०वा०सं०पुं० १ कांटा २ शत्रु
कंठ, भा०वा०सं०स्त्री० खजुली
कंत, ना०वा०सं०पुं० पति
कंद १ कमल आदि की जड़ २ मेघ ३ समूह
कन्दरा, ना०वा०सं०स्त्री० गुफा
कंदुक, ना०वा०सं०नपुं० गेंद
कंधरा, ना०वा०सं०पुं० गला
कन्ध, ना०वा०सं०पुं० १ स्कंध कांधा २ मोती डार
कंप, ना०वा०सं०पुं० कांपना
कम्पनि, ना०वा०सं०पुं० समुद्र
कंवल, ना०वा०सं०पुं० कमल, पद्मबीज
कंबु, ना०वा०सं०पुं० शंख

ख

खग, ना०वा०सं०पुं० पक्षी, चिड़िया
खग्ग, ना०वा०प्रा०पुं० खड्ग, तरवार
खगकेतु, ना०वा०पुं०सं० गरुड़
खगहा, ना०वा०भा०पुं० गैंड़ा
खगेश, ना०वा०भा०पुं० खगेश, गरुड़
खचित, वि०भा०पुं० जड़ाऊ
खची, वि०भा०स्त्री० जड़ाऊ
खटाहि, ना०वा०पुं०भा० थिर रहना
खद्योत, ना०वा०सं०पुं० जुगनू
खनि, क्रि०वि० खोद करके
खप्पर, ना०वा०भा०पुं० खपर, खोपड़ी
खर्पर, ना०वा० १ पीठ २ शिर ३ खोपड़ी
खर्व, गु०वा०सं०पुं० १ छोटा २ तुच्छ
खभारू, गु०वा०भा०पुं० क्षोभ
खर, ना०वा०सं०पुं० १ राक्षस, दूषण का भाई २ तीक्ष्ण ३ गदहा ४ वृण
खरभर, गु०वा०भा०पुं० क्षोभ
खरी, ना०वा०सं०पुं० गदही
खरो, ना०वा०भा०पुं० व्रण
खल, ना०वा०सं०पुं० दुष्ट, खरतल
खलु, अ०निश्चय करके

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

खस, ना०वा०भा०पुं० जाति विशेष
खसी, वि०भा०स्त्री०गिरी
खसेउ, वि०भा०पुं० गिरा, खसना
खांगो, वि०वा०पुं०ना० कमती
खानिक, वि०भा०पुं०जो खानि में हुआ
खानी, ना०वा०भा०स्त्री०खानि, घर
खाले, ना०वा०भा०पुं०नीचे गड्ढा
खिन्न, वि०सं०कृ०दुखिया
खीन, वि०भा०पुं० क्षीण, दूबर, (दुर्बल)
खीस, गु०वा०पुं०भा० नाश
खेत, ना०वा०भा०पुं० (क्षेत्र) समर भूमि
अन्न बोने का स्थान
खेद, ना०वा०सं०पुं० दुःख
खेरे, ना०वा०भा०पुं०पुरा, गांव
खेलवार, वि०भा० खेलाड़ी
खोड़स, सं०वा०पुं०भा० (षोड़श) सोलह
खोरी, ना०वा०पुं०भा०१दोष २गली ३चन्द्रमा की खोरी
खोरे, वि०भा०पुं० लँगड़े
खोह, ना०वा०भा०स्त्री०गुफा
खंजन, ना०वा०सं०नपुं० खंडरिच
खंड, ना०वा०सं०नपुं० टुकड़ा

ग

गगन, ना०वा०सं०नपुं० आकाश
गज, भा०वा०सं०पुं० हाथी
गजानन, ना०वा०सं०पुं० गणेश जी
गत, कृ०वि०१गया २प्राप्त ३स्नात ४निकृष्ट ५बिना ६अप्रिय
गति, ना०वा०सं०स्त्री०१मुक्ति २रचना ३चाल ४ज्ञान ५स्वरूप ६दशा ७आधार ८उपाय
गध, ना०वा०भा०पुं० दान
गद्गद, ना०वा०सं०पुं० आनन्द युक्त
गई, ना०वा०स्त्री०भा० धूरि
गन, ना०वा०भा०पुं०१गण, शिवजी के प्रथम अनुचर २विघ्न ३समूह
गनराऊ, ना०वा०भा०पुं० गणेश जी
गनराज, ना०वा०भी०पुं० गणेश जी
गनि, क्रि०वि०१गनकरके २विचार के
गनिक, ना०वा०भा०पुं० गणिक, ज्योतिषी
गनिका, ना०वा०भा०स्त्री०वेश्या, रण्डी
गनी, ना०वा०१धनी २विचार ३गिनती
गने, वि०ना०पुं० गिनती के
गनेस, ना०वा०१गणेश २आलस ३रस
गर्वित, वि०सं०पुं० अभिमानी, मान युक्त
गभुवारे, ना०वा०भा०पुं० गर्भवाल, बालक के जनने वाल
गमु, क्रि०वा०गमन, जाना
गम्य, ना०वा०नपुं०सं० जानने के योग्य
गय, ना०वा०सं०पुं० हाथी
गयंद, ना०वा०सं०पुं० हाथी
गरल, ना०वा०सं०नपुं० विष
गरुता, भा०वा०गुरुता, गरुआई, भार
गरह, ना०वा०भा०पुं०१ग्रह २गठिया, वात
गलित, वि०सं०कृ० गलगया, नाश
गवरि, क्रि०वि० गंव से
गवासा, ना०वा०भा० कसार
गहगहे, ना०वा०भा० बजे, नक्कारे का शब्द
गहन, ना०वा०१विकट २वन ३पकड़ना
गहवर, क्रि०वि०१सघन, शोच के साथ
गहरु, गु०वा०भा०स्त्री० देरी, विलंब

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गारगोठ, ना०वा०भा०स्त्री० गोशाला
गर्जन, वि०भा०पुं० नाश करने वाला
गाड़, ना०वा०पुं०भा० घास, विशेष, खस का भेद
गाढ़ा, ना०वा०भा०पुं० कठिन, दृढ़
गात, ना०वा०सं०नपुं० गात्र, शरीर, अंग
गाथा, ना०वा०सं०स्त्री० कथा
गाधे, वि०पुं०भा० गूंधे
गादर, ना०वा०भा०पुं० चमगिदड़
गाधि, ना०वा०सं०पुं० एक राजा का नाम
गाना, क्रि०वा० कथन, कहना
गामी, वि०सं०पुं० चलने वाला
गारुड़ी, वि०सं०पुं० विषहरने वाला
गाल, ना०वा०भा० वतूनी
गालव, ना०वा०पुं०सं० एक ऋषि का नाम
गाल बजाई, क्रि०वि० बकवाद करके
गाहा, ना०वा०प्रा०स्त्री० कथा
गिरा, ना०वा०सं०स्त्री० १सरस्वती २कविताई ३वचन
गिरि, ना०वा०सं०पुं० पहाड़
गिरिजा, ना०वा०सं०स्त्री० पार्वती
गिरिनाथ, ना०वा०सं०पुं० महादेव
गिरिराज, ना०वा०सं०पुं० सुमेरपर्वत
गिरीश, ना०वा०सं०पुं० १महादेव २हिमाचल
गिरिन्द्र, ना०वा०भा०पुं० सुमेरुपर्वत
गिलई, वि०भा०पुं० लील जावे
गीध, ना०वा०भा०पुं० जटायु
गुंजा, ना०वा०सं०स्त्री० घुंघची
गुदरत, क्रि०वि० जनावत
गुन, ना०वा०भा०पुं० गुण १ज्ञान ज्ञादे२ डोरा, रस्सी ३ सत्व, रज, तम
गुनहु, ना०वा०१विचारो २अपराध, गुनाह
गुनज्ञ, वि०भा०पुं० गुण का जानवे वाला
गुनि, वि०भा०पुं० १गुणी २विचार करके
गुनिय, क्रि०वा० विचारना चाहिये
गुरु, ना०वा०सं०पुं० १उपदेश करने वाला २बृहस्पति ३बड़ा ४भारी
गुरुजन, ना०वा०सं०पुं० बड़े लोग
गुसाईं, ना०वा०भा०पुं० स्वामी, संन्यासी
गुहा, ना०वा०भा०स्त्री० १गुफा २निपात
गुहारी, वि०भा०पुं० सहाय, सहायक
गूढ़, वि०स०कृ०पुं० गुप्त, छिपा
गृहादि, ना०वा०सं०पुं० गृह आदि
गृही, ना०वा०सं०पुं० गृहस्थ
गृहीत, वि०सं०पुं० पकड़ा
गो, क्रि०वा० गाये
गेह, ना०वा०सं०पुं० घर
गेहू, ना०वा०भा०पुं० गोरू
गो, ना०वा०सं०पुं० १गाय २बैल, पृथ्वी ३इन्द्रिय ४ग्राम ५
गोई, वि०भा०स्त्री० छिपी, छिपाया
गोए, वि०पुं० छिपाए
गोचर, वि०भा०नपुं० विषय, जो इन्द्रिय से जाना जाय
गोदावरी, ना०वा०सं०स्त्री० नदी विशेष
गोपद, ना०वा०सं०नपुं० गाय का खुर
गोप्य, वि०सं०कृ० छिपाने के योग्य
गोलक, ना०वा०सं०पुं० चक्षुइन्द्रियकास्थान
गोविन्द, ना०वा०सं०पुं० वैष्णव
गौतम, ना०वा०सं०पुं० ऋषि विशेष
गौतमनारी, ना०वा०सं०स्त्री० अहिल्या
गौन, क्रि०वा० गमन, जाना

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अ

अकथ, गु०वा०पुं०अकथ्य कहनेके योग्य नहीं

अकथनीय, गु०वा०पुं०सं० तथा

अकनि, क्रि०वि०भा० सुन करके

अकरन, वि०पुं०भा० विना कारण

अकल, वि०पुं०सं०हाथपांवरहितऔरदोष

अकसर, ना०वा०भा० केवल

अकाजेउ, क्रि०वा०भा० अकाजकिया, मरना

अकाम, वि०पुं०सं० कामनावा इच्छा रहित

अकाल, अ०वा०पुं०सं० कुसमय, विना ऋतुके

अकिञ्चन, वि०पुं०सं०दरिद्री, जिसकेपास कुछनहो

अकुल, वि०पुं०सं० कुल हीन

अकुलाना, क्रि०वा० घबड़ाना

अकंटक, वि०पुं०सं० विना शत्रुका, बेखटके

अकुंठ, वि०पुं०सं० नाशरहित तीक्ष्ण, तेज

अक्षय, वि०पुं०भा० अक्षय, जिस का नाश नहो

अखंड, वि०पुं०सं० जिसके खंड न हों, सम्पूर्ण

अखारा, अ०वा०भा० नाच, लड़ने और साधुओंके रहने का स्थान

अखिल, गु०वा०नपुं०सं० सब

अग, ना०वा०स०पुं०पर्वत, अचल

अगनित, प्र०वा०भा० बेशुमार, बेप्रमाण

अगम, वि०भा०पुं० जहां कठिन से जासके. ना०वा०सं०पुं० शास्त्र

अगरु, भा०वा०सं०पुं०एकप्रकार की सुगन्धितवस्तु

अग, ना०वा०सं० आगे, मुख

अगहुड़, भा० आगे

अगाध, ना०वा०सं०नपुं० अथाह

अगम, ना०वा०सं०पुं० निर्गुणब्रह्म,भगवान

अगोचर, वि०सं०पुं० जो इन्द्री और अन्तःकरणादि से न जाना जावे

अघ, ना०वा०सं०पुं० पाप, दुःख

अघटित, वि०सं० कृदन्त०अयोग्यजोनहोसके

अघात, भा०वा०सं०चोट, निशानेकास्थान

अघानी, वि०सं०पुं० जिसके घावनलगा हो, भा०पुं०तृप्त हुआ, अघाय तथा

अचगरी, भा०वा०प्रा० दुष्टता, बदी

अचल, ना०वा०सं०पुं० पर्वत, स्थिर, थिर

अचञ्चल, ना०वा०सं०पुं० थिर

अछत, वि०भा० जो करा न हो और पूजामें अछत जो चढ़ाये जाते हैं वो नाम है

अज, ना०वा०सं०पुं० जो जन्मे नहीं, ब्रह्मा, बकरा, ब्रह्म

अज्ञ, ना०वा०स०पुं० मूर्ख, जो कुछ न जाने

अज्ञात, वि०सं०पुं० जिस को न जाना हो

अज्ञता, भा०वा०सं०स्त्री० मूर्खपन

अजर, वि०सं०पुं० जरारहित, बुढापा जिसको न हो, ब्रह्माजी और देवताओं के नाम भी हैं

अजामिल, ना०वा०पुं० एक ब्राह्मणका नाम है वो पापी था पर नारायण के कहने से तर

अजित, वि०सं०पुं० जो न जीता जावे

अजिन, ना०वा०सं०नपुं० मृगचर्म, चमड़ा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अजिर, ना०वा०सं०पुं० आंगन
अजे, भा०पुं० जो जीतने योग्य नहो
अटन, ना० पुं०भा० अटारी, घूमना
अट्टहास, ना०वा०पुं०सं० खिलखिला के हंसना
अतनु, ना०वा०सं०पुं० जो विनाशरीर के हो, कामदेवको भी कहते हैं
अतर्क्य, वि०सं०पुं० जो तर्क के योग नहो
अतिथि, ना०वा०सं० अभ्यागत, पाहुन
अतिशय, ना०वा०भा०पुं० बहुत बड़ा, अतिशय
अतीत, ना०वा०सं०पुं० रहित, बीता
अतुलित, वि०सं०पुं० जो तोला नहीं गया, बड़े
अत्र, अव्यय यहाँ, इसमें
अत्रि प्रिया, ना०वा०सं०स्त्री० अनुसूया जी, अत्रि ऋषि की स्त्री का नाम
अथाई, भा०पुं० बैठक
अदभ्र, वि०सं०नपुं० बहुत पूर्ण
आश्चर्यित, सं०पुं० अपूर्व
अदिति, ना०वा०सं०स्त्री० देवताओं की माता
अदेय, भा०वा०सं०नपुं० जो देने योग नहो
अदृश्य, भा०वा०सं०नपुं० छिपा, जो नदीखे
अद्भुत, ना०वा०सं०पुं० अपूर्व, आश्चर्य का
अद्रि, ना०वा०सं०पुं० पहाड़
अद्वैत, ना०वा०सं० भेद रहित, जिस के समान दूसरा नहीं
अध, अव्यय, सं० तले, नीचे
अधंगो, ना०वा०भा०पुं० गुदा मार्ग
अधर, ना०वा०सं०नपुं० होठ, छोटा
अधिकारी, वि०सं०पुं० जो अधिकार के लायक हो
अधिप, ना०वा०सं०पुं० राजा, मालिक
अधिवास, ना०वा०सं०नपुं० बसने की जगह
अधीस, ना०वा०भा०सं०पुं० राजा, स्वामी, अधीश
अनअहिवात, भा०वा०भा० विधवापन
अनरस, भा०वि०पुं० बुरा
अनख, ना०वा०भा०पुं० क्रोध, ईर्षा, दाह
अनघ, वि०सं०पुं० जो पाप रहित हो
अनट, भा०पुं० अन्याय
अनत, भा०पुं० और जगह
अनपायिनी, वि०सं०स्त्री० नित्य, जिसका नाश न हो
अनन्य, ना०वा०सं०पुं० जिसको दूसरे का भरोसा न हो
अनल, ना०वा०सं०पुं० आग, अग्नि
अनवद्य, ना०वा०सं०नपुं० निर्दोष
अनयास, भा०ना०वा०पुं० अनायास, बेयत्न
अनहित, ना०वा०भा०पुं० शत्रु, बैरी यु०वा० बुरा
अनाथ, ना०वा०सं०पुं० बे मालिक
अनादि, वि०सं०पुं० जिसका आदि न हो
अनामय, ना०वा०सं०पुं० नीरोग, भला चंगा
अनिन्दित, ना०वा०सं०पुं० जिसकी बुराई नहो
अनिप, वि०वा०नाम०भा०वा०पुं० सिपह सालार, सेनापति
अनिमनि, ना०वा०भा०पुं० उदास, अनमनी
अनिल, भा०वा०सं०पुं० वायु, बयार, हवा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनिर्वाच्य, वि०सं०पुं० जो कहनेकेयोग्य नहो
अनी, ना०वा०भा०स्त्री० सेना, समुदाय
अनीक, ना०वा०सं०नपुं० सेना, फौज
अनीश, ना०वा०भा०पुं० अनीश, जीव, जो ईश नहो
अनीह, ना०वा०सं०पुं० चेष्टा रहित, ब्रह्म
अनुअव्यय, सं० आगेपीछे भाव, थोड़ा
अनुकथन, क्रि०वि०सं०नपुं० वारम्वार कहना
अनुकूल, ना०वा०सं०पुं० प्रसन्न, अनुसार
अनुग, ना०वा०सं०पुं० पीछेचलनेवाला, नौकर
अनुग्रह, ना०वा०सं०पुं० दया, कृपा
अनुगामी, ना०वा०सं०पुं० पीछेचलने वाला
अनुचर, ना०वा०सं०पुं० दास
अनुचरी, ना०वा०सं०स्त्री० दासी
अनुज, ना०वा०सं०पुं० जो पीछे पैदाहो, छोटाभाई
अनुजा, ना०वा०सं०स्त्री० छोटीबहिन
अनुदिन, ना०वा०सं०नपुं० हमेशाहरेक रोज
अनुपम, वि०सं०नपुं० उपमा रहित
अनुभव, ना०वा०सं०पुं० यथार्थजानना
अनुमान, ना०वा०सं०पुं० विचारके अटकल
अनुमानी, ना०वा०सं०पु० विचारने वाला
अनुराग, ना०वा०सं०पुं० प्रीति, थोड़ा लाल
अनुरूप, ना०वा०सं०पुं० योग्य, अनुसार
अनुरोध, ना०वा०सं०पुं० रोकनेवाला
अनुमोदन, क्रि०वि०सं० प्रशंसा, सराहना
अनुवाद, क्रि०वि०सं० वारवार कहना
अनुसारी, ना०वा०सं० अनुकूल होय वाली
अनुभाऊ, ना०वा०भा०पुं० अनुभाव, माहात्म्य
अनुशासन, ना०वा०भा०पुं० अनुशासन, आज्ञा
अनुसन्धान, ना०वा०सं०नपुं० चाहना, खोजना
अनुहर, ना०वा०सं०पुं० अनुहार, योग्य
अनृत, ना०वा०सं०नपुं० झूठ
अनेक, ना०वा०सं०पुं० करीएक, बहुत
अनेसे, क्रि०वि०भा० कुशिसे
अनङ्ग, ना०वा०सं०पुं० जो अङ्ग रहितहो, कामदेवका नामहै
अन्यथा, अव्यय०सं० झूठ, औरप्रकारसे
अन्वहं, क्रि०वि०सं० हररोज, लगातार
अपडर, ना०वा० झूठ, डर
अपत, ना०वा०सं०पुं० पापी, अप्रतिष्ठित
अपभय, ना०वा०सं०नपुं० भय, डर
अपर, ना०वा०सं०नपुं० दूसरा, और
अपलोक, ना०वा०सं०पुं० अपयश
अपवर्ग, ना०वा०सं०पुं० मोक्ष, मुक्ति
अपवार, ना०वा०सं०पुं० अपयश, निन्दा
अपहरना, क्रि०वा०भा० दूरकरना
अपहारी, ना०वा०सं०पुं० नाश करने वाला
अपान, ना०वा०भा०पुं० अपना सं०पुं० गुदा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपि, अव्यय०सं०भा०निश्चय
अपेल, ना०वा०भा०पुं० अचल
अप्रतिहत, वि०पुं०सं० जिसकीरोक नहो
अर्पा, क्रि०वा०सं० देदिया, सौंपा
अबला, ना०वा०सं०स्त्री० औरत
अबाधा, ना०वा०सं०स्त्री० सत्य, बाधा रहित, वैरीक, देदुःख
अबुध, ना०वा०सं० पुं० अज्ञानी
अभि, अव्यय० सब ओर से
अभिअन्तर, ना०वा०सं०नपुं० भीतर
अभिजित, ना०वा०सं०पुं० एक नक्षत्र का नाम है
अभिनन्दन, ना०वा०सं०नपुं० सराहना
अभिमत, ना०वा०सं०पुं० वाञ्छित, चाहागया
अभिराम, ना०वा०सं०पुं० सुन्दर, सुखद
अभिषेक, ना०वा०सं०नपुं० जलछिड़कना, स्नान
अभीष्ट, ना०वा०सं०पुं० चाहागया
अभूतरिपु, वि०सं०पुं० शत्रु रहित
अभेद, ना०वा०सं०पुं० भेद रहित, जो नहूटे
अभंग, ना०वा०सं०पुं० जो न मिटे
अमरारु, ना०वा०भा० आम का वृक्ष
अमरावती, ना०वा०सं०स्त्री० स्वर्ग, इन्द्रलोक
अमाल, ना०वा०सं०नपुं० मान रहित, प्रमाण से परे
अमानुष, ना०वा०सं०नपुं० जो मनुष्य सम नहो
अमित, ना०वा०सं० नपुं० जिसका प्रमाण नहो
अमिय, ना०वा०भा०पुं० अमृत, संजीवनी
अमोघ, ना०वा०सं०नपुं० सफल
अमियमूरि, ना०वा०भा०स्त्री० संजीवनी बूटी
अमंगल, ना०वा०सं०पुं० अशुभ
अय, ना०वा०सं०नपुं० लोहा
अयन, ना०वा०सं०नपुं० घर, स्थान
अयम्, सर्वनाम०पुं० यह
अयुत, ना०वा०सं०पुं० दश हज़ार
अरगाई, ना०वा०पुं० चुप, अलग
अर्द्धांग, ना०वा०सं०पुं० आधा शरीर आधा अंग
अर्ध, ना०वा०सं०नपुं० आधा
अर्णव, ना०वा०सं०पुं० अर्णव, समुद्र
अरनी, ना०वा०भा०स्त्री० आग मथने की लकड़ी
अरि, भा०वा०सं०पुं० वैरी, शत्रु
अरुन, ना०वा०भा०पुं० लाल, सूर्य्यकारथ हाकने वाला
अरुनचूड़, ना०वा०भा०पुं० मुर्गा
अरुनारे, ना०वा०भा०पुं० लाल
अरुनशिखा, ना०वा०भा०पुं० मुर्गा
अलखित, क्रिया अलक्षित, जो देखेनहीं
अलक्षि, ना०वा०भा०स्त्री० अलक्ष्मी, धनहीन
अलान, ना०वा०सं०पुं० जंजीर, गजबन्धन
अलि, ना०वा०सं०पुं० भ्रमर, भौंरा, स्त्री० सखी
अलिनि, ना०वा०भा०स्त्री० भ्रमरी, सौंरी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अलीक, ना०वा०सं०पुं० झूठ
अलीहा, ना०वा०भा०पुं० झूठ
अलुहि, क्रि० वि० अलुझ करके
अलोला, ना०वा० थिर
अलौकिक, ना०वा०सं०नपुं० जो लोकमें नहो
अलंकृति, ना०वा०सं०स्त्री० अलङ्कार, शोभा
अवकलिन, ना०वा०सं०पुं० निश्चित
अवगति, ना०वा०सं०पुं० जानना
अवगाह, अव्य०सं० अवगाह, स्नान, नहाना
अवघट, ना०वा०सं०पुं० अड़वड़
अवचट, ना०वा०सं०पुं० औचक
अवज्ञा, ना०वा०सं०स्त्री० अपमान
अवडेरे, क्रि०वि०भा० त्याग करके, पेचमें करके
अवदर, ना०वा०भा०पुं० नीचेंसे चंद, दया करके
अवनंस, ना०वा०सं०पुं० माथे का गहना
अवध, ना०वा०सं०पुं० अयोध्या
अवधि, ना०वा०सं०स्त्री० हद्द, सीमा, प्रतिज्ञा
अवनि, ना०वा०सं०स्त्री० पृथ्वी
अवनिप, ना०वा०सं०पुं० राजा
अवनीश, ना०वा०सं०पुं० अवनीश, राजा
अवर्त, ना०वा०सं०पुं० भंवर, जलघुमर
अवराधक, ना०वा०सं०पुं० सेवक
अवराधना, क्रि०वा० सेवना
अवरेखी, ना०वा०पुंभा० लिखी
अवरेख, ना०वा०पुं०भा० लौर के पद को जोड़ना
अवलोकय, वि०क्रि०सं० देखो
अवसान, ना०वा०सं०नपुं० अन्तनाश
अवासि, ना०वा०भा०पुं० अवश्य ज़रूर
अवशेषित, वि०सं०पुं० बाक़ी बचा
अवसेरी, ना०वा०भा०स्त्री० देर, खाहिश, हाजत
अवाधी, ना०वा०सं०पुं० सुखी
अविकारी, वि०सं०पुं० विकार रहित, जन्म आदि दे विकार हीन
अविगत, ना०वा०सं०पुं० व्यापक
अविचल, ना०वा०सं०पुं० स्थिर
अविछीन, ना०वा०भा०पुं० निरन्तर
अविद्या, ना०वा०भा०पुं० अज्ञान
अविद्यापंच, वि०ना०सं०नपुं० अविद्या १ स्मित २ अभिनिवेश ३ राग ४ द्वेष ५
अविनय, ना०वा०सं०पुं० ढिठाई
अविनाशी, वि०भा०पुं० जिसका नाश नहो
अविरल, ना०वा०सं०पुं० निरन्तर
अविरोध, ना०वा०सं०पुं० विरोध नहो
अविवेक, ना०वा०सं०पुं० अज्ञान
अव्यक्त, ना०वा०सं०पुं० प्रकृति ईश्वर पुरुष
अव्याहत, ना०वा०सं०पुं० बेरोक
अष्टादश, स०वा०सं०पुं० अठारह
अस, अव्यय, भा० ऐसे
असन, ना०वा०भा०नपुं० भोजन, अन्न खाना
असनि, ना०वा०भा०पुं० अशनि, वज्र
असमय, ना०वा० कुसमय, बिना ऋतु
असमशर, वि०ना०भा०पुं० जिसकी बाण तीव्र हो, कामदेवका नाम है
असहाई, ना०वा०भा०पुं० बिना सहायके

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

असमंजस, ना०वा०सं०पुं० दुबधा
असाधी, ना०वा०भा०पुं० असाध्य, जो दूर नहो
असि, ना०वा०भा०पुं० तरवार अ० ऐसी क्रियापद है
असिव, ना०वा०भा०पुं० अशिव, अमङ्गल
असुर, ना०वा०सं०पुं० दैत्य, राक्षस
असुरसेन, वि०ना०पुं०भा० गया
अशेष, ना०वा०सं०पुं० सब, सम्पूर्ण
असौच, ना०वा०भा०पु० अपवित्रता
असम्भावना, ना०वा०सं०स्त्री० अनिश्चय, जिसकी उम्मेद नहो
असम्मत, ना०वा०सं०नपुं० प्रतिकूल
अस्थिमात्र, ना०वा०सं०नपुं० हाड़ भर
अह, ना०वा०सं०पुं० कष्ट, अहंकार, दिन
अहह, अव्यय, हाय, कष्ट की अधिकता
अहमिति, ना०वा०सं०पुं० अहंकार
अहि, ना०वा०सं०पुं० सांप, नाग
अहिनी, ना०वा०सं०स्त्री० सांपली, नागनी
अहिराज, वि०ना०सं०पुं० शेषनाग जी, सांपों का राजा है
अहिवात, ना०वा०सं०पुं० सुहाग, सौभाग्य
अहेर, ना०वा०भा०पुं० शिकार, आखेट
अहेरी, वि०भा०पुं० शिकारी
अहो, अव्यय, आश्चर्य्य
अहं, स०सं०आ०पुं० मैं

आ

आकर, ना०वा०सं०पुं० खानि
आकुल, ना०वा०सं०पुं० व्याकुल, विकल, पूर्ण
आकृति, ना०वा०सं०स्त्री० आकार, सूरत, शकल
आखर, ना०वा०भा०पुं० अक्षर, हर्फ
आगार, ना०वा०पुं०भा० मुख, सहजवानी, घर, चतुर
आगरी, ना०वा०स्त्री०भा० कोठरी, नागरी
आगार, ना०वा०सं०पुं० घर, हवेली
आगिल, ना०वा०भा०पुं० होनहार, भावी
आचरण, ना०वा०सं०पुं० आचार, करतूत
आचाही, क्रि०वा०सं० करते हैं
आतप, ना०वा०सं०पुं० धूप, घाम
आत्महन, ना०वा०सं०पुं० आत्मघाती, जो अपने को मारे
आतुर, ना०वा०सं०पुं० बीमार, रोगी, दुखी
आदिकवि, वि०ना०सं०पुं० वाल्मीक जी
आन, ना०वा०भा०पुं० अन्य, और सोगंद
आनन, ना०वा०सं०नपुं० मुख मुहे
आनवो, वि०क्रि० लाइयो
आपन, कर्मवा०सं०पुं० आपत्ति में पड़ा
आभीर, ना०वा०सं०पुं० अहीर गोप, भील
आमलक, ना०वा०सं०नपुं० औंवरा, आमला
आयत, गु०वा०सं०पुं० चौड़ा, विशाल, बड़ा
आयतन, ना०वा०सं०नपुं० घर
आयसु, ना०वा०भा०स्त्री० आज्ञा, हुक्म
आयुध, ना०वा०सं०नपुं० शस्त्र, हथियार
आरज, ना०वा०भा०पुं० आर्य, श्रेष्ठ, ससुर
आरत, ना०वा०भा०पुं० आर्त, दुःखी
आरति, ना०वा०भा०स्त्री० आर्त्ति, पीड़ा, अति भीति
आराती, ना०वा०भा०पुं० अराती, वैरी, शत्रु
आराम, ना०वा०सं०पुं० सुखदाता, बगीचा
आरूढ़, ना०वा०सं०पुं० चढ़ा
आरो, ना०वा०भा०पुं० शब्द आरव, आह

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आलय, ना० वा० सं० नपुं० घर, स्थान
आम्रवाल, ना० वा० सं० पुं० आंवला
आव, ना० वा० भा० स्त्री० आयुष्य, उमर
आवलि, ना० वा० भा० स्त्री० आवलि, सतर
आवाहन, ना० वा० सं० नपुं० बुलाना
आश्रित, ना० वा० सं० पुं० आश्रित, जो किसी के भरोसे वो आसरे से हो
आश्रमी, ना० वा० सं० पुं० ब्रह्मचारी
आसक्त, ना० वा० सं० पुं० जो लगा हो
आसा, ना० वा० स्त्री० भा० आशा, दिशा, भरोसा, आसरा
आसाबसन, ना० वा० पुं० दिगम्बर, नंगा, सन्तोषी, तृस्ना रहित
आसीन, ना० वा० सं० पुं० बैठा
आसु, ना० वा० नपुं० भा० जलदी, आसु
आंक, ना० वा० भा० पुं० निश्चय
आंकुरे, ना० वा० भा० पुं० व० व० अंकुरे, अंकुरा

इ

इक अंग, ना० वा० भा० पुं० एक पलरा, अंग
इच्छित, ना० वा० पुं० सं० चाहना या वाञ्छित
इत, अव्यय० इधर
इतराई, गु० वा० भा० स्त्री० ऐंठ के चलना, इतराना
इदम्, सं० ना० नपुं० यह
इदमित्थम्, द० सं० ना० अ० वा० यह ऐसा है
इव, सादृश्यार्थक अव्यय, जैसे सदृश्य
इष्टदेव, ना० वा० सं० पुं० पूज्य देवता
इह, अव्यय, यहां, इस लोक में
इन्दिरा, ना० वा० सं० स्त्री० लक्ष्मी
इन्दु, ना० वा० सं० पुं० चन्द्रमा
इन्द्रजाल, ना० वा० सं० पुं० बाज़ीगर
इन्द्रजीत, ना० वा० सं० पुं० मेघनाद
इन्द्री, ना० वा० भा० स्त्री० इन्द्रिय नेत्रादि

ई

ईति, ना० वा० सं० स्त्री० एक प्रकार की ऐसी उपाधि जो राज्य में होती है उन के ६ भेद हैं १ अति पानी बरसना २ पानी न बरसना ३ टीड़ी अधिक होना ४ चूहे अधिक होना ५ सए अधिक होना ६ चुआ अन्नादि में लग जाना
ईशान, ना० वा० सं० पुं० ईश्वर, शिव, महादेवजी
ईषणा, ना० वा० सं० स्त्री० चाह ३ प्रकार की संसार में होती है १ उत्तमलोक की २ पुत्र की ३ धन की
ईश, ना० वा० सं० पुं० ईस, ईश्वर, शिव जी, राजा
ईंधन, ना० वा० पुं० भा० जलाने की लकड़ी

उ

उकठा, ना० वा० पुं० भा० उकठा, उकठना
उकसाहं, क्रि० वा० भा० ऊंचे होना खिलना
उग्र, ना० वा० सं० पुं० भयङ्कर, श्रेष्ठ
उघरे, गु० वा० भा० पुं० व० व० खुले, नंगे
उचाट, ना० वा० भा० पुं० उच्चाटन, उचाटन
उचित, ना० वा० सं० पुं० योग्य, जोग
उछंग, ना० वा० भा० पुं० उत्संग, गोदी
उजागर, ना० वा० भा० प्रसिद्ध, उजल
उज्जैनी, ना० वा० भा० स्त्री० एक नगर का नाम है जहां के राजा भोज थे
उडु, ना० वा० सं० स्त्री० तारा, नक्षत्र
उक्ति, ना० वा० सं० स्त्री० कहना, वचन
उत्कंठा, ना० वा० सं० स्त्री० अभिलाषा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उत्कर्ष, ना०वा०सं०पुं०बढ़ाई, आधिक्य
उत्पात, ना०वा०सं०पुं० उपाधि, उपद्रव
उत्सव, ना०वा०सं०पुं०उत्साह, खुशी
उतङ्ग, गु०वा०सं०पुं० ऊंचा
उदक, ना०वा०सं०नपुं०जल, पानी
उदघारी, ना०वा०भा०स्त्री०अकटना
उदधि, ना०वा०सं०पुं० समुद्र
उद्भव, ना०वा०सं०पुं० उत्पात
उदयगिरि, वि०ना०सं०पुं० उदयाचल, जहां से सूर्य उदय होते हैं
उदर, ना०वा०भा०पुं० पेट
उदर वृद्धि०ना०वा०सं० जलोदर रोग
उद्वेग, ना०वा०सं०पुं०क्षोभ, घबड़ाहट
उदार, ना०वा०सं०पुं० दाता, देनेवाला
उदासा, ना०वा०भा०पुं० वे पर वाह
उदासी, ना०वा०सं०पुं० संन्यासी
उदासीन, ना०वा०सं०पुं०शत्रु मित्र भाव रहित
उपचार, ना०वा०सं०पुं० उपाय
उपधान, ना०वा०सं०पुं० तकिया
उपनिषद्, ना०वा०सं०पुं० वेद का रहस्य
उपपातक, ना०वा०सं०पुं० छोटा पाप
उपवन, ना०वा०सं०नपुं० विहार करने की बगीची
उपरागा, ना०वा०भा०पुं०ग्रहण, ग्रहन
उपल, ना०वा०सं०नपुं० पत्थर
उपबरहन, ना०वा०भा०पुं० तकिया
उपवासा, ना०वा०भा० उपवास, व्रत, भूखा रहना
उपवीत, ना०वा०सं०नपुं० जनेऊ
उपराजा, क्रिया०वा० उपजाना
उपहार, ना०वा०सं०पुं०भेट, पूजा, नज़र
उपारी, ना०वि० उखाड़ के
उपाधी, ना०वा०समीप प्राप्ति, उपद्रव
उपाये, कर्म वा० उपजाये
उपारे, क्रि०वा० उखारे, उपारे
उपाया, क०वा०पैदा किया, उपजाया
उपासा, ना०वा०भा०पुं०उपवास, भूखा
उपासक, ना०वा०सं०पुं०भक्त
उपासना, ना०वा०सं०स्त्री०भक्त, सेवा
उबरे, ना०वा० उबर गया
उबारा, ना०वा०बचा, उबर गया
उभय, ना०वा०सं०पुं० दो, दोनों
उभौ, ना०वा०सं०पुं० दो, दोनो
उमा, ना०वा०सं०स्त्री० पार्वती जी
उयउ, ना०वा० उदय हुआ
उर, ना०वा०सं०पुं० छाती, हृदय
उरग, ना०वा०सं०पु० सांप
उरगाद, ना०वा०सं०पुं० सांप को जो खाये, गरुड़
उरगारी, ना०वा०सं०पुं० सांपों का वैरी अर्थात् गरुड़
उरु, ना०वा०सं०पुं०बहुत, अधिक
उर्विजा, ना०वा०सं०स्त्री० जो पृथ्वी से पैदा हुई हो, श्री सीता जी का नाम है
उल्लूक, ना०वा०सं०पुं०उल्लू, घुघुआ
उहारउ, ना०वा०भा०पुं० उछार, परदा

ऊ

ऊमर, ना०वा०भा०पुं०उदुम्बर, गूलर
ऊना, ना०वा०सं०पुं० कम

ए

एक, सं०वा०स०पुं०एकही, अलग, मुख्य

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तीरथ अमित कोटि सत पावन। नाम अखिल अघ पुंजनसावन
हिमगिरि कोटि अचल रघुबीरा। सिंधु कोटि सत सम गंभीरा।
काम धेनु सत कोटि समाना। सकल काम दायक भगवाना
सादर कोटि अमित चतुरर्दू। विधि सत कोटि सृष्टि निपुणार्दू
विधु कोटि सत पालन कर्ता। रुद्र कोटि सत सम संहर्ता
धनद कोटि सत सम धनवाना। माया कोटि प्रपंच निधाना।
भार धरण सत कोटि अहीसा। निरवधि निरुपम प्रभु जगदीसा
छंद निरुपम न उपमा आनि राम समान राम निगम कहै॥
जिमि कोटि सत खद्योत सम रवि कहत अति लघुता लहै
एहि भांति निज निज मति विलास मुनीस हरिहिं बखानहीं
प्रभु भाव गाहक अति कृपाल सप्रेम सुनि सुख मानहीं।
दो० राम अमित गुण सागर थाह कि पावै कोइ ॥
संतन्ह सन जस कछु सुनेउं तुमहिं सुनायउं सोइ
सो० भाव वश्य भगवान सुख निधान करुणा भवन
तजि ममता मद मान भजिय सदा सीता रमन
सुनि भुशुंडि के बचन सुहाये॥ हरषित खगपति पंख फुलाये
नयन नीर मन अति हरषाना। श्री रघुपति प्रभाव उर आना।
पाछिल मोह समुझि पछिताना। ब्रह्म अनादि मनुज करि माना।
पुनि पुनि काग चरण सिर नावा। जानि राम सम प्रेम बढ़ावा॥
गुरु बिनु भवनिधि तरै न कोई। जो बिरंचि शंकर सम होई॥
संशय सर्प ग्रसेउ मोहिं ताता। दुखद लहरि कुतर्क बहु ब्राता

दो॰ रा॰ उ॰ भु॰

पंक्ति १२ के पूर्व जोड़ें
१२ के पूर्व जोड़ें
५ दो॰ ७५
पुन भुशुंडि के बचन अति भक्ति सहित हरषित भई
१५ वीं तवग
हरषीं तवग
जो कोउ नाम हेतु बिनु बदई
जानि भक्त जब हीं उत्कृष्ट बुद्धि हरि जनहीं मानत
तब हीं लागत नं ओं नमो वेदेभ्यो
हरि योको हित जानि भक्त प्रभु प्रभाव अति मानि
कान छत्र मानि कागहि हरषभ
जो पिव जु

तव सरूप गारुड़ि रघुनायक। मोहिं जिआए उजन सुखदायक
तव प्रसाद मम मोह न साना। राम रहस्य अनूपम जाना॥

दो० ताहि प्रशंसि विविध विधि शीश नाद कर जोरि
वचन विनीत सप्रेम मृदु बोलेउ गरुड़ बहोरि
प्रभु अपने अविवेक तें बूझौं स्वामी तोहिं॥॥
कृपा सिंधु सादर कहहु जानि दास निज मोहिं

तुम सर्वज्ञ तज्ञ तम पारा॥ सुमति सुशील सरल आचारा
ज्ञान विरति विज्ञान निवासा। रघुनायक के तुम प्रिय दासा
कारण कवन देह यह पाई। तात सकल मोहिं कहहु बुझाई
राम चरित सर सुंदर स्वामी। पायउ कहां कहहु नभ गामी
नाथ सुना मैं अस शिव पाहीं। महा प्रलय हु नाश तव नाहीं
सुधा वचन नहिं ईश्वर कहई। सोउ मोरे मन संशय अहई।
अग जग जीव नाग नर देवा। नाथ सकल जग काल कलेवा
अंडक टाह अमित लय कारी। काल सदा दुरित क्रम भारी॥

सो० तुमहिं न व्यापत काल अति कराल कारण कवन
मोहिं सो कहहु कृपाल ज्ञान प्रभाव कि योग बल

दो० प्रभु तव आश्रम आयउं मोर मोह भ्रम भाग॥
कारण कवन सो नाथ सब कहहु सहित अनुराग

गरुड़ गिरा सुनि हरषेउ कागा। बोलेउ उमा परम अनुरागा
धन्य धन्य तव मति उर गारी। प्रश्न तुम्हारि मोहिं अति प्यारी
सुनि तव प्रश्न सप्रेम सुहाई॥ बहुत जनम कै सुधि मोहिं आई

टी० रा० उ० ५८

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सब निज कथा कहौं मैं गाई।। तात सुनहुं सादर मन लाई।
जप तप मख सम दम ब्रत दाना। बिरति बिबेक योग बिज्ञाना।
सब कर फल रघुपति पद प्रेमा। तेहि बिनु कोउ न पावै क्षेमा।
एहि तन राम भक्ति मैं पाई।। तातें मोहिं ममता अधिकाई
जेहि ते कछु निज स्वारथ होई। तेहि पर ममता कर सब कोई
सो० पन्न गारि अस नीति श्रुति सम्मत सज्जन कहहिं
अति नीचहु सन प्रीति करिय जानि निज परम हित
पाट कीट तें होइ तेहि तें पाटंबर रुचिर ॥ + ॥
कृमि पाले सब कोइ परम अपावन प्राण सम
स्वारथ सांच जीव कहं एहा। मन क्रम बचन राम पद नेहा
सोइ पावन सोइ सुभग शरीरा। जो तनु पाइ भजिय रघुबीरा
राम बिमुख लहि बिधि सम देही। कवि कोबिदन प्रशंसहिं तेही
राम भक्ति एहि तनु उर जामी। तातें मोहिं परम प्रिय स्वमी
तजौं न तन निज इच्छा मरणा। तनु बिनु बेद भजन नहिं बरणा
प्रथम मोह मोहिं बहुत बिगोवा। राम बिमुख सुख कबहुं न सोवा
नाना जन्म कर्म पुनि नाना।। किये भोग जप तप मख दाना
कवन जोनि जन मेउं जहं नाहीं। मैं खगेश भ्रमि भ्रमि जग माहीं
देखेउं करि सब करम गोसाईं। सुखी न भयउं अबहि की नाईं
सुधि मोहिं नाथ जन्म बहु केरी। शिव प्रसाद मति मोह न घेरी
दो० प्रथम जन्म के चरित अब कहौं सुबहु बिहगेश
सुनि प्रभु पद रति उपजै तातें मिटहिं कलेश ॥

ओइ काल मैं गु-
ण मानो चाहीपु-
ण्य मानसिक होई
अरु पाप न होइ औ-
र लीला श्रवण भ-
जन कथन राम नाम
सब धर्म न परमु-
ख्य जानो और यु-
गन मो जो बहुत
श्रम तें सिद्ध होत

टी.
रा. उ.
५९

रह्यौ सो कान्ती में
नाम प्रताप तें सत
युग में सतोगुण
और सत्यता प्र-
सन्नता हेतु अरु
त्रेता में सत गु-
ण अधिक रज
मिश्रित

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri

पूरब कल्प एक प्रभु जुग कलि जुग महं छल ॥
नर अरु नारि अधर्म रत सकल निगम प्रतिकूल
तेहि कलि जुग कोसल पुर जाई। जनमत भयउं सूद्र तनु पाई
सिव सेवक मन क्रम अरु बानी। आन देव निंदक अभिमानी॥
धन मद मत्त परम बाचाला॥ उग्र बुद्धि उर दंभ बिसाला॥
यद्यपि रहेउं रघुपति रजधानी। तदपि न कछु महिमा तब जानी
अब जाना मैं अवध प्रभाऊ। निगमागम पुराण अस गाऊ
कवनेहुं जनम अवध बस जोई। राम परायण सो परि सोई॥
अवध प्रभाव जान तब प्राणी। जब उर बसहिं राम धनु पाणी
सो कलिकाल कठिन उरगारी। पाप परायण सब नर नारी॥
दो॰ कलिमल ग्रसे धर्म सब लुप्त भये सद ग्रंथ॥
दंभिन निज मत कल्पि कर प्रगट किये बहु पंथ
भये लोग सब मोह बस लोभ ग्रसे सुभ कर्म
सुनु हरिजान ग्यान निधि कहौं कछुक कलिधर्म
बरण धर्म नहिं आश्रम चारी। श्रुति बिरोध सब नर अरु नारी
द्विज श्रुति बंचक भूप प्रजासन। कोउ नहिं मान निगम अनुशासन
मारग सोइ जो कहं जो भावा। पंडित सोइ जो गाल बजावा॥
मिथ्या रंभ दंभ रति जोई॥ ता कहं संत कहैं सब कोई॥
सोइ सयान जो पर धन हारी। जो कर दंभ सो बड़ आचारी।
जो कह झूंठ मसखरी जाना॥ कलि युग सोइ गुण वंत बखाना
निराचार जो श्रुति पथ त्यागी। कलि युग सोइ ग्यानी सो बिरागी

जाके नख अरु जटा बिसाला। सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला
दो० असुभ बेष भूषन धरे भक्षाभक्ष जे खाहिं ॥
तेइ जोगी तेइ सिद्ध नर पूज्य ते कलियुग माहिं
सो० जे अपकारी चार तिन्ह कर गौरव मान्य तेइ
मन क्रम बचन लबार तेइ बक्ता कलिकाल महं
नारि बिबस नर सकल गोसाईं। नाचहिं नट मर्कट की नाईं।
सूद्र द्विजन उपदेसहिं ग्याना। मेलि जनेउ लेहिं कुदाना॥
सब नर काम लोभ रत क्रोधी। देव बिप्र श्रुति संत बिरोधी।
गुन मंदिर सुंदर पति त्यागी। भजहिं नारि पर पुरुष अभागी
सौभागिनी बिभूषन हीना॥ बिधवन के सिंगार नबीना।
गुरु सिष बधिर अंध का लेखा। एक न सुनइ एक नहिं देखा॥
हरइ सिष्य धन सोक न हरई। सो गुरु घोर नरक महं परई।
मातु पिता बालकन्हि बोलावहिं। उदर भरै सोइ धरम सिखावहिं
दो० ब्रह्म ग्यान बिनु नारि नर कहहिं न दूसर बात
कौड़ी लागि लोभ बस करहिं बिप्र गुर घात
बादहिं सूद्र द्विजन्ह सन हम तुम्ह ते कछु घाट
जानइ ब्रह्म सोइ बिप्रबर आँख देखावहिं डाट
पर त्रिय लंपट कपट सयाने। मोह द्रोह ममता लपटाने।
तेइ ग्यान भेद बादी ग्यानी नर। देखा मैं चरित्र कलियुग कर
आपु गये अरु तिन्हहिं घालहिं। जे कहुं सत मारग प्रतिपालहिं
कल्प कल्प भरि एक एक नरका। परहिं जे दूषहिं श्रुति करि तर्का

जैसे युग जामह
सबमुख पीतं
श्रेय धर्मो धर्मेहि
के अवस्था प्रभा
ताकियो कीर्ति
गत ३००० छापं
१८६४००० त्रेता
१२६६००० द्वापर
युग ४३२००० सत
यह अवस्था

टी
हा. उं.
१८८०

ग्यान की चाही
काल में बीतात
जानिके संत
युगमय देखो
सम्मत भयो यातें
अधर्म तजधर्म
त होउ प्रभु पद
के ये आयो
के उन्हें के मरं
ता तेंभाषाकृत
सेवे भलो
क्क युगादी
विमल होवेगी
नवदु कालमें
```
```

जे बरणाधम तेलि कुंभारा। स्वपच किरात कोल कलवारा
नारि मुई गृह संपति नासी। मूड़ मुड़ाइ होंइ संन्यासी॥
ते बिप्रन सन आपु पुजावहिं। उभय लोक निज हाथ नसावहिं
बिप्र निरच्छर लोलुप कामी। निराचार सठ बृषली स्वामी॥
सूद्र करहिं जप तप ब्रत दाना। बैठि बरासन कहहिं पुराना॥
सब नर कल्पित करहिं अचारा। जाइ न बरणि अनीति अपारा॥

दो० भये बरन संकर कलि भिन्न सेतु सब लोग॥
करहिं पाप पावहिं दुख भय रुज सोक बियोग॥

श्रुति सम्मत हरिभक्ति पथ संजुत बिरति बिबेक
तेहि न चलहिं नर मोह बस कल्पहिं पंथ अनेक

छं० बहु दाम सवारहिं धाम जती॥
बिषया हरि लीन्हि न रही बिरती॥
तपसी धनवंत दरिद्र गृही॥
कलि कौतुक तात न जात कही॥
कुलवंति निकारहिं नारि सती।
गृह आनहिं चेरि निबेरि गती।
सुत मानहिं मातु पिता तब लौं
अबलान न दीख नहीं जब लौं।
ससुरारि पियारि लगी जब तें॥
रिपुरूप कुटुंब भये तब तें॥
नृप पाप परायण धर्म नहीं॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करि दंड बिडंब प्रजा नितहीं॥
धन वंत कुलीन मलीन अपी।
द्विज चिन्ह जनेउ उघार तपी
नहिं मान पुराणन वेदहि जो
हरि सेवक संत कही कल जो
कवि वृंद उदार दुनी न सुनी॥
गुण दूषक ब्रातन कोपि गुनी।
कलि बारहिं बार दुकाल परै॥
बिनु अन्न दुखी सब लोग मरै

दो० सुनि खगेश कलि कपट हठ दंभ द्वेष पाखंड
मान मोह मारादि मद व्याप रहे ब्रह्मंड॥
तामस धर्म करहिं नर जप तप मख व्रत दान
देवन बरषै धरणि पै बयेन जामहिं धान॥

छंद अबला कच भूषण भूरि क्षुधा
धन हीन दुखी ममता बहुधा॥
सुख चाहहिं मूढ़ न धर्म रता॥
मति थोरि कठोर न कोमलता॥
नर पीड़ित रोग न भोग कहीं॥
अभिमान बिरोध अकारणहीं
लघु जीवन संवत पंच दसा॥
कलपांत न नाश गुमान असा।

या को तन धरत
कलेश न होइगो
अरु ज्ञान बनो रहै
गो तातें अनेक त-
न धरे अंत तन द्वि-
ज को पायो तहां
पिता संसार व्यो-
हार हित चाह्यो

टी.
रा. उ.
६३

अरु मेरो मन
भक्ति में लग्यो
याते उन्ह के प-
रलोक भये सं
ताव न में मुनिन्ह
तें जाइ उपदे-
श चाह्यो॥

CC-0. In Public Domain Digitized By Siddhanta

कलि काल बिहाल किये मनुजा। नहिं मानत कोउ अनुजात पुजा।
नहिं तोष बिचार न शीतलता। सब जाति कुजाति भये मगता।
इरषा परुषा छर लोलुपता। भरि मूर रही ममता बिगता॥
सब लोग बियोग बिशोक हये। बरुणाश्रम धर्म अचार गये
दम दान दया नहिं जान पनी। जड़ता पर पंच न ताति घनी॥
तन पोषक नारि नरा सगरे। पर निंदक जे जग में बगरे॥

दो० सुन व्यालारि काल कलि मल अव गुण आगार
गुनौ बहुत कलि काल महं बिनु प्रयास निस्तार॥
कृत युग त्रेता द्वापर पूजा मख अरु योग॥॥
जो गति होइ सो कलि हरि नाम तें पावहिं लोग॥

कृत युग सब योगी संन्यासी। करि हरि ध्यान तरहिं भव पासी
त्रेता बिबिध यज्ञ नर करहीं। प्रभुहिं समर्पि कर्म भव तरहीं
द्वापर करि रघुपति पद पूजा। नर भव तरहिं उपाव न दूजा।
कलि युग केवल हरि गुण गाहा। गावत नर पावहिं भव थाहा
कलि युग योग न यज्ञ न ज्ञाना। एक अधार राम गुण गाना॥
सब भरोस तजि जो भज रामहिं। प्रेम समेत गाव गुण ग्रामहिं॥
सोइ भव तर कछु संशय नाहीं। नाम प्रताप प्रगट कलि माहीं
कलि कर एक पुनीत प्रतापा। मानस पुण्य होहिं नहिं पापा

दो० कलि युग गुण सम आन नहिं जो नर कर बिश्वास
गाइ राम गुण गण बिमल भव तर बिनहिं प्रयास
प्रगट चार पद धर्म के कलि महं एक प्रधान॥॥

तहां ईश्वर सर्वमय सर्वव्यापक जन्मादि विकार शून्य करि

टी० रा० उ० ६४

दरशावै सो प्रभु पद प्रेम तें मन में न आयो॥*

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जेन केन बिधि दीन्हे दान करै कल्यान ॥ ४ ॥
कृत युग धर्म होहिं सब केरे । हृदय राम माया के प्रेरे ॥
शुद्ध सत्व ममता बिज्ञाना । कृत प्रभाव प्रसन्न मनजाना
सत्व बहुत रज कछु रति कर्मा । सब बिधि सुख त्रेता कर धर्मा
बहु रज सत्व स्वल्प कछु तामस । द्वापर धर्म हर्ष भय मानस ।
तामस बहुत रजो गुण थोरा । कलि प्रभाव बिरोध चहुं ओरा
बुध युग धर्म जान मन माहीं । तज अधर्म रति धर्म कराहीं
काल धर्म नहिं व्यापहि ताही । रघुपति चरण प्रीति अति जाही
नट कृत बिकट कपट खगराया । नट सेवकहिं न व्यापै माया ।
दो० हरि माया कृत दोष गुण बिन हरि भजन न जाहिं
भजिय राम तजि काम सब अस बिचारि मन माहिं
तेहि कलि काल बरष बहु बसेउं अवध बिहगेश
परेउ दुकाल बिपति बस तब मैं गयेउं बिदेश ॥
गयेउं उजैनी सुन उरगारी । दीन मलीन दरिद्र दुखारी ।
गये काल कछु संपति पाई । तहं पुनि करौं संभु सेवकाई
बिप्र एक बैदिक शिव पूजा । करै सदा तेहि काज न दूजा ।
परम साधु परमारथ बिंदक । शंभु उपासक नहिं हरि निंदक
तेहि सेवौं मैं कपट समेता । द्विज दयाल अति नीति निकेता
वाहि द्विज बस्त्र देखि मोहिं सांई । विप्र पढ़ाव पुत्र की नाईं ॥
शंभु मंत्र मोहिं द्विज बर दीन्हा । शुभ उपदेश विविध बिधि कीन्हा
जपौं मंत्र शिव मंदिर जाई । हृदय दंभ अहमिति अधिकाई

दो० मैं खल मल संकुल मति नीच जाति बस मोह
हरिजन द्विज देखे जरौं करौं बिष्नु कर द्रोह ॥

सो० गुरु नित मोहि प्रबोध दुखित देख आचरन मम
मोहि उपजै अति क्रोध दंभिहि नीति कि भावई

एक बार गुरु लीन्ह बोलाई। मोहि नीति बहु भांति सिखाई
सिव सेवा करि फल सुत सोई। अबिरल भक्ति परम पद होई
राम हिं भजहिं तात सिव धाता। नर पावर कै केतिक बाता।
जासु चरण अज सिव अनुरागी। तासु द्रोह सुख चहसि अभागी
हरि कहुं हरि सेवक गुरु कहेऊ। सुनि खग नाथ हृदय मम दहेऊ
अधम जाति मैं बिद्या पाये ॥ भयउं यथा अहि दूध पिलाये
मानी कुटिल कुभाग्य कुजाती। गुरु कर द्रोह करौं दिन राती
अति दयाल गुरु स्वल्प न क्रोधा। पुनि पुनि मोहि सिखाव सुबोधा
जेहिं नीच बड़ाई पावा। सो प्रथम हि हति ताहि नसावा
धूम अनल संभव सुनु भाई। तेहि बुझाव घन पदवी पाई
रज मग परी निरादर रहई। सब कर पद प्रहार नित सहई
मरुत उड़ाव प्रथम तेहि भरई। पुनि नृप नयन किरीट न्ह परई
सुनु खगपति अस समुझि प्रसंगा। बुध नहिं करहिं अधम कर संगा
कबि कोबिद अस गावहिं नीती। खल सन कलह न भल नहिं प्रीती
उदासीन नित रहिय गोसांई। खल परिहरिय स्वान की नाई
मैं खल हृदय कपट कुटिलाई। गुरु हित कहै न मोहि सुहाई
दो० एक बार हरि मंदिर जपत रहेउं सिव नाम ॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गुरु आएउ अभिमान तें उठि नहिं कीन्ह प्रणाम।
सो दयाल नहिं कहेउ कछु उर न रोष लवलेश॥
अति अघ गुरु अपमान तें सहि नहिं सके महेश
मंदिर मांझ भई नभ वानी। रेहत भाग्य अज्ञ अभिमानी
यद्यपि तव गुरु के नहिं क्रोधा। अति दयाल गुरु सम्यक बोधा
तदपि शाप शठ देहों तोहीं। नीति बिरोध सोहा इन मोहीं
जो नहिं दंड करौं खल तोरा। भ्रष्ट होइ श्रुति नारग मोरा
जो शठ गुरु सन इरषा करहीं। रौरव नरक कोटि जग परहीं।
त्रिजग योनि पुनि धरहिं शरीरा। अयुत जन्म भरि पावहिं पीरा
बैठ रहेसि अजगर इव पापी। सर्प होहि खल मति मल व्यापी
महा बिटप कोटर महं जाई। रहु अधमाधम अधिगत पाई
दो॰ हा हा कार कीन्ह गुरु दारुण सुनि शिव शाप॥
कंपित मोहिं बिलोकि अति उर उपजा परिताप
करि दंडवत सप्रेम द्विज शिव सन्मुख कर जोरि
विनय करत गद गद स्वर समुझ घोर गत मोरि
छं॰ नमामीश मीशान निर्वाण रूपं। विभुं व्यापकं ब्रह्म वेद स्वरूपं
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं। चिदाकाश माकाश वासं भजेहं
निराकार मोंकार मूलं तुरीयं। गिरा ज्ञान गोतीत मीशं गिरीशं
करालं महा काल कालं कृपालं। गुणागार संसार पारं नतोहं॥
तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं। मनोभूत कोटि प्रभासी शरीरं
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा। लसत् भाल बालेंदु कंठे भुजंगा

टी॰ रा॰ उ॰ ६७

CC-0. In Public Domain Digitized By Siddhanta

चलत्कुंडलं भ्रूसुनेत्रं विशालं। प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं
मृगाधीशचर्माबरं मुंडमालं। प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि
प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं। अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं
त्रिधाशूलनिर्मूलनं शूलपाणिं। भजेहं भवानीपतिं भावगम्यं
कलातीतकल्याणकल्पांतकारी। सदासज्जनानंददाता पुरारी
चिदानंदसंदोहमोहापकारी। प्रसीदप्रसीदप्रभोमन्मथारी
नयावद्उमानाथपादारविंदं। भजंतीहलोकेपरेवानराणां
नतावत्सुखंशांतिसंतापनाशं। प्रसीदप्रभोसर्वभूताधिवासं
नजानामियोगंजपंनैवपूजां। नतोहंसदासर्वदाशंभुतुभ्यं
जराजन्मदुःखौघतातप्यमानं। प्रभोपाहिआपन्नमामीशशंभो
रुद्राष्टकमिदंप्रोक्तं विप्रेणहरतोषये। येपठंतिनराभक्त्यातेषांशंभुप्रसी

दी. ग. पु. ६८

दो॰ सुनि बिनती सर्बज्ञ सिव देखि बिप्र अनुराग ॥
पुनि मंदिर नभ बानी भइ द्विज बर बर मांग ॥
जो प्रसन्न प्रभु मो पर नाथ दीन पर नेहु ॥
निज पद भक्ति देइ प्रभु पुनि दूसर बर देहु ॥
तव माया बस जीव जड़ संतत फिरै भुलान ॥
तेहि पर क्रोध न करिय प्रभु कृपा सिंधु भगवान
संकर दीन दयाल अब एहि पर होहु कृपाल ॥
साप अनुग्रह होइ जेहि नाथ थोरेहीं काल ॥
एहि कर होइ परम कल्याना। सोइ करहु अब कृपा निधाना
बिप्र गिरा सुनि परहित साना। एवमस्तु तब भइ नभ बानी।

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यद्यपि कीन्ह इह दारुण पापा। मैं पुनि दीन्ह क्रोध करि शापा
तदपि तुम्हारि साधुता देषी। करिहौं एहि पर कृपा विशेषी
क्षमा शील जे पर उपकारी। ते द्विज मोहिं प्रिय यथा खरारी
मोर शाप द्विज व्यर्थ न जाइहि। जन्म सहस्र अवशि यह पाइहि
जन्म तमरत दुसह दुख होई। एहि स्वल्पौ नहिं व्यापहि सोई
कवने हु जन्म मिटहि नहिं ज्ञाना। सुनहिं शूद्र मम वचन प्रमाना
रघुपति पुरी जन्म तव भयऊ। पुनि तैं मम सेवा मन दयऊ
पुरी प्रभाव अनुग्रह मोरे। । राम भक्ति उपजिहि उर तोरे
सुन मम वचन सत्य अब भाई। हरि तोषन व्रत द्विज सेवकाई
अब जनि करहि विप्र अपमाना। जानेसु संत अनंत समाना।
इंद्र कुलिश मम शूल विशाला। काल दंड हरि चक्र कराला।
जो इन्ह कर मारा नहिं मरई। विप्र द्रोह पावक सो जरई॥
अस विवेक राखेउ मन माहीं। तुम कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं
औरौं एक आसिषा मोरी। । अप्रति हत गति होइहि तोरी

दो० सुनि शिव वचन हरषि गुरु एव मस्तु इहि भाषि
मोहिं प्रबोध गयउ गृह शंभु चरण उर राषि॥
प्रेरित काल बिंधि गिरि जाइ भयउं मैं व्याल॥
बिनु प्रयास पुनि सो तनु तजेउं गये कछु काल
जोइ तनु धरौं तजौं पुनि अनायास हरि जान॥
जिमि नूतन पट पहिरि के नर परि हरै पुरान॥
शिव राखी श्रुति नीति अरु मैं नहिं पाव कलेश

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एहि बिधि धरेउं विविध तनु ग्यान न गयेउ खगेस
त्रिजग देव नर जोइ तनु धरऊं। जहं तहं राम भजन अनुसरऊं
एक शूल मोहिं बिसर न काऊ। गुरु कर कोमल शील सुभाऊ
चिंस देह द्विज के मैं पाई। सुर दुर्लभ पुराण श्रुति गाई
खेलौं तहूं बालन्ह मीला। करौं सकल रघुनायक लीला
प्रौढ़ भये मोहिं पिता पढ़ावा। समझौं सुनौं गुनौं नहिं भावा
मन तें सकल बासना भागी। केवल राम चरण लय लागी
कहु खगेस अस कवन अभागी। खरी सेव सुरधेनु हिं त्यागी
प्रेम मगन मोहिं कछु न सुहाई। हारेउ पिता पढ़ाय पढ़ाई॥
भये काल बस जब पितु माता। मैं बन गयउं भजन जन त्राता
जहं जहं बिपिन मुनीश्वर पावौं। आश्रम जाइ जाइ सिर नावौं
बूझौं तिन्हहिं राम गुण गाहा। कहहिं सुनौं हरषित खगनाहा
सुनत फिरौं हरि गुण अनुबादा। अव्याहत गति संभु प्रसादा
छूटी त्रिविध ईषना गाढ़ी। एक लालसा उर अति बाढ़ी
राम चरण बारिज जब देखौं। तब निज जन्म सुफल करि लेखौं
जेहि पूछौं सोइ मुनि अस कहई। ईश्वर सर्व भूत मय अहई॥
निर्गुण मत नहिं मोहिं सुहाई। सगुण ब्रह्म रति उर अधिकाई

दो० गुरु के वचन सुरत करि राम चरण मन लाग॥

रघुपति यश गावत फिरौं छण छण नव अनुराग
मेरु शिखर बट छाया मुनि लोमस आसीन॥
देखि चरण सिर नायउं बचन कहेउं अति दीन

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मुनि मुनि वचन विनीत मृदु मुनि कृपाल रघुराज ॥
मोहिं सादर पूछत भये द्विज आयहु केहि काज ॥
तब मैं कहा कृपा निधि तुम सर्वज्ञ सुजान ॥
सगुण ब्रह्म आराधन मोहिं कहहु भगवान ॥
तब मुनीश रघुपति गुण गाथा। कहे कछुक सादर रघुनाथा
ब्रह्म ज्ञान रत मुनि बिज्ञानी। मोहिं परम अधिकारी जानी
लागे करन ब्रह्म उपदेशा। अज अद्वैत अगुण हृदयेशा॥
अकल अनीह अनाम अरूपा। अनुभव गम्य अखंड अनूपा
मन गोतीत अमल अविनाशी। निर्विकार निरवधि सुख रासी
सोतैं ताहि तोहि नहिं भेदा। बारि बीच इव गावहिं बेदा
विविध भांति मोहिं पुनि समुझावा। निर्गुण मत मम हृदय न आवा
पुनि मैं कहों नाद पद शीशा। सगुण उपासन कहहु मुनीशा
राम भक्ति जल मम मन मीना। किमि बिलगाइ मुनीश प्रवीना
सोइ उपदेश कहहु करि दाया। निज नयनन देखौं रघुराया॥
भरि लोचन बिलोकि अवधेशा। तब सुनि हौं निर्गुण उपदेशा
पुनि पुनि कहि हरि कथा अनूपा। खंडि सगुण मत अगुण निरूपा
तब मैं निर्गुण मत करि दूरी। सगुण निरूपौं करि हठ भूरी
उत्तर प्रति उत्तर मैं कीन्हा॥ मुनि तन भए क्रोध के चीन्हा
सुनि प्रभु बहुत अवज्ञा किये। उपज क्रोध ज्ञानिहु के हिये
अति संहरषण जो कर जोरे। अनल प्रगट चंदन तें होई॥
सो० बार बार सकोप मुनि करै निरूपण ज्ञान॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मैं अपने मन बैठि तब करौं बिबिध अनुमान ॥
क्रोध कि द्वैत बुद्धि बिनु द्वैत कि बिनु अज्ञान ॥
माया बस परिछिन्न जड़ जीव कि ईस समान ॥
कबहुं कि दुख सब कर हित ताकें। तेहि कि दरिद्र परस मनि जाकें
परद्रोही कि होहिं निःसंका ॥ कामी पुनि कि रहहिं अकलंका
बंस कि रह द्विज अनहित कीन्हें। कर्म कि होहिं स्वरूपहि चीन्हें
काहू सुखपति कि खल संग गामी। सुभ गति पाव कि परत्रिय गामी
भव कि परहिं परमात्मा बिंदक। सुखी कि होहिं कबहुं हरिनिंदक
राज कि रहै नीति बिनु जानें ॥ अघ कि रहहिं हरिचरित बखानें
पावन जस कि पुन्य बिनु होई। बिनु अघ अजस कि पावै कोई
लाभ कि किछु हरिभक्ति समाना। जेहि गावहिं श्रुति संत पुराना
हानि कि जग एहि सम किछु भाई। भजिय न रामहिं नर तनु पाई
अघ कि पिसुनता सम कुछु आना। धर्म कि दया सरिस हरिजाना
एहि बिधि अमिति जुगुति मन गुनऊं। मुनि उपदेस न सादर सुनऊं
पुनि पुनि सगुन पक्ष मैं रोपा। तब मुनि बोले बचन सकोपा
मूढ़ परम सिख देउं न मानसि। उत्तर प्रतिउत्तर बहु आनसि
सत्य बचन बिस्वास न करहीं। बायस इव सब ही तें डरहीं।
सठ स्वपक्ष तव हृदय बिसाला। सपदि होहि पच्छी चंडाला
लीन्ह स्राप मैं सीस चढ़ाई। नहिं कछु भय न दीनता आई
दो० तुरत भयउं मैं काग तब पुनि मुनि पद सिर नाइ
सुमिरि राम रघुबंस मनि हरषित चलेउं उड़ाइ

टी० ए० उ० ७२

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उमा जे राम चरण रति बिगत काम मद क्रोध ॥
निज प्रभु मय देखहिं जगत केहि सन करहिं बिरोध
सुन खगेश नहिं कछु ऋषि दूषण। उर प्रेरक रघुबंश बिभूषण
कृपा सिंधु मुनि मति करि भोरी। लीन्ही प्रेम परीक्षा मोरी॥
मन क्रम बच मोहिं निज जन जाना। मुनि मति फिर फेरी भगवाना
ऋषि मम महति शीलता देषी। राम चरण विश्वास बिशेषी।
अति विस्मय पुनि पुनि पछताई। सुंदर मुनि मोहि लीन्ह बुलाई
मम परितोष विविध विध कीन्हा। हरषित राम मंत्र तब दीन्हा
बालक रूप राम कर ध्याना॥ कहेउ मोहिं मुनि कृपानिधाना
सुंदर सुखद मोहिं अति भावा। सो प्रथमहिं मैं तुमहिं सुनावा
मुनि मोहिं कछुक काल तहं राषा। राम चरित मानस तब भाषा
सादर मोहिं यह कथा सुनाई। पुनि बोले मुनि गिरा सुहाई
राम चरित सर गुप्त सोहावा। शंभु प्रसाद तात मैं पावा॥
तेहि निज भक्ति राम कर जानी। तातें मैं सब कहेउं बखानी।
राम भक्ति जिन्ह के उर नाहीं। कबहुं न तात कहिय तिन्ह पाहीं
मुनि मोहिं विविध भांति समुझावा। मैं सप्रेम मुनि पद शिर नावा
निज कर कमल परस मम शीशा। हरषित आशिष दीन्ह मुनीशा
राम भक्ति अविरल उर तोरे॥ बसिहि सदा प्रसाद अब मोरे
दो० सदा राम प्रिय होहु तुम शुभ गुण भवन अमान।
काम रूप इच्छा मरण ज्ञान बिराग निधान॥।
जेहि आश्रम तुम बसब पुनि सुमिरत श्री भगवंत

टी० रा० उ० ७३

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

व्यापिहि तहं नहिं अविद्या योजन एक प्रयंत ॥
काल कर्म गुण दोष सुभाऊ। कछु दुख तुम्हहिं न व्यापिहि काऊ।
राम रहस्य ललित बिधि नाना। गुप्त प्रगट इतिहास पुराना ॥
बिनु श्रम तुम्ह जानब सबसोऊ। नित नव नेह राम पद होऊ।
जोइ इच्छा करिहहु मन माहीं। हरि प्रसाद कछु दुर्लभ नाहीं
सुनि मुनि आशिष सुनि मति धीरा। ब्रह्म गिरा भइ गगन गंभीरा।
एवमस्तु तव बच मुनि ग्यानी। यह मम भक्त करम मन बानी।
सुनि नभ गिरा हरष मोहिं भयऊ। प्रेम मगन सब संशय गयऊ।
करि बिनती मुनि आयसु पाई। पद सरोज पुनि पुनि सिर नाई।
हरष सहित एहि आश्रम आयउं। प्रभु प्रसाद दुर्लभ बर पायउं
इहां बसत मोहिं सुन खग ईशा। बीते कल्प सात अरु बीसा।
करौं सदा रघुपति गुण गाना। सादर सुनहिं बिहंग सुजाना।
जब जब अवध पुरी रघु बीरा। धरहिं भक्ति हित मनुज शरीरा।
तब तब जाइ राम पुर रहऊं। शिशु लीला बिलोकि सुख लहऊं
पुनि उर राखि राम शिशु रूपा। निज आश्रम आवौं खग भूपा
कथा सकल मैं तुमहिं सुनाई। काग देह जेहि कारण पाई ॥
कहेउं तात सब प्रश्न तुम्हारी। राम भक्ति महिमा अति भारी।
दो० ताते यह तन मोहिं प्रिय भयउ राम पद नेह ॥
निज प्रभु दरशन पायउं गये उ सकल संदेह
भक्ति पक्ष हठ करि रहेउं दीन्ह महा ऋषि शाप
मुनि दुर्लभ वर पायउं देखहु भजन प्रताप ॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जे असि भक्ति जानि परिहरहीं। केवल ज्ञान हेतु श्रम करहीं
ते जड़ कामधेनु गृह त्यागी। खोजत आकु फिरहिं पय लागी
सुन खगेस हरि भक्ति बिहाई। जे सुख चाहहिं आन उपाई
ते सठ महा सिंधु बिनु तरनी। पैरि पार चाहहिं जड़ करनी
सुनि भुसुंड के बचन भवानी। बोलेउ गरुड़ हरषि मृदु बानी
तव प्रसाद प्रभु मम उर माहीं। संसय सोक मोह भ्रम नाहीं
सुनेउ पुनीत राम गुन ग्रामा। तुम्हरी कृपाँ लहेउँ बिश्रामा।
एक बात प्रभु पूछउँ तोही। कहहु बुझाइ कृपानिधि मोही
कहहिं संत मुनि बेद पुराना। नहिं कछु दुर्लभ ज्ञान समाना
सोइ मुनि तुम्ह सन कहेउ गोसाईं। नहिं आदरेहु भक्ति की नाईं
ज्ञानहिं भक्तिहिं अंतर केता। सकल कहहु प्रभु कृपा निकेता
सुनि उरगारि बचन सुख माना। सादर बोलेउ काग सुजाना
भक्तिहिं ज्ञानहिं नहिं कछु भेदा। उभय हरहिं भव संभव खेदा
नाथ मुनीस कहहिं कछु अंतर। सावधान सोइ सुनु बिहंगबर
ज्ञान बिराग जोग बिज्ञाना। ए सब पुरुष सुनहु हरिजाना
पुरुष प्रताप प्रबल सब भाँती। अबला अबल सहज जड़ जाती

दो० पुरुष त्यागि सक नारिहि जो बिरक्त मतिधीर
न तु कामी बिषया बस बिमुख जो पद रघुबीर

सो० सोइ मुनि ज्ञान निधान मृगनैनी बिधु मुख निरखि
बिबस होइ हरिजान नारि बिष्नु माया प्रगट ॥॥

इहाँ न पच्छपात कछु राखउँ॥ बेद पुरान संत मत भाखउँ

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मोह न नारि नारि के रूपा।। पन्नगारि यह नीति अनूपा
माया भक्ति सुनहु तुम दोऊ। नारि वर्ग जानै सब कोऊ।
पुनि रघुबीरहिं भक्ति पियारी। माया खलु नर्तकी बिचारी
भक्तिहि सानुकूल रघुराया।। तातें तेहि डरपति अति माया
राम भक्ति निरुपम निरुपाधी। बसै जासु उर सदा अबाधी
तेहि बिलोकि माया सकुचाई। करि न सकै कछु निज प्रभुताई
अस बिचारि जे मुनि बिज्ञानी। जाचहिं भक्ति सकल सुखखानी

दो० यह रहस्य रघुनाथ कर बेगि न जानै कोइ
जो जानै रघुपति कृपा सपनेहु मोह न होइ
औरउ ज्ञान भक्ति कर भेद सुनहु सुप्रबीन।
सो सुनि होइ राम पद प्रीति सदा अबछीन

सुनहु तात यह अकथ कहानी। समुझत बनै न जाइ बखानी
ईश्वर जीव अंश अबिनासी। चेतन अमल सहज सुखरासी
सो माया बस भयउ गोसाईं। बंध्यो कीर मर्कट की नाईं
जड़ चेत नहिं ग्रंथि परि गई। जदपि मृषा छूटत कठिनई
तब ते जीव भयउ संसारी। छूट न ग्रंथि न होइ सुखारी
श्रुति पुरान बहु कहेउ उपाई। छूट न अधिक अधिक उरझाई
जीव हृदय तम मोह बिसेषी। ग्रंथि छूट किमि परै न देखी
अस संजोग ईस जब करई। तब कदाचित सो निरुवरई
सात्विक श्रद्धा धेनु सुहाई। जो हरि कृपा हृदय बस आई
जप तप ब्रत जम नियम अपारा। जे श्रुति कह सुभ धर्म अचारा

तेइ त्रिण हरित चरै जब गाई। भाव बच्छ शिशु पाइ पन्हाई
नोइ निवृत्ति पात्र विश्वासा।। निर्मल मन अहीर निज दासा
मरम धर्म मय पय दुहि भाई।। अवटै अनल अकाम बनाई
तोष मरुत जब क्षमा जुड़ावै। धृति सम जावन देइ जमावै
मुदिता मथै बिचार मथानी। दम अधार रजु सत्य सुवानी
तब मथि काढ़ि लेइ नवनीता। बिमल बिराग सुभग सुपुनीता

दो० योग अगिनि कर प्रगट तब कर्म शुभा शुभ लाइ
बुद्धि सिरावै ज्ञान घृत ममता मल जरि जाइ ।।
चित्त दिया भर धरै दृढ़ ममतादि वटबनाइ ।।
तब विज्ञान रूपिणी बुद्धि विशद घृत पाइ ।। ।।
तीन अवस्था तीन गुण तेहि कपास ते काढ़ि ।।
तूल तुरीय सवारि पुन बाती करै सुगाढ़ि ।। ।।

सो० एहि विधि से लै दीप तेज राशि विज्ञान मय ।।
जातहिं जासु समीप जरहिं मदादिक सलभ सब

सोहमास्मि इति वृत्ति अखंडा। दीप सिखा सोइ परम प्रचंडा।
आतम अनुभव सुख सु प्रकाशा। तब भव मूल भेद भ्रम नाशा
परम अविद्या कर परिवारा।। मोह आदि तम मिटै अपारा।
तब सोइ बुद्धि पाइ उजियारा। उर गृह बैठि ग्रंथि निरुवारा।
छोरन ग्रंथि पाव जो सोई।। तौ यह जीव कृतारथ होई
छोरत ग्रंथि जानि खग राया। विघ्न अनेक करै तब माया।
रिद्धि सिद्धि प्रेरै बहु भाई।। बुद्धिहि लोभ देखावहि जाई।

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कल बल छल करि जाइ समीपा। अंचल बात बुझा वहिं दीपा।
होइ बुद्धि जो परम सयानी।। तिन्ह तन चितव न अनहित जानी।
जो तेहि बिघ्न बुद्धि नहिं बाधी। तो बहोरि सुर करहिं उपाधी।
इन्द्री द्वार झरोखा नाना। तहं तहं सुर बैठे करि थाना।
आवत देखहिं बिषय बयारी। ते हठ देहिं कपाट उघारी।।
जब सो प्रभंजन उर गृह जाई। तबहि दीप बिग्यान बुझाई।
ग्रंथि न छूटि मिटा सो प्रकासा। बुद्धि बिकल भइ बिषय बतासा।
इंद्रिय सुरन न ग्यान सुहाई। बिषय भोग पर प्रीति सदाई।
बिषय समीर बुद्धि कृत भोरी।। तेहि बिधि दीपक को बार बहोरी।।

दो० तब फिर जीव बिबिध बिधि पावै संसृति क्लेस।
हरि माया अति दुस्तर तरि न जाइ बिहगेस।।
कहत कठिन समुझत कठिन साधन कठिन बिबेक
होइ घुनाच्छर न्याय जो पुनि प्रत्यूह अनेक।।

सात पंथ कृपाल के पारा।। परत खगेस होइ नहिं बारा।
जो निर्बिघ्न पंथ निरबहई।। सो कैवल्य परम पद लहई।
अति दुर्लभ कैवल्य परम पद। संत पुरान निगम आगम बद।
राम भजन सोइ मुक्ति गोसाईं। अनइच्छित आवइ बरिआई।
जिमि थल बिनु जल रहि न सकाई। कोटि भांति कोउ करै उपाई।
तथा मोच्छ सुख सुनु खगराई। रहि न सकै हरि भगति बिहाई।
अस बिचारि हरि भक्त सयाने। मुक्ति निरादर भक्ति लुभाने।।
भक्ति करत बिनु जतन प्रयासा। संसृति मूल अबिद्या नासा

भोजन करिय तृप्ति हित लागी। जिमि सो असन पचवै जठरागी
अस हरि भक्ति सुगम सुखदाई। को अस मूढ़ न जाहि सुहाई

दो० सेवक सेव्य भाव बिनु भव न तरिय उरगारि
भजहु राम पद पंकज अस सिद्धांत बिचारि
जे चेतन कहं जड़ करै जड़हि करै चैतन्य ॥
अस समर्थ रघुनायकहिं भजहिं जीव ते धन्य

कहेउं ग्यान सिद्धांत बुझाई। सुनहु भक्ति मनि कै प्रभुताई।
राम भक्ति चिंतामनि सुंदर ॥ बसै गरुड़ जाके उर अंतर ॥
परम प्रकास रूप दिन राती ॥ नहिं कछु चहिय दिया घृत बाती
मोह दरिद्र निकट नहिं आवा। लोभ बात नहिं ताहि बुझावा।
प्रबल अविद्या तम मिटि जाई। हारहिं सकल सलभ समुदाई
खल कामादि निकट नहिं जाहीं। बसै भक्ति जाके उर माहीं ॥
गरल सुधा सम अरि हित होई। तेहि मनि बिनु सुख पावन कोई
व्यापहिं मानस रोग न भारी ॥ जिन के बस सब जीव दुखारी
राम भक्ति मनि उर बस जाके। दुख लव लेस न सपनेहुं ताके
चतुर सिरोमनि तेइ जग माहीं। जे मनि लागि सुजतन कराहीं
सो मनि जदपि प्रगट जग अहई। राम कृपा बिनु नहिं कोउ लहई
सुगम उपाय पाइबे केरे ॥ नर हतभाग्य देहिं भट भेरे ॥
पावन पर्बत बेद पुराना। राम कथा रुचिर साकर नाना।
मर्मी सज्जन सुमति कुदारी। ग्यान बिराग भक्ति उर गारी।
भाव सहित खोजै जो प्रानी। भाव भक्ति मनि सब सुख खानी

मोरे मन प्रभु अस बिस्वासा।। राम ते अधिक राम कर दासा।
राम सिंधु घन सज्जन धीरा।। चंदन तरु हर संत समीरा।।
सब कर फल हरि भगति सुहाई। सो बिनु संत न काहू पाई।।
अस बिचारि जे करत संगा। राम भगति तेहि सुलभ बिहंगा
दो० बज्र पयोनिधि मंदर ग्यान संत सुर आहि।।।।
कथा सुधा मथि काढ़हीं भगति मधुरता जाहि।।
बिरति चर्म असि ग्यान मद लोभ मोह रिपु मारि
जय पाइय सो हरि भगति देखु खगेस बिचारि
पुनि सप्रेम बोलेउ खग राऊ। जौं कृपाल मोहिं ऊपर भाऊ
नाथ मोहिं निज सेवक जानी। सप्त प्रस्न मम कहहु बखानी
प्रथमहिं कहहु नाथ मतिधीरा। सब ते दुर्लभ कवन सरीरा
बड़ दुख कवन कवन सुख भारी। सोउ संछेपहिं कहहु बिचारी
संत असंत मरम तुम जानहु। तिन्ह कर सहज सुभाव बखानहु
कवन पुण्य श्रुति बिदित बिसाला। कहहु कवन अघ परम कराला
मानस रोग कहहु समुझाई। तुम सर्बग्य कृपा अधिकाई
तात सुनहु सादर अति प्रीती। मैं संछेप कहौं यह नीती।
नर तन सम नहिं कवनिउ देही। जीव चराचर जाचत तेही
नरक स्वर्ग अपबर्ग निसेनी। ग्यान बिराग भगति सुख देनी
सो तनु धरि हरि भजहिं न जे नर। होहिं बिषय रत मंद मंद तर
काचु किरच बदले ते लेहीं। कर ते डारि परस मनि देहीं
नहिं दरिद्र सम दुख जग माहीं। संत मिलन सम सुख कछु नाहीं

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पर उपकार वचन मन काया। संत सहज सुभाव खगराया।
संत सहहिं दुख पर हित लागी। पर दुख हेतु असंत अभागी
भूर्ज तरू सम संत कृपाला।। पर हित चित सह बिपति बिसाला
सन इव खल पर बंधन करई।। खाल कढ़ाइ बिपति सह मरई
खल बिनु स्वारथ पर अपकारी। अहि मूषक इव सुनु उरगारी।
पर संपदा बिनास न चाहीं। जिमि शशि हित हिम उपल बिलाहीं
दुष्ट उदय जग आरत हेतू।। यथा प्रसिद्ध अधम ग्रह केतू।
संत उदय संतत सुख कारी।। बिश्व सुखद जिमि इंदु तमारी
परम धर्म श्रुति बिदित अहीसा। पर निंदा सम अघ न गिरीशा।
हर गुरु निंदक दादुर होई। जन्म सहस्र पाव तन सोई।
द्विज निंदक बहु नरक भोग करि। जग जन्मै बायस शरीर धरि।
सुर श्रुति निंदक जे अभिमानी। रौरव नरक परहिं ते प्रानी।।
होहिं उलूक संत निंदा रत। मोह निशा प्रिय ज्ञान भानु गत
सब के निंदा जे जड़ करहीं।। ते चमगादुर होइ अवतरहीं
सुनहु तात अब मानस रोगा। जिन्ह ते दुख पावहिं सब लोगा
मोह सकल व्याधिन कर मूला। तिन्ह ते पुनि उपजहिं भव शूला
काम बात कफ लोभ अपारा। क्रोध पित्त नित छाती जारा।
प्रीति करहिं जो तीनिउं भाई। उपजै सन्निपात दुख दाई।।
बिषय मनोरथ दुर्गम नाना। ते सब शूल नाम को जाना।
ममता दाद कंडूई पामा।। हरष बिषाद गरह बहुतामा
पर दुख देखि जरनि सो छई। कुष्ठ दुष्टता मन कुटिलई।।

बड़ो संत निंदा नर संत समागम पर गुण गान स्वभाव परोपकार रत संत विरोधी असंत बिशाल दुष्ट

दो० उ० ८१

कौन व्याधि सो पल धरि अघ बहु मान निंदा ईर्षा संत रोग मोह लोभ को जड़ ?

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अहंकार अति दुखद डमरुआ। दंभ कपट मद मान नहरुआ॥
तृस्ना उदर बृद्धि अति भारी। त्रिबिध ईषना तरुण तिजारी
जुग बिधि ज्वर मत्सर अबिबेका। जहँ लगि कहौं कुरोग अनेका
दो० एक ब्याधि बस नर मरहिं ए असाध्य बहु ब्याधि
पीडहिं संतत जीव कहुं सो किमि लहैं समाधि॥
नेम धर्म आचार तप ग्यान जग्य जप दान॥
भेषज पुनि कोटिन्ह नहिं रोग जाहिं हरिजान॥
एहि बिधि सकल जीव जग रोगी। सोक हरष भय प्रीति बियोगी
मानस रोग कछुक मैं गाये। हहिं सबके लखि बिरलन्ह पाये
जानेतें छीजहिं कछु पापी। नास न पावहिं जन परितापी।
बिषय कुपथ्य पाइ अंकुरे। मुनिहुं हृदय का नर बापुरे॥
राम कृपा नासहिं सब रोगा। जौं एहि भांति बनै संजोगा॥
सद गुरु बैद बचन बिस्वासा। संयम यह न बिषय के आसा
रघुपति भगति सजीवन मूरी। अनूपान श्रद्धा मति पूरी॥
एहि बिधि भलेहिं रोग न साहीं। नाहिंत जतन कोटि नहिं जाहीं।
जानिय तब मन बिरुज गोसांई। जब उर बल बिराग अधिकाई
सुमति छुधा बाढ़ै नित नई। बिषय आस दुर्बलता गई॥
बिमल ग्यान जल जब सो नहाई। तब रह राम भगति उर छाई।
सिव अज सुक सनकादिक नारद। जे मुनि ब्रह्म बिचार बिसारद
सब कर मत खग नायक एहा। करिय राम पद पंकज नेहा॥
स्रुति पुरान सब ग्रंथ कहाहीं। रघुपति भगति बिना सुख नाहीं

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कमठ पीठ जामहिं बरु बारा ।। बंध्या सुत बरु काहुहि मारा
फूलहिं नभ तरु बहु बिधि फूला। जीव न लह सुख हरि प्रतिकूला
तृषा जाइ बरु मृग जल पाना। बरु जामहिं सस सीस बिषाना
अंधकार बरु रबि हि न सावै।। राम बिमुख न जीव सुख पावै
हिमते अनल प्रगट बरु होई। बिमुख राम सुख लहै कि कोई
दो० बारिमथे घृत होइ बरु सिकता ते बरु तेल ।। ।।
बिनु हरि भजन न भव तरिय यह सिद्धांत अपेल
मसक कहि करै बिरंचि प्रभु अजहिं मसक ते हीन।
अस बिचारि तजि संसय रामहिं भजहिं प्रबीन।
श्लोक बिनिश्चितं बदामि ते न अन्यथा वचांसि मे।।
हरिं नरा भजंति जे ति दुस्तरं तरंति ते ।। ।।
कहेउं नाथ हरि चरित अनूपा। व्यास समास स्वमति अनुरूपा
श्रुति सिद्धांत इहै उरगारी। राम भजिय सब काम बिसारी
प्रभु रघुपति तजि सेइय काही। मोहिं से सठ पर ममता जाही।
तुम बिज्ञान रूप नहिं मोहा।। नाथ कीन्ह मोपर अति छोहा
पूछेहु राम कथा अति पावनि।। सुक सनकादि संभु मन भावनि
सत संगति दुर्लभ संसारा ।। निमिष दंड भरि एकौ बारा।।
देखि गरुड़ निज हृदय बिचारी।। मैं रघुबीर भजन अधिकारी।।
सकुना धम सब भांति अपावन। प्रभु मोहिं कीन्ह बिदित जग पावन
दो० आजु धन्य मैं धन्य अति यद्यपि सब बिधि हीन ।।
निज जन जानि राम मोहिं संत समागम दीन्ह ।।

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नाथ यथा मति भारवेउं गरवे उंनहिंकछु गोय
चरित सिंधु रघुनायक थाह कि पावै कोय
सुमिरि राम के गुण गरणवाना। पुनि पुनि हरष भुसुंडि सुजाना॥
महिमा निगम नेति कह गाई। अतुलित बल प्रताप प्रभुताई।
सिव अज पूज्य चरण रघुराई। मोपर कृपा परम मृदुलाई॥
अस सुभाव कहुं सुनो न देखौं। केहि खगेस रघुपति सम लेखौं
साधक सिद्ध बिमुक्त उदासी। कवि कोविद कृतज्ञ संन्यासी।
योगी सूर सुतापस ज्ञानी। धर्म निरत पंडित विज्ञानी॥
तरहिं न बिनु सेये मम स्वामी। राम नमामि नमामि नमामी॥
सरण गये मोसे अघ रासी। होहिं सुद्ध नमामि अविनासी।
दो॰ जासु नाम भव भेषज हरण घोर त्रय सूल॥
सो कृपाल मोहिं तोहिं पर सदा रहो अनुकूल॥
सुनि भुसुंडि के वचन सुभ देखि राम पद नेह॥
बोलेउ प्रेम सहित गिरा गरुड़ बिगत संदेह॥
मैं कृत कृत्य भयउं तव बानी। सुनि रघुबीर भक्ति रस सानी॥
राम चरण नूतन रति भई॥ माया जनित बिपति सब गई॥
मोह जलधि बोहित तुम भये। मो कहं नाथ बिबिध सुख दये॥
मोपहं होइ न प्रति उपकारा। बंदौं तव पद बारहिं बारा॥+1
पूरण काम राम अनुरागी। तुम सम तात न कोउ बड़ भागी॥
संत बिटप सरिता गिरि धरणी। पर हित हेतु सबन के करणी॥
संत हृदय नवनीत समाना। कहा कविन पै कहा न जाना॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

निज पर ताप द्रवै नव नीता। पर दुख द्रवहिं सुसंत पुनीता।
जीवन जन्म सुफल मम भवउ। तव प्रसाद संसय सब गयऊ।
जानेउ सदा मोहिं निज किंकर। पुनि पुनि उमा कहहिं बिहंगबर।
दो० तासु चरण सिर नाइ करि प्रेम सहित मति धीर
गयउ गरुड़ बैकुंठ तब हृदय राखि रघुबीर॥
गिरिजा संत समागम सम न लाभ कछु आन
बिनु हरि कृपा न होइ सो गावहिं वेद पुरान॥
कहेउं परम पुनीत इति हासा। सुनत श्रवण छूटहिं भव पासा
प्रणत कल्प तरु करुणा पुंजा। उपजै प्रीति राम पद कंजा॥
मन क्रम वचन जनित अघ जाई। सुनहिं जे कथा श्रवण मन लाई
तीर्थाटन साधन समुदाई। । योग विराग ज्ञान निपुणाई
नाना कर्म धर्म व्रत दाना। संयम दम जप तप मख नाना
भूत दया गुरु द्विज सेवकाई। विद्या विनय विवेक बड़ाई॥
जहं लगि साधन वेद बखानी। सब कर फल हरि भक्ति भवानी
सो रघुनाथ भक्ति श्रुति गाई। राम कृपा काहू एक पाई॥
दो० पुनि दुर्लभ हरि भगत नर पावहिं बिनहिं प्रयास
जो यह कथा निरंतर सुनहिं मान विश्वास॥
सोइ सर्वज्ञ गुणी सोइ ज्ञाता। सोइ महि मंडित पंडित दाता
धर्म परायण सोइ कुल त्राता। राम चरण जाकर मन राता।
नीति निपुण सोइ परम सयाना। श्रुति सिद्धांत नीक तेहिं जाना
सो कवि कोविद सोइ रणधीरा। जो छल छाड़ि भजै रघुबीरा॥

टी० रा० उ० दू

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

धन्य सो देश जहां सुरसरी। धन्य नारि पति ब्रत अनुसरी
धन्य सो भूप नीति जो करई। धन्यो द्विज निज धर्म नट रई
सो धन धन्य प्रथम गति जाकी। धन्य पुण्य रत मति सोइ पाकी
धन्य घटी सोइ जब संत संगा। धन्य जन्म द्विज भक्ति अभंगा

दो० सो कुल धन्य उमा सुनु जगत पूज्य सु पुनीत
श्री रघुबीर परायण जे नर उपजि बिनीत॥

मति अनुरूप कथा मैं भाषी। यद्यपि प्रथम गुप्त करि राषी।
तन मन प्रीति देखि अधिकाई। तब मैं रघुपति कथा सुनाई
यह न कहिय शठ हीं हठ शीलहिं। जो मन लाइ न सुन हरि लीलहिं
कहिय न क्रोधिहि लोभिहि कामिहिं। जो न भजै सचराचर स्वामिहिं
द्विज द्रोहिहिं न सुनाइय कबहूं। सुरपति सरिस होइ नृप जबहूं
राम कथा के ते अधिकारी। जिन्ह के सत संगति अति प्यारी
गुरु पद प्रीति नीति रत जेई। द्विज सेवक अधिकारी तेई॥
ता कहं यह विशेष सुखदाई। जाहि प्राण प्रिय श्री रघुराई।

दो० राम चरण रत जो चह अथवा पद निर्वान
भाव सहित सो यह कथा करौ श्रवण पुटपान

राम कथा गिरिजा मैं बरणी। कलि मल समनि मनोमल हरणी
संसृति रोग सजीवन मूरी।। राम कथा गावहिं श्रुति भूरी
एहि मा रुचिर सप्त सोपाना। रघुपति भक्ति केर पंथ नाना।
अति हरि कृपा जाहि पर होई। पाव देइ इहि मारग सोई॥
मन कामना सिद्ध नर पावा।। जो यह कथा कपट तजि गावा

टी० रा० उ० ८६

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कहहिं सुनहिं अनुमोदन करहीं। ते गोपद इव भवनिधि तरहीं।
सुनि सब कथा हृदय अति भाई। गिरिजा बोली गिरा सुहाई।
नाथ कृपा मम गत संदेहा। राम कृपा उपजेउ नव नेहा।
दो० मैं कृत कृत्य भइउं अब तव प्रसाद बिस्वेस
उपजी राम भगति दृढ़ बीते सकल कलेस ॥
यह सुभ संभु उमा संबादा। सुख संपादन समन बिषादा
भव भंजन गंजन संदेहा। जन रंजन सज्जन प्रिय एहा॥
राम उपासक जे जग माहीं। एहि सम प्रिय तिन्ह कहु कछु नाहीं
रघुपति कथा यथा मति गावा। मैं यह पावन चरित सुहावा॥
यह कलि कालन साधन दूजा। योग यज्ञ जप तप व्रत पूजा॥
रामहिं सुमिरिय गाइय रामहिं। संतत सुनिय राम गुन ग्रामहिं
जासु पतित पावन बड़ बाना। गावहिं कवि श्रुति संत पुराना।
ताहि भजिय मन तजि कुटिलाई। राम भजे गति केहि नहिं पाई।
छं० पाई न गति केहि पतित पावन राम भज सुन सठ मना॥
गनिका अजामिल ब्याध गीध गजादि खल तारे घना
आभीर जवन किरात खस स्वपचादि अति अघरूप जे
कहि नाम बारक तेपि पावन होहिं राम नमामि ते॥
रघुबंस भूषन चरित यह नर कहहिं सुनहिं जे गावहीं
कलिमल मनोमल धोइ बिनु श्रम राम धाम सिधावहीं
सत पंच चौपाईं मनोहर जानि जो नर उर धरैं॥
दारुन अबिद्या पंच जनित बिकार श्री रघुपति हरैं

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुंदर सुजान कृपा निधान अनाथ पर कर प्रीति जो
सो एक राम अकाम हित निर्वाण प्रद सम आन को
जाकी कृपा लवलेश ते मति मंद तुलसी दास हू
पायो परम विश्राम राम समान प्रभु नाहीं कहूं
दो॰ मो सम दीन न दीन हित तुम समान रघु बीर ॥
अस विचारि रघु वंश मणि हरहु विषम भवभीर ॥
कामिहि नारि पियारि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहिं राम ॥
इति श्री राम चरित्र मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने
अविरल हरिभक्ति संपादनो नाम सप्तमः सोपानः सम्पूर्णम्

ही॰ रा॰ उ॰ ८६

अथ आरती श्री रामायण जी की

आरति श्री रामायण जी की। कीरति कलित ललित सिय पी की
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद। बालमीकि विज्ञान विशारद
शुक सनकादि शेष अरु शारद। बरणि पवन सुत कीरति नीकी
संतत गावत शंभु भवानी। अौघट संभव मुनि बर ज्ञानी
व्यास आदि मुनि पुंगव बखानी। काग भुशुंडि गरुड़ के हिय की
चारिउ वेद पुराण अष्ट दश। षट शास्त्र सब ग्रंथन को रस।
तुम मन धन संतन को सर्वस। सार अंश सम्मत सब ही की
कलि मल हरणि विषै रस फीकी। सुभग सिंगार मुक्ति युवती की
हरणि रोग भव भूरि अमी की। तात मात सब विधि तुलसी की

सम्पूर्णम्

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गोर, गु०भा०पुं० गोरा, सफेद
गोरेव, गु० सं० नपुं० वछार
गोरीस, ना०वा०भा०पुं० गोरीश, शिव
गंजन, क्रि०वा० नाश करना
गंजा, वि०भा०पुं० नाश किया
गंभीर, गु०वा०सं० नपुं० गहिरा
ग्रह, ना०वा०सं०पुं० सूर्य आदि ग्रह
ग्रहदशा, ना०वा०भा० स्त्री० शनीचरी
ग्रहे, वि०भा० १पकड़े २सधे
ग्राम, ना०वा०सं०नपुं० १गंवार २गांव समूह ३
ग्रही, ना०क०सं०पुं० संग्रही, ग्रहण करने वाला
ग्रीवा, ना०वा०सं०पुं० गला, कंठ
ग्रीषम, ना०वा०भा०पुं० ग्रीष्म, गरमी की ऋतु
ग्रंथ, ना०वा०सं०पुं० पुस्तक
ग्रंथि, ना०वा०सं०पुं० गांठ

घ

घट, ना०वा०सं०नपुं० १घड़ा २हृदय
घटज, ना०वा०सं०पुं० कुम्भजऋषि अगस्त्य
घटव, क्रि०वा० करव
घटा, ना०वा०सं०स्त्री० समूह
घटि, ना०वा०भा०पुं० १घरिया २कमती
घटिहि, क्रि०वा० १करेगी २होगा
घन, ना०वा०सं०नपुं० १बादल २घटा ३लोहे का घन ४अद्भुत
घमोर, ना०वा०भा०पुं० १भड़भाड़ २घांस
घरी, वि०भा०स्त्री० गृहस्थिनी
घवरि, ना०वा०पुं० गुच्छा
घाउ, ना०वा०भा०पुं० चोट, घाव
घात, ना०वा०सं०पुं० १दांव, पेंच घात, चोट
घातिनी, ना०वा०सं०स्त्री० नाश करने वाली
घातक, ना०वा०भा०पुं० नाश करनेवाला
घाला, वि०भा०पुं० नाश किया, घालना
घालि, क्रि०वि० अस्त्र मारि
घाली, ना०वा०भा०स्त्री० मारी, फेंकी, घालना
घुनाक्षर, क्रि०वि० घुनकृत, अक्षरलकड़ी में आपकरके प्रसिद्ध है
घुम्मरहिं, क्रि०वा० नगारे की आवाज की नकल
घुर्मिति, क्रि०वि० घूमा, घूम करके
घृत, ना०वा०सं०नपुं० घी
घ्रान, ना०वा०भा०पुं० (घ्राण) नाक

च

चकित, वि०सं०कृ० आश्चर्यित
चक्कवै, ना०वा०भा०पुं० चक्रवर्ती, चक्रवर्ती राजा
चक्र, ना०वा०सं०नपुं० १चक्र सुदर्शन, २पहिया
चख, ना०वा०भा०पुं० चक्षु, आंख
चतुरंग, ना०वा०सं०पुं० सेना के चार अंग अर्थात् हाथी, घोड़ा, रथ, और पैदल
चतुरानन, ना०वा०सं०पुं० ब्रह्मा
चपरि, गु०वा० तुरत
चपल, ना०वा०सं०नपुं० चंचल
चर, ना०वा०सं०नपुं० १लक्षण २चलन ३चर

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चरम, ना०वा०सं०नपुं० १ धर्म, चमड़ा २ अंत ३ हाल

चरफराहिं, क्रि०वा० डोलते हैं, चरफराना, तड़फराहिं, विकल

चरनपीठ, ना०वा०भा०पुं० खड़ाऊं

चराचर, ना०वा०सं०पुं० चल अचल, चैतन्य और जड़

चरित, ना०वा०सं०नपुं० चरित्र, हाल

चरु, ना०वा०सं०पुं० १ खीर २ बरतन

चरर, क्रि०वा० बहर, चबना, बहना

चहुंयुग, ना०वा०भा०पुं० चारोंयुग, अर्थात् सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग

चास, ना०वा०भा०पुं० नीलकंठ पक्षी

चाका, ना०वा०भा०पुं० चक्रुपक्षिया

चांकी, ना०वा०भा०स्त्री० राशि को गोठेना, चांकना, छापना, बिजुली

चांड़, ना०वा०भा०पुं० चाह, ज़ोर, बिजुली

चाप, ना०वा०सं०नपुं० १ धनुष २ रावना

चापन, ना०वा०सं०पुं० चापना, पगचंपी, रावना

चापी, वि०भा०स्त्री० दबाई

चामर, ना०वा०सं०नपुं० चांवर

चामुंडा, ना०वा०सं०स्त्री० योगिनी भेद

चार, ना०वा०सं०पुं० १ दूत, लगुल, लवार

चारिपद, ना०वा०भा०पुं० धर्म के चार पांव अर्थात् सत्य, शौच, दान, दया

चारि अवस्था, ना०वा०भा०स्त्री० जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय

चारिभांति, ना०वा०भा०पुं० भोजन; भक्ष्य भोज्य लेह्य, चोष्य

चारि, सं०वा०भा०स्त्री० १ चार ४, २ चलने वाला ३ चुगली

चारु, सु०वा०सं०पुं० सुन्दर

चालति, क्रि०वा० डोलती, चालना, डोलाना

चाहि, क्रि०वा० १ देखकरके २ उसकी ओर से चाहना, देखना

चाही, वि०भा०स्त्री० १ चाह २ देखना

चित, ना०वा०नपुं०सं० १ चेतन, ज्ञान २ मन

चितचेता, ना०वा०पुं० सावधान

चितव, क्रि०वा० देखता है, चितवना, देखना

चित्रकेतु, ना०वा०सं०पुं० एक राजा का नाम

चिन्तामणि, ना०वा०भा०पुं० मणि विशेष

चितेरा, ना०वा०भा०पुं० चित्रकार

चिदाकाश, ना०वा०सं०नपुं० चैतन्य, आकाशरूप परमात्मा

चिराना, क्रि०वा० पुराना

चिरंजीवी, ना०वा०सं०पुं० मार्कंडेय ऋषि

चीर, ना०वा०सं०नपुं० १ चीरना २ वस्त्र

चुनौती, ना०वा०भा०पुं० तिलाक, ईर्षा, धिक्कार

चुम्बन, क्रि०वि० चूमना, छूना

चूड़ाकरन, ना०वा०सं०नपुं० मुंडन

चूड़ामणि, ना०वा०सं०नपुं० चोटी की मनि

चेता, ना०वा०भा०पुं० चित

चेरा, ना०वा०भा०पुं० चाकर दास

चेरी, ना०वा०भा०स्त्री० दासी

चोखा, ना०वा०भा०स्त्री० १ अच्छी वस्तु, २ जलरी

चोप, ना०वा०भा०पुं० उत्साह, उछाह

चौतनी, ना०वा०भा०स्त्री० सौ दोशिया टोपी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चौथपन, भा०वा०भा०स्त्री० बुढ़ौती
चौहट, ना०वा०भा०पुं० चौहटा, चौरहा
चंग, ना०वा०भा०पुं० गड़ी, पतंग
चंचरीक, ना०वा०भा०पुं० भ्रमर, भंवर
चंड, ना०वा०पुं० सं० तेजस्वी
चन्द्रिनी, ना०वा०स्त्री०भा० चांदनी
चन्द्रमौलि, ना०वा०सं०पुं० शिव, महादेव
चन्द्रमामुनि, ना०सं०वा०पुं० निशाकर नाम, अत्रि मुनिके पुत्रका नाम
चन्द्रहास, ना०वा०सं०पुं० तरवार
चन्द्रिका, ना०वा०सं०स्त्री० चांदनी

छ

छई, ना०वा०भा०पुं० रोग विशेष
छठे, वि०पुं०भा० छः
छत, ना०वा०भा०पुं० क्षत, फोड़ा, घाव
छति, ना०वा०भा०स्त्री० हानि
छन्न, वि०सं०कृ०नपुं० ढम्पा
छवि, ना०वा०सं०स्त्री० शोभा
छबीले, वि०भा०पुं० सुन्दर
क्षमा, ना०वा०भा०स्त्री० क्षमा १ पृथ्वी, २ सहना
छमि, क्रि०वि० क्षमाकरके
छरे, वि०भा०पुं० छूटे
छत्रक, ना०वा०भा०पु० भुइंफोर
छत्रबन्धु, ना०वा०सं०पुं० छत्री जाति में नीच
छाके, ना०वा०भा०पुं० मतवाला, मत्त
छाछी, ना०वा०स्त्री०भा० मंठा
छाजा, वि०स्त्री० सोहा, छाजना, सोहना
छाया, ना०वा०सं०स्त्री० १ छांह २ अंश
छारा, ना०वा०भा०स्त्री० राख
छाला, ना०वा०स्त्री० चर्म, चमड़ा
छांड़ा, वि०पुं०भा० त्याग, छोड़ा, रव
छिति, ना०वा०स्त्री०भा० क्षिति, पृथ्वी
छिद्र, ना०वा०पुं०भा० छेद
छीजहिं, क्रि०वि० घटते, छीजना, घटना
छीना, वि०पुं०भा० क्षीण, दुर्बल, रहित
छीन, वि०भा०पुं० कांटे
छीर, ना०वा०नपुं०भा० क्षीर, दूध
छुद्र, ना०वा०भा०नपुं० क्षुद्र, छोटा, तुच्छ
छुधित, वि०कृ०भा० क्षुधित, भूखा
छुह, वि०भा०पुं० चित्रित
छूछ, ना०वा०पुं०भा० खाली
छेका, ना०वा०पुं०भा० घेरा, रोकना, छेकना
छेमकरी, ना०वा०भा०पुं० पक्षी विशेष
छेमा, ना०वा०भा०पुं० क्षेम, सुख
छेत्र, ना०वा०भा०पुं० क्षेत्र, भूमि, खेत
छैल, ना०वा०भा०पुं० बांका
छोनिप, ना०वा०भा०पुं०भा क्षोणिप, राजा
छोभा, ना०वा०भा०स्त्री० क्षोभ, घबड़ाहट
छांहा, ना०वा०भा०स्त्री० परिछाहीं
छन्द, ना०वा०सं०नपुं० १ गायत्री आदि २ रचना ३ स्वतंत्र

ज

जंग, ना०वा०सं०पुं० १ संग्राम २ संसार
जगयोनी, ना०वा०भा०पुं० जग योनि, ब्रह्मा
जगत, ना०वा०भा०पुं० पृथ्वी
जगदीश, ना०वा०भा०पुं० जगदीश, १ राजा २ ईश्वर
जगदम्बा, ना०वा०भा०स्त्री० जगत की माता

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जयाति, ना०वा०सं०पुं० ययातिएक राजा कानाम
जटिल, वि०सं०पुं० जटाधारी
जठर, ना०वा०पुं०भा० १ बूढ़ा २ पेट
जठी, ना०वा०स्त्री०भा० बड़ीबूटी
जड़, ना०वा०पुं०सं० १ मूढ़ २ पर्वत आदि निर्जीव
जत, अ०वा० १ जितना २ यत्न, यतन
जतन, ना०वा०भा०पुं० यत्न, रक्षा, उपाय
जती, ना०वा०पुं०भा० यती, संन्यासी
जथा, अ० यथा, जैसे
जथायित, यथावस्थित, जैसा पहिले जैसाथा
जथोचित, क्रि०वि० यथोचित, यथा योग्य
जनक, ना०वा०सं०पुं० १ पिता २ सीताजी के पिता कानाम
जनकीय, ना०वा०भा०सं० जनक, जनक सम्बन्धी
जनयित्री, वि०स्त्री०सं० जननी, माता
जनि, नि०अ० नहीं, मत
जनित, वि०सं०कृ० उत्पन्न
जनेत, ना०वा०भा०पुं० बरात, जनता
जनेस, ना०वा०भा०पुं० जनेश, राजा
जनेषु, अ०वा० मनुष्यों में
जपति, क्रि०वा०सं० जपता है
जपामि, क्रि०वा०सं० मैं जपता हूं
जम, ना०वा०सं०पुं० १ यम, यमराज २ अहिंसा आदि
जमी, पु०वा०सं०पुं० यमी, संयमी
जमुन, ना०वा०भा०स्त्री० यमुना, जमुना नदी
जयति, क्रि०वा० जय होता है
जयेउ, क०वा० जीता, विजय किया
जयंत, ना०वा०सं०पुं० जयंता, इन्द्र के बेटे कानाम
जर, ना०वा०सं०पुं० चुर, क्षार
जरि, ना०वा०भा० जड़, मूल
जर्जर, ना०वा०सं०पुं० चीरा फाड़ा, झांझर
जलअलि, ना०वा०भा०पुं० जलभौंरा
जलकुक्कुर, ना०वा०भा०पुं० जलकुत्ता, सुसोंई
जलचर, ना०वा०सं०पुं० मछली आदि
जलज, ना०वा०सं०नपुं० कमल
जलजात, ना०वा०सं०नपुं० कमल
जलजान, ना०वा०भा०नपुं० जलयान, नाव जहाज़
जलद, ना०वा०सं०पुं० मेघ, बादल
जलधर, ना०वा०सं०पुं० मेघ, बादल
जलधि, ना०वा०सं०पुं० समुद्र
जलमल, ना०वा०सं०नपुं० फेन आदि
जलरासी, ना०वा०भा०पुं० जलराशि, समुद्र
जलरुह, ना०वा०सं०नपुं० कमल
जलविहंग, ना०वा०सं०पुं० जलपक्षी
जलाशय, ना०वा०भा०पुं० जलाशय, तलाव
जलन्धर, ना०वा०सं०पुं० दैत्य विशेष
जल्पक, वा०वा०सं०पुं० बोलने वाला, बकनेवाला
जल्पत, क्रि०वा० बकता है
जल्पसि, क्रि०वा० तू बकता है, जलपना
जल्पहिं, क्रि०वा० कहते हैं, जलपना
जवजिका, ना०वा०सं०स्त्री० २ कनात २ भेल

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जस०ना०वा०भा०पुं०१जैसा, २यश, कीर्ति
जसोमति, ना०वा०भा०स्त्री०यशोमति, यशोदा, जसोदा
जहि, वि०क्रि०जहि, जिसको, त्यागो, छोड़ो
जक्षपति ना०वा०भा०पुं०यक्षपति, कुबेर
जज्ञउपवीत, ना०वा०भा०पुं०यज्ञोपवीत जनेऊ
जाई ना०वा०भा०स्त्री०१बेटी २पैदा भई
जाग, ना०वा०सं०पुं०यज्ञ
जाणी, वि०स्त्री०भा०जाहिर, प्रगट
जाचक, ना०वा०भा०पुं०याचक, मंगन
जाचत, क्रि०वा०मांगता है
जाचा, वि०भा०पुं०मांगा, जाचना, मांगना
जातकर्म, ना०वा०सं०नपुं०लड़के के जन्म समय की नान्दी श्राद्ध आदि
जातना, ना०वा०सं०पुं०यातना, पीड़ा, तीव्र वेदना
जातरूप, ना०वा०सं०पुं०सोना, सुवर्ण
जातुधान, ना०वा०सं०पुं०राक्षस
जान, ना०वा०भा०पुं०१ज्ञान २जीव ३सवारी यान
जानपनी, ना०वा०भा०पुं०स्वरूप ज्ञान
जानी, गु०वा०भा०पुं०१ज्ञानी २स्त्री
जानु, ना०वा०सं०नपुं०घुटना
जापक, ना०वा०सं०पुं०जप करने वाला
जाम, ना०वा०प्रा०पुं०याम, पहर
जामाता, ना०वा०सं०पुं०दामाद
जामिक, ना०वा०प्रा०पुं०यामिक, पाहरू, पहरुआ, चौकीदार
जामिनि, ना०वा०प्रा०स्त्री०यामिनी, रात्रि, रात
जाय, अ०वृथा
जाया, ना०वा०स्त्री०सं०१स्त्री २उत्पन्न
जाल, वि०भा०पुं०१समूह २झरोखा ३फन्दा
जावक, ना०वा०भा०पुं०यावक, महावर
जावाली, ना०वा०सं०पुं०एक ऋषि का नाम
जिनस, ना०वा०भा०पुं०जाति
जिमि, अ०जैसे
जिवाये, वि०वा०पुं०भा०पाले, जियाना, पालना
जीव, आ०वा०१जीते रहो २जीवात्मा
जीवन, ना०वा०सं०नपुं०१आजीविका, रोजी २जीना ३जल, पानी
जीह, ना०वा०भा०स्त्री०जिह्वा, जीभ
जुग, ना०वा०भा०पुं०युग २सत्ययुग आदि
जुगल, ना०वा०भा०पुं०१युगल, दो
जुगविधि, ना०वा०भा०पुं०जुगविधि, शीत उष्ण दो विधि का ज्वर
जुझार, वि०पुं०लड़वैया, लड़ने वाला
जुटत, क्रि०वा०१लड़ते हैं, जुटना २लड़ना ३एकट्ठा होना
जुड़ाने, वि०शीतल भये, ठंडे भये
जुवती, ना०वा०भा०स्त्री०युवति जवान स्त्री
जुवराज, ना०वा०भा०पुं०युवराज, कुंवर भायब, राज्याधिकारी
जुवा, ना०वा०भा०पुं०युवा, जवान
जुवान, ना०वा०भा०पुं०जवान पुरुष
जुवारा, ना०वा०स्त्री०भा०जुवारा
जूझा, ना०वा०भा०पुं०लड़ाई, युद्ध

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जूथ, ना०वा०भा०पुं० यूथ, समूह
जूथप, ना०वा०भा०पुं० यूथप, सेनापति
जून, ना०वा०भा०पुं० १पुराना २समय
जूरी, ना०वा०भा०पुं० १समूह २जोड़करके, जूरना, जोड़ना
जूहा, ना०वा०भा०पुं० यूथ, समूह
जेई, क०वा०भोजन किया, जेवना, खाना
जोई, वि०भा०स्त्री० देखी, जोवना
जोऊ, क्रि०वा० देखना, जोवना
जोग, ना०वा०भा०पुं० १योग, अष्टांग २योग्य ३मिलाप, सम्बन्ध
जोगवत, ना०वा०भा०पुं० परिखत, खबरदारी करना, जतनकरना
जोजन, ना०वा०भा०पुं० योजन, चारकोस
जोड़ा, ना०वा०भा०पुं० जोड़ी, दोनों
जोती, ना०वा०सं०स्त्री० १ज्योति, प्रकाश २सूर्य्य
जोनी, ना०वा०भा०स्त्री० १योनि, कारण २जाति
जोवा, वि०भा०पुं० देखा, जोवना, देखना
जोषिता, ना०वा०भा०स्त्री० योषित, स्त्री
जोहारे, ना०वा०पुं० वि०भा० प्रणाम किया, जोहारना, प्रणामकरना
जोही, क्रि०वि० देखकरके, खोजकरके
जंगम, ना०वा०सं०पुं० चलने वाला
जन्तु, ना०वा०सं० क्षुद्रजीव
जंत्रित, क०वा० यंत्रित, तालादेदिया
जंत्री, क०वा० वशकिया, तालादेदिया
जखु, ना०वा०सं०पुं० जाशुन
जम्बुक, ना०वा०सं०पुं० सियार, शृगाल
ज्याय, वि०वा०ना०पुं० पाले, ज्याना, पालना

झ

झगुलिया, ना०वा०भा०पुं० चोलना, लड़कों काकुर्ता
झटति, अ० झटित, जलदी
झषकेतु, ना०वा०सं०पुं० कामदेव
झारी, ना०वा०भा०पुं० समूह
झाषा, क्रि०वा० झांखना
झोटिंग, ना०वा०भा०पुं० प्रेतभेद
झंई, ना०वा०भा०पुं० तिरमिराना, आंख के आगे अंधेरा
झंपेउ, ना०वा०भा०पुं० ढंपा, झंपना, ढपना
झांई, ना०वा०भा०स्त्री० परछाहीं, तिरमिराना
झोंटी, ना०वा०स्त्री०भा० चोटी

ट

टकोर, ना०वा०सं०स्त्री० ध्वनि, धुनि
टिड़िभ, ना०वा०सं०पुं० टिटिहरीपक्षी
टेई, क०वा० चोखा किया, तीखी किया टेवना, चोखाकरना
टेक, ना०वा०पुं०भा० १हठ २अवलंब
टेकी, ना०वा०भा०स्त्री० १हठ करके २निश्चयपद ३थापी
टेव, ना०वा०भा०पुं० बान, आदत
टेर, ना०वा०भा०पुं० पुकार

ठ

ठकुर, ना०वा०भा०पुं० ठाकुर
ठट्ठा, ना०वा०सं०पुं० समूह
ठटकि, क्रि०वि० रुक करके, ठठकना, रुकना
ठयउ, क०वा० किया, ठाना
ठवनि, ना०वा०भा०पुं० चाल, उठने की रीति

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ठाट, ना०वा०पुं०भा०१रचना २समूह
ठाना, क्रि०वा०१क्रिया २निश्चय, ठानना
ठाहर, ना०वा०आ०पुं० जगह, ठहर
ठीक, ना०वा०भा०पुं०निश्चय, ठीक
ठाऊं, ना०वा०पुं०भा० गांव, घर, जगह

ड

डगै, क्रि० वा० हिलना
डमरुआ, ना०वा०भा०पुं० घुटनेकीगांठमें कारोग, गठिया
डसि, क्रि०वि०काटकरके, डसना, काटना
डहकि, क्रि०वि०ठगकरके, डहकना, ठगना
डाढ़ा, ना०वा०भा०पुं० आग
डाढ़े, वि०पुं०भा० जरे
डावर, ना०वा०भा०पुं०गड़हा
डासन, ना०वा०पुं०भा०बिछौना, रसौना
डासी, क्रि०वि०बिछाकरके
डिंडिमी, ना०वा०पुं०भा० एकप्रकारका बाजा
डीठा, क०वा०देखा, दृष्टि
डीठी, क०वा०वि०देखी, दृष्टि
डेवढ़, अ०वा० डेवढ़ा
डोल, ना०वा०पुं०भा०१डोलना २तलाव ३हिंडोला
डोली, वि०स्त्री०भा० गई, डोलना

ढ

ढरी, क्रि०वा० खोजी, ढंढोरना, खोजना
ढलमनी, वि०स्त्री०भा० लुढ़कगई, ढलमनाना, लुढ़कना
ढावर, ना०वा० मैल
ढिग, अ० समीप
ढेक, ना०वा०भा०पुं० सारस पक्षी
ढोटा, ना०वा०पुं०भा० बेटा

त

तर्जनी, ना०वा०सं०स्त्री० अंगूठे के पासकी अंगुली
तज्ञ, ना०वा०सं०पुं०स्वरूप, ज्ञाता, तर, वह, ज्ञ, जाननेवाला
तर, ना०वा०सं०नपुं० तीर, किनारा, निकट
तड़ाग, ना०वा०पुं०भा० तलाव
तड़ित, ना०वा०सं०स्त्री० तड़ित, बिजली
तत्त्व, ना०वा०सं०नपुं० १सारवस्तु २प्रकृति आदि
तथा, अव्यय तैसे
तथापि, अव्यय तौभी
तदपि, अव्यय तौभी
तन, अ० जोर
तनकाऊ, अ० थोड़ा भी
तनय, ना०वा०पुं०सं०पुत्र, बेटा
तनया, ना०वा०सं०स्त्री० पुत्री, बेटी
तनु, ना०वा०सं०पुं० १शरीर २अल्प, थोड़ा ३विस्तार
तनुजा, ना०वा०सं०स्त्री० बेटी
तनोलु, आ०वि० बिस्तारकरे, फैलावे
तनोरुह, ना०वा०सं०नपुं० रोम, रोवां, जो शरीर में हुआ
तपोधन, ना०वा०सं०पुं० तपस्वी
तम, ना०वा०सं०नपुं० १अज्ञान २अन्धेरा ३तमोगुण ४अत्यन्त
तमकि, क्रि०वि० सरोष हो करके, तमककरके. तमकना
तमारि, ना०वा०सं०पुं० सूर्य्य
तमाल, ना०वा०सं०नपुं० वृक्ष विशेष

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तमी, ना०वा०स्त्री०सं० रात्रि, रात
तमीचर, ना०वा०सं०पुं० राक्षस
तर, ना०वा०सं०पुं० १तल, सर २अत्यन्त
तरक, ना०वा०पुं०मा० तर्क, विचार
तरकेउ, क्रि०वा० कूदा, तरकना, कूदना
तरजत, क्रि०वा० तड़पना, तरजना, तड़पना
तरजन, क्रि०वा० झिझकारना
तरजा०क०वा० कूदा, तरजना, कूदना
तरनतारन, ना०वा०सं०पुं० जो आपतरे और दूसरों को तारे
तरनि, ना०वा०मा०पुं० १तरणि, सूर्य्य २नाव
तरपहिं, क्रि०वा० तड़पते हैं
तरल, ना०वा०सं०पुं० १चंचल २तीक्ष्ण, चोखा
तरु, ना०वा०सं०पुं० वृक्ष, पेड़
तरुन, ना०वा०सं०पुं० तरुण, जवान
तरुनाई, भा०वा०भा०स्त्री० तारुण्य, जवानी
तरुनी, भा०वा०भा०स्त्री० तरुणी, जवान स्त्री
तरंग, ना०वा०पुं०सं० लहर
तरंगी, ना०वा०सं०पुं० बहुतरंगी, उच्छाह वाले
तरंगिनि, ना०वा०स्त्री०सं० तरंगिनी, नदी
तागा, ना०वा०भा०पुं० डोरा, तागा
ताजी, ना०वा०भा०पुं० घोड़ा विशेष
तातंक, ना०वा०पुं०भा० तरकी, बिरिया, करनफूल
ताड़त, क्रि०वि० पीटता, मारता
तात, ना०वा०सं०पुं० १पुत्र २पिता ३गरम तम, ४भाई ५सखा ६प्रिय
तापस, ना०वा०सं०पुं० तपस्वी
तापे, ना०वा०भा०पुं० तपे, तापना, तपना
तामरस, ना०वा०सं०नपुं० कमल
तामस, ना०वा०सं०पुं० तमोगुणी
तारक, ना०वा०सं०स्त्री० १मंत्र २दैत्य विशेष ३तारनेवाला, ४तारा, सितारा ५पुतली, आंख का तारा
तारा, ना०वा०सं०स्त्री० १बालिकी स्त्रीका नाम २सरई
तासू, ना०वा०भा०पुं० १तलाव, २वृक्षविशेष ३ताड़ी बजाना
ताल, ना०वा०भा०पुं० ताल वृक्ष
तिमिर, ना०वा०सं०नपुं० अन्धकार
तिसुहानी, भा०वा०भा०स्त्री० त्रिसुख, जहांतीनतरी मिलती है
तिय, ना०वा०स्त्री०भा०स्त्री, मेहरारू
तिरहुति, ना०वा०भा०पुं० एक देश का नाम
तिलक, ना०वा०सं०नपुं० १टीका २श्रेष्ठ
तिष्ठे, क्रि०रहे, तिष्ठना, रहना, (सं०स्था०)
तिहुंलोक, भा०वा०भा०पुं० तीनोलोक अर्थात् स्वर्ग, मर्त्यलोक, पाताल
तीक्षे, वि०व० तीक्ष्ण, चोखा, तेज
तीनकाल, ना०वा०भा०पुं० भूत, भविष्य, वर्त्तमान
तीरथपति, ना०वा०पुं० सं० तीर्थपति, प्रयाग
तीरथराज, ना०वा०सं०पुं० तीर्थराज, प्रयाग, इलाहाबाद
तीव्र, ना०वा०सं०पुं० तीक्ष्ण
तुभ्यं, स०ना०पुं०सं० तुम्हारेलिये, तुमको

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तुरग, ना॰ वा॰ पुं॰ सं॰ घोड़ा
तुराइ, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ १ तोसक २ वेगसे ३ तोड़ करके
तुला, ना॰ वा॰ भा॰ स्त्री॰ तराजू
तुसार, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ तुषार, पाला
तुहिन, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ पाला
तूनीर, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ तूणीर, तरकश
तूरी, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ तुल्य
तूल, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ १ रूई २ तुल्य, बराबर
तूंबरी, ना॰ वा॰ भा॰ स्त्री॰ तुंबड़ी
तृजग, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ तिर्यञ्च, पशु पक्षी आदि
तृण, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ तृण, तिनका
तृषित, वि॰ प्यासा
ते॰ स॰ ना॰ वा॰ १ वे २ वे ३ तेरा ४ तुमको
तेज, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ तेजस, प्रताप, आंच
तेति, सं॰ ना॰ वि॰ ते, अति, वे, बहुत
तोप्यो, वि॰ तोपा, ढांपा, तोपना, ढांपना
तोमर, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ १ शस्त्र विशेष २ एक प्रकार का छन्द
तोरावति, ना॰ वा॰ भा॰ स्त्री॰ त्वरावती, वेतावती
तोष, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ संतोष, तृप्ति
तोषये, सम्प्रदान॰ प्रसन्नता के लिये
त्वच, ना॰ वा॰ १ वकला, त्वचा २ स्पर्श की इन्द्री
त्वदीय, वि॰ तुम्हारा, तेरा
त्वदंघ्रि, वि॰ तुम्हारा चरण

थ

थकित, क॰ वा॰ पुं॰ भा॰ थका हुआ
थल, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ स्थल, भूमि, स्थान
थलचर, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ स्थल चर, थल चारी मनुष्य आदि
थाना, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ स्थान, ठिकाना
थिति, ना॰ वा॰ भा॰ स्त्री॰ स्थिति १ ठहराव २ पालन
थीर, ना॰ वा॰ स्त्री॰ भा॰ अचल, थिर

द

द, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ दाता, देने वाला
दच्छ, रा॰ वा॰ सं॰ पुं॰ दक्ष १ प्रजापति २ चतुर, निपुण
दच्छसुत, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ प्रचेता
दच्छसुता, ना॰ वा॰ सं॰ स्त्री॰ सती
दत्त, क॰ वा॰ दिया गया
दधि, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ दही
दधीचि, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ दधीच एक ऋषि का नाम
दनुज, ना॰ वा॰ सं॰ नपुं॰ दैत्य, दानव
दम, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ इन्द्रियों का रोकना
दमक, ना॰ वा॰ पुं॰ भा॰ चमक, दमकना
दमनीय, वि॰ सं॰ पुं॰ १ तोड़ने वाला २ दमन के योग्य
दमनू, वि॰ भा॰ पुं॰ नाश, नाश करने वाला
दम्पति, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ स्त्री पुरुष, जोड़ा
दर, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ १ शंख २ भय, डर, ३ छेद
दरबार, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ सभा
दरस, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ १ रूप २ दर्श, दर्शन
दरसी, वि॰ पु॰ भा॰ दर्शी, देखने वाला
दर्पी, ना॰ वा॰ पुं॰ भा॰ दर्प, अभिमान
दर्भ, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ कुश, कुसा, एक पकर की घास

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दल, ना॰ वा॰ सं॰ नपुं १ नाश २ पता ३ सेना ४ भाग
दलकि, क्रि॰ वि॰ दरकि, फटना, कूद उठना
दलमले, वि॰ व॰ पीस डाले, दलमलना
दलन, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ नाश
दलित, वि॰ सं॰ क्रि॰ टूटा
दव, ना॰ वा॰ सं॰ नपुं॰ वन की आग
दवारि, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ दावानल, वन की आग
दसन, ना॰ वा॰ पुं॰ भा॰ दशन, दांत
दहन, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ आग, अग्नि, जलानेवाले, जलाना
दा, ना॰ वा॰ सं॰ स्त्री॰ देनेवाली
दाड़िम, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ अनार
दाता, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ देनेवाला
दातार, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ दातृ, देनेवाला
दादुर, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ दर्दुर, मेढक, मेंडुका
दाप, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ दर्प १ बल २ गर्व, अभिमान
दाम, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ १ माला २ रस्सी ३ रुपया
दामिनि, ना॰ वा॰ भा॰ स्त्री॰ दामिनी, बिजुली
दायक, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ देनेवाला
दारन, ना॰ वा॰ पुं॰ भा॰ दारण, फाड़ना
दारय, वि॰ क्रि॰ नाश करो, फाड़ो
दारा, ना॰ वा॰ सं॰ स्त्री॰ स्त्री
दारिद्र, भा॰ वा॰ पुं॰ भा॰ दरिद्रता, दरिद्र
दारिका, ना॰ वा॰ स्त्री॰ सं॰ लड़की, कन्या
दारू, ना॰ वा॰ सं॰ स्त्री॰ लकड़ी, काठ
दारुन, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ दारुण, घोर
दारुनारि, ना॰ वा॰ भा॰ स्त्री॰ कठपुतली
दावन, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ नाश
दाह, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ जरना, जलाना
दिआसे, ना॰ वा॰ पुं॰ भा॰ दीपक, चिराग़
दिगम्बर, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ नंगा, वस्त्रहीन
दितिसुत, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ हिरण्याक्ष
दिनकर, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ सूर्य्य
दिनदानी, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ अति उदार, दिन दिन देनेवाला
दिनमनि, ना॰ वा॰ पुं॰ दिनमणि, सूर्य
दिनेस, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ दिनेश, सूर्य
दिशिप, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ इन्द्र कुबेर आदि
दिवस, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ दिन
दिव्यतन, ना॰ वा॰ भा॰ स्त्री॰ दिव्य तनु, अप्सरा
दिव्यदृष्टि, ना॰ वा॰ सं॰ स्त्री॰ अलौकिक ज्ञान
दिशि, ना॰ वा॰ भा॰ स्त्री॰ दिशा, ओर
दिशिराज, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ इन्द्र कुबेर आदि
दीछा, ना॰ वा॰ भा॰ स्त्री॰ दीक्षा, मंत्रोपदेश
दीनता, भा॰ वा॰ सं॰ स्त्री॰ गरीबी
दीसा; वि॰ पुं॰ देखा, दीसना
दुकूल, ना॰ वा॰ सं॰ नपुं॰ वस्त्र, पट, रेशमी कपड़ा
दुर्ग, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ १ गढ़, क़िला २ अगम
दुर्गम, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ अजय
दुर्घट, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ अगम, कठिन
दुनी, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ दुनिया, संसार
दुर्वचन, ना॰ वा॰ सं॰ नपुं॰ दुष्टवचन, गाली
दुर्वाद, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ दुर्वाद, दुष्टवचन, गाली

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दुर्वासा, ना०वा०सं०पुं० दुर्वासा, एक ऋषि का नाम
दुल्ल, ना०वा०पुं०सं० अन्नदिना
दुरतिक्रम, ना०वा०पुं०सं० दुस्तर
दुराधर्ष, ना०वा०सं०पुं० जो शत्रु से नहीं दबता
दुराराध्य, वि० दुःख से सेवने के योग्य
दुराव, ना०वा०भा०पुं० छिपाना, कपट
दुरासा, ना०वा०सं०स्त्री० नीच आशा
दुरित, ना०वा०सं०पुं० १पाप २छिपना
दुसह, भा०वा०सं०नपुं० दुस्सह, जो सहने के योग्य नहीं
दुष्टजंतु, ना०वा०सं०पुं० सर्प आदि
दुहाई, ना०वा०भा०स्त्री० १द्रोह २सौगंद, कसम
दुहि, ना०वा०भा०स्त्री० कामना
दुंदुभि, ना०वा०भा०पुं० १नगारा २देव का नाम
दूत, ना०वा०पुं०सं० हलकारा
दूना, प्रभा०वा० दुगुना, द्विगुण
दूधमुख, ना०वा०भा०पुं० बच्चा, लड़का
दूषन, ना०वा०भा०पुं० १एक राक्षस का नाम २दोष
दृग, ना०वा०सं०पुं० आंख
दृगांचल, ना०वा०सं०पुं० पलक
देव, ना०वा०सं०पुं० १देत्यों २देवता ३मद्य ४राजा
देवक, ना०वा०सं०पुं० देवका
देवतरु, ना०वा०सं०पुं० कल्पवृक्ष
देवधुनि, ना०वा०सं०स्त्री० गंगा
देवऋषि, ना०वा०सं०पुं० नारद
देवसर, ना०वा०सं०पुं० मानस आदि
देस, ना०वा०सं०पुं० देश, स्थान, मुल्क
दे अहि, क्रि०भा०वा० देवे को, भाग्य को
देतु, ना०वा०सं०पुं० भेद में, तू
दोष, ना०वा०सं०पुं० काम क्रोध आदि
दंड, ना०वा०सं०पुं० १लकड़ी २राजदंड, सजा ३घड़ी
दंडक, ना०वा०सं०पुं० १राजा २एक राजा, राजा नाम विशेष
दंभ, ना०वा०सं०पुं० पाषण्ड
दन्स, ना०वा०सं०पुं० वनमाछी
द्दवी, क्रि०वा० कृपा करो, वाकर, द्दवना, देखना
द्रुम, ना०वा०सं०पुं० पेड़, वृक्ष
द्रव्य, ना०वा०सं०नपुं० वस्तु
द्वंद्व, ना०वा०सं०पुं० दो, रोग द्वेषादि
द्वादश, सा०सा० बारह १२
द्विजराज, ना०वा०सं०पुं० द्विज राज, चन्द्रमा

ध

धन, ना०वा०सं०नपुं० १द्रव्य २धान्य
धनद, ना०वा०सं०पुं० कुबेर
धनिक, वि०पुं० धनी
धनी, वि०सं०पुं० स्वामी, धनवान, दौलतमन्द
धनु, ना०वा०सं०नपुं० धनुष
धनेसा, ना०वा०सं०पुं० धनेश, कुबेर
धन्या, ना०वा०सं०स्त्री० नदी विशेष
धन्वी, वि०पुं०सं० धनुषधारी
धर्मध्वज, ना०वा०पुं०सं० पाखण्डी
धर, ना०वा०सं०पुं० १धड़ २भूमि

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

धरनी, ना०वा०भा०स्त्री० पृथ्वी
धरषि, क्रि० वि० दबाकर, धरषना, दबाना
धरा, ना०वा०सं० स्त्री० पृथ्वी
धरासुर, ना०वा०सं०पुं० विप्र, ब्राह्मण
धवल, ना०वा०सं०पुं० खेत, सफेद
धाता, ना०वा०सं०पुं० ब्रह्मा
धाम, ना०वा०सं०नपुं० १घर २तेज ३वैकुंठादि
धारि, ना०वा०भा०स्त्री० सेना, फ़ौज
धारी, ना०वा०भा०स्त्री० १ सेना, २धरने वाला
धावन, ना०वा०सं०पुं० दूत, हरकारा
धिग, अ० धिक, धिक्कार
धुआ, ना०वा०भा०पुं० १मुरदा २मरण ३धूम्र
धुनि, क्रि० वि० ना०वा०सं०पुं० १धुनकरके कम्पाकरके, २शब्द, आवाज, ३व्यंग धुनना, कम्पाना
धुर, ना०वा०सं०पुं० १बोझा २मुख्य
धुरीन, ना०वा०सं०पुं० बोझाधरनेवाला
धूति, क्रि० वि० ठगकरके, धूर्तताकरके, धूतना, छलना
धूमकेतु, ना०वा०भा०पुं० धूमकेतु अग्नि, आ
धृति, ना०वा०स्त्री०सं० धीरज, धीरज
धेनु, ना०वा०सं०स्त्री० गैया, गौ
धेनुमति, ना०वा०सं०स्त्री० गोमती नदी
धोरी, ना०वा०भा०पुं० मुख्य बैल
धंधक, ना०वा०भा०पुं० धंधा, काम
धौं, अ०क्रि० पाकि
ध्रुव, ना०वा०पुं०सं० १ध्रुव, एकभक्तकानाम २निश्चय ३एकतारा का नाम

न

नई, ना०वा०स्त्री०भा० १नदी २नवीन
नए, क०वा० १नये २नवीन, नया
नकुल, ना०वा०सं०पुं० नेउर, नेवला
नक्र, ना०वा०सं०पुं० नाक्र, एकप्रकारका जलजंतु
नटत, क्रि०वा० नाचता है
नतरु, नि०अ० नहीं तो
नति, ना०वा०सं०पुं० नवना, प्रणाम
नफीरी, ना०वा०भा०पुं० सहनाई एकप्रकारका बाजा
नभग, ना०वा०सं०पुं० पक्षी
नभगेस, ना०वा०सं०पुं० नभगेश, गरुड़
नभचर, ना०वा०सं०पुं० पक्षी आदि
नमत, क्रि०वा० नमति, नमस्कारकरता है
नमामहे, क्रि०वा० हमलोग प्रणाम करते हैं
नमामी, क्रि० नमामि, प्रणाम करता हूं
नमित, क०वा० नवाया, नीचे किया
नम्र, ना०वा०सं०पुं० झुका
नय, ना०वा०सं०पुं० नीति, धर्म
नयन, ना०वा०सं०पुं० आंख
नयनपट, ना०वा०सं०पुं० पलक
नरहरि, ना०वा०सं०पुं० १नरहरिदास, तुलसीदासके गुरुका नाम २नृसिंह
नर्तक, ना०वा०पुं०सं० नट, नचनिया
नरतकी, ना०वा०सं०स्त्री० नटिन
नलिन, ना०वा०सं०नपुं० कमल
नर्मद, ना०वा०सं०पुं० सुखद
नलिनी, ना०वा०सं०स्त्री० कुमुदिनी, कमलनी
नव, ना०वा०सं०पुं० नया, नूतन

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नवजल, ना॰वा॰पुं॰सं॰ वर्षा का पानी
नवधा, प्र॰वा॰ नव प्रकार का
नवनीता, ना॰वा॰सं॰पुं॰ नवनीत, मक्खन
नवभक्ति, ना॰वा॰सं॰स्त्री॰ नौ प्रकार की भक्ति (टिप्पनी में देखो)
नवरस, ना॰वा॰सं॰पुं॰ शृंगारादि नव रस
नवल, ना॰वा॰सं॰पुं॰ १नया २जवान
नवसप्त, ना॰वा॰सं॰पुं॰ नव और सात अर्थात् सोलह शृंगार
नस, ना॰वा॰भा॰स्त्री॰ नाड़ी
नसाय, ना॰वा॰भा॰पुं॰ बिगड़े, नाश हो, नशाना, बिगड़ना
नसाना, क॰वा॰ नाश किया, नसावना, नाश करना
नखर, ना॰वा॰पुं॰भा॰ नश्वर, विनाशी, नाश होनेवाला
नखत, ना॰वा॰पुं॰भा॰ नक्षत्र
नहरुआ, ना॰वा॰भा॰पुं॰ जाँघ में सूत सा रोग जो निकलता है
नहारु, ना॰वा॰भा॰पुं॰ १चाम का टुकड़ा २व्याघ्र, बाघ
नाइ, क्रि॰वि॰ नवा करके, झुकके
नाई, सा॰वा॰क्रि॰वि॰ सदृश, की तरह
नाऊं, ना॰वा॰भा॰पुं॰ नाम
नाक, ना॰वा॰सं॰पुं॰ १स्वर्ग २नासिका
नाकनटी, ना॰वा॰सं॰स्त्री॰ अप्सरा
नाग, ना॰वा॰सं॰पुं॰ १हाथी २सांप
नागर, ना॰वा॰भा॰पुं॰ चतुर
नागरिपु, ना॰वा॰सं॰पुं॰ सिंह
नाठी, वि॰स्त्री॰ नष्ट हुई
नाद, ना॰वा॰सं॰पुं॰ शब्द, अवाज

नाना, अव अनेक
नानाकार, ना॰वा॰सं॰पुं॰ वत्सदंत, क्षुरप्र, अर्धचन्द्रादि भेदवाले अनेक आकार के
नामी, ना॰वा॰सं॰पुं॰ नाम वाला
नामानी, ना॰वा॰सं॰पुं॰ नाम का समूह
नायक, ना॰वा॰सं॰पुं॰ स्वामी, सर्दार
नयो, वि॰पुं॰भा॰ झुकावा
नारकी, ना॰वा॰सं॰पुं॰ नारकी, नरक वासी
नाराच, ना॰वा॰सं॰पुं॰ बाण, तीर
नाल, ना॰वा॰सं॰नपुं॰ डांड़ी
नावरि, ना॰वा॰भा॰पुं॰ नाव घुमाना
नाह, ना॰वा॰भा॰पुं॰ नाथ, पति, मालिक
निकर, पु॰वा॰सं॰नपुं॰ समूह
निकाई, भा॰वा॰स्त्री॰भा॰ भलाई, शोभा
निकाम, गु॰वा॰सं॰पुं॰ १अति, बहुत २ कामना रहित
निकाय, ना॰वा॰सं॰पुं॰ समूह
निकेत, ना॰वा॰सं॰पुं॰ घर
निकेतन, ना॰वा॰सं॰नपुं॰ घर
निकंद, ना॰वा॰सं॰पुं॰ नाश
निकन्दन, ना॰वा॰सं॰पुं॰ १नाश २नाश करनेवाला
निगम, ना॰वा॰सं॰पुं॰ वेद
निगूढ़ा, वि॰सं॰स्त्री॰ अतिगुप्त, बहुत छिपा
निगृह, ना॰वा॰सं॰नपुं॰ १रोष २दंड
निघटत, क्रि॰वि॰ अति कमता होना
निज, ना॰वा॰सं॰नपुं॰ १अपना २उत्कृष्ट
निजगति, ना॰वा॰सं॰पुं॰ अपनी गति
निजतंत्र, ना॰वा॰सं॰पुं॰ स्वतंत्र

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

निजधर्म, ना०वा०सं०पुं० मुख्यधर्म
निजानंद, ना०वा०सं०पुं० स्वरूपानंद
निजसुख, ना०वा०सं०पुं० आत्मसुख
निजसंधि, ना०वा०सं०पुं० १ अपनाछिद्र २ अवसर
नित, ना०वा०भा०पुं० १ सदा २ निमित्त, वास्ते
नित्य, ना०वा०सं०नपुं० १ सदा २ नित्यकर्म जैसे संध्या आदि
निदान, ना०वा०सं०नपुं० १ अंत २ कारण
निंदरि, क्रि०वि० निरादर करके
निधन, ना०वा०सं०पुं० मृत्यु, मौत, मरण
निधान, ना०वा०सं०पुं० १ धन २ आधार ३ खजाना
निधी, ना०वा०सं०पुं० १ बहुत धन, खजाना २ आधार ३ संख्या विशेष
निपट, वि०वा०सं०पुं० अति, बहुत
निपाता, क्रि०वा० नाश किया
निपुनाई, भा०वा०भा०स्त्री० निपुणता, चतुराई
निःपाप, ना०वा०सं०स्त्री० पापरहित
निबिड़, ना०वा०सं०पुं० सघन, घना
निबेरी, भा०वा०भा०स्त्री० १ चुकाई २ जवान स्त्री
निबेही, ना०वा०भा०स्त्री० १ निबहि, विवाह २ निरन्तर
निबुकि, क्रि०वि० छोड़ा करके, निबुकना छुड़ाना
निबृति, ना०वा०सं०पुं० निवृत्ति, संसार से छूटना
निभ, ना०वा०सं०नपुं० तुल्य, सदृश
निमि, ना०वा०सं०पुं० एक राजा का नाम
निमेष, ना०वा०सं०पुं० १ पलक मूंदना २ कालविशेष
नियराई, क्रि०वा० निकट पहुंचे, नियराना, निकट आना
नियोगा, ना०वा०सं०स्त्री० नियोग, आज्ञा
निरत, ना०वा०सं०पुं० अति प्रीति युक्त, लगातत्पर
निरबहई, भा०वा०भा०स्त्री० निबहे, निबहना
निरबहा, वि० निबहा, बचगया
निर्बाह, ना०वा०भा०पुं० निबाह किया
निरखि, क्रि०वि० देख करके निरीक्षण
निरस, ना०वा०भा०पुं० रस विना, सूखा, स्वादविना
निरस, क्रि०वा० निरस्य, त्याग करके
निर्गम, ना०वा०सं०नपुं० निकसना
निर्गता, ना०वा०सं०स्त्री० निकली
निर्जेषि, ना०वा०सं० नपुं० निश्चय
निर्झर, ना०वा०सं०पुं० झरना
निर्लेप, ना०वा०सं०पुं० वे लाग, लगाव नहीं
निर्विकल्प, ना०वा०सं०पुं० भेद रहित
निर्वहा, ना०वा०सं०पुं० बीतगया
निर्वानि, ना०वा०सं०नपुं० निर्वाण, मोक्ष, मुक्ति
निर्भर, ना०वा०सं०पुं० पूर्ण, पूरण, अतिशय
निर्मयउ, ना०वा०भा०पुं० निर्माण किया, बनाया, रचा
निर्मूल, ना०वा०सं०नपुं० मूलरहित, नाश
निरामिष, ना०वा०सं०नपुं० मांस विना

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

निरीश, ना० वा० भा० पुं० निरीस, विना मालिक

निरुपाधि, ना० वा० सं० नपुं० निरुपधि, उपाधि रहित, विनाप्रयोजन

निरुवारे, ना० वा० भा० पुं० खोले, निरुवारना, खोलना

निरुपन, ना० वा० भा० पुं० निरुपण, विस्तार सेकहना

निरंकुस, ना० वा० भा० पुं० निरंकुश, स्वतंत्र

निरंबु, ना० वा० सं० नपुं० जल विना

निरंजन, ना० वा० सं० नपुं० अविद्या, रहित, एगरहित

निवारक, ना० वा० सं० पुं० दूरकरनेवाला

निवारन, ना० वा० सं० पुं० निवारण, दूरकरना, हटना

निवास, ना० वा० सं० पुं० घर

निवेदित, वि० सं० कृ० अर्पित, नैवेद्य किया

निषाद, ना० वा० सं० पुं० मल्लाह

निषंग, ना० वा० सं० पुं० तरकश

निकेवल, ना० वा० सं० पुं० अकेला

निसरी, ना० वा० भा० स्त्री० निकली, निसरना, निकलना

निसागम, वि० भा० पुं० रात आये

निसाना, ना० वा० भा० पुं० नगारा, निशाना

निशि, ना० वा० भा० स्त्री० निशा, रात्रि, रात

निशिचर, ना० वा० भा० पुं० राक्षस

निसित, ना० वा० भा० कृ० निशित, तीखा, चोखा

निसेनि, ना० वा० भा० स्त्री० सीढ़ी

निसेस, ना० वा० भा० पुं० निशेश, चन्द्रमा, निशाकेईश

निसोत, ना० वा० सं० पुं० निरला, केवल

निहार, ना० वा० भा० पुं० देखा, निहारना, निरीक्षण, देखना

निहार, ना० वा० भा० पुं० कुहिरा

निहोर, ना० वा० भा० पुं० निहोरा, १ विनती २ उपकार

नीक, वि० वा० भा० पुं० अच्छा

नीच, ना० वा० भा० पुं० १ गड़हा २ नीच, कमीना

नीड़, ना० वा० सं० पुं० खोता, घोसला

नीर, ना० वा० सं० नपुं० पानी, जल

नीरज, ना० वा० सं० नपुं० कमल

नीरधर, ना० वा० सं० पुं० बादल, मेघ

नील, ना० वा० सं० पुं० श्यामरंग

नीलकंठ, ना० वा० सं० पुं० मोर, मयूर

नीलोपल, ना० वा० सं० नपुं० नीलमणि

नेइ, विषेधार्थक, नेव, इसतरह नहीं

नेकु, ना० वा० भा० पुं० थोड़ासा, थोरिक

नेग, ना० वा० भा० पुं० पुरोहित आदिका कर

नेति, निषेधार्थक, नस्ति, नहीं ऐसा

नेम, ना० वा० भा० पुं० शौच संतोष आदि नियम

नैहर, ना० वा० भा० पुं० स्त्रीका निजघर, मातृघर, मैका

नोइ, ना० वा० भा० स्त्री० गायके पांव बांधने की रस्सी दुहने के समय

नोमि, क्रि० वा० मैं स्तुति करताहूं

नोमी, ना० वा० भा० स्त्री० नवमी तिथि

नंचहि, क्रि० वा० नाचते हैं

नन्दिनि, ना० वा० सं० स्त्री० नन्दिनी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नरीसुत, ना०वा०सं०पुं० श्राद्ध विशेष

प

पगु, ना०वा०भा०पुं० १पांव २लगन
पटल, ना०वा०सं०पुं० १समूह २ढपना
पटतर, ना०वा०भा०पुं० उपमा, बरोबर
पट, ना०वा०सं०पुं० कपड़ा, वस्त्र
पटु, ना०वा०सं०पुं० चतुर, सुन्दर
पटोरे, ना०वा०पुं०भा० पटोरे, रेशमी कपड़ा
पटली, ना०वा०भा०स्त्री० पलङ्ग
पठ, ना०वा०भा०पुं० पढ़ना
पत्ति, ना०वा०भा०स्त्री० १पक्षी २काम से
पताका, ना०वा०सं०स्त्री० ध्वजा
पति, ना०वा०सं०पुं० राजा १स्वामी २भर्तार, खसम, ३प्रतिष्ठा
पतिदेवता, ना०वा०सं०स्त्री० पतिव्रता
पतिनिहिं, कर्मकारक पत्नी को
पतिलोक, ना०वा०सं०नपुं० हिमाचल
पतंग, ना०वा०सं०पुं० १सूर्य २क्षुद्रजीव, फतिंगा ३गेंद ४लालरंग
पतंति, क्रि०वा० गिरते हैं
पत्र, ना०वा०सं०नपुं० १चिट्ठी २पत्ता
पथिक, ना०वा० ०पुं० राही, मुसाफ़िर, बटोही
पथ्य, ना०वा०सं०पुं० गुनकारी
पंथ, ना०वा०सं०पुं० राह, मार्ग
पद, ना०वा०सं०पुं० १पांव २स्वरूप ३अधिकार
पदचर, ना०वा०सं०पुं० पैदल०प्यादे
पदज, ना०वा०सं०पुं० पांव की अंगुरी
पदत्राणी, ना०वा०सं०पुं० प्यादे, पैदल
पदज्ञान, ना०वा०सं०पुं० जूता
पदपीढ़ा, ना०वा०भा०पुं० खड़ाऊं, पांव रखने की चौकी
पदालि, ना०वा०सं०पुं० प्यादे, पैदल
पदादपि, पद से भी
पदारथ, ना०वा०भा०पुं० पदार्थ, वस्तु, सब चीज़
पदिक, ना०वा०भा०पुं० जड़ाऊ चौकी
पदुम, ना०वा०भा०पुं० पद्म, कमल
पदुमराग, ना०वा०सं०पुं० लालमणि
पन, ना०वा०भा०पुं० प्रण, प्रतिज्ञा, अवस्था
पनाद, ना०वा०सं०पुं० ढोल
पनस, ना०वा०सं० कटहर
पनिघर, ना०वा०भा०पुं० पानी भरने का घाट
पबारे, क्रि०वा० फेंके, डारे, पवारा, फेंकना
पवि, ना०वा०सं०पुं० हीरा पवि, वज्र
पय, ना०वा०सं०नपुं० १दूध २पानी
पयद, ना०वा०सं०पुं० १घन २बादल
पयनिधि, ना०वा०भा०पुं० क्षीरसमुद्र
पयाना, ना०वा०भा०स्त्री० प्रयाण, यात्रा
पयोधि, ना०वा०पुं०सं० समुद्र
पयोनिधि, ना०वा०सं०पुं० समुद्र
पर, ना०वा०सं०पुं० १और २शत्रु ३शिरोमणि ४परे ५तत्पर ६उपरान्त
परछिद्र, ना०वा०सं०पुं० १पराया छिद्र २पराया दोष
परत्र, अ०वा० परलोक
परधान, ना०वा०भा०पुं० प्रधान, मुख्य
परना, ना०वा०भा०पुं० पर्ण, पत्ता
परब, ना०वा०भा०पुं० १पर्व २गांठ

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परम, ना०वा०सं०पुं० बड़ा, अति, उत्तम
परमा, ना०वा०सं०स्त्री० बहुत शोभा
परमिति, ना०वा०सं०स्त्री० अवधि, मर्यादा
परमान, ना०वा०सं०नपुं० यथार्थ २ प्रत्यक्ष, आदि प्रमाण
परमारथ, ना०वा०सं०पुं० तत्व वस्तु
परस, ना०वा०भा०पुं० १ छूना २ पारस पत्थर
परसि, क्रि०वि० छू करके
परसु, ना०वा०भा०पुं० फरसा
परसुधर, ना०वा०सं०पुं० परशुराम
पराई, वि०स्त्री०भा० भागना २ दूसरेका ३ पराना, भागना, पलायन
पराग, ना०वा०सं०पुं० पराग, धूलि, कमल का रज
पराभव, ना०वा०सं०पुं० १ निरादर २ प्रलय
परावर, ना०वा०सं०पुं० ब्रह्मादि और, मनुष्यादि
परि, अ०वा०भा०पुं० अति, चारों ओर
परिकर, ना०वा०सं०पुं० कमर
परिघ, ना०वा०सं०पुं० ओंड़ा
परिचरजा, ना०वा०भा०स्त्री० परिचर्या, सेवा
परिचारक, ना०वा०सं०पुं० सेवक
परिचारिका, ना०वा०सं०स्त्री० दासी, लौंड़ी
परिच्छिन्न, ना०वा०सं०कृ० अव्यापक, घेरा गया
परिताप, ना०वा०सं०पुं० संताप
परितापी, ना०वा०सं०पुं० दुख देनेवाला
परितोष, ना०वा०सं०पुं० प्रसन्नता, संतोष
परित्राता, ना०वा०सं०पुं० रक्षक
परिधान, ना०वा०सं०नपुं० पहिरावा
परिनाम, ना०वा०भा०पुं० १ अवस्था २ अंत ३ फल
परिपाका, ना०वा०भा०पुं० अच्छा फल
परिपाटी, ना०वा०सं०स्त्री० परम्परा की रीति
परिहरि, ना०वा०पुं०भा० छोड़ करके, परिहरण
परिहास, ना०वा०भा०स्त्री० व्यंग वचनके साथ निन्दा
परुष, ना०वा०सं०पुं० कठोर
परे, ना०वा०सं०पुं० परलोक में
परेस, ना०वा०भा०पुं० परेश, परमेश्वर
परंतु, अ० लेकिन, उपरान्त
पलोटत, ना०वा०पुं०भा० धीरे से पांवदाबना, पलोटना
पल्लव, नया पत्ता
पल्लवित, वि०सं०कृ० १ नये पत्ते के साथ २ शोभान्वित
पवन, ना०वा०सं०पुं० वायु, बतास
पश्यंति, क्रि०वा० देखते हैं
पश्यामि, क्रि०वा० मैं देखता हूं
पसारु, ना०वा०भा०पुं० सुरंग
पखारे, ना०वा०पुं०भा० प्रक्षालन, धोये, पखारना, धोना
पखाए, ना०वा०पुं०भा० पद, पन्द्रह दिन
पसाउ, ना०वा०भा०पुं० प्रसाद, प्रसन्नता कृपा
पहुनई, ना०वा०भा०स्त्री० मेहमानी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पाइक, ना०वा०पुं०भा०१पियादा २मल्ल
पाक, ना०वा०सं०पुं० १रसोई २एक असुर का नाम ३पक
पाकरिपु, ना०वा०सं०पुं० इन्द्र
पाकी, ना०वा०सं०पुं० परिपक्व
पागे, वि०भा०पुं० साने, पागना
पाट, ना०वा०सं०पुं० रेशम
पाटमहिषी, ना०वा०स्त्री०सं० पटरानी
पाटल, ना०वा०सं०पुं० १गुलाब २वृक्ष विशेष
पाटे, वि०पुं०भरदिया, पाटना, भरदेना
पाठ, ना०वा०सं०पुं० पढ़ना
पाठक, ना०वा०सं०पुं० पढ़ानेवाला
पाठीन, ना०वा०भा०पुं० पढ़िना मछली
पातक, ना०वा०सं०नपुं० पाप
पात्र, ना०वा०सं०नपुं० बरतन, योग्य
पाथ, ना०वा०सं०पुं० जल, पानी
पाथोज, ना०वा०सं०नपुं० कमल
पाथोद, ना०क्रि०सं०पुं० बादल, मेघ
पाथोधि, ना०वा०सं०पुं० समुद्र
पादप, ना०वा०सं०पुं० वृक्ष, पेड़
पान, ना०वा०सं०पुं० १पीना २पत्ता ३मद्य पान, शराब पीना
पानि, ना०वा०भा०स्त्री० पाणि, हाथ
पार्थिक, ना०वा०भा०पुं० पार्थिव, शिव
पारहिं, क्र०वा० सकते हैं, पारना, सकना
पारा, १वि० गिराया, पारना २समर्थ ३पार
पारावत, ना०वा०सं०पुं० कबूतर
पारी, वि०स्त्री०भा०डारी, फेकी, पारना, फेकना
पालव, ना०वा०भा०पुं० १पल्लव, पत्ता, २शाखा, डार
पाले, वि०भा०पुं० अधीन
पावक, ना०वा०सं०पुं० अग्नि, आग
पावन, ना०वा०सं०पुं० पवित्र
पावस, ना०वा०भा०पुं० वर्षाऋतु
पाख, ना०वा०भा०पुं० पक्ष, पन्द्रह दिन
पास, ना०वा०भा०पुं० पाश, फांसी, फंसड़ी
पाहन, ना०वा०भा०पुं० पाषाण, पत्थर
पांवर, ना०वा०सं०पुं० पामर, नीच, मूढ़
पांवरी, ना०वा०स्त्री०भा० पादुका, खड़ाऊं
पांवड़े, ना०वा०भा०पुं० पांव रखने का वस्त्र
पाहि, क्रि०वा० वि० क्रि० रक्षा करो
पाहीं, ना०वा०भा०पुं० पास
पिक, ना०वा०सं०पुं० कोयल
पिता, ना०वा०सं०पुं० बाप, रक्षक
पिनाक, ना०वा०सं०पुं० महादेव का धनुष
पिपीलिका, ना०वा०सं०स्त्री० चिउंटी
पिरीते, ना०वा०भा०पुं० प्रीत, प्रीतम, प्रीतियुत
पिरोजा, ना०वा०भा०पुं० जंगाली रंग का मणि
पिशुन, ना०वा०सं०पुं० चुगुल
पी, ना०वा०भा०पुं० प्रिय, पति
पीठ, ना०वा०सं०नपुं० आसन, पीढ़ा
पीन, गु०वा०सं०पुं० पुष्ट, मोटा
पीयूष, ना०वा०सं०नपुं० अमृत
पीवर, गु०वा०सं०पुं० पुष्ट, मोटा
पुट, ना०वा०सं०पुं० दोना
पुटी, ना०वा०सं०स्त्री० दोना
पुनी, ना०वा०सं०स्त्री० पवित्र
पुनीत, ना०वा०सं०क्रि० पवित्र

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बर्ग, ना०वा०भा०पुं० वर्गजाति, समूह
बर्बर, ना०वा०सं०पुं० १ अधम, नीच २ बकवादी
बर्म, ना०वा०सं० नपुं० बख्तर
बर्य, ना०वा०सं० नपुं० वर्य, श्रेष्ठ
बर्षासन, ना०वा०सं० नपुं० वर्षाशन, वर्षा ऋतु का भोजन
बल, ना०वा०सं० नपुं० ज़ोर, सेना
बलकल, ना०वा०सं० नपुं० बल्कल, बाकला
बलकावा, ना०वा०भा०स्त्री० ऐंठ की बातें
बलाक, ना० वा० सं०पुं० बगुला
बलाहक, ना० वा० सं०पुं० बादर, मेघ
बलि, ना०वा०भा० स्त्री० १ बखरा, हिस्सा २ पूजा ३ बलिदान ४ राजा बलि ५ नेछावर
बलित, वि० सं० कृ० वेष्टित, घेरा गया
बलीमुख, ना० वा० सं०पुं० बानर
बल्ली, ना०वा०सं०स्त्री० बबर, लता
बखाना, ना० वा०भा०स्त्री० २ स्तुति २ कहा
बसत, क्रि० वा०वि० बसें, रहें
बसन, ना०वा०सं० नपुं० कपड़ा
बसबर्ती, ना०वा० वि० बशबर्ती, अधीन
बसासि, अन्न०वा० तू बसता है
बसह, ना०वा०पुं०भा० बैल
बसीठी, ना०वा०पुं०भा० दूत, हरकारा
बसुधा, ना०वा०सं० स्त्री० पृथ्वी
बस्य, ना०वा०सं०पुं० स्त्री० वश्य, अधीन
बह, क्रि०वा० चलना, बहना
बहरावा, वि०भा०पुं० बहरि आवा, सुन करके अनसुनी किया

बहहिं, क्रि०वा० उठाते हैं
बहना, ना०वा०भा०पुं० उठाना, लेजाना
बहुकालीना, ना०वा०सं०स्त्री० बहुकालीन, बहुत कालका
बहुधा, अव्यय बहुत प्रकार से
बहुबाहु, ना०वा०सं०पुं० रावण
बहुरहिं, क्रि०वा० फिरें
बहरि, अव्यय फिर
बहुरे, वि०पुं०ना० फिरे
बहुरना, ना०वा०भा०पुं० फिरना
बहू, ना०वा०भा०स्त्री० १ वधू, स्त्री २ बहुत, बहु
बहोरी, अव्यय १ बनाव २ फिर
बा, अव्यय, वा०अथवा, या
बाऊ, ना०वा०भा०स्त्री० वायु, पवन
बाचा, ना०वा० सं०स्त्री० वाच, वाणी
बागीसा, ना०वा० सं०स्त्री० वागीश, ब्रह्मवाणी
बगुर, ना०वा०भा०पुं० फंदा, जाल
बाचाल, ना०वा०पुं०भा० बाचाल १ पंडित २ बकवादी
बाजा, ना०वा०भा०पुं० लड़ा, लड़ाई, वा० जना, लड़ना
बाजिमेध, ना०वा०सं०पुं० अश्वमेधयज्ञ
बाजि, ना०वा०सं०पुं० वाजी, घोड़ा
बाट, ना०वा०भा०पुं० पथ, राह, रस्ता
बाटपरे, क्रि०वा० रोजगार जाय
बाटिका, ना०वा०सं०स्त्री० वाटिका, फुलवारी, बगा
बात, ना०वा०सं०स्त्री० बात, पवन, हवा, वायु

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बाति, ना०वा०सं०स्त्री० वत्ती, वर्तिका
बातुल, ना०वा०भा०पुं० वातुल, वोमका, वाई चढ़ी
बादल, ना०वा०भा०पुं० बादल, मेघ
बादि, ना०वा०भा०पुं० १वृथा २ वास्ता, प्रयोजन
बादिनि, ना०वा०सं०स्त्री० वादिनी, वोलन वाली
बादी, ना०वा०सं०पुं० वादी, कहनेवाला
बाधक, ना०वा०सं०पुं० दुःखद, विघ्न, रोकनेवाला
बाधा, ना०वा०सं०पुं० विघ्न, रोक, दुःख
बान, ना०वा०सं०पुं० १वाणासुर, २ वाण, वीर ३ रंग ४ स्वभाव ५ वाना
बानेत, ना०वा०पुं०भा०वीरवाना फेकनेवाला, विरदैत
बापिका, ना०वा०स्त्री०सं० वावली
बापुरे, ना०वा०भा०पुं० १क्षयी रोगवाला २तुच्छ, वपुरा
बाम, ना०वा०सं०पुं०१धाम, स्त्री २ वामा
बाय, क्रि०वि० पसार करके, वाना, पसारना
बायन, ना०वा०भा०पुं० वैना, नेवना
बायस, ना०वा०सं०पुं० वायस, कौवा
बायें, वि०पुं०भा०वाम, वामा
बार, ना०वा०सं०पुं० १वारम्वार २ दिन ३ समूह ४ वेर ५ ओर ६ काल
बारन, ना०वा०सं०पुं० वारण, हाथी
बारय, वि०क्रि० दूर करो, वारना, दूर करना
बारह्बाट, ना०वा०भा०पुं० सहस नंहस, मोहादिवारह रस्ता
बारहि, भा०वा०भा०पुं० लड़कापन
बारि, भा०वा०सं०पुं० वारि, जल
बारिचरकेतु, ना०वा०सं०पुं० कामदेव
बारिज, ना०वा०सं०नपुं० वारिज, कमल
बारिद, ना०वा०सं०पुं० वारिद, मेघ, वादल
बारिधर, ना०वा०सं०पुं० वादल, मेघ
बारिधि, ना०वा०सं०पुं० समुद्र
बारिस, ना०वा०भा०पुं० वारीश, समुद्र
बारिहनार, ना०वा०सं०पुं० मेघनाद
बारी, ना०वा०भा०पुं० १जल, पानी २फुलवारी ३ छोटी ४ निछावर, वारना
बारुनी, ना०वा०भा०स्त्री० वारुणी, मदिरा, शराब
बारे, ना०वा०पुं०भा० १ छोड़ करके, २वालक
बाल, ना०वा०सं०पुं० १वालक २सुई ३केश
बाला, ना०वा०सं०स्त्री० वाला, स्त्री
बासन, ना०वा०पुं०भा० १वरतन २सुगंध, ३निवास
बासर, ना०वा०सं०पुं० वासर, दिन
बासव, ना०वा०सं०पुं० वासव, इन्द्र
बाहन, ना०वा०भा०पुं० वाहन, सवारी
बाहिज, ना०वा०भा०पुं० वाह्य, वाहरी, बाहर से
बाहिनी, ना०वा०भा०स्त्री० वाहिनी, सेना
विकट, गु०वा०भा०पुं० १विकट, भयंकर, ढेढ

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुर, ना० वा० सं० पुं० १ नगर, पुरा, गांव २ दैत्य विशेष
पुरट, ना० वा० सं० नपुं० सोना, कंचन
पुरान, ना० वा० भा० नपुं० १ पुराण २ पुराना
पुराकृत, वि० कृ० सं० पहिले किया गया
पुरारि, ना० वा० सं० पुं० शिव, महादेव
पुरुष, ना० वा० सं० पुं० १ मनुष्य २ पुरुषा
पुरोडास, ना० वा० सं० पुं० यज्ञका हव्य
पुरोधा, ना० वा० सं० पुं० पुरोहित
पुरन्दर, ना० वा० सं० पुं० इन्द्र
पुलक, ना० वा० सं० पुं० रोमांच
पुलस्ति, ना० वा० सं० पुं० एक ऋषिका नाम
पृथ्वि, ना० वा० भा० स्त्री० एथ्वी
पुंगव, ना० वा० सं० पुं० श्रेष्ट
पुंज, ना० वा० सं० पुं० समूह
पूग, ना० वा० सं० पुं० सुपारी २ समूह
पूजनीय, ना० वा० सं० पुं० सेवाके योग्य
पूजिहि, क्रि० वा० पूर्ण होगा, पूजना, पूर्ण होना
पूजी, वि० स्त्री० भा० पूरी हुई
पूज्य, वि० सं० कृ० पूजने के योग्य
पूतरी, ना० वा० भा० स्त्री० १ कठपुतली २ आंख की पुतली
पूप, ना० वा० सं० पुं० मालपुआ
पूय, ना० वा० सं० पुं० पीव
पूर, ना० वा० सं० पुं० १ सम्पूर्ण २ उत्तर ३ कान का गहना
पूरुष, ना० वा० सं० पुं० पुरुष
पूषन, ना० वा० सं० पुं० सूर्य्य
पृथक्, अव्यय अलग, मुद्दा

एथुराज, ना० वा० सं० पुं० एक राजाका नाम जिसने एथ्वीको दुहा है
एष्ट, ना० वा० सं० पुं० पीठ
पेलिहहिं, क्रि० वा० ना० त्याग
पेली, ना० वा० सं० पुं० त्याग
पेषन, क्रि० वा० प्रेक्षण, देखना, तमाशा
पेषिय, क्रि० वि० सं० प्रेक्ष्य, देखनेके योग्य
पैसार, वि० क्रि० प्रवेश, पैठाव
पोच, गु० वा० सं० पुं० नीच, बुरा
पोत, ना० वा० सं० पुं० जहाज़ २ बालक
पोतक, ना० वा० सं० पुं० बालक
पोषत, ना० वा० पुष्ट करता है, पोषण, पोषना
पोसो, वि० भा० पाला, पोसना, पालना
पंकरुह, ना० वा० सं० नपुं० कमल
पंगु, ना० वा० सं० पुं० लंगड़ा
पंचकवलि, ना० वा० सं० पुं० पंचग्रास
पंचदश, ना० वा० पन्द्रह
पंचसबद, ना० वा० भा० पुं० पांच बाजा नगारा आदि
पंजर, ना० वा० सं० पुं० पिंजरा
पंथ, ना० वा० सं० पुं० रस्ता
प्रकार, ना० वा० सं० पुं० रीति
प्रकाशक, ना० वा० भा० पुं० प्रकाशक, प्रकाश करनेवाला
प्रकाश्य, क० वा० कृ० प्रकाश्य, प्रकाशके योग्य
प्रकृति, ना० वा० सं० स्त्री० १ माया २ स्वभाव ३ संसार
प्रकृष्ट, गु० वा० सं० पुं० श्रेष्ठ
प्रगल्भ, ना० वा० सं० पुं० शास्त्रसे विजयी
प्रचार, ना० वा० सं० पुं० विस्तार, फैलना

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्यारे, क्रि॰ वि॰ सत्कारके
प्रजारी, वि॰ स्त्री॰ भा॰ जलाई
प्रजाना, क्रि॰ वा॰ जलाना
प्रजासन, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ प्रजाशन, प्रजा का भोजन
प्रजेस, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ प्रजेश, दक्ष प्रजापति
प्रजन्न, अव्यय पर्यंत, तक, लों
प्रति, अव्य॰ पास २ सम्मुख ३ विरुद्ध
प्रतिउपकार, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ प्रत्युपकार, उपकार का बदला
प्रतिकूला, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ विमुख
प्रतिछाही, ना॰ वा॰ भा॰ स्त्री॰ प्रतिछाया, परिछाही
प्रतिपक्षी, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ प्रतिपक्षी, शत्रु
प्रतिपाद्य, वि॰ सं॰ कृ॰ वर्णन के योग्य
प्रतिभट, ना॰ वा॰ अव्ययीभाव, समान वीर
प्रतिमा, भा॰ वा॰ सं॰ स्त्री॰ मूर्ति
प्रतिमूरति, ना॰ वा॰ सं॰ स्त्री॰ प्रतिबिम्ब, परिछाहीं
प्रतिबिम्ब, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ परिछाही
प्रत्यूह, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ विघ्न
प्रथम, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ पहिले, मुख्य
प्रथमगति, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ ज्ञान
प्रद, वि॰ सं॰ पुं॰ देनेवाला
प्रदेश, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ प्रदेश, १ खंड भूमि, २ प्रदेश
प्रदोष, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ संध्याकाल, रात्रि का आना
प्रधान, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ १ मुख्य २ मंत्री
प्रनत, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ अतिनम्र, शरणागत
प्रनय, भा॰ वा॰ भा॰ पुं॰ प्रणय, प्रेम
प्रनवौं, क्रि॰ वा॰ प्रणाम करताहूं, प्रनवना
प्रपंच, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ १ संसार २ कपट, छल
प्रबंध, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ १ रचना २ बन्दोबस्त
प्रबीन, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ प्रवीण, चतुर
प्रबोध, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ उपदेश, ज्ञान
प्रबोधक, वि॰ सं॰ पुं॰ जनाने वाला
प्रभा, ना॰ वा॰ सं॰ स्त्री॰ प्रकाश
प्रभाऊ, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ प्रभाव, प्रताप
प्रभु, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ १ स्वामी २ राजा ३ समर्थ
प्रभंजन, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ पवन, हवा
प्रमदा, ना॰ वा॰ सं॰ स्त्री॰ स्त्री, मेहरारू
प्रमाद, भा॰ वा॰ भा॰ असावधानता
प्रयांति, क्रि॰ वा॰ प्राप्त होते हैं
प्रलंब, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ विशाल, बड़ा
प्रलाप, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ अर्थरहित वचन
प्रसन्न, वि॰ कृ॰ सं॰ १ हर्षित २ निर्मल
प्रसव, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ उत्पत्ति
प्रसाद, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ १ प्रसन्नता, कृपा २ भोजन
प्रसीद, क्रि॰ वा॰ प्रसन्न हो
प्रहली, ना॰ वा॰ सं॰ स्त्री॰ उत्पत्ति
प्रसून, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ फूल
प्रसंग, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ सम्बन्ध, कथा की चर्चा
प्रसंसक, वि॰ पुं॰ भा॰ प्रशंसक, स्तुति करनेवाला
प्रसंसा, ना॰ वा॰ भा॰ स्त्री॰ प्रशंसा, स्तुति सराहना

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रख्यित, ना०वा०सं०स्त्री० कीर्ति
प्रहार, ना०वा०सं०पुं० मार, मारना
प्राकृत, ना०वा०सं०पुं० १ अयोग्य २ माया का विकार ३ साधारण मनुष्य
प्राकृतकवि, ना० वा०सं०पुं० सूरदास जी आदि
प्राची, ना०वा०सं०स्त्री० पूर्वदिशा, पूरब
प्रात, अव्यय सवेरा, तड़का
प्रातकृत, ना०वा०सं०पुं० स्नान संध्या आदि
प्रातक्रिया, ना०वा०सं०स्त्री० स्नानसंध्या आदि
प्राननाथ, ना०वा०सं०पुं० प्राणनाथ, पति
प्राविट, ना०वा०सं०स्त्री० वर्षाऋतु
प्रियतम, ना०वा०सं०पुं० अत्यन्त प्रिय
प्रीता, वि०सं०पुं० मित्र
प्रेत, ना०वा०सं०पुं० शव, मुरदा
प्रेतनिवास, ना०वा०सं०पुं० मसान
प्रेरक, वि०सं०पुं० आज्ञा करनेवाला, प्रेरणा करनेवाला
प्रेरित, क०वा०सं०पुं० आज्ञाकियागया
प्रेरे, वि० पठाया, भेजा, प्रेरणा, भेजना
प्रोक्त, वि०सं०कृ० कहागया, कहा
प्रोढ़, गु०वा०सं०पुं० १ बड़ा २ मोटा
प्रौढ़ि, ना०वा०सं०स्त्री० अभिमान से कहना

फ

फटिक, ना०वा०भा०पुं० स्फटिक, बिल्लौर
फनि, ना०वा०सं०पुं० फणी, सर्प
फनिक, ना०वा०भा०पुं० फणिक, सांप
फल, ना०वा०सं०पुं० १ अर्थ धर्म काम मोक्ष २ मेवा
फलित, वि०कृ०पुं० फल समेत
फहराई, क्रि०वा० कूदते हैं, फहराते हैं
फाबी, वि०स्त्री०भा० १ मजबूत २ फबी, फबना, सजना
फुर, ना०वा०भा०पुं० सत्य, सांच
फुलवाइ, ना०वा०भा०स्त्री० फुलवारी, फूलका बाग़

ब

बक, ना०वा०भा०पुं० बक, बगुला
बकता, वि०सं०पुं० वक्ता, कहनेवाला
बकुल, ना०वा०सं०पुं० मौलसिरी, मुरसली
बक्र, गु०वा०सं०पुं० वक्र, टेढ़ा
बगमेल, क्रि०वि०वा० मिलाके वा हल्ला करके
बगरे, क्रि०वा० फैले, बगरना, फैलना
बच, ना०वा०सं०नपुं० बचन, बात
बच्चांसि, ना०वा०सं०नपुं० बातें, बचन
बच्छ, ना०वा०भा०पुं० १ वत्स, बछरू २ पुत्र
बच्छल, ना०वा०भा०पुं० वत्सल, स्नेहयुत
बज्र, ना०वा०सं०नपुं० इन्द्र का शस्त्र
बट, ना०वा०सं०पुं० बट का पेड़
बटु, ना०वा०सं०पुं० ब्रह्मचारी
बटोही, ना०वा०भा०पुं० पथिक, राही
बड़वानल, ना०वा०सं०पुं० समुद्र की आग
बत, ना०वा०भा०पुं० बात, वार्ता
बतकही, ना०वा०भा०पुं० बात

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

, भा०वा०भा०स्त्री० बुलाई, बुझाई
ना, क्रि०वा० बुताना, बुझाना
सा, ना०वा०पुं०भा० बतास, हवा
या, ना०वा०भा०पुं० छोटा फल
, वि० क्रि० कहो
दति, क्रि०वा०सं० कहता है
बन, ना०वा० सं०नपुं० मुख
बर, ना०वा० सं०पुं० बेर का फल
बरी, ना०वा०सं०स्त्री० बेर का पेड़
वदि, ना०वा०भा०पुं० कहकरके, बहना कहना
बधिक, ना०वा०सं०पुं० व्याधा, बहेलिया
बधिर, ना०वा०सं०पुं० बहिरा
बधू, ना०वा०सं०स्त्री० स्त्री० बहू
बधूटी, ना०वा०सं०स्त्री० स्त्री
बन, ना०वा०सं०नपुं० १जंगल २पानी
बनचर, ना०वा०सं०पुं० १ बानर २ जंगली
बनज, ना०वा०सं०नपुं० कमल
बनमाला, ना०वा०सं०स्त्री० फूल और रत्न की माला
बनिक, ना०वा०भा०पुं० बणिक, बनिया
बनी, ना०वा०भा०स्त्री० मजूरी का धन
बपु, ना०वा०सं०नपुं० वपुष, शरीर, देह
बमत, क्रि०वा० छोड़ता है, रद्द करता है
बमन, ना०वा०सं०पुं० छोड़ना, छोड़कर ना, रद्द
बयस, ना०वा०सं०स्त्री० १वयस, अवस्था उमिर, २वैश्य, बनिया
बयारी, ना०वा०भा०स्त्री० पवन हवा
वर, ना०वा०सं०पुं० १श्रेष्ठ २पति ३वरदान ४वरना, जलाना ५ ज़ोर, बल ६ बट वृक्ष
वरन, ना०वा०पुं०भा० १वर्ण, अक्षर २ जाति ३वर्णन
बरनी, वि०स्त्री०भा० कही
बरबरनी, ना०वा०स्त्री० सं० श्रेष्ठ रंगवाली गोरी
बरबस, ना०वा०भा०स्त्री० ज़ोरावरी
बरहि, ना०वा०भा०पुं० बर्हिन, मोर
बराई, भा०वा०भा०स्त्री० दूर हांकना
बराए, क्रि०वि० बचाकरके
बराह, ना०वा०सं०पुं० बराह, सूअर
बरि, क्रि०वि० बटकरके, बरना, बटना, बहरि
बरिआर, ना०वा०भा०पुं० बली, ज़ोरावर
बरिआ, ना०वा०भा०पुं० १बेला, समय २बाग़
बरिबंड, वि०भा०पुं० बलवन्त, तेजस्वी, बली
बरी, वि०भा०स्त्री० व्याही, वरना, व्याह करना
बरीस, ना०वा०भा०पुं० वर्ष, बरिस
बरु, अव्यय बल्कि, बरुक, बल्कि
बरुन, ना०वा०सं०पुं० वरुण
बरूथ, ना०वा०सं०पुं० समूह, झुंड
बरोरु, ना०वा०सं०स्त्री० स्त्री, सुन्दरजांघवाली
बरेखी, ना०वा०सं०पुं० वरेक्षण, बरदेखौनी दुलहदुहरना

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विकराल, गु० वा०भा०पुं० विकराल, भयंकर

बिकसे, वि० वा०भा०पुं० फूले, विकसना, फूलना

बिकार, ना०वा०सं०पुं० विकार १अवगुण, ऐगुन २जन्मादि ३कार्य, कारज

बिक्रम, गु०वा०भा०पुं० विक्रम, पराक्रम, ज़ोर, बल

बिगत, वि०सं०कृ० विगत, रहित, हीन

बिगोये, वि०भा०पुं०व० नाश किये, विगोना, नाशकरना

बिगृह, ना०वा०भा०पुं० १विग्रह, विरोध, झगड़ा २शरीर, देह ३हठ

बिख्यात, वि०पुं०कृ० विख्यात, विदित, प्रसिद्ध

बिघटन, ना०वा०भा०पुं० विघटन, तोड़ना

बिचरहिं, क्रि०वा० फिरते हैं, विचरना, फिरना

बिचक्षण, ना०वा०भा०पुं० विचक्षण, चतुर

बिचित्र, गु०वा०भा०पुं० विचित्र, अनेक प्रकार का, आश्चर्य्य रूप

बिजयी, वि०भा०पुं० विजयी, विशेषजय वाला, विजयकरने वाला

बिज्ञान, गु०वा०भा०पुं० विज्ञान, अनुभव

बिज्ञान बिहाना, ना०वा०भा०पुं० विज्ञान बिहान, ज्ञान रूप भोर, ज्ञान की हालि

बिटप, ना०वा०भा०पुं० विटप, वृक्ष, पेड़

बिडरी, क्रि०वि०ना०वा० १विशेष भय, छितरा करके, बिडरना, छितराना

बिडारी, वि०स्त्री० भगायी, बिडारना, भगाना

बिडंब, ना०वा०भा०पुं० बिडंब, वचन दगी, छल

बिढ़ए, क्रि० वि० कमा करके, बिढ़वना, कमाना

बित्त, ना०वा०भा०पुं० वित्त, धन, नक़दू

बितान, ना०वा०भा०पुं० १वितान, बिस्तार, फैलाव, २चंदवा, ३मंडप

बिथकहिं, क्रि०वा० चकित होते हैं, बिथकना, चकित होना

बिथकि, क्रि०वि० लीनवृत्ति

बिथुरे, वि०व०भा०पुं० फैले, बिथुरना, फैलना

बिद, ना०वा०सं०पुं० विद, ज्ञाता, जानने वाला

बिंदक, वि०पुं०सं० विंदक, नामयुत, पाने वाला

बिदरेउ, वि०भा०पुं० विदीर्ण, फट गया, बिदरना, फटना

बिदारे, वि०वा०भा०पुं० विदीर्ण, फाड़े, बिदारना, फाड़ना

बिदारहिं, क्रि०वा० फाड़ते हैं, बिदारना, फाड़ना

बिदित, वि०सं०कृ० विदित, प्रसिद्ध जताया गया

बिदिसि, ना०वा०भा०पुं० विदिशि, विदिशा दिशा का कोना

बिदूषन, ना०वा०भा०पुं० पंडित लोग, विदूषक शब्द का बहुवचन

बिदूषक, वि०सं०पुं० १विदूषक, भांड २निंदक

बिदूषहिं, क्रि०वा० निन्दा करते हैं, बिदूषना, निन्दा करना

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बिदेह, ना०वा०सं०पुं० १विदेह राजाजनक २देह बिना

बिद्यमान, ना०वा० सं०पुं० विद्यमान, वर्तमान, है, होता

बिद्या, ना०वा०सं०पुं० शिक्षा, इल्म

बिद्रुम, ना०वा०सं०पुं० विद्रुम, मूंगा

बिधवा, ना०वा०सं०स्त्री० विधवा, राँड, जिस स्त्री का पति मरगया

बिधाता, ना०वा०सं०पुं० विधाता, ब्रह्मा

बिधात्री, ना०वा०सं०स्त्री० विधात्री, ब्रह्माणी

बिधि, ना०वा०सं०पुं० १विधि, ब्रह्मा २कर्म, भाग्य ३विधान, रीति

बिधि अंड, ना०वा०भा०पुं० ब्रह्माण्ड

बिधिवत, क्रि०वि० विधिवत्, यथायोग्य, विहित

बिधु, ना०वा०सं०पुं० विधु, चन्द्रमा

बिधुन्तुद, ना०वा०सं०पुं० राहु

बिनता, ना०वा०सं०पुं० विनीता, गरुड़ जी की माता का नाम है

बिनय, गु०वा०सं०पुं० विनय २ विनती २विशेष नीति

बिनयी, ना०वा०सं०पुं० १विनयी, अतिनीतिवाला २विनय करनेवाला

बिनवा, ना०वा०भा०पुं० विनय किया, विनवना, विनय करना

बिनीत, वि०वा०सं० कृ० विनीत १विशेष नीति २नम्र, सुशील

बिनोद, वि०वा०सं०पुं० विनोद, क्रीड़ा, खेल

बिपरीति, ना०वा०सं०पुं० विपरीति, उलटा प्रतिकूल

बिपिन, ना०वा०सं०नपुं० विपिन, बन, जंगल

बिपुल, ना०वा०सं०पुं० विपुल, बहुत, विस्तार

बिप्रचरण, ना०वा०भा०पुं० भृगुलता, भृगु जीने जो भगवान की छाती में लात मारा था उसका चिन्ह

बिबरे, ना०वा०सं०नपुं० बिवर, बिल, छेद

बिबरन, ना०वा०भा०पुं० विवर्ण १बेरंग, बुरारंग २मुरझा, अलग

बिबर्द्ध, ना०वा०भा०पुं० बहुत बढ़ना

बिबस, ना०वा०सं०पुं० विवश १विकल, व्याकुल २विशेष दशा

बिबाकी, ना०वा०भा०पुं० नाश

बिबिक्ति, वि०सं०पुं० विवक्त १एकान्त २त्याग

बिबुध, ना०वा०सं०पुं० १विबुध, देवता २पण्डित

बिबुधबन, ना०वा०सं०नपुं० विबुधबन, नन्दनवाटिका, स्वर्ग का बगीचा

बिबुधबैद, ना०वा०भा०पुं० विबुधवैद्य, अश्विनी कुमार, देवता के वैद्य

बिबेक, ना०वा०सं०पुं० १विवेक, ज्ञान २सत्य असत्य का विचार

बिभव, ना०वा०सं०पुं० विभव, १ऐश्वर्य्य, २पालन

बिभाग, ना०वा०सं०पुं० विभाग १जुदाई २बाँट, बखरा ३भाग्यहीन ४खंड, टुकड़ा

बिभाती, क्रि०वा० विभाति, प्रकाशित होता है, सोहता है

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बिभिचारी, ना०वा०भा०व्यभिचारी, परनिय गामी, पराई स्त्री के पास जाने वाला
बिभु, ना०वा०सं०पुं०१ विभु, व्यापक २ समर्थ
बिभुन्ह, ना०वा०भा०पुं० विभु शब्द का बहुव-चन, विश्व तैजस प्राज्ञ ब्रह्म
बिभूती, ना०वा०भा०स्त्री०१ विभूति, गरव २ संपदा ३ भक्ति
बिभेद, ना०वा०सं०पुं० विभेद, फूट, शत्रु, मित्रभाव
बिभंजन, ना०वा०सं०पुं० नाश करने वाला
बिभंजनि, ना०वा०सं०स्त्री० विभंजनि, तोड़ने वाली
बिमल, ना०वा० सं०पुं० विमल, निर्मल, फरचा
बिमात्र, ना०वा०सं०पुं० विमात्र, मेभा महतारी से बेटा
बिमुख, ना०वा०सं०पुं० विमुख, विरोधी
बियोगी, ना०वा०सं०पुं० वियोगी, अलग, जुदा
बिरक्त, ना०वा०सं०पुं० विरक्त, वैराग्य वान, त्यागी, विरागी
बिरन्चि, क्रि०वा०रच करके, बना करके, विरचना, बनाना
बिरज, ना०वा०सं०पुं० विरज, निर्मल, फरचा, जो रजवीर्य्य से उत्पन्न नहीं है
बिरत, ना०वा०सं०पुं० विरत, वैराग्यवान, मुमुक्षु
बिरति, ना०वा०सं०पुं० विरत, २ वैराग्य, त्याग, २ अति प्रीति
बिरथ, वि०सं०पुं० विरथ, रथ के बिना
बिरद, ना०वा०सं०पुं० १ विरद, जस, २ बीरों का बाना
बिरव, ना०वा०पुं०सं०वीर, छोटा पेड़, पौधा
बिरहित, वि०सं०पुं०कृ०विरहित, रहित, छूटा, रिक्त
बिराग, ना०वा०सं०पुं० १ विराग, वैराग्य, त्याग
बिराजति, क्रि० वा० विराजती है, सोहती है
बिराट, ना०वा०सं०पुं० विराट, विश्व रूप
बिरुज, ना० वा०सं०पुं० विरुज, निरोगी, रोग हीन
बिरुदैत, ना०वा०सं०पुं० बनाने वाला बीर
बिरुद्ध, ना०वा०सं०पुं० विरुद्ध, विरोधत, वैरयुत
बिरंचि, ना०वा०सं०पुं० विरंचि, ब्रह्मा
बिलग, ना०वा०सं०पुं० १ न्यारा, अलग २ बुरा
बिलपाता, ना०वा०भा०स्त्री० विलाप-करती
बिलष, ना०वा०भा०पुं० उदास
बिलषाइ, क्रि०वि० विषाद करके विलखा-ना, विषाद करना
बिलास, ना०वा०सं०पुं० १ विलास, क्रीड़ा, खेल २ चमत्कार ३ सुख ४ कार्य, काम ५ ऊंचे नीचे करना
बिलासिनी, ना०वा०सं०स्त्री० विलासिनी, स्त्री० विलास करने वाली
बिलाहीं, क्रि०वा० विलाते हैं, नष्ट जाते हैं
बिलोकि, क्रि०वि० विलोक्य, देख करके, विलोकना, देखना
बिलोचन, ना०वा०सं०पुं० विलोचन, आंख

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बिषम, ना०वा०सं०पुं० १ विषम, शत्रुमित्रभावयुत, २ भयंकर ३ पोच

बिषमता, भा०वा०स्त्री०सं० विषमता, राग द्वेष

बिषय, ना०वा०सं०पुं० विषय, शब्दरूपरसगंधस्पर्श

बिषयक, अ०वा०ना०सं०पुं० विषयक, विषे बिषय में, बाबत

बिषई, ना०वा०सं०पुं० विषयी, विषयकरनेवाला, संसारी

बिषाद, ना०वा०सं०पुं० विषाद, शोक, दुःख

बिषाना, ना०वा०भा०पुं० बिषाण, सींग

बिष्ठा, ना०वा०सं०स्त्री० विष्ठा, मल, गुह, गलीज़

बिसद, ना०वा०भा०पुं० विषाद १ सफेद २ स्पष्ट, साफ़

बिस्मय, ना०वा०भा०पुं० विस्मय, अचरज

बिस्मित, वि०सं०कृ० विस्मित, अचरजयुत

बिसारद, ना०वा०भा०पुं० विशारद, चतुर, प्रवीण, निपुण

बिसाल, ना०वा०भा०पुं० १ विशाल, बड़ा २ पीड़ा बिना

बिसिख, ना०वा०भा०पुं० विशिख, तीर, बाण

बिसरति, क्रि०वा० चिन्ताकरतीहै बिसरना चिन्ताकरना

बिसेष, ना०वा०भा०पुं० १ विशेष, कोई १ अधिक ३ भेद

बिसोक, वि०भा०पुं० विशोक, शोकरहित

बिस्तक, गु०वा०सं०पुं० विस्तर, बिस्तर

बिश्व, ना०वा०भा०पुं० विश्व १ संसार २ सर्व सब

बिश्वरूप, ना०वा०पुं०भा० विश्वरूप, संसाररूप, सर्वरूप

बिहग, ना०वा०पुं०भा० विहग, पक्षी, पखेरू

बिहरति, क्रि०वा० फटतीहै, बिहरना, फटना

बिहरन, ना०वा०भा०पुं० बिहरण, क्रीड़ा, खेल

बिहरु, ना०वा०भा०पुं० फटना

बिहार, क्रि० विहाय, छोड़करके

बिहान, ना०वा०भा०पुं० विहान १ भोर, प्रात, २ बीतजाना

बिहार, ना०वा०सं०पुं० विहार, क्रीड़ा, खेल

बिहीना, गु०वा०भा०पुं० विहीन, बिना, रहित, अतिनीच

बीथी, ना०वा०सं०स्त्री० गली

बीर, ना०वा०सं०पुं० बीर १ भाई २ बीररसयुत

बीरभद्र, ना०वा०सं०पुं० शिवजीकेगण

बुझाई, क्रि०वि० समझाकरके, बुझाना, समझाना

बुध, ना०वा०सं०पुं० १ पण्डित २ चन्द्रपुत्र

बूता, ना०वा०भा०पुं० बल, ज़ोर

बूक, ना०वा०भा०पुं० कुंहार

बृषकेतु, ना०वा०भा०पुं० महादेवकानाम

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वृष्टि, ना०वा०सं०स्त्री० वर्षा, बूंद समूह
वृष, ना०वा०सं०पुं० बैल
वृषभ, ना०वा०सं०पुं० बैल
वृषली, ना०वा०सं०स्त्री० शूद्री
वृन्दारका, ना०वा०सं०पुं० देवता
वेत, ना०वा०पुं०भा० १वियत, आकाश २छड़ी
वेद, ना०वा०सं०पुं० वेद, चारोंवेद ऋग्यजुः आदि
वेदिका, ना०वा०सं०स्त्री० वेदी पर को देखो
वेदी, ना०वा०सं०स्त्री० वेदी, कर्मकाण्डक रने के लिये छोराचबूतरा
वेध, ना०वा०सं०पुं० वेध, छेद
वेनी, ना०वा०सं०स्त्री० वेणी १त्रिवेणी, २चोटी
वेनु, ना०वा०सं०पुं० वेणु १बांस २मुरली ३ एकराजा का नाम
वेरे, ना०वा०सं०पुं० बेड़ा, जहाज
वेसर, ना०वा०भा०पुं० खच्चड़
वेहड़, ना०वा०भा०पुं० विकट, स्थान, बीहड़
वेहू, ना०वा०भा०पुं० छेद
वैतरनी, ना०वा०सं०स्त्री० यमपुरीकीनदी
वैदिक, ना०वा०सं०पुं० वैदिक १वेद की रीति से २वेदपाठी
वैदेही, ना०वा०सं०स्त्री० वैदेही, सीताजी का नाम
वैनतेय, ना०वा०सं०पुं० वैनतेय, गरुड़
वैना, ना०वा०भा०पुं० वचन
वैभव, ना०वा०पुं०सं० वैभव, १ऐश्वर्य २पाल्य
वैषानस, ना०वा०पुं०सं० वाणप्रस्थ
वैस, ना०वा०भा०पुं० वयस, अवस्था
वैसा, ना०वा०भा०पुं० बैठा, बैठना, बैठना
वोहित, ना०वा०भा०पुं० जहाज
वोड़, ना०वा०भा०पुं० बंदर, लता
व्योम, ना०वा०सं०पुं० व्योम, आकाश
वंगा, वि०भा०स्त्री० लुच्चा
वंचक, ना०वा०सं०पुं० वंचक, ठग
वंचन, ना०वा०सं०पुं० वंचन, ठगना
वन्दन, ना०वा०सं०पुं० वन्दन, प्रणाम
वन्दनीय, वि०सं०पुं० वन्दनीय, नमस्कार के योग्य
वंद्य, वि०सं०पुं० वंद्य, नमस्कार के योग्य
बंध, ना०वा०सं०पुं० १भाई २ बांधना, ३सम्बन्धी
बंस, ना०वा०भा०पुं० १बंश २बांस, कुल
व्रजन्ति, क्रि०वा० जाते हैं, प्राप्त होते हैं
व्रन, ना०वा०भा०पुं० व्रण, घाव, फोड़ा
व्रह्मगिरा, ना०वा०सं०स्त्री० ब्रह्मा की बानी
व्रह्मधाम, ना०वा०सं०नपुं० ब्रह्मलोक
व्रह्मभवन, ना०वा०सं०पुं० ब्रह्मलोक
व्रह्मानन्द, ना०वा०सं०पुं० स्वरूपानन्द, भगवान का सुख
व्रात, ना०वा०सं०पुं० समूह, झुण्ड
व्रीड़ा, ना०वा०सं०स्त्री० लज्जा, शरम
व्यग्र, ना०वा०सं०पुं० व्यग्र, विकल
व्यजन, ना०वा०सं०नपुं० व्यजन, पंखा
व्यथा, ना०वा०सं०स्त्री० व्यथा, दुख

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

व्यलीक, ना०वा०सं०पुं० व्यलीक, कपट
व्यसनी, ना०वा०सं०पुं० वानि, शौक, व्यसनी
व्याज, ना०वा०सं०पुं० १ बहाना, छल, २ सूद
व्याप्य, क्रि०वि० जगत्
व्याधि, ना०वा०सं०पुं० रोग
व्याधू, ना०वा०भा०पुं० बहेलिया, चिड़ीमार
व्याल, ना०वा०सं०पुं० १ सांप २ हाथी
व्याली, ना०वा०सं०पुं० सर्पधारी, मन्तरवारी
व्यास, ना०वा०सं०पुं० १ विस्तार २ एक मुनि का नाम जिन्होंने वेदान्तसूत्र और पुराण आदि बनाया

भ

भगवान, ना०वा०सं०पुं० ईश्वर
भगिनी, ना०वा०सं०स्त्री० बहिन
भजई, क्रि०वा० सेवे, वा, सुमिरे
भजन, ना०वा०सं०नपुं० भक्ति
भजामि, क्रि०वा०सं० मैं भजता हूं
भजामहे, क्रि०वा०सं० हम भजते हैं
भजी, ना०वा०भा०स्त्री० अंगीकार किया, भजना
भजूँ, क्रि०वा० मैं भजता हों
भट, ना०वा०सं०पुं० योद्धा, सिपाही
भटभेरे, क्रि०वा० धक्का खाते, फिरते हैं
भड़िहाई, ना०वा०सं०स्त्री० चोरी, भांड़ा चोट के
भदेस, ना०वा०भा०पुं० १ गंवारी, गंवरू २ निन्दा योग्य
भद्र, ना०वा०सं०नपुं० कल्याण, भला
भनई, क्रि०वा० कहते हैं
भनित, ना०वा०भा०पुं० भणित, कवित्त
भनी, क्रि०वि० कह करके
भनु, वि०क्रि० कहो, कहते हो
भने, वि०क्रि०वा० कहे
भनन्ता, क्रि०वा० कहते हैं
भभरि, क्रि०वि० घबड़ा करके
भभरा, वि०भा०पुं० घबड़ाया
भयानक, ना०वा०सं०नपुं० १ भयंकर २ रस विशेष
भयावह, वि०भा०पुं० डरानेवाला
भरन, ना०वा०भा०पुं० १ धारण २ पोषण
भरनी, ना०वा०भा०स्त्री० १ एक नक्षत्र का नाम २ सर्पकुलवर्णन, गीत ३ भूसौली व्रजदेश में प्रसिद्ध है
भरा, वि०भा०पुं० १ सोझा २ पोषणा, पोषना ३ धारण
भरि, ना०वा०भा०पुं० पूरन
भरिता, भा०वा०भा०पुं० पूरन
भव, ना०वा०सं०पुं० १ संसार २ शिव ३ जन्म ४ भया, हुआ
भवदंघ्रि, वि०सं०पुं० आप का चरण
भवन, ना०वा०सं०नपुं० घर
भवन्त, वि०भा०पुं० आपकी
भवांबुनाथ, ना०वा०सं०पुं० संसार, समुद्र
भवर, ना०वा०भा०पुं० १ मही का चकोह, २ भौंरा, भ्रमर
भा, ना०वा०सं०स्त्री० प्रकाश, चमक

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भाउ, ना०वा०भा०पुं० १ प्रेम २ भावना ३ सत्ता ४ जन्म

भाग, ना०वा०पुं०भा० १ बखरा, हिस्सा २ भाग्य, नसीब

भाजन, ना०वा० नपुं० पात्र, बरतन

भाथा, ना०वा०सं०पुं० तरकश

भानु, ना०वा०सं०पुं० सूर्य्य

भांड़े, ना०वा०ब०व०पुं०भा० बरतन, भांड

भामा, ना०वा०सं०स्त्री० स्त्री

भामिनि, ना०वा०सं०स्त्री० १ स्त्री, क्रोध-युक्त

भायप, भा०वा०पुं०भा० भाईपना

भायें, वि०व०व०पुं० १ सुन्दर २ भाव

भारती, ना०वा०सं०स्त्री० सरस्वती

भाल, ना०वा०सं०पुं० माथा

भाव, १ प्रेम २ भावना ३ सत्ता ४ जनु

भावन, ना०वा०सं०पुं० सोहात, अच्छा लगता

भावी, वि०सं०पुं० होनहार

भाषा, वि०सं०पुं० कहा, भावना, कहना

भाष, क्रि०वा०व०व० कहे, भाषना, कहना

भिन्न, वि०सं०क्रि० अलग, जुदा, फ़टगया

भिंडियाल, ना०वा०सं०पुं० ढेलवांस

भीती, ना०वा०भा०स्त्री० १ भय भाति, २ दीवार

भीम, ना०वा०सं०नपुं० भयंकर

भीर, ना०वा०भा०पुं० १ बोझा २ भीड़ ३ उर

भीरु, ना०वा०सं०पुं० डरपोकना

भुजंग, ना०वा०सं०पुं० सांप

भुवन, ना०वा०सं०नपुं० ब्रह्माण्ड

भुवाल, ना०वा०भा०पुं० भूपाल, राजा

भुवि, ना०वा०अ०सं०स्त्री० पृथ्वी, पृथ्वी में

भुवंग, ना०वा०सं०पुं० भुजंग, सांप

भुवंगिनि, ना०वा०सं०स्त्री० भुजंगिनी, सांपिन

भुंजव, भविष्यत क्रिया-भोग करेगा

भूत, ना०वा०सं०पुं० १ जीव २ प्रेत ३ भगा हुआ

भूतल, ना०वा०अ० पृथ्वी में भूमिपर

भूति, ना०वा०सं०स्त्री० १ सम्पदा, ऐश्वर्य, २ मोक्ष मुक्ति ३ राख, बिभूति

भूधर, ना०वा०सं०पुं० १ पहाड़ २ शेषनाग

भूप, ना०वा०सं०पुं० राजा

भूमिनाग, ना०वा०सं०पुं० पृथ्वी पर सांप

भूरि, अव्य०गु०वा० बहुत

भूर्जतरु, ना०वा०सं०पुं० भोजपत्र वृक्ष

भूषित, वि०सं०कृ० भूषण युक्त, शोभित

भूसुर, ना०वा०सं०पुं० ब्राह्मण

भ्रकुटि, ना०वा०सं०पुं० भौंह

भ्रगुनाथ, ना०वा०सं०पुं० परशुराम

भे, वि०व०व०पुं०भा० भये, हुए

भेई, ना०वा०भा०स्त्री० जीती, भिगोया, भेदना, भिगोना

भेऊ, वि०क्रि० भेद पर को देखो

भेक, ना०वा०सं०पुं० मेढ़क, मेंकुका

भेंट, ना०वा०भा०पुं० १ मिलना, मुलाक़ात २ नज़र भेंट, पूजा

भेद, ना०वा०सं०पुं० १ जुदाई २ फ़ाड़ना तोड़ना ३ मर्म

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भेरी, ना॰वा॰सं॰पुं॰ १ बड़ा नगारा २ बड़ा मुंहवाला पीतर का बाना
भेव, ना॰वा॰भा॰पुं॰ १ जुदाई २ भेद मर्म ३ फूट करना, तोड़ना
भेष, ना॰वा॰सं॰पुं॰ भेस
भेषज, ना॰वा॰सं॰नपुं॰ औषध, दवाई
भोग, ना॰वा॰सं॰पुं॰ सुगन्धादिक, भोग, बिलास, सुख उठाना
भोगावति, ना॰वा॰सं॰स्त्री॰ भोगावती सर्प नगरी
भोजन खानी, ना॰वा॰भा॰पुं॰ रसोई का घर
भोरा, ना॰वा॰भा॰पुं॰ ढोय, भोला, सूधा
भोरी, ना॰वा॰वि॰भा॰स्त्री॰ भोली, सीधी
भोरे, निश्चयात्मक वाक्य, भूल को भी
भौम, ना॰वा॰सं॰पुं॰ मंगल ग्रह
भंग, ना॰वा॰सं॰पुं॰ १ नाश २ टेढ़ाई
भंजन, वि॰ना॰वा॰सं॰नपुं॰ १ नाश २ नाश करनेवाला
भृंग, ना॰वा॰सं॰पुं॰ भ्रमर, भौंरा
भृंगी, ना॰वा॰सं॰पुं॰ महादेव का गण
भ्रम, ना॰वा॰सं॰पुं॰ भूलना, धोखा
भ्राजा, ना॰वा॰वि॰सं॰ शोभित, भ्राजना, शोभना
भ्रू, ना॰वा॰सं॰स्त्री॰ भौंह

म

मइके, ना॰ वा॰ अ॰भा॰पुं॰ नैहर, माता का घर
मक, अव्य॰ बरुक, बल्कि
मकरी, दसई रागि २ मच्छ ३ मगर
ककरी, ना॰वा॰सं॰स्त्री॰ मछरी
मकरंद, ना॰वा॰सं॰पुं॰ फूल का रस
मख, ना॰वा॰सं॰पुं॰ यज्ञ
मग, ना॰वा॰सं॰पुं॰ १ मार्ग, रस्ता, मगध, सगह
मगन, ना॰वा॰भा॰पुं॰ मग्न, १ डूबा, लवलीन, प्रसन्न, खुश
मघवा, ना॰वा॰भा॰पुं॰ इन्द्र
मघवान, ना॰वा॰सं॰पुं॰ इन्द्र
मज्जहिं, क्रि॰वा॰ नहाते हैं
मज्जा, ना॰वा॰सं॰स्त्री॰ चरबी
मझारी, अ॰वा॰ मध्य, भीतर, मांझ
मत, ना॰वा॰सं॰पुं॰ सलाह
मति, ना॰वा॰सं॰स्त्री॰ बुद्धि
मत्सर, ना॰वा॰सं॰पुं॰ ईर्षा, डाह
मद, ना॰वा॰सं॰पुं॰ १ अभिमान २ मदिरा, शराब
मदन, ना॰वा॰सं॰पुं॰ कामदेव
मधु, ना॰वा॰सं॰पुं॰ १ चैत्र महीना २ मकरंद फूलकारस ३ सहत ४ जल ५ वसन्त ६ एक दैत्य का नाम
मधुकर, ना॰वा॰सं॰पुं॰ भौंरा, भ्रमर
मधुप, ना॰वा॰सं॰पुं॰ भ्रमर, भौंरा
मधुपर्क, ना॰वा॰सं॰नपुं॰ दही, शहद, घी, मिला हुआ कांस के पात्र में
मधुर, गु॰वा॰सं॰पुं॰ मीठा, सुन्दर
मध्यगति, ना॰वा॰सं॰पुं॰ उदासीन
मध्य दिवस, ना॰वा॰सं॰पुं॰ दोपहर
मध्यम, ना॰वा॰सं॰नपुं॰ उदासीन, विचवैत
मनजात, ना॰वा॰सं॰नपुं॰ मनो जात, कामदेव

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मनमथ, ना॰वा॰सं॰पुं॰मन्मथ, कामदेव
मनमारे, ना॰वा॰भा॰पुं॰क्रि॰वि॰उदास
मनमहिं, ना॰वा॰अ॰ध॰वा॰भा॰पुं॰ मन में
मनसा, ना॰वा॰भा॰स्त्री॰इच्छा, मन
मनसिज, ना॰वा॰सं॰नपुं॰ कामदेव
मनाक, अव्य॰मनाक, थोड़ासा
मनि, ना॰वा॰भा॰पुं॰मणि, सर्पके शिरमेंकी मणि, शिरोमणि
मनियार, ना॰वा॰वि॰भा॰पुं॰मणियुत
मनुज, ना॰वा॰सं॰पुं॰मनुष्य, आदमी
मनुजाद, ना॰वा॰सं॰पुं॰राक्षस
मनुसाई, भा॰वा॰पुं॰भा॰पुरुषारथ
मनोज, ना॰वा॰सं॰नपुं॰ कामदेव
मनोभव, ना॰वा॰सं॰पुं॰कामदेव
मनोभूत, ना॰वा॰सं॰पुं॰कामदेव
मनोरथ, ना॰वा॰सं॰पुं॰अभिलाष, इच्छा
मनोरम, ना॰वा॰सं॰पुं॰सुन्दर
मम, सम्बन्ध॰वा॰सं॰ना॰मेरा, ममता
मय, ना॰वा॰सं॰पुं॰१कारज २बहुतप्राचुर्य ३प्रधान ४रूप ५असुर विशेष
मयत्री, ना॰वा॰भा॰स्त्री॰मैत्री, मित्रता
मयन, ना॰वा॰प्रा॰पुं॰कामदेव
मयूष, ना॰वा॰सं॰पुं॰ किरण
मयंक, ना॰वा॰सं॰पुं॰चन्द्रमा
मरकत, ना॰वा॰सं॰पुं॰ नीलमणि
मरकट, ना॰वा॰सं॰पुं॰मर्कट, बानर
मरजाद, ना॰वा॰भा॰पुं॰ १ मर्य्याद, हद २ रीति
मरम, ना॰वा॰भा॰पुं॰ १ भेद २ हृदय-आदि अंग

मराल, ना॰वा॰सं॰पुं॰हंस
मरु, ना॰वा॰सं॰पुं॰ निर्जलदेश
मर्दिन, ना॰वा॰वि॰सं॰भा॰पुं॰ नाशकरनेवाला
मर्दि, क्रि॰वि॰ मस्तकरके
मर्मी, ना॰वा॰वि॰पुं॰भेदी
मल, ना॰वा॰सं॰नपुं॰१पाप २मैल
मलय, ना॰वा॰सं॰पुं॰ चन्दन
मलान, ना॰वा॰भा॰पुं॰ म्लान, मैला, उदास
मलिन, ना॰वा॰भा॰पुं॰ मैला, उदास
मष्ट, ना॰वा॰सं॰पुं॰ चुप
मसक, ना॰वा॰भा॰पुं॰ १ मच्छर २ बिलार
मसि, ना॰वा॰सं॰स्त्री॰स्याही, रोशनाई
महति, ना॰वा॰भा॰स्त्री॰ महती, बड़ी
महा, गु॰वा॰सं॰पुं॰बड़ा
महागद, ना॰वा॰सं॰पुं॰बड़ारोग
महान, ना॰वा॰सं॰पुं॰बड़ा, महत्तत्व
महामनि, ना॰वा॰भा॰पुं॰ ज़हर मोहरा आदि
महामोह, ना॰वा॰सं॰पुं॰ अज्ञान
महिदेव, ना॰वा॰सं॰पुं॰ महीदेव, ब्राह्मण
महिपाल, ना॰वा॰सं॰पुं॰ महीपाल, राजा
महिषी, ना॰वा॰सं॰स्त्री १ भैंस २ पटरानी
महिषेस, ना॰वा॰पुं॰भा॰महिषेश १ महिषासुर २ यमराज

CC-0. In Public Domain Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

महीधर, ना॰वा॰सं॰पुं॰पहाड़
महीसुर, ना॰वा॰सं॰पुं॰ब्राह्मण
महेस, ना॰वा॰भा॰पुं॰महेश, महादेव
महोत्सव, ना॰वा॰सं॰नपुं॰बड़ा, उत्सव, महोच्छा
महोष, ना॰वा॰सं॰पुं॰एकप्रकारकापक्षी
माजा, ना॰वा॰सं॰पुं॰ नये वर्षा के जल काफेन
माझ, मध्य, बीच
मातलि, ना॰वा॰सं॰पुं॰इन्द्र का सारथी
मातहि, वि॰मतवारा
मात्र, अव्य॰वहीभर, उतनाही, परिमाण
माधुरी, भा॰वा॰सं॰स्त्री॰मिठाई, माधुर्य
मान, ना॰वा॰सं॰पुं॰अहंकार, अभिमान
मानस, ना॰वा॰सं॰पुं॰ १ तलाव, सरोवर २ मन
मानस, ना॰वा॰भा॰पुं॰मूल, सरयू नदी
मानसिक, वि॰पुं॰सं॰मनद्वारा, मनसम्बन्धी
मानिक, ना॰वा॰सं॰पुं॰जवाहिर, लाल
मान्यता, भा॰वा॰सं॰पुं॰पूज्यता, मान
मापा, वि॰पुं॰भा॰व्यापा, मापना, व्यापना
मापी, वि॰स्त्री॰भा॰मतवारी
माया, ना॰वा॰सं॰स्त्री॰ १ दया २ त्रिगुणा शक्ति ३ कपट
मायापति, ना॰वा॰सं॰पुं॰रामचन्द्र
मायिक, ना॰वा॰पुं॰मिथ्या, माया सम्बन्धी
मार, ना॰वा॰सं॰पुं॰ १ कामदेव २ मारना
मारगन, ना॰वा॰भा॰पुं॰ १ मार्गण, मायाशास्त्र तीर २ खोजना
मारीच, ना॰वा॰सं॰पुं॰एक राक्षस का नाम
मारुत, ना॰वा॰सं॰पुं॰पवन, वायु
मारुति, ना॰वा॰सं॰पुं॰हनुमान
माल, ना॰वा॰सं॰पुं॰ १ समूह २ कुस्तीबाज माला, हार
मालव, ना॰वा॰सं॰पुं॰सजल, मालवा देश
माला, ना॰वा॰सं॰स्त्री॰ १ पंगति, पंक्ति २ हार, माला
माष, ना॰वा॰सं॰पुं॰क्रोध
माषी, ना॰वा॰भा॰स्त्री॰ १ मच्छी २ शहद
मासा, ना॰वा॰भा॰पुं॰मांस, महीना, माह
माहुर, ना॰वा॰भा॰पुं॰ज़हर, विष
मां, क॰वा॰पुं॰मुझको
मिति, ना॰वा॰सं॰पुं॰ १ अंत २ मर्यादा ३ थोड़ासा ४ नाप
मिथिला, ना॰वा॰सं॰स्त्री॰एक नगरी का नाम
मिथिलेसि, ना॰वा॰स्त्री॰भा॰जनक जी की रानी का नाम
मिलित, वि॰सं॰कृ॰पुं॰युक्त, मिला हुआ
मिसु, ना॰वा॰पुं॰भा॰बहाना, मिस
मीच, ना॰वा॰भा॰पुं॰मृत्यु, मौत
मीन, ना॰वा॰स्त्री॰सं॰मछरी
मीला, क्रि॰वि॰मिलकरके
मुकुता, ना॰वा॰भा॰पुं॰मुक्ता, मोती
मुकुताहल, ना॰वा॰भा॰पुं॰मुक्ताहल, मोती

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kośha

सुकुर, ना०वा०सं०पुं० दर्पण
सुकृत, ना०वा०सं०पुं० मुक्तिदाता
सुखर, ना०वा०सं० नपुं० १ शब्द २ बकवादी
सुखागर, ना०वा०पुं०भा० जुवानी
सुखेरी, अपादान कारक० निकट से, नगीच से
सुदित, वि०सं०क्र०पुं० हर्षित, खुश
सुदिका, ना०वा०सं०स्त्री० सुंदरी, अंगूठी
सुधा, अव्य० झूंठ
सुनियर, ना०वा०सं०पुं० बोकसे का कपड़ा
सुनिराज, ना०वा०सं०पुं० सुनि राज, वशिष्ठजी
सुनिवर, ना०वा०सं०पुं० सुनिश्रेष्ठ, शुक्राचार्य
सुनिन्दा, ना०वा०भा०पुं० सुनीन्द्र, सुनियों मेंप्रधान
मूक, ना०वा०सं०पुं० गूंगा
मूरि, ना०वा०पुं०भा० मूल, जड़ी, वा जमा, मूल
मूल, ना०वा०सं० नपुं० १ जड़ २ कारन ३ पंजी
मूलक, ना०वा०सं०नपुं० मूली
मूषक, ना०वा०सं०पुं० चूहा, मूसा
मृगपति, ना०वा०सं०पुं० सिंह
मृगजल, ना०वा०सं०पुं० मृगतृष्णा
मृगमद, ना०वा०सं०पुं० कस्तूरी
मृगया, ना०वा०सं०स्त्री० शिकार
मृगराज, ना०वा०सं०पुं० सिंह
मृगाधीश, ना०वा०भा०पुं० सिंह
मृदु, ना०वा०सं०पुं० कोमल
मृदुल, ना०वा०सं०नपुं० कोमल
मृनाल, ना०वा०भा०पुं० कमलकी जड़
मृषा, अव्य० झूठ
मेकलसुता, ना०वा०सं०स्त्री० नर्मदानदी
मेघडंबर, ना०वा०भा०पुं० छत्र विशेष
मेचक, ना०वा०सं०पुं० श्याम
मेडुकनि, ना०वा०भा०स्त्री० मेंडुका
मेदिनी, ना०वा०सं०स्त्री० पृथ्वी
मेधा, ना०वा०सं०स्त्री० बुद्धि
मेरु, ना०वा०सं०पुं० सुमेरु पर्वत
मेली, ना०वा०भा०स्त्री० डाली, मेलना, डालना
मेष, ना०वा०सं०पुं० मेढ़ा
मेखला, ना०वा०भा०स्त्री० करधनी
मेना, ना०वा०सं०स्त्री० पार्वती की माता का नाम
मेनाक, ना०वा०सं०पुं० एक पर्वत का नाम
मोई, क०वा०मोही, मोना, मोहना
मोचन, ना०वा०सं०पुं० छोरना
मोद, ना०वा०सं०पुं० हर्ष, खुशी
मोदक, ना०वा०सं०पुं० लड्डू
मोरपच्छ, ना०वा०भा०पुं० मोर की पंख
मोरुति, मेरी ओर से सं०वा०
मोह, ना०वा०सं०पुं० अज्ञान
मोहमथु, ना०वा०सं०पुं० झूंठा
मौलि, ना०वा०सं०पुं० माथा
मंगलद्रव्य, ना०वा०सं०पुं० पुंष्पादि
मंच, ना०वा०सं०पुं० मचान, तख्त वोश्र

CC-0. In Public Domain Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मंजिर, ना०वा०सं०पुं० पांव का भूषण, पायजेब आदि
मंजुल, ना०वा०सं०पुं० सुन्दर
मंडन, ना०वा०सं०नपुं०भूषण, गहना
मंडल, ना०वा०सं०पुं० १घास २तेज
मंडलिक, ना०वा०सं०पुं० मण्डलेश्वर, राजा
मंडली, ना०वा० सं०स्त्री० समूह
मंडित, वि०सं०क०पुं०भूषित, शोभित
मंत्र, ना०वा०सं०पुं०१राम तारक आदि मंत्र २सलाह, उपदेश
मंत्रराज, ना०वा०सं०पुं०रामतारक मंत्र
मंद, ना०वा०सं०पुं० १नीच २धीरे ३अभागी ४मूढ़
मंदतर, ना०वा०सं०पुं० अतिनीच
मंदर, ना०वा०सं०पुं० मन्दराचल पर्वत
मंदाकिनी, ना०वा०सं०स्त्री० गंगा जी

य

यह, इदंकि, सर्वनाम-यह समय
यावत्, अव्य० जबतक, जितना
ये, स०ना०वा०पुं०सं० जो लोग, जे, यह
यं०सं०ना० कर्म०सं०पुं० जिसको

र

रघुनाथ, ना०वा०सं०पुं० १दशरथ जी २रामचन्द्र जी
रघुराज, ना०वा०सं०पुं० १दशरथ जी २रामचन्द्र जी
रच्छक, ना०वा०भा०पुं०रक्षक, रखवार
रज, ना०वा०सं०नपुं०धूर
रजत, ना० वा० भा० नपुं० चांदी, रूपा
रजधानी, ना०वा०सं०स्त्री० राजधानी राजा के रहनेकी जगह
रजनी, ना०वा०सं०स्त्री० रात्रि, रात
रजाई, ना०वा०भा०स्त्री० आज्ञा
रजायस, ना०वा०भा०स्त्री० राजाज्ञा, आज्ञा
रजु, ना०वा०सं०स्त्री० रज्जु, डोरी
रट, ना०वा०सं०स्त्री० बोलना
रतनारे, ए०वा०व०भा०पुं०ब०लालरंग
रति, ना०वा०सं०स्त्री० १प्रीति २कामदेव की स्त्री
रथांग, ना०वा०सं०नपुं०चक्र, चकवा
रथी, ना०वा०वि०सं०पुं० रथसुत
रद, ना०वा०सं०पुं० दांत
रदपट, ना०वा०सं०पुं० ओर, होठ
रन, ना०वा०भा०पुं० रण, युद्ध
रनिवास, ना०वा०भा०पुं० रानी आदि २जनाना स्थान
रवि, ना०वा०सं०पुं० रवि, सूर्य्य
रविनंदिनि, ना०वा०सं०स्त्री० रविनन्दिनी, यमुनानदी
रमन, ना०वा०सं०पुं० १रमण, पति २व्यापक, ३क्रीड़ा
रमा, ना०वा०सं०स्त्री० लक्ष्मी
रम्य, ना०वा०सं०पुं० सुन्दर
रय, ना०वा०सं०पुं० वेग, जलदी
रये, वि०व०ब० रंगे
रवनी, ना०वा०भा० स्त्री० रमणी, स्त्री०
रवन, ना०वा०भा०पुं०रमण, पति
रविमनि, ना०वा०भा०पुं० सूर्य्यकांतमणि

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रस, ना० वा० सं० पुं० १ विषय २ सार ३ बल ४ मधुर आदि ५ शृङ्गार आदि ६ प्रेम ७ वीर्य

रसना, ना० वा० सं० स्त्री० १ जीभ

रसा, ना० वा० सं० स्त्री० पृथ्वी

रसाल, सुवा० सं० पुं० १ नीबू, आम का पेड़, २ रसालय

रसिक, वि० सं० पुं० रस का जानने वाला

रहसि, ना० वा० अधि० सं० पुं० १ हर्ष २ एकान्त

रहस्य, ना० वा० सं० पुं० गुप्त तत्व, भेद

राउल, ना० वा० भा० पुं० सरदार

राउर, ना० वा० भा० पुं० १ आप का २ राजमंदिर

राजा, ना० वा० भा० पुं० राजा

राका, ना० वा० सं० स्त्री० पूर्णमासी

राकेस, ना० वा० भा० पुं० राकेश, पूर्णचन्द्र

राचा, वि० भा० पुं० लगा, राचना, लगना

राजत, ना० वा० भा० पुं० सोहता, शोभता, राजना, सोहना

राजति, क्रि० वा० सोहती है

राजनय, ना० वा० सं० पुं० राजनीति

राजी, ना० वा० वी० भा० स्त्री० १ राजि, पंगति २ प्रसंग ३ शोभित

राजीव, ना० वा० सं० पुं० कमल

राजे, ना० वा० वि० व० व० प्रसन्न

राता, ना० वा० वि० पुं० सं० रत, प्रीतियुत

रामायुध, ना० वा० सं० पुं० धनुष, बाण

राय, ना० वा० सं० पुं० १ राजा २ धन

रायमुनि, ना० वा० सं० पुं० लाल नाम पक्षी

रार, ना० वा० सं० पुं० झगड़ा

रासभ, ना० वा० सं० पुं० गधा

राशि, ना० वा० भा० पुं० राशि, ढेरी, समूह

राहु, ना० वा० सं० पुं० ग्रह विशेष

रिच्छेश, ना० वा० पुं० भा० जामवन्त

रितुराज, ना० वा० सं० पुं० ऋतुराज, वसन्त

रिपु, ना० वा० सं० पुं० वैरी

रिपुसूदन, ना० वा० सं० पुं० शत्रुघ्न

रिषि, ना० वा० सं० पुं० ऋषि, सूक्ष्मदर्शी

रिष्ट, गु० वा० सं० पुं० हर्षित, खुश

रिषिनायक, भा० वा० सं० पुं० ऋषिनायक अत्रि ऋषि

रिसानी, ना० वा० भा० पुं० क्रोध, कुड़भई, रिसानी

रीते, ना० वा० भा० पुं० खाली

रुख, ना० वा० भा० स्त्री० १ सन्मुख २ क्रोध ३ दयादृष्टि

रुज, ना० वा० सं० पुं० रोग

रुद्र, ना० वा० सं० कृ० पुं० उत्पन्न

रुंड, ना० वा० सं० पुं० धड़

रुंधइ, वि० क्रि० कांटा का खावां

रूरी, ना० वा० भा० स्त्री० सुन्दर

रेख, ना० वा० भा० स्त्री० १ रेखा, लकीर २ गिनती

रेता, ना० वा० भा० स्त्री० रेत, बालू

रेनु, ना० वा० भा० स्त्री० रेणु, धूर

रेसु, ना० वा० भा० स्त्री० ईर्षा

रेंगाई, भा० वा० स्त्री० भा० चलाई, रेंगना, चलना

रेचन, ना० वा० सं० पुं० गोरोचन २ हरड़

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रोदन, ना॰वा॰सं॰नपुं॰ रोना
रोदिति, क्रि॰वा॰ रोता है
रोमपाट, ना॰वा॰भा॰पुं॰ ऊनी कपड़ा
रोष, ना॰वा॰सं॰पुं॰ क्रोध
रोहिनि, ना॰वा॰स्त्री॰भा॰ रोहिणी, चन्द्रमा की स्त्री
रोहु, क्रि॰वा॰ रोकना
रौताई, भा॰वा॰स्त्री॰भा॰ सरदारी
रंक, ना॰वा॰सं॰पुं॰ निर्धन
रंगभूमि, ना॰वा॰सं॰स्त्री॰ धनुषयज्ञ की भूमि, रणभूमि
रंजनि, ना॰वा॰भा॰स्त्री॰ रंजनी, हर्षदेनेवाली
रंतिदेव, ना॰वा॰सं॰पुं॰ एक राजा का नाम
रंध्र, ना॰वा॰सं॰पुं॰ छेद

ल

लकुट, ना॰वा॰सं॰पुं॰ लकड़ी
लगि, क्रि॰वि॰ १ पास २ तक ३ अवलम्ब
लघु, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ हलका २ थोड़ा ३ छोटा
लघुता, भा॰वा॰स्त्री॰भा॰ हलुकाई
लघुतापस, ना॰वा॰सं॰पुं॰ लक्ष्मन
लच्छ, ना॰ वा॰भा॰पुं॰ १ निशान, लक्ष्मन २ ब्रह्म
लच्छा, ना॰वा॰भा॰ पुं॰ लक्ष, लाख १००००
लच्छि, ना॰वा॰भा॰स्त्री॰ लक्ष्मी
लटत, क्रि॰वा॰ मरता है, लटना
लय, ना॰वा॰सं॰पुं॰ १ चित्त वृत्ति २ नाश
ललना, ना॰वा॰स्त्री॰सं॰स्त्री
ललाट, ना॰वा॰पुं॰सं॰ माथा
ललाम, ना॰वा॰पुं॰सं॰ १ श्रेष्ठ २ रतन
ललित, ना॰वा॰सं॰पुं॰ सुन्दर
लव, ना॰वा॰सं॰पुं॰ १ अंश २ अल्प ३ काल
लवन, ना॰वा॰भा॰पुं॰ लवण, नोन
लवनसिंधु, ना॰वा॰पुं॰भा॰ लवण सिंधु खारा समुद्र
लवा, ना॰वा॰भा॰पुं॰ पक्षी, विशेष
लवाई, क्रि॰वि॰ १ नई विआई गौ २ सिवा करके
लषन, ना॰वा॰भा॰पुं॰ १ लक्ष्मण २ देखना
लषहीं, क्रि॰वा॰ देखते हैं, लखना, देखना
लषाऊ, ना॰वा॰भा॰पुं॰ १ चिन्ह २ जानना
लसत, क्रि॰वा॰ सोहत, लसना, सोहना
लाई, सम्प्रदान कारक, वास्ते, लिये
लागू, ना॰वा॰पुं॰भा॰ आधार, लाग
लाघव, ना॰ वा॰ सं॰पुं॰ १ शीघ्र २ हलका
लाजा, ना॰वा॰सं॰स्त्री॰ १ लावा २ लज्जा
लाटी, ना॰वा॰भा॰पुं॰ लाठ आदि सरकना
लालसा, ना॰वा॰सं॰स्त्री॰ इच्छा
लाली, ना॰वा॰सं॰स्त्री॰ दुलारी, लालना, दुलारना
लावक, ना॰वा॰सं॰पुं॰ लवा
लावण्य, ना॰वा॰भा॰पुं॰ लावण्य, शोभा
लाहू, ना॰वा॰पुं॰भा॰ लाभ
लांघे, ना॰वा॰वि॰व॰ब॰ मारे
लिलहिं, करण कारक॰ लीलासे, विनाश्रम
लिलार, ना॰वा॰भा॰पुं॰ ललाट, माथा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लीका, ना॰वा॰सं॰स्त्री॰१लीक, मर्य्यादा २ रेखा, ३ गिनती

लुटत, क्रि॰वा॰ लोटना, लुटन

लुबुध, ना॰वा॰भा॰पुं॰ लुब्ध, लोभी

लूक, ना॰वा॰सं॰पुं॰ तारा, लुब्ध

लेखई, क्रि॰वा॰ लखती है, देखती है

लेखति, क्रि॰वा॰ खोदती है

लेखा, ना॰वा॰सं॰स्त्री॰ १रेखा २देखना ३लखा, देखा ४हिसाब

लेस, ना॰वा॰भा॰पुं॰ लेश, थोड़ासा

लोई, ना॰वा॰भा॰पुं॰ लोग

लोक, ना॰वा॰सं॰पुं॰ १जगत २संतानिक आदि

लोकप, ना॰वा॰सं॰पुं॰ लोकपाल, इन्द्रादि

लोगाई, ना॰वा॰स्त्री॰भा॰स्त्री, मेहरारू

लोना, गु॰वा॰भा॰पुं॰ सुन्दर

लोनाइ, भा॰वा॰भा॰स्त्री॰ सुन्दरता

लोपनि, ना॰वा॰भा॰पुं॰ आंख

लोला, ना॰वा॰सं॰पुं॰ लोल, चंचल

लोलुप, ना॰वा॰सं॰पुं॰ लंपट

लोवा, ना॰वा॰भा॰स्त्री॰ लोमड़ी

लोह, ना॰वा॰सं॰पुं॰ लोहा, शस्त्र

स

सई, ना॰वा॰भा॰स्त्री॰ एकनदी का नाम

सक, ना॰वा॰भा॰पुं॰ १संदेह २समर्थ

सकरुन, वि॰सं॰पुं॰ सकरुण, करुना के साथ, दीनता के साथ

सकल, ना॰वा॰पुं॰सं॰ १सब २कला के साथ, विरणयुत ३सावयव

सकाना, वि॰भा॰पुं॰ डरा, डरना

सकानी, ना॰वा॰वि॰स्त्री॰भा॰ सकुचानी सकालनी, सकुचाना

सकिलि, क्रि॰वि॰ बटोरकरके, एकट्ठा होकरके, सकिलना, बटोरना

सकुनि, ना॰वा॰भा॰स्त्री॰ शकुनि पक्षी, चिड़िया

सकृत, अव्य॰ १एक २एकबार

सकेलि, क्रि॰वि॰ बटोरकरके, सकेलना, बटोरना

सक्ती, ना॰वा॰भा॰स्त्री॰ १शक्ति, बल २स्त्री॰ ३बरछी

सक्र, ना॰वा॰ पुं॰ भा॰ शक्र, इन्द्र

सखर, ना॰वा॰वि॰पुं॰ सखरसमेत, राक्षस

सगरे, ना॰वा॰वि॰ब॰व॰पुं॰भा॰ सब, सकल

सगर्भ, वि॰सं॰पुं॰ तात्पर्य्ययुत

सगलानि, ना॰वा॰भा॰पुं॰१ सग्लानि, निरादरसे, २ग्लानिके साथ, हर्ष विना

सगाई, ना॰वा॰भा॰स्त्री॰ नाता

सचान, ना॰वा॰पुं॰भा॰ सिकरा, पक्षीविशेष

सचिव, ना॰वा॰सं॰पुं॰ मंत्री

सची, ना॰ वा॰स्त्री॰भा॰ इन्द्राणी

सचु, ना॰वा॰भा॰पुं॰ सुख, आनन्द

सचेता, ना॰वा॰भा॰पुं॰ सचेत, सावधान

सजग, ना॰ वा॰ वि॰ भा॰पुं॰ सावधान, खबरदार

सजनी, ना॰वा॰सं॰स्त्री॰ सखी

सजाई, ना॰वा॰भा॰स्त्री॰ १दंड, सजा, २साजकरके, साजना

सजिव, ना॰वा॰भा॰पुं॰ सजीव १ सुख से जीना २ प्राणसहित

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सजोवन, ना०वा०भा०पुं० तयारी
सठ, ना०वा०भा०पुं० शठ, मूर्ख
सड़ासिन्ह, ना०वा०भा०स्त्री० सनाखि
सत, ना०वा०सं०पुं० १साधु २अविनाशी ३शान्त, सो ४अच्छा
सतपंच, ना०वा०सं०पुं० सातपांच
सतरूपा, ना०वा०सं०स्त्री० मनु की स्त्री का नाम
सतानन्द, ना०वा०सं०पुं० जनक जीके पुरोहितका नाम
सति, ना०वा०सं०स्त्री० सुधा, सीधा
सती, ना०वा०सं०स्त्री० १पतिव्रता २दक्ष की बेटी
सत्यलोक, ना०वा०सं०पुं० ब्रह्मलोक
सद, ना०वा०सं०पुं० श्रेष्ठ, बैरने वाला
सदन, ना०वा०सं०नपुं० घर
सद्य, ना०वा०वि०सं०पुं० रसो सहित
सदाचार, ना०वा०वि०सं०पुं० श्रेष्ठ, आचार २, अच्छा आचरण है जिसका
सदैव, अव्य० सदाही, सदा, हमेशा
सद्य, अव्य० जलदी, उसीकाल में
सन, अव्य० से, साथ
सनकादि, ना०वा०सं०पुं० सनक आदि चार ब्रह्मा के बेटे
सनकारे, क्रि०वा० इशारा किया, सनकारना, इशारा करना
सनाथ, ना०वा०वि०सं०पुं० १स्वामी सहित २कृतार्थ
सनाह, ना०वा०वि०सं०पुं० १बख्तर २सनाथ, पति के साथ
सपच्छ, ना०वा०सं०पुं० सपक्ष, पंख सहित
सपथ, ना०वा०भा०पुं० शपथ, सौगंद
सपदि, अव्य० जलदी, तुरंत
सपरब, ना०वा०वि०सं०पुं० सपर्व, गांठ के साथ
सपेला, ना०वा०भा०पुं० सांप का बच्चा
सप्त, सं०वा०सं०पुं० सात
सप्तावरन, ना०वा०भा०पुं० अकास आदि सात आवरण
सभीत, ना०वा०वि०सं०पुं० डर के साथ
सम, ना०वा०सं०पुं० १बरोबर २बातका त्याग ३रागद्वेष रहित
समदरसी, ना०वा०भा०पुं० समदर्शी, बरोबर देखनेवाला
समदि, क्रि०वि० पूजा करके
समन, ना०वा०भा०पुं० १शमन, नाश २यमराज
समय, ना०वा०सं०पुं० १काल २अच्छे दिन
समररस, ना०वा०सं०पुं० वीर रस
समर्पै, क्रि०वि० सौंपै, समर्पना
समस्त, ना०वा०सं०नपुं० सब
सम्यक, अव्य० अच्छीभांति
समागम, ना०वा०सं०पुं० सभा
समाज, ना०वा०सं०पुं० १सभा २समूह
समाधि, ना०वा०सं०स्त्री० १सुख २स्थिरता
समान, ना०वा०सं०पुं० १बरोबर २प्रवेश, समाना
समास, ना०वा०सं०पुं० संक्षेप, थोड़ा
समिधि, ना०वा०सं०स्त्री० लकड़ी
समीती, ना०वा०भा०स्त्री० मिताई, दोस्ती
समीप, ना०वा०सं०नपुं० निकट, नियरे
समीर, ना०वा०सं०पुं० पवन, हवा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सगीहा, ना०वा०सं०पुं० काया दिक तीन का व्यवहार
समुदाई, ना०वा०भा०पुं० समुदाय, समूह
समुहानी, ना०वा०भा०पुं० सन्मुखभई, समुहाना, सन्मुख होना
सय, सं०वा०भा०पुं० सौ २००
सयन, ना० वा०भा०पुं० १ सेवना २ सव्या ३ इशारा
सर, ना०वा० सं०पुं० १ तालाव २ बाण ३ चिन्ता
सरद, ना०वा०भा०पुं० शरद, एक ऋतु का नाम
सरपि, ना०वा०भा०पुं० घी
सरल, ना०वा०सं०पुं० १ सीधा २ सड़ा
सरवरि, ना०वा०भा०पुं० बराबरी
सरवरी, ना०वा०भा०स्त्री० रात्रि, रात
सरस, ना०वा०सं०पुं० १ प्रेम सहित २ मकरन्द समेत
सरसई, ना०वा०सं०स्त्री० सरस्वती नदी
सरसीरुह, ना०वा०सं०पुं० कमल (तलाव में जो पैदा है)
सरासन, ना०वा०भा०पुं० धनुष
सरासुर, ना०वा०भा०पुं० बाणासुर
सरि, ना० वा०सं० स्त्री० नदी
सरित, ना०वा०सं०स्त्री० नदी
सरिस, ना०वा०भा०पुं० समान, बराबर
सरुज, ना०वा०सं०पुं० रोगी, बिमारहा, रोग युक्त
सरुष, ना०वा०सं०पुं० क्रुद्ध, क्रोध सहित
सरेन, ना०वा० करण कारक-सरसे, बाण से
सरोज, ना०वा०सं०नपुं० पद्म, कमल
सरोरुह, ना०वा०सं०नपुं० कमल
सरौं, ना०वा०भा०पुं० उंड
सर्व, ना०वा०सं०पुं० १ सब, सकल २ सबरूप
सर्वकाल, ना०वा०सं०पुं० सबदिन
सर्वज्ञ, ना०वा०सं०पुं० सब जानने वाला
सर्वदा, अव्य० सबदिन, हमेशा
सलभ, ना०वा०सं०पुं० पतंग, फतंगा
सलिल, ना०वा०सं० नपुं० पानी, जल
सलोक, ना०वा०सं०पुं० यश, जस
सलोने, ना०वा०भा०पुं० सुन्दर
सव, ना०वा०भा०पुं० शव, मुर्दा
सवीज, ना० वा० वि० पुं० सं० बीजाक्षर सहित
सस, ना० वा०सं०पुं० शश, खरहा, खरगोश
ससक, ना०वा०सं०पुं० शशक, खरहा,
ससि, ना० वा०भा० स्त्री० १ शशि, चन्द्रमा २ रेवती
ससिरस, ना०वा०सं०पुं० शशिरस, अमृत
सह, अव्य० समेत, सहित
सहगामिनी, ना०वा०सं०स्त्री० सती
सहज, ना०वा०सं०नपुं० स्वभाविक, स्वभाव से पैदा हुआ
सहनी, ना०वा०भा०पुं० रोगा
सहस, ना० वा० सं०पुं० १ डर २ वेफिकिर
सहसा, ना०वा०भा०पुं० १ उत्साह २ रोष सहना, क्रोध सहना
सहस, सं०वा०भा०पुं० सहस्र, हज़ार

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सहसबाहु, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ सहस्रबाहु, सहस्रभुज राजा
सहसा, ना॰ वा॰ भा॰ स्त्री॰ १ जल्दी २ हठ ३ बिना विचार के
सहसाखी, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ १ सहस्राक्षि, हज़ार आंख रखने वाला, इन्द्र २ गवाह समेत, साखी सहित
सहसाहन, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ शेष नाग, हज़ार मुंह रखने वाला
सहाया, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ १ साथ २ मददगार, सहायक
सहित, अव्य॰ १ हित समेत, मित्र समेत २ संग समेत
सही, अव्य॰ भा॰ वा॰ निश्चय
सहेली, ना॰ वा॰ भा॰ स्त्री॰ सखी
सहोदर, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ एक पेट से जन्मा
साईं, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ स्वामी, मालिक
साउज, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ मृगा, हरिला
साकबनिक, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ १ कुंजड़ा, साग बेचने वाला २ बिसाती
साखामृग, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ वानर
साखोच्चार, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ वंशावली कहना
सागर, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ समुद्र
साज, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ १ सामग्री २ सजव
साढ़ेसाती, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ शनीचर दशा
साथरी, ना॰ वा॰ भा॰ स्त्री॰ आसनी
साखा, ना॰ वा॰ भा॰ स्त्री॰ १ डार २ बहुत प्रकार से विचार

सादर, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ आदर पूर्वक
साधन, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ उपाय, तदबीर
साधनक, ना॰ वा॰ वि॰ सं॰ पुं॰ साधन समेत, उपाय युक्त
साधा, ना॰ वा॰ वि॰ मिलाया
साधु, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ १ सज्जन, भला आदमी २ अच्छा ३ मोक्ष पाने की इच्छा रखने वाला
साधुमत, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ शिष्टाचार, अच्छा व्यवहार
साध्य, वि॰ साधने के योग्य
सान, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ १ बाढ़, तेज करना २ मिलाना, आदरमान
साती, ना॰ वा॰ वि॰ भा॰ स्त्री॰ मिली
सायत, क्रि॰ वि॰ श्राप देता हुआ
साबर, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ किरात के भेष में, शिव कृतादि मंत्र
सामध, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ समधियों का मिलना
सायक, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ शायक, बाण, तीर
सायुज्य, ना॰ वा॰ सं॰ नपुं॰ ब्रह्म में लीन
सारद, ना॰ वा॰ भा॰ स्त्री॰ १ सरस्वती २ सार देनेवाला
सारदी, ना॰ वा॰ सं॰ स्त्री॰ जो वस्तु शरद ऋतु में होती है
सारस, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ एक चिड़िया
सारा, वि॰ ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ १ पाला, पोषा, २ किया
सारी, ना॰ वा॰ सं॰ स्त्री॰ मैना
सारंग, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ १ धनुष २ भौंरा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

साल, ना॰वा॰सं॰पुं॰ १ दुख २ शोभा ३ घर
सालक, ना॰वा॰सं॰पुं॰ दुखदाई
साली, ना॰वा॰सं॰पुं॰ १ धान २ शोभा-युक्त ३ संयुत
सावक, ना॰वा॰सं॰पुं॰ शावक, बच्चा, चिड़िया का बच्चा
सावकरन, ना॰वा॰भा॰पुं॰ श्यामकर्ण, काले कान वाला घोड़ा
सावकाश, ना॰वा॰भा॰पुं॰ काम से छुट्टी
सास्वत, ना॰वा॰सं॰पुं॰ अमर
सिकता, ना॰वा॰सं॰स्त्री॰ बालू
सिखा, ना॰वा॰भा॰पुं॰ १ शिक्षा २ शिष्य, चेला
सिख, ना॰वा॰भा॰स्त्री॰ १ चोटी, २ दीया का टेम
सिखिनी, ना॰वा॰सं॰स्त्री॰ मोरनी
सित, गु॰वा॰सं॰पुं॰ श्वेत, सफेद
सिथिल, ना॰वा॰सं॰पुं॰ ढीला
सिद्ध, ना॰वा॰वि॰सं॰पुं॰ कृ॰ १ अणिमादि सिद्धि २ मुक्त ३ सिधारा
सिधारी, वि॰ गई, सिधारना, जाना
सिधि, ना॰वा॰सं॰स्त्री॰ अणिमादि आठ सिद्धि २ काम होना
सिमटे, वि॰ ना॰वा॰पुं॰ व॰व॰ इकट्ठे, सिमटना
[illegible]प, ना॰वा॰भा॰स्त्री॰ सीता
सियन, ना॰वा॰भा॰पुं॰ सीना
सियरे, वि॰ जूड़े
सिरस, ना॰वा॰भा॰पुं॰ सरसि वृक्ष
सिरानी, ना॰वा॰स्त्री॰भा॰ बीती, सिरानी

सिरावै, क्रि॰वा॰ ठंढा करे
सिराहिं, क्रि॰वा॰ बीतते हैं
सिरिजा, वि॰ रचा, बनाया (सं॰ सृज)
सिलीमुख, ना॰वा॰सं॰पुं॰ १ वानर २ भ्रमर
सिल्प, ना॰वा॰सं॰पुं॰ शिल्प, कारीगरी, राजगरी
शिव, ना॰वा॰भा॰पुं॰ १ शिव, महादेव २ कल्यान
सिवसैल, ना॰वा॰भा॰पुं॰ कैलाश पर्वत
सिवा, ना॰वा॰भा॰स्त्री॰ शिवा, पार्वती
सिवि, ना॰वा॰भा॰पुं॰ शिव, राजा
सिविका, ना॰वा॰भा॰पुं॰ पालकी
सिसिर, ना॰वा॰भा॰पुं॰ शिशिर ऋतु
सिसु, ना॰वा॰भा॰पुं॰ शिशु, लड़का, बच्चा
सिंसुफा, ना॰वा॰भा॰स्त्री॰ १ सीसों का पेड़ २ सरीफा का पेड़
सिस्न, ना॰वा॰भा॰पुं॰ लिङ्ग
सिहाहीं, ना॰वा॰भा॰पुं॰ १ देख के संतुष्ट होते हैं २ अभिलाष, डाह, सिहाना
सीकर, ना॰वा॰भा॰पुं॰ छींटा, बंद
सीत, ना॰वा॰भा॰पुं॰ शीत, १ पाला २ ठंढा
सीदहिं, क्रि॰वा॰ दुखी होते हैं
सीपी, ना॰वा॰भा॰स्त्री॰ सुतुही
सृकाल, ना॰वा॰भा॰पुं॰ शृगाल, सिआर
सृष्टि, ना॰वा॰सं॰स्त्री॰ १ संसार २ उत्पत्ति
सुआर, ना॰वा॰भा॰स्त्री॰ रसोइया

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुअंजन, ना० वा० सं० पुं० अच्छा अंजन, सिद्ध अंजन

सुक, ना० वा० सं० पुं० १ सुगा २ शुक देवमुनि

सुककेश, गु० वा० सं० पुं० अतिकठोर

सुकृत, ना० वा० सं० पुं० पुण्य, अच्छी करनी

सुकृती, ना० वा० सं० पुं० धर्मात्मा, अच्छा कार्य्यकरनेवाला

सुकेतु, ना० वा० सं० पुं० यक्ष विशेष

सुकंठ, ना० वा० सं० पुं० सुग्रीव

सुखमा, ना० वा० सं० स्त्री० अतिशोभा

सुखासन, ना० वा० सं० नपुं० सुखपाल

सुक्र, ना० वा० सं० पुं० १ वीर्य्य २ शुक्राचार्य

सुगार, क्रि० वि० लगाकरके

सुघटित, ना० वा० वि० सं० कृ० अच्छा बना

सुचाई, भा० वा० भा० स्त्री० सुधाई

सुचि, गु० वा० भा० पुं० शुचि, पवित्र

सुचिन्तित, ना० वा० वि० सं० कृ० अति विचारित

सुजन, ना० वा० सं० पुं० साधु, भला आदमी

सुजान, ना० वा० सं० पुं० चतुर

सुड़ाकि, ना० वा० वि० कोड़ा मारके

सुठि, गु० वा० भा० पुं० अति, बहुत

सुत, ना० वा० सं० पुं० पुत्र, बेटा

सुदेश, ना० वा० भा० पुं० सुदेश, १ अंग २ सुन्दरदेश

सुदेशी, ना० वा० वि० पुं० अच्छीवसुदेशका

सुधा, ना० वा० सं० स्त्री० १ अमृत २ जल

सुधाकर, ना० वा० सं० पुं० चन्द्रमा

सुनयना, ना० वा० सं० स्त्री० जनक की पत्नी

सुनासीर, ना० वा० भा० पुं० इन्द्र

सुपास, ना० वा० भा० पुं० सुख, आराम, सुविस्ता

सुभ, ना० वा० भा० पुं० सुवह, नड़का

सुभ, गु० वा० भा० पुं० १ अच्छा २ सुन्दर शोभा

सुभग, गु० वा० सं० पुं० १ सुन्दर २ ऐश्वर्य

सुभगुन, ना० वा० भा० पुं० ज्ञान वैराग्यादि अच्छे गुण

सुभाऊ, ना० वा० भा० पुं० १ संस्कार २ अच्छाभाव

सुभुज, ना० वा० सं० पुं० सुवाहु ऐसा

सुभ्र, ना० वा० सं० पुं० सफेद

सुमन, ना० वा० सं० पुं० १ फूल २ सुन्दरमन

सुमिरत, क्रि० वि० ध्यानकरतासुमरा

सुस्मृति, ना० वा० भा० पुं० स्मृतिग्रंथ, धर्म शास्त्र

सुमंत्र, ना० वा० सं० पुं० मंत्र, सलाह

सुरभि, ना० वा० सं० स्त्री० १ गौया २ सुगन्ध

सुरमनि, ना० वा० भा० पुं० चिंतामणि

सुररुख, ना० वा० भा० पुं० मंदार आदि पांचवृक्ष

सुरसर, ना० वा० सं० पुं० मानसरोवर

सुरसरि } ना० वा० सं० स्त्री० गंगानदी
सुरसरिता } मन्दाकिनी

सुरसेनप, ना० वा० सं० पुं० कार्त्तिकेय

सुरवीथी, ना० वा० सं० स्त्री० देवतों की राह

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुरा, ना॰ वा॰ सं॰ स्त्री॰ मदिरा, शराब
सुराई, ना॰ वा॰ भा॰ स्त्री॰ शूरता, वीरता
सुरुचि, ना॰ वा॰ सं॰ स्त्री॰ अच्छी रुचि
सुरंग, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ १ पीतरंग २ लालरंग ३ अच्छा रंग
सुलभ, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ सुगम
सुवन, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ सूत, पुत्र
सुवसा, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ १ सुगन्ध २ यश
सुवसिनी, ना॰ वा॰ सं॰ स्त्री॰ सुहागिनी
सुवेला, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ १ समुद्र का किनारा २ पर्वत ३ सुन्दर समय
सुहाई, ना॰ वा॰ भा॰ स्त्री॰ सुन्दर
सूकर खेत, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ वाराह क्षेत्र
सूच, सूचक, सूचत } क्रि॰ वि॰ जानता हुआ
सूत, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ १ सारथी २ पुराण से स्तुति करनेवाला
सूत्रधार, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ पुतरी नचाने वाला
सूनु, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ पुत्र
सूप, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ १ दाल २ छाज
सूपकारक, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ रसोइया, रसोई करनेवाला
सूल, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ शूल १ दुःख २ त्रिशूल
सेतु, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ १ पुल, बांध २ मर्य्यादा
सेनप, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ सेनापति
सेना, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ बरछी, भाला
सेवी, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ सेवक, सेवा करनेवाला

शेष, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ १ शेषनाग २ थोड़ा, बाकी
सैल, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ पर्वत
सैलजा, ना॰ वा॰ भा॰ स्त्री॰ पार्वती, गिरिजा
सैलराज, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ हिमालय
सोचनीय, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ शोचने के योग्य
सोधा, ना॰ वा॰ वि॰ पुं॰ भा॰ शुद्ध किया
सोधेउ, ना॰ वा॰ वि॰ भा॰ पुं॰ खोजा, तलाश किया
सोन, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ १ सोनभद्र नदी २ लाल ३ सोना
सोनित, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ लोहू, रक्त
सोपान, ना॰ वा॰ सं॰ स्त्री॰ सीढ़ी
सोपि, सर्वना॰ अव्य॰ झूठ भी
सोपी, सर्वनाम, अव्य॰ वह भी
सोम, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ चन्द्रमा
सोरा, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ आवाज़
सोवत, वि॰ पुं॰ भा॰ सोता हुआ
सोह, ना॰ वा॰ भा॰ स्त्री॰ शोभा
सोहमस्मि, वाक्य, वही मैं हूं
सौधाई, ना॰ वा॰ भा॰ स्त्री॰ अच्छा समय
सौच, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ १ शुद्धता २ दंडक वन आदि
सौध, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ मन्दिर
सौमित्र, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ सुमित्रा का बेटा लक्ष्मण
सौरभ, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ आम का पेड़
सौरज, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ शूरता
सं॰, अव्यय, शं॰ कल्याण, भला
संकट, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ १ मूर्छा, २ विपत्ति

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संकर, ना॰ वा॰ पुं॰ भा॰ १ शिव २ महादेव, मिला हुआ
संकाश, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ तुल्य, बराबर
संकुल, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ पूर्ण, भरा, बिलकुल
संगा, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ १ संबन्ध २ राग
संग्रह, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ अंगीकार, लेना
संघट, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ संयोग
संघर्षन, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ रगर
संघात, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ १ समूह २ संबंध
संजम, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ नियम
संजात, वि॰ सं॰ कृ॰ उत्पन्न, पैदा हुआ
संजुग, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ युद्ध, लड़ाई
संयोग, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ उपाय, तदबीर
संतत, अव्य॰ निरन्तर, सर्वदा, सबदिन
संदोह, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ समूह
संधाने, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ जोड़ा
संपन्न, वि॰ सं॰ कृ॰ १ युक्त २ धनी
संपुट, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ १ हाथ जोड़ के २ डब्बा
संभव, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ जन्म, उत्पत्ति
संभवति, वि॰ सं॰ कृ॰ अति आदर व मान किया गया
संभूत, वि॰ सं॰ कृ॰ उत्पन्न, पैदा हुआ
संभ्रम, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ १ वेग, जल्दी २ भ्रम, धोखा ३ उत्साह
संमत, ना॰ वा॰ वि॰ सं॰ पुं॰ सल्लाह
संबल, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ राह का खरचा
संबुक, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ घोंघा
संसर्ग, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ संगति
संसुति, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ संसार, दुनियां
सांति, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ शांति, शमन
सांसत, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ १ दंड २ पीड़ा
सिंगरौर, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ शृंगवेरपुर
सिंघल, ना॰ वा॰ पुं॰ भा॰ उपद्वीप विशेष
सिंधु, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ समुद्र
सिंधुर, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ हाथी
सिंह, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ १ श्रेष्ठ २ व्याघ्र, बाघ
सींव, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ हद्द, सींवा
सृंग, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ सींग, सिखर
सुंदरी, ना॰ वा॰ सं॰ स्त्री॰ स्त्री
सुरत, क्रि॰ वि॰ चमकता हुआ
सुरामहे, क्रि॰ वा॰ हम ध्यान करते हैं
स्यामल, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ कालारंग
स्यामा, ना॰ वा॰ भा॰ स्त्री॰ १ एक चिड़िया २ सोलह वर्ष की स्त्री
स्यंदन, ना॰ वा॰ सं॰ नपुं॰ रथ
स्रग, ना॰ वा॰ सं॰ स्त्री॰ फूल की माला
स्रजत, क्रि॰ वि॰ बनाता हुआ
स्रम, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ श्रम, मेहनत, थक जाना
स्रमविंदु, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ पसीना
स्रमित, वि॰ सं॰ क्रि॰ नपुं॰ श्रमित, थका
स्रवन, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ श्रवण १ कान २ सुनना
स्रवत, क्रि॰ वि॰ १ गिरता हुआ २ बहता हुआ
स्त्री॰ ना॰ वा॰ सं॰ स्त्री॰ १ सीता २ लक्ष्मी ३ धन ४ शोभा
स्त्रीपति, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ श्रीपति, विष्णु
स्त्रीफल, ना॰ वा॰ सं॰ नपुं॰ १ नारियल २ बेल
स्त्रीवत्स, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ श्रीवत्स, लक्ष्मी का चिन्ह

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्रीरंग, ना॰वा॰सं॰पुं॰ लक्ष्मीपति
स्रुति, ना॰वा॰सं॰पुं॰ श्रुति १वेद २कान ३सुनना
स्रुवा, ना॰वा॰सं॰पुं॰ होम में का एक काष्ठ
स्रेनी, ना॰वा॰सं॰स्त्री॰ श्रेणी १पंक्ति, पांति २समूह
स्व, ना॰वा॰सं॰पुं॰ अपना
स्वच्छता, ना॰वा॰भा॰स्त्री॰ निर्मलता, सफाई
स्वच्छन्द, ना॰वा॰सं॰पुं॰ स्वाधीन, पराधीननहीं
स्वतंत्र, ना॰वा॰भा॰पुं॰ स्वाधीन
स्वयं, ना॰वा॰सं॰पुं॰ आपही, स्वतंत्र
स्वयंभूमनु, ना॰वा॰सं॰पुं॰ एक राजा का नाम
स्वल्प, गु॰वा॰सं॰नपुं॰ १छोटा २थोड़ा
स्ववश, ना॰वा॰सं॰पुं॰ अपने वश, पराधीननहीं,
स्वसेव्य, ना॰वा॰सं॰पुं॰ अपने सरूप से सेवा करने के योग्य
स्वागत, ना॰वा॰सं॰नपुं॰ कुशल से आया
स्वाती, ना॰धा॰सं॰स्त्री॰ नक्षत्र विशेष
स्वान, ना॰वा॰सं॰पुं॰ कुत्ता
स्वामिधर्म, राज्यपालन, स्वामी का काम
स्वामी, ना॰धा॰सं॰पुं॰ मालिक, राजा
स्वारथ, ना॰वा॰सं॰पुं॰ सेवा, अपने अर्थ
स्वेद, ना॰वा॰सं॰पुं॰ पसीना

ह

ह, अव्य॰ कष्ट
हई, ना॰वा॰भा॰पुं॰ नाव
हए, ना॰वा॰भा॰पुं॰ब॰व॰ मारे
हंकरावा, ना॰धा॰भा॰पुं॰ हलावा
हट्ट, ना॰वा॰सं॰पुं॰ दूकान
हते, ना॰वा॰सं॰वि॰पुं॰ मारे, नष्ट किये
हथवासट्ट, ना॰वा॰भा॰पुं॰ डांड़ा
हनत, क्रि॰धा॰ मारता हन्ना
हनु, ना॰वा॰भा॰पुं॰ हनूमान
हने, ना॰धा॰वि॰भा॰पुं॰ मारे, वज्रादि, हनना, मारना
हय, ना॰वा॰सं॰पुं॰ घोड़ा
हयगृह, ना॰वा॰सं॰पुं॰ घोड़सार
हयी, ना॰वा॰वि॰भा॰पुं॰ मारा
हर, ना॰वा॰सं॰पुं॰ १लेजाना २शिव ३चोरी ४काटना
हरषत, क्रि॰वि॰ खुशी, प्रसन्न
हरगिरि, ना॰धा॰सं॰पुं॰ कैलाश
हरति, क्रि॰धा॰ लेजाती हरे
हरद, ना॰वा॰भा॰स्त्री॰ हल्दी
हरषु, ना॰वा॰भा॰पुं॰ हर्ष, शोक
हरि, ना॰वा॰सं॰पुं॰ १विष्णु २कृष्ण ३वानर ४घोड़ा
हरिश्चन्द्र, ना॰धा॰भा॰पुं॰ राजा विशेष
हरिआला, ना॰वा॰भा॰पुं॰ बाज़
हरिल, गु॰वा॰सं॰पुं॰ हरे रंग का
हरी, ना॰धा॰वि॰सं॰स्त्री॰ चोराई, हरना
हरु, ना॰वा॰भा॰पुं॰ हलका
हरुवाई, ना॰धा॰सं॰पुं॰ हलकापन
हलधर, ना॰वा॰सं॰पुं॰ बलदेव
हवि, ना॰वा॰स्त्री॰सं॰ खीर, हव्य

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हस्त, ना०वा०सं०पुं० हाथ
हहरि, वावर, अव्य० घबड़ाकर
हा, अव्य० १ दुःख २ नाश
हारक, ना०वा०सं०पुं० सोना
हानि, ना०वा०सं०पुं० १ नुकसान २ नाश
हि, अव्य० निश्चय
हिके, ना०वा०क०का०पुं०भा० हृदय के
हित, ना०वा०सं०पुं० १ मित्र, दोस्त २ भला अच्छा
हिम, ना०वा०सं०नपुं० १ ऋतु विशेष २ पाला
हिमउपल, ना०वा०भा०पुं० बर्फ़
हिमकर, ना०वा०सं०पुं० चन्द्रमा
हिमशैल, ना०वा०सं०पुं० हिमालय पर्वत
हिमवंत, ना०वा०सं०पुं० हिमाचल पर्वत
हिय, ना०वा०भा०पुं० हृदय
हिसिया, ना०वा०भा०स्त्री० वरुवरी
हृदय निकेत, ना०वा०सं०पुं० कामदेव
हृदयेश, ना०वा०सं०पुं० अन्तर्यामी
हुनर, ना०वा०भा०पुं० चतुराई
हुने, ना०वा० वि० होम किया
हुमगि, क्रि०वि० कूदके
हुलसी, ना०वा०भा०स्त्री० १ सुखी २ तुलसी दास की माता
हुलास, ना०वा०भा०पुं० आनन्द, खुशी
हेति, अव्य० हाइति, हा, यह
हेतु, ना०वा०सं०पुं० १ कारण, सबब २ प्रेम ३ प्रयोजन, काम
हेम, ना०वा०सं०पुं० सोना
हेरि, वि०क्रि० १ देखके २ खोजके ३ विचारके
हेला, ना०वा०सं०स्त्री० १ क्रीड़ा २ अनायास, बेकाम
हकारी, क्रि०वि० बुलाकर
हंस, ना०वा०सं०पुं० १ पक्षी २ सूर्य
हांती, ना०वा०भा०पुं० नाश
हिंस, ना०वा०पुं०भा० घोड़े का शब्द
हिंसा, ना०वा०सं०स्त्री० जीव मारना
हिहिनाहीं, ना०वा०पुं०भा० हिन हिनाते हैं
हींचे, क्रि०वि० खींचके
हृद, ना०वा०सं०पुं० बड़ा गहिरा तालाब, द्रह

अ

अंदेसा, ना०वा०सं०स्त्री० त्रिदली, तीनपंक्ति
अंसित, ना०वा०सं०पुं० डरा, भय युक्त
अंता, ना०वा०सं०पुं० रक्षा करने वाला
अंतु, क्रि०वा० रक्षाकरे
अंस, ना०वा०सं०पुं० डर, भय
अंसक, ना०वा०सं०पुं० भयंकर, डरावनी
अंतहि, वि०क्रि० रक्षा करो
अंकाल, ना०वा०सं०पुं० तीन काल, भूत, भविष्यत और वर्तमान
अंधा, ना०वा०सं०पुं० तीन विधि
अंपुर, ना०वा०सं०पुं० दैत्य विशेष
अंपुर ना०वा०सं०पुं० तीनरेखा का तिलक
अंविक्रम, ना०वा०सं०पुं० विराट रूप
अंविध, ना०वा०सं०पुं० १ सात्विकादि तीन विधि, २ मन, क्रम, वचन
अंय, ना०वा०भा०स्त्री० स्त्री
अंन, ना०वा०भा०पुं० नरकण

ज्ञ

ज्ञानि, ना०वा०सं०पुं० ज्ञानि के सींग
ज्ञास, ना०वा०सं०पुं० श्वास से जो धुआं

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सङ्केत

ना०वा० = नामवाचक	वि०क्रि० = विधिक्रिया
क्रि०वि० = क्रियाविशेषण	सं०वा० = संख्यावाचक
वि० = विशेषण	भा०वा० = भाववाचक
अ०वा० = आधिकरणवाचक	व०व० = बहुवचन
प्र०वा० = प्रमाणवाचक	द०स० दर्शकसर्वनाम
अ० = अव्यय	प्र०वा० = प्रत्यक्षवाचक
स० = सर्वनाम	आ०वा० = आशिष्यवाचक
पुं० = पुंलिङ्ग	स०ना०अ० सर्वनामअव्यय
स्त्री० = स्त्रीलिङ्ग	कृ० = कृदन्त
नपुं० = नपुंसकलिङ्ग	जा०वा० = जातिवाचक
सं० = संस्कृत	प्र० = प्रत्यय
भा० = भाषा	अ० = अनिश्चयवाचकसर्वनाम
प्रा० = प्राकृत	त्रलिं० = त्रलिङ्ग पुलिङ्ग स्त्री० नपुं०
गु०वा० = गुणवाचक	नि०अ० = निषेधार्थकअव्यय
वि०ना० = विशेषनाम	

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

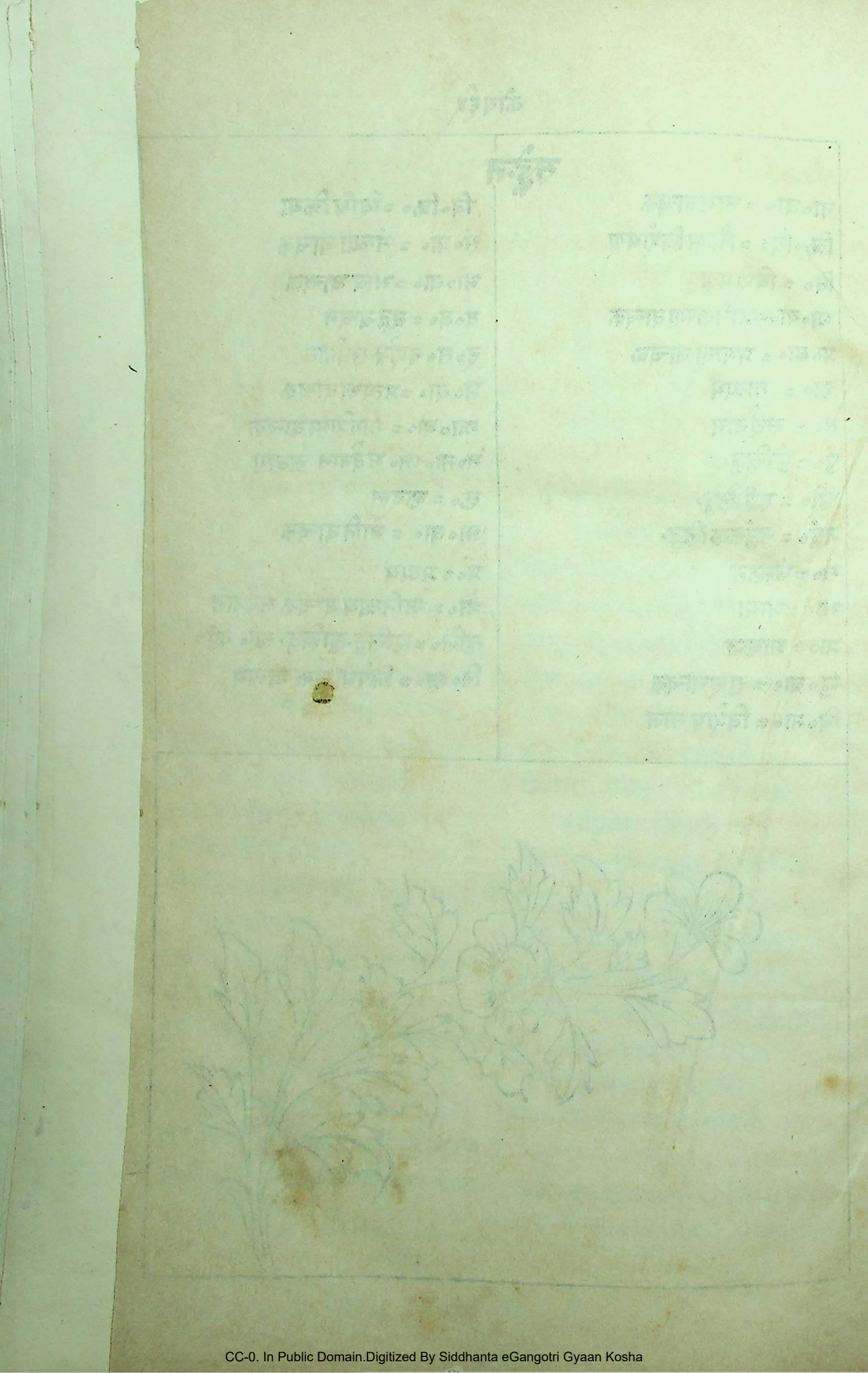

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
सुन्दरी चरित्र	भगवद्गीता विष्णुसहस्र ना॰ स॰	युगल विलास
रामायण नानार्थ नी सङ्ग्रहा	दैवज्ञा भरण	भाषा महाभारत विजयमुक्ता
वली	ज्ञान स्वरोदय	वली
दूसरी पुस्तक रामायण माला	भरतरी गीत	जनक पच्चीसी
तेसरी रामायण गीताष्टक	देवी भागवत नागरी	शृंगार प्रकाश
चौथी ज्ञान दोहा वली	राम व्याहोत्सव	दोहावली रत्नावली
पंच बौरस सारिणी	बिहारी सतसई सटीक	स्त्रीदर्पण
छठी विधि बोध	विश्राम सागर	समर बिहार बिन्द्रावन
सातवीं पुस्तक मातृदत्त कृत	रामलगन	रमलसार
सत्य नारायण की कथा सटीक	मनुस्मृति उर्दू टीका सहित	कथा चित्रगुप्त
शनिश्चर की कथा	वैष्णवी सन्ध्या	कायस्थ दर्पण
राम कलेवा	याज्ञवल्क्य भाषा टीका सहित	कृष्ण बाल लीला
तुलसी शब्दार्थ प्रकाश	प्रबोधचन्द्रोदय नाटक	गीत गोविन्द सटीक
कवि कुल कलतरु भाषा	आनन्दाऽमृत वर्षिणी	रामाभिषेक नाटक
प्रेम रत्न	निर्णय सिन्धु	इन्द्रसभा नागरी
बनयात्रा	ज्ञानमाला	सिंहासन बत्तीसी
भजनावली	अवतार कथामृत	शुकबहत्तरी
बारह मासा फ़क़ीर अनाव रव्या	ज्ञान चालीसी	अपूर्व कथा अर्थात गुलब-
बारह मासा बलदेव प्रसाद कृत	शङ्कर दिग्विजय भाषा	कावली
कृष्णसागर	योग वाशिष्ठ देव नागरी में	गुल सनोबर नागरी
मनोरञ्जन	मार्कण्डेय पुराण	चित्रचन्द्रिका
हारीत स्मृति नागरी	बैताल पच्चीसी	छन्दोर्णव पिंगल
भगवद्गीता सटीक नागरी	दानलीला नागलीला	हिदायत नामा मालगुज़ारी
रामायण राम विलास	सभा विलास	हिदायत नामा बन्दोबस्त
यमुना लहरी	विक्रम विलास	विद्यार्थी की प्रथम पुस्तक
षट्पञ्चाशिका	इन्द्रजाल नागरी	बालाबोध
कल्प सूत्र भाषा	कायस्थ कुल भास्कर	गरुड़ पुराण प्रेतकल्प
विनय पत्रिका सटीक	क़िस्सह गोपीचन्द्र भरतरी	साङ्ख्य सत्व कौमुदी
किताब पटवारी ४ भाग	बहार वृन्दावन	मनोहर कहानी
रसराज	पद्मावती खण्ड आल खण्ड	क़ानून
कृष्णप्रिया	लावनी व शेर बनारसी ॥॥	ताज़ी रातहिन्द अर्थात ॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha